CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बउधायन

[महाकाव्य]

रचयिता

दण्डी स्वामी विमलानन्द सरस्वती

भोजपुरी अकादमी

बोरिंग रोड, पटना

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रकाशक
भोजपुरी अकादमी
बोरिंग रोड
पटना—१

© सभ अधिकार भोजपुरी अकादमी के अधीन
पहिला संस्करन (नवंबर १९८३)
दाम—१००'००
(एक सइ रोपेआ)

मुद्रक
कालिका प्रेस,
आर्यकुमार रोड
पटना-४

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अकादमी के ओर से

भोजपुरी साहित्य में 'बउधायन' के उहे गउरव मिली, जवन संस्कृत में 'महापुरानन' के मिलल बा। पुरान आ महाकाव्य के जतना लच्छन बतावल गइल बा, ऊ सभ 'बउधायन' में समाइल बा। भगवान तथागत चाहे उन्हुकरा धरम-दर्शन से जुटल जतना इतिहास आ बिसे बाड़ें सें, सभ 'बउधायन' में अपने सभे पाइबि। इहाँ तक ले कि देस चाहे बिदेसन में बउध-दर्शन आउर धरम कब-कब, कहाँ-कहाँ आ के-के फइलावल, एककी बात, बड़ा बिस्तार से एह महाकाव्य में, लिखाइल बा। इहाँ तक हम कहबि कि बउध धरम आ दर्शन के बारे में एक सइ किताब पढ़लो पर जवन आ जतना गेयान ना भेंटाई, ओतना गेयान एह अकेले ग्रंथ के पढ़ला से भेंटा जाई। काव्य-तत्त के नजर से देखेवाला लोगन में मतभेद हो सकेला, मगर बिसे आ इतिहास के नजर से एह ग्रंथ के जोड़ हिन्दिओ में ना मिल सके। एही से एकरा के हम 'महापुरान' कहऽतानीं। बउध-धरम के बिस्तार के नजर से त एकरा के महाभारतो कहल जा सकत बा। एह महाकाव्य के परकासन से आज भोजपुरी अकादमी धन्य हो गइलि, अइसन हमार मन कहऽता।

एकर पांडुलिपि जब अकादमी के मिलल, तबे मन में हम ठान लेलीं कि अगर एकर प्रकासन अकादमी के ओर से हो जाय, त अकादमी के जनम सारथक हो जाई। काहे कि भोजपुरी में अइसन आ अतना बड़ काव्य ना त केहू लिखले बा आ ना केहू लिखी। ओहू में अइसन बिसे पर जवन दुनिआँ के हर कोना में जानल-मानल जात बा आ जेकर परचार-परसार समूचे एसिया में बहुत पहिलहीं से बा आ जेकर जनमदाता भोजपुरी छेत्र के सपूत रहन आ जेकरा जोत के अँजोर फइलावे में भोजपुरी छेत्र पूरा अगुआई कइले बा। सभ तरह से आ सभ ओर से अइसन अनमोल जिनिस के अगर भोजपुरी अकादमी परकासित ना करी त अकादमी के आ अकादमी में हमरा अइला के कवनो जरूरत ना रहल ह। ई सभ बात हमरा मन के मथे लागल।

'बउधायन' के पांडुलिपि हमरा सन् १९७९ ई० में मिलल—ओह समे के बिहार के बित्त-मंत्री श्री कैलासपति मिश्र से। उहाँ के हमरा के अपना कोठी पर एक दिन बोलवलीं आ बउधायन के १५ जिल्दवाली पांडुलिपि देत कहलीं कि अगर अकादमी एकरा के परकासित करी आ अगर शिक्षा-बिभाग सिपारिस करी त सरकार से एकरा परकासन खातिर अनुदानो दिलवा देबि। मन बड़ा अगराइल आ पांडुलिपि उठा के ले अइलीं। मगर एकरा के परकासित करे खातिर जब अनुदान माँगल गइल त पहिले त महीनों कवनो जबावे ना आइल। मगर बार-बार के अनुस्मार देला के बाद शिक्षा बिभाग लिख देलस कि अकादमी खातिर जतना अनुदान दिआत बा, ओही में अकादमी 'बउधायन' के परकासन करो। एकरा खातिर अलग से अनुदान ना मिली। शिक्षा-बिभाग अकादमी के माँगवाला पत्र बित्त-बिभाग के पास भेजबे ना कइलस। ओने बित्त-मंत्री जी से जब हम फेरु मिललीं, तब उहाँ के कहलीं कि बिना शिक्षा-बिभाग के मँगले बित्त-बिभाग कुछुओ ना करि सके आ शिक्षा-बिभाग से एकरा खातिर हमार कुछ कहल उचित ना होई। एने अकादमी के कार्यकारिनी में एह बात के जब ... इल, तब सदस्य लोग कहल कि एह काम खातिर जबले सरकार अनुदान ना दीही, तलेक एकर परकासन अकादमी खातिर संभव नइखे; ... ह में हजारो-रोपेआ के खरच बा। सदस्य लोग के कहनाम रहे कि एह महाग्रंथ के छपवावे में जतना रकम लागी, ओतना में ... कन के २० गो पुस्तक छपी। मन निरास हो गइल आ एही तरह के झुलुहा पर महाकाव्य के परकासन एक बरिस तक झूलत रह

लेकिन अकादमी के साथे-साथ हमहूँ धीरज ना छोड़लीं। कुछ महीना के बाद कार्यसमिति में एह बात के फेरु उठावल गइल ... नधायन' के परकासन होखे के चाहीं। हमार तरक रहे कि २० पुस्तकन के छपला से जवन गउरव अकादमी के ना मिली, ऊ गउरव ... ग्रंथ के परकासन से मिल जाई। बहुत रगड़ कइला पर अन्त में समिति एह बात पर राजी हो गइल कि पांडुलिपि प्रेस में ... ाय, मगर एकरा खातिर सरकार से अनुदान के माँग जरूर कइल जाय आ बित्त-मंत्री श्री कैलासपति मिश्र जी के धइल जाय कि ... पना बादा के पूरा करीं। तलेक त मिसिर जी मंत्री-पद से हट गइल रहीं। जब मंत्री-पद पर रहीं, तब त कुछ भइबे ना कइल ... का हो सकत रहे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

समिति के ओर से अतना छूट मिलते अकादमी झट देना महाकाव्य के लेखक स्वामी विमलानन्द सरस्वती जी के बोला के एग्रीमेंट पेपर भरवा लेलस आ निदेशको दस्तखत कइके एग्रीमेंट के एक कापी स्वामी जी के दे देलन। एकरा बाद प्रेसो से एग्रीमेंट हो गइल आ पांडुलिपि प्रेस में भेज दिहल गइल। आनन-फानन में अकादमी ई सभ एह से कइलस कि पाछे फेरु झंझट जरूर उठी। काहे कि मने-मन कार्यसमिति के सदस्य लोग बूझत रहन कि अतना खर्चीला किताब बिना अनुदान मिलले कइसे छपी? सन्देह ठीक निकलल, काहे कि कार्यसमिति में सदस्य लोग एह बात के फेरु से उठावल कि बिना अलग से अनुदान मिलले, पांडुलिपि प्रेस में कइसे चलि गइल? कार्यसमिति के निरनय देखावल गइल कि अइसन निरनय ना रहे कि बिना अनुदान अइले, पांडुलिपि प्रेस में ना जाई। एगो सदस्य त इहाँ ले कहले कि जबतक एह काम खातिर अनुदान नइखे आ जात, तबतक एकर छपाई आगे मत होखे आ पांडुलिपि प्रेस से लवटा लिहल जाउ। मगर निदेशक के कहनाम रहे कि अब ई ना हो सके, काहे कि लेखक आ प्रेस—दूनों के बीच कंट्रैक्ट फारम पर दस्तखत हो चुकल बा। किताब के दू फरमा छप चुकल बा आ छपाई के पूरा कागजो प्रेस के दिआ चुकल बा।

एह तरह से एकरा प्रकासन में जतना कठिनाई आ थोड़ा अँटकल, ओह से आ कुछ प्रेस के सुस्तिओ से, परकासन में देर त भइल, मगर संकलप अनेर ना भइल; एह बात के हमरा भारी खुसी बा। लेकिन फेरु दोसर झमेल खड़ा हो गइल। ग्रंथ के बहुत फर्मा जब छप गइल त दण्डी स्वामी जी बहुत अनराज हो गइलीं कि हमरा भासा के बिगाड़ दिहल गइल, छन्द-भंग हो गइल आ महाकाव्य के सभ तत्त भरठ हो गइल। उहाँ के कहनाम कि परकासन खातिर हम अकादमी के पांडुलिपि देके बहुत बड़ गलती कइलीं। हमरा भासा-नीति आ बिचार के बरबाद कइ दिहल गइल। उहाँ के एगो बड़का ढड्ढा शुद्धि-पत्र के भेजलीं, जवन हमरा नजर में बेरथ के चीज रहे। अकादमी के भासा खाँटी भोजपुरी के आदर्श छेत्र के भासा ह, जवना मोताबिक भासा सुधार कइ के अकादमी में पुस्तक छापल जाला। एह बात के जिकिर कंट्रैक्ट फारमो में कइ दिहल बा। एह से जवन चीज स्वामीजी के बिचार से गलत बा, ऊ अकादमी के ओर से ठीक कइल चीज हटे। अइसे भोजपुरी के भासा-नीति अबहीं अहथिर नइखे भइल। एह से ढेर लोग अपना-अपना गेयान के अनुसार कई तरह से भोजपुरी लिखेला। आज के जुग में के केकर कलम पकड़ी? आज त सभ कोइए भासा-बइग्यानिक आ महाकवि बा। अबहीं भोजपुरी-भासा-नीति के अहथिर होखे में कम-से-कम पनरह बरिस लागी, उहो तब, जब लगातार बिबिध बिसे के साहित्य लिखात चल जाई। अइसे अतना बड़ ग्रंथ में भासा के एकरूपता नइखे आ पावल, काहे कि प्रूफ-संसोधन एके आदमी के जिम्मे ना रहि सकल। तवनो पर एह महाकाव्य में अकादमी अपना भासा-नीति के बेवहार कइले बिआ, जेकर दोस दण्डी स्वामी जी प ना जाये के चाहीं। जे होखे, मगर अकादमी के एह परकासन से भरपूर संतोख बा।

पांडुलिपि के दुइ फरमा के मूल कापी एगो महोदय के करनी से भुला गइल, जवना से ओह फरमन में कुछ पाँति के छूट रह गइल। जेकरा खातिर हम दंडी स्वामी जी से छमा चाहबि। ऊ सभ पाँतिन के आ कुछ जरूरी गलतिन के सुधार-पत्र लगावल जा रहल बा। एह सभ झंझट-झमेला आ खट्टा-मीठा अनुभव के बादो आज अकादमी के मन में एह महाग्रंथ के परकासन से बड़ा भारी खुसी बा—कवनो मलाल मन में नइखे।

हमरा पूरा बिसवास बा कि एह महाकाव्य से भोजपुरी अकादमी के साथे-साथे भोजपुरी भासा आ साहित्यो के गउरव में चार चाँद के कहो, सोरह चाँद जरूर लागी। हिन्दिओ में अइसन बड़ महाकाव्य नइखे, जेकरा में अतना बड़ इतिहास सँजोवल गइल होखे। 'बउधायन' के काव्य-कला के बिसेसता के बारे में डॉ० उदयनारायण तिवारीजी अपना 'प्राक्कथन' में जे लिखले बानीं, ओकरा से बेसी हमरा कुछुओ कहे के नइखे। उहाँ के कलम से एह प्रकासन के गउरव बरबस बढ़ि गइल बा। अन्त में ई हम जरूर कहबि कि एह महापुरान काव्य के पढ़ला बिना भोजपुरी साहित्य के महिमा ठीक से ना जानल जा सके, एह बात के बरबस उल्लेख साहित्य के इतिहास में करे के परी। एह पुस्तक के प्रूफ पढ़े में अकादमी के सहायक श्री ब्रजकिशोर दुबे से जे मदद मिलल, ओकरा खातिर उन्हुका के धन्यवाद।

जय भोजपुरी!!

विजया दसमी
विक्रम-संवत्—२०४०
१६ अक्टूबर, १९८३ ई०

—हवलदार त्रिपाठी 'सहृदय'
निदेशक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

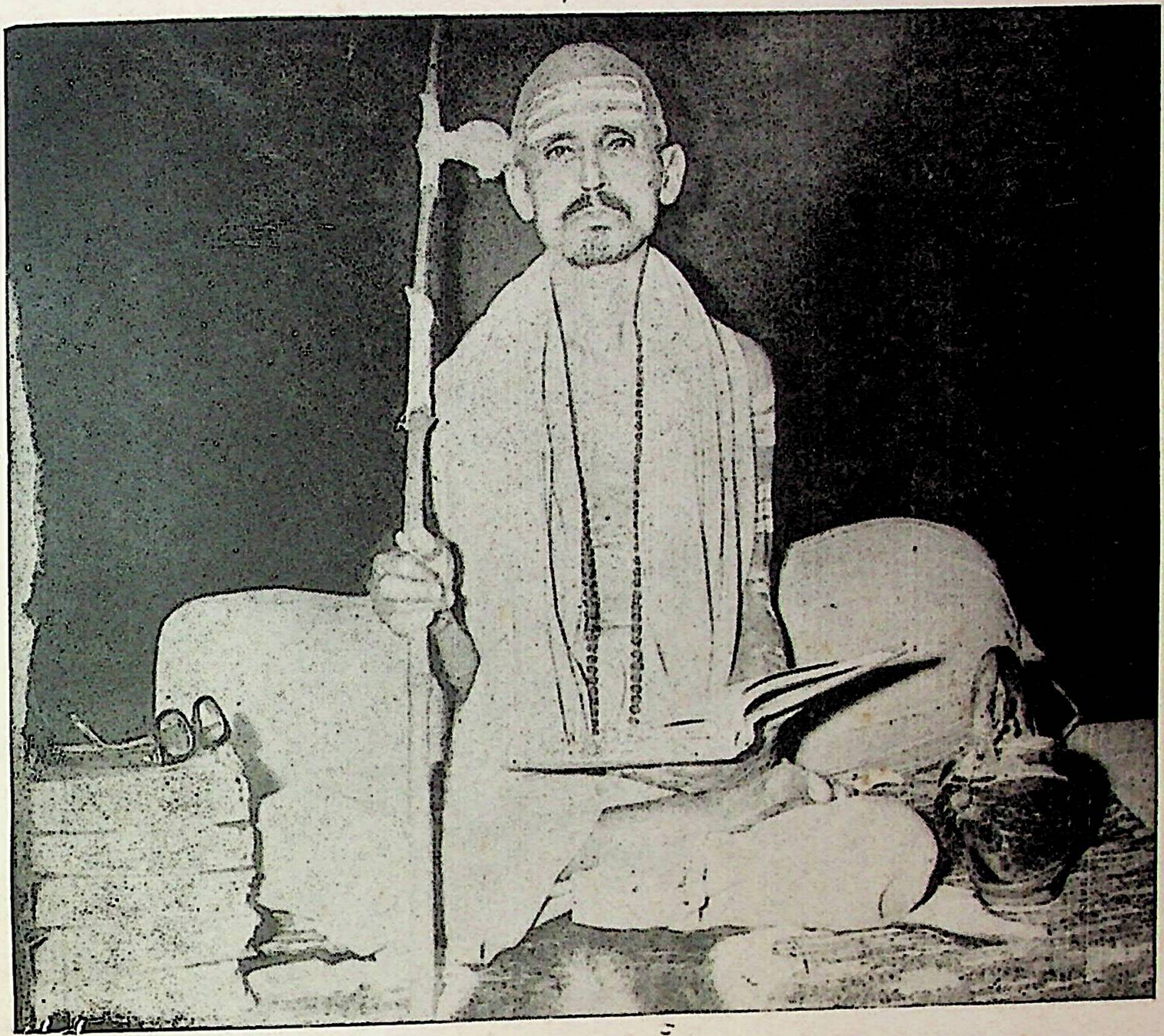

दण्डी स्वामी विमलानन्द सरस्वती

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

समरपन

बहुत पुराना गाँव निराला
विसुनगुपुत वंशी 'अंगार'
जे कि अब मेंगराँव कहाला
जनमधरतिया
सवतुक सहज हमार !
जहवाँ कि हम
पालन-पोसन-
विनय-शील-शिच्छा कुछ पवलीं,
ओहिजे संकृति, सांख्यायन, किल
वेद विशारद रिसी- महरसी
जोगिराज़ तपसिन के वंशज
राजहंस कुल-दीपक
पंडितराज नगीना
काम मिसिर का कुल के
बीर चउधुरी मोती राय मिसिर के
रहे छावनी-गढ़-रजधानी
सुघर सुहेल निवास !
निपुन पुरनियाँ-पुरुखा
मोती राय हमार ।
आगे ओही मोती-कुल में
जमींदार सिरताज चउधुरी
राम बरन जी भइलन ।
राम बरन का अगिली पीढ़ी
उनकर सग संतान
गंगाविसुन, गया आ सागर
राय चउधुरी चउकस
कुल-चिराग में
बाती-तेल-डालि के पुरहर
जोति नया फइलवलन !

आगे उनका अइलन
राम प्रसाद पिता जी
चाचा सुजन विरिजमोहन जी
हम उनहीं के
सग संतान बंश के धागा ।
ओह समे पितरन-पुरुखन के
वरम्हरूप भगवान जानि हम
मानि सगुन ईसर-अवतार
माँथ नवावत बानीं ।
आज समय से
ओही देवरिसी-पितरन का
पुन्नि-तेज तप-बल से
हम ई सहज सुगंधित
भोजपुरी भासा-फूलन के,
ललित-चरित-माला 'बउधायन'
कथा तथागत मुनि के
सरधा सूई प्रेम-ताग से
गूँथि कइसहूँ
ओही पुरुखा-परंपरा का
चमकत नया सितारा
पारस पुरुस नगीना
धुनी चउधुरी-कुल का दीपक
सुजन-सुधरमी बीर सुरेमन
झपटि शहीदन का टोली से
हाथ मिलावेवाला
जुवक साहसी आ बलिदानी
राय नरबदेसर का—
पूत सुलायक रामेश्वर का
सुभ इयादगारी में
पूजा जोग जसी पुरुखन का

गुनी कमल हाथन में
भाव भगति बश
अरपत सउँपत बानीं !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्राक्कथन

बात सन् १९३० की है। मैं जब गुरुवर डा० सुनीति कुमार चटर्जी से मिला तब उन्होंने मेरी मातृभाषा भोजपुरी पर वैज्ञानिक कार्य करने का शुभादेश दिया; किन्तु साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि भोजपुरी में प्राचीन साहित्य का अभाव है और मात्र कबीर के कतिपय पद ही इसमें उपलब्ध हैं। मैं सशंकित हो उठा कि अन्ततोगत्वा कार्य कैसे संपन्न करूंगा ? परन्तु जैसे-जैसे कार्य आगे बढ़ा, भोजपुरी के वर्णनात्मक और संरचनात्मक अध्ययन में मुझे कुछ काठिन्य नहीं हुआ, क्योंकि मैं स्वयं अपना सूचक था। इसके अतिरिक्त मैंने थोड़ा-बहुत साहित्य भी एकत्र कर लिया था, जैसे—कचौड़ीगली बनारस से प्रकाशित छोटी-छोटी 'कजली' की पुस्तकें तथा दूधनाथ-प्रेस, हवड़ा से प्रकाशित भोजपुरी गाथाएँ—जैसे लोरकी, बिहुला-विषहरी, कुवँर-विजयी, बाला-लखन्दर, नयका बंजारा इत्यादि। 'भारत-जीवन प्रेस, बनारस से प्रकाशित तेग-अली के 'बदमाश-दर्पण' की पुरानी प्रति भी मिल गयी और धीरे-धीरे भोजपुरी के अध्ययन का कार्य आगे बढ़ा। इसमें सर्वाधिक सहायता मुझे पूर्वाञ्चल—वाराणसी, बलिया, गाजीपुर, मिर्जापुर, गोरखपुर, बस्ती, आजमगढ़, जौनपुर से संकलित कहानियों से प्राप्त हुई। पुनश्च इनसे समुपलब्ध तथ्यों के आधार पर ही अपने डि० लिट्० के अधिनिबंध को तैयार किया। यह सन् १९४२ ई० में पूर्ण हो गया और १९४३-४४ ई० में इस पर मुझे उपाधि भी मिल गयी।

किन्तु भोजपुरी में साहित्य का अभाव मुझे निरन्तर खलता रहा। मेरे मन में बराबर यह बात आती रही कि क्या 'भोजपुरी' में अर्वाचीन साहित्य की रचना नहीं हो सकती ? मेरे गुरुदेव ने एक बार यह भी कहा कि यदि संभव हो तो तुलसीदास के 'रामचरित-मानस' को ही भोजपुरी में अनूदित कर डालो।

महापण्डित राहुल सांकृत्यायन सन् १९३५-३६ से ही मेरे साथ रहने लगे थे। वे शरद् ऋतु में प्रायः तीन मास तक मेरे निवास-स्थान पर रहते थे और अपनी पुस्तकें यहाँ 'ला जर्नल प्रेस' में छपवाते थे। उनके साथ श्री अवधबिहारी 'सुमन' नामक एक युवक आये जो देश के प्रख्यात किसान-नेता स्वामी सहजानन्द सरस्वती के अनुयायी थे। राहुल जी बहुमुखी प्रतिभा के व्यक्ति थे। लोक भाषाओं को समुन्नत करने की ओर भी उनकी दृष्टि थी। मेरी, राहुल जी तथा सुमन जी की मातृभाषा 'भोजपुरी' थी और हमलोग भोजपुरी में ही अपना विचार व्यक्त करते थे। हमलोगों के चतुर्थ मित्र 'नागार्जुन' जी थे जिनकी मातृभाषा 'मैथिली' थी। वह भी हमलोगों की बातों में रस लेते थे।

हम तीनों के समक्ष प्रश्न यह था कि क्या भोजपुरी में गद्य रचना हो सकती है ? क्या भोजपुरी गद्य-लेखन के लिये सक्षम है ? प्रयोग के लिये राहुल जी ने भोजपुरी में पाँच नाटक लिखे। उधर श्री अवधबिहारी 'सुमन' ने सन् १९४८ ई० में 'भोजपुरी' में एक पुस्तक 'जेहल कऽ सनदि' प्रकाशित की। यह भोजपुरी में लिखित कहानियों का एक संग्रह था। इसकी भाषा खाँटी मुहावरेदार, सशक्त भोजपुरी थी। इसे पढ़ने के बाद हमलोगों को पूर्ण विश्वास हो गया कि भोजपुरी में भी विचार व्यक्त करने की पूर्ण क्षमता है।

राहुल जी के दिवंगत हो जाने के पश्चात् श्री अवधबिहारी 'सुमन' ने कोशी के राजगुरुमठ में संन्यास ले लिया तथा वे दण्डी-स्वामी विमलानन्द सरस्वती बन गये। उनसे मेरा पूर्ववत् सम्पर्क सम्बन्ध बना रहा। मैंने स्वामी जी से निवेदन किया कि यदि वे भोजपुरी में कोई काव्य-ग्रंथ लिख दें तो उसका बड़ा उपकार होगा। स्वामी जी कुछ बोले नहीं किन्तु 'बउधायन' के प्रणयन में प्रवृत्त हो गये। आपने दस वर्षों के अनवरत परिश्रम के बाद इस काव्य की रचना की।

'बउधायन' भोजपुरी की कालजयी रचना है और भोजपुरी की शक्ति एवं सम्प्रभुता का प्रत्यक्ष प्रमाण है। यह शास्त्रीय दृष्टि से भी महाकाव्य के लक्षणों के अनुकूल है। यह महाकाव्य ३१ सर्गों में विरचित है जिसमें ४०,००० पंक्तियाँ हैं और यह बौद्ध धर्म का 'विश्वकोश' है। अश्वघोष के पश्चात् संसार की किसी भाषा–चीनी, जापानी, बर्मी, थाई तथा सिंहली—में बुद्ध के जीवन चरित तथा बौद्ध दर्शन पर कोई महाकाव्य नहीं लिखा गया। बउधायन के २८ सर्गों में बुद्ध के जन्म, महाभिनिष्क्रमण, बोधि-सम्प्राप्ति तथा निर्वाण का मार्मिक चित्रण किया गया है। शेष तीन सर्गों में वृहत्तर भारत में बौद्ध धर्म के प्रचार- प्रसार का इतिहास है।

इस महाकाव्य में काव्यत्व के साथ-साथ बौद्ध दर्शन तथा बुद्धकालीन इतिहास के भी दर्शन होते हैं। जैसे आदि कवि वाल्मीकि ने संस्कृत में 'रामायण' की तथा होमर ने ग्रीक में 'इलियड' की रचना की थी; उसी प्रकार स्वामी जी ने भोजपुरी में इस प्रथम महाकाव्य

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

की रचना की है। इसमें स्थान-स्थान पर प्रकृति की मनोहारिणी छटा का भी चित्रण हुआ है। यह महाकाव्य अत्यन्त प्रेरणादायक है और इसके कई मार्मिक स्थल ऐसे हैं जहाँ सहृदय मनुष्य अपनी अश्रुधार रोक नहीं सकता। मुझे यह आशा नहीं थी कि मेरे जीवन में भोजपुरी में इस प्रकार का सशक्त और वृहद् महाकाव्य प्रकाशित हो जायेगा।

संप्रति भोजपुरी में साहित्य की विविध विधाओं पर अनेक ग्रंथों का निर्माण हो रहा है। देश-विदेश में भोजपुरी के अध्ययन, प्रचार एवं प्रसार के सुझाव को लेकर, इसमें अनेक अधिनिबन्ध प्रस्तुत किये गये हैं और किये जा रहे हैं। विगत तीस वर्षों में आधुनिक साहित्य इस मात्रा में आया है कि इसकी कल्पना करना भी कठिन है। स्वामी जी का यह महाकाव्य भोजपुरी-लेखकों के लिये प्रेरणा का स्रोत तो रहेगा ही, इसके साथ ही यह भोजपुरी के लिये गर्व का भी विषय होगा। मैं स्वामी जी को इसके लिये अभिनन्दन और विनम्र प्रणाम प्रेषित करता हूँ। उन्होंने स्वान्तः सुखाय इस महाकाव्य की रचना करके भोजपुरी को आशातीत गौरव प्रदान किया है।

प्रस्तुत गतिमान् प्रसङ्ग के प्रवाह में 'बउधायन' महाकाव्य के रचना-शिल्प के सम्बन्ध में भी दो शब्द कह देना समुचित ही होगा। वस्तुतः 'भाषा' यदि भावाभिव्यक्ति का माध्यम है तो 'शैली' उस अभिव्यक्ति को वाणी प्रदान करने की विधा। भाषा भावानुरूपिणी होकर कैसा मनोहर रूप धारण करती है, इसका प्रत्यक्ष दर्शन 'बउधायन' महाकाव्य में यत्र-तत्र किंवा सर्वत्र होता चलता है जहाँ भाषा विचार का इस प्रकार अनुसरण करती हुई चल रही हैं जैसे रसगर्भनिर्भरा सौभाग्य गर्विता कुलवधू अपने प्रियतम के रसिक मन का अनुसरण करती हुई खिंचती चली जा रही हो। उदाहरणार्थ निम्नस्थल द्रष्टव्य है :—

टिसुना नई जवानी पवलसि,
चमकि झमकि के मटकी मारे,
कले-कले मुसकाय।
मउवति रानी पहिरि चुनरिया,
काजर कइले राग कढ़ावे, सर्ग 2
चुरुगे चहके ले।

यदि प्रतिपाद्य वस्तु की आनन्द-विधायिनी शैली 'कला' है तो स्वामी जी निःसन्देह काव्यकला के शीर्षस्थ कोटि के कलाकार हैं क्योंकि इन्होंने काव्य के प्रतिपाद्य विषय का ऐसा रसमय विधान किया है कि काव्यकला-कोविद पाठक भी यत्र-तत्र साश्चर्य नयनों से विचार-प्रवाह में बहता हुआ एवं पंक्तियों को दुहराता हुआ गुनगुनाना आरंभ कर देता है :—

जहाँ धरम-रथ धँसल पांक में
असमय टटल धूरा।
राति अन्हरिया बड़ी भयावनि,
मचल अन्हेर धरतिया काँपलि,
भइल धरम के हानी!

× × ×

सोना-चानी का टुकड़ा पर
भइल जिनिगिया के जब सउदा
मन अकाश माया के बादरि
टिसुना लता पनपि के तोपलसि
सगरे डहरि अन्हार! सर्ग 1

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'वउधायन' महाकाव्य में जहाँ एक ओर स्वतंत्र किन्तु अत्यन्त मूल्यवान विचारों का निर्मल प्रवाह है वहीं दूसरी ओर स्वच्छन्द छन्दोविधान की प्रखर धारा भी प्रवाहित हो रही है। स्वतंत्र-विचारों और स्वच्छन्द छन्दों का ऐसा सम्मोहक निर्वाह अन्यत्र अलभ्य नहीं तो दुर्लभ अवश्य है। ऐसा लगता है कि मानों स्वतन्त्र विचारों ने अपने स्वतंत्र व्यक्तित्व के निखार हेतु स्वच्छन्द छन्दों की बन्धन-विहीनता को तथा स्वच्छन्द छन्दों ने स्वतंत्र विचारों की मूल्यवत्ता को प्राप्त करने के लिये परस्पर आजीवन मैत्री-निर्वाह करने की दृढ़ प्रतिज्ञा कर ली है और इसी उद्देश्य से दोनों एक साथ चलते जा रहे हैं :—

झिर-झिर झरना
गुनगुनात,
अँठिलात कलेकल,
कतहीं सरकत,
डेग बढ़ावत,
थिरकत सातो सुर में गावत
आवत,
माई भागीरथि के चरन छुवे के ! (सर्ग १)

'वउधायन' का कवि विचार बोध एवं भावावेग की सर्वोच्च कक्षा में विचरण करता हुआ स्थान-स्थान पर भावना लोक के उस विन्दु पर पहुँच जाता है, जहाँ वह लोक-हृदय में अपने हृदय को इतना तल्लीन कर देता है कि कतिपय क्षणों के लिये उसे अपने पृथक अस्तित्व का आभास ही नहीं रह जाता है। ऐसे क्षणों के कवि की उल्लास-मुखर मेधा से जिन उदात्त मानवीय विचारों की रसमयी अभिव्यक्ति हुई है वह समग्र मानव जाति के हृदय को स्पर्श करने में पूर्णत: समर्थ है। देश और काल की सीमा से परे ऐसी ही कृतियाँ शाश्वत बनकर मानवमात्र तथा प्राणिमात्र का हित-साधन करती हुई मानवता, साहित्य एवं संस्कृति की निधि बन जाती है। इस दृष्टि से स्वामी जी शाश्वत-साहित्य-रचना-परिपाटी के श्रेष्ठ कवि हैं।

'वउधायन' महाकाव्य में शब्दार्थ के उपकूलों में अजस्रगति से प्रवहमान निष्कलुष एवं निर्मल विचारों की धारा में विगलित-वेद्यान्तर ब्रह्मानंद सहोदर अखण्डानन्द की धारा अन्त: सलिला के रूप में निर्बाध गति से प्रवाहित हो रही है जिसमें रसजीवी पाठक का अन्तर्यामी अवगाहन करके अखण्डानन्द का साक्षात्कार करता हुआ उस मधुलोक में पहुँच जाता है जहाँ से वह पुन: लौटना ही नहीं चाहता। सचमुच स्वामी जी ने सुख से विह्वल एवं दुख से कातर मृत्युलोक के प्राणियों के लिये साहित्याकाश में 'वउधायन-सुधाकर' की अलौकिक रचना की है जो अहर्निश निर्बाधरूपेण मर्त्यों के लिये अमृत की वृष्टि कर रहा है :—

"शरद रीतु का नील अकासे
सोरह कला साजि के बिहँसत
मंगल विमल चनरमा उगि के,
सरगलोक से डेग बढ़ावत
अमिरित-रस-बरसावत,
साथे-साथ हजारन तारा
झमि-झमि आनन्द मनावत,
रसे-रसे मुसकात !"

यह है सरस्वती के वरदपुत्र स्वामी विमलानन्द सरस्वती के कवि-व्यक्तित्व की महिमा !

—(डॉ०) उदयनारायण तिवारी
अलोपी बाग, प्रयाग

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पुरोवाक्

महात्मा बुद्ध विश्व की एक अनूठी विभूति थे। संसार में अब तक जितने महान् पुरुष पैदा हुए हैं, उनमें वे, मेरी दृष्टि में सर्वश्रेष्ठ हैं। किसी ऐतिहासिक महापुरुष की तुलना पौराणिक देवी-देवताओं से करना ठीक नहीं है, पर यदि पौराणिक शब्दावली का व्यवहार करें तो यह कह सकते हैं कि बुद्ध सोलह कला पूर्ण थे। हमारे देश को बड़े-बड़े पुरुषों को पैदा करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है, पर बुद्ध को जैसा पूर्ण देखा जाता है वैसे नहीं मिलेंगे। महापुरुषों में कितने मस्तिष्क में बहुत बड़े मिलेंगे, जिनकी प्रतिभा दूर-दूर तक बेधनेवाली, दूर तक सोचनेवाली है, पर हृदय के माधुर्य में वे उतने बड़े नहीं निकलेंगे। दूसरे हृदय के महाधनी होते हैं, पर मस्तिष्क में अपूर्ण जँचेंगे। बुद्ध हृदय और मस्तिष्क दोनों में महान् थे। वे भारत के सर्वश्रेष्ठ विलक्षण सपूत थे। यद्यपि उनके व्यक्तित्व को ढाई हजार वर्षों की परम्पराओं एवं अपनों-परायों की श्रद्धा के फूलों ने इतना ढँक दिया है कि वह जगल में बिलकुल छिप-से गये मालूम होते हैं, पर तब भी जरा-सा ही ध्यान देने पर वह गरदा लगे चमकते कोहनूर की तरह जगमग-जगमग करने लगते हैं। पश्चिमी विद्वानों ने जब पहले-पहल बुद्ध के बारे में सुना और जाना तो कितनों ने उन्हें हिन्दुओ की अवतार कल्पना की तरह ही समझा। पर, अन्त में ऐतिहासिक तथ्यों के सामने सिर झुकाना पड़ा। जब बुद्ध के निर्वाण के थोड़े ही समय बाद 'पिपरहवा' में और दो ढाई शताब्दियों बाद और जगहों में पुराने अक्षरों में उत्कीर्ण डिबियों में रक्खी उनकी पवित्र अस्थियाँ (धातु) हमारे सामने आईं, तो मानों बुद्ध स्वयं ढाई हजार वर्ष बाद हमारे सामने आकर बोलने लगे— "मैं हूँ जिसे श्रमण गौतम कहते थे, जो उत्तरी भारत के (जंगल) संथाल परगना जिला से थानेश्वर तक पैंतालिस वर्षों तक निरन्तर घूमता रहा।"

मानव-समाज में उत्पन्न सर्व-श्रेष्ठ महामानव अपने जन्म के क्षण से ही देशकाल की सीमा को लाँघ अनंतता एवं नित्यता में स्थान प्राप्त कर लेते हैं। वे उसी क्षण से प्राचीनतम अतीत एवं सुदूर भविष्य में जा पहुँचते हैं। इस बात का अनुभव मुझे बोधगया के मंदिर में उस समय हुआ, जब मैं पर्यटन के क्रम में वहाँ गया था, और मैंने एक गरीब मछुवे को देखा, जो समुद्रपार जापान से अपने किसी गर्हित कर्म के प्रायश्चित के लिये आया था। संध्या धीरे-धीरे आधी रात की निश्चल निस्तब्धता में बदल गई, और वह तब भी अत्यन्त शांत एवं गंभीर मुद्रा में ध्यानमग्न होकर करबद्ध प्रार्थना करता रहा—'बुद्धं शरणं गच्छामि'·········

कितनी शताब्दियाँ व्यतीत हो गईं जब कि आधी अंधेरी रात को शाक्य राजकुमार सिद्धार्थ ने मानवता को दुःख-मुक्त करने के लिये महाभिनिष्क्रमण किया था, और वहाँ उस रात को मेरे सामने वह जापान का तीर्थयात्री, अपने गंभीर क्लेश में शरण के लिये प्रार्थनारत था। उस विनयी अनुतापी के लिये वे, पृथ्वी पर उपस्थित अन्य सभी वस्तुओं से अन्यन्त समीप और वास्तविक थे, उनकी उपस्थिति ने उस मुक्तिकामी गरीब अपराधी के जीवन को स्पर्श किया था। अपनी आत्मा की अतिप्रज्वलित अभिलाषा के उज्ज्वल प्रकाश में वह उन्हें देख सका जो महामानव थे। यदि बुद्ध अपने समकालीन लोगों के सम्मुख एक शक्तिशाली सम्राट् या सेनापति के रूप में उपस्थित होते तो वह आसानी से अपने युग को प्रभावित करते। किन्तु वह प्रचुर सम्मान समय की गति के अनुसार विस्मृति के गर्भ में विलीन हो गया होता। उनकी प्रजा उनके राजशाही वैभव-विलास और चमक-दमक को देखकर चकित होती, गरीब उनके अपार संपत्ति की प्रशंसा करते या दुर्बल शक्ति की। किन्तु मानव आत्मा की पूर्णता के लिये प्रयत्नशील मनुष्य ही काल की सीमा लाँघकर किसी सार्वभौम पुरुष की महनीयता को स्वीकार कर सकते और उसकी जयजयकार मनाते हैं। यही कारण है कि हम देखते हैं, महायोगी बुद्धदेव, आज करोड़ों मानव के हृदय-सिंहासन पर विराजमान हैं। उनके दिव्य आत्मप्रकाश ने दूर अतीत काल की सीमा लाँघ और वर्त्तमान का भी भेदन कर नित्यता की ओर कदम बढ़ाया है।

पृथ्वी पर ऐसे कम ही लोग पैदा हुए हैं जो ऐसे आत्मप्रकाश युक्त थे, जिनका प्रकाश उधार लिया गया प्रकाश नहीं था, और जो अपने सत्य के दिव्य प्रकाश में स्वतः पूर्ण प्रकाशित थे। मानव की पूर्ण अभिव्यक्ति केवल उन्हीं में दृष्टिगोचर होती है जो स्वयं हर देश और हर युग के सभी मनुष्यों का प्रतिनिधित्व करते हैं और जिनकी चेतना युग, जाति, और देश की परम्परागत दीवारों से घिरी एवं मग्न नहीं है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मनुष्य सत्य के प्रकाश में अपने को प्रकाशित करता है। उपनिषद् के तत्वदर्शी ऋषियों ने कहा है कि केवल वही सत्य को जानता है जो संपूर्ण सजीव प्राणियों को आत्मवत् जानता है। इस प्रकार जिसने सत्य का साक्षात्कार किया है वही पूर्ण मानव है और अपनी मानवता के गौरवपूर्ण प्रकाश में सदा ही चमकता है—

यस्तु सर्वाणि भूतानि आत्मन्येवानुपश्यति।
सर्वभुतेषु चात्मानं ततो न विजुगुप्सते ।। (ई० उ०)

मानव की सृष्टि अब भी अपूर्ण है। इस अपूर्णता के घने पर्दे के पीछे मानव में हम सत्य को कैसे जान पाते यदि यह सहसा किसी आत्म प्रकाश से चमत्कृत अति श्रेष्ठ पुरुष में अभिव्यक्त न होता ? मानव के लिये यह सौभाग्य की बात है कि उसकी सच्ची आत्मा बुद्धदेव में प्रज्वलित हो उठी जिन्होंने अपने को इस प्रकार प्रदर्शित किया जैसे संपूर्ण मानवता उनके हृदय के भीतर साकार हो गयी हो। ऐसी स्थिति में कौन उन्हें दृष्टिपथ से ओझल कर सकता है ? समय, स्थान और संकुचित स्वार्थ की लघु दीवारें क्या उन्हें घेर और ढंक सकती हैं ? अपनी तप साधना के अन्त में बुद्धदेव उठे और उन्होंने अपने को जगत् के समक्ष प्रकाशित किया। वह प्रकाश अलौकिक था और उस आत्मप्रकाश के गौरव में भारत का सत्य स्वरूप अभिव्यक्त हो गया। कालक्रम से वह प्रकाश भारत की भौगोलिक सीमाओं को लाँघ मानव जाति के इतिहास में उनके आविर्भाव को नित्यत्व प्रदान करने के लिये सुदूर विश्व में चतुर्दिक फैल गया। भारत एक तीर्थ बन गया, कहने का तात्पर्य कि दूसरे देशों के लोग नातेदारी के बन्धन से भारत की ओर आकृष्ट हुए, बुद्ध के वचनों द्वारा भारत ने सभी लोगों को अपने सगे सम्बन्धी की तरह अपनाया। उसने किसी की उपेक्षा नहीं की, फलतः वह भी किसी द्वारा अनङ्गीकृत नहीं रहा। जाति एवं देश के अवरोध सत्य की बाढ़ में दह-बह गये और भारत का संदेश प्रत्येक देश की सभी जातियों में जा पहुँचा। मानवता जाग उठी और उस आमन्त्रण अनुरोध का सहानुभूतिपूर्ण उत्तर बर्मा, चीन, लंका, जापान, तिब्बत और मंगोलिया की ओर से आया। अप्रतिहत पुकार के सामने सागर और पर्वतों के प्रतिबन्ध ने घुटने टेक दिये। उन दूर देशों में लोगों ने पूरब में दैवी विभूति के अवतरित होने की घोषणा कर दी। उन्होंने प्रचारित किया—'महापुरुष ने चमकते सूर्य की तरह अंधकार के पर्दे को चीर दिया'। अपनी अन्त प्रेरित इस घोषणा को उन्होंने समतल भूमि और रेगिस्तानों में हजारों पाषाणमूर्तियों का चिरन्तन स्वरूप प्रदान किया। अमित परिश्रम द्वारा उनकी श्रद्धा-भक्ति मूर्ति, चित्र, और स्तूपों के रूप में अभिव्यक्त हुई। मानों वे कह रहे हों कि उनकी उस महामानव की पूजा जो जनसाधारण की पहुँच से अति परे ऊँचे हों, असंभव की प्राप्ति के रूप में व्यक्त की गई हो। वे विचित्र अनुभूति से आतुर हो गये, गहरे अंधकार में उन्होंने गुफाओं की दीवारों पर चित्रों को उत्कीर्ण किया, इतना ही नहीं पर्वतों की ऊँची चोटियों पर प्रचुर शिलाखण्डों को ढोकर पहुँचाया और वहाँ मंदिरों एवं स्तूपों का निर्माण किया। उनकी कला ने समुद्र लाँघकर सुदूर देशों में कला के उत्कृष्ट नमूनों को दिव्य और कालजयी स्वरूप दिया। त्याग की विलक्षण आन्तरिक भावना ने कलाकारों को आत्म परिचय एवं ख्याति से केवल इसलिये दूर रखा जिससे भावी संतान को वे यह संदेश दे सकें कि— 'बुद्धं शरणं गच्छामि' मंत्र से उन्हें कैसी अन्तः स्फूर्ति प्राप्त हुई है।

जावा में बोरो बुदूर में बुद्धदेव की मातृभूमि एवं उनकी संपूर्ण जीवनगाथा स्तूप के चतुर्दिक सैकड़ों मूर्तियों के रूप में उत्कीर्ण है, जिनमें से प्रत्येक, वास्तुकार की विलक्षण कला का पूर्ण निदर्शन हैं और वे प्रेमपूर्ण सावधानी एवं अमित परिश्रम से छेनी से उरेही गयी हैं। यह कला की तत्क्षण उपज और आत्म संयम एवं तपस्या का वह अलौकिक स्वरूप है जो कर्मफल के त्याग और नाम तथा यशोलिप्सा से दूर रहने की उत्कट अभिलाषा रख, अपनी कला-प्रतिभा के सर्वस्वदान द्वारा कलाकार के उस महामानव को गौरवान्वित करने की अमर भावना का उदाहरण है, जो सब युग में पूजनीय और चिरस्मरणीय बना रहेगा। उस महापुरुष के प्रति अपनी अपेक्षित अमित श्रद्धा-भक्ति अभिव्यक्त करने के मार्ग में लोगों ने अपार कठिनाइयों एवं असंख्य आपत्तियों पर इस सदुद्देश्य से विजय प्राप्त की है कि उस विशिष्ठ निर्माण द्वारा ही वे यह घोषित कर सकें कि यह विशाल उदार प्रतिभा, जो सार्वभौम मानवता की मधुर भाषा में बोल रही है, उस महामानव के प्रति श्रद्धाञ्जलि है, जो सब युगों के सभी लोगों के कल्याण के लिये आविर्भूत हुआ है जिसने लोगों को कठिन और चिरस्थायी सत्कार्यों द्वारा अपने को व्यक्त करने की प्रेरणा दी जिनसे आत्मविजय और आत्मविमुक्ति घोषित हो।

यही कारण है कि उस सुदूर अतीत के दिनों में पूर्वी महादेश में यहाँ तक कि उसके अगम्य कोनों में भी उस महापुरुष की पूजा प्रतिष्ठित हो गई। उसकी सत्कीर्ति के उद्घोष से विस्तृत मरुभूमि के मैदान, कंदराएँ और पर्वत की चोटियाँ भी गूँज उठीं। इससे भी अमूल्य भेंट उनके चरणों में उस समय समर्पित की गई, जब सम्राट अशोक ने शिलाखण्डों में उत्कीर्ण अक्षरों द्वारा अपने निंद्य कर्मों को सार्वजनिक रूप में स्वीकार करके प्रेम और अहिंसा के धर्म को गौरव-प्रदान करते हुए महापुरुष के प्रति अपनी आदरणीय श्रद्धाञ्जली को अपने शिला-स्तम्भों में उसके चिरस्थायी प्रतीक के रूप में रख छोड़ा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रत्येक विचार पद्धति अपने अन्दर समय की प्रवृत्तियों को धारण करती है और इसलिये उसे ठीक-ठीक तभी समझा जा सकता है जब कि हम उस दृष्टिकोण को पहले ग्रहण कर लें जिससे वह संसार की व्याख्या करती है, और साथ में उस स्वाभाविक प्रेरणा को भी समझने का प्रयत्न करें जिसके कारण उक्त विचार पद्धति सम्भव हो सकी। हम समय की उन परिस्थितियों का अनुमान सहज में कर सकते हैं जिनके अन्दर बुद्ध भगवान ने जन्म लिया। उस समय भारत में एकछत्र साम्राज्य नहीं था किन्तु विशेष-विशेष गण-जातियों और गोत्रों के शासक लोग थे जो अपने पृथक छोटे राज्य बनाने के लिये प्रयत्नशील थे। नाना प्रकार की भाषाओं का प्रयोग होता था और संस्कृत सामान्यरूप से एक पवित्र भाषा थी।

उस समय समस्त वातावरण परस्पर विरोधी मन्तव्यों एवं कल्पनाओं के एक राशिभूत पुंज से परिपूर्ण था जिसे किसी ने अंगीकार किया तो दूसरे ने उसे मानने से निषेध किया, और जो व्यक्तियों के साथ बदलता था एवं वैयक्तिक आचरण, भावनाओं एवं उसके निर्माताओं की आन्तरिक इच्छाओं को अभिव्यक्त करता था। उस समय कोई ऐसे मान्य सत्य और सिद्धान्त नहीं थे जिन्हें सब लोग एकमत हो स्वीकार कर सकें, किन्तु द्रावक विचार और प्रेरणाएँ मिलती थीं। यह कल्पनाओं की अस्त-व्यस्तता का काल था जो असंगत परमार्थ विद्याओं एवं अनिश्चित वितंडावादों और वाक्कलहों से भरपूर था। हिंसात्मक क्रूर यज्ञों ने जिनके द्वारा परमेश्वर की पूजा की जाती थी, बुद्ध के अन्तःकरण पर आघात किया। परमात्मा के विषय में मिथ्या विश्वास के कारण मनुष्य के नैतिक जीवन को बहुत क्षति पहुँची। बहुत से अच्छे व्यक्ति भी इस मिथ्या विश्वास से कि यह दैवी आज्ञा है शैतान का काम कर बैठते। इस संसार में आचार शास्त्र एवं धर्म को एक दूसरे के अन्दर मिश्रित कर देने के कारण कितनी बुराई हुई उसका अनुमान लगाना कठिन नहीं है।

देश भर में सर्वत्र ऐसे पुरोहित समाज का धर्म में आधिपत्य था, जो दैवीशक्ति का प्रतिनिधि होने का दावा करता था। बुद्ध के मन में ऐसे ब्राह्मण के लिये जो ब्रह्म के संदेश वाहक के रूप में यह कह सकता कि—"मुझे सोना या चाँदी कुछ नहीं चाहिये, न मैं इनसे किसी प्रकार का संपर्क रखता हूँ," हार्दिक प्रशंसा का भाव था। किन्तु जब वही संदेशहर पुरोहित बन गया और सोना-चाँदी इकट्ठा करने लगा तब वह आध्यात्मिक उपहार के रूप में मिली हुई अपनी शक्ति खो बैठा।

असल में बौद्ध धर्म उस विचारधारा का स्वाभाविक परिणाम था, जो कर्मकाण्ड, हिंसायुक्त यज्ञ के आडम्बर और पुरोहितवाद के विरुद्ध पहले से ही बहती आ रही थी और जिसकी आवाज हम उपनिषदों और गीता में सुनते हैं। वेद और उपनिषद पढ़ने का अधिकार शूद्रों को नहीं दिया गया था। न उन्हें यही अधिकार था कि द्विजों की तरह वे भी यज्ञ करके लोक और परलोक में सुख भोगने की योग्यता प्राप्त करें। उस समय का समाज, सचमुच ही बौद्धिक संकट का सामना कर रहा था। जनसाधारण की कठिनाई यह थी कि यज्ञ को छोड़कर उसके आगे कोई और मार्ग नहीं था। किन्तु समाज के सभी चिन्तक यज्ञ के खिलाफ होते जा रहे थे और साधारण गृहस्थ को भी यह भान हो रहा था कि यज्ञों के आलोचक झूठ नहीं कहते हैं। दूसरी ओर उपनिषदों की चोटी से जो ज्ञान आ रहा था उसके पास तक साधारण मनुष्य की पहुँच नहीं थी। देश में मत-मतान्तरों के जो झकोरे चल रहे थे वे भी उसे बेचैन किये हुये थे। ऐसी हालत में जनता कोई ऐसा धर्म चाह रही थी जो सुगम और सुबोध हो, जिसमें पशुबलि की क्रूरता न हो और व्यर्थ का आडम्बर भी नहीं, जो मनुष्य को अतिभोग से दूर रखे और यतिवृत्ति की कठोरता से भी, जो मनुष्य के ध्यान को तो धर्म की ओर ले जाय पर अनेक प्रकार की उलझनों में न डाले।

असल में, जनता कोई व्यवहारिक धर्म चाह रही थी और बुद्धदेव ने वही धर्म उसे दिया भी। उन्होंने वैदिक धर्म के मूल पर प्रहार नहीं किया, बल्कि उनकी चोटों के निशाने वैदिक धर्म की कुरीतियाँ और कमजोरियाँ थीं। इसलिये यह मानना अधिक युक्तियुक्त है कि बौद्ध धर्म कोई नई शिक्षा नहीं, बल्कि हिन्दुत्व का ही संशोधित रूप है। असल में अपनी कुरीतियों से लड़ने के लिये हिन्दुत्व ने ही बौद्ध धर्म का रूप लिया था। जैसा कि वह, प्रत्येक संकटकाल में लेता रहा है, और जिन आचार्यों ने बुद्धदेव की गिनती हिन्दू धर्म के दशावतारों में की, उनका भी यही भाव रहा होगा कि बुद्ध पराये नहीं अपने हैं और धर्म संस्थापनार्थ विष्णु जैसे राम-कृष्ण बनकर आये थे, वैसे ही पशुहिंसा रोकने के लिये इस बार वे, बुद्ध बनकर आये हैं :—

"निन्दसि यज्ञविधेरहह श्रुति जातम्,
सदय हृदय दर्शित पशु घातम्।
केशव धृत बुद्ध शरीर, जय जगदीश हरे॥"—जयदेव

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बौद्ध धर्म मुख्यतः आचार धर्म है। बुद्ध जानते थे कि मनुष्य का अच्छा या बुरा होना, सुख या दुख पाना, उसके कर्म या चरित्र पर निर्भर करता है। आदमी का ध्यान इस बात पर रहना चाहिये कि वह करता क्या है, इस बात पर नहीं कि वह जानता क्या है। करने और जानने में, अर्थात् कर्म और ज्ञान में, बुद्धदेव ने कर्म को ही मुख्य माना। उन्होंने ज्ञान और भक्ति को छोड़कर केवल कर्म को पकड़ा और जीवन भर वे उसी का उपदेश देते रहे।

जहाँ तक मोक्ष के सिद्धान्त का सवाल है बुद्धदेव का उपनिषदों से कोई मतभेद नहीं दीखता। और मोक्ष के लिये जैसी साधना उपनिषदों ने निर्धारित की है, बहुत कुछ वैसी ही साधना बुद्धमार्ग में भी है। इस देश में वेद और ब्राह्मण की अवज्ञा करके तथा ईश्वर है या नहीं, इस विचिकित्सा से अपने को अलग रखकर भी, बुद्धदेव हिन्दुओं के दशावतारों में गिने गये, केवल इतनी-सी बात यह दिखाने को यथेष्ट है कि उनका व्यक्तित्व अनुपम रहा होगा तथा वे साधुता के जीते-जागते प्रतीक रहे होंगे। और सच पूछिये तो वेद और ब्राह्मण की निन्दा करना उनका कोई प्रमुख लक्ष्य नहीं था। यह चीज तो बाद को प्रमुख हुई, जब ब्राह्मण और बौद्ध आपस में विरोधी हो गये। स्वयं बुद्धदेव निन्दा के लिये किसी की निन्दा करते रहे हों यह मानने की बात नहीं है। वे दया और मैत्री के आगार थे। उनके उपदेशों के जो ग्रंथ हैं उनसे मालूम होता है कि तथागत संकल्प के पक्के, विचारों के अडिग तथा वाणी और आचरण में अत्यन्त कोमल और विनम्र थे। उनमें दुराग्रह का नितान्त अभाव था और वे व्यक्तित्व के जोर से अपना धर्म चलाना नहीं चाहते थे। उपनिषद्काल में भारत-वासियों का स्वाधीन-चिन्तन जहाँ तक पहुँचा था, उसे उन्होंने वहीं से उठाया और बढ़ाकर वे उसे काफी दूर ले गये। स्वाधीन चिन्तन और बुद्धिवाद के वे अद्‌भुत प्रेमी थे।

वे व्यावहारिक गुरु थे तथा ऐसे अनुष्ठानों के फेर में वे कभी नहीं पड़े जो बुद्धिगम्य न हों अथवा जीवन के लिये जिनका कोई उपयोग नहीं हो। धर्म का ऐसा व्यावहारिक नेता सौभाग्य से ही मिलता है। जातिप्रथा को चुनौती देकर बुद्ध ने एक महान आन्दोलन का आरंभ किया था जो प्रायः गांधी तक चलता आया है और आज भी चल रहा हैं। उन्होंने मनुष्य की मर्यादा को यह कहकर उठाया कि कोई मनुष्य केवल ब्राह्मण-कुल में जन्म लेने से पूज्य नहीं होता, न कोई शूद्र होने से पतित होता है। उच्चता और नीचता जन्म पर नहीं, कर्म पर अवलम्बित हैं। इसलिये ब्राह्मण भी पतित हो सकता है और शूद्र भी अपने को पूजा के योग्य बना सकता है। यह ब्राह्मण धर्म के खिलाफ सबसे बड़ी बगावत थी, और बौद्धों का ब्राह्मणों ने जो विरोध किया, मुख्यतः उनके इसी विद्रोह के कारण।

आज संसार में विद्वेष, हिंसा और भ्रष्टाचार-अनाचार का अखंड साम्राज्य छाया हुआ है। मानव आचारहीन हो अपने घृणित तुच्छ स्वार्थों की बलिवेदी पर मानव की बलि चढ़ा रहा है। मनुष्यमात्र बंधु हैं, इस विवेक को वह खो चुका है। मानवता जातिवाद, 'अर्वाचीन धर्म' और सम्प्रदायवाद के विकट संघर्षों के कारण काँप उठी है। नैतिकता और सदाचार का सर्वत्र लोप हो रहा है। चरित्र का यह ह्रास देश के लिये घातक सिद्ध हो रहा है। मेरा यह मत है कि अति भौतिकवाद, विज्ञान और सिद्धान्तहीन राजनीति के कारण ही जीवनमूल्यों के लिये संकट पैदा हुआ है। अति भौतिकवाद की अन्धी दौड़ विज्ञान की दिशाहीन होड़ तथा कुर्सी और सत्ता प्राप्त करने की दिशाहीन राजनीति ने भारतीय दर्शन के मूल तत्त्वों, नैतिकता, मानवता तथा अध्यात्मवाद पर तेजी से प्रहार शुरू कर दिया है। आज संसार में अशांति और अराजकता का मूल कारण भी यही है। इसलिए जीवनमूल्यों पर आये संकट का सामना करना बहुत आवश्यक है। और इस संकट का हल राजनीति के पास है नहीं। इस परिस्थिति में मानवता के कल्याण के लिये बुद्धदेव के अनूठे जीवनादर्शों एवं अनमोल धार्मिक उपदेशों के प्रचार-प्रसार की अत्यन्त आवश्यकता आ पड़ी है जिससे वह इस संकट से मुक्त हो अपने महान् लक्ष्य सुख और शांति की ओर अग्रसर हो सके।

दूसरी महत्त्वपूर्ण बात है कि जनहितकारी बौद्ध धर्म के इतिहास का एक पृष्ठ भी ऐसा नहीं है जो रक्तरंजित हो। बोधि मंजुश्री के समान बौद्ध धर्म के पास एक ही तलवार है—प्रज्ञा की तलवार—और उसका एक ही शत्रु है अज्ञान। बौद्ध धर्म और शांति का सम्बन्ध कारण-कार्य का सम्बन्ध है। बौद्ध धर्म मन में शांति का संचार करके उसका बाहर प्रसारण करना चाहता है। जहाँ अन्य धर्मों में पात्र में रखी जानेवाली वस्तु के विवेचन में अपने दार्शनिक ज्ञान की सारी पूँजी खर्च कर डाली गयी है, वहाँ बौद्ध धर्म में पात्र की शुद्धि पर ही सबसे अधिक जोर दिया गया है और यही इस धर्म की सबसे बड़ी विशेषता है और इसी से आस्तिक-नास्तिक दोनों ही इस कल्याणमूलक धर्म में समान समाधान पाते हैं।

यह सही है कि रूढ़िप्रिय मनुष्य की अँतड़ियों के घातक फोड़े में बुद्ध भगवान ने नश्तर लगाया था और उससे वह एक बार क्रुद्ध हो चीख उठा था, पर वहाँ भी भगवान की असीम करुणा को शल्याविद्ध मनुष्य के अन्तर की पीड़ा हरनी थी, उसका सड़ा मवाद निकालना था, उसका हृदयघट शुद्ध करना था। यदि रोगी के प्रलाप और अभिशाप से भगवान डर जाते तो उसे 'ब्रह्मविहार' का आनन्द-लाभ कैसे होता?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

संतों का ध्येय सत्याचरण होता है, दूसरों के आदर का पात्र बनना नहीं। धार्मिक सत्याचरण की भूख और प्यास के बजाय पर्याप्त आत्म सम्मान और आत्म-नियंत्रण प्राप्त करना और शिष्ट और अच्छा बनना अधिक सहज है। संत लोग हमेशा सीमा का उल्लंघन करते हैं। उनका सन्तत्व ही इसमें है कि वे सीमा के बन्धन में न रहें। महात्मा बुद्ध श्रमण परंपरा में अवश्य थे, पर वे समदर्शी संत, क्रांतिकारी समाज-सुधारक तथा करुणा की प्रतिमूर्त्ति थे। उनके मानवतावादी जीवनादर्शों ने मुझे प्रभावित किया अतः मैंने उनके जीवन को आदर्श मान, उनके चरित्र के सर्वांग निरूपण और उनके जन-कल्याणकारी उपदेशों के सहज बोधगम्य लोक-भाषा में प्रचार-प्रसार के लिये इस महाकाव्य की रचना की। श्रमण और संन्यासी में अन्तर ही क्या है? जिसने समता का आचरण ग्रहण कर लिया वह है श्रमण, जिसने चित्त के मैल को हटा दिया वह है प्रव्रजित। जिसे जो जँचे वह मार्ग ग्रहण कर ले, सभी मार्ग उसे निर्वाण की ओर ले जायेंगे। कारण,

"(बहुधाप्यागमैर्भिन्ना) पन्थानः सिद्धि हेतव।
त्वय्येव निपतन्त्योघा जाह्नवीया इवार्णवे॥"—कालिदास

मुझसे, संस्कृत-विश्वविद्यालय, वाराणसी में 'बउधायन' का पाठ करते समय, अथवा अन्यत्र कई कवि-सम्मेलनों एवं कहीं कहीं परिव्राजक-मंडली में, यह प्रश्न पूछा गया कि आपने शांकर-सम्प्रदाय का संन्यासी होकर भी श्रमण धर्म में स्थित बुद्धदेव-चरित पर महाकाव्य की रचना क्यों की? कौन सी ऐसी प्रेरणा है जिसने आपको मजबूर किया? मुझे सचमुच आश्चर्य हुआ कि लोग इस तरह का प्रश्न क्यों करते हैं? मेरी दृष्टि में यह प्रश्न ही असंगत है। सम्प्रदाय-निरपेक्ष मानवतावादी दृष्टिकोण से ही मैंने यह कार्य किया है। मैं बुद्ध, शंकर, रामानुज, स्वामी रामानन्द, वल्लभाचार्य आदि सभी महात्माओं को समान रूप से संतशिरोमणि एवं लोकनायक महापुरुष मानता हूँ। इस रचना-कार्य से मेरा कायाकल्प हो गया और मुझे आनन्द और शांति की प्राप्ति हुई।

मैं कवि या विचारक नहीं, एक सामान्य व्यक्ति हूँ। किन्तु प्रकृति की प्रेरणा से लोकनायक महात्मा बुद्ध के उज्जवल चरित्र से प्रभावित होकर अपने अन्त.करण के सुख और आनन्द के लिये मैंने उनकी लोकहितकारी जीवन-गाथा और उनके मंगलमय उपदेशों को भोजपुरी जनता की लोकभाषा में सरल मुक्तछन्दों में साजने-सवाँरने का प्रयास किया है। धर्म एवं दर्शन के रूक्ष तत्वों को जनता के सन्निकट पहुँचाने के लिये कविता अत्यन्त उपयुक्त माध्यम है।

महात्मा बुद्ध एक ऐतिहासिक पुरुष हैं। अपने मधुर स्वभाव, दिव्य अनुभव और अलौकिक स्फूर्तिदायक कार्यों से उन्होंने एक नये युग का सृजन किया, घोर अंधकार में भटकते हुए किंकर्त्तव्यविमूढ़ मानव-समुदाय को नयी राह दिखाई। इतिहास के उस ठोस सत्य को कोमल और रमणीय बनाकर काव्य की छवि प्रदान करने में कहीं-कहीं कुछ कल्पनाओं का भी सहारा लिया गया है। पालि और संस्कृत में रचित विपुल साहित्य-सामग्री के आधार पर ही इस तरह की कल्पनाओं को इस महाकाव्य में स्थान मिला है। लुम्बिनी में भगवान के जन्म की अलौकिकता, महर्षि असित का आगमन और भविष्य-कथन, तथा उरुवेला के तपकाल में बुद्धत्व-प्राप्ति के पूर्व मार के विघ्न उपस्थित करने आदि के प्रसंग में इस तरह की उद्भावनाएँ हुई हैं। किन्तु इतिहास के भीतर ही भावनात्मक तथा कल्पनात्मक विस्तार की यह प्रक्रिया पूरी करने का यथासंभव प्रयास किया गया है। काव्य में भावात्मक तथा विचारात्मक दोनों प्रकार के चित्रण यथास्थान मिलेंगे।

आधुनिक युग के वैचारिक संघातों का प्रभाव उस युग के किसी काव्य ग्रंथ पर कैसे नहीं पड़ेगा? अतः इसमें आज के मानव के वैचारिक-अन्तर्द्वन्द तथा व्यावहारिक धरातल पर युगीन विषमता, हिंसा और युद्ध की विभीषिका आदि के चिह्नों की झलक मिल जाय तो यह अस्वाभाविक नहीं होगा।

मैंने वि० सं० २०१७ तदनुसार १९६० ई० के मधुमास में इस महाकाव्य की रचना आरंभ की और श्रावण शुक्ल द्वादशी वि० सं० २०२८ मंगलवार को नव बजे दिन में, राजगुरुमठ, शिवालाघाट वाराणसी में इसे पूरा किया। इस लम्बी अवधि के बीच संस्कृत, पालि, हिन्दी और अंग्रेजी भाषा के एतद् विषयक ग्रंथों को ध्यानपूर्वक पढ़कर बदलते हुए समय के अनुसार इसमें स्थान-स्थान पर अपेक्षित परिवर्त्तन किये जाते रहे।

इस महाकाव्य के प्रणयन में महावस्तु, ललितविस्तर, अभिनिष्क्रमण-सुत्त, जातकट्ठकथा, अंगुत्तर निकाय, मिलिन्द पंहो, महावंश, बुद्धचरितम्, बोधिचर्यावतार, आदि मौलिक ग्रंथों के अतिरिक्त डा० राधाकृष्णन् के भारतीय दर्शन, धर्म और समाज, अध्यात्मिक दृष्टि, प्राच्य धर्म और पाश्चात्य विचार, एस० एन० दास गुप्त के भारतीय दर्शन, आचार्य नरेन्द्रदेव के बौद्ध धर्म दर्शन, लामा तारानाथ के तिब्बत में बौद्ध धर्म का इतिहास, महापंडित राहुल सांकृत्यायन के बुद्धचर्या, मज्झिमनिकाय, दीघनिकाय, डा० गोविन्द चन्द्र पाण्डेय के बौद्धधर्म के विकास का इतिहास, आचार्य बलदेव उपाध्याय के बौद्ध दर्शन मीमांसा, डा० चन्द्रधर शर्मा के बौद्ध दर्शन और वेदान्त, महाकवि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दिनकर के संस्कृति के चार अध्याय, पं० हवलदार त्रिपाठी "सहृदय" के बिहार और बौद्ध धर्म, डा० नलिनाक्षदत्त के उत्तर प्रदेश में बौद्ध धर्म का विकास, तथा पाश्चात्य विद्वानों में रीज डेविड्स के 'बुद्धिस्ट इण्डिया', ओल्डेनबर्ग के 'बुद्ध', आचार्य शेरवात्सकी के 'बौद्धन्याय', और सेन्ट्रल कन्सेप्सन आफ बुद्धिज्म, डा० चाउलियांग-कुआंग के चीनी बौद्ध धर्म का इतिहास आदि सैकड़ों ग्रन्थों की आवश्यकतानुसार सहायता ली गयी है। अतः उन सभी मनीषी ग्रंथकारों का मैं चिरऋणी रहूँगा और उनके प्रति नम्रतापूर्वक कृतज्ञता प्रकाश करता हूँ।

भोजपुरी भाषा-भाषी जनपद के अमर सपूतों ने अपनी विलक्षण-प्रतिभा और वीरोचित पुरुषार्थ से भारतीय-संस्कृति की सदा रक्षा की है। भोजपुरी भाइयों के त्याग-बलिदान ने ही शकों और हूणों को देश से बाहर निकाल कर भारतीय स्वतंत्रता की, गाढ़े दिनों में रक्षा की। भोजपुरी भाषा और लोक-संस्कृति सदा वीरता का संदेश देती रही हैं। आज चरित्र-संकट के इस संक्रमण-काल में पुनः भोजपुरी जनता को नयी स्फूर्ति, नयी चेतना लेकर जागने की आवश्यकता है, जिससे उत्पीड़ित मानवता की रक्षा की जा सके और देश का सर्वाङ्गीण विकास हो। इसी पुनीत भावना से भगवान बुद्ध के लोकमंगलकारी जीवन-चरित एवं धर्मोपदेश को भोजपुरी भाषा में उतार कर गाँव-गाँव, घर-घर पहुँचाने के लिये यह कार्य किया गया है। भोजपुरी दस करोड़ लोगों की लोकभाषा ही नहीं, सिद्धों संतों और मारिशस, फीजी आदि देशों में बसे करोड़ों भोजपुरी भाई बंधुओं की मातृभाषा और व्यवहार-भाषा है। इसलिये भगवान के 'बहुजनहिताय, बहुजनसुखाय' दृष्टिकोण को सामने रख मैंने यह साहसिक कदम उठाया है। यदि यह रचना कुछ अंशों में भी जनहित का कार्य कर सकी तो मैं अपने श्रम को सार्थक समझूँगा।

मैंने इस महाकाव्य की उपादेयता और महत्त्व के सम्बन्ध में 'बउधायन-बोध दीपक' के नाम से भोजपुरी गद्य में एक भूमिका-पुस्तक की रचना करके १९८० ई० के दिसम्बर मास में ही उसे प्रकाशित कर दिया। मेरे विचारों की विशेष विस्तृत जानकारी के लिये सहृदय पाठक उसे देख सकते हैं।

इस ग्रन्थ को प्रकाशित करनेवाली संस्था भोजपुरी अकादमी, बिहार सरकार द्वारा गठित स्वशासी संस्था है। भोजपुरी भाषा और साहित्य के उन्नयन के लिये इसका गठन हुआ है। अपने जीवन की थोड़ी अवधि में ही इसने अनेक महत्त्वपूर्ण कार्य किये हैं। अतः जिन साहित्यकारों और लोकसेवकों ने इसके गठन में योगदान किया मैं उनका हृदय से आभारी हूँ। क्योंकि मैंने १९४०-४१ में स्वतंत्रता संग्राम में अपने बंदी जीवन से ही भोजपुरी की सेवा का व्रत लेकर अनेक कठिनाइयों का सामना करते हुए जो अनुभव किया है, उसके करते अकादमी की सेवा का महत्त्व समझता हूँ। संस्था की भाषा एवं व्यवहार की कतिपय नीतियों से मतभेद हो सकता है, पर उसकी नैतिक सेवा का मूल्यांकन तो करना ही होगा। मेरी सदिच्छा है कि भविष्य में भोजपुरी अकादमी अपने उपेक्षित साहित्यकारों-कलाकारों के लिये कल्पवृक्ष बने।

भोजपुरी अकादमी ने १९८० ई० के शुरू में 'बउधायन' के प्रकाशन का उत्तरदायित्व अपने कंधों पर लिया और उसे इस कार्य को पूरा करने में साढ़े तीन वर्ष का समय लगा। कुछ तो शिथिलता और लापरवाही अवश्य हुई, पर कुछ मजबूरियाँ भी हो सकती हैं जिनके चलते इतनी देर हुई। किन्तु मैं अकादमी के अधिकारियों की यह परमकृपा मानता हूँ कि उन्होंने इस विशालकाय महाकाव्य को प्रकाशित करने में अपना पर्याप्त समय, भारी श्रम एवं प्रचुर द्रव्य लगाया। मुद्रण-कार्य में दोष बहुत हैं। कहीं कहीं अकादमी के अधिकारी पंडितों ने शब्दों में तोड़-मरोड़ और फेर-बदल करके काव्य के सहज सौष्ठव को कुछ भंग किया है। इससे मेरे हृदय को कुछ ठेस लगी है, पर विचार करने के बाद अब मैं दुखी नहीं हूँ, बल्कि बिलकुल शांत और प्रसन्न हूँ। अगले संस्करण में उपर्युक्त सभी त्रुटियों का पूर्णरूप से सुधार किया जायेगा।

अकादमी के सुधी निदेशक श्री हवलदार त्रिपाठी 'सहृदय' ने प्रकाशन की त्रुटियों की चर्चा करते हुए अपने पत्रांक ३४६६ दिनांक २३-२-८३ में जो कुछ लिखा है, वह उनकी महानता का द्योतक है। पत्र में मेरी प्रशस्ति में जो निम्न बात लिखी गयी है, मैं उसका अधिकारी नहीं हूँ और उसमें अपने को लज्जित पाता हूँ। वे कहते हैं—**"हमरा करेजा देखावे के बउसाव नइखे. नाहीं त देखा विहितीं कि अपने के प्रति हमारा मन में का भाव बा? 'बउधायन' अइसन काम त बेयास-बालमीकि जइसन सिद्ध रिसी लोगे कइ सकत बा। एह से अपने सक्षात रिखीकल्प संन्यासी बानीं।"** यह प्रशस्ति निश्चित रूप से 'सहृदय' जी की विशालहृदयता प्रकट करती है।

संसार में सभी कार्य संकल्पकर्त्ता के मन के मुताबिक नहीं होते। किन्तु उससे दुखी और चिन्तित होना ठीक नहीं। मन पर विवेक का अंकुश होना चाहिये जिससे कर्त्ता को सुख और शांति मिले! लोकनायक संतशिरोमणि तुलसीदास जी इस दिशा में मेरे मार्ग-दर्शक रहे और अब मैं शांतचित्त और आनंदित हूँ। अकादमी के अध्यक्ष, निदेशक और उपनिदेशक मेरे स्नेहपूर्ण साधुवाद एवं सत्कीर्त के पात्र हैं। तथागत उन्हें चिरंजीवी, सकुशल और क्रियाशील रखें जिससे भविष्य में भोजपुरी भाषा एवं साहित्य अपनी यथेष्ट उन्नति कर सकें।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

महाकाव्य के प्रणयन में मैं अन्य बहुत से सहयोगियों और सेवकों का आभारी हूँ, अतः उन्हें स्नेहपूर्वक याद करना अपना कर्त्तव्य समझता हूँ। इस दिशा में सबसे पहले और सर्वाधिक मैं स्वर्गीय पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय का ऋणी हूँ जिन्होंने अपने 'अँजोर' में काव्य के प्रारूप को दश वर्षों तक प्रकाशित करते रहकर मेरे उत्साह को बढ़ाया और पर्याप्त बल दिया। नर्मदेश्वर सहाय जी सच्चे साहित्यकार, पत्रकार और भोजपुरी भाषा के निस्पृह सेवक तथा उन्नायक थे। भोजपुरी भाषा के पाणिनि और यास्क, महामनीषी उदार-हृदय डा० उदयनारायण तिवारी जी को मैं कैसे भूल सकता हूँ जो सरस्वती के वरदपुत्र एवं भोजपुरी धरती के अमर लाल हैं। उनकी कृपाविभूति से ही यह रचना पूर्ण हो सकी और आज प्रकाश में आयी है। डा० तिवारी जी ने इसके प्रणयन में प्राणशक्ति का कार्य किया। भोजपुरी जनपद के अनूठे रत्न डा० विवेकी राय ने सदा ही विवेकपूर्ण सुझाव देकर मेरी विवेकवती बुद्धि को जागृत किया, अतएव उनको भी मैं नत हो याद करता हूँ। डा० अनिल कुमार आंजनेय जी ने कर्मणा-मनसा-वाचा काव्य की रचना और उसके प्रकाशन में जो महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी, उनके लिये आभार व्यक्त करने वाले उपयुक्त शब्द ही मेरे पास नहीं हैं। बस गोस्वामी तुलसीदास जी के शब्दों में, उनकी अमूल्य सेवा के प्रति

"प्रति उपकार करौं का तोरा।
सनमुख होइ न सकत मन मोरा॥"

करते हुये स्नेह भरे सधुवाद से मैं अपना कृतज्ञता-प्रकाश करता हूँ। आचार्य पं० कुलदीप नारायण 'झड़प' जी भोजपुरी भाषा के आदि सेवकों में से प्रमुख और विनयी भक्त हैं। वे सचमुच भोजपुरी-सहित्य-जगत के उज्वल नक्षत्र हैं जिनसे हमें सदा प्रकाश मिला है। अतः उन ऋषि तुल्य साहित्कार 'झड़प' जी को भी मैं नत हो स्मरण करता हूँ। निपुण भोजपुरी-साहित्यकार और भोजपुरी भाषा के नैष्ठिक सेवक पं० गणेश चौबे जी को भी, उनकी श्रद्धा भरी सेवा-सहायता के करते मैं आदरपूर्वक याद करता हूँ। प्रतिभा के धनी साहित्यकार, सुकवि अविनाशचन्द्र विद्यार्थी की श्रद्धा भरी सेवा को मैं कैसे नहीं याद करूँ जिन्होंने समय-समय से मेरे इस कार्य में अपेक्षित सहायता की है। अतः अनन्य भोजपुरी सेवक समझ उनके प्रति भी मैं अपना आभार व्यक्त करता हूँ। सचमुच, विद्यार्थी जी की उदार भावना ने मुझे संजीवनी शक्ति प्रदान कर आगे बढ़ाया है।

अन्त में मैं अपने उन अनन्य भक्त और श्रद्धालु सेवकों को अवश्य याद करूँगा जिन्होंने महाकाव्य के रचनाकाल में राजगुरुमठ, शिवालाघाट, काशी में रहकर मेरी अमित सेवा और सहायता की। उनमें निस्पृह सेवक रहे हैं मेरे ब्रह्मचारी-शिष्य, संतशिरोमणि नारायण-दास उर्फ निगमानन्द जी (जन्मस्थान—बागड़-भोजपुर) तथा दूसरे अनुशासित और विनयी सेवक डा० योगीन्द्रनाथ शर्मा, आयुर्वेदाचार्य (गारा-रोहतास) हैं। यदि इन दो पुरुषार्थी और कष्ट-सहिष्णु सेवकों का हार्दिक सहयोग नहीं होता तो मुझे इस कार्य में इतनी सफलता नहीं मिलती। तीसरे विलक्षण सेवक, धन्वन्तरी तुल्य वैद्यशास्त्री, पं० बालकृष्ण शर्मा, (बरहतिल, आजमगढ़) रहे हैं, जिन्होंने इस लंबी अवधि में, अपने प्रवास-स्थान, रामघाट-काशी से, अपनी श्रद्धाभरी निःशुल्क काय-चिकित्सा-सेवा द्वारा मुझे जीवनदान दे यह कार्य संपन्न कराया। अतः ये तीनों अनन्य सेवक मेरे स्नेहभरे साधुवाद के अधिकारी हैं। कृतपुरा के मेरे परमभक्त शिष्य, योगीराय शर्मा (कनीय अभियंता, जन-कार्य विभाग), ने भी समयानुसार अपनी विभिन्न प्रकार की आवश्यक सेवाओं से इस ज्ञानयज्ञ को सफल बनाने में महत्त्वपूर्ण कार्य किया। अतः उनके प्रति भी अपना आभार व्यक्त करता हूँ।

वाराणसी के शिवालाघाट स्थित राजगुरुमठ में स्थायी रूप से निवास कर मैंने यह कठिन और गुरुतर कार्य किया, अतः मठ के उदार दाता और वैदिक सनातन-धर्म एवं संस्कृति के उन्नायक तथा काशीपुरी की मर्यादा के वर्त्तमान संरक्षक काशी नरेश, डा० विभूति नारायण सिंह शर्मा की धर्मप्रियता और दानशीलता के प्रति भी मैं विनम्र हो कृतज्ञता-प्रकाश करता हूँ।

आशा है, विज्ञ पाठकों को मेरी रचना संतुष्ट कर सकेगी।

—दंडी स्वामी विमलानंद सरस्वती

मंगलवार, श्रावणी पूर्णिमा, सं० २०४० वि०

राजगुरुमठ, शिवालाघाट

वाराणसी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सर्ग सूची

सर्ग	पन्ना
मंगल—विनय	३
भगवान के जनम	४
देवढ़ी बिहार	१७
वयराग के डिम्भी	२६
महात्याग-महानिकास	३८
छंदक के लवटल	४७
तपोवन में	५१
देवढ़ी विलाप	६०
राजकुँवर के खोज	६८
बिम्बिसार से भेंट	७८
बिसयन के निंदा	८४
अराड़-आसरम में	९३
वउध-लीला	१००
मार (कामदेव) के हार	१०७
बोध-ग्यान	११५
कासी-पयान	१२५
चेलन के सिच्छा	१३१
महान चेलन के संन्यास	१४६
अनाथ पिंडक के उपदेस	१५४
पिता-पूत-मिलाप	१६४
जेतवन-दान	१७३
संन्यास के सीता आ चेलन के सिच्छा	१८०
अंवपाली के फुलवारी	१८७
अरदुवाइ के निरलय	१९३
लिच्छविन पर दया	१९९
सुगति के डहरि	२०४

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विषय			पन्ना
महा मुकुती	....	....	२१०
परमपद के सराहना	....	....	२२१
धातु के बँटवारा	....	....	२२७
धरम-बिचार	....	....	२३५
धरम-बढ़ंती	....	....	२४३
धरम-अछयबट कंचन	....	....	२५०
शुद्धि-पत्र	....	....	३८१—३८२

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बउधायन

[भोजपुरी महाकाव्य]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मंगल-विनय

बिना बिघिन-बाधा के !
कलमि धरे का पहिले,
हम ओही सुरसति माई के;
जोरि दशो नँह,
माँथ नवावत बानी;
जे बीना ले,
बइठल राजहंस का पिठिया;
सुख से बिहरत बाड़ी;
निरमल मानसरोवर में प्रिय,
कले-कले मुसकात हँसत कुछ;
सहज-सुगंधित,
सुघर कमलफूलन का बीच !
काहें से कि,
उहे दया करसु तऽ;
जीव बने अधिकारी,
विद्या-बानीं-बोध-विनय आ—
सुमति-बिचार-शील-गुन,
सुगति-मुकुति-निरवान-शांति के !

दूसर एही लगले,
धूरि-कनन ले छोट बहुत आ
एह जगत ले बड़हन;
चेतन सहज साच निरकेवल,
अति आनन्द शांतिमय;
बिना नाँव आ रूप-रंग भा—
अगम अनंत गढ़ लोकन में;
बहुरंगी रूपन में,
झलके भासेवाला,
मनबानीं का गति ले बहरी;

लीला रुचिगर,
सुघर सुरस-रचवइया;
सभका सिरजन-पालनहार,
जगत-पिता परमेसर;
विद्या-धाम शिरोमनि,
बिश्वनाथ-काशीपति;
गउरीशंकर गनपति के हम,
पद मरजादा रीति मोताबिक;
करत दंडवत बानी,
आठो अंगन सहित प्रेम से;
झुकि के उनका,
पुन्न चरन-कमलन में !

आखिर में हम झुकल सुभावन
ओही भाव-भगति-सरधा से,
नारायन प्रिय पदुमपानि आ—
रिखी बसीठ पराशर;
बेद व्यास शुकदेव नगीना,
गौड़पाद, गोविंद मुनी संग;
धरमाचारज शंकर,
पदुमपाद, विदमान सुरेसर;
अउरी अगली परंपरा का,
विश्वरूप जतिराज सुधरमी;
स्वामी सहजानंद विमलमति,
गुरुशिरोमनि;
हंसानंद धुनी के,
पा लागत बानीं कि;
महापुरुस मुनि बउधदेव के,
चरित-कथा शुभ सुना सकीं कुछ;

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बउधायन

भगवान के जनम

जहाँ धरम रथ,
धसल पाँक में;
असमय टूटल धूरा !
राति अन्हरिया,
बड़ा भयावन;
मचल अन्हेर,
धरतिया काँपल;
भइल धरम के हानी !
बढ़ले असुर अधम अभिमानी,
रिखी मुनी देवता सभे पर;
कइलन जुलुम जोर मनमानी !
सोना-चानी का टुकड़ा पर,
भइल जिनिगिया के जब सउदा;
मन अकास माया के बादरि,
उमड़ि-घुमड़ि नाँचत चहुँ ओर;
टिसुना-लता पनपि के तोपलसि,
सगरे डहरि अन्हार !
हिरदय मलिन रूप तन सुन्दर,
सोना का घरिया में माहुर;
बकुला भगत मोर बेदुवादल,
कउड़ी कारन मोह नाद में,
चोंच चभकि के बोरत !
बेंचत धरम इमान ग्यान के,
खुरपी से जरि खोदत !
साहुतर वेद हँचड़ि के फेंकत
झोंकत मतलब का भरसाईं ।
भेंड़ि बनाइ मूँड़ि लोगन के,
डालत जीव अफतरा ।
कले कले कइलन मनसउदा,
जग्य हूम के आड़ बना के;
किसिम-किसिम के जाल बिछवलन,
सराबोर एड़ी चिरुकी ले;
कइलन बहुत शिकार !
गऊमेध असमेध अनेकन,
जहवाँ रोज रचाये लागल;
तीर धनुस तरुवारि हाँथ में,
छूरा-छूरि गूँथि जनेउन;
बान्हि कटार कमर में !
खून खराबी मार-काट के,
भइल बजरिया गरम देस में;
डाँकू चोर छली ठग लुक्कड़,
घूमे लगलन साधु भेख में !
उठलि लहरिया बड़ा भयावन,
पाप समुंदर बढ़ल फफाइल;
डगमग करे धरम के नइया,
परलि चकोह भँवर में !
छेद निछान पुरंठी जरजर,
टूटल गोन डाँड़ पतवार;
बहल पवन ओनचास,
नाश के घरिया आइलि ।
पलरा भारी भइल पाप के,
आखिर गरहन लागल !
वहुत दिनन ले सुनगति आवति,
कले-कले धुँधुवाति;
लेवरक फारि काँच के भट्ठी,
अइसन गजब देखवलसि ।
ज्वालामुखी उँघाई तुरलसि
कले-कले जम्हुवात !
साँस लेत फुफकार भइल कुछ,
लाखन लहर उठल छितिराइल;
केतने वढ़ल अकासे ठेकल,
केतने गइल पताल !
आँचि सतवलस दसो दिसन के,
दिगपालन के आसन डोलल;

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हाथी करसु चिंघाड़ !
सेसनाग़ जी करवट लिहलन,
जगवा जरि के भइल खँगार !
भगतन के दुरदसा देखि ई,
'लोगवा' डँहकल जार बेजार;
दयासिंधु के दिलवा पसिजल,
बहल नेह के धार।
जोगिराज मुनि सीध उदासी,
ग्यान विराग अचल संन्यासी;
जाग उठल पहरू समाधि से,
देवभूमि के मुकुट हिमालय।
आखिर धीरज धरे कहाँ तक,
लोहा लागल देव असुर से,
धरम भूँइ पर संकट आइल !
जब-जब अइसन,
दुख-आफति माँथे मँड़राइलि;
देवअसुर में समर ठनाइल,
तब प्रभु के अवतार धराइल;
धरती के सभ भार हराइल !
करीं इयाद पिछलकी बतिया,
जब-जब अइसन जोग जुटल बा,
काई कंचन में लपिटल बा।
रिखि पुलस्त का कुल फुलवारी,
जामल रेंड़ धमोइ धतूरा,
ब्राह्मन होके बेद बाँचि के;
शंकर पूजत माँथ काटि के,
सीधि पाइ बउराइ गइल झट—
ग्यान धरम ईमान चाटि के,
लँगटे नाचल लूरि देखवलस !
आखिर फल का भइल छिपल का ?
हम परतोख देखाईं केतना,
हरनाकुस के बलीराज के;
जरासंध शिशुपाल कंस के !

प्रभु के माया बड़ा अपार
दुरबल जीव करे का पार ?
महा समुंदर लहराइल बा,
बड़वानल जब खउल रहल बा;
ऊपर नीचे तीन लोक में,
दसो दिसा चउदहो भुवन में;
अइसन तेजवंत परतापी,
सानी सिंघ देखाइल के ?
जे घमंड के फंदा काटल,
पवँरल थाह लगावल !
करीं इयाद इन्द्र के बतिया,
हेठ गुमान भइल कब ब्रज में ?
कइलन कोप इन्द्र बउरइलन,
छप्पन कोटि मेघ के बदरा
ब्रज पर भेजि खीसि में माँतल,
मूसर धार गिरवलन !
माया खेललि आँखि मुँदउवलि
प्रभजी लीला तनिक देखवलन;
गोबरधन गिरि कानी अँगुरी
झट उठाइ मुसकइलन !
ब्रज उबरल अपना पुरुसारथ,
विजय भइल जनता के !
बालरूप भगवान किसुन के,
गिरिवरधारी नाँव धराइल !

तइसे लोगवा,
सभ बेदन के आड़ बना के;
रिखि-मुनियन के नाँव हँसा के,
जब निपटे बउराइल।
एतने में बदलल परदा झट
बीतल राति विहान भइल !
साँस लेत अँगड़ात हिमालय,
तनिका जोति देखवलस;
उरुवा भइया खोंढ़रा धइलन—
चमगादुर भुसहुल के कोना।
ठग लबार के ठगई भागल;
सीदति काटि साधुता जागल;
उड़सल जादू टोना !
कपिलवस्तु में चक्का ऊगल
जुग के सूरज चमकि उठल !!
समय देखि सुभ शाकिय-कुल में,
सूधोदन का राजमहल में;
अगम गूढ़ दइबी माया के,
अजब रंगीला सपन भइल कुछ;
आगम तनिक बुझाइल।
बोध-ग्यान के,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जथाजोग उत्तम अधिकारी;
बोधिसत्व जी,
धारन कइ हाथी के रूप;
दहिना पाँजर से माई का,
पइठि पेट में गइलन !
कुछ सूतल कुछ जागल,
भरमत मोह-राति में रानी;
देखली उज्जर हाथी !
देहियाँ पोढ़ मोंटाइल सज से,
माँथ ऊँच आ लाल।
सोने रूपे सजल सवाँरल,
गंगा जमुनी काम कइल कुछ;
गोमेदक नीलम गजमोतिन,
हउदा जेकर झलक रहल बा।
महापुरुस के रूप सोनहुला,
कोटि सुरुज के तेज पाइके;
जगमगात विहँसत सुख पावत,
पिठिया बइठल शोभत बा !
छव दाँत चमकत हाथी के,
शुभ सिंगार मंगल के लच्छन !

अइसन नील कसीदा काढ़ल,
दइबी तम्मू आसमान के;
सुघर सोनहुला[1] लाल गुलाबी,
जहवाँ शोभि रहल बा लाखन;
किसिम-किसिम के फूल !
पारिजात के गजला अइसन,
हरिचंदन के हार हजारन;
माली कवन बनवलस कइसे,
गाँथल के एकरा के इहवाँ ?
हीरा रतन अमोल अनेकन,
कवन जवहरी पवलस कहवाँ ?
तीन लोक चउदहो भुवन ले,
जिनकर तेज विराजत बाटे !
सभकर सुघर सुमेरु रुपहुला,
छवकोर के;
खूब टहाटह ऊगल,
बहुत बिचित्तर तारा !

एही बीच अँजोर भइल आ—
चमचम चमकत तारा,
आसमान से डेग बढ़ावत;
पइठि गइल हाथी का पेटे !'
तेज पवन के पाँखि बान्हि के,
मन का उड़नखटोला बइठल;
गुनत-मँथत माया महरानी
देखत बाड़ी ई तसबीरि !
अमिरित पियत मनेमन गाजत,
अँखिया रस से सराबोर कि—
परदा चट से बदल गइल,
मलि-मलि कंचन कइल सजावल;
कइसन ई माटी के काया—
कि तनिके में लोप भइल;
बुल्ला नियर बुताइ गइल !
सुरुजदेव का रथ के देखि,
तारा लोग लुकाइल;
आसमान में लाली दउरल,
पहुँचल नया बिहान !
चहचहाइ के चिरई उठली,
खोंता से उड़ि बहरी अइली !
बिना देंहि आ—
रूप रंगवाला कोहरा के,
पहरा बदलल तेज भइल अब;
करम चाक तिनरंगा,
घूमे लागल तेजी से !
रानी जगली,
रंगमहल से बहरी अइली;
अनगुतहाँ का—
करम-धरम से फरिछा होके,
जा अशोक बगिया में;
जथा जोग आसन पर,
मनचित सोधि बइठली !
तब सनेस राजा के भेजली,
कि ऊ ओहिजा आके;
उनके दरसन देसु !
जब राजा जी,
अपना लायक;
मंत्री आ दरबारिन का सँग,

१. शुक्र, बृहस्पति, मंगल, शनि ओगएरह विभिन्न रंगरूप के ग्रह।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जाये लगलन;
महरानी का नियरा,
तब उनका मनवाँ में;
अइसन भास भइल कि—
'जइसे ऊ चलि,
एगो महापुरुस से;
मिले जात होखसु अब!'

जब लागल दरबार समय पर,
सभ दरबारी लोग जुटल आ—
नेवता पाके पंडित-बाभन,
निपुन जोतिसी चतुर सगुनिहा;
समुझि मनेमन,
खुसी मनावत गाजत;
जयजयकार सुनावत अइलन!
तब महरानी राजा जी से,
कहली अपना—
सपना के ई सुघर कहनियाँ!
सुनि के अचरजवाली बतिया,
गउर-गुनावन कइलन राजा;
तब पंडित आ चतुर सगुनिहा,
सभसे उनकर;
पहिला इहे सवाल भइल कि—
'एह गूढ़ सपना पर,
रउरा सभे विचार करीं।
सोचि समुझि के अरथ बताईं,
मनवाँ के संदेह छोड़ाईं!'

कुंभ मीन धनु सिंह गोनि के,
शुक मंगल बुध दसा तीनि के;
पंडित लोग बिचार कइल जब,
कले-कले तनिका मुसकाइल!
ओह लोग के,
बानीं इहे भइल कि—
"अब से रउरा राजमहल में,
दइबी जोति समाइल,
पहरा आइल महापुरुस के,
पाख अँजोर महीना दसवाँ;
अइसन जोग जुटत बा,

पाइब रउरा पूत प्रतापी;
जेकरा माँथे मुकुट बन्हाई,
ऊपर नीचे तीनि लोक के।
उदय अस्त ले राज करी ऊ,
कि धरती के भार हरी!

बोधिसत्व जी,
महरानी का गरभकोख में;
दसो महीना कल से,
एगो सुघर सोनहुला;
रतन जड़ल मंजूखा भीतर,
आपन समय बितवलन!
जे से कि ऊ,
गरभ गंदगी मल से;
रहलन फरक सूध निरकेवल!
अपना भोजन खातिर,
कबे उहाँ का;
पुहुट पदारथ,
माई का असतन से;
नाहीं लेके,
एगो कमल फूल से;
पावेवाला मधु से,
रहलीं सहजे लेत;
जेकर डंटी ताड़ फेंड़ से,
रहलि सातगुना तक लमहरि!
एह किसिम से,
जब सपना का बाद;
दसो महीना बीति गइल तऽ,
रानी मन में सोचे लगली;
कि अब ओह महान् पुरुस के,
समय जनम के आइल!

दइबी माया मोह जाल में,
सभकर आखिर अकिल हेराले।
केहू आदि अंत ना जाने,
कइसे बेद पुरान बखाने;
कथा अपार पार के पावल,
कहि अनंत सभई रहि जाला!
दिन दुइ तीनि रहल जब बाकी,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

माया रथ हाँकति माया के;
मनके पेरि घुमवलसि !
जिभिया भेजि सुरसती मइया,
आपन काम बनवलसि !
तब महरानी माया,
नियरा जाके राजा जी का;
आपन अरज सुनवली—
"अब बसंत रितु आइल,
केतने गाँछे विरिछ टुसिअइलन;
केतने हरियर पतई फोरलन,
कतहीं लाल सोहासुत लहलह;
ललका पल्लो तामा रंग के,
झूमि चमकि मुसकात कले-कल;
नजरि मारि नयनन के खींचत !
लता गाँछ फूलन से लदि के,
आपन धन सभई के बाँटत;
गमगम गमकत बाड़न !
पंछी सुख से विहरत वन में,
चहचहात जनु मंगल गावत !
धीर बटोही प्रेमी भँवरा,
टहरि-घूमि बगियन में;
झूमि-झूमि रस लेत रसे-रस,
रागरंग झलकावत !
चारो ओर पराग उड़त बा,
लोभी पवन पइठि फुलवरिया;
सुरस सुगंध चोरा के,
कल से गोड़ दबवले;
निकलि पराइल दूर-देश के,
हुकुम मिले हमरा के,
हमहूँ टहरे-घूमे-
वन के सोभा देखे जाइबि !"
दइवी दया विचित्तर भाई,
का केके समुझाईं ?
कवन जतन उतजोग लगाईं,
गूढ़ भेद कइसे बतलाईं ?
करमन का मेहीं धागा के,
मोतियाबीन भइल अँखियन के;
हम कइसे लउकाईं ?

काट-छाँट कुछ भइल शुरू में,
राजा जी घबड़इलन;
हठल देखि रानी के आखिर
राजी भइलन लाचारी से !
रानी का इच्छा के,
पूरा करे घुमावे खातिर;
उनकर हुकुम भइल कि—
"वनबिहार के,
सभ तइयारी होखे सज से।
नगर-डहरिया गली दुवारि,
खूब सजावल जासु !
माली साजि सुघर फुलवरिया,
सोभादार बनावसु !
सेवक लोग साजि रथ उत्तम,
महरानी के सुबरनवाला,
सबुजा रँग के,
सिंघी घोड़ा नाधि सिखावल,
जल्दी से तइयार करसु !"
एह किसिम से,
हाथी घोड़ा रथ असवारी;
सुघर पालकी सोनावाली !
कहीं पोढ़ हथियार हाथ ले,
सजग शूर बीरन के पलटनि;
कहीं सिपाही पहरेदार !
नोकर-चाकर चतुर कँहरिया,
उपरोहित जोतिसी पँवरिया;
बेदुवा बाभन भगत पुजारी,
लउँड़ी दाई सखी सहेली;
मुँहलग्गू मन बोधेवाली,
महरिनि मालिनि धोबिनि नाउनि;
सोभारूप सिंगार सोरहो,
साजेवाली निपुन सुलच्छनि;
मंगल सोहरि गावेवाली,
चारि रूप के खटरस भोजन;
सुरस सूध छप्पन परकार,
सज से बना खियावेवाली;
सभके हुकुम दियाइल,
हो तइयार चले के !
तेरस सुदी देवबेला में,
शुभ बइसाख महीना;

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पह फाटे ले पहर पहिलहीं,
आखिर भइल पयान!

कपिलबस्तु का सटले तनिका,
गुनगुनाति गावति बा;
कल-कल सबद सुनावति बा,
मदमातल रसवती रापती,
नगर के—
सोभा सुघर बढ़ावति बा!
गहगहात लउकत पँजरे बा,
सुघर लुंबिनी जंगल।
जहाँ हिमालय का गोदी में,
किन्नर गावत मंगल!
धनि धरती के लाल हिमालय,
जग के सुघर सिंगार।
जहाँ खजाना धातु दरब के
सोना-चानी सँइतल पूरा;
गोमेदक नीलम गजमोती,
बहुत अमोल रतन के खानि!
धन्न देस भारत हमनीं के,
बहुत पुन्नि से पवलस अइसन;
माँथे मुकुट नगीना!
जुग-जुग से उत्तर का कगरी,
देवरूप ई सजग पहरुवा;
बीर बुनेला सेनापति के
काम अमोल करत बा!
जहाँ सुमेरु सुघर धवलागिरि,
चमचमात धपधप लउकत बा;
अलकापुरी, अमर कैलास!
सुखी झुंड झूमत हाथिन के
हरिन चउकड़ी फानत माँकत;
बरबस मन के मोहत बाड़न!
कतहीं सुरही गइया खुस हो,
विमल चान किरनन के,
टहरि घूमि रस लेत!
टहटह सुघर अँजोरिया पाके,
पोंछिया उनकर चमचम चमकति!
मानों परबत का राजा के;
बिनय प्रेमवस,
चँवर डोलावत होखसु!

झिरझिर झरना,
गुनगुनात अँठिलात कले-कल;
कतहीं सरकत,
डेग बढ़ावत;
थिरकत सातो सुर में गावत,
आवत;
माई भागीरथि के,
चरन छुवे के!
जहवाँ जंगल आवनूस के,
सागवान आ देवदारु के;
धूप दसांगि गुगुल के!
केरा आम बेल के गँछिया,
तेन पियार बदाम कहीं बा!
परबत का फाटिन में,
कतहीं दीपक बूटी;
निरमल चटक अँजोरिया पाके,
चानदेव का;
गतिबल तेज मोताबिक,
दीया नियर जोति फइलावत;
किन्नर जच्छ किरात लोग के,
डहरि देखावत पसरल बाड़ी!
कहीं सुघर साँवर मिरिगादल,
मउज मनावत, छउकत धावत;
अपने नाभि लुकवले,
कसतूरी के सुघर सुबास;
ना जनला से:
घूमिघूमि के;
बेकल—
सूँघि रहल बा घासि!
परबत का चोटिन का नीचे,
गुफा खोह कुटियन में;
सघन बिरिछ छाया में कतहीं,
रिखि मुनि ध्यान समाधि लगवले;
बिमल रूप—दरसन में लीन!
परबत राज हमार हिमालय,
सभ गुन-आगर उत्तम;
उनकर महिमा गाईं केतना?
महादेव सिव अवढर दानी,
पारवती माता महरानी;
सेकर घर दरबार जहाँ बा,
का देईं तेकर परतोख?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

धन्न हिमालय! तोर लुंबिनी
धरती धन्न साल बगिया के;
गहगहात जेकर सुघराई,
सदा बहार मखमली रंग के
मनवाँ मोहलस महरानी के
गरभे थाकि जइसहीं रानी,
चहुँपि साल गँछियन का छाँहीं;
टहनी धइ सुहुताये लगली,
उत्तम दिन सुभ मंगल बेला,
ताहि घरी, कोलिय-कुल-माता,
महरानी माया का कोखनि;
पाख अँजोर पुरनवाँसी के,
पूख नछत्र में;
पूरनकला चनरमा उगलन,
भइल लुंबिनी का बनवाँ में;
गउतम के अवतार!
उरुव जाँघि से,
पृथू हाँथ से;
इन्दर नियर बली परतापी,
मांधाता माँथा से;
कच्छिवान काँखी से,
परगट हो धरती पर अइलन!
माया का पाँजर से तइसे,
जनम भइल गउतम के!
कई कलप का संचित,
परम पवित्तर पुन्न-करम से,
सूध बोध हिरदय में रखले;
डेग परल धरती पर उन्हुकर,
सजग भाव से जगले!
निकलि गरभ से चमकल बालक,
जइसे भोर समय में सुरुज!
सुघर सोनहुली जोति देंहि के,
भली विराजलि दसो दिसन में!
तेज हरन भइला से झंखत,
मद्धिम परल चिराग अंत में!
चारो ओर ताकि के बालक,
अरथ गँभीर बचन कुछ बोलल—
"हो कयलान जगत के,
धरम बढ़े धरती पर।
ढूँढ़ीं छीर समुंदर सज से,
ग्यान रतन हम पाईं।
एही खातिर अइलीं जग में,
ईहे अंतिम जनम हमार!"
एही सुभ साइति पर,
धपकत फिरिनि समान चान का;
चुवल अकासलोक से आइल,
निरमल जल के धार दूइ गो;
ठंढा गरम गिरल माँथा पर,
मन में अपना खुसी मनवलस!
धरती पर पग धरते तुरते,
सात कदम ले चललन गउतम।
धीर-थीर गंभीर भाव से,
ठीक सतहवा तारा जइसे!
डेगे-डेग देखाइल,
कमल फूल मुसकाइल!
धरती खुस हो कमल उगवली,
लात परल उन्हुकर कमलन पर।
बरिसल देवलोक से फूल,
देवराज कइलन अगवानी;
पलक गिरत हँसि अपना गोदी,
झपटि उठवलन गउतम जी के!
सुघर पलंग बनल चंदन के,
सोना मढ़ल पार पाटिन में;
झलकत बा नीलम पुखराज!
गोमेदक सिरहन में गाँथल,
लाल चार कोनन पर नाथल।
पदुमराग मूँगा मुँड़तारी,
*लहसुनिया सोहत गोड़तारी!
माँत करत मखमली सेज के,
कारीगरी कारचोबी के!
ऊपर ले चाननी विराजति,
मोतिन के झलरी मन मोहति!
सूधोदन के लाल दुलरुवा,
सोवत तंहवाँ सुख से!
तेज प्रताप देखि जच्छपति,
सुवरन कमल हाथ में लेके;
खड़ा झूथ में घेरले बाड़न!
अवतारी बालक का जमले,

* वैदूर्यमणि।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सुघर सुमेरु कील पर ठहरल;
धरती काँपलि,
पवनवेग से—
नदीधार में जइसे डेंगी!
बिना मेघ बदरी के,
चंदनगंध सुवासित;
लालनील दुइ रंग कमल के,
सरगलोक से बरिसल;
फूल लुंबिनी बन में!
झुरकत पवन तरावट लिहले.
बरिसावत पहिरन पोशाक।
उगलन सुरुज तेज पा वेसी,
अगिनि बरलि बे हुँकले!
जहाँ रहल बालक के बास,
ओकरा उत्तर पुरुबे कोना;
सुगम सुरस जल भरल इनार,
अपने आप भइल तइयार!
तीरथ नियर मानि जेकरा के,
सरबीलोग देवढ़ी के;
गुनत मँथत अचरज में भटकत,
कामधाम सभ कइली पूरा;
मन में मधुर लालसा लिहले,
बालक का सुभ दरसन खातिर।
धरमी महापुरुस बटुरइलन,
भइल धरम-धक्का वन भीतर!
असमय फूल खिलल फेंड़न पर,
सभई खुस हो लोढ़ल सज से;
बरिसावल बालक का ऊपर!
हरिन-चउकड़ी फनलनि खुस हो,
पंछी मधुर सुरन में गबलनि;
नदी शांत हो बहलि कले-कल,
निरमल दिसा मगन मन-
झूमि झमकि पयजेब बजावति,
हँसल अकाश नगारा ठनकल;
गुरु पाइ सुख समति सुगति के,
जग में सांति बिराजलि!
माया के का कहीं कहानी,
कइसे मन के खुसी बखानीं;
जग में भारत भूमि नगीना,
जहाँ देवदुरलभ मानुस-तन।

पाके भगवत-भजन करे के,
देवतो लोग सिहकते बाड़न;
तहवाँ ओकर भागि सराही,
अइसन चमकत नगद नमूना;
लाल रतन जनमावल जे!
हंशवंस अइसन के पावल,
जेकर जस गावल संसार!
जनम विचित्तर देखि पूत के
मोहछोह ममता में बेकल;
चतुर धीर राजा घबड़इलन,
नेह छलकि अँखिअन में आइल;
वहल दुइ आंसू के धार!
बाभन-बेदुवा पंडित ग्यानी,
जिनकर सुजस देस में फइलल;
सभई जिनके माँथ नवावल;
उहो लोग सुनि दउरल आइल;
पोथी पतरा खुलल देखाइल;
कले-कले मनवाँ मुसकाइल!
देहिया में ना खुसी समाइलि
आखिर बतिया खुललि कहाइल—
"सजगर सुबरन महल बनाईं
हीरा मोती रतन जड़ाईं,
हाथी घोड़ा बान्हि सजाईं,
केतनो दीया बारि उगाईं;
सुघर मखमली सेज बिछाईं,
पूत बिना सभ सोभा फीकी;
सूना सगरे महल अन्हार!
चिंता छोड़ि मगन मन डोलीं,
पवलीं रउरा पूत सपूत!
चमकत सुबरन दिया वंस के,
जग का दुखी लोग के रइछक;
दुख के भार उतारेवाला.
दुखी धरतिआ माई के।
सत्त अहिंसा सुमति सांति के,
सुगति धरम के दूत!
जो धरती के राज करे के,
तनिको इच्छा कइलसि ई;
नेति धरम से जगविजयी हो,
राजन के सिरताज कहाई!
जइसे तेज सुरुज के चमकत,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सभ गरहन का ऊपर!
सुगति शांति-सुख जोहे खातिर,
जो जंगल के डेग बढ़बलसि ;
सब संतन का पोढ़ ग्यान के,
मुनि-मति तत्त ग्यान के,
सहज-भाव से जीती!
बोध ग्यान धन हीरा पाके-
चमकि उठी धरती पर,
जइसे परबत बीच सुमेरू !"
"सभ धातुन में,
जइसे निरमल सोना;
परबत बीच सुमेरू,
जल का भंडारन में सागर।
तारन बीच चनरमा,
अउरी अगिनी-वंस उजागर;
सुरुजदेव महराज,
ओहतरे मानुस-समाज में,
सेसर राउर पूत !
अँखिया बड़ी एकटक उनकर,
निरमल चिक्कनि तेज।
एसे सभ कुछ देखि सके में,
उनके समरथ जानीं।"
तब राजा ई पुछलन—
"का कारन कि,
रउरा सभ बतलवलीं जिनके;
सभई ओह गुनन के,
राजकुँवर जी धारन कइलन;
ऊ पहिले का,
रिखि मुनियन में रहलन नाहीं ?"
तब उनका से,
बाभनलोग कहल समुझावल—
"दुनियाँ में मसहूर करम जस,
अउरी उत्तम बुद्धि;
भइल पहिलहीं ना केहू में,
समय पाइके;
देखल गइल बाद में !
एकरा में ना,
दोबिधा संका के कुछ बाति !
काहे से कि—
सभे किसिम के गुन तऽ

कवनो कारन से आवेलन !
सुनीं प्रेम से,
कुछ परतोख हमार।
'शीलकमन हे !
कुछ के सुरु सनातन रीति,
सहज चलावे वाला,
मुनि भिरगू आ निपुन अंगिरा,
जवन राज-सासतर ना रचलन;
ओके उनकर पंडित पूत,
सुकर बिरसपति रचलन सज से !
जवना लोप भइल वेदन के,
पहिले केहू देखल नाहीं;
उनके मुनिवर वेदव्यास जी,
देखि समुझि के;
कई भाग में कइलन !
सभसे पहिले, बालमीकि मुनि,
रसगर पदवा रचलन।
जेके चवन महरसी—
ना कइ सकलन !
जवन वैदकी-विद्या,
अतिरी मुनि ना रचलन;
ओके उनकर पूत,
आतरेय मुनि कइलन !
हे राजा जी !
बिसवामितर रिखी के पुरुखा,
महिमावान कुशिक जी;
जवन दुलम बाभन-पद,
नाहीं पवले रहलन;
ओके गाधिपूत परतापी,
बिसवामितर महरसी पवलन !
राजा सागर तेज बलवाला,
बेड़ा बन्हलन सागर बीच;
जेके पहिले,
इछवाकू का कुल में;
केहू बान्हल नाहीं !
ग्यान-जोग में,
बाभन कुल के आचारज पद;
जेके दूसर पावल नाहीं
ऊ पद मिलल जनक के !
एसे ना तऽ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उमिरि सबूत मनाई,
नाहीं बंस-विसेख !
जग में केहू कतहीं,
मरजादा पद पाइ सकेला।"
एह किसिम से—
बाभन पंडित लोग;
बोध दिहल राजा के !
तब राजा ऊ खुश हो,
ओह लोग के;
कइलन जथाजोग सतकार !

धरती पर अवतार भइल,
सगरे जग में तब हाल गइल,
बीतलि राति—
अन्हरिया लमहरि,
लाली देखि जुड़ाइलि छाती,
हँसि के लोग बिहान कइल !
नउबत बाजल राजमहल में,
पिहिकि उठलि सहनाई।
चक्का ऊगल चमचमात अब-
नया जोति मुसकाइल !
जहाँ छतीसो राग-रागिनी,
आज अनेक सजाइल !
बाभन-बिसुन जोतिसी पंडित,
जे जब राजसभा में आइल;
धन दउलत सभ पावल,
सभई के सतकार भइल।

तपसी मुनि ग्यानी संन्यासी,
जोगीराज सुरेमन संत;
बूढ़ असित महराज,
ओह समय जे-
धवलागिरि पर रहि के,
ध्यान समाधि लगावसु;
जिनका पासे पाँचो के बल;[1]
तप से भजन-तेज से,
सहज भाव से मिलल रहे सुभ;

ऊ दइबी नयनन से देखलन—
'शाकियकुल में सूधोदन घर,
जनम मरम के अंत करके;
प्रभुजी-
उतरि लोक में अइलन'
दरसन करी ग्यान कुछ सीखीं,
इहे सोचि के धीर महरसी;
अइलन राजभवन में !
तप के बरम्हग्यान के,
तेज बिराजत बरत लिलार !
देखि राजगुरु आगे बढ़ि के,
सरधा नेह-लगन से;
सुघर सवागत मुनिके कइलन !
राजकुवँर का दरसन खातिर,
असित देव जी,
अति हुलास से;
अगराइल अकुताइल,
भीतर के देवढ़ी नियरवलन !
राजा मुनि के सिंघासन पर,
आदर से बइठवलन;
गंगाजल से,
फल-फूलन से;
धूपदीप से पूजा कइलन !
तब मुनिवर राजा के,
पूत जनम के;
सहज असीस बधाई देके,
देखल राजकुवँर के चहलन !
राजा मन में ई विचारि कि—
अबे कुवँर तऽ सूतल बाड़न'
जोरि दसो नहँ अरज लगवलन;
मुनि से तबले ठहरे खातिर।
बतिया काटी मुनी तब कहलन—
महापुरुस तऽ
बहुते देर ले सूतसु नाहीं'
बहुते जागत-सोचत;
सांति-भाव में लीन रहेलन।
सरधानेह भगति के पाके,
कोमल चित संतन के;
सहजभाव से पसिजेला !

१ पाँच ज्ञानेन्द्रियों का बल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गदगद् होइ विनय सेवा से,
गूढ़ वचन मुनि कहलन—
"राजभवन हम अइलीं काहे;
रउरा एकर कारन जानीं।
सुरज-डहरि में ध्यान लगा के,
देव-बचन ई सुनलीं हँ कि—
बउध-ग्यान मनि पावें खातिर,
रउरा जनमल पूत सपूत!
एतने पर हम मनलीं नाहीं,
बूझ बिचार जतन कुछ कइलीं।
"मन के जोग जुगुति से बन्हलीं",
कले-कले जागलि कुंडलिनी,
चढ़ल प्रान सुखमन नारी में;
बीच-बीच में ठहरल!
मूलाधार गाँव में पहिले,
ओकरा आगे साधिसथान।
गाँव तीसरा मनीपूर में,
चउथा मिलल अनाहत!
पँचवाँ गावँ विसुद्ध देखि के,
छठे गईल आग्याँ में!
कइलसि जाँच, गवाहो लिहलसि;
पहुँचले सहस-कमल-दल भीतर!
जहवाँ बइठि कमल-सिघासन,
ब्रह्म बिराजत देखत सभकुछ;
ओहिजो एकर पता लगवलीं,
बतिया साँचे पवलीं।
तब सब बूझि-विचारि शांति से,
सुघर सोनहुला मोका पाके;
इन्दर धजा नियर अति ऊँच,
शाकिय-कुलके विमल पताका;
देखे का इच्छा से
झटकल एहिजा अइलीं हँ!"
अइसन बचन सुनत महराज,
खुश हो राजकुवँर के,
दाई का गोदी से लेके,
धइलन मुनि का आगे!
सांत धीर मति मान महरसी,
अचरज सहित सजग हो देखलन;
नेंह लगन से चित बटोरि के,
सुबहित राजकवँर के!

गोड़न का तरवा में लउकल,
सुघर चिह्न चक्का के।
हाथ गोड़ अंगुरिन में सगरे,
जाल बिछल रेखन के झलकल!
एह किसिम से लउकल परगट,
महापुरुस के बत्तीस लाच्छन!
राजकुवँर के देखि असित का;
लोर छलकि आँखिन में आइल!
लमहर साँसि घींचि मुनि तकलन,
ऊपर सरग लोक का ओर!
लोर बहल आँखिन से मुनि का,
राजा देखि बहुत घबड़इलन,
उनकर हिरदय काँपल,
पीपर पात समान!
पूत मोह ममता से बेकल,
ऊ मुनिवर से पुछलन—
"हे मुनि धीर! बताईं हमके,
जेकर देहियाँ देवलोग से,
थोर फरकवाली बा;
जेकर जनम बिचित्तर अइसन,
भागि भोग बा उत्तम,
ओके देखि अकारन,
रउरा अँखियन बीच अचक्के;
काहें आइल लोर?
तपेसरी हे?
राजकुवँर के—
अरदुबाइ पूरा बाटे न?
चिंता शोग अचक्के हमके—
देबे खातिर कतहीं,
इनकर जनम भरल तऽ ना?
जवन अँजुरिया जल के,
हमरा मिलति बड़ा मुसकिल से,
ओके पीए खातिर,
कहीं काल आवत तऽ नइखे?
हमरा मउवति बाद,
पिंडा-पानी देबे खातिर,
राजकुवँर जीअत तऽ रहिहँन?
का ई डिम्भी कुलके हमरा,
बिना फूल-फल दिहले,
असमय सुखी तऽ ना?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मुनिवर भाव समुझि राजा के,
बतिया सचकी खोलि बतवलन।
"शंका दोबिधा छोड़ीं रउरा,
कबे अशुभ कुछ होई ना;
जनम-मरन के लटका टूटे
जीव सहज सुख पावे;
एकर सुगम जतन जे जानत,
उहे आज परगट हो;
आइल रउरा राज-महल में!
पहुँचि चुकल अंतिम परवाना,
दिन हमार नियराइल बा;
हाथ मलीं पछताईं केतनो,
लीला देखे पाइबि ना!
चिन्ता इहे सतावति बा,
आँखिन से लोर बहाबति बा!!
बिमुख होइ बिसयन से,
राज-काज ई छोड़ीं।
कठिन जतन से,
असल पदारथ पाके,
एह जगत् से—
नोह अन्हार मेंटावे खातिर;
ग्यान-रूप सुरुज हो,
सज से सगरे चमकी।
रोग-फेन से भरल छेंकाइल,
थकल बुढ़ापा लहरनवाला;
मउवति जेकर तेज बहाव,
अइसन दुख-सागर में;
बहुत दुखी दुनियाँ के,
ग्यान-रूप भारी नइया से;
इहे पार उतारी!
ई शुभग्यान रूप जलवाली,
उत्तम चालि चलन के
मजिगर अचल किनारावाली;
सहज समाधि ठंढ से सोभित,
सूध-प्रेमव्रत—
चकवा पंछी से भरपूर;
धरम नदी का धार बहाई।
अउरी टिशुना रूप पियासन,
बेकल जीव जगत के;
ओह नदी के पानी पीहन!
बिसयन में लपिटाइल,
कठिन दुखन से घाहो;
जगत् रूप जंगली-डहरि का—
राहिन के ई,
सुगति-राह बतलाई।
जइसे छोड़ि डहरिया,
भटकल राहगीर के;
डहरि बतावल जाला।
ई दुनियाँ में,
बिसयरूप लकड़ी आ—
रागरूप आगी से;
जरत दुखी लोगन के,
ठंढा करी धरम-बरखा से!
जइसे गरमी रितु का,
अंत समय में;
भारी बादरि जल बरिसा के,
ठंढा करे जगत् के!
ई सरनाम धरम-सेनापति,
महावीर जगविजयी होई।
शांति-प्रेम के,
घी से भरल चिराग जराई।
एह अमोल धरमगंगा में,
हम ना बुड़ुकी लगा सकबि अब;
जोग-सीधि पवलो पर,
सफल मनोरथ होइबि नाहीं।
काहें से कि—
ओह धरम के ना सुनला से,
सरगो में बसला के;
कठिन बिपति हम मानत बानीं।"
एह किसिम से,
राजकुवँर के शुभसंचित गुन;
बेकल राजा के बतला के,
सीध असित मुनि;
पवन-डहरि धइ,
उड़ि अकास में;
गइलन जइसे आइल रहलन!

कुवँर जनम के खुशी भइलि तऽ
तुरत खुलल जेहल के फाटक;
बन्हुआ कैदी छोड़ल गइलन,
सभई के सुख-शांति मिलल!
जातकरम के विधि सुधार के,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कुलका रीति मोताबिक;
पूरन भइल समय से।
सुख कयलान पूत के होखे,
दूर हटे दुख बिघिन-कलेश;
अइसन सोचि मगन-मन राजा,
दस दिन समय बिता के;
हूम-जाप शुभ करम करवलन,
देवजग्य पितरन के पूजा।
सोना मढ़ल सींघि में जिनका,
अइसन एक लाख घेनु गइया;
बाभन-बिशुन दान में पवलन।
नेगी-जोगी पवनी सभके,
कपड़ा-लत्ता दरब बटाइल!
मंगल साइति लगन सोधि के,
कले-कले तइयार भइल सभ;
कपिलवस्तु तब जाये के!
उत्तम हाँथी दाँतन के बनल पालकी,
हीरा-मोती रतन जड़ावल;
सुघर सजावल-
धपकत उज्जर फूलन से,
समय पाइ जब आइल सनमुख;
गोड़ लागि देवतन के,
ओकरा पर चढ़ली महरानी!

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

देवढ़ी-बिहार

आसन पहुँचल रजधानी में,
राजमहल में तेज बिराजल;
सोभा लउकल कपिलबस्तु के
अलकापुरी समान !
पत्थल परल न तड़कल बिजुली
बरिसल मेघ खुसी से,
देस-काल के बूझि-बिचारि
भइलि बढंती परजा जन के,
खेती-बारी लहसलि।
किसिम-किसिम का फल-फूलन से,
भरलि धरतिया बिहँसलि !
डाँकू चोर जुआड़ी लुक्कड़;
चउपट बेवा मरद छिनार;
किरपिन कूर कुभाखर कोढ़ी,
करमहीन घरफूँक पियक्कड़;
रहलन कहीं राज में नाहीं।
केहू नेम-बरत तोरल ना,
सवतुक दान-पुन्नि छोड़ल ना !
सगरे सुखमय शांति बिराजलि,
नहुस-पूत राजा जजाति का,
राज-समय में सजसे जइसे !
लोग लगावल गाँछ बगइचा;
मठ मंदिर बनवावल !
कहीं धरमसाला फुलवारी,
परमारथ के काम जथारथ;
बनल इनार खनाइल पोखर,
पक्का घाटि बन्हाइल मजिगर।
जहाँ मालती जूही चंपा,
चटक चमेली रजनी-गंधा;
हर सिंगार आ केवड़ा,
बिहँसि पराग लुटावत;
गोर बदन बेइलि अलबेली,
गंधराज सँग सोंहति।
गाँहक गुनी बटोही भँवरा-
सभई के मन मोहति !!
जेकरा जमले सीधि मिलल कुल्ह,
सुखी राज-परिवार भइल।
इहे समुझि राजा जब कहलन,
नाँव परल सिद्धारथ !
कथा बड़ी लमहरि माया के,
एकर कठिन बयान।
सभई के ई ठगिठगि भागे;
बीतत समय देर ना लागे;
जिनिगी के सुख समय बिता के,
माया देबी आँखि मूँदि के;
धन-धरती के लात मारि के,
चढ़ि सुवरन का सुघर विमान,
कइली सरग पयान।

अवसर पा के भागि सराहत,
सिद्धारथ के सेवा कइली;
अपना गोदी पालि-पोसि के,
प्रजावती मँउसी महरानी !
होनहार बिरवा के कइसन-
मजिगर लहलह पात !
धरती फोरि पनपि के बाहर,
उगते-उगत लखात !!
शाकिय-कुल का रीति मोताबिक,
निपुन गउतमी माई;
बालकुवँर के गोदी में ले,
देवन का मंदिर में गइली !
एपर बाल लाल का मुँह पर,
झलकि उठल मुसकाहट।
उनका मन में,
इहे भाव आइल कि—
"हम त अपने,
महादेव देवन के सामी,
हम मंदिर का एह देव के,
का अब माँथ नवाइबि !"
जइसे बालक,
पहुँचल मंदिर भीतर;
तुरत तइसहीं,
भीतरवाली सभे सुरतिया;
एका-एक जीवकाली हो,
झुकली बालरूप का आगा;

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सरधा-आदर विनय भाव से !
अवतारी पुरुसन के लच्छन,
आगे-आगे झलकेला ।
डेग धरत धरती पर,
तेज लोक में सगरे;
सूध चमाचम चमकेला !
पाँचो पीर पचीस जोगिनी,[1]
ठोंकत झालि मृदंग मजीरा;
साधत सुर लय ताल,
जाल तिरगुन में;
सुरनर-मुनि सभई के मोहत,
तिननी नाँचि नचावत !
महापुरुस जेकर ई लीला,
ओकरा के भरमावे का ?
जेकर बनरी उहे नचावे,
काटे धावे दोसर के !
हीत-मीत सभई का घर ले,
पाहुर आइल राजकुँवर के;
कहीं सुघर मोतिन के माला,
कहीं खेलवना सोना के रथ;
सुवरन के पशु नाधल !
हाथी-घोड़ा, हरिना-वाछा,
हर-जुवाठि पयना सोना के !!
राजा के उपरोहित,
उनके ई सलाह दिहलन कि—
'रीति मोताबिक बाल कुँवर के,
गहना सुघर बनावल जाय।'
राजा तव भदरिक से,
सब गहना तइयार करवलन;
बाकी,
जइसे ऊ बालक का;
देहियाँ में पहिरावल गइलन,
उनकर चमक जोति सुघराई;
गायब भइलि तुरंते !

सिद्धारथ जब बाल समय में,
कवहीं खेलसु खेल-तमाशा;
तवे खेलवना छोड़ि सरकि के,
कतही बइठसु ध्यान लगा के !
राजमहल के सोभा उत्तम,
साज राजसी खेल;
मन के मोहि बझाइ सके ना,
धरे न तनिको मेल !
हीरा मोती रतन जड़ावल,
सुघर पलनवाँ सोना के;
तनवाँ झूला झूले,
मनवाँ भरमे भूले ना !
राजकुँवर के,
सादा लोच उमिरिया;
बिना अवाँसल खेहल,
बीतलि जइसे;
समय जथारथ आइल,
पंडित उपरोहित बोलवा के;
बिधि से बोधि जनेव दियाइल !
बहुत समय में सीखेवाली,
किसिम-किसीम के विद्या;
कुल का रीति मोताविक,
राजकुँवर सहजे में पवलन;
बहुते थोरे दिन में !
सुरसति मइया के दरबार,
विद्यामंदिर चरन[1] कहावें;
सरधावान चतुर पढ़वइया,
विद्या ग्यान गुनन के गँहकी;
अन्तेवासी आचारज सँग,
करम-वचन मन-चित बटोरि के;
ओइजे रहसु ग्यान गुन नीखसु !
छाता जइसे छाँह करेला,
तइसे-सेवा-टहलि गुरू के;
जिनिगी के कुछ समय लगा के,
प्रेम सहित जे करे सजग हो;
उहे विनय तप तेज ग्यान से
कुल के सुजश धजा फहरावे !
सिद्धारथ अइसने डहरि धइ,
विद्या ग्यान लला गुन पवलन !
शुभ बयराग विचार कुँवर के,
लरिकँइये ले;
कले-कले कुछ झलके लागल ।

१ पांच तत्त्व पचीस प्रकृतियाँ ।

१ वैदिक युगीन शिक्षण-संस्था

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

देखि-रूप लच्छन-परिछाहीं,
राजारानी का मनवाँ में;
फिकिरि समाइ सतावे दुख दे,
कबे काल के माँथा ठनके !
आग-पाछ के जानि सुमुझि के,
बहुत पहिलहीं;
सिद्धारथ-चित बनल बिरागी,
हाथी घोड़ा महल-अँटारी;
सुख-सिंगार—
सुबरन के रथवा,
धन-दउलतिया राजभोग से;
उनका नेह भइल ना !
काँच उमिरिया बीतली जइसे,
कुछ-कुछ अकिलि पोढ़ाइलि;
लउके लागल,
धरमी राजकुवँर के;
लच्छन गूढ़ अगाही !
समय-सारथी साथ सुलायक,
रथपर चढ़िके राजनेति का;
जासु शिकार करे जब जंगल,
दया-प्रेम से पसिजे मनवाँ;
बान हरिन के मारसु ना !
'सभका तन में एक आतमा,
सभकर जीव समान।
पशु-पंक्षी चिउँटी हाथी में,
उहे एक ही जोति विराजति;
लउकति वा गतिमान !'
इहे बिचार बसल गउतम का,
हिरदय-मंदिर भीतर।
पुरुब जनम के छाप,
झलके अपने आप !

फुलवारी में हँस गिरल जब,
लागल देवदत्त के बान।
तब सिद्धारथ दउरि उठवलनि,
धोवलनि ओकर घाव !
बाति बढ़लि बरबारे पहुँचलि;
आखिर जीति भइलि गउतम के।

ई माया के—
मोहक कंचन नगरी,
सून भीत पर जहाँ रचाइलि;
बहुरंगी तसवीरि।
लागलि सुघर बजार मोहिनी,
ललचावे बहकावे ले !
सिरजन बीच लुकाइलि इहवाँ,
मउवति ठगिनी कल से।
सुघर लाल गोदी के छिनलसि,
चललि चालि शतरंगी !
कहीं रोग जरजर देहियाँ के
अचके छोड़ि पराइलि !
पाकल बार दाँत कुल टूटल,
कान सुनसु ना बतिया;
गइलि आँखि के जोति,
थकलन ठेहुन पहुँचा !
एतने में परवाना लेके,
पहुँचल दुखी बुढ़ापा !
टिशुना नया जवानी पवलसि,
चमकि-झमकि के मटकी मारे;
कले-कले मुसकाय !
मउवति रानी पहिरि चुनरिया,
काजर कइले राग कढ़ावे—
चुरुगे चहके ले !

रोग शोक चिंता से चिहुँकल,
माथ धुनल पछताइल।
रोवल-कलपल दाँत निपोरल,
राजकुवँर गउतम का लउकल;
मउवति के मुसकाइल !
फगुआ खेलल झालि बजावल,
समय पाइ फुलझरी पड़ाका—
रंग मशाला छोड़ल !
लालच के ई माँड़ा,
छवले बा अँखियन में;
भइल लोग मतलब में आन्हर।
जिभिया लपकलि रस में बाझलि.
चसकलि लहु पिये के।
कइसन जीव अधम बा,
देखीं एकर भला तमाशा;

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जिभिया कारन जीव बधत बा!
वन के पतई खाले,
घिघियाले-मिमियाले बकरी;
एतनो पर मन माने नाहीं,
छुरी चलावे गरदनियाँ पर।
रथ पर चढ़ि के जंगल दउरे,
आड़ बना टाटी के;
छिपल घात में;
बान हरिन के मारे!

समय-समय से,
दरद भरल तसबीरि देखि ईं;
तीर गड़ल गउतम का दिल में,
दुरबल दुखी अनाथ जीव के;
सुनलन कुहुँक-पुकार!
पुक्का फारि हरिन के रोवल,
बिलखल जार-बे-जार!
पेटें रहलि—
हरिनियाँ डँकरलि,
उहे उन्हुकरा हिय में
कॅास के ठेस लगवलसि।
मन में उठल सवाल अनेकन,
चित-चिता-बदरी फिंचराइलि।
अइसन दशा देखि बेटा के,
शुद्धोदन घबड़इलन।
सिद्धारथ जनि बनसु बिरागी,
एकरा खातिर;
बहुत उपाइ सोचाइल,
किसिम-किसिम के;
सरकस फंद रचाइल!

जब सिद्धारथ,
भइलन पोढ़ सयान;
तब शाकिय-कुल-लोग,
सभा बटोरि बिचारि मजे में;
राजा जी से अरज कइल कि—
राजकुँवर के,
अब बियाह होखे के चाहीं।
जदपि कुँवर के इच्छा,
कवनो खल का;
दुनियाँ का फंदा में,
अझुराये का रहलि खिलाफ;
बाकी, एह विचार-बूझ से,
ऊ बियाह का—
बतिया के मनलन कि—
दुनियाँ का लोगन के,
ई बिसवास कराइ सकीं कि—
मानुस, जग का सुख भोगन में,
डुबलो पर उनका से,
ऊपर उठि के,
उतम पद के पाइ सकेला।
जइसे पाँक बीच से उपजल,
कमलफूल मुसुका के,
सहज सुभावन,
उठि जाला जल ऊपर।
पुरुस जगत् के रचे बनावे,
मर्दति पाइ के परकिरती के।
पर किरती के,
'शुभ रजोगुनी मूरती',
सखी-सहीना;
भरमावे फुसिलावे—
सभके नाँचि नचावे वाली,
नारि मोहनी माया!
नारि सुरसती दुरगा काली,
अमला कमला उमा भवानी।
नारि पुरुष के धरम संगिनी,
सोने के हथकड़ी,
सोनहुली बेड़ी,
सुवरन के जंजीर—
जगत् में बान्हेवाली!
नारि नरम रेशम के फाँसो,
नारि नागिनी काली,
नारी मदरस भरल पियाली,
चढ़ल नशा बउराये वाली।
नाथि नकेल,
पुरुस के—
डोरी बान्हि घुमावे वाली!!

सब कुछ सोचि-समुझि तब,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

राजकुँवर मतिमान;
अपना जोग जथारथ,
शुभ बिआह का इच्छा से;
जवन-जवन गुन,
कनियाँ में होखे के चाहीं;
ओके निहचित कइ बतलवलन।
राजाजी के उपरोहित तब,
लायक कनियाँ खोजे खातिर;
केतने जगहा गइलन!
आखिर में उनका के,
दंडपाणि राजा के बेटी;
ठीक ओइसने मति सुभाव आ—
सभे गुनन से पूरन लउकलि;
जइसन गउतम चाहत रहलन!
बाकी, राजा रीति मोताबिक,
अधिका उचित समुझलन—
कि खुद राजकुवँर के,
अपना लायक;
कनियाँ चूने खातिर,
मोका दीहल जाय।
एहि से ऊ,
(मातुल-कुल का) कुल का,
सभे बिआह जोग लइकिन के,
राजकुँवर का शुभ हाथन से;
पदुमराग नीलम गोमेदक—
मूँगा मोती आ पुखराज;
बहुत सुघर अनमोल रतन के
रचल बनावल उत्तम हार।
अउरी किसिम-किसिम के,
कारीगरी कला के मूरति;
सुबरन आ चानी के फूल,
भेंट रूप में लेबे खातिर;
नेह लगन से नेवता दिहलन!
एह नेह नेवता का—
सात दिनन का बाद;
'शाकिय' कुल के सभे कनियवाँ,
राजमहल में जुटि के अइली!
बोधिसत्त का—
सुघराई आ तेज-जोति से,
ओह सभन का—
अँखियन में चकचोन्ही लागल!

एगो दंडपाणि के बेटी,
गोपे उनकर तेज सहे में;
पूरा समरथ भइली!

शंख फूँकि तबला घुड़का के,
शुभ बिना मिरदंग बजा के;
मधुर सितार सरस सहनाई,
रसे-रसे पिहिका के;
चंचल चतुर घुमंतू मन के,
चटक-चासनी चिखा रसन के;
फुसिलावे पघिलावे अउरी—
कल से नाँथि घुमावे खातिर,
तिरछी चालि चलाइलि!
हुकुम पाइ पगरी सरियावत,
पहिरि अँगरखा—
एकपट्टा ले;
टीका चँदन कइके,
पोथी-पतरा लिहले;
चहुँपि जोतिसी पंडित अइलन!
गनना गनि देखि दिन मंगल,
उतसो सुघर सजाइल,
झट अशोक बगिया में!
पंडित-बाभन, पाहुन पवनी,
हीत-मीत सभ;
नेवता पाके आइल।
मंगल गीति गवाइल,
वेद भनाइल;
हवन कुंड में अगिनिदेव के,
सफला-घीव सोमरस आहुति;
वेद-रीति से,
अरघाइल अरपाइल।
सभके कुछ-कुछ भेंट दियाइल,
साल-दुसाला पगरी-धोती;
हीरा-मोती रतन बँटाइल!
जइसे पारी—
जशोधरा के आइलि,
काढ़ि रतन के हार गला से;
दिहलन उनके झट सिद्धारथ!
आखिर गले परल जयमाल,
राजमहल में बाजल ताल;

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पंडित पवनी सभई लागल,
शुभ बिआह का तइयारी में!
तब राजा शूद्धोदन,
दंडपाणि के पाँती लिखि के;
निपुनदूत से,
राजकुँवर का शुभ बिआह के;
सुघर सनेस पठवलन!
बाकी, देखि कुँवर के,
उत्तम पालन-पोसन;
राजमहल का—
सुख आनंद भोग में,
दंडपाणि कुछ;
असमंजस में पड़लन!
एसे उन्हुका—
गुन आ समरथ का बारे में,
पूछ-जाँच ऊ कइलन!
दंडपाणि के—
ई संदेह छोड़ावे खातिर,
राजा का उतजोग जतन से;
जल्दी कुल तयगारी कइके,
समय विचारि बदान दियाइल!
शाकिय-कुल का,
सभे जवानन के नेवताइल।
बल-बुधि-विद्या गुन सहूर का—
कठिन परीच्छा इमतिहान के,
सुनि ललकार पुकार!
जाति सुभाव शान वश बरबस,
वीर-सपूत रगइलन!
बहियाँ उन्हुकर फरके लगली,
गइल चढ़ावल;
तलवारन पर पानी!
ठीक समय पर
सभे साजि दल पहुँचल
हाथी घोड़ा सिजिल रथन पर,
हथियारन से सजल मजे में;
लहरावत चमकावत सगरे,
आपन-आपन धजा निशानी!
सभ वीरन का—
समरथ गुन-गति बल के,
दस बिसयन में जाँच भइल तब!
विसय जाँच के रहलन ईहें—
जिन्हिकर नाँव सुनानत बानीं।
पहिला, लाशि उठा के फेंकल;
एको पट्ठा हाथी के।
बिसय दुसरका—
देश-देश के भासा-ग्यान,
बोध अच्छरन का मूरति के;
सूध लिखावट लिपि के!
बिसन तीसरा-
जल्दी गूढ़ हिसावन के हल!
एह किसिम से अउरी,
धनुस-बान विद्या के;
नाचि-गान कुश्ती के;
कारीगरी कला के;
कल पुरुजन के,
कविता जोतिस वेद ग्यान के;
राजनेति के, धन-सासतर के;
अउरी कुछ आतम-विद्या के!
डुग्गी पीटि कहाइल ई कि—
'एह सभन का,
पूछा-पेख चढ़ा-उपरी में;
जे जवान के होई जीत,
ओकरे से गोपा के;
होई असल बिआह!
गोपो ओहिजा विजय-धजा ले,
देखति रहे तमाशा आदे!
देवदत्त सुन्नरानन आ-
अउरी केतने सुघर जवान,
दाँत-माँथे लागल रहलन;
अपने के सबका ले लायक,
सावित करे गिनावे में बस,
एड़ी आ चोटी के—
भइल पसीना एक,
तबहूँ ना उजियाइल;
सभकर दाँत रँगाइल!
आखिरकार कुँवर सिद्धारथ,
चिटुकी बजा ठोंकि के ताली;
सहजे सभके कइलन माँत!
जे जवान लोगन का,
रहे हरियरी लउकति;
अब उन्हुकर मनवाँ मधुवाइल,
चेहरा उड़ल उदासी आइल;

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सुघर सोनहुला मोका खोके,
आपन दावा-दाव हार के;
ऊ सभ हाथ मलल पछताइल !
सभका ओठें फेफरी लउकलि,
मुँह लटकवले लवटल सभई !
दंडपाणि तब गद्‌गद होके,
बहुत दुलरुवी प्रिय गोपा के;
शुभ बिआह कइलन मंजूर !
बढ़ियाँ साइति—
लगन शोधि शुभ,
मातुल राजवंश के देवी;
सुघर सुलच्छनि जशोधरा से,
गउतम के हो गइल बिआह !
सतरंगी मन मोहेवाली—
अनधा चीज दहेज मिलल।
जसोधरा बनि धरमसंगिनी,
आइलि रंग महल में,
अब गिरहस्त धरम निबुकावल,
कुछ दिन—
गउतम उचित समुझलन !
कस्सप-अदिति;
अतिरि-अनसुइआ;
मनु-शतरूपा—
रिखि बसीठ आ अरुन्धती के,
जइसे दिनवाँ बीतल;
ठीक तइसहीं राज-भोग में,
गउतम के दिन बीते लागल !
बहुत सुघर देहियाँ से,
चमचम चमकति शोभा सूरत;
सनत समान कुँवर ऊ,
मातुल-कुलदेवी का साथे;
इन्नर देव नियर तब;
प्रेम वशी हो;
कइलन भोग बिहार !
मनवाँ के भड़कावे वाला,
कवनो रूप कुँवर जनि देखसु;
अइसन सोचि समुझि के राजा,
उन्हुका राजमहल का भीतर;
रहि के सुख भोगे के,
हुकुम वेत रहलन सजगी बनि,
एह तरह से राजकुँवर ऊ,
शरद रीतु का मेघसमान;
धपधप धपकत उज्जर,
धीर धरतिया ऊपर उतरल;
सरगलोक का -
मजिगर देव विमान नियर—
निज, सुखदायी महलन में;
नया नगद तिरियन का,
मोहक मीठ सुरन के;
सुनि सितार सरँगी बीना सँग,
भँवरा नियर रहलन रस लेत !
कोमल सुरस सुघर बानी से,
शान-मटकिया हाव-भाव से:
माया बानचला के,
तीनिरंग के चोख;
करत कलोल चिकारी नखड़ा,
कले कले मुसकात गुंजरिया;
चिखा चासनी उनके,
प्रेम पापड़ी सुरस मिठाई;
सजगर टटका रुचिगर के नित,
वशी बनवले;
रखले रहली ओहिजा
कामकला में पँडित,
संग-समागम में वरियार,
निपुन शोख तिरियन से,
फंदा फेंकि फँसावल;
नया जवान कुँवर तव,
राज महल से;
ओही तरे भुलइलो,
नीचे तह पर;
हाली उतरसु नाहीं,
जइसे धरमी लोग सरग से;
नीचे नाहीं आवे !
राजा ते उनहीं का,
सुख आनंद बढंती खातिर;
गति वल साहस पाके उनका,
सहज अगाही भाव-भंग से,
मन बटोरि खुश भइलन !
पाप विमुख ऊ.
पकड़ि लगामि मजे में;
दस घोड़न का रथ पर बइठल,
साधुन के धन बँटलन !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मूढ़ अधीर आदिमी अइसन,
चटक बिसय सुख के भोगे में;
कुँवर कबे लपिटइलन नाहीं!
सहज धीरता से ऊ,
चंचल घोड़न अइसन;
ढीठ इनिरियन के वश कइलन,
अउरी, हिरदय जितलन;
भाई-बंधु नगर वासिन के,
सुघर अमोल गुनन से!
दूसर के दुख देबे खातिर,
ऊ विद्या-गुन सिखलन नाहीं;
बलुल शांति-सुख देबे वाला,
परम पवित्तर विमल ग्यान शुभ;
नेह-लगन से हासिल कइलन!
ऊ अपना पूतन अस
सभ परजन का सुख के;
सवतुक इच्छा रखलन!
उन्हुका लमहर अरदुवाइ के,
मन में चाह छिपवले;
धरमी राजा,
शुक का घर में बइठल;
बुध मंगल गुरु,
गरह-मंडली के सरधा से;
विधिवत पूजा कइलन!
अगिनिदेव के आहुति दिहलन,
खटकरमी बाभन लोगन के;
धेनु गाइ आ सोना।
तन के सूध बनावे खातिर,
उत्तम पुन्नि गुनन का—
निरमल झरना जल में,
सज से बुड़की मरलन!
वचन जथारथ—
सूध सुरस ऊ बोललन।
ना बेकार कबे कुछ कहलन,
ना बोलालन दुखदायी साच!
अपनो रुचि के—
झूठ वचन आ रुक्खर साच,
ऊ संकोचन कहलन नाहीं।
जे असरा ले आइल नियरा,
चाट पियास के ओकरा;
ठंढा कइलन,
दानरूप तिरवेनी जल से!
इरिखा वाला का घमंड के,
बिना जूध के;
नीमन चालचलन का—
पोढ़ चोख टाँगी से कटलन!
एगो के वश कइलन,
सातो राखि सात के छोड़लन;
पाँच बचवलन,
पवलन तीनि;
दूगों समुझि,
दूइ के तेजलन!
बरत नेम के पालन कइलन,
छोड़लन वैर-विरोध पुरान।
सहज सुगंधित शुभ जस पवलन,
मइल रजोगुन भाव मिटाके!
एही शुभ आनंद घरी में,
देवढ़ी भीतर बाजा बाजल;
झटकि लउँड़ियाँ खुश हो पहुँचलि,
राजा जी के;
खुशी बधाव सनेस सुनवलसि—
हे सरकार! भागि परजा के—
कि प्रिय जसोधरा का गोदी,
आइल लाल रतन अनमोल;
भइल अँजोर महल में!
सुनत मगनमन राजा,
कले-कले तनिका मुसकइलन!
उन्हुका ई बिसवास भइल कि—
नाती जामल,
बरल चीराग नया अब;
वंश बढंती होई निहिचय,
पुरुखन का शाखा के;
लागल तागा-तार ना टूटी
कायम रही नाँव जश-कुल के;

निकलल समय सरकि के सरसर,
देखत-ताकत नजरि गड़ा के;
परकिरती का फुलवारी में,
उनतिस पतझड़;
गूढ़ नेम-गति,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मधुरस भरल बसंत!
राहगीर के मनवाँ थाकल,
अउँजाइल-अकुताइल;
नयी दिशा में डेग बढ़ावे—
नयी डहरिया जोहे खातिर,
सुगम सोझ नियराह!
एक राति के,
बइठि शांत एकांत महल में;
पुन्नि-देव-वेला में;
कुँवर मने मन सोचत रहलन—
'कि अब हम ई,
नेह-मोह-ममता कुल छोड़ीं;
घर-घरनी से नाता तोड़ीं।
करीं त्याग तप-भजन-साधन,
मानुस जीवन सफल बनायीं।
देहियाँ भजन करे के साधन,
भवसागर के पार करे के;
बेड़ा नाइ जहाज!
'ई कल-जंतर दिहल गइल ना,'
बिसयन के रस चीखे खातिर;
ई भवफंदा काटेवाली,
पोढ़ तेज तरुवारि!

एह किसिम से सोचत,
फाटक खोलि निकलि के बहरी;
राजकुँवर जी,
जइसे नीचे तह पर अइलन;
पूत जनम का—
शुभ सनेस के सुनि के,
मुँह से उनका निकलल अचके;
'राहुल,'—
मतलब काँट डहरि के,
राहु चान के गरसेवाला!
सभई समुझल नाँव इहे शुभ।
धइलन निपुन कुँवर जी।
अब का देरी दखल करे में,
जब उपरे ले खाता हिगरल;
बनल नया खेवट-खतियान!
मुँह से निकलि चढ़लि कोठा पर,
राहुल लोग पुकारे लागल!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बयराग के डिम्भी

रस-रस छीजि रहल दिनमान,
समुझि गइल गति;
जे मतिमान।
महाविरागी सिद्धारथ के,
ई शोभा तनिको ना भावलि!
सजग आतमा,
समुझि गइलि बहकावल!
ना लागल फुसिलावल!!
लोगन का कहला से,
उनका बनवाँ का बारे में;
मालुम भइल रहे कि–
ओहिजा सगरे,
सुघर हरियरी सोभि रहलि बा।
जइसे बिछल बिछवना होखे,
चिक्कन मजिगर मखमलवाला!
सुरस सुगंधित फल फूलन के,
तहवाँ बा दइबी भंडार!
आमन का बगिया में,
सुखी कोइलिया कुहुकति बा नित।
कतहीं लाल कमल फूलन से,
ताल तलइया गमगम गमकत;
भँवरन के मन मोहत सज से,
नया गँहकिया जोहत बाड़न;
प्रेम-पुजारी कला-पारखी,
हुकुमी-पवनी पवनदूत से;
सगरे पाहुर भेजि पराग!
तब तिरियन के सहज दुलरुआ,
बहुत पिरीव चुहिलगर,
सिजिल नगर फुलवारिन के शुभ–
सुघराई के चटक चासनी,
तनिक सुभावन चीखे खातिर;
मनवाँ ललकल रहे कुँवर के!
देवढ़ी भीतर रंगमहल में,
तिरिया जहवाँ नाचसु गावसु;
बाजे नित सितार इसराज,
सहनाई सरँगी मिरदंग।
अइसन राजभोग से ऊबल,
अँउजाइल अकुताइल अँटकल;
मनवाँ उनकर उड़ल भड़कि के,
वन-विहार में जाये के!
बान्हल लोहा का सिक्कर में,
जे हाथी हथिसार छोड़ि के;
बहरा घूमल चाहे जइसे!
तब राजा जी भाव जानि के,
राजकुँवर का मन के;
प्रेम उमिरि लछिमी का जोग,
वन-विहार के;
हुकुम सोहासुत दिहलन!
राजनेति के जानेवाला,
छनकल राजा सजग भाव से;
कि बयराग कहीं जनि उपजे,
राज करमचारिन के;
फरक बोला के,
असल कील-काँटा समुझा के;
असवारी निकले के,
तइयारी करववलन!
आन्हर लंगड़ लल्ह बेमरिहा,
बूढ़ गरीब बेचारा;
चिथरा गाँथि पहिरि के घूमत,
दाँत चियरले माँगत खात;
सभके दूर हटा के,
राजडहरिया खूब सजाइलि।
जगहि-जगहि से चउक मोर पर,
बनल बहुत फाटक मेहराब!
सभ तइयारी पूरा कइके,
देवढ़ी भीतर खबरि गइलि ते;
उतरि महल से, नीचे अइलन,
राजकुँवर राजा का पास!
नेह-छोह से माँथ सूँघि के,
मन में ममता मोह छिपवले;
हुकुम मिलल राजा के,
घूमे टहरे मन बहलावे;
फुलवारी में जाये के!
दामी राजपोशाक पहिरले,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पदुमराग मूँगा गजमोती;
गोमेदक नीलम के माला,
उज्जर सिंधी घोड़ा,
चतुर चारि गो नाधल;
सुघर सजावल सुबरन रथ पर,
कल से राजकुँवर के,
आसन जाइ विराजल!
आसमान में—
तरइन बीच चनरमा अइसन,
केतने लायक हाकिम अमला;
राज करमचारिन का साथे,
गउतम चलत पहुँचलन—
जहवाँ;
माला सुघर हजारन लटकल,
अपना मोहक मधुर गंध से,
मन के मोहत सोहत रहली,
अउरी परल पथार रहे, प्रिय—
गमकत उज्जर फूलन के!
कंचन नया आमपल्लो के,
सुरुचि सुरंग टँगाइल तोरन;
धजा पताका फहरल सज से!
आधा नील आसमानी रँग,
कमल फूल फूलल हो अनघा;
तइसे कुछ विहँसत मुसकात,
नेह लालसा से अगराइल;
पुरवासिन के आँखि बिछावल,
चिक्कनि राज डहरिया धइले;
कलेकले डगरत रथ आइल,
सगरे जयजयकार सुनाइल!
शांति धीरता गुन से मोहित,
बिनती कइलन केतना लोग;
केतने देखि तेज सुघराई,
आपन माँथ नववलन!
असवारी जा रहलि कुवँर के,
अइसन सुनत—
सेवकन के मुखबानीं;
मलिकारन से हुकुम लेइके,
मेहरारू कोठन पर चढ़ली;
दरसन करे पुन्नि-सुख लूटे!
वहुतन के करधत्ती सरकि के,
कइलसि विघिन चले में।

केतने अँखिया बेकल रहली,
लगले सूति के जगला से।
केतने हाली गहना पहिरत,
चढ़ल जात सीढ़ी पर रहली।
सीढ़ी छत धमकत गोड़न से,
झनझनाति करधनियाँ।
चमकि चलत—
पग धरत मगन मन,
केतनन के बाजलि पैजनियाँ!
केतने हयकल हँसुली पहुँची,
बाजू बँगुरी पहिरत जल्दी;
प्रिय सखियन के हाथ डोलावति,
दरवाजन पर भइली ठाढ़!
महल अँटारिन पर चढ़ि झाँकति,
खोलि झँरोखा खिरकी केतने!
अपना-अपनी के झाँके में,
आपस में धक्का भइला से;
जिनकर कुंडल कानन के,
हीलत रहलन धीरे से;
अइसन तिरियन के मुँह,
निकलल रहलन;
झँखियन का बहरी ले!
उनकर शोभा देखत,
मन में अचरज भइल कि कइसे;
कमल फुलइलन कोठन पर!
ओह घरी पर,
ललक लालसा का बश;
जिनकर खिरकी खोलल रहली,
अउरी जिनसे;
झाँकति रहली तिरिया केतने,
अइसन महल अँटारिनवाला;
सजल नगर के शोभा मजिगर,
चारो भर से देखत;
अइसन मालुम भइल जनुक जे,
सुखी देवतिरियन का—
सुघर विमानन से सजि;
उत्तम सरगलोक हो!
ओह कुँवर के—
जात डहरि से,
देखत-ताकत ऊ मेहरारू;
अइसन मालुम भइली,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जनुक धरतिया पर ऊ;
आइल चाहत बाड़ी!
अउरी उनके ताकत,
ऊपर के मुँह कइले;
पुरुस जनइलन, मानों—
आसमान में,
जाइल चाहत होखसु!
धरि थीर चित,
बिनती शील सादगीवाला;
सोझ नगरवासिन के,
झुंडन में बटुराइल;
राज-डहरि पर,
पहिले पहिल देखिके;
कुँवर बहुत खुश भइलन,
ऊ एकरा के;
आपन नया जनमवाँ मनलन!
देखि नगर के सरग समान,
देवता लोग रचल मनसउदा;
उरपेरक मति फेरेवाला,
बूढ़ बनावल गइल तुरंते;
दइबी-दया कला का बल से,
ओह भीड़ि का बीच!
'मन बयराग रंग में बूड़े,
राजकुँवर वन जासु;
खोजि सुगति-अमिरित रस झरना,
करसु भलाई जग के'।
इहे भाव देवतन का--
बसल रहे मन भीतर।
आगे रथ जब बढ़ल कुँवर के,
अचके कहीं डहरि में लउकल;
पाकल बार दाँत कुल टूटल,
लुकुड़ी लिहले ठेघत काँपत;
निहुकल किकुरल बूढ़ आदिमी!
चाम देहि के सिकुरल झूलल,
रोवे टोवे डेग बढ़ावे;
अँखिया से ना सूझे राह!
रथ के रोकि कुँवर तब पुछलन—
'कहऽ सारथी!
कवन आदिमी आवत बा ई,
का कारन कि—
एकर अइसन रूप?
ई गति-दुरगति,
सहज सुभावन लउकति बा कि—
हे बेकार ई कवनो?'
एतना बतिया पूछत—,
उहे देवता सजग होइ तब,
पहुँचि सारथी का चित भीतर;
मति के फेरि कहवलन चट से—
"इहो दूध पियलस लरिकाईं,
सरकि-सरकि के चलल भुइँ पर;
गोदी रहल पलनवाँ झूलल,
नीक जबून समुझि ना पवलसि;
माटी मरिचा मुँह में डललसि,
समय पाइ के भइल सयान;
मूँसा रोईं सुधर जवान;
चढ़लि उमिरिया गदहपचीसी,
रहल नशा में पूरा चूर;
सतघरवा बरगत्ता खेलल,
बँहियाँ भाँजि अइँठि के बोलल।
बूझविचार ख्याल ना रखलसि,
परगट कइलसि लूरि सहूर!
देहियाँ के जब पानी ढरकल,
संगी लोग शिकारी टरकल;
आखिरकार खुमारी उतरल,
धावल चुरुगल हँकड़ल छूटल;
अँखिया खुलिल होश कुछ आइल।
तब टोवला पर,
डोंड़ा कटल डाँड़ के पवलसि;
झनकल झंखल पाछा तकलसि।
चिंता बढ़ल बुढ़ापा आइल,
हाँथगोड़ थाकल बटुराइल;
बनल बेचारा मन पछतात,
केहू कहीं न पूछत बाति;
सगरे बतिया सुनत डँटात!
इहे बुढ़ापा राकस भूत,
सुख सुधराई रूप चबवलसि,
बनि आइल जुलुमी जमदूत;
जे ना सुने सिपारिस तनिको,
पकड़ि तुरत हथकड़िया डाले;
करिहाईं रस्सा मजबूत!
हे मतिमान कुँवर जी! समुझीं,
रउरो के ई धरी एक दिन!"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भारी बजर गिरत तड़कल सुनि,
जइसे गइया बेकल होले;
ठीक तइसहीं सजग भाव से,
सुनत वचन;
मन उड़ल कुँवर के,
कनकनाइ के भड़कल जागल;
कई कलप का—
संचित कइल कमाइल,
शुभ करमन से!
लमहर साँसि घींचि कुछ सोचत,
आँखि गड़ा टकटकी लगा दे;
देखि बूढ़ के बेकल होके,
राजकुँवर जी,
हुकुम सारथी के तब दिहलन—
रथ लवटावऽ चलीं महल के,
वन-विहार में शांति मिली का;
हम त घुमलीं आज मजे का!
चिंता बढलि—
कुँवर घर अइलन;

'हाय बुढ़ापा'! 'हाय बुढ़ापा'!!,
ढकवा इहे धराइल उनका!
लोगन का कहलो सुनला पर,
शांति मिललि ना तनिका!
जब राजा जी,
राजकुँवर का—
एतना जल्दी,
महल लवटि अइला के;
कारन पूछे लगलन,
तब ऊ चतुर सारथी तुरते;
पूरा हाल बतवलसि।
सुनि के राजा,
हुकुम निकललन;
राज करमचारिन के,
बेसी निगरानी राखे के!
ओने नया अमोला दुख के,
लहसे लागल;
माटी पानी पाके मजिगर!
तब राजा के नया हुकुम पा,
राजकुँवर जी फेर निकलन;
सवदागर के भेख बना के,
कल से छिपल रूप में बहरा;
वन-विहार में जाके अपना;
चित के शोधे-बोधे खातिर!
उहे देवता लोग सोचि तब,
दूसर रोगी पुरुस बनावल।
जइसे डेग बढ़ल कुछ आगे,
लउकि गइल चट महाबेमरिहा;
देहियाँ पीयरि भइलि सुखाइलि,
फूलल पेट बढ़ल पनदूदुर;
जरजर भइल रोग से, कँहरत,
'माई माई' कहि चिचियात!
ध्यान लगा ओही के देखत,
कुँवर सारथी से ई पुछलन—
'एकरा के बतलायीं के, हऽ
काहे आरत होके बोलत;
भइलि दशा एकर ई कइसे;
एतना सुनि के चतुर सारथी,
विनय भाव से उत्तर दिहलन।
'बिगड़ल बा रस खून धातु कुल,
एकरा भारी रोग भइल बा।
केकर बाँचल जीव जगत में,
के ना भइल रोग से जरजर,
इहे दशा होला सभई के,
दुख कलेश से बेकल होके।
लोग मउज में भूले भरमें,
ना कुछ सोचें, खुशी मनावे।'
अइसन हाल रोग के सुनि के,
काँपल हिरदय राजकुँवर के;
जइसे किरिन चान के काँपे,
चंचल जल का बिमल लहरि में!
दया नेह से गदगद होके,
कोंवर सुरस बचन ऊ कहलन—
"परजा के दुख रोग देखि के,
लोग ततिक ना सोचत समुझत;
फिकिरि छोड़ि के टहरत घूमत,
परदा परल आँखि पर भारी;
हिरदय में बइठल अग्यान।
धइलसि रोग घेरि सभई के,
तबो लोग फानत मुसकात;
कहीं दवाई खोजत ना कुछ,
करत जतन उतजोग!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सुनऽ सारथी ! रथ के फेरऽ,
राजभवन हमके पहुँचावऽ;
चित हमार थाकल घबड़ाइल,
रोग देखि माँथा चकराइल।'
देहियाँ के रथ ढील भइल जब,
किल्ली निकलि फेंकाइलि कतहीं;
सरकति गिरति लगामि ढील हो,
अचके में धूरा जनि टूटे;
अइसन सोचि सारथी रथ के,
राजभवन ले गइल हाँकि के !
दुखी उदास कुँवर तब गइलन,
कल से भीतर राजमहल में;
देखि बिचित्तर गति जीवन के,
चिन्ता में बूड़त उतिरात !
राज करमचारी चलाँक जे,
रहल लगावल निगरानी में;
राजडहरि के सोधे खातिर,
राजा ओकरा पर खिसियइलन।
फेरु कुँवर का मन के मोहे—
फसिलावे पघिलावे वाला,
रंग-बिरंगा साधन सुख के;
नेह लगन से गइल जुटावल।
मनवाँ जब उचटल अकुताइल,
ना बूड़ल रनिवास रंग में;
देखि समुझि तब भाव पूत के,
राजा जी कुछ आतुर होके,
तार लगवलन बन-बिहार के;
राग-दोस से छोड़ि बिचार।
नया नगद नमकीन पतुरिया,
अलबेली रस भरलि गुँजरिया;
फुलवारी में भेजल गइली,
चमकावत दुइ नयन-कटरिया।
शहनाई मिरदंग बाँसुरी,
ले सितार सरँगी इसराज;
डोरा डाले राजकुँवर पर,
जादू मारे करे शिकार !
राज-डहरिया खूब सजा के,
अबकी पूरा पता लगा के;
बदलि नारथी रथ दूनो के,
राजा भेजलन राजकुँवर के;

जनलन ई कि—
एना कुँवर जरूरे अइहनि,
माया का आँवक में;
अबकी पाशा परी बिजय के,
तीनि उड़ाने तितिर धराला !
तीसरि बेरि नगरिया घूमत,
गउतम देखलन नया तमाशा;
टिकठी चढ़लि कान्हि पर जात,
लोग बहुत पाछे ले—
रोवत-झंखत छाती-पीटत,
माँथ धुनत बिलखत पछतात !
मुरदा कान्हीं चढ़ि के जात,
कुँवर सारथी दुइए देखलन;
दूसर केहू नाहीं।
राजकुँवर तब,
फेरु सारथी से पुछलन कि—
"ई अब के हऽ,
चारि आदिमी ढोवत जेके;
लोग दुखी पाछेले लागल।
साज-बाज बा रंग-बिरंगा,
तबहूँ इनका खातिर;
सभई रोवत-कलपत बाटे।"
तब निरमल-चित-चतुर सारथी,
देहियाँ भीतर छिपि के बइठल—
देवलोग का पेंच अइँठले,
गूढ़ भेद कहलसि समुझा के।
"बुद्धि, इनिरिया, प्रान, गुनन से,
फरका होके बिना चेत के;
पुअरा काठ नियर ई केहू,
सूति गइल बा हरदम खातिर !
प्रेमी लोग जतन कइ,
पालल पोसल इनके;
अब घरवा से बहरी कइके,
फूँके फेंके खातिर;
कान्हे लिहले जाता !
राजा-रंक साधु भा पंडित,
ईहे सभकर अंतिम गति बा;
ईहे अंतिम काम !
सभई मुहवाँ तोपि जगत से,
हाँथ पसरले जाई आखिर !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

टूटी नाता नेह अचक्के,
छूटी धन आ धाम!
शिशिर रीतु जिनिगी के आई,
गँछिया के पतई पियराई:
दिनवाँ कले-कले नियराई,
आखिर गिरी पतइया भुइयाँ;
जहाँ-तहाँ उधियाई!
चारि कान्हि का चढ़ल खटोला,
दुलहिन चली चदरिया ओढ़ले;
उड़सी सँउसे सजलि बजरिया।
पाँचो तत्त पचीस प्रकृति के,
नव दरवाजा खुलल पिंजड़वा;
लउकी सून उदास!
माथा के ई कुटनी बुढ़िया,
समय पाइ सभई के ठगलसि;
कटलसि चिरुकी कान।
मउवति रोग बुढ़ापा कहिया,
छोड़लन केकर जीव?
नाँव रूप बा जेकर एहिजा,
ओकर चिट्ठा कटले जानीं!
जब रिकेब पर लात धइल बा,
तब का आशा रखले बानीं?"
गउतम के मन समुझि गइल कि—
मउवति आखिर धरी एक दिन,
जीव देंहि के छोड़ि पराई;
छूटी दउलति महल अँटारी,
छुटिहन जोड़ू-जाँता;
माता-पिता पूत-परिवार!
कवन उपाइ लगाईं,
करीं जतन लतजोग?
कइसे मिली अमरता
टूटी नकली नाता सभ से?

ई कुल सोचत मनवाँ उचटल,
कतहीं तनिको ठहरे नाहीं;
कहलन कुँवर सारथी से तब,
'रथ लवटावऽ चलीं नगर के;
बन-बिहार में सुख कहवाँ बा?
मउवति जब पछवें लागलि बा,
कइसे ना हम भला डेराईं?
देखि सजावल पाटल ओवा,
हाथी नियर बिसय में पागल;
भरमीं भूलीं डेग बढ़ाईं,
टहरी घूमीं मउज मनाईं!
जग में जे बुझनउक लोग बा,
ऊ ना कबहीं भूली-भरमी;
देखि बिपति माँथे मँड़रात!'
राजकुँवर का केतनो कहले,
सजग सारथी रथ ना फेरलसि;
हुकुम इयाद करत राजा के,
पदुमखंड बन-भीतर पहुँचल!
जहाँ सुघर गहगह फुलवारी,
लता-भवन मनमोहक कुंज;
सुरस तलइया मजिगर घाट,
कमल फूल मुसकाइल सजगर;
जोहत रहलन बाट!
हरी आम गँछियन का माँथे,
सुघर सोनहुला मउर बन्हाइल;
भँवरा रहलन मंगल गावत,
अलबेली कलियन का संगे;
पी पराग मधु मउज मनावत।
कामदेव के सखी सहेली,
कुहुकति रहलि कोइलिया काली;
खुश हो पंचम सुर में!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तिरिया-पछार

लता-कुंज-झाड़िन में जहवाँ,
बिहरत बत्तक मोर-मोरिनी;
खँड़रिचि सोनचिरइया
हारिल सुग्गा सुखी कबूतर;
पेंड़की आ गँवरइया !
रस से भरलि नयी अलबेली,
उमिरि सोरहिया मस्त जवानी;
चुरगति चलति अँइठि के बोलति,
चुहुल करति मुसकाति कले-कल;
सुघर गुंजरियन के दल कतहीं।
तहाँ कुँवर के;
निचलावाँ एकान्त जगहि में,
भेजि अकेले;
बरबस सेवक लोग घुमावल !
आखिर लता-भवन से निकलल,
जुवतिन के दल आइल;
अमिरित रूप पियत मन-ही-मन,
घेर कुँवर के बइठल !
धीर शांत सुकुमार कुँवर के,
केतने नारि समुझली—
बिना किरिन के दूसर चान
केतने गोरी देखि कुँवर के,
मगन मने मन;
बोलि सकसु ना बिहँससु !
राज-पुरोहित-पूत उदायी,
तब गद्‌गद हो बचन कढ़वलन—
"हे जुवतीगन !
रउरा सभ अति निपुन सुलच्छनि,
सभ-गुन-आगर बानीं !
अलकापुरी कुबेर भवन के;
उत्तर कुरु के सोभा,
रउरे लोग बढ़ाइ सकीला।
बहुत दिनन ले ए धरती के,
धनिये सभ चमकवले बा !
धीर शांत रिखियन का मन के,
धनियाँ बरबस हरन करे ली।
नारि मोहिनी माया का बश,
बरम्हा, बिसुन महेश नाँचि के;
धरती पर नर-लीला कइलन:
देवतो लोग बसी धनियन का,
सुधि-बुधि खो के घूमे ला !
तीनों लोक नारि का बश में,
तिरगुन-मोह-जाल में फँसि के;
लख चउरासी में भरमेला !
अइसन गुन-गति-बल का रहते,
रउरा लोग काम से अपना,
लउकत बानीं बिमुख उदास।
रउरा सभ का,
एह सिधाई आ लेहाज से;
हम तनिको खुश नइखीं !
जदपि धीर आ—
लछिमी से बड़ महिमावाला;
निपुन कुँवर ई होखसु,
तबो तेज तिरियन के भारी;
एह बिसय में निहचय कइके,
दाव लगावल चाही !
चतुर धीर पंडित विदमान्,
रिखी पराशर बेकल भइलन;
नदी तीर पटकइलन !
भाखत वेद पुरान ग्यान के'
बहुत दुलम पंडित मुनि ग्यानी;
बेदव्यास के,
बहुत समय पहिले काशी के;
सुघर पतुरिया लाते मरलसि !
सुनी पूरान कथा ई,
भिक्खु साधु गउतम मंथांल;
जंघा कसबिनि से सँग कइलन'
धन दउलति दे,
ओकरा के खुश राखे खातिर;
ढोवसु हरदम मुरदा !
शृंगी रिखी जनम के त्यागी,
तिरियन के कुछ गति ना जनलन;
आखिर उहो भुलइलन,
शांता उनके ठगलसि;
अपना बश में कइलसि !
तपसी संत शिरोमनि पंडित,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बिशवामित्तर महामुनि ग्यानी;
परल घृताची का फंदा में,
भूलि समय दस बरिस बिताके;
जनलन एके दिनवाँ।
अइसन रिखी लोग जब बेकल,
मनवाँ के ना रोकि सकल तऽ;
नया जवान कुँवर के,
का मजाल हिम्मति बा?
रउरा सभ गुन-कला-देखाईं;
आपन कोसिस जोर लगाईं;
कि ई हंस-वंश राजा के,
जनि घर छोड़ि बनसु बयरागी!''
तीर गड़ल धनियन का मन में,
बतिया सुनत उदायी के!
'बस में करबि कुँवर के हमनी',
सभजानी ई बीरा चभली।
फुलवारी का लता-भवन में,
धनियाँ लोग जमावल आसन।
हँसी-मसखरी नाँच-गान से,
तिरछी नजरि घुमा के सज से;
राजकुँवर के फाँसे खातिर,
बहुत जतन उतजोग भइल तब।
हुकुम पाइ राजा के,
जानि कुँवर के शील-लेहाज;
केतने धनियाँ कामातुर हो,
छोड़ली आपन लाज!
नया नगद तिरियन से,
बन्हल घेराइल चारोभर से;
पदुमखंड-वन भीतर रहि के,
राजकुँवर कुछ समय बितवलन,
वन-बिहार में आपन!
जइसे हाथी हथिनिन का सँग
सघन हिमालय-वन में!
कुछ मतवाली धनियाँ बढ़ि के,
चन्नन-केसर-कसतूरी के-
लेप सुवास लगावल;
चुनमुन सुघर उठल जोबन से,
राजकुँवर के छुवली!
एगो धनियाँ सखी चतुर कुछ,
झूठ बहाना—'गिरलीं', कहि के;
लपिटलि जाइ कुँवर से।
'एगो गुपुत बाति सुनि लेईं''
अइसन कहि के दोसरि,
राजकुँवर के चुम्मा लिहलसि!
एगो मद में आन्हर होके,
तिले-तिले सारी खिसकावति;
कबे फुफुतिया -
हाँथन से सुहुरावति,
करधनियाँ अचके चमकावति;
एह किसिम से शोभा पवलसि,
जइसे राति-समय में;
बिजुली चमकति होखे!
पकड़ि आम के डाढ़ि लटकली,
कुछ जुवती मद-मातलि;
अँगिया कले-कले घिसकावति,
रस से भरलि तनिक ना खाली;
सुघर सुराही सुबरन वाली,
छतिया के जोबन झलकावति!
कवनो नील कमल के सूँघति—
"हे पतिदेव! आम के मोजरि,
कइसन महँमहँ महँकति!
कहीं छिपलि डढ़ियन पर बइठलि,
बंद भइलि सोने का पिंजड़ा;
सुखी कोइलिया कुहुकति!
देखीं तनी अशोक त्रिरिछ के,
जहाँ भँवर-दल गूँजत;
झूमि-झूमि रस लेत पुलुँगियन,
जानुक अगिनि-लहरि में जूझत!
आमन का डढ़िया से,
तिलक बिरिछ के;
सजसे ई लपिटाइल देखीं!
जइसे पुरुस पहिरि के कपड़ा—
धपधप चमकत उज्जर;
चंदन केसर कसतूरी के—
लेप लगवले दगदग गोर,
धानी रँग चुनरिया जेकर;
धनियाँ अइसन अलबेली के,
अँकवरिया में धइले होखे!

एह किसिम से,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जुवतिन के दल;
राजकुँवर का—
मनवाँ के उकसावे के,
लाख जतन उतजोग कइल,
बाकी ओकर,
तनिको ना कुछ असर भइल!
पत्थल पर के मारल,
चोखो तीर नशावल!
बतिया खटकलि राजकुँवर का—,
ऊ मन ही मन सोचे लगलन--
"ई ह दोस उमिरि के,
चूर नशा में होके;
चढ़ती नया जवानी का,
धनियाँ लोग समुझली ना!
चंचल जग के रीति,
जवानी हऽ वालू के भीति;
रूप बुलबुला पानी के,
बुढ़ापा जाले चाटि जवानी के!
छन भंगुर संसार,
देखीं आँखि पसारि!
रामनाम बस सार,
बाकी त्रिसय असार!
जे दुनियाँ में आके,
मानुस देहियाँ पाके;
जानल ना अपना के,
साच समुझि लिहलसि सपना के!
ओकर कहे कहानी के!
बउराही हलकानी के!
तिरिया लोग भुलाइल,
बिसयन में लपिटाइल;
जानि सफल ना—
परिकल मउवति रानी के!
सभई के बलि लेबेवाली,
बहुत पुरनियाँ नानी के!!
तनिको जेकरा बूझ-विचार,
देखि बुढ़ापा मउवति रोग;
ऊ कब अँखिया मूँदि भुलाई,
कइसे चुहुल करी मुसकाई?
धीर-धीर हो शांति-सुमति से,
सोची कुछ उतजोग!

रोगी-मिरतक-बूढ़ देखि के,
सजग भइल जे चेतल ना।
ओकरा के जढ़ जानी रउरा,
कहीं आदिमी चेतन ना!"
बिमुख भइल तिरियन से,
मन बटोरि बिसयन से;
देखि कुँवर के ध्यान-मगन,
भजन-भाव बयराग-लगन;
नेति-धरम में निपुन उदायी,
अँखिया आन्हर नाँव नयनसुख;
पोंछत लोर नयन से!
जइसे बकुला ताल किनारे,
उज्जर पाँखि पसारि;
चिक्कनि बाति बनाके,
मन में कपट छिपा के;
आइल करे मिताई,
मछरिन से चट जोरि हिताई;
बइठल ध्यान लगा के,
तपसी रूप बना के!
तइसे बरबस,
नखड़ा कइले नकल पसरले;
नकली लोर बहावत,
नेति-धरम के बचन सुनवलन;
कपटी मीत उदायी!
"बिपति समय में संग न छोड़े,
काम करावे हित के;
हरदम नीच जबून करम से,
दूर हटावे चित के!
इहे मीत के लच्छन तीनि,
कहत साधु पंडित परबीन!
अइसन सुघर जवान पुरुस के,
नारि छोड़ि के बनल उदासी;
केहू कहि ना सके जथारथ,
आपन गोड़ जानि के काटल,
अपना हाँथे आरी से!
नारी आधा अंग पुरुस के;
ओकर-जीवन-संगिनि!
बोध सबुर नारी के देईं,
राखीं ओकर रोख।
तनिको तऽ कुछ नेह देखाईं,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भले करीं जनि सोख!
आदर करीं प्रेम से बोलीं,
मन में राखीं भाव!
तबे निपुन गिरहस्त कहाइब,
पार करबि जिनिगी के नदिया;
ना त नाइ बीच में डूबी,
रउरो बूड़ि मरबि मँझधार!
देवलोक के राजा इन्दर,
उत्तम समुझि काम के;
भेख बदलि के अइलन कल से,
गउतम मुनि का तपोधाम के
खइलन प्रेम सुभावन,
सोझ अहिल्या नारी से;
छल से छिपल बेचारी से!
मुनि अगस्त जब बिनती कइलन
देवि रोहिनी,
सुखी चनरमा नारी के;
सरधा भगति विनय से पवलन,
धरम-संगिनी ठीक तइसने;
लोपामुदरा सती-सरूपा,
सेवा में सुकुवारी के!
मरुतदेव के बेटी ममता,
उतथ मुनी के मेहरि;
तेकर संग बिरसपति कइलन;
तपेसरी बड़ ग्यानी!
जनम भइल तब भरदुवाज के,
संगति के फल जानीं!
बतिया सुनीं पुरान समय के,
बसी काम का रिखी पराशर;
जमुना नदी किनारे,
बिसय-पियास बुतवलन चट से,
सहज मलिन तिरिया से,
काली जेकर नाँवें!
मुनि वसीठ जब इच्छा कइलन,
समय पाइ के बिसय भोग के;
तब मतंग के बेटी,
अधम जाति चंडालिनि;
उनकर साध पुरवलसि,
पवलसि पूत समय से;
जमलन मुनी कपिंजल!

समय हाँथ से निकलि गइल जब,
धमकल आइ बुढ़ापा;
पहुँचि चइतरथ बन में,
राजा रिखी समान जजाती;
देव तिरियवा,
नया चटक अलबेली;
बिसवाची के पाके,
धोवलन हाँथ जुड़वलन छाती!
जइसे संग करबि माद्री से,
मउवति पकड़ी हमके आके;
तबो पाण्डु मनलन ना,
भेंद-मरम जनलो पर;
गइलन आखिर जान गँवा के!
रउरा नियर जवान कुँवर जी,
रूप शील गुन पाके;
तहवाँ चढ़लि जवानी झंखे,
ना तिरिया के ताके!
केहू एके उचित कही ना,
गूँग बहिर बनि परल रही ना!!
देखलीं इहे तमासा जग में,
बिरले केहू बचल पराइल;
चढ़लि जुवाठि कान्हि पर सभका,
सभई नाधल घुमत नथाइल!"
नेतिया-धरम के एतना बतिया,
मुनि के मीत उदायी के;
गरजत मेघ समान कुँवर जी,
सवतुक सुघर जबाब सुनवलन;
कहलन बात भलाई के!
"बिसयन कें ठोकरावत नइखीं,
डेग समुझि हम डालत बानी।
पानी महबि त लयनू पाइबि,
'अइसन बतिया' कइसे मानीं?
हम दुनियाँ के,
बिसय सरूपे जानीं ला।
साफ कहबि कि एह जगत के;
नाशवान आ छनिक मानि के,
मन हमार एकरा में;
तनिको लागत नइखे!
रोग बुढ़ापा मउवति कतहीं,
जो धरती पर रहितन नाहीं;

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हम बिसयन से नेह लगइतीं,
छनकि छटकि के भगितीं नाहीं!
धनियन के ई देहियाँ जग में,
हरदम रहित अमर जो होइत;
तब हम नेह लगइतीं सज से,
तनिको सकुचि डेरइतीं नाहीं!
आखिर रूप सुघरता इन्हिकर,
चाटि बुढ़ापा लेई!
सभई भड़की नाकि सिकोरी?
तब के झँझरि नइया खेई?
लोगवा मोह भरम-वश,
झूठे प्रेम करेला।
दउरत फिरत मिरिग-टिशुना में,
आखिर थाकि मरे ला!
मउवति रोग बुढ़ापा, इन्हिकर;
सहज-सरूप जगत में मानुस,
तबहूँ जो ऊ,
रोग बुढ़ापा मउवति रूप—
बिसयन के रस लेत भुलाइल;
बूड़ल आतुर हो उनका में,
तब पशु-पंछी का समान ऊ
दूसर तूँ जे ई कहलऽ कि—
ऊ महातमो,
बिसय-काम-वश होके रहलन;
एकरा में तऽ,
डरले उचित कहाई।
काहें से कि,
उनकर पतने भइल मनाई!
जे केतने मुनि ग्यानी,
बेकल भइलन;
बिसयन का रस के चीखे में,
ओकर भइल नतीजा का?
काँटकूस गड़हा में गिरलन,
मुँह में उनका करिखा लागल!
हम ओकरा के;
उत्तम नाहीं मानीं;
तन-मन धन सभई के
जेकरा में कि—
नाशे हरदम होला!
आतम-ग्यानिन का बिसयन में,
ममता होले नाहीं;
अउरी ना ऊ ओह ओर झुकि,
जतने कबे करेलन!
बिसय-दोस के समुझल,
सजग भइल जे जागल।
मोह-भरम के जाल काटि के,
ऊ बिसयन के त्यागल!
'मन में भाव दूसरे राखीं,
उपरो ले कुछ प्रेम देखाईं;
अइसन जे कहनाम तोहार,
ऊ तऽ झूठ-कपट बेवहार!
इहे मीत के धरम उचित कि
धोखा-ठगी सिखाईं?
अपने गिरी नरक-गड़हा में,
खींचि साथियो के ले जाईं!
आखिर एकर फल का होई?
हम चक्की में परीं पिसाईं!
गहिरी नदिया तेज धार में,
दूइ नाइ का बीच भवँर में;
नाहक डूबीं जान गँवाईं!
बिसय-मोह-नदिया-धारा में,
परि के चभकल खाइल लबदा।
ओकर सुनीं कहानी का हम,
ग्यानी कहीं कि गबदा?
अइसन काम करीं जे—
पाछे परे डँटाये के?
बनल बेजइहाँ;
गोधन नियर कुटाये के?
मँहगा मोल चुका के घर से,
अपने आप जटाये के!
मउवति धरी जरूरे आके,
इहो समुझि जे सरपट दउरे;
बिसयन से ना थाके।
ओकर अकिलि बनलि लोहा के,
लख चउरासी माँके!
गहना-गुरिया माला-पहिरन,
नाँच-गान सभ थाकल;
धनियँन के मनवा मधुवाइल,
दाव-घात ना लागल!!
मन के भाव छिपवले मन में,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

धइले उहे डगरिया।
हाँथ मलत पछनात अंत में,
गइली लवटि नगरिया!
जेकर तेज बिराजल सगरे,
उहे सुरुज महराज थाकि के;
धरती छोड़ि पताले गइलन!
साँझि भइलि शोभा बटुराइलि,
पंछी खोंतन में जुटि अइलन!
लउकल सभ कउवाइल,
जहें-तहें धावल अकुताइल;

देखि जगत के छनभंगुरता,
राजकुँवर मनवाँ में सोचत;
राजभवन के गइलन!
बिसयन से बयराग!
राग रंग के त्याग!!
अइसन राजकुँवर के हाल।
राजा सुनि भइलन बेहाल!!
जेकरा दिल में तीर गड़ल,
अइसन हाथी नियर दुखी ऊ;
ओह राति के सुतलन नाहीं!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

महात्याग—महानिकास

शाकिय राजा का बेटा के,
घेरि बझावे खातिर;
किसिम-किसिम के फंद रचाइल;
प्रिय बिसयन के लोभ दियाइल;
तबहूँ ना फरियाइल !
चारा गाँथि लगावल वंशी,
खाली बहुरी आइलि !!
जहरीला बानन से बेधल,
शानी सिंघ समान कुँवर के;
शांति मिलल ना धीर !
बाढ़ल मन के पीर !!
शांति-बोध कल जोहेवाला,
राजकुँवर तब एक समय में;
बन के चललन मन बहलावे,
कथा-पुरान सुनावे वाला—
मंत्री पूत लोग का साथे !
बिरिछ कमल के छापा लागल,
सुघर धजा फहरात।
घंटी-घुघुर बनल सोना के
सुबरन के सज नया लगाम।
गाँथल गहना से सोने का,
चँवर चलंता लागल चमकत;
लच्छन मान चतुर कंथक का—
पिठिया बइठल सोहत।
चललन राजकुँवर ऊ,
लोगन के मन मोहत !
बन के देखे का लालच से,
अउरी मोहित होके;
धरती का शोभा से,
जब ऊ गइलन;
बन का अंत छोर का ओर,
तब उनका के;
'धरती लउकलि जोतलि-चीरलि,
घासि-कूस नोंचल छितिराइल !
कीट फतिंगा उचुरुंग सगरे,
मरि के पटरी परल कुँचाइल !!
देखि दशा धरती के अइसन,
चिंता-सोग कुवँर के धइलसि;
भाई-बंधु मरल हो तइसन !
कड़कड़ घाम उझंख हवा से;
धुरियाइल झउँसाइल देहियाँ !
लउकत नवल हाड़ पँजरिन के,
टेंढ़ हँसुलिया गर के झलकति;
दोनि कुदार चलावत बँहियाँ !
जोतत खेत पसीना काछत,
देखलन कुँवर किसान !
गोहूँ बासमती उपजावे,
दूध दही के नदी बहावे;
फल-फूलन के बाग उगावे,
आपन जाँगर-जीव लगा के;
एह जगत के,
सरग समान बनावे वाला;
महापुरुस भगवान !!

कहीं देखि बेकल बैलन के,
हर में चलल खेदाइल थाकल;
उमड़लि दया कुँवर का चित में,
तब घोड़ा से उतरि कले-काल;
जनम-मरन के बतिया सोचत,
दुख से दोचित छनकल दागल;
सवतुक बचन कढ़वलन—
'बड़ा कठिन भवजाल,
नाचत सिर पर काल !
जगत दुखी बा साचे;
परल मोह में नाचे !
चलीं अकेल जगहि में कतहीं,
बइठीं ध्यान लगाईं !
दुख के दूर करे के,
जतन-जुगुति कुछ पाईं।"
इहे सोचि साथिन के,
कहीं रोकि ठहराके;
थोरे दूर पहुँचि बन भीतर,
हरियर सघन सुघर जामुनि तर।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हरी मखमली—
दइवी सेज बिछावल,
नीलम मनि गाँथल धरती पर;
तुरत बइठलन पलथी मारि।
सभ परपंच बखेड़ा टारि!
ध्यान लगा के सोचे लगलन,
जनम-मरन के गूढ़ सवाल!
"भला मूढ़ता वा केतना कि—
रोग बुढ़ापा मउवतिवाला,
पराधीन अग्यानी लोग;
मद में आन्हर हो बउराइल,
रोग बुढ़ापा मउवति दुख से;
दुखी देखि दूसर के,
ओह ओर से;
बरबस मुँहवाँ मोरे ला!
एह जगत में,
हमरो गति जब ईहे;
तबो रोग मउवति के
दुरगति देखि भुलाईं हम जो;
असल धरम के जानेवाला,
हमरा खातिर;
ई त उचित कहाई नाहीं!"
एह किसिम जग का—
रोग, बुढ़ाई, मरन बिनास;
सभ दोसन पर सज से,
करत बिचार कुँवर के;
मन समाधि में लागल।
सजग भइल झट जागल!!
दूर भइल मद उनकर,
धनबल रूप जवानी के!
सहज शांति से इनके;
समुझि बुलबुला पानी के!!
हिरदय सूध भइल जब झलकल,
मति निरमल हो बाढ़लि चमकलि;
एक आदिमी भिक्खु भेख में,
आइल उनका पास।
दूसर केहू देखि सकल ना—
भेद मरम पावल कुछ खास!
राजकुँवर तब पुछलन उनसे—
'रउरा कहीं हईं के?'

भिक्खु तुरंते उत्तर दिहलन,
"हम संन्यासी संत उदासी;
दूसर अउर कहीं के?'
'जनम-मरन के भारी लटका,
जग में देखि डेरइलीं।
घर परिवार हीत नाता का,
परल कोल्हु जाँता में;
भूठे बहुत पेरइलीं!
ना लउकल कुछ सार कहीं तऽ,
आखिर निकलि परइलीं!
टिशुना ममता मोह छोड़ि के,
भजन-भाव में जंगल अइलीं!
संतन के सतसंगति कइलीं
सुमति सुगति के पावे खातिर;
ई संन्यास-डहरिया धइलीं!!
नाशमान छनभंगुर जग में,
मुकुति-लालसा रखले मन में;
अविनाशी पद खोजत बानीं।
आपन-पर के भेद न मानीं!!
बैर प्रेम दूनों से दूर;
सुख-दुख एक भाव मंजूर!
मान-निरादर सहज समान!
एक काम बस आतमध्यान!!
कबे रहींला गाँछ-बिरिछ तर,
कबहीं सूना नदिया तीर!
परवत खोह गुफा जंगल में;
कबे समय से,
निचलावाँ मंदिर में कतहीं!
कुछ बटोरि के राखीं ना हम,
माँगि मधुकरी खाई लाँ!
आशा टिशुना के लतिया के;
सुगति-मुकुति के—
जोहत समय बिताई लाँ!"
राजकुँवर का देखते-देखत,
एतना कहि संन्यासी।
उड़ि के गइलन कहीं अकासे,
देवलोक के बासी!
उनके पंछी नियर देखि के,
उड़ल अकासे जात।
अचरज खुशी कुँवर का मन में,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जागल दूनो भाव !
संन्यासी से ग्यान पाइ ऊ,
निहचय कइलन घर छोड़े के !
दस गो मजिगर घोड़ा नाघल,
तन का उत्तम रथ पर बइठल;
इन्दर नियर तेजबल वाला,
चतुर कुँवर तब;
कंथक पर असवार होइ के,
ओहिजा देखि बखेड़ा साथे;
जुटल लोग के अपना।
ओहिजे ले बन गइलन नाहीं,
रहल अधूरा मन के सपना !
जनम-मरन के लटका टूटे,
एह ख्याल से;
वन के जाये वाली,
पक्की राइ छिपवले मन में;
आसन नगर बीच आ पहुँचल,
जइसे कबे बनइला हाथी,
पोशुवा हाथिन का दल भीतर;
बेबश होके आवत !
छरहर देहियाँ गोर रंग के,
जइसन सुघर सूमेरू चोटी !
लटकलि लमहर बँहियाँ सोभसु,
जानुक मजिगर हाथी सूँढ़।
अँखिया बड़हन चमकसु दूनो,
जइसे होखसु;
ताजा पोढ़ आम के फाँकी !
मोढ़वा दूनो साँढ़ समान।
छतिया गठल कसाइलि ऊँच,
गजभर चाकर लउकति।
पिठिया चिक्कनि; चउरस,
जइसन सजगर पीढ़ा !
मुँहवाँ जइसे उगल चनरमा,
सोरह कला पुरनवाँसी के !
बोली मेघ समान।
अइसन सिंघ समान बली ऊ -
जेकरा मन में;
उपजल प्रेम धरम के;
गइलन राजमहल में !
जहाँ बइठि सूधोदन राजा,
मंत्री चतुर देवान संग में;
शोभा पावत रहलन,
जइसे इन्द्र सरग में सोहत;
देवलोग का साथे !
पहुँचि सभा का बीच कुँवर जी,
हाँथ जोरि के माँथ नवावत;
मधुर वचन राजा से कहलन,
जइसे सनत कुमार इन्द्र से !
"हे राजा जी !
हम ई पचड़ा छोड़ि चलबि अब,
बन के धरबि डहरिया !
साधु संत के संगति जहवाँ,
सोहत धरम-नगरिया !
हमके राउर,
हुकुम मिले के चाहीं।
मन बयराग रंग में बूड़ल,
निकली सुगतिलोक के राही !
इहे लालसा जागल मन में,
हम संन्यासी बनीं, सजग हो;
सुगति-मुकुति के खोजीं।
आखिर संग जरूरे छूटी,
नाता सभसे टूटी !"
राजा बतिया सुनत कुँवर के,
घाही होइ करेजा धइलन;
जइसे हाथी का ठोकर से,
काँपे घाही फेंड़ !
हाँथ पकड़ि तब राजकुँवर के,
जानुक कमल बन्हाइल अँजुरी;
लोर बहुत नयनन भरि राजा,
गदगद गील बचन तब कहलन—
"बेटा ! तूँ विचार के बदलऽ
काँच उमिरिया, तोहरा खातिर;
भजन करे के,
समय जथारथ;
अबहीं आइल नाहीं !
चढ़ती नया जवानी चंचल,
भरलि दोस अयगुन से !
देखि बिसय के,
जुबक लोग के;
तन के दसो भूटिया घोड़ा,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तडफड़ाए हिहिनाहु जोर से;
सरपट दउरल चाहसु!
नयी उमिरि का जोश-जोम में,
तोरि पछाड़ी पगहा खूँटा,
नाद चरनिया ढाहसु!
गलती सही विचारे खातिर,
अकिलि पोढ़ ई होले;
ना चालिस ले पहिले!
संजम नेम बरत के,
दुख तकलीफ सहे में;
नया जवान पुरुस ना—
उचित रूप से समरथ होला!
ए से बन से,
ओकर मनवा भागे ला।
खास तरह से ओकरा पासे,
सुमति-टकउरी तउल-बटखरा;
सवतुक होला नाहीं!
जे से कि ऊ,
नीक-जबून उचित-अनुचित के;
नापि-जोखि फरियाइ सके!
हे हिरदय के टुकड़ा!
नयनन के प्रिय जोति!
हमरा पुन्नि-धरम के मूरति,
सहज सुघर लच्छन सपन्न!
तोहके सउँपि राज-लछमिनियाँ,
भजन करे के समय हमार!
धरम तोहर,
करीं पुरुसारथ,
पिता वचन के टारीं ना।
बचन टरी तऽ अधरम होई;
अपजस मिली नमूसी फइली!
काँटकूस से भरलि डहरिया,
तोहके कबे सुधारी ना!
बदलऽ आपन बूझ-विचार,
तत्पर हो गिरहस्त-धरम में;
नेति-नेम निबुकावऽ!
करतब उचित इहे मानुस के
कि सुख भोगि जवानी के
भजन करे के डेग बढ़ाईं
पकड़ीं डहरि तपोवन के!"

पिता वचन सुनि के सिद्धारथ,
विनय भाव से कहलन उनस—
"हे मतिमान पिता जी! रउरा,
जो हमरा के;
देईं ई वरदान चारि गो,
कि हम कबे बूढ़ ना होईं;
रोग धरे ना हमके कबहीं।
बिपति हरे ना सुख-संपति के
ना हम मउवति से पकड़ाईं,
ना अब जनम फेरु से पाईं!
तब तऽ हम बन जाइबि नाहीं,
ना संन्यासी बनबि छोड़ि घर!
तप समाधि संजम पूजा में,
आपन नेह लगाइबि ना!!"
राजकुँवर का मुँह से अइसन,
सुनि बतिया अनहोनी।
उनका के समुझावे खातिर;
नेति-वचन राजा तब कहलन—
"बतिया जनि बढ़ि-बढ़ि बतियाईं।
काम जथारथ करीं-कराईं!!
करीं चाह मति अनहोनी के,
दुनियाँ हँसी शिकाइति होई!"
पुरुस सिंघ शुभ लच्छन मान'
जेकर महिमा मेरु समान।
अइसन राजकुँवर राजा से,
बतिया साफ फेर से कहलन—
"नेम-रीति जब नइखे कवनो,
का तहवाँ निबुकावऽ?
रउरा हमके बेंड़ि-छेंकि के,
करबि कवन उबहावँ?
जहाँ आगि लागल घर भीतर,
पवन बहल चउवाई।
लोग निकलि के भागो ना तऽ
कइसे जान बचाई?
जे चाहत बा कूदि-फानि के,
निकलि कइसहूँ भागीं।
ओकरा के अँकवारी धइके,
रोकल उचित कहाई ना!
नदो-नाव संजोग, जगत ई;
पंछी रैन बसेरा!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

समय पाइ संजोग जुटल तऽ;
कबे वियोग जरूरे होई !
लउकत इहे जथारथ बा कि—
सभ परपंच बखेड़ा छोड़ी,
धरम-नेम-तप-भजन करे के;
घर से निकलीं डेग बढ़ाईं।
अब ई नकली नाता तोरीं !!
जंगल झाड़ी नार खोह में,
चतुर चोर ठग डाँकू केतने;
देखि गठरिया मुलुकत झाँकत,
छिपल कही टाही में बाड़न !
जे राही का समझ भइल ना,
उहे लुटाई राई !
हाँथ मली पछताई पाछे,
जब अवसर के खोई !!"
सुगति शांति सुख जोहवाला,
राजकुँवर के वतियावल सुनि;
राजा मन में ई सोचलन कि—
"लइका बाडन अवं कुँवर जी,
छटकि भाग क जइहन नाहीं;
मनवा उचटल अउँजाइल बा,
कहत अइसहीं बाड़न !"
एही से ऊ,
उनका रुचि के बदलेवाला;
सुघर भोग सुख उत्तम,
पहुँचावे का इच्छा से;
कइलन बहुत जतन उनजोग !
नेह-छोह सरधा भगती से,
मंत्री लोग कहल समुझावल।
साहतर कथा पुरान सुना के,
बहुत-बहुत परतोख देखावल !
राजा लोर बहत नयनन से,
कइलन मना कुँवर के।
आखिर कुँवर सभा से,
विदा होइ के;
चललन रंगमहल के !

वचना हरिन नियर दुइ अँखिया,
सुवरन कुंडल कानन में।
नकिया में नकबेसरि सोहत,
मोती जड़लि लटकि मन मोहति।
मद में माँतलि चलति कले-कल,
अमिरित रस के भरल कटोरी;
सुघर गुँजरियन के दल,
मोहित होके राजकुँवर के;
देखत रहल नयन भर !
सुघर सुमेरु समान कुँवर ऊ,
अरस-परस तन-तेज-गुनन से ;
अउरी अपना मीठ वचन से,
हरलन उनकर रूप गरूर !
अरुन सारथी सुरुजदेव के,
रथ के हाँकि पताले चललन।
ओने जेकर,
सुरुज नियर तन-तेज जोति शुभ;
ऊ शाकिय-कुल रतन नगीना,
राजकुँवर कोठा पर चढ़लन।
जइसे उगत सुरुज देवता,
होखसु गइल सुमेरू ऊपर ;
आपन तेज अँजोर बढ़ा के,
घुप्प अन्हार मेटावे खातिर !
उत्तम साज सिंगार महल के,
सुघर झाड़ फेनुस के मजिगर;
टांगल सुबरन गाँछ दिया के,
जगमगात बिहँसत मन मोहत !
पदुमराग मूंगा गजमोती,
हीरा रतन जड़ल अनमोल।
कारीगरी कला से चमकत,
सोना का शुभ सिंघासन पर;
आसन लागल राजकुँवर के !
भइलि राति जब तरई ऊगलि,
शांति विराजलि सगरे।
तेजवंत सरहँग परतापी,
इन्दर नियर कुवँर का पंजरा;
धनियाँ लोग जुटल सुरियाइल,
बाजा-गाजा साथ लेइ के !
अलकापुरी कुवेंर भवन में,
जुटत देव तिरिया-दल जइसे !
तिरियादल के तोरल तान,
नाँचि-गान मोजरा मुसकान !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रूपगर सुरस मोहिनी माया,
रंग-बिरंगा फंद !
देखि कुँवर का नेह भइल ना,
ना कुछ सुख आनन्द !
समुझि कुँवर का मन के भाव,
पकड़ि डाँड़ पतवार भीतरी ;
देवता लोग घुमावल नाव !
ना लागल कुछ घात ;—
लात,—
सरकल बिछिलाइल !
दंगल बीच घरिलवा ढरकल,
तिरिया लोग उँघाइल !
कवनो तिरिया गाढ़ी निनियाँ,
आपन होश-हवास गवाँ के ;
गाल हाँथ पर धइले,
सुबरन पात मढ़ल बीना के !
गोदी बीच छोड़ि के सूतलि !
सुघर बाँसुरी हाँथे लिहले,
सारी सरकि गिरलि असतन से ;
सोहति सूतल दूसर धनियाँ,
जइमें डंटी सहित कमल पर ;
सोझ पाँति भवँरन के बइठलि,
विहँसति फेन सहित नदिया में !
चमकति सुघर सोनहुली, चिक्कनि-
कमल-फुल के हिरदय जइसन।
टटके बनल बिजाइठ डलले
बँहियनवाली तीसरि धनियाँ,
अँकवारी मिरदंग धइलहीं ;
सूतलि बा बेखबर होइके,
जइसे पिय से लपिटाइलि हो !
पियरी पहिरि गुँजरिया केतने,
नया बनल गहना सोना के।
बसी भइलि गाढ़ी निनियाँ का,
गिरली धरती पर उदास हो।
डाढ़ि तोरि कनइल के,
हाथी जइसे फेंकले होखे !
माला सुघर पहिरले लमहर,
धनुही तियर नवलि कुछ !
काम-बान सरिअवल पोढ़।
एगो दूसर धनियाँ,
खिरकी के बाजू धइ सुतलि ;
एह किसिम से शोभलि,
बुझला वहरी का दुवारि पर ;
कठपुतरी हो बनलि सजीलि !
पछुवा पहुँची पहिरी सोनहुला,
नयी नवलि असथन का बोझे ;
केतने सखिया सूतल बाड़ी,
धइले एक दुसरकी के !
सोने के करधनी पहिरले,
धानीरंग चुनरिया मजिगर ;
सरँगी सरकि कान्हि से जेकरा,
बँहियन से पकड़ाइलि; (सज से)
जँघियन बीच परलि बा।
अइसन एगो सखी उँघाइलि,
सोभि रहलि बा, जइसे —
अँकवरिया में धइले पिय के;
रति से थाकलि सूतलि हो !
चमकत भहुवाँ सुघर लिलार,
अँखिया मजिगर बड़ी-बड़ी।
नकिया जिनकर सुग्गाठोर,
देखि गले मोतिन के माला,
ललकल उनका ओर !
अइसन केतने सखिया सुतली,
जइसे सुरुज डूबि गइला पर,
सकुचाइलि कमलिनियाँ होखसु !
झोंटा खुलल लटकि छितिराइल,
सारी के फीता आ करधनि,
कहीं सरकि जाँघिन पर आइल,
हीरा हार गला के बिखरल,
अइसन कवनो सखी उँघाइलि,
तकले तनिक बुझाइल, जइसे,
मूरति हो हाथी के तोरलि !
गहना माला गिरल फेंकाइल,
फुफुती खुललि लुगा छितिराइल,
लउकत उज्जर नयन उदास।
अइसन सुतलि गुँजरिया कवनो,
रहल तनिक ना होश-हवास।
जइसे लाशि धइलि हो पास !!
किसिम-किसिम से सूतल धनियाँ।
केतने मातलि खाति ढमनियाँ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कुल के रीति-रेवाज बतावति,
देहज लुरि-सहूर देखावति ।
जइसे तेज उझंख पवन से,
झक़झोरल मुरझाइल लउकति,
कमल फूल से भरलि तलइया !
देहियाँ सुघर रहलि धनियन के,
बोली सजगर मीठि !
चेहरा भइज भयावन, बाकी-
आलस नीनि जम्हाई से;
कुँवर सोचि तव अयगुन-दोस,
दुखी भइल फुहराई से।
फेरलन आपन दीठि !
तिरिया बड़ी भयावनि जग में,
उनकर गंदा लूरि सुभाव ।
परल चकोह भवँर में जिनका,
घूमि रहलि वा सभकर नाव !
तिरिया तिरदोस वोलावेली,
तीनि लोक के मालिक वरम्हा;
उनहूँ के नाचि नचावेली !
भेद मरम कुल समझि बूझि के,
राजकुवँर के मनवाँ भड़कल;
सोचलन रतिये भागे के,
देवता लोग समुझि के,
उनका मन के भाव;
चट से खोलि दिहल दरवाजा,
उतरि कुवँर तव नीचे अइलन;
राजमहल का निचिला तह में !
ओही समय जगवलन जाके,
वहुत गुनी घोड़न के रच्छक-
तेज सईस चतुर छंदक के !
अउरी ओकरा से ई कहलन-
"सुगति शांति-सुख खोजे खातिर,
अब हम डेग बढाइबि;
एही घरी पयान करबि !
पवन समान तेज कंथक के,
तूँ जल्दी तइयार करऽ !
हिरदय में संतोख-
आज कुछ,
मन के शांति भेटाइलि !
बुद्धि विमल हो जागलि अइसन,
कि सुनहट में जोति मिललि शुभ,
सुगति लोक का राहगीर के;
अउरी असल निशाना झलकल,
लउकलि साफ डहरिया !
लाज छोड़ि के हमरा आगा,
धनियाँ जइसे सुतली;
अपने झाप खुलल दरवाजा ।
पाके अइसन-
उत्तम साइति सुघर सुतार;
हमके इहे बुझाता कि अब-
समय पयान करे के आइल,
बाटे चिक्कनि डहरि हमार !
जनलो पर राजा के,
निगरानी के नेम-कनून;
हुकुम पाइ के राजकुवँर के,
उरपेरक देवतन का बल से;
छंदक चट घोड़ा ले आइल !
साहस वेग वंश बल उत्तम,
कंथक खुलल पोंछाइल !
मुँह में चढ़लि लगामि
सुघर सोना के;
पीठी कोवँर जीन कसाइल !
ऊपर ले जिनपोस डलाइल !!
राजकुँवर पिठिया सुहुरा के,
कले-कले कंथक से कहलन-;
नेह भरलि बानी से ।
"घोड़न के सरदार सुनऽ तूँ,
केतने समर जीति के;
सुजस वड़ाई पवलऽ !
जइसे सुगति मिले हमरा के,
करतव ऊहे देखावऽ !"
"बिसय-भोग-सुख,
समर-भूमि में;
धन-धंधा रोजगार हाल में,
संगी बहुत भेंटालन जग में;
नेति कहेले,
बिपति समय में;
धरम-काज में,
केहू विरले संग धरेला !
हम तऽ इहे समुझले बानीं,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CÇ-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जे दुनियाँ में;
पाप करम में,
तप में, भजन-भाव में;
जीव, दया में, जग-सेवा में,
कवनो धरम-काज में,
साथ धरेला;
मदति करेला,
समय पाइ के पाप-पुन्नी में;
ऊहो साझीदार बनेला !
सभई के सुख-शांति मिले,
एहि खातिर;
हम पिंजड़ा के मोह छोड़ि के,
डेग उठवली
निकलि चले के !
लड्डू तोहरा दूनो हाथे,
सभका हित में तोहरो हित वा ।
धरम-काज कइला से !
पुन्नी मिली अलगा से,
अइसन समुझि,
वेग से बल से;
पुरहर नेह लगन से,
हमके पिठिया ले के संगी !
बनि जा उड़नखटोला !!"
राजकुँवर तब मीत भाव से,
करतब-करम सिखा के;
नेति-धरम बतला के,
चमचमात देहियाँ से;
अबलख घोड़ा का पिठिया पर,
सुख से जाइ बइठलन !
शरद रीतु में जइसे,
सुघर सोहासुत बादरि ऊपर;
आसन जाइ जमावसु,
सुरुजदेव महराज !
कंथक डेग बढ़वलस कल से,
शांति भाव से;
हिहिनाहटि के रोकले !
जच्छ लोग तब आगे वढ़ि के,
देहियाँ झुका मगन हो;
अपना गद्‌गद,
कंगन सोहत;

कमल नियर हाँथन से,
थाम्हत गइल खुरन के हरदम,
जइसे कमल विछावत होखसु,
डेग धरत घोड़ा का आगे !
ओह नगर के,
कई बाहरी फाटक,
पूँरा लमहर चाकर,
बनल बहुत मजबूत पेंच पर,
हाथी तक जिनका के,
जल्दी खोलि सकस ना ।
देखि कुवँर के कठिन पयान,
खुललन ठीक समय से,
कल से अपने-आप !

पूत जगत् में,
मात-पिता का मधुर प्रेम के;
तप के विमल पताका !
कुल के सुबरन-दीप जोतिमय,
पारिजात चंदन के गाँछी;
जश-सुगंध रिवार-पिता के,
तीनि लोक चउदहो भुवन में;
फइलावे पहुँचावे वाला !
पूत-पिता का नेह-दुलार,
मोह-छोह माया-ममता के;
इहो रसरिया पोढ़,
बान्हि सकलि ना;
राजकुवँर गउतम के !
मन मतवाला हाथी भाई !
एके बान्हल बड़ा कठिन वा !
महागुनी मतिमान महाउत,
बिरले केहू वीर सपूत;
एकरा के आँकुश दे,
पिठिया बइठल बान्हि घुमवलसि !
मनवाँ बिगड़ल पाजी घोड़ा,
तोरि लगामि पछाड़ी पगहा;
बिसयन के रस चीखे खातिर,
सरपट दउरल चाहे ला !
कबहीं तऽ बउराला अइसन,
कि पिठिया पर चढ़लो पर ई;

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

असवरवा के झटकि गिरावे,
काँट-कूश खुरहँट में सगरे !
आँखि मूँदि के धावेला !
मनवाँ चंचल पारा,
थीर रहे ना ;
कबे एक जगहा पर !
एके शोधल,
सहज काम मति जानीं !
वैद परीन गुनी जे हाई,
ऊहे कवनो जतन-जुगुति से;
धीर थीर हो शोधि सकेला !
मनवाँ के गति बड़ी विचित्तर,
पवन-वेग ले तेज !
ईहे कठिन ववंडर आन्हीं,
गाँछ-बिरिछ के डढ़िया तोरे;
जरि से तुरत उखारे ढाहे !
मनवें जग के रचे सिरिहिटी,
मनवें सुख-दुख ऊपजावे ला !
बस मनवें का हाथे बाटे,
नरक-सरग बान्हन आ मुकुति !
रिखी-मुनी देवता सभई के,
मनवें नाचि नचावत बा !
ममता-मोह भोग-टिशुना में
बरियाई भरमावत बा !
संजम-नेम विचार-बुद्धि से,
मनके बान्हि-छानि जे राखल !
ओकर शोरि पताले ठेकलि,
फइलल सुजश सुगंध जगत् में ;
उहे अमर अमिरित फल चाखल !
राजमहल के धन-दउलतिया,
सुख-सिंगार आ;
दुरलभ देव-विभो के,
गहगह सज फुलवारी ;
छन में छोड़ि मोह-फन काटत,
तोरि सुघर सुवरन जंजीर !
धरम संगिनी जशोधरा के,
वाल लाल राहुल के ;
सुतले छोड़ि पलंग पर,

अचके आधी रतिया ;
छिपि के गोड़ दबवले,
पिता-नगर ले बहरी अइलन;
राजकुँवर सिद्धारथ !
देखि नगर का ओर फेरु तब,
सुघर कमल नयनन से ;
सिंह समान अभय ऊ,
गूढ़ गँभीर वचनियाँ कहलन—
'जनम-मरन का भारी दुख के,
जबले अंत करबि ना ;
कपिलवस्तु का भीतर तब ले,
कबहीं डेग धरबि ना !'
एह किसिम के बानी उनकर,
सरगलोक में पहुँचलि ;
सुनते खुश हो अमर देवता,
अलकापुरी कुबेर-सभा के ;
सूध मनोरथ राजकुवँर के,
सीध करे के सँकलप कइलन !
कंथक पवन-वेग से भागल,
जइसे चले सुरुज के घोड़ा !
तारा लोग आकाश-लोक के,
जब ले भइल उदास तनिक ना ;
ठीक तबलहीं,
पह फाटे ले पहर पहिलहीं ;
मंगल घरी निपुन बेरा में,
बहुते जोजन दूर जाइ के ;
सिद्धारथ जी सुचित होइ के,
नदी अनामा कइलन पार !
छंदक चतुर सईस साथ में,
पोंछि पकड़ि के निबुकल ;
लाँघि नदी के धार !
परमारथ में धरम-काज में,
सरधा-नेह लगन से ;
जे तनिको कुछ मदति करे ला,
उहो लाँघि भवसागर सहजे ;
ठीक अइसहीं,
सरग-लोक में डेग धरेला !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

छंदक के लवटल

पंछी जगलन,
भइल विहान ;
सुरुज देवता हँसत उगलन,
विहँसल सभ संसार !
राजकुँवर का लउकल आगे,
भारगव मुनि के ;
परमपवित्तर निपुन-आसरम,
सुघर शांत मनमोहक !
हरिना जहवाँ सूतल रहलन,
सुख से शांति चैन से;
पंछी कल से बइठल !
मुनि का तपोभूमि के देखत,
तप के आदर करत कुँवर जी ;
राखत कुल के रीति-विचार,
देंहज शील-लेहाज जोगावत,
लाते कचचि घमंड-राजसी,
तुरत उतरन भुइयाँ !
सुहुखलनि कंथक के पिठिया,
'कइले पार' वचन ई कहलन !
धीर साहसी छंदक के तव,
खुश हो बोध सबुर कुछ दिहलन !
"धन्नि ! वीर सेवक तूँ छंदक,
गरुड़देव का चालि समान ;
चलत तेज घोड़ा का साथे,
सरधा भगति देखवल आपन !
भगती-हीन समरथीं पवलीं,
समरथ हीन भगतवा केतने ;
जग में भगत समरथी दूनों,
तोहरा नियर कहीं ना देखली !
कुल के सुजश बढंती होखे,
रच्छा रहे वंश के हरदम ;
इहे लालसा चित में धइले,
पालन करे पूत के लांग !
पालन-पोसन धरम पिता के,
सेवा-धरम पूत के सवतुक ;
शुद्ध भाव से उचित-रीति से,
सभ का मानल चाही !
बाकी तऽ जानीं जे,

अइसन कठिन धरम सेवा के ;
सज से निबुकावल के राही ?
आशा पर दुनियाँ ठहरलि वा,
आशा जग का रथ के धूरी !
कारन बिना कहाँ अपनापन,
आशा छोड़ी के रथ तूरी ?
वेशी कहले लाभ कवन वा ?
बतिया असल इहे कि ;
तूँ हमार भारी हित कइलऽ,
बदला कइसे फेरीं तोहरा,
सेवा भगति भलाई के ?
कवना जतन छोड़ाई अइसन
गाढ़ नेह चिकनाई के ?
घोड़ा ले के अब लवटऽ तूँ,
कपिलवस्तु के देखऽ राह !
आ गइलीं हम,
चाहल प्रिय जगहा पर !
एतना कहिके राजकुँवर तब,
नेकी का बदला फेरे के;
भाव छिपवले मन में,
रतनहार देहियाँ के गहना ;
चट उतारि के दिहलन सहजे,
ममता मोह छोड़ि के ;
चतुर सईस दुखी छंदक के
सुबरन-मुकुट उतारि राजसी,
एगो मनि अनमोल निकललन ;
काम देति जे रहे दिया के !
मनि के काढ़ि हाथ में लिहले,
सोहत सकमक ;
सुरुज सहित मनराचल अइसन,
"हे छंदक ! ई मनि राजा का,
चरन कमल पर धइके !
तूँ हमार पा लागी कहिहऽ!
चिन्ता शोग घटावे खातिर,
सहज सनेश सुनइहऽ !"
"राज छोड़ि हम वन के अइलीं
ना टिशुना से सरगलोक का ;
ना बयराग रंग का फेरा !
ना कवनो दूसर मंशा से,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ना परि कलह खीसि का घेरा !
जनम-मरन के लटका तोरीं,
ओकर नाश करीं हम !
इहे लालसा जागलि मन में,
तब संतन के संगति कइके ;
सुमति बुरूपिया पाके,
दूर जगत का पँचड़ा से हटि ;
बनि त्यागी संन्यासी,
सुगति सँजीवनि बूटी जोहे,
धइलीं डेग तपोवन में शुभ !

हमरा खातिर शोग करवि मति,
दुख-चिन्ता से होई ना गति !
ई संजोग रही केतना दिन,
सुख आनंद भोग ई कब तक ?
आखिर काल बियोग कराई !
जीव देंहि के छोड़ि पराई !
माया आपन जाल बटोरी !
सभ से नकली नाता तोरी !

जब वियोग निहचित वा,
एही में तव हित वा !
कि हम मेहनति कइके,
सुगति सँजीवनि बूटी पाई,
दुख-वियोग के रोग छोड़ाई !
शोग-रोग का गँछिया के जब,
हम टाँगी से काटे चललीं ;
तव जनि शोग करीं राजा जी,
बाति जथारथ रउरा मानीं ;
ममता-मोह-लोभ का मँहकत,
गड़ही चवँर सडंत पोचरा
जे लेवाड़ माँजत वा ;
ओही में रस लेत कले कल,
सींघि झारि गाजत वा !
ढीठ बली इनरिन का,
रूचि मोताविक ;
जे चाहत विसयन के भोग
मानुस देहियाँ पाके जे कर,
छूटल ना टिशुना के रोग ;
उहें पुरुस सोके जोग !
त्याग कइल तप खातिर,
हमरा प्रिय पुरुखन के ;

ठोस नगद निहचय हऽ !
एसें एह डहरिया
पुशतइनी के,
पकड़ि चलेवाला हम ;
नइखीं शोग करे का जोग !
कवनो उलट-फेर भा,
मउवतिया का करत ;
धन-सम्पति के,
सगे संबंधी दावेदार
होलन केतने खास दयाद ;
बानी एह जगत् में,
धरम दयाद मिलसु मुशकिल से ;
चाहे हइये नइँखन जानीं !
बतिया इहो कहाइ सके ले,
कि एतना सकराहे ;
अवहीं समय रहल ना वन के,
पहिला पहर मधुर जीवर के
ओकर उचित जवाव इहे कि,
जग चंचल छन भंगुर भाई !
कवन ठेकान छनिक जीवनक ?
निहचित नइँखे समय धरम के,
भगवत-सेवा पुन्नि करम के ;
जहाँ साँप के विलिया भाई,
तहें पूत के सिरहाना वा !
मउवति ठाढ़ कवरवे झाँकति,
उहे चवइनी घरवाफुँकलसि ;
जरत लुवाठ हाथ में लेके,
अचके सभकर पिठिया दगलसि !
समय बड़ा अनमोल जगत् में ;
समरथ रहत जवानी में ;
संचीं हम शुभ करम-धरम के,
भूलीं ना मनमानीं में
गुन-अयगुन सभई में भाई,
तूँ हमार अयगुन देखलइहऽ ;
दोस लउकल नेह घटे ला,
टूटे नेह शोग-दुख छुटे
अइसन कवनो जतन लगइहऽ !
गुन-अयगुन के सानि एक में,
बरम्हा जगत् बनावेलनि !
तिरसुत डोरी तीनि गुनन के,
तीनि लोक चउदहो भवन के ;

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बान्हि-चउरि ओही से,
सभदिन सहज नचावेलनि !
घटत-बड़त गुन तीनों छउकत,
जग के खेलि तवे तक लउकत !
भइलन तीनों जहाँ बराबर,
तीनों लोक रसातल गइलन !"
एतना वचन कुँवर के सुनि के,
छंदक के मनवाँ घबराइल !
जागल मोह करेजा धड़कल,
लोर छलकि आँखिन में आइल !
मुँह से बोली निकले नाहीं,
दुख से भारी कंठ रुन्हाइल !
साहस जोरी बटोरी कइसहूँ,
हाथ जोरि के राजकुँवर से ;
आरत वचन कहाइल !
"हमरा दुख के आरि कहाँ बा,
सुनि के राउर कठिन विचार !
दिहलीं दुख सभई के रउरा,
भाई-बंधु-पिता परिवार !
भइल हमार दशा बा कइसन !
फँसल पाँक में हाथी जइसन !
अइसन निहचय सुनि के राउर,
केकरा मन में दुख होई ना ?
लोहा अइसन हिरदय पघिली,
निहचय आगि हिमालय उगिली !
फेरु कहीं तऽ,
नेह-छोह बेकल हिरदय के;
भला कवन बतिये वा ?
जे सुख भोगल राजमहल में,
आज उहे असमय जंगल में !
हीरा मोती रतन जड़ाइल,
सोना मढ़ल पार-पाटिन में!
गमगमात फूलन से गाँथल,
सेज मखमली पर जे सूतल;
कइसे रही तपोवन में अब ?
देहियाँ के दुख बीती केतना,
कुशवा का बनलि चटइया पर !
कइसे डेग परी वनवा में,
आँकड़-पाथर गड़ी गोड़ में,
चोख इँकड़िया चमकी !

कतहीं कुश के डाभ डहरि में,
हाय! कवन बिधि निबुकी ?
राउर बतिया सुनि हे नाथ !
हम जे ई घोड़ा ले अइलीं
देवता लोग पइठि के भीतर;
मनवाँ के बगडोरि घुमावल,
बरियाई हमसे करवावल !
हम जो अपना बस में रहितीं,
अइसन काम कबो ना करितीं !
हथजोरी बा इहे हमार,
रउरा मन में करीं विचार !
असमय बूढ़पिता के छोड़ल,
सेवा से मुँह मोरल;
बिसरावल राहुल अबोध के,
अचके नाता तोरल !
भारी वेजाइँ बा कइसन ?
बेधरमी वेलूरा जइसन !
जे ईश्वर के मानसु ना !
साच धरम शुभ जानसु ना !
जेतना कठिन कलेश उठा के,
सेवा कइली मउँसी-माई;
महरानी परजावति,
भुलवाईं मति;
उनका शुभकरनी के,
जइसन अमहँक लोग करेला !
सुघरि सुलच्छनि निपुन सेविका,
कुलवंती पतिवरता देवी;
धरम संगिनी जशोधरा सें,
छिपि के घात करीं मति रउरा !
पूत अबोध अबे बा जेकर,
आशा करी गाढ़ में केकर ?
राहुल के मति छोड़ीं अइसे,
दानी तजे सुजश के जइसे !
भाई-बंधु राज जो छोड़ीं,
कवहीं जनि हमसे मुँह मोड़ी !
जइसे छोड़ि सुमंत राम के,
वन से लवटि अयोधा अइलन;
दशा हमार कठिन ओकरो से,
कइसे हम बोलबि केकरो से ?
हुकुम भइल राजा दशरथ के,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तब सुमंत जी वन के गइलन!
रथ के रासि परगटे धइलन,
छिपि के घात तनिक ना कइलन !
हम तऽ साचो बहकि भुलाके,
कहलीं अइसन घाटि;
जे अब थेघ लउकते नइँखे,
कि हंमार ई नइया;
लागी कवना घाटि ?
कवन डहरि धइ कपिलवस्तु के,
रासि पकड़ि कंथक के जाइवि ?
का कहिहन राजा जी हमके,
अब हम मुँहवाँ कवन देखाइवि ?
जशोधरा से कहाँ लुकाइबि ?
उनके कइसे बोध कराइबि ?
'तूँ हमार अयगुन देखलइहऽ,
अइसन बा राउर कहनाम !
झूठे का हम दोस देखाइबि,
नाहक करबि नरक के काम !
शरद पुरनवाँसी का,
बिन कलंक दागी का;
विमल चान के,
गरम कही जे;
ओकरा के पतियाई जे,
उहे दोस राउर बतलाई;
उहे करी ओपर बिसवास !
दया के सागर !
कपिलवस्तु के लवटीं,
कुल के करीं उजागर !"
सुनि छंदक के शोग-विलाप
कोसिस कइलन राजकुँवर जी;
दूर करे के उनकर ताप।
"हे छंदक ! हमरा वियोग के
हिरदय में दुख-शोग धरऽ मति !
जग में आई देंह धरी जब,
जवना जोइनि जीव परी जे !
काल वियोग कराई सभकर,
लख चउरासी के एके गति !
हम जो मोह भरम में परि के,
संग सुजन के छोड़ीं ना !
नाता-नेह जोगावल चाहीं,
माया से मुँह मोरीं ना।
तबहूँ छोलनि मउवति,
सुनी सिपारिस केकर ?
आखिर संग जरूरे छूटी,
रोग-वियोग सताई दुख दी;
जग के नकली नाता टूटी !
कठिन कलेश उठाके हमके,
जे दसमास गरभ में राखल !
आशा-टिशुना का बस होके,
सेवा कइल मनवती भाखल !
ऊ हमार मँहतारी कहवाँ,
हम ओकर अब पूत कहाँ ?
जीव कहाँ से आइल कइसे,
कहवाँ जाई पता कहाँ !
नदिया नाव सँजोग जगत् में,
दुनियाँ पंछी-रैन बसेरा !
जुटलन पंछी गाँछ-बिरिछ पर,
साँझि समय में ड़ललन डेरा,
सुख-दुख संग साथ रतिये भर;
उड़लन जइसे भइल सबेरा !
पाँच-पचीस-तीनि के संगति,
समय पाइ बटुराइलि वा
हाँकिवाला लउकत नइँखे,
दवँरी कठिन नधाइलि बा !
आसमान में मेघ बदरिया,
जइसे समय पाइ बटुराली !
अउरी अचके,
विना मोह-ममता के !
संग-साथ के छोड़ि पराली।
ठीक तइसहीं सभ जीवन के,
जीवन में संजोग-वियोग।
सपना समान मिलन के जानी,
छोड़ीं मोह-सोग के रोग।
जब अइसन ममता वा धइले,
तब अपना के जानीं अइले।
ममता में जे परल बन्हाइल,
बदलि-बदलि देहियाँ धइ आइल।
कपिलवस्तु का सभ लोगन से,
बिनती इहे हमार सुनइहऽ;
कि ऊ बूझि-समुझि के,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तोरसु नेह-मोह के छोड़सु;
नाता साँच धरम से जोड़सु।
जनम-मरन के नाश करबि तऽ,
विजय पाइ के जल्दी आइबि।
हारबि तऽ मुँह करिखा पोतबिः
मउवति धरी रसातल जाइबि।
बतिया सुनत दुखी हो कंथक,
चरन कुँवर के चाटे लागल।
कहीं उगल ससतिक वा चमकत,
कही चिन्ह चक्का के झलकत।
अइसन हाथ उठा के,
पिठिया के सुहुरा के;
राजकुँवर तब कहलन,
बोध सबुर कुछ दिहलन।
'हे कंथक। जनि लोर बहावे,
चिंता-चिता साजि लहका के;
देहियाँ के अपना झउँसावऽ।
तूँ उत्तम घोड़ा के,
ई कमाल के;
धरम आज निबहवलऽ।
धीरज राखऽ,
बहुते जल्दी ई मेहनतिया;
होई सुफल तोहर।
एतना कहि के,
धीर शांत सुकुमार कुँवर तब;
सोनावाली मूँठ लगावल,
सुघर जोतिमय,
चुनल मणिन से जड़ल सजावल,
झट से आपन,
नीलरंग वाली तरुवारि,
माँगि सहज छंदक से लिहलन,
पट मियाँन से बहरी कइलन।
जइसे साँप बियरि से निकलल।
केंचुल छोड़ि सजग हो चमकल।
तब गँभीर होके फुरती से,
रंग-बिरंगा राजमुकुट सँग,
सुघर सोनहुला बार अँगुठिया,
काटि माँथ से अलगा कइलन,
अउरी चमकत ओह मुकुट के,
हाँथे लेके,

ऊपर आसमान में फेंकलन,
जनुक हंस फेंकल हो ताले!
ओने देवता लोग सरग के,
टूटल राजमुकुट के!
प्रेम-भाव आदर से पकड़ल,
पूजा कइल सजावल!
जयजयकार मनावल!!
शांत धरी मतिमान कुँवर तब,
मन में ई सोचलन कि
सुख-संपति घर-बार छोड़ि के,
जब हम अइलीं वन में!
सुघर अमोल राजसी कपड़ा,
शोभत नइँखे तन में!
ठाट-बाट दुखरूप देहि के,
भार उतारी छन में!
बस एतने में,
एक देवता इनरासन के!
समुझत भाव कुँवर का मन के
उतरि लोक में नीचे अइलन!
भेख शिकारी के झट धइलन!
धनुहा बान हाँथ लिहले,
उत्तम गेरुवा वसन पहिरले!
टहरत देखि शिकारी नियरा,
जइसे घूमत साँप मनियरा!
राजकुँवर प्रिय कहलन उनसे,
बतिया कल से विनय-भाव से!
"हे बहेलिया! चतुर शिकारी,
रिखि मुनियन के परमपवित्तर!
सवतुक गेरुवसन उदासी,
जकरा के पहिरसु संन्यासी!
शोभत नइँख तोहरा तन पर;
मारक धनुस वान जब हाँथे
गेरुवा खातिर तोहरा मन में,
जो ममता कुछ होखे ना
तब ई वसन हमार लेइ के,
आपन गेरुआ हमके दऽ!"
सुनि बहेलिया,
पहिल तऽ ऊपर ले;
ताव देखवलस आ टरकवलस,
बाकी फेरु कलेकल;

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बात बनावत पँजरा आके,
मनसा भाव बतावत;
हाँथ पसरलसि आगे !
"गेरुवा मजिगर आड़ हमार,
असली रूप छिपावेला !
हरिनन के बिसवास करावे,
सहजे पास बोलावे ला—!
एकरे बल पर,
हम शिकार खेलीं ला
पाँचो के रसगर चारा दे,
नगद दाम घरवो ठेलीं ला
बाकी रउरा,
भारी जीव होइ जब मंगलीं;
लीं हम बतिया राखत बानीं !
एकरा खातिर हमरा मन में,
तनिको अमरख नइँखे जानीं !"
राजकुँवर तब गेरुवा पाके,
खुश हो तापस भेस बनवलन !
पहिरि राजसी वसन शिकारी,
मन में गाजत;
चट से उड़ल आकाशे माँकल !
देखि सईस कुँवर दूनो का,
मन का भारी अचरज लागल !
तब रोवत् छंदक के बोधत,
आपन मनवाँ साधत-शोधत;
धीर धुनी मतिमान कुँवर जी,
विदा कइल चहलन ओकरा के !
"लऽ लगामि कंथक के पकडऽ;
लवटि राजधानी के जा !
अब कइसन केकरा से नाता,
झूठे सभ लपिटाता !
निकलल बंदा,
पकड़ी अब के;
महामोह के छूटल फंदा,
टूटल पहिला फाटक !"
एतना कहि के राजकुँवर जी,
धइलन डहरि तपोवन के !
छंदक बिलखि-बिलखि के रोवल,
रोकि सकल ना जब मनके !
माथा ठोंकलस, छाती पिटलस,
बेबस बनल गिरल धरती पर !
राजकुँवर के देखत ताकत,
बार-बार पाछे के झाँकत !
कंथक के बहियाँ से धइले,
पुक्का फारि मोहवश रोवल !

जइसे महा अभागा केहू;
अपना हीरा मनि के खोवल !
करत विलाप ताप से झउँसल,
कठिन वियोग रोग से थउसल;
आशा छोड़ि साथ कंथक का,
देहियें लेके लवटल खाली !
दोचित दुखों बन्हाइल कसि के,
चित के हाँकि सकल ना हाली !

भगति नेह से परवश होके,
कुहुँकत कांपत देहियाँ ढोवत;
कहीं गिरत भहरात उढुकि के,
ध्यान लगावत आवत रोवत !

मरलसि जान फिकिरिया,
जेतने टोवे खोवे साहस;
भय-शंका से किंकुरल वटुरल,
जेंनिये नजरिघुमावें;
पावे वस अन्हार भकसावन,
कवनो उकुति चले ना !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तपोवन में

वेचारा दुखिया छंदक के,
कइके बिदा सुतंतर होके;
बिचरत वन में सोचत मन में
भइलीं तनिक सुखी जीवन में;
सिंह समान चलत कल ही कल
निरभय हो जंगली पशुन में;
सभे मनोरथ सिद्ध शांतिमय
पहुँचल संत समान सहज में;
विमल तेज से तन का अपना
निपुन आसरम के दवकावत;
कुँवर पहुँचलन ओहिजा!
बिंना राजसी भेख चिन्ह के
बरत तेज शोभा से उनका;
सभे आसरमबासी,
बरबस मोहित भइलन!
लोगवा कई ओर से वन का
खुश हो धावल आइल जोहल!
कहीं किसान-मजूर ठाढ़ हो
मेहरि मरद साथ में दूनों;
हर जुवाठि कान्हा पर लिहले
लदुवा बैल नियर कुछ झुकि के;
आपन माँथ नवावत देखत,
इन्दरदेव नियर उनका के;
आगे बढ़लन नाहीं
जइसे मूरति ठाढ़ कइलि हो!
हूम करे खातिर के
इन्हन बीनि जुटावे;
बहरा गइल बरम्हचारी मुनि
बाभन पंडित लवटत-आवत;
लकड़ी फूल, कुशा हाँथन में
तपसी धीर थीर मन चित के;
अइलन झपटि कुँवर के देखे
गइलन मठ कुटियन में नाहीं!
कहीं पाँखि फइलाइ मगन मन
मोर-मोहिनी नाचत-डोलत;
मोहक मीठ सुरन में बोलत
जइसे नील मेघ लउकल हो;
अगल बगल में देखल गइलन!

चंचल आँखि हरिनवाँ केतने,
छोड़ी कवर के सनमुख ठाढ़!
केनियो ले चरवाहा जुटलन
झुंड गाइ बाछा के छोड़लन
हूम जग्यवाली मुनि गइया
दुहलो पर फेरु दुहइली सऽ;
देखत तेजवंत परतापी
बरत दिया इछवाकुवंश के;
जेकर सुघर अंजोर विराजल
अनगुतहाँ का सुरुज समान!
चकित भइल मुनि लोग देखि के
उनका कुछ संदेह भइल जे;
उतरि सरग से अइलन वन में
अठवाँ वसु महराज आज का?
केहू समुझल देवलोक से
अइलन कवनो अशनिकुमार
एह किसिम से
ओहिजा उनका प्रिय दरसन से;
चकित मुनिन का,
बोल चाल के
अचरज भरल बचनियाँ
जोर-जोर से निकलि सुनाइल!

दूसरी देहि नियर इन्दर का,
अचके उतरल सुरुक समान;
राजकुँवर सभका मनवा में;
कइलन सहज अँजोर!
तपसी रिखी मुनि-वेदुवा बाभन
सभई आदर कइल कुँवर के
सुजश गइल सभ ओर!
चाह सरग बैकुंठ लोक के,
भरल रहे जिनका मनवाँ में;
बस ओइसन के,
शुभ धरमी तपसी लोगन से;
रहे आसरम पूरन!

सुगति शांति जोहेवाला,
राहगीर मतिमान कुँवरजी;
ध्यान लगा के तकलन सगरे,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ओह आसरमवासी;
सभ तपसी लोगन के
ओहि जा उनका,
किसिम किसिम का;
अरचा-पूजा-तप साधन के,
लउकि गइलि मजिगर तसबीरि
मन में सोचि विचारी कुँवर तब,
सहज पियासल तत्तु ग्यान के;
हाँथजोरि के माँथ नवावत,
एगो तपसी मुनि से कहलन—
"पहिले पहिल आज हमरा के,
भइल तपोवन के शुभदरशन
धरम-नेम हम जानत नइँखीं,
रउरा मन में भाव बसल जे;
जवना के शुभ सवतुक जानीं,
बूझि-विचारि तउलि के मानीं;
हमरा के अब उहे बताई
शुद्ध बोधि के डहरि देखाई!!
धरि शांत तपसी वाभन तब,
कलेकले बतलवन सज से;
मुनि गउतम के बहुत तरहके,
तप-संजम आ फल शुभ ओकर
तपसी लोग धरमपोथिन के,
वचन मानि के संजम राखसु;
जोग-जुगुति से बान्हसु मन के,
साधत रहसु जतन से तन के;
वन के कंदमूल फल खाके,
गाँछ विरिछ के पात चबा के;
केतने साँवाँ-तेनी पाके,
केतने खाली जलवे पीके;
बहुते संत बीनि खेतन से,
गिर छिटाइल फुटहा दाना;
करसु अहार हराके मन के,
जोखत रहसु समय जीवन के!
मिरिग समान तिरिन चरि केतना,
देखत रहसु सरग के सपना!
कुछ मुनि आसन मारि बइठलन,
देहियाँ के देवँकाड़ बनवलन;
सरप समान हवाभर पीके,,
ढूँढ़त सहज शांति-सुख नीके!
केहू जटा बढ़वले भारी,
करत दंडवत सुरुजदेव के;
देहियाँ भींजलि जल टपकावत,
साँझि सबेरे दूनो बेरा;
अगिनि-कुंड में आहुति देता,
सकला-घीव दशाँगि-गुगुल के!
जगहे-जगहा आसन धइके,
पंच-अगिनि तापत बा लोग;
केहू जल में साधत जोग
केहू जल में साधत जोग
एही तरे बहुत दिन साधत,
संचित करत रहत उत्तम तप;
पावत लोग सरग के सीढ़ी,
जा पहुँचत बैकुंठ लोक के!
दुख कलेश जब लोग सहेला,
तब तऽ सुख-आनंद मिलेला!
धरम-मूल बस सुख के जानीं,
एके अंतिम सीढ़ी मानीं!!
सुनि के वचन धीर तपसी के,
बोध कुँवर का भइल तनिक ना;
ना उनका के शांति मिललि कुछ!
तब ऊ ओचत-समुझत मन में,
धीमी धुनि में;
भुनभुनात कुछ कहलन—
"किसिम किसिम के अरचा-पूजा,
तप-साधन दुखरूप जगत् में!
तप के फल बस सरग मिलेला;
जब ले संचित पुन्नि रहेला!
पुन्नि चूकि गइला पर लोगवा,
लवटि जगत् में जनम धरेला!
इहवें लटका टूटत नाहीं,
बदलत सभई लोक रहेलन!
आखिर एहि तुच्छ लोभवश,
आसरमवासी तपसी मुनिजन;
तप-साधन जप जोग करेलन!
भाई-बन्धु नेह-नाता तजि,
सुख-संपति के भोग छोड़ि जे
सरग लोक का टिशुना में पड़ि,
तप से तनवाँ के साधेलन ;
ऊ बस एक फंद से निकलल,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दूसर महाजालि में बाझल
जइसे केहू कूदि परल हो,
निकलि चूल्हि से भरसाईं में !
दूसर ज तप करत लोग वा,
जग का विसय-भोग सुख खातिर;
ऊ दुख दोस समुझले नइखे,
जग में जनम मरन के भारी !
लोग डरे मउवति से हरदम,
कोशिश करे जनम भइल जब जेकर,
मउवति कवे जरूरे होई !
जवना से सभलोग डरेला,
तवने नदिया;
अगमखोह में,
भूलि भरमवश जा डूबेला !
जीव परल आशा टिशुना में,
असफल होके दुख पावेला !
लख चउरासी में भरमेला,
फँसि के लवटि-लवटि आवेला !
थोरे छोड़ि जतन वेशी के,
निंदा के काम कहाई ना !
वाकी जे विदमान् लोग वा,
सूझ-समुझ उत्तम बा जेकर;
तिले-तिले के लटका लागे,
ऊ अइसन को;
डेंगवा कवे उठाई ना !

दश घोड़ा के रथ ई देहियाँ,
मनवाँ चंचल सहज लगामि;
चित चेतन हरियरी लउकते,
हरिन चउकड़ी फानत हरदम !
लोग भरम में परि के बरबस,
दउरि डहरिया धरे विसय के !
जे बटोरि मनचित के राखी,
उहे अमर अमिरित फल चाखी !
बिना चित्त के देहियाँ,
वाट काठ समान !

धोइ करम के शुद्ध करीं हम,
पाप छोड़ाईं पुन्नि बटोहीं;
अइसन समुझि, मानि के तीरथ,
नदी-कुंड पोखरा का जल में;
नियत समय पर,
जे कि जाइ नहाला।
ओकरा वस संतोख चित्तके ;
दूसर कवनो लाभ मिले ना !
केहू चढ़ि कागद का नइया,
कवहीं नदिया पार करे ना !
पानी से पाप धोवाई ना,
चित में चफनलि चिक्किनि काई;
पानी तऽ रगरि छोड़ाई ना !
गुनी ग्यानवानन से,
जवन जवन जल,
छूवल गइल समय से,
जो ऊ जल धरती पर;
तीरथ हुउवे,
तब तऽ हम गुनवें के;
तीरथ समुझत बानीं,
काहें से कि;
जल त वेसंदेह जले हऽ !"
एतने में मुनि दूसर अइलन,
ऊहो आपन वचन सुनवलन—
"हरि के भजन साच,
जग झूठा सपना !
जीव जगत् में आके,
भूलि गइल अपना के;
साच समुझि लिहलसि सपना के,
वरम्ह के;
मलिन सतोगुन सहित,
अविद्या में परिछाहीं;
जीव कहाइल।
जीव जगत् में,
नारायन के अंश;
जीव अगिनि के,
छोटरूप चिनगारी;
जीव सुरुज का किरिन समान !
आसमान से निरमल पानी,
जइसे चुवल गिरल धरती पर
चट से ढबरी भइल हिंड़ाइल,
ठीक तइसहीं
माया से लपिटाइल,
जीव भइल धरती पर गंदा !
ढबरी जल में,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कइसे लउकी रूप;
जब ले परीछा होई ना?
मलीन जीव के अँखिया बंद,
हिरदय दरपन मइलमंद में;
कइसे देखे रूप?

जब लगामी घोड़ा के तोरबि,
हाथ बटोरबि चाभुकि छोड़बि;
तब ऊ इरिगा कदम चली कुछ,
सरपट दउरी समय पाइ के,
कहीं डहरि में ऊँचा खाला;
असवरवा के अचके ढाही!
ओकर अकिलि चली ना तनिको,
देहिया होई चउपट घाही?
एही से कुछ शासन संजम,
देखरेख निगरानी;
मन के बड़ा जरूरी वा!
धरम-नेम-तप साधन ओकर,
नाही कइल गरूरी वा!
तप से जीव शुद्ध हो जाला,
तप से ग्यान ध्यान;
सुख शांति मिलेले!
तप से धरमराज पद,
तप से इनरासन में;
देवराज सिंघासन,
तप से बरम्हलोक बैकुंठ!
तप का बल से,
बरम्हा जग के रचसु बनावसु;
तपबल विशुन करसु जग पालन
तप से शंकर,
परलयकाल बोलावसु;
मनवाँ बा देहियें का भीतर,
नाता नेह कठिन दूनों के!
सहज काम मति जानी रउरा,
हिगरावल उनका सिवान के!
खाइल पियल साथ संगति के,
मन पर कुछ तऽ असर परेला।
मनवें चित के भरमावेला,
मति के ऊहें माँत करेला!

जसइन जेकर गति जब होई,
तइसन तेकर गति तब होई!"
एतना बूझ-विचार करत में,
समय सांझि के कल से आइल!
बन के सुख शोभा बटुराइल,
थकलन सुरुज अँजोर पराइलभ;
हवन धुआँ से वन गउ जाइल,
गाँछ-बिरिछ के रूप ढँकाइल!
तप के शांति विराजलि मजिगर,
तब गउतम पग धइलन भीतर
बरल अगिनी-होतर सइँताइल,
झोंपड़ियन में दिया बराइल
जप का धुनि से विनय-वचन से,
मंदिर गुंजलन;
घंटा-घरी शंख सभ बजलन
टहरत-फिरत तपोवन भीतर,
तरह-तरह का तप के देखत;
गउतम कई राति ले रहलन,
सभ का मरम-भेद के समुझत
रीति नेम-गति जानि अंत में,
जब मनवाँ ठहरल ना;
धइलन दूसरि डहरि तुरंते,
छोड़ि तपोवन चललन अंते!
उनकर रूप शील गुन-महिमा,
मोहित कइलसि सभ का मनके!
मुनि तपसी वनवासी सभई,
धन्नि मानि अपना जीवन के;
पहिरि मिरिगछाला बाघंबर,
जटा-मुकुट. मांथा पर बन्हले!
केहू हाँथे तुमड़ी लिहले,
सूखल केरा छाल पहिरले;
बहुत दूर ले पाछे लागल,
साथे गइल प्रेम में पागल!
सघन छाँह सुख-शोभा पाके,
आखिर एक विरिछ तर जाके!
आदर करत सभन का तप के,
गउतम जी कइलन आराम
चलते तपोवन से जे आइल,
पहुँचल घेरल पंच तमाम!
आखिर एक बूढ़ ना मानल,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सूध भाव हिरदय के अपना;
आदर सहित शांति से बोलल,
जइसे मिसिरी का रस बोरल
"बड़ा रहल गुलजार तपोवन,
जब ले रउरा रहली हँ
सगरे सुन्न देखाता हमके,
अब तऽ काटे धावऽता!
रउरा जनि आसरम के छोड़ीं,
अरदुवाइ जइसे देहियाँ के!
जीअल चाहेवाला के!
परवतराज हिमालय पँजरे,
सघन शांत एकांत!
जहाँ भगीरथ के तप चमकल,
देवलोक से बहि के आइल;
सहज अमिरित-धार
तीनि भाग तिरवेनी संगम
देवनदी मंदाकिनि गंगा;
भागीरथी अलकनंदा के,
परम पवित्तर धाम!
जहवाँ सोहत मानसरोवर,
अलकापुरी अमर कैलास!
साधक रिखी-मुनी तपसिन के,
सुखमय सुघर अड़ार!
सुवरन मुकुट सुमेरू सजगर,
जहाँ भरल भंडार अमोगह,
रसगर अमिरित फल के
धवलागिरि के गुन का गाई,
बूटी-जड़ी फूल-फल मेवा;
सभकर भारी पुँज!
धरम-धुरंधर, तपसी, ग्यानी,
रिखी, महरखी, देवरिखी, मुनि;
भजन करत सेवत बा सभई,
अइसन तीरथ धाम-धरम के;
एहिजे चारो ओर भरल बा!
देवलोक वैकुंठ धाम के
जइसे मजिगर सीढ़ी!
दूसर बाति इहो जानीं जे,
उत्तम धरम ग्यान जे चाहे
सेवत रहे उत्तरा खंड!
जे विदमान चतुर बा ओकर,
एको डेग बढ़ावल दक्खिन
कबहीं उचित कहाई ना!
जो रउरा के एहिजा कवनो
दोस कहीं लउकल हो,
ऊहो कहीं सँकोच छोड़ि के
खटका मन में राखी ना!
जब ले चाहीं रहीं तबे तक,
साधू संत तपसी एहिजा के;
तप-साधन सतसंग भजन में,
राउर संगति चाहत बाड़न!
उनकर जोग-जतन तप साधन,
रउरा साथे रहला से;
होई सफल ,बढंती लउकी,
जइसे इन्दर का संगति से;
चमकल तेज बिरसपति के!"

उसिरि विचार ग्यान में समले,
बुढ़वा तपसी सरहँग रहलन!
उनकर एतना बतिया सुनि के,
मन सोचि विचारि मजे में;
मरसी गउतम कहलन आपन
भाव भीतरी मन के!

अतिथि पिरीत मुनि-तपसिन के
हिरदय बड़ा दयालू होला!
उनका खातिर सभई आपन
सभ परिवार समान!
सोच सुभाव संत तपसी मुनि
धरमाचारज लोग;
आदर मान दिहल हमरा के
हम त इनका प्रेम-भार से;
साचो बहुत जँताइल बानीं!
रउरा सभ के बतिया सुनि के
भारी असर परल बा मन पर!
अबे धरम का दुनियाँ में हम,
पहिले पहल कदम धइलीं हँ!
पूरा जानत नइखीं तवहूँ;
धरम-नेह जागल बा अधिका
संतन के महिमा गाईं के?
अगम महासागर के,
सहजे थाह लगाई के?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जेही आइल शरन समाइल,
सभके आदर-मान दियाइल !
शरनागत के देखत पँजरा,
नेह-छोह से भरल लबालब;
रउरा सभ के हिरदय छलकत,
भाव भीतरी सहजे झलकत;
जइसे देखीं पुरनवाँसी के,
विमल चनरमा विन दागी के;
सागर मगन भइल लहराइल ;
तइसे नेह-लगन से राउर,
मनवाँ हमके देखि घिंचाइल !
घर-परिवार छोड़ि आवे में,
हमके जवन कलेश भइल !
आजो उहे दशा बा जानीं,
जबूर जनाता छोड़ि गइल !!
धरम-साधना जतन-जुगुति सभ,
जेतना रउरा लोग करी ला;
आखिर सभकर एक निशाना,
'मिली सरग बैकुंठ लोक कब'?
हम तऽ सुगति शांति जोही ला,
मुकुति छोड़ि कुछ चाही नाहीं !
दूइ विचार डहरिया दूगो,
जब हमनीं के अलग-अलग बा;
तब त एह तपोवन भीतर,
रहल उचित हम समुझत नइँखीं !
एक धरम बा बान्हेवाला,
इच्छा-राग लगाव-लाग के !
दूसर बान्हन खोलेवाला,
आशा इच्छा छोड़ि उदासी;
परमारथ संन्यास त्याग के !
नइँखे अरुचि तनिक एहिजा से,
ना हम कवनो दोसे देखलीं;
रउरा लोग महरसी संजन
मानि सनातन धरम चलीं ला !"
सरधा नेह भगति से पूरन,
सवतुक मीठ मोलायम बतिया;
असर मान आ महिमावाली,
राजकुँवर के सुनि क ;
तपसी लोग जुटल ऊ,
सुख संतोख शांति कुछ पावल !

छरहर देहियाँ जटा बढ़वले
छाल पहिरले भसम लगवले;
आँखि लाल भूवर कुछ,
नकिया लमहर पातरिवाला;
सुघर कवँडल लिहले हाथे,
बोलल एगो बाभन साफे;
हिरदय खोलि नेह का साथे !
"हे मतिमान उदासी त्यागी !
साचो राउर ठान नगद बा,
रउरा सजग जवाने पर ले;
जनम-दोस के देखल बानीं !
सुमति टकउरी पर जे सज से,
सरग-सुगति के जोखल-तउलल;
ठहरल जाके सुगति-सिवाने,
मानि निशान असल ओही के;
ओकरे सूझ-बिचार ठीक बा,
ओके पंडित मानी !
पँचड़ा,
ओह टेढ़ जग्यन आ;
कठिन बरत तप-नेमन का बल,
जे चाहत बा सरगे पहुँचल
उहे लोग रागी खटरागी,
उनके कवहीं कहाँ मिलत कल ?
दुशमन नियर मानि के अड़ि के,
ग्यानी लोग राग से लड़ि के
सुगति-मुकुति के चाहत जोहत,
उहे नीक तोहर बस,
उनका चित के सोहत !
बसल विचार उहे जो मन में,
डेग उठाई जाई रउरा;
विंध्याचल परबत का पाँजर,
सज एकांत शांत बनवाँ में;
संत शिरोमनि पंडित-ग्यानी,
जहवाँ बसत अराड़ विमल-चित;
ग्यान ध्यान में लागल !
निरमल ग्यान-जोति क पाके,
जगमगात बिहँसत बा उनकर,
हिरदय मंदिर सज से !
तत्तुग्यान का गूढ़ मरम के,
रउरा उनसे सुनि के;

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रुचि होई तऽ मानिब !
हमारा इहे बुझाता बाकी,
राउर अकिलि सिवाना लाँघि;
उनको मति के मातकरी !
मुहवाँ राउर लच्छनमान,
जेकरा भीतर सोहत सज से;
नकिया पातर ऊँची,
अँखिया बड़ी-बड़ी आ;
निचिला ओठ टहाका लाल !
चमचमात दाँतन के शोभा,
मोतिन के दल जोड़ल जइसे !
जिभिया पातरि लाल लउकि के,
मनके मोहि रहलि बा;
ऊहे ग्यान-समुंदर पीही,
जइसे पियलन मुनि अगस्त जी!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

देवढ़ी-विलाप

ममता मोह तोरि के गइले,
मालिक राजकुँवर का;
छंदक रोकि सकल ना तनिको,
दुख के शोग-मोह के मन का !
लोर बहल आँखिन से ओकरा,
बंद भइल ना कवे डहरि में !
हुकुम पाइ मालिक के,
जवन डहरि धइ एक राति में;
ऊ आइल घोड़ा का संगे;
चिंता करत वियोग-विरह के,
प्रिय मालिक का;
ओही डहरी,
समय आठ दिन लागल;
कपिलवस्तु पहुँचे में ओके !
मद से हीन शोग से बेकल,
सुघर साज गहना रहलो पर;
बली तेज कंथक उदास हो,
मालिक बिना दुखी मन मरले;
पहुँचि कइसहूँ आइल !
फिरि-फिरि ताकि तपोवन ओर,
कई बेर हिहिनाइल;
जहकल बहुते जोर !
हित कयलान जगत् के होखे,
सुख-आनंद मिले सभका के;
एही खातिर जे महातमा,
समय पाइ लिहलन अवतार;
उनका बिना नगरिया सूनी,
कपिलवस्तु झंखति उदास हो;
लउकलि दुखी अजोधा जइसे,
सीताराम लखन का गइले;
असमय अचके वन के !
किसिम-किसिम के फूल फुलाइल,
बिरह-वियोग हवा से;
झकझोरल बरियाई,
रहलन दुखी लता गाँछन पर;
वनि के बोझ लदाइल !
कहीं कमल तालन में ताकत,
मुहवाँ खोलले दाँत-चियरले ;
कइलन सभके बेकल चंचल,
उनकर मुशकी काटल;
ना केहू का तनिक सोहाइल !
विलखत दुखी नगरवासिन का,
फुलवरिया भकसावनि लउकलि !
जइसे देखि बिपति घहराइल,
डाँइनि खुश हो आइलि डँउकलि !
लोर बहावत ताकत-जोहत,
घूमत दुखी उदास लोग का;
वार-बार रोकलो टोकला पर,
छंदक बिना नहइले धोवले;
देहियाँ झटकलि चेंच बनवले,
झुकि लगामि कंथक के धइले;
बनल बेजइहाँ मुँह लटकवले,
गइल नगर में बहुत दबकले !
दुखी उदास देखि दूनो के,
झंखत बिना कुँवर के आवत;
लोग नगर के लोर बहावत,
बटुरल कुछ पूछत-बतियावत,
जइसे पहिले बहुत आज ले;
दुखी अजोधावासी भइलन,
रथ सुमंत के देखत !
पाछा लागल परल मोह में,
चलल डहरिया जे घिसियाइल,
आँसु बहावत कुछ खिसियाइल,
बार-बार छंदक से पूछल — ;
"देश नगर का सुखदायी के,
लाल दुलरुवा राजकुँवर के;
कहाँ छोड़ि अइले कुरूबारन !
सरसाती घर-फूंक उजारन !!"
हाँथ जोरि के माँथ नवावत,
भगति-भाव से बोलल छंदक;—
"हम ना छोड़लीं राजकुँवर के,
उहे छोड़ि हमरा के रोवत ;
बीहड़ जंगल बीच अकेले,
वे खटका गिरहस्त भेख के ;
बदलि चलंता भइलन तुरते !"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सुनि सईस के बतिया सचकी,
खलक नतीजा इहे निकालल;
'बड़ा कठिन बेवहार कुँवर के,
वहुते कठिन करेजा उनकर!
अइसन निहचय साचो,
बीहड़ गूढ़ विचित्तर;
कई जनम का,
काल सुभाव करम गुन;
संचित का अनुसार!,
एह किसिम से सांचत मन में,
लोग शोग के रोकि सकल ना!
उमड़ि बदरिया दुख के भारी,
धक्का दिहलसि मन के भारी!
लोर बनलि आँखिन में छलकलि,
ओहिजो ले ढरि वहरा निकललि!
कई ओर से शबद सुनाइल,
कुछ लोगन के भाव जनाइल;
'हमनी आज वन के जाइवि,
राजकुँवर के पता लगाइवि;
बिना कुँवर के देहियाँ राखल,
जीयल चाहत नइँखीं जा!
जइसे लोग जियल ना चाहे,
इनरिन का थाकि परइले!
जंगल नियर नगर लउकत वा,
बिना कुँवर के सोहत कहवाँ?
उहवें नगर चुहिलगर जानीं,
वन में उनकर आसन जहवाँ!'

'अइलन कुँवर' जानि के अइसन,
तिरिया झट कोठन पर चढ़ली!
खाली पीठि देखि घोड़ा के,
बंद झरोखा खिरकी कइली!
रोवे लगली राग कढ़ा के,
माया ममता मोह बढ़ा के!
राजा बेकल भइल शोग से,
संत-सगुनिहा गुनी जोतिसी;
पंडित मंतरवाह पुजारी,
सभसे विनय भाव से पुछलन!
जेही जइसे कहल बतावल,
पहुँचि देव-मंदिर में तइसे;
नेम-वरत-पूजा-उपास जप,
एही खातिर कुल कइलन जे;
कतहीं पता कइसहूँ लागे,
कुँवर लवटि घर आवसु जल्दी!
दुखी सईस शोग से बेकल,
लोर नयन में भरले भटकत;
पइठल राजभवन में कल से!
मानो केहू हरल कुँवर के,
कवनो घात दगा से छल से!
ताकत आँसु भरल अँखियन से,
कंथक पहुँचि महल का भीतर;
हिहिनाइल कुछ आरत होके,
परगट करत पीर हिरदय के!
देवढ़ी भीतर पोसल पंछी,
सेवल सुघर पालतू घोड़ा;
बोललन सुनि घोड़ा के बोलल!
भरम भइल उनकर मन डोलल!!
'जनलन राजकुँवर जी अइलन,
कतहीं समाचार में बझलन;
कंथक जब पहुँचल हिहिनाइल,
आसन लवटि कुँवर के आइल;
अइसन समुझि उचकि कुछ लोग!
जोहल दरशन के संजोग;!
रंगमहल रनिवास जहाँ के,
सखी सहेली तिरिया केतने;
विरह-अगिनि में झुलसत रहली,
चिंता-चिता-आँचि के सहली;
परल मिरिग-टिशुना-आशा में,
दरशन खातिर बेकल भइली;
खुश हो घर से बहरी अइली,
जइसे अचके शरद-अकाशे;
चीरि बदरिया,
चमकलि होखे विजुली!
जूरा खुलल बार छितिराइल,
सारी सुखर मइलि चिमुराइलि;
लोर बहत मनवाँ मधुवाइल,
पाँवन में पनजेब रहल ना,
लउकल कहीं महावर लाली!
कानन में कुंडल रहलन ना;

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

करधनि बिना कमरिया खाली !
छाती गला उदासे लउकल,
हयकल हार कहीं कुछ नाहीं !
देहिया रहलि उदास चराइलि;
देखत मन में सोच समाइल !
देखि अकेल दुखी छंदक के,
कंथक के पिठिया पा खाली;
रोवल तिरिया लोग कुहुँकि के !
जइसे गाइ साँढ़ से विछुरल,
डेकरति वन में रहे भटकि के !
तब राजा के धरम-संगिनी,
देखी गउतमी छोह-मोह में;
राजकुँवर का विरह-शोग में;
वनलि अधीर विलखि के रोवलि,
जइसे पड़रू मरल भइँसिया,
डेंकरे चिकरे मूँड़ी झांटे !
आखिर काँपि गिरलि धरती पर;
छाती पीटति होश गवाँ के;
जइसे केरा थंभ सोनहुला,
हिलत हवा से ढहल भूइँ में !
दूसर कुछ तिरिया पहुवाइलि,
तेजहीन हो कठया मरले!
मानो चेत गवँवले होखसु,
ना रोवसु ना आँसु गिरावसु !
साँसि-बकार चले ना तनिको,
जहवाँ रहली तहें ठाढ़ हो;
टुकुर-टुकुर ताकत भर रहली,
जइसे हो तसवीरि उरेहलि !
कुछ तिरियन का मुरछा आइलि,
वनल अधीर शोग ले पति का;
ढरत लोर आँखिन से जिनका,
मुँह के भेंवत सींचत असथन;
जइसे परवत रहत पटावत,
अपना जल का सोत-धार से;
पत्थलवाली चट्टानन के !
धाही कइल लोर के मुहवाँ,
राजभवन में सोहत कइसे;
वरखा रितु में वुन्नी परले,
कमलफूल से भरलि तलइया;
जल ठपकावत लउकति जइसे !

तिरिया कमल नियर हाँथन का,
सघन मोट खाली अँगुरिन से;
जवनन में कुछ गहना नाहीं,
छतिया आपन पीटे लगली !
जइसे लता पवन से काँपत,
आपनि पतई पीटति अपने !
धब-धब छतिया पीटति हाँथन,
ऊँच सुघर असथन का हिलले;
तिरिया शोभत रहली कइसे !
हिलत हवा से कमल फूल पर,
वइठल चकवा-चकई शोभत;
वहत नदी-धारा में जइसे !!
तब जेकर अँखिया कि,
खीसिन बुत लाल रहली कुछ
घींचति लमहरि साँसि दुखी हो,
हिलत असथनन वाली;
देवि वियोगिनि जशोधरा ऊ,
सघन वरवनिन से जेकरा हठि;
आँसू बूने-बून गिरत झरि,
मानो मोती झरत कमल से;
गाढ़ शोग से गद्गद् होके,
काँट नियर कुछ;
रुक्खन टेढ़ वचनियाँ कहली—
"वेवश सुतले छोड़ि राति में,
गइल हमार मनोरथ कहवाँ
हाय ! अमोल रतन-धन हीरा ?
कहीं कवन-विधि हिरदय-पीरा ?
साथे गइल तीनि में दूगो,
लवटल देखि करेजा काँपत !
कइले काम नीच दुशमन के,
रे निरदइया ! अब रोवत का ?
एक धोर काली करनी आ,
दूसर नखड़ा लोर वहावल;
मेल धरत दूनो का कहवाँ ?
तोर मनोरथ भइल सफल जब,
मउज मना ले;
आँसू रोकि मगन-मन इहवाँ !
परल नीच सेवक का पाले,
लोगवा आखिर जाला खाले !
जेकरा छाया में सुख पावे,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शांति-चैन से समय वितावे;
ऊहे फेंड़वा काटे लोग;
ओकरे जरी गरमजल डाले!
पंडित दुशमन अच्छा मानीं,
मीत गवाँर जबूने जानीं!
तूँ अपना के मीत बता के,
कइले हमारा कुल के नाश!
कपटी दगाबाज संगी के,
केहू कइल जहाँ विसवास;
नदिया बीच भवँर में परि के,
आखिर ओकर नाइ मराइलि;
हानि भइलि धन-जन के केतना,
माँथे कठिन विपति घहराइलि!
गहना सवख सिंगार छोड़ि के,
शोग-बिपति के मारल;
लोर वहावत रोवत तिरिया,
लाल भइलि गजुवाइलि अँखियन;
दशाहीन हो थउसल बाड़ी!
धरती नियर छमा बा इनकर,
धीरज शांति हिमालय अइसन!
ई सवाँग का रहते अपना,
बेवा नियर तेज-हत ठाढ़ी!
अउरी सभ के छोड़ीं फरका,
नियति-खाम कंथक के देखीं;
चोर समान राति के छिपि के,
अनरथ करत डरल ना तनिका;
कइलसि सरवस हरन हमार!
जब परान घट में अइला के,
सहजे दइबी चोट सहल ई;
तब कोड़न के बाति कहीं का,
कइसे कोड़ा देखि डेराइल;
ई सोहाग हिरदय के हमरा,
अचके संगें लेइ पराइल;
करनी कइलसि अधम अभागा,
कल से गोड़ दबा के निकलल;
गूँग बनल तब बोलल नाहीं!
आइल राजभवन में फिरि के,
अब असमय हिहिनाइल का?
निनियाँ तोरि जगावे खातिर,
जब ई आपन टाप बजाइत;
नकिया फुरफुराइ हिनहिनाइत,
तब हमरा कुछ दुख ना होइत;
हम एतना पछतइतीं नाहीं!"
जशोधरा का मुँह से सुनि के,
अइसन विरह-विलाप-वचनियाँ;
अच्छरि गुहलि आँसु से जेकर,
हिरदय-चीरि करेजा काढ़सु;
छंदक पोंछत लोर नयन से,
मुहवाँ आपन नीचे कइले;
हाथ जोरि के बोलल कल से-
"हे देवी! अब दया करीं कुछ,
बतिया सुनीं ध्यान से रउरा!
कंथक के जनि करीं शिकाइति,
खीसि करीं गति हमरा ऊपर!
तनि को नइँखे दोस हमन के,
करनी कुल जानी देवन के,
काम विचित्तर देख बुझाता,
कइलन, चहलन जवन विधाता!
मालुम रहल हुकुम राजा के,
तवहुँ कहाँ जनाइल हमरा;
परल अकिलि पर परदा भारी!
अँखिया रहते आन्हर भइली,
फइलल मोह भरम के गरदा!
केहु मन के सँथल घुमावल,
बरबस अइसन काम करावल!
हुकुम पाइ के,
हम घोड़ा के;
जल्दीं से पँजरा ले अइली!
पाछा-पाछा दउरल गइली!!
कइसे अइसन साहस कइली!
नाहीं तनिको आहस मनली!
घोड़न में सरहँग उत्तम ई,
चलल कवन विधि पता चलल ना!
धरती पर खुर कबे परल ना;
जइसे केहू उपरे थाम्हल,
सजगे भुइयाँ गिरे दिहल ना!
शवद नाकि से तनिक भइल ना,
मुहवाँ बंद कइल हो तइसे;
ऊ फुरकल भा हिहिनाइल ना!
राजकुँवर जब निकले लगलन,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अपने आप खुलल झट फाटक;
होखल दूर अन्हार राति के,
जइसे सुरुज चहेटले होखसु;
एहू से एकरा के,
दइवी घटना;
गूढ़ अटल समुझे के चाही!
हुकुम मानि राजा के,
बहुत सजग रहलो पर;
राज-महल आ,
एह बड़ नगरी में;
लोग हजारन जगलन नाहीं,
रहलन परल अचेत नीनि में;
हो बेखबर पहरुवो सुतलन,
एहू से एकरा के;
दइवी लीला-रचना,
ढंग-जुगुति समुझे के चाही!
देवता लोग समय से, उनके,
गेरुवा वसन दिहल वनलायक;
मुकुट अकाशे फेंकल उन्हुकर,
लोकल केहू नायक;
ओहू से एकरा के,
दइवी इच्छा-कारज;
भेद भरल समुझ के चाही!
एही से हे देवी ! रउरा,
दोसी मति समुझीं हमनी के;
अइसन काम करे में कबहीं,
ना घोड़ा के राइ रहल कुछ;
ना हमार कुछ चालि इशारा!
देवते लोग भइल उत्पेरक,
भेजल राजकुँवर के वन में!
अइसे वन के गइल कुँवर के,
दइवी जोग-जतन का बल से;
मुनि के तिरियालोग चिहाइल!
शोग-कलेश घटल कुछ उन्हुकर,
मन में बोध सबुर कल आइल!
बाकी प्रिय के,
जब संन्यास लिहल सुनलीं जा;
रोवे कलपे तब लगलीं जा!
दुख के ताप बढ़ल मनवाँ के,
सुधि ना रहलि तनिक तनवाँ के!

आइलि अउर गउतमी सुसुकलि,
मन के मेघ नयन से बरिसल!
करत बिलाप छुटलि धिरिआई
जनलसि जे अब नाता टूटल!
शोग बढ़ल छनभर मुरछाइलि,
जागलि फेरु होश में आइलि;
निरमल भाव खोलि हिरदय के,
आखिरकार सुनवलसि कल से—
"सुघर अँगुठिया बार सोनहुला,
चंदन गंध सुबासित मजिगर;
राज-मुकुट सोहत जवना पर?
काटि बिगाइल का धरती पर?
बहियाँ लमहरि डापुट चिक्कनि,
कोंवर जइसन फूल सिरिस के;
वन-गजराज नियर गतिवाला,
अँखिता बड़हनि साँढ़ समान!
छतिया चाकर पोढ़ सजीली,
देहियाँ उत्तम चमचम चमकत,
जइसे धप धप तावल सोना!
बोली साफ गँभीर सुरससज,
जनुक पखावज ठनकल!
अइजन राजकुँवर ऊ,
कइसे कठिन तपोवन लायक?
परजा भागे अइसन राजा,
कबे-काल जनमसु धरती पर!
भाग साथ न दिहलसि तब तऽ,
परजा पालक गइलन वन के!
जंगल के धरती अँकड़ीली,
काँट-कूस से भरलि डहरिया!
फूल नियर कोंवर गोड़न से
कइसे चलिहन खुली बधरिया!
महल अँटारी ऊपर सजगर,
सुघर मखमली सेज बिछावल;
हीरा मोती रतन जड़ावल,
शोभत उत्तम सिंघासन पर;
देहियाँ जवन बिराजल सुख से,
चटक चमेली जूही बेला,
चंदन-केवाड़ा-गंध-सुवासित;
दामी राज पोशाक पहिरलस!
बरखा धूप ठंढ में वन में,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कइसे आपन समय बिताईं ?
ज सोना का,
परम-पवित्तर सुघर सेजि पर;
सुख से सूतल,
सेवक जहाँ जगावे खातिर;
भिनसहरा मधुरस टपकावे,
पिहिकावे सभ दिन सहनाई !
भुइयाँ अँचरा डालि खरहरे,
ओकरा भला उँघाई आई ?
वंश तेज बल विद्या संपति,
सभ में सेसर;
उत्तर सखरज दाता,
जे कबहीं ना हाँथ पसारल;
रहल सभन के भाग-विधाता,
उहे भला घर-घर में जाई !
कइसे टुकड़ा माँगी खाई !!"
सुनि के अइसन आरत बानीं,
तिरिया लोग बाँहि फइला के;
एक दूसरा से लपिटा के,
विलखे लोर बहावे लागल !
जइसे लता काँपि फूलन से,
आपन हिरदय-रस टपकावसु !
चकई नियर बिछुड़ि चकवा से,
जशोधरा भुइयाँ भहराइलि; → के
बेकल बनलि कुहुँकि-रोवलि,
कठिन बिलाप करत पटुवाइलि !
भइलि निराश दुखी जीवन से,
भरल कंठ से बोललि कल से—
"हम अभागिनी धरम संगिनी,
हमके छोड़ि अकेल उहाँ का;
अपने धरम कइल चाहीं ला !
धरम भला कब होई ओके,
जे चाहल तप कइल लुका के;
धरम-संगिनी के ठुकरा के !
मालुम होता कबे उहाँ का,
कथा-पुरनियन के ना सुनलीं !
सुदरश नियर बाप-दादन का,
कुल के रीति तनिक ना जनलीं !
चउथापन तप करे गइल सभ,
धरमी राजा लोग खुशी से;

उचित सनातन रीति निवाहत,
धरम-संगिनी साथे वन में !
वेद-धरम-विधि मानि सूध हो,
सँक्लप लेके दूनो बेकति;
बइठि जग्यशाला में साथे,
सफल बनावसु जग्य शांति से !
सुख भोगसु परलोक पहुँचि के,
दूनों कल से साथे रहि के !
वेद-पुरान धरम-पोथिन के,
जो शुभ नेम उहाँ का जनितीं;
हमसे इरिखा रखितीं काहें,
छिपि के निकलि परइतीं चुपके !
धरमी जीव उहाँ का हमके,
जब खिसिकट मुँहजोर समुझलीं ;
तबे कलह इरिखा से डरि के,
सुख के कमी जानि बन गइलीं !
तप से सरग पहुँचि के,
सज आनंद भोग-सुख खातिर;
साथ देव-तिरियन के चहलीं !
मन में सुबहा होता बाकी,
ऊ कइसन, जे ;
सुघर मोहिनी रूप धरेली,
जे हमार सेवा ठोकरा के;
लाते मारि राजलछिमि के,
तप खातिर पतिदेव निकललन !
संन्यासी बनि जंगल धइलन !!
हमरा मन में नइँखे तनिको,
चाह सरग का उत्तम सुख के !
जेकर आपन मन काबू में,
इनिरी बश में बाड़ी सभई;
ओके ऊ सुख कहाँ दुलम बा,
सरग लोक के इनरासन के ?
चाह इहे बा जे पिय हमके,
धरती पर भा सरगलोक में;
कहीं रहसु मति भूलसु कबहीं !
अइसन भाग हमार कहाँ जे,
देखीं पिय के मुँह मुसकात !
हाय ! अबोध अभागा राहुल,
नइँखे का अब लवटे लायक;
अपना पिता-गोद में कबहीं ?
रूप सुघर सुकुवार पिया के,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मन निरदयी कठोर करेजा;
जे छोड़लन मँझधार भँवर में;
नाइ बिना पतवार डाँड़ के ;
तोतरि बानी बोले वाला,
जनमतुवा राहुल अबोध के !
हमरो हिरदय कठिन जरूरे,
लोहा भा पत्थर के बाटे;
जे सवाँग का जंगल गइले,
शोभाहीन अनाथ नियर हो;
फाटि भइल दू टूक अबे ना !"
पिय का विरह शोक में मुरछित,
रोवत बिलखत ध्यान करत नित;
शांत गँभीर सुभाव चालि के,
सति सुलच्छनि सिधवा देवी;
ना इयाद कइली धीरज के,
रखली चेत लाज के नाहीं !
बिरह-बिलाप सोक में बेकल,
जशोधरा के छत से उतरल;
तिरिया लोग देखि चिचिआइल !
धावल घेरि लिहल घबड़ाइल !!
धीरज छोड़ल राग कढ़ावल,
छतिया पीटल लोर बहावल;
मुहवाँ उनकर लउकल जइसन,
बड़हन फूल कमल के भींजल;
बरखा से झकझोरल पीटल !
जप पूरा कइ,
मंगल आहुति;
अगिनि देव के,
हवन-कुंड में देके राजा,
जब मंदिर से बहरा अइलन;
आरत बानी सुनि के तुरते,
घाही होइ करेजा धइलन !
जइसे बिजुली के तड़कल सुनि
मतवाला हाथी घबड़ाला !
देखि-ताकि कंथक-छंदक के,
निहचय पक्का सुनत पूत के;
भइल सोक से बेकल राजा,
गिरलन धरती पर धड़ाक से !
जइसे उतसो पूरा भइले,
उतरे झंडा देवराज के !

पूत-सोक में बेकल कुछ छन,
बिना होश के भइलन राजा;
दउरल सभ परिवार उठावल,
पंखा हाँकल नाकि दबावल !
माँथे ठंढा तेल मलाइल,
किसिम-किसिम के दवा दियाइल !
होश भइल जब तनिका उनका,
धरती पर ले सुतले-सूतल,
लोर भरल आँखिन से तकलन;
दुखी होइ कंथक घोड़ा के !
आखिर लमहरि साँसि घींचि के,
करत बिलाप बचन कुछ कहलन –
"केतने समर जीति तूँ कंथक,
वहुत हमार भलाई कइलऽ !
आपन बल गुन अकिलि देखवलऽ,
शान बचवलऽ पानी रखलऽ !
बाकी अंत दाव में अपना,
कुल कइला पर पानी फेरलऽ !
इज्जत शान मिला माँटी में,
हमरा कुल के सोरि कबरलऽ !!
राजकुँवर के वन में छोड़लऽ !
हीरा मनि अनमोल गवँवलऽ!!
हमरो के ओइजा पहुँचावऽ !
जल्दी उनसे भेंट करावऽ!
नाहीं तऽ तूँ अपने जाके,
बस हमार थाती लवटावऽ!
उनका बिना जियबि हम नाहीं,
जइसे रोगी जीव जिये ना;
जब ले उत्तम दवा मिले ना !
दस गो राज बनावे वाला,
जानेवाला आग-पाछ के;
बिबसवान राजा के बेटा,
जब परजापति मनु महराज;
पूत बियोग घाव से बेकल,
होश गवाँ के मुरछित भइलन;
तब का हाल कहीं दूसर के ?
जन साधारन धमधूसर के ?
मन में हमरा इरिखा होता,
दशा देखि राजा दशरथ के !
जे बन गइले रामलखन का;

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दुख-वियोग के सहलन नाहीं,
देहियाँ छोड़ि सरग के गइलन !
हे भलजीव ! बता हमरा के,
जगह तपोवन के ऊ जहवाँ;
हमके पिंडा-पानी देके,
देवलोक पहुँचावेवाला—
के, उतारि के चलि अइले तूँ !!
पूत-बियोग-सोक-दुख-दोचित,
धरती नियर सोभाविक धीरज;
छोड़लन राजा चेत गवँवलन !
बहुत समय ले विलखत रहलन,
जइसे दशरथ राम-बिरह में !
विनय-शील-गुन नेति-धरम के,
पंडित, निपुन राज-मँतिरी तब;
उपरोहित मतिमान वूढ के,
जे ना बहुते दोचित दुख से;
ना अति सोच-सुचित हो रहलन,
उनके साथे लेके कहलन !
धिरिजा राजा के धरववलन !!
"नेति-धरम के जानेवाला,
हे बुझनउक चतुर राजा जी;
देखि जमाना जुग के रउरा,
कादर ढोंगी लोग नियर अब;
आँसू मति अपने बहवाईं !
माला हार गिरल मुरझाइल,
जइसे लाते धाँगि फेंकाइल;
तइसे कतना राजा जग के,

लाते मारि राजलछिमी के;
खुशी भाव से वन में गइलन !
ममता छोड़ि भजनियाँ कइलन !!
परालबध टरि सके कबे ना,
बर्म्हा जवन लिलारे लिखलन;
ओकर मेंटल कठिने जानीं,
मारल मेंख रेख पर के कब ?
करीं इयाद पुरनकी वतिया,
राजकुँवर का जनम समय के;
असित मुनी जे कहले रहलन !
ना चित सरग लोक में इन्हिकर,
ना इनका के तीनि लोक के;
राज संपदा चाही कबहीं !
हुकुम मिले राउर त,
जाके हमनीं वन में;
आपन कोसिस जतन लगाईं !
सूझ-समुझ से राजकुँवर का,
पहिरि लँगोटा लोहा लेईं ;
लवटि नगर के आवे खातिर !
तब राजा जी कहलन सहजे.
रउरा सभ अब जल्दी जाईं;
पता उदेश कुँवर के लीहीं,
सभई के दुख दरद सुनाईं !
मंत्री आ उपरोहित दूनो,
'अच्छा कहि तब वन के गइलन !
दुखी पतोहू रानी राजा,
वाकी गिरिहकाज में लगलन !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

राजकुँवर के खोज

राजा का आँसू-कोड़ा से,
घाही होके ओही घरिए ;
घोड़ा तेज नियर अफनाइल,
कान खड़ा कइ पनपनाइ के;
मंत्री आ उपरोहित दूनो,
नेह-मिताई बश मन-चित से;
जोर लगाके बन के गइलन,
धइले सुबहित डहरि समय से !
चलि के बहुत खेदाइल थाकल,
पँजरा पहुँचि तपोवन का झट;
छोड़ि राजसी,
साज-बाज आ पहिरन;
लाते दबा घमंड-शान के,
विनय-भाव से भीतर जाके;
भारगव-मुनि का शुभ आसरम में,
जथा-जोग पूजा कइ उनकर;
करत दंडवत विनती झुकि के,
आसन पाइ बइठलन दूनो;
भइल उचित आदर सतकार !
देखि भारगव के आसन पर,
चिंता छोड़ि शांति से बइठल;
चरचा छेड़ि राज मंत्री जी,
आपन अरज-गरज कुल कहलन—
"बल विद्या संपति में नामी,
विमल जशी इछवाकु वंश के;
परतापी राजा सूधोदन,
उनुकर सेवक सहज हमन के;
उपरोहित आ मंत्री जानीं !
इन्नर नियर ओह राजा के,
बेटा सुखी जयंत समान;
देखि बुढ़ापा मउवति रोग,
सुख संपति परिवार छोड़ि के;
लाते टारि राजसी भोग,
नाता-नेह तोरि के सभसे;
दुख के दागन छनकल भड़कल !
माया-ममता-मोह-जाल के,
सहजे काटि कले से सरकल !!
जनम मरन से पिंड छोड़ावे,
भव-सागर के पार करे के,
जतन जुगुति कुछ जोहे खातिर;
सुगम डहरि जंगल अइलन !
उनही के ढूँढ़त हमनीं का,
आज तपोवन में अइलीं जा !
सुनि के पूरा हाल कुँवर के,
भारगव मुनि मंत्री से कहलन ; —
"जनि अबोध जानीं उनका के,
समुझि धरम का एह डहरि के;
भँवर-बीच भरमावे वाली,
लवटि जनम धइ आवे वाली !
राहगीर बुझनउक गइल ऊ,
बिंधाचल परबत का गोदी;
मुनि अराड़ का शुभ आसरम में !"
जानि जथारथ समाचार तब,
मुनि से बिदा लेइ के दूनो;
जवना ओर गइल ऊ रहलन,
ओनिए जल्दी डेग बढ़वलन !
थकलो पर ऊ लोग चले में,
भारी साहस राखल मन में,
चलत-चलत कुछ दूर पहुँचि के;
देखलन दूनो राजकुँवर के,
बिना नहइले धोवले बइठल !
देहियाँ रहे तेज से चमकत,
बादरि बीच सुरुज हो जइसे !
तब उपरोहित मंत्री दूनो,
असवारी से उतरि नेह बश;
जाइ पहुँचलन पँजरा उनका !
जइसे रामचरन के देखे,
वामदेव जी गइलन बन के;
मुनि वसीठ के साथे लेके !
तब सरधा से उचित रीति से,
दूनो उनकर पूजा कइलन;
सरग लोक में देवराज के,
शुक्र अंगिरा कइलन जइसे !
ऊहो कइलन एह लोग के,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जथा-जोग आदर सतकार;
जइसे देव इन्नर जी कइलन,
नंदन-बन में,
मुनी अंगिरा शुक के!
हुकुम पाइ तब दूनो उनका,
दूनो बगल बइठलन कल से!
जइसे विमल चनरमा संगे,
सोहे पूख-पुनरवस जोड़ा!
उपरोहित तब बइठि विरिछ तर,
राजकुँवर से अरज सुनवलन;
पारिजात तर सुख से बइठल,
प्रिय जयंत से सरग लोक में;
गुरु बिरहस्पति कहलन जइसे!
'बेकल भइल वियोग सोक से,
छनभर खातिर होश गवाँ के;
गिरलन धरती पर राजा जी!
जब कुछ चेत भइल उन्हुका तऽ,
कहलन लोर बहावत बिलखत;
रउरा खातिर,
कुछ सनेह हितकारी;
जेकरा के कहला में,
होता हिरदय भीतर,
पीरा-सोच-कलेश!
"सुनऽ पूत हे निपुन सुलच्छन!
ई तऽ हमरा मालुम वा जे,
धरम भजन तप खातिर;
तोहरा मन में,
सरधा प्रेम बहुत बा;
होनहार टरि ना सकिहें,
इहो बोध हिरदय में हमरा;
अवहीं बाकी तोहरा लायक,
समय भजन के आइल नइँखे!
असमय तोहरा बन गइला से,
सोक अगिनि का लहर-बीच हम;
अगिनि समान जरत अव वानीं!
आपन करतव धरम समुझि के,
हमरा जीवन रइछा खातिर;
वन के वास छोड़ि के लवटऽ,
होई पुन्नि धरम एही में!
जइसे वेग नदीधारा के,
चउपट करे किनारा ढाहे;
तइसे सोक सतवलस हमके,
पूरा चउपट घाही कइलस!
पवन सुरुज अगिनी विजुली से,
बादरि पानी घासि पहाड़;
भागे सूखे जरे टूक हो,
उहे दशा देहियाँ के हमरा;
शोक करत वा साथे!
हे बुझनउक! शील गुन पंडित,
पोथी-पतरा के पढ़वइया;
अबे राज शासन सुख भोगऽ,
चउथापन में वन के जइहऽ!
दिन हमार नियराइल बा अब,
मति अइसे बतिया लतियावऽ!
सभसे उत्तम धरम दया हऽ,
दया करऽ दुख देखि हमार!
वनवें में सभ सीधि मिले ना;
जतन करे से घरहूँ पावल,
कोसिस-बूधि-सीधि के कारन!
संन्यासी के भेख वनाके,
वन में गइल चिन्ह कादर के;
राजमुकुट के माथे धइके,
माला-हार डालि के गर में;
पहिरि बाँहि में सुघर बिजाइठ,
लछिमि का गोदी में खेलत;
गिरहस्तो रहि राजा कतने,
सहज सुगति पद पवलन धरहीं!
तूँ संदेह करऽ जनि कवहीं!!
सुनऽ कथा इतिहास पुरान,
भगत धुरुव के
दूनो छोटका भाई,
बजर-बाहु, बलि;
रंतिदेव, वइभ्राज, असाढ़,
राजा जनक विदेह राम द्रुम;
धीर सेनजित नियर महान्!
गिरहस्तो में रहिके सहजे,
पवलन सुगति शांति निरवान!
इहे साध लागल वा मन में,
कि हम लगन शोधि के,
शुभ साइति पर;

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जल्दी तोके राज तिलक दीं,
साथे लोक वेद बिधि मानत;
शांति-चैन सुख मंगल खातिर,
पूजा करत नेह सरधा से;
परम पवित्तर जल तिरथन के
बेदुवा लोगन का हाँथन से;
मंगल मंतर पढ़त वेद के,
देहियाँ पर देखीं छिरिकात!
ओकरा बाद खुशी से कल से,
हम तप भजन करे बन जाईं!"
एतना बात उहाँ का कहलीं,
छाती पीटि कुहुँकि के रहलीं।
सुनि राजा के आरत बानीं,
उनकर सरधा नेह देखि के;
राउर चित् चेतन कुछ समुझे,
हिरदय दया प्रेम से पसिजे;
रउरा विरह-सोक का जल से,
महा समुंदर लहराइल बा,
लहरि बीच अब बूड़त राजा—
हो अनाथ, हे नाथ! दया कइ;
उनुकर जान बचाईं जइसे,
बीच समुंदर में बूड़त के;
नइया दउरे जीव बचावे!
गंगा शांतनु पूत- प्रतापी,
महारथी भीसम बलवान;
भारगव-वीर महरसी ग्यानी,
परशुराम, दशरथ के राम;
अइसन लोग पिता-हित-खातिर,
काम जथारथ कइल समय पर;
ठीक तइसहीं ततपर होके,
करीं पिता के हित अब रउरो!
जवन गउतमी कइलसि राउर,
पालन-पोसन नेह-लगन से;
गइलि उहो ना ओह दिशाके,
जहवाँ बसलन मुनि अगस्त जी;
घरवे रहि रोवति बिलखाति,
जइसे गइया डँकरति दुख से,
जेकर लेरू मरल बिगाइल!
हंस वियोगे दुखी हंसिनी;
बिलगावल हथिनी हाथी से,

बेंकल बन में भटकति होखे;
तइसे राउर धरम-संगिनी,
जसोधरा बनि के अनाथिनी;
कुहुँकति अइसन पिय का रहते!
नारी आधा अंग पुरुस के,
धरमसंगिनी, सहज सेविका
जीवन जोति दया सरधा के,
आशा जग के पालेवाली;
ओकर रइछा राखीं हरदम,
इहे पुरुष के धरम पवित्तर!
छूटति सहज डहरिया राउर,
धरम भंग होखल चाहत बा
पूत एक राहुल अबोध, जे—
अबहीं दुख के सहे जोग ना,
उहो विरह-संताप सहत बा;
पिता-वियोग छोड़ाईं ओकर!
राउर विरह लकड़िया जेकर,
आह धुवाँ बा मोह लहरिया;
अइसन लहकल सोक अगिनि में,
झुलसत जरत नगर रनिवास!
आगि बुतावे खातिर उनकर'
रउरा दरसन के जल चाही!„
उपरोहित के बतिया सुनि के'
बोधि-ग्यान अधिकारी उत्तम'
बोधसत्त तब उत्तर दिहलन,—
छन भर ध्यान लगा के कल से!
"नेह-दुलार बाप का मन में,
बेटा खातिर होला कइसन;
एकरा के हम जानत बानीं,
खास तरह से राजाजी का
हिरदय में का भाव भरल बा
हमरा खातिर;
इहो जरूर बुझाता,
बाकी तऽ अब;
का हम करीं जानि के सभ कुछ;
रोग बुढ़ापा मउवति वाली;
बिपति देखिके डर से कँपलीं,
बेवस हो परिवार छोड़ि के;
नाता नेह तोरि के भगलीं;
भाई-बंधु मीत-हित सभ से,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जब वियोग होइत ना कबहीं;
तब के अइसन,
जे चाहित ना;
देखल अपना प्रिय लोगन के !
'जब संजोग देर ले रहि के,
आखिरकार वियोगे होला;
तब हम परीं मोह में काहे !
भोगीं नाहक,
जनम मरन का दुख के !
इहे सोचि के छोड़त बानीं,
पूजा जोग पिता नेही के !
हमरे कारन राजा जी के,
अइसन भारी सोक सतवलस;
राउर इहो कहल सुनि हमरा,
तनिको अच्छा लागल नाहीं !
सपना नियर मिलन छन भर के
अंतिम समय बियोग जरूरी;
एकरा खातिर बउराही बा,
माँथ धुनल पछताइल रोवल
जे ना मानल से सभ खोवल,
अपने आपन सोरिया धोवल
देखि बिचित्तर गति दुनियाँ के,
रउरा ई सभुझ के चाहीं;
कि दुखवा के कारन,
पूत-पिता ना,
एकर कारन मोह भरम बा,
मनवाँ में चपटल अग्यान
दुनियाँ ई राहिन के मेला,
केहू कबहीं कहीं मिले ला;
समय पाइ संजोग जुटे ला,
फेरु तुरंते संग छुटे ला;
सभई आपन डहरि धरेला,
चतुर खेलाड़ी के ई खेला,
जे देखल समुझल भरमल ना;
प्रिय परिवार सुजन संगी से,
जब बियोग हो सोक करे ना!
मानुस अपना पुरुब जनम में,
भाई-बंधु होत संगी के
छोड़ि तहें एहिजा आवेला
फिर एहिजो ले करत पँयतरा,
अपना लोगन के धोखा दे;
कल से कँवे सरकि भागेला !
जहवाँ गइल तहों ले निकलल,
कूदि-फान्नि के अंते पहुँचल !
छन-छन वदले सरके-भागे,
कतना रूप धरे आ त्यागे;
अइसन छनिक परानी पर के,
बिरथा ममता राखी काहे ?
गरभ-समय से ले के आगे,
हरदम मउवति हर मोका पर;
वध खातिर तइयार ठाढ़ि बा,
सरधा-आदर-पूजा लायक,
पूत-पिरीत पिताजी तवहूँ;
काहे अइसन वतिया कहलन;
'जे हम असमय वन के अइली';
का हम कहीं काल के हाल,
जेकर बहुते मेंहीं चाल;
जग में के कव वँचल काल से,
फइलल सगरे, कठिन जाल से;
तीनि लोक चउदहो भुवन ले,
लउकत वा जतना जंजाल;
माया-जीव जगत के नाटक,
लख चउरासी के भवजाल;
सभ ओही के सहज तमाशा,
मन वहलावे वाला पासा !
जग में काल-नेम सभई के,
नइँखे एक काल के काल !
विसय-भोग के गूढ सवाल,
होला ओकर काल अकाल;
धन-धंधा रोजिगार-हाल के,
निहिचित कइल बनल बा काल;
हरदम काल जगत के खींचत,
गिरत-उठत नाटक के परदा;
किसिम-किसिम के
रूप-रंग तसवीरि देखावत;
लीला-होत परगटे लउकत !
जब मँड़रात काल माँथा पर;
कब परवाना तामिल होई;
एकर पता कहाँ केकरा बा ?
ना एही से काल सुगति के,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

परमारथ-तप भजन-भगति के;
ज ना कइल काल के कीमति,
सजग भइल ना,
सूतल खोवल;
हाँथ मलल पछताइल पाछें,
चुकल काल से झंखल रोवल!
जइसे झुकल डाढ़ि के वानर,
भुइयाँ गिरल नोचाइल किंकुरल !!
राजा जी सभ राजभार जे,
सँउपल चाहीं ला हमरा के;
कोंवर सहज पिता-हिरदय का,
भाव मोताबिक;
वा विचार ई सवतुक,
बाकिर हमरा खातिर;
मानि लिहल एकरा के,
नाहीं उचित कहाई !
जबसे रोगी लालच का वस;
कुपथ अन्न के खा ले भाई !
राज-काज शासन-अधिकार,
टिशुना-लोभ-मोह-भंडार !
के विदमान पुरुस एकरा के,
उचित समुझि मंजूर करी कव ?
चंचलता-चिंता-मद मेहनति,
दाव-घात आपति के घर ई;
जोर-जुलुम मनमानी ए मे,
वाधा-विघिन धरम में होला !
ऊपर ले मनमोहक मजिगर,
राजकाज झलकत वा, वाकिर
जरत सोनहुला राजमहल के,
माहुर मिलल सुरस भोजन के;
जानीं वड़हन ताल चुहलगर'
विहँसत-कमल-फूल से सोहत;
जहवाँ हो मंगर के डेरा,
दुख-आफति के घर दरबार
ना तनिको सुख-शांति राज में,
ना कुछ धरम-नेम निबुकाँव;
इहे समुझि पहिले के राजा,
चउथापन में राज-छोड़ि के;
कल से भजन करे वन गइलन
खाके वन में,
कंद-मूल आ;
लता-गाँछ के पतई'
जतन-जुगुति से;
रइछा-राखत गुजर करत नित,
पवला नियर अमोल रतन-धन;
मनवाँ में सुख मानल,
कइल सहज संतोख
बहुते अच्छा बाटे !
बाकिर जे ना लउके अइसन,
करिया नाग समान;
कले डँसे वाला दोसन का,
साथे रहल कबे ना अच्छा;
जवन दोस कि,
बस लछिमी का जरि से;
सहज-भाव से पैदा होलन !
राज छोड़ि के धरम-काज में,
वन के गइल सराहे लायक;
बाकी संकलप-कउल तोरि के,
बन के छोड़ि लवटि घर पहुँचल;
फिर परिवार लोग लइका में,
रहनि-चालि-लति थूके लायक !
अइसन धीर पुरुस के होई,
उत्तम कुल में जनम पाइ जे;
पुन्नि धरम खातिर बन जाके,
त्यागी तपसी भेख बना के;
कहले परी फेरु लालच में,
वेहाया बनि गेरुवा छोड़ी;
भले मिले इन्दर के गद्दी !
परल मोह लालच में,
चाहे कवनो डर से;
जे उगिलल अनाज के,
फेरु उठा खा लेलस;
उहे मोह लालच भा डर से,
छोड़ल विसय भोग अपनाई !
निकलि जरत घर से जे,
भइल कइसहूँ बहरा;
फेरु लवटि ओही में पइठे
उहे देखि दोसन के;
गिरहस्ती से हटि के,
मोह भरम का कारन;

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जाइल चाही फिरि के,
ओही गिरहस्ती का ओर !
इहो सुनाला दंतकथा जे
पहिले कतना राजा लोग;
गिरहस्ती में रहि के घरहीं,
सुगति-मुकुति पद पावल !
बाति जथारथ हउवे ई ना,
जेकर चित-रुचि रही शांति में;
ओकर शासन होई ढील !
राज-काज में मति बाझी जब,
शांति-रंग में भंग परी तब;
ठंढा जल से गरम हवा का,
जइसे संग कबे ना निबहे;
सुमति-शांति से तेज शान का,
तइसे कबहीं मेल धरे ना !
'साचो सुगति-मुकुति पद पावल,
राज-छोड़ि के राजा लोग;
कि मालिक बनि राज-काज के,
बिजय पाइ इनरिन पर अपना;
खाली कइल घमंड मुकुति के ?
उन्हुके राज-भोग शासन में,
चाहे मिले शांति सुख चैन;
बाकी हम बन अइलीं नाहीं,
बिना विचार समुझ निहचय के !
भाई-बंधु लोग लइका के,
फंदा कठिन काटि के बंदा;
निकलल सुगति-शांति-सुख जोहे,
अब ना भरमी परी जाल में !"
अपना गुन आ ग्यान मोताबिक,
सवतुक उत्तर देवेवाला;
राज कुँवर का मुँह से सुनि के,
बतिया साफ गँभीर जथारथ;
चउकस चतुर राज मंत्री जी,
तुरते ओकर उत्तर दिहलन—
"राउर अइसन नेह धरम में,
अउरी निहचय गूढ़ अडोल;
नइँखे तनिको काटे लायक,
बाकी अवहीं बा बेमोका;
केहू एके सही कही ना,
जब ऊ करी बिचार समय के !

बूढ़ पिता के दुख दे एतना,
चिंता सोक अगिन में डाल;
धरम पुन्नि के चाहेवाला,
रउरा कबे धरम ना होई!
धरम अरथ बेवहार काम में,
राउर मति बा मोट गँवार!
जवन धरम-फल लउकत नइँखे,
ओकारा पाछा आगे आइल;
सुख-संपति के लाते मारि,
ऊ जोहे निकलल बा;
भला गुलरि के फूल!
केहू कहे जीव दुनियाँ में,
लवटि जनम धइ आवेला;
केहू माने फेरु जगत में,
एकर जनम कबे ना होला !
जहवाँ अइसन दोबिधा शंका
तहवाँ कवन आस कि कइसे!
होई बेड़ा पार जीव के?
छोड़ि डहरिआ दोबिधा वाली,
उचित इहे बा लाभ उठाई;
आदर करीं राजलछिमी के,
भोगीं परतछ सुख आनंद
साचो कहीं लोक कवनो जो,
तब जवने कुछ सहज भाव से;
आगे आई भोगल जाई;
जब कुछ नइँखे तब का चिंता,
अपने मुकुति मिली जीव के!
कतना धरमी लोग कहेला—
बा परलोक जरूरे कतहीं,
ना संदेह करे के काम!,
बाकी कवनो जतन मुकुति के
बतलावे ऊ लोग कबे ना!
उन्हुकर समुझ विचार इहे कि
गरमी आँचि अगिनि में जइसे;
जल में चमक गिलाई ओदी,
तइसे गति सुभाव जीवन कें
कतना लोग कहे बतलावे,
'जनम-मरन शुभ-अशुभ जगत में;
सहज सुभाव नेम का कारन,
अपने आप होत आवत बा !'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जब सुभाव से होला सभ कुछ,
तब ई जतन कइल बेकार!
जब इनरिन के गति बिसयन में,
नियत कइल बा चित-सुभाव से;
बैर पिरीति सहज बिसयन में,
पहिले से निहचित बा;
रोग बुढ़ापा दइबी लीला,
तब एकरा में जतन-जुगुति का?
ई त निहचित नेम-सुभाव!
पानी से ज आगि बुताले,
आगि से जल सूखला;
पाँचो तत्त पचीस खंड में,
बिलग-बिलग रूपन में;
देहियाँ भीतर सोहसु!
एक होइ ऊ जगत बनावसु
नाँव-रूप के खेंलि देखावसु
मनमोहक भरमावेवाला!
जीव गरभ में जब आवेला,
पीठि-पेट सिर आँखि कान कुल,
हाँथ-गोड़ कइसे पावें ला;
एकर पवाँरा सुनि रउरा!
अगिनि हवा जल धरती चारो
पचवाँ मिलल अकास संग में;
सात धातु गुन छवो एक में,
दूइ जोनि से बनलि देंहि ई;
चारि किसिम के भोजन खाके,
होले पोढ़ समय के पाके;
रस से खून, खून से मांस,
चरवी बनलि माँस से सहजे,
चरवी से नस-सीरि रचाइलि;
हाड़ कले-कल बनल सीरि से,
छठवाँ मज्जा भइल हाड़ से;
सतवाँ धातु हाड़ से टपकल,
असली कारन बीज कहाइल!
रीतु समे में उचित रीति से,
जब संजोग जुटल अपने से;
लोहू-बीज मिलल बटुराइल,
सात राति में बुदबुद होके,
पनरह दिन में पिंड बन्हाइल!
भइल कड़ेर महीना दिन में,

मूड़ी बनत साठि दिन बीतल
तीनि महीना जब नियराइल
गोड़ भइल बनि के तइयार
घुठुना बनल रचाइल सज से
पीढ़ि रीढ़ पचवाँ में होके
बनल आँखि मुँह नाकि कान सभ
छठा महीना पूरा कइके
सतवाँ जीव परल पिंजड़ा में
आठ महीना समय लगाके
मूरति गढ़ि तइयार भइलि ई
नव दरवाजा का घर भीतर
पहुँचि आतमा भले बिराजे!
गूढ़ भेद के जानेवाला,
करसु बिचार बतावसु साफे,
सभकर कारन असल सुभाव!
के काँटन के चोख बनावल?
रंग बिरंगा पशु-पंछिन के
रचल रूप-गुन-भाव बिचित्तर?
सभ सोभावतन भइल अपनहीं,
ना केहू के इच्छा ए में
फेरु जतन के कवन जरूरत?
एही तरे लोग दूसर के,
सुनल जात बा ई कहनाम—
"बने सिरिहिटी परमेसर से
सिरिजनहार सिरिहिटी करता!
सभकर कारन एक उहें का!
जीव जगत जड़-चेतन जतना,
गरह, नछत्तर लोक बिचित्तर;
नाँव-रूप ई लीला अइसन,
केकरा गवँ बा रची देखाई?
माला नियर एक धागा में
सभके सज से गूहि घुमाई?
जे कारन मन का लगाव के,
जगत रचे फइलावे में!
उहे त्याग में छुटकारा में;
परलय करे बटोरे में!"
कुछ लोगन के बा बिचार कि—
"एक आतमा असली कारन,
जग का बने बिलाय के!
उन्हुके मुँहे इहो सुनाता—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अपने आप सिरिजना होख,
सुगति मिले ले कोसिस से;"
बड़ा भाग से मानुस होके
गिरहस्ती में रहि के सहि के!
लोग बाल-बच्चा जनमा कें
करज चुकावे ला पितरन के
पढ़ि के साहतर-वेद नेह से
रीन भरे ला रिखि-मुनियन के
जग्य-धरम के पूरा कइके,
देवतन के हथफेंर महाजन;
सिर के भारी बोझ समुझि के,
सजग होइ के लवटावेला!
तीनि करज का साथें सभई,
जनम पाइ दुनियाँ में आवे!
जे करजा से छुट्टी पावल,
बस ओही का मुकुति भेंटाइलि!
एह किसिम से रीति-नेम से,
जतन कइल से मुकुती पावल;
अइसन कहल मरम जे जानल!

परंपरा का
मरजादा के तोरि;
बरियारी से जतन कइल जे
सुगति-मुकुति चहवइया;
ओकरा के तकलीफें होई!
हे सुशील बुझनउक!
जो मुकुती में,
सरधा भगती रउरा;
तब तऽ डहरि सनातन पकड़ीं,
कोसिस करीं धरम-मति मानत!
अइसन कइले पाइबि एके,
दुखवो भागी राजा जी के,
अउरी कहल सुनीं भाई जी,
लता-तपोवन से चलला में;
राउर बूधि दोस देखति जो,
ओह बिसय में सोच करीं जनि;
कतना लोग पहिलहुँ वन से,
फिरि अपना घरवा आइल बा!
जाइ तपोवन में रहलो पर
राजा अंबरीस परजा का
घेर-घार कइला कहला से
आखिर लवटि नगर के अइलन!

धरती पर आफति घहराइलि,
जोर-जुलुम उतपात बढ़ल जब;
असुर मलेछ अधरमी,
कूर अनारज लोगन के;
तब वनवाँ से आके,
रछेया ओकर कइलन राम!
शालव-देश-नरेश दुरूम जी,
बन से लवटि पूत का साथे;
ओही तरे नगर के अइलन!
रंतिदेव संकृति के बेटा,
जे धरमी बरम्हरसी रहलन;
उहो मुनि बसींठ लिहलन,
भारी बोझ राज-लछिमी के!
चमकत धरम-तेज जस पाके,
अइसन लोग छोड़ि बनवा के;
सहज भाव से घर के अइलन!
तइसे उचित धरन-पालन में,
नइँखे दोस लवटि चलला में!'
मंत्री सहज आँखि राजा के,
उन्हुकर प्रिय बतिया हितवाली;
सुनि के पूरा सोच-समुझि के,
धीर शांत-मति राजकुँवर जी;
साफ गँभीर जथारथ बानीं,
शांति-भाव से कहलन तुरते—
"जग में ई शंका जे फइलल,
'झूठ', 'साच' 'नइखे' कि 'बाटे';
एह विसय में हमरा मन के,
दूसर लोगन के विचार सुनि;
कबे बोध-सुख-शांति मिली ना!
तप से शांति-भाव से,
असली तत्त जानि के सज से;
एहिजा जवने निहचय होई,
ओकरा के हम अपनें मानबि!
दोबिधा भरम अनेसा वाला,
गोलमटोल निपट अंदाजी;
उटपटांग कुतुवा विचार के,
मानल उचित कहाईं नाहीं!
आन्हर गुरु के आन्हर चेला,
जइसे अँटकर से टोवेला;
तइसे के बिद्मान पुरुस कब,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दोसर केहू का कहला पर;
चली डहरि अनजान अन्हारा ?
हमरा तत्त-बोध तऽ नइँख,
तबो असुभ-सुभ का सुबहाँ में;
मति हमार शुभ में तइयार !
उत्तम चालि चलन वाला के,
बिरथा मेहनति अच्छा जानीं !
बाकिर जेकर चालि खराब,
ओकरा नगद जथारथ सुख के;
रउरा कबो नीक मति मानी !
एह धरमपोथिन के टोके,
अटपटाह कुछ जानि समुझि के;
सीध लोग जे कहल बतावल,
बतिया उहे त उत्तम जानीं !
जेकरा में कुछ दोस ना हो ला,
सीध पुरुस ओही के मानी !
जे वा बिना कलंक दोस के,
ऊ ना बोली झूठ कबो कुछ !
घर लवटे का बारे में जे,
दिहलीं हँ परतोख राम के;
तऽ ऊ कबहीं,
ना बनि सकसु सबूत !
जिन्हिकर सँकलप भंग भइल बा,
होई जब निरुवार धरम के;
ऊ परमान मनइहें नाहीं !
चाहे सुरुज गिरसु धरती पर,
जगह छोड़ि के चले हिमालय;
बिना तत्त के देखले-जनले,
खोलि छान पगहा इनरिन के;
मन के मोरि बिसय का ओर,
अग्यानी बनि घर ना जाइबि !
लहकल अगिनि बीच हम पइठबि,
बाकी असफल होके फिरि के;
घर में डेग धरबि ना कबहीं !
अइसन ठान अठान ठानि के,
ममता छोड़ि कुँवर झट उठि के;
एक ओर चलि दिहलन कल से !
तब मंत्री उपरोहित दूनो,
सुनि के उन्हुकर अटल विचार;
दुखी उदास झँवाइल मुँह ले,
रोवत उन्हुका पाछा चललन;
कले-कले कुछ दूर जरूर !
आखिर आशा छोड़ि लवटि के,
डहरि नगर के धइलन झंखत !
ममता मोह सतावे उन्हुकर,
प्रेम-भगति राजा के बान्हे;
आगे बढ़ि एही से दूनो,
ठाढ़ होइ के तकलन पाछे;
बाकी आह-पता ना लागल,
सुरुज समान तेजवाला के !
तब कुछ सोचि-समझि ऊ लोग,
सुगति-शांति का राहगीर के;
पता-उदेस लगावे खातिर,
तेज चल्हाँक बहुत बिसवासी;
खुफिया दूतन के बहाल कइ,
'नेह-लालसा में बेटा का;
वेकल भइल बन्हाइल पूरा,
राजा सूधोदन के;
कइसे तुरत पहुँचि के,
अँखिया भर देखीं जा;
एह भाव से,
कठिनाई से;
कपिलवस्तु के लवटल !

"आगे कइसे डेग बढ़ाईं,
सगरे चुप्प अन्हरिया छवले;
कहीं डहरिया लउकति नइँखे !
महा समुंदर गरजत डाँफत,
हाहाकार सुनात !
अगम अथाह पार के पावे,
जीव गँवार बेचारा;
चले ना एकर चारा !
जनम-जनम जुग-जुग से रोवत,
छटपटात डँहकत अन्हुवात;
केहू कहीं ना पूछत बात !
दया देखावे डहरि सुझावे,
के पहुँचावे सागर पार ?"
एह किसिम से,
गुनत-मँथत जोहत कुछ थाहत;
राजकुँवर का,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मनवाँ में लय लागल !
'पहुँचल संत सीध मुनि ग्यानी,
पाईं कहाँ, ग्यान कब सीखीं ?
जनम-मरन के लटका टूटे,
छूटे दुख के फंदा !
अइसन गुरु हमरा के भेंटे,
जे अपना उपदेस ग्यान से;
मोह-भरम-शक का अन्हार के,
चित से दूर भगावे;
मलिन-मनोरथ मन-मंदिर के
धोइ-माँजि चमकावे !
गुरुदेव भगवान्,
गुरु देवता पिता समान;
गुरु ग्यान के विमल पताका,
गुरु बरम्ह के निरमल जोति;
गुरु सहज परगट धरती पर,
बर्ह्मा बिसुन महेस !'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बिम्बिसार से भेंट

कई जनम के,
संचित पुन्नि उदय भइला पर,
मनवा में उपजे बयराग;
चित पँचड़ा से,
छनकि छटकि के भागे!
पाइ बहाना कवनो
जीवन इयाद करेला;
गरभवास का परतिग्या के!
मानुस देहियाँ,
मिले बड़ा मुसकिल से।
मिललो पर बड़भागिन,
सुमति विचार भेंटालन!
एह अमोल दुलम जीवन के,
असल इहिट हऽ;
जानल: आपन सहज सरूप!
जबले मनवाँ,
बाझल रही जगत का;
नाँव रूप गुनवाला,
किसिम किसिम का;
चटक-चाह-चसका में!
सुख-सम्पति जस-मान बड़ाई;
बेटा-बेटी हित-नाता का,
ममता-मोह मलामति;
संग-साथ लालच-लटका में,
तबले कहवाँ तनिको;
मिली शांति-आराम?
इच्छे दुखवा उपजावेले,
इच्छे मोह भरम के कारन!
ए से पिंड छोड़ावे खातिर,
कठिन-साधना;
कइल जरूरी होला!
बाकी जहवाँ,
रही बखेड़ा टंटा;
कइसे तहवाँ,
सुफल साधना होई केकरो?

एह किसिम से,
भजन-भाव का लय में डूबल;
राजकुँवर ऊ,
जिन्हिकर छाती चाकर पोढ़;
मंत्री उपरोहित दूनो के;
संग छोड़ि के गइलन आगे,
निरमल चंचल धारा वाली;
देवनदी गंगा का पार!
जहवाँ महल अँटारी मजिगर,
खेलत लछिमी का गोदी में;
धन-सम्पति से भरल सजावल,
दइबी दया नेह का बल पर;
पाँच पहाड़िन का बीचे में,
कुसल-छेम से रहि के!
सुघर गरम-जल-कुंड अनेकन --
जेकर चरन पखारसु;
भाव-भगति सरधा से!
अइसन परम पवित्तर धाम,
राजगिरिह नगरी सरनाम!
जहवाँ सुरुज चमकलन,
मगधराज का मरजादा के;
जस के बिमल धजा फहराइल!
तूती बोलिल तेज विराजल,
समय पाइ शिशुनाग वंश का,
पुरुस-सिंह सरहँग सरदार,
राजा बिंबीसार निपुन के!
धारन कइले,
बहुत सुघर मन मोहेवाली,
धानी रंग चुनरिया,
लाल बैगनी हरियर पीयर;
रंग बिरंगा,
गहगहात फूलन से सोहत,
राजगिरिह का परबत-फाँटी;
नगद देहवाली के,
नदी सदानीरा निरमल मन;
आधा उगल चनरमा अइसन,
घोरियावत चरनन के चूमत;
मधुर गीति गावति धावति बा।
ओही का बायाँ किनार पर,
परबत ऊपर,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कारीगर लोगन का;
निपुन गुनी हाँथन से,
मगधराज का,
सुघर राजधानी के,
रचना भइलि रहे अति उत्तम,
पोढ़ सजीली सजग भाव से।
दूर दूर तक,
एह सुघर नगरी के;
हरियर परबत-पाँति,
ढँपले रहे प्रेम सरधा से।
उत्तर पूरुब ओर नगर का,
फइलल ऊँची परबतमाला;
रहे कठिन जिन्हिका के लाँघल,
बढ़ल गइलि रहली दक्खिन के।
पच्छवें ओर कई मीलन तक,
बड़े-बड़े पत्थल ढोकन के,
रहल बनल मजगूत देवाल।
परबत चाहे—
चारोंभर पाँजर के,
रहे हवा पानी सुखदायी;
तन मन दूनो खातिर,
निरोगिता वाला सज सवतुक!
कतना जगहा,
परबत का फाँटिन में;
काटि कंदरन के हिकमति से,
गुफा बनावल रहली उत्तम।
जे खूब रहे सजावल,
रंग बिरंगी तस बीरन से,
महलन नियर सोहासुत चउचक
सोभा रहल नगर के;
अलकापुरी नियर धरती पर!

शांत धीर मुनि गउतम कल से,
धइलन आपन डेग नगर में;
जइसे बर्‌म्हा सहज भाव से,
सरग-लोक में पइठसु!
जात नगर का बीच डगर से,
देखि तेज-तन-सोभा उन्हुकर;
महिमा शिव समान अति भारी,
पूरा अचरज भइल लोग का!

जात दूसरा ओर रहल जे
ठहरि गइल जब देखल उनके;
रुकल रहल से पाछे लागल,
उठि के ठाढ़ भइल जे बइठल!
केहू उनके माँथ नवावल,
पूजा कइल हाँथ से केहू!
नेह लगन से सुरस वचन कहि,
कतना लोग कइल सतकार!
बहुत किसिम के धंधा काम,
करत रहल जे लोग तमाम;
लइका बूढ़ मरद मेहरारू,
सभई प्रेम भगति से सज से;
देव समान कुँवर के देखल,
धइले डहरि नगर से जात!
अमिरित-रूप पियत मन ही मन,
नजरि अघाइलि ना केहू के!
भहुवाँ आँखि लिलार देहि मुँह,
हाथ गोड़ जवने जे देखल;
तँहवें ओकर नजरि बन्हाइल,
चलल प्रेम के जादू मन पर!
ओही समय देव-वेला में,
दइब जोग से;
राज भवन का ऊँच झरोखे,
राजा बिंबीसार बइठि के;
परकिरती का,
कला करिगरी सोभा के;
नेह-धियान-लगन से देखत,
मनवाँ में कुछ सोचत रहलन!
"दइवी दया जुगुति चतुराई,
कारिगरी प्रेम के कइसन;
खिलखिलात विहँसत फुलवारी!
एकर रस सुगन्ध जे चीखल,
चसकल रूप पिये के;
ओकर भागि सराहीं,
पावल सुख आनंद उहे!

मानुस मूरति रचल बनावल,
बर्‌म्हा का मति गुन महिमा के;
सुघर सलच्छन उत्तम रूप!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मानुस हो अपना के जानल
समुझल असली मरम धरम के
करतब ग्यान ध्यान में लागल,
मजिगर डहरि पकड़ले जागल;
सहज भाव से जे जीवन का,
असल निशाने पहुँचल चलि के;
ओकरे सिरजन सफल कहाई!
भजन-त्याग-तप जे अपनावल,
छोड़ल भोग रोग टिशुना के;
लालच, खीसि, मोह, समता के,
पहूँचल उहे अमरपुर नगरी;
बँसवरिया में चंदन जामल,
मधुर सुगंध सगरे फइलावल!
उहे बिरागी त्यागी तपसी,
जोगी जती संत संन्यासी!"
परदा उघरल टूटल ध्यान,
राजा देखलन पलक उठा के;
सजग भाव से,
कले-कले चलि जात नगर का;
सुघर डगर से,
एक निराला जोगी!
'बरत लिलार,
सुन्नर मुँह शोभा;
चमचमात छवि अंग-अंग के!
हीरा निकलल,
कवन खान से?
लउकल जग में,
कहाँ आज तक;
भला एह पानी के,
जगमगात सज मोती?
भाग फुटल कवना सीपी के,
जे कि अइसन;
रतन अमोल गवँवलस आपन!
ठन करेजा मँहतारी के,
जकर पुतवा भइल विरागी;
चढ़ती नई जवानी में हा!
कहाँ हंस मोती चुगवइया,
चलल तहाँ ऊ कंकड़ फाँके;
बरवस ठोकर खाये,
गड़ही चँवर सड़ंत पोखरा;
गली गाँव बीहड़ जंगल में,
काँट-कूस से भरल बधरिया;
गुफा खोह परबत में!
कवन तलइया जहाँ फुलाइल,
अइसन सुघर कमल के फूल!
जेकर डंटी बा सुबरन के,
मरकत मनि के पात!
मधुर सुगन्ध भरल ई सोना,
कवन लोक से आइल?
कहवाँ बा ऊ मीठ समुंदर,
जेकेरा मँथले;
निकलल बा ई,
विमल चनरमा;
बिन कलंक दागी के?
मुहँवें देखत,
जरत धरतिया तनिक सँथाइलि,
आँखि जुड़ाइलि;
भइल करेजा ठंढा!
रोवाँ-रोवाँ से अमिरित बरिसल,
पलुहल ठूँठो गँछवा लउकल;
धरते डेग धरतिया,
खिलखिलाति विहँसति बा!
माली कवन गइल कब,
इनरासन ऊ कइसे?
जहवाँ ले कि,
मधु पराग से भरल फूल ई
पारिजात के,
धरती पर ले आइल?"

भारी भीड़ि सड़कि पर देखि,
पाछे-पाछे लागल जात;
भेजि करमचारिन के अपना,
राजा पता लगावल चहलन—
"शांत अभय मसताना,
अइसन तेज पुरुस ई के हऽ;
देख जा ई कहाँ जात बा?"
राज पुरुस तब 'अच्छा' कहि के,
पाछे लागल गइल दूर तक!
"रहे नजरिया उन्हुकर थीर,
दुइ डेग आगे ले देखसु!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बानीं सधल मौन कुछ सोचत,
नेम मोताबिक धीम चाल !
चंचल मन-चित देहिं नवा के,
धीर निपुन उत्तम संन्यासी;
घूमि मधुकरी माँगत रहलन !
जे कुछ भिच्छा मिलल लेइ के
गइलन परबत का पाँजर में;
जहाँ मगन-मन-धावत-आवत
विमल सुरस उत्तम जलवाला
झरना कल-कल करत कले से
सुगति शांति जीवन-गति जोहत !
विहँसत-गावत,
बहुतन का मनवाँ के मोहत !
धरम-नेम से भोजन कइके,
अँजुरी से झरना जल पी के
संन्यासी जी शांति भाव से
चढ़लन चट पाण्डव परबत पर !
गेरुआधारी पुरुस सिंह ऊ,
लहसल गाँछ-बिरिछ-फूलन से
लहलह लाल सोहासुत लउकत
लता-भवन वाला परबत पर;
मोर-मोहिनी नाँचत जहवाँ
आसन डाली बिरजलन जइसे,
उदयाचल पर;
बाल-सुरुज होखहु प्रिय !
उन्हुके देखि बिराजल ओहिज
हुकुमी दूत लवटि के अइलन;
देखल-सुनल बतावल समुझल
राजा से सभ हाल सुनवलन !
"वेदुवा बाभन निपुन जोतिसी
जेकर आग-पाछ बतलवलन;
शाकिय राजा के उत्तम
प्रिय पूत सुलच्छन ;
संन्यासी बनि,
सहज निकललन बन के;
भजन-भाव तप-साधन खातिर !"
सुनि के सोच-समुझि के राजा,
नेह-छोह आदर का कारन;
थोरे सेवक साथ लेइ के,
दरसन खातिर डेग बढ़वलन !
बल पवरुख पाण्डवन समान,
देहियाँ परबत नियर महान्
राजमुकुट माँथा पर धइले
सिंह नियर गतिवाला राजा
पाण्डव परवत जा चढ़लन।
तब ऊ सजग भाव से देखलन
इनरिन का लगामि के धइले
शांत चित्त हो सीधासन में
परवत ऊपर बइठल कल से
मानों ओकर चोटी होखे,
बोध-ग्यान का अधिकारी के
तप का विमल तेज से चमकत !
जइसे चीरि मेघ के परदा
विमल चरनमा बिहँसत !
शोभा रूप शांति से मिलि के
गढ़ल बनावल चतुराई से
सोहत मूरति नियर धरम का,
उन्हुका पँजरा गइलन राजा;
विनय भाव से झुकि के
जनुक जात इन्दर जी होखसु
भेंट करे बर्म्हा से !
दूनों का जब भेंट भइल तऽ,
कुशल-छेम सुख-दुख के बतिया
प्रेम-भाव से कइलन मिलि के
तब राजा जी जाइ बइठलन
चिक्कन, नील, बराबर, साफ;
हाथी कान नियर पत्थल पर !
एकरा बाद हुकुम ले मुनि से
जाने खातिर उन्हुकर भाव;
आपन सवतुक बचन सुनवलन—
"रउरा कुल से बहुत दिनन ले
हमरा प्रीति-रीति आवत बा;
एही से हिरदय के बतिया,
मीत ! कहल हम चाहत बानीं
दया करीं सुनि लेईं अब कुछ
नेह सनाइल वचन हमार !
शुरू भइल बा सुरुजदेव से
राउर वंश महान् !
अबहीं उमिरि नया बा राउर
देहियाँ चमचम चमकत !
काहे मति भटकलि बहकलि ई
छोड़ि सनातन रीति-नेम के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लाते मारि राज-लछिमी के;
चललि घूमि के भिखिया माँगे !
देहियाँ राउर,
पालल-पोसल-सुख में;
अइसन नरम सुघर सुकुवार
गेरुवा पहिरे लायक नाहीं
चंदन लाल लगावे जोग !
परजापालन जोग हाँथ ई
माँगि अनाज भीखि दोसरा से
खाये लायक नाहीं !
हे मतिमान् ! नेहवश रउरा,
चाहत नइँखीं पिताराज जो;
बल से लीहल अपना के !
अकिलि अगर घवड़ाति सोचि के
पिता बाद तक ठहरे में !
तब ई आधा राज हमार
ले के रउरा;
नगद राज-सुख भोगीं अवहीं
छोड़ीं गेरुवा बसन उदासी
जनि होईं बनवासी;
अइसन कइला से केहू के,
तनिको दुख ना बीती !
सुख-संपति कल मिली समय से
मन ना भूली भरमी !
इहे उचित करतब अब राउर,
करीं मिताई शुभ हमरा से !
भला आदिमी का संगति से
भल के हरदम;
होले नगद भलाई !
आपन मति थिर राखीं रउरा
सेवन करीं नेह से सज से;
धरम-काम-धन तीनों प्रिय के !
लाँघि चलल तिनडँड़िया के जे,
वशी राग का होके;
आखिर ओकर धरम नसाइल,
बिगरि लीक परलोक गइल !
आपन धन आ धरम गवाँ के,
पूरा होला काम जवन कुछ;
चाहे दउलति जवन मिले ले,
काम धरम के चउपट कइके;
चाहे धरम कइल जे जाला,
धन आ काम नशा के;
ई विचार उत्तम मति जानीं
एके सभका छोड़ल चाहीं !
मानुस देहियाँ पाके अइसन,
धरम काम धन तीनों के सुख
समय जानि शुभ भोगीं रउरा
सुफल करीं आपन ई जीवन !
इहे असल पूरा पुरुसारथ,
जग में मानुस का जिनिगी के !
धनुस चढ़ावे लायक बँहियाँ
कइसन सुघर मोट मजबूत;
बिरथा भटकि बिगारीं मति !
ई राजा मांधाता अइसन
तीनि लोक के जीतेवाली;
धरती के बतिया कवन कहे ?
हम कहत प्रेम से बानीं,
धन-मद बल-गुमान से नाहीं !
गेरुवा धारी संन्यासी के
भेख देखि के राउर;
हमरा चित में,
बड़ा दया लागत बा;
आँसू छलकि आइल आँखिन में !
रउरा बरत चिराग वंश के
अपना कुल के सुजश पताका
बिसयन के सुख भोगीं, जबले;
पहुँचि बुढ़ापा आवे ना !
हे मतिमान !
धरम के प्रेमी
धरम समय पर करीं समुझि के !
बूढ़ आदिमी मन का गति के
मोरि सके ला !
पकड़ि लगाम दसो इनरिन के,
चंचल चित के सोधि सके ला !
थोर जतन से,
धरम सहज में पाइ सके ला !
भोग-चाह के भइले बन्हन
ओके छोड़ल सुगति कहाला !
काम-भोग के साहस-गति-बल
रहि ना जाय बुढ़ापा में !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कांम-भोग-गति चाह बिसय के,
नयी जवानी खातिर !
धंधा कइल कमाये के धन,
उचित अधेड़ उमिरि में !
धरम बूढ़ के बखरा बाँटल,
अइसन लोग कहे ला !
जग में उमिरि जवानी के ई,
धन आ धरम दूइ के दुसमन;
रछेया करीं जतन से कतनों,
तबो कठिन धन धरम बचावल !
पकड़ि डंहरिया बिसय भोग क,
उनके काम हरे ला !
उमिरि बुढ़ापा के ई होले,
सवतुक वाति बिचारे वाली;
डेरा धीर थीर मन चित के !
लाचारी से लोक लाज से;
सहज जतन से शांति मिले ले !
एह समय में निहचय !
एही से चंचल बिसय-लीन,
मद गुमान में आन्हर अड़ियल;
कपटी ढीठ अधीर अबूझ
जे आगे कुछ देखि सके ना;
अइसन कठिन जवानी के जब
उमिरि लाँघि के लोग बढ़े ला;
तब तनिका आराम मिले ला,
जइसे जंगल पार जाइ के;
मन के थेघ भेंटाला !
चंचल अनट घमंड भरल ई,
नयी उमिरि जब ले ना बीते–
काहे से कि नया जवानी
कामदेव के असल निशाना !
एकर रछेया कइल बचावल
चर नशा में ए इनरिन से;
बड़ा कठिन आ शक ले बाहर !
धरम कइल जो चाहीं रउरा
बेखटका शुभ जग्य करीं तब;
जग्य कइल कुल-धरम सनातन
कइलन राउर पुरुखा लोग !
जाय-धरम के पालन कइके,
निपुन डहरि धइ इन्नर देव;
हाथी पर चढ़ि सरगे गइलन !
हीरा-मोती रतन जड़ावल
चमकत बरत चिराग समान;
सोहत रहल बाँहि में जिन्हिका
सुघर बिजाइठ सोना के !
अइसन राज-रिखी-गन केतना
रंग-बिरंगा राजमुकुट के
अपना माँथे धइले कल से,
जग्य-धरम का बल पर पवलन
उत्तम पद बैकुंठ लोक के !
रिखी-महरखी जवना पद के,
कठिन जोग-जप-तप से पवलन !"
बिंबीसार मगध के राजा
जुगनायक सरदार देश के
नेह-छोह सरधा ममता से,
जोरि दशो नँह विनय भाव से;
नेति-धरम के बतिया अतना
कहलन राजकुँवर गउतम से !

जीव भरम में भूलल भटकल
उलटा सोचे ला !
पुरइन पात बसत जल भीतर
ओकरा ऊपर कवहीं जल के;
एक बून ना ठहरे !
सतरंगी मन मोहेवाली
दुनियाँ के ई चाल दुरंगी;
जोगिराज के भरमवलसि ना !
विमल सुरस मनमोहक मजिगर,
मानसरोवर जल में सोहत;
सजगर लाल हजारन गहगह,
कमल फूल मुसकाइल !
बकुला हंस वससु जल भीतर
दूइ किसिम के गति दूनो के !
बकुला हरदम ध्यान लगा के
सिधरी मछरी ढूँढ़े ला !
बिहँसत हंस समूह विलच्छन
सुघर कमल-वन भीतर;
सुख में झूमि कले कल
मोती चूँगे ला !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बिसयन के निंदा

एकरा बाद मीत परधान
मगधराज जब
एह् किसिम के
उलटी बतिया कहलन;
तब सभ चालि-चलन से सूध
सूधोदन के पूत अचलमति
शांति-भाव से उत्तर दिहलन—
"तेज जोतिमय
वंश चनरमा में राउर
जनम भइल शुभ लगन में
रउरा राज-वंश के हंस!
अइसन कहल कवन अचरज बा,
हिरदय निरमल कोमल राउर
मीत-नेह से भरल लबालब,
हित-चिंता में दोचित बाटे
अपना कुल का परंपरा ले
लागल-आवत प्रीति मिताई;
खल जीवन में ना टिक पावे,
चंचल मनवालन का संगे,
जइसे लछिमी ठहरसु नाहीं!
बाकी कायम कइल रीति ऊ,
सहज मिताई के पुरुखन के
सज्जन लोग बढ़ावेला!
दुनियाँ में जे धन घटला पर
मीत समान सहायक होलन;
हम तऽ अपना अकिलि मोताबिक
उनहीं के जानीं ला मीत!
धनी लोग के सुख-संपति में
के ना साथ धरे ला?
हे राजा जी! हमारा खातिर,
सहज मिताई सज्जनता से;
राउर जे निह्चय विचार बा
एह विसय में विनय करबि हम
मीत नियर रउरा से,
दूसर उत्तर देइ बिना कुछ
जे कि चीत के दुखी बनावे!
"जे जंजाल जगत के छोड़ल
धन-धरती के टिसुना;
मोह-वासना,
बिसयन से मुँह मोड़ल!
महाजाल के काटल निकलल
भइल सुतंतर बिचरत सुख से
कइसे ओकरा बान्हन भावे?
सुगवा के दुख देला ओतने
सुघर पिंजड़वा सोना के!
"जब समाज के
बगडोरी हाँथे बा रउरा
तब राजा हो इहे सिखाइबि?
राजा हऽ समाज के अगुवा
सभके डहरि देखावे वाला
राजा गुरूमीत अगुवा बनि
जवन आदिमी,
अझुराहटि के
बोध-सबुर दे सझुरावे ना
उलटे झोंटनि आगि लगावे
धूरि झोंकि आँखिन में अचके
करे धसोरि बइरि-कंटी में
ओकर बात सुनी के?"
जे खोजत अमिरित के झरना
अमरपुरी के डेग बढ़ाबल
ऊ राही कब पाछे ताकी?
जानि बुढ़ापा मउवति के डर
सुगति शांति का इच्छा से हम
एह धरम का
कुसल-सरन में अइलीं!
ना हम डरीं साँप से ओतना
ना भय मानीं आसमान से—
बिजुली का गिरला के
ना ओनचास पवन से लहकल
अगिनि-लहरि से
कबे डेराईं, ओतना;
जेतना कि हम
बिसयन से डर मानींला!
नाशमान छनभंगुर चंचल,
दुखदायी बिसयन के जानीं
भारी पोल छिपल इनका में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जइसे भीतर हाड़ा बइठल;
रस के चूसि फुलावल फेंकल,
अमवाँ का खोंखड़ पइया में !
मोहक रूप इहे माया के
ग्यान-सुमति संपति के चोर;
कठिन मिरिग-टिशुना में डालसु
काटसु नाक-कान पाहुँच के !
जवन पुरुस बिसयन में वाझल
ओके मिरित-लोक में कँहवाँ
सरगो में ना शांति भेंटाले।
बिसय-पियासल पुरुस बिसय से
कबे अघाला नाहीं तइसे,
जइसे साथ पवन के पाके
अगिनि अघाले ना इन्हन से !
बिसयन नियर जगत में
भारी अनरथ दूसर नाहीं !
बाकी लोग मोहवस होके
ओही में लपिटाइल वा !
एह भेद के जानि-समुझि के
अनरथ से डर मानेवाला;
के मतिमान आदिमी अपने
इच्छा करी एह अनरथ के ?
परबत से सागर तक फइलल
पावल जे धरती के राज
लाँघि महासागर के ऊहो
ओह पार के जीतल चहलस !
काम भोग से कबे परानी
तिरपित भइल अघाइल नाहीं;
जइसे जाइ गिरल सागर में
जलधारा अनगिनित नदिन के;
तबो अघाइल ना ऊ अबले !
तूती बोललि तेज बिराजल
देवलोग बरिसावल सोना;
अपना भुजबल धनुस-बान से
चारो दीप जीति के पूरा
आधा आसन पा इन्दर के
तिरपित ना भइलन मांधाता !
भागल डरे 'बिरितरासुर' का
जब से इनर लुकाइल रहलन;
सरगलोक में तबले,
भोगि राज-सुख देवन के सज;
निपुन नरेस नहुस परतापी
मद का कारन आन्हर होके
चढ़ल पालकी पर अगराइल
रिखी-महरसिन से उठवा के
इनरासन से नीचे गिरलन
ना बिसयन से तबो अघइलन !
ईड़ापूत पुरूरवा राजा,
जाइ पहुँचलन सरगलोक में
देवि 'उरवशी' के बस कइलन
तबो बिसय से गइल मोह ना !
लालच का वस रिसी लोग से
सोना छीने का इच्छा से
उनकर सरबस बिनसल !
राजा बलि के जवन राज-धन
पवलन इनरदेव महराज
उहे समय से मिलल नहुस के
फेरु नहुस से छीनि लिआइल
गइल इनर का शासन में !
डवाँडोल वेछिपित करे जे
बहुतन का भगिया के;
मन के मँथे भरम में डाले
बरवस नाँथि घुमावे
अइसन चंचल बिसयन के कब
सरग लोक में भा धरती पर
के भरोस राखी पतियाई ?
भगवा बसतर पहिरेवाला,
गाँछ-बिरिछ का बोकला के!
जटा माँथ पर धारन कइले
लमहर साँप समान;
कंद-मूल-फल-जल अहार पर
रहि के संजम-नेम सबुर से
जोग-जतन जप-तप में आपन
जीवन समय बितावे वाला
त्यागी तपसी मुनि लोगन से;
लतियावल ठोकरावल दुसमन,
बिसय-काम के जोही के ?
बिसयन में सवाद बा थोरे
वान्हन बेसी आफति भारी
सबुर साँख ना तनिको !
सज्जन धूससु घिरिना राखसु
भरल पाप इनका में !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अइसन 'काम' नाँव के 'माहुर',
जानि बूझि के खाई के ?
काम रूप संपति कामी के
मतलब—;
बिसय भोग के साधन
लउकसु बहुत चुहिलगर, बाकी
बिपति मूल उन्हुका के जानीं !
काम सीध भइला पर सभका
मनवाँ में मद होला
मद से आन्हर पुरुस जरूरे
अकरम करम करे ला !
जवना से चउपट होकर के
ओकरे दुरगति होले !
जतन-जुगुति कइके पवला पर,
केतनो सज रइछा कइला पर
जवन काम ठगि के भागेला
एही कारन से ओकरा में
मँगनी माँगल चीज समान
के बिदमान संजमी कबहीं
तनिको नेह लगाई ?
खोजि पाइ जवना बिसयन के,
भोग-लालसा बढ़ते जाले;
जिन्हिका के ना छोड़ेवाला,
निहचय दुख पावेलन !
जग में लुक समान पुअरा का
तनिका भरले चमकेवाला;
बहुरुपिया ठगहारा
ओह चटक बिसयन में
के ग्यानी लवलीन बनीं ?
जवना बिसयन का डँसला से
कल से हिरदय-भीतर;
अग्यानी जन जासु रसातल
पावसु ना सुख-शांति कबे !
खिसिआइल करिया नाग नियर,
बहुते खतरनाक दुखदायी
ओह बली बिसयन से
प्रेम करी के आतम-ग्यानी ?
जइसे भूखन बेकल कुक्कुर,
सूखल हाड़ चबा के कबहीं,
तिरपित भइल अघाइल नाहीं !

ठटरी नियर पुरान हाड़ का,
घिरिना जोग ओह बिसयन में
प्रेम करी के इनिरीजीत ?
राजा चोर अगिनि पानी से,
जवन बिसय अनयासे मन के
डेरवावसु दुख देसु'
जूठ माँस का टूक समान;
ओ बिसयन में ग्यानवान के
सुख पाई आ—
नेह-पिरीति लगाई ?
जिनका में लिपटेवालन के
गोतिया दयाद आ दुसमन
चारो भर से आफति घेरले !
मारपीट बध कलह पाप के
भारी घर ओइसन बिसयन से;
के पंडित पाई आनंद ?
परबत ऊपर वन में जल में
सागर तक ले दौड़ लगा के
जवना बिसयन खातिर लोग
पतित होइ पछताला आखिर
फल नियर बिरिछ का फुलुंगी का,
खतरावाला;
ओह नाशकरता बिसयन में
के विदमान शांति सुख पाई ?
जिनके खोजि हँचड़ि पवलो पर
भोगलालसा बढ़ते जाले
बारंबार कलें कल
अउरी जिनके;
छोड़ेवाला दुख पावेलन
जग में घासि पात पुअरा का
लूक नियर बस;
छनभर चमक देखा के,
चटकी ठगनिहार बिसयन में;
ग्यानवान के नेह लगाई ?
किसिम किसिम का जतन जुगुति से
पवलो पर छनभर मे;
एहिजे बिनसेवाला,
सपना का सुख भोग समान
निंदा जोग हीन बिसयन में
के भल पंडित नेह लगाई;

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पाई सुख-आनंद ?
जिनके पैदा कइ बढ़ाइ आ—
पालि-पोसि के
होखे ना कयलान,
जरत अँगेठी नियर आगि का
उन्हुका में के पुरुस संजमी,
प्रेम करी लय लगन लगाई ?
जिन्हिका पाछा कौरव-जादव
अंधक मेखल दंडक-कुल के
नास भइल सहजे में;
काटे गला करे जे हतिया
छली तेज तरुवारि समान
ओह कूर बिसयन में
ग्यानवान के होई लीन ?
जिन्हिका कारन बैर बढ़ा के
दूनो असुर सुंद उपसुंद;
गइलन बिनसि रसातल के !
कपट खटाई,
मनवाँ भीतर डालि;
अमिरित नियर दूध के फारे
तोड़े प्रेम बंधु भाई के
भला ओह खल घाती,
खउरनिहार नीच बिसयन में
कवन पुरुस मतिमान सुता के
ललकि पिरीति लगाई ?
बड़ा कठिन बिसयन के माया
उन्हुकर मारल सिंघुरल के ?
रस के चीखल परिकल जे
चउपट भइल बिलाइल ते !
अग्यानी जन बिसय नेवरतक
आतुर होके नाँचेलन;
मोह भरम में मारल जालन
धक्का खालन, बान्हल जालन
जीव बनल बेचारा जग में
बिसय पियासल मारल जाला
जमपुर पहुँचि करमफल भोगे
लतियावल घिसियावल जाला !
गाके गीति बजाके बँसुरी
हरिना के फुसिलावल जाला
डालि फंद में मारे खातिर !
दउरि फतिंगा गिरसु अगिनि में
परल रूप का लालच में !
गुँथल माँसु का
रस सवाद में
फँसि के मछरी,
लीले ले लोहा के बंशी !
ए से परतछ,
बा जनात ईहे कि;
बिसयन के फलं बितति असल में !
'बिसय बनल बाड़न ई
लोगन का बस भोगे खातिर
अइसन मति हऽ अग्यानिन के !
ग्यानी लोग भोग ना माने
बलके बसन दरब गुन
एह सभन के दुख के
अड़क रोक ओखधि मानेला !
जइसे तिरिखा शांत करे के
पानी चाहल जाला;
समुझीं ओही तरे, भूखि के—
शांत करे के भोजन !
बरखा धूप हवा इनका से
रइछा खातिर घर मकान हऽ;
ठंढक लाज बचावे खातिर
बसतर चाहे लोग !
निनियाँ शांत करे के तइसे
खटिया चउकी सेज बनल बा;
डहरि थकइनी दूर करे के
रथ विमान वाहन असवारी ;
बइठे खातिर आसन जानीं
रहि निरोग बल पावे खातिर;
रोज नहाइल जाला !
जे बोखार से जरत पित्ति का
ठंढा जतन-जुगुति के समुझे
भोग सवख आनंद !
दुख का रोक जतन-साधन में,
लागल; उहे पुरुस बिसयन के
मानि सकेला भोग !
बिसयन में ना एक रूप गति
लउकत उन्हुकर ढंग अनंत !
जवन पदारथ,
देलन सुख-आराम;

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ऊहे कबहीं
देलन दुख-तकलीफो !
भारी बसतर, गूगुल दूनो
जाड़ा में देलन आराम !
समय पाइ गरमी का दिन में
उहे बनसु दुखदायी !
चंदन से आ चान-किरिन से,
गरमी में सुख-शांति मिलेले
उन्हई देलन दुख जाड़ा में !
हानि-लाभ सुख-दुख के पचड़ा
सभका साथे लागल बा !
एही से दुनियाँ में केहू
ना तऽ बहुत सुखी भा
बहुत दुखी बा !
देखि घोर-माँठा सुख-दुख के
राज-गुलामी दूनो के हम
समुझत बानीं एक समान।
राजा के हम देखलीं नाहीं,
हरदम सुख में विहँसत !
ना गुलाम के दुख में बेकल
पवलीं सभ दिन बिलखत !
हुकुम शान राजा में बेशी
अकड़ जिद्द मनमानी
एही से तऽ ओह लोग के
बड़े-बड़े दुख होलन
लकड़ी बिना अलम के जइसे,
बहत धार में जाले
तइसे राजा परजा खातिर
दोचित-दुखी मलिन-मन लउकसु !
जवन राज-धन छुटी एक दिन
दुसमन कतने वड़ जेकरा में
ओकरा में बिसवास करी जे
परी बिपति में भारी
अउरी जो ओकरा में
ना बिसवास करे तऽ
शंका में दोचितराजा के
मिली शांति-सुख कइसे ?
सँउसे धरती जीति दखल कइ,
अपना रहे निवास करे के;
एक नगर ढूँढे ला राजा।

ओहिजो ओकर बास रहे ला;
एक महल गिरदा का भीतर !
राज जरूरे मेहनति भर बा
दूसर लोगन खातिर !
राजा खातिर बहतर चाहीं
अपना के बस;
एक दुइ जोड़ा भर !
ओहि तरे अनाजो चाहीं
भोजन खातिर
कुछ थोरे-सा !
अउरी सहज ओइसहीं
एके सेजिया एके आसन;
असल जरूरी होलन
सूते-बइठे खातिर !
बाकी ठाट-बाट सब जानीं
मदगुमान के आडंबर भर !
मन का बोध सबुर खातिर जो
राज जरूरी होखे तबहूँ;
ओकरा बिना अइसहीं हमके
बा संतोख भेंटाइल !
जब संतोख भइल मानुस का
तब दुनियाँ के सभ बिसेखता
ठाट-बाट संपति बेकार !
हम कयलान-सुगति के राही
बिसयन खातिर बहकबि नाहीं,
सुमिरि मिताई का नाता के,
रउरा हमसे
बारंबार ईहे कहीं कि
'तूँ परतिग्या के मति छोड़ऽ
अटल रहऽ ओकरा पर !'
ना हम खीसिन बन के अइलीं,
ना दुसमन का धनुस-बान से
मुकुट गिरवला पर माँथा के
ना इच्छा से फल का कवनो
ज कि बिखिधर आ खिसियाइल
काटे के तइयार साँप के
चाहे लहकल जरत लुकाठी
देहियाँ जारेवाली के;
छोड़ि सजग हो फरका जा के
कोशिश करे फेरु पकड़े के
उहे छोड़ि बिसयन के,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

फेरु ललक चसका बस;
प्रेम करी अपनाईं !
सुबहित सुघर आँखिवाला जे
आन्हर होखल चाहे
सुखी सुतंतर
छुट्टा पुरुस बन्हाइल चाहे
चाहे धनी गरीब बने के
जे निरोग चंगा भल
अपने सनकल चाहे
उहे फेरु बिसयन के टिशुना
मन में राखि ललकि के दउरी
माँगि मधुकरी खात-फिरत जे
ऊ ना सोचे धूसे लायक
हऽ ऊ सूझ-समुझवाला जे
मउवति रोग बुढ़ापावाली
नदिया लाँघि गइल चाहत बा,
सुगति लोक सुख-धाम जहाँ !
जेके मिलल शांति-सुख एहिजा
ओहिजा ओकर
दुखवा बिनसल जानीं !
जे अनघा धन-संपति रहते
टिशुना में मद में आन्हर बा
ओकरा एहिजा शांति-चैन ना
ओहिजो दुख से जकड़ल जाला—,
उहे दया का जोग असल में !
एह किसिम के वचन कढ़ावल
रउरा समुझ-विचार चालि आ—
कुल का रीति मोताबिक बाटे !
हमारो आपन,
परतिग्या निबुकावल;
बोध–विचार चाल्हि आ
बंश-विशेख मोताबिक बा !
दुनियाँ-रूपी चोख बान से
वेधल हम तऽ घाही होके
शांति-सुगति शुभ पावे खातिर
पँचड़ा छोड़ि निकलि के अइलीं !
सरग लोक के राज अकंटक,
चाही नाहीं हमरा के !
एह लोक के कवन मोल बा,
के पूछे ला एकरा के ?
हे राजा जी !

रउरा जे कहलीं हमसे कि
'धरम काम धन तीनि बरग के;
सेवन कइल परम पुरुसारथ',
एमें हमके
अनरथ लउकि रहल बा !
काहे से जे,
नाशवान छनभंगुर तीनों
देइ सके न सुख-संतोख !
जवना पद में
ना भय रोग बुढ़ापा मउवति,
ना जंजाल जनम के
हम मानींला;
ओही के असली पुरुसारथ,
जेकरा में ना!
करम करे के वारंवार !
राउर इहो कहल जे
'अबे ठहरि जा;
समय बुढ़ापा के आवे दऽ,
नयी उमिरि में अयगुन होला';
एकरो के मत निहचित मानी !
काहें से कि,
अइसन बहुते-देखल बा जे
आइ बूढ़ापा जब पहुँचे ले
उमड़े ले टिशुना अधीरता
नयी जवानी का पहरा में
रहे धीरता संजम शांति !
पूरा निपुन करम में अपना
सुरुज-पूत जमराज वलाते
खींचि रहल बाड़न दुनियाँ के
बतिसो घरी रातदिन हरदम
सभे दसा में,
तब मउवति के
ठीक-ठेकाना ना रहला पर
चाहेवाला गति-कयलान;
पुरुस चतुर चउकस विदमान
परखे डहरि बुढ़ापा के का ?
जब जमराज चढ़ल छाती पर
कर शिकारी व्याध समान
धनुस बूढ़ापा के ले हाँथे
छिपिके रोग-रूप वानन से

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बेधि रहल बा कल से,
सघन भागि वनवाँ में भटकत;
परजा रूपी मिरिगादल के
तब का ओह बुढ़ापा के हम
बे मतलब के परखीं?
एहि से सभई का चाहीं,
हो जवान लड़िका भा बूढ़
प्रेम धरम में राखि सजग हो
नकली नाता तोरि जगत से
मोहवाँ मोरि सुगति के जोहीं!
राउर इहो कहल सुनलीं कि
'धरम नेवरतक जग्य करीं हम;
कुल का रीति मोताविक।'
ओ जग्यन के पा लागीं ला
हमके अइसन सुख ना चाहीं
जवन मिले दूसर के दुख दे!
दयावंत सज्जन का
उत्तम फल का इच्छा से;
दूसर बेबस गूँग जीव के
मारल उचित कहाई ना!
जो जग्यन के,
अछय पुन्नि-फल होखे
तवहूँ का ई कइल उचित बा,
जवन करम घातक हो?
जो संजम से शील नेम से
वरत जोग-जप-तप से;
चाहे मन का विमल शांति से,
दूसर कवनो,
जतन धरम-पावे के
होखे नाहीं,
तवो जग्य के
सेवन कइल उचित ना!
'जवना में कि हति दूसर के,
मिले पुन्न-फल';
अइसन लोग कहे ला!
एही कारन से हम कवहीं
परि के फल का लालच में
पकड़ि कुराह ठगाइ सकीं ना!
वदरी वरखा से झकझोरल;
लता समान लाग चित-मन के
होला बहुते चंचल!
एहिजा आइल रहली हँ हम,
अब एहिजा से
जात आजुवे बानीं
सुगति-धरम के जानेवाला
मुनि अराड़ का दरसन खातिर!
हो कयलान-वढ़ंती राउर
साच कठोर वचन के हमरा
छमा करबि अव रउरा!
हे राजा जी! राज करीं खूब
इन्दर नियर सरग में!
सुरुज नियर धरती के पालन
करीं नेह से सज से हरदम!
रइछा करीं गुनन से अपना
एह लोक में;
सुख कयलान सुमति के
दूसर रइछा अरदुवाइ के
अउरी प्रिय पूतन के!
रइछा करीं राजलछिमी के
शांत सजग हो धरम-करम के
देहज अपना शुभ जीवन के!
जइसे अगिनि-धजा-धुअवाँ से
पैदा भइल घटा- बादरि से
बरखा भइले,
आगि छोड़ि देले ऊ;
आपन बाहर वाला रूप
ठीक तइसहीं सुरुजदेव का
भारी-दुसमन के विनास कइ
मन के शोधि-बोधि के रउरा
डेग वढ़ाईं आगे जाईं।"
एतना बतिया कहि राजा से
मुनि गउतम कइलन तइयारी;
विनय भाव से जाये के तव
विद्या-बोध-ग्यान का सागर
सुरसति-कुल का लाल नगीना
धरम-धुरंधर पंडित ग्यानी
नीर-छीर बिलगावे वाला
राजहंस मतिधीर विलच्छन;
साधु-जगत का विमल चनरमा
संत सुरेमन जुग का अगुवा;

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मुनि अराड़ का शुभ-आसरम में,
बिन्धाचल-परवत-पाँती का;
पँजरा कहीं घोर जंगल में!
बहुत प्रेम से हाँथ जोरि तब
राजा कहलन उनसे -
'बिना बिघिन के पाईं रउरा
मनसा-चाह सुगति-आनंद!
बाकी, बोध शांति पवला पर
दया करबि हमरो पर!'
'होई उहे' वचन कहि
राजा खातिर
सुभ परतिग्या वाला
गउतम डेग, बढ़वलन
गइलन बेसंतर-आसरम के!
राजा उन्हुकर
भेख-देखि के संन्यासी के;
अचरज में परि
गुनत-मँथत बूड़त-उतिरात
लवटि कले-कल
राज-गिरिह के महल समइलन!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'अराड़-आसरम में'

तव इछ्वाकुवंश के
चमकत विमल चनरमा
बिन कलंक दागी के
धीरे-धीरे जाइ पहुँचलन;
बीहड़ सघन शांत वन भीतर
सुख से बिचरे विहरे वाला;
चतुर जौहरी संत सिरोमनि
सहज शांत रस प्रेमी;
ग्यान रतन हीरा के परखे
काटे छाँटे साजेवाला
निरमल मानस जल में
डूबि-डूबि मोती चुँगवइया;
धीर संजमी मुनि अराड़ का
परम पवित्तर; सुखद आसरम में प्रिय
कालायस-कुल-सुजश पताका,
सुरुज नियर परतापी मुनिवर
राजकुँवर के देखि दूर ले;
खश हो टाँठे कहलन अतना—
'रउरा आइ विराजीं एहिजा
हिरदय आदर करत हुलासन;
अँखिया आपन बिछा डहरि में
सभई सरधा नेह लगन से;
ताकि रहल वा अगवानी में!'
वतिया रस से सराबोर सुनि
शील-सचाई विनय-भाव से
गउतम गइलन मुनि का पँजरा!
हिलि-मिलि के आपुस में दूनों
छेम पालागी कइलन!
तव ऊ सुजन सुधरमी,
लीपल पोतल सूध कुटी में;
चउकी धोइ-पोंछि के जहवाँ,
डालि मिरिगछाला के आसन
पहिले से राखल रहली सँ
ओहिजा जाइ बइठलन थिर हो!
वइठल राजकुवँर के मुनिवर
आदर-नेह भरल नय.न से
पीयत जनुक धियान लगा के,
सवतुक सुरस बचनियाँ कहलन—
"हे बड़भागी!
चतुर पारखी
कठिन काल-गति परखेवाला
हमके मालुम भइल कि रउरा
मातल हाथी नियन अभय हो
भारी बन्हन तोरि निकललीं!
बड़ा कठिन अझुराह बिचित्तर,
नेह मोह ममता के बन्हन
सहजे डंटी नियन कमल का
टूटि गइल छितिराइल!
हरदम सिजिल पोढ़ मन राउर
शांत संजमी ग्यानी धीर;
जे लतिवलस निरभय होके
जहर-लता रूपी लछिमी के;
छोड़ि सजग हो वहरा आइल!
समय बुढ़ापा के अइला पर
सहज सुभावन राजा लोग
प्रिय अधिकारी सगपूतन के
चाहे सुजन सुलायक;
भाई बंधु भतीजन के
सूँघि जुठारल माला अइसन;
छोड़ि राज लछिमी बन गइलन,
एकरा में कुछ अचरज नाहीं!
हम मनलीं अचरज एही में
कि बिसयन का जगहा में रहि
नई जवानी का पहरा में
लछिमी के बे भोगल रउरा;
तप के कठिन डहरि अपनवलीं!
एही से तः एह धरम के
जाने खातिर साचो रउरे
बस उत्तम अधिकारी बानीं!
चढ़ीं ग्यानरूपी नइया पर,
दुख-सागर के पार करीं झट
जदपि जाँचि चेला के पहिले
बूझि विचारि तउलि के पूरा
साहतर के उपदेस दियाला,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तदपि देखि राउर उतजोग
सरधा लगन सचाई शील
अब हम करबि परीच्छा नाहीं !"
ग्यानी मुनि अराड़ के अइसन
सूध प्रेममय;
मीठ मोलायम बतिया
सुनि के गउतम;
विमल-भाव-नदिया में
गोता लगा जुड़इलन सज से
तब गद्गद हो उत्तर दिहलन—
"रउरा नियर विरागी मुनि के
पुरहर दया देखि अपना पर,
हम जिनिगी के सुफल समुझलीं !
जनम-जनम के संचित शुभ फल
हमके आज भेंटाइल भागिन !
साधु संत के हिरदय निरमल
विद्या-विनय-ग्यान के संगम
तिरबेनी के अमिरित धार !

दरसन भइल कि पाप धोवाइल
काई कीट छुटल काया के
पास पहुँचि जे डुबकी मारल
भवसागर से उतरल पार !
जइसे देखनिहार जोति के
राही डहरि बतइया के
पार जवइया नइया के
समुझे माने जाने खुश हो;
तइसे रउरा
गूढ़ विचारन के हम;
फल दाता हम मानत बानीं,
जग-जंजाल छोड़ावेवाला !
एसे बूझि-बिचारि अगर जो
कहल जथारथ समुझीं रउरा;
तब ऊ जतन बताईं हमके
जल्दी पिंड छुटे जवना से
रोग-बुढ़ापा-मउवतिया से !
एह किसिम से राजकुवँर के
रस से भरल बचनियाँ सुनिके
मुनि अराड़ के हिरदय पसिजल
कहलन ऊ थोरे में कल से;
मेंहीं मरम धरम के अपना—

"सुनवइअन में हे भल सेसर !
डुबकी लगा ग्यान-गंगा में
छीर-समुंदर मँथि वेदन के
पवलीं जवन अमोल रतन हम,
ओके आगा राखत बानीं !
सवतुक गूढ़ विचार सुनीं कि,
कइसे ई संसार बनेला;
कवना तरह मिटेला आखिर ?"

"हे मतिधीर ! विचारीं समुझीं,
चेतन जित के बोध कराईं
दुख के दूर करे का साधन,
ग्यान-जथारथ, प्रिय तत्तन के !
तत्त-बोध, मतलब कि
असल बतुस जनला से ।
अभय रूप सुख-लाभ मिलेला
जग में दुइ तत्त जड़ चेतन
जड़ के पहिला तीनि भेद !
परकिरती आ सहज बिकिरती,
आ परकिरिति-बिकिरिती
बाटे उन्हुकर नाँव !
परकिरती बिकार आ
बनल बिकिरती;
जनम बुढ़ापा मउवति,
इनके सत्त कहाला !
आगे चलि के परकिरती के
भइल आठ गो भाग !
असली परकिरती आ,
महत् तत्त भा
चित्त कहीं ओकरा के,
अउरी अहंकार संग;
पाँचो भइया—
शबद रूप रस गंध परस के;
ई आठो परकिरिति के बिकिरिती,
मेंहीं चतुर रईस चउधुरी !
हे सुभाव से ग्यानी !
इन्हिका से इन्दिरी एगारह
पाँचो भूत जनमलन;
धरती-पानी,
पवन-अगिनि-आकाश;
परकिरितिए के हऽ नाँव

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नगद परधान अव्यक्त।
जेकरा आगे
नया तत्त पैदा हो कवनो;
मतलब कि जे,
नया तत्त के शुभ कारन हो;
ओकरा के तऽ,
पंडित लोग कहे परकिरती!
जे जनमलि आ खुद जनमावे
उहे हऽ परकिरिति-बिकिरिती
जेंकरा आगें
नया तत्त ना होखे पैदा;
ओकरे के ऊ,
कहसु विकार बिकिरती;
पानी, हवा, अगिनि, भूँई, नभ ई
पाँचो विसय एगारह इनिरी;
हाँथ-गोड़, बानीं, गुदा, लिंग;
आँखि, नाकि, जीभि, कान
तचा साथ मन मुखिया;
सोरह इहे बिकार!

परकिरिती के आठ भाग आ,
सोरह गो विकार मिलि;
असली परकिरती के,
भेद भइल चउविस!
चेतन तत्त अलग इनका ले,
पुरुस नाँव जेकर मसहूर;
तीनि अरथ के बोध करावे
पहिला जीव दुसरका इस्सर
तीसर परम बरम्ह परमेसर!
हिरदे भीतर जे आकाश बा,
पुरुस बसे ला नित ओही में!

ओके जानीं मन के मालिक
अमिरित-जोती वाला!
भइले अंतस् करन अनंत,
घेरल सहज भेदलीला से;
उहे पुरुस अनंत कहाइल
हिगरल आ अझुराइल;
जिन्हिकर नाँव धराइल जीव!
जइसे घइला बीच सुरुज का
किरिन जोति का करते
बिलग-बिलग परिछाहीं रूप
सुरुज अनेकन लउकेलन!
चेतन एह देंहि छेतर के—
परकिरिती हऽ;
जेंकर दूसर नाँव,
पूरा सज से जानेला!
एही से पंडितजन ओके
गौर-गुनावन बोध-बूधि से
वे खटका छेतरग्य कहेलन!
जे जनमेला,
होला बूढ़ पुरान
दुख पावें आ मरे काल से
उहे परगट लउकेवाला!
एकरा उलटा लच्छनवाला
ना तऽ परगट;
नाहीं लउके वाला,
चाहीं अइसन समुझे के!
पंडित ग्यानी,
पहिला के कहि 'व्यक्त' पुकारसु;
दूसर के "अव्यक्त'!
अउरी ई जानीं कि
वस अग्यान करम आ टिसुना
कारन सज संसार बने के!
एहि तीनि में रहे जीव जे
ऊ ना कवहीं;
पार सत्त का जाइ सकेला!
एकर मतलव भइल इहें कि;
परकिरिती आ—,

सहज विकार बिकिरिती;
जनम बुढापा मउवति,
इनका के ऊ लाँघि सके ना!
उलटा झूठ ग्यान से
अहंकार संदेह भरम से;
भेद-बूधि से
संग-मोह माया-ममता से
जीव परल पचड़ा में बाझल!
एह कारने का वस
परकिरिती विकार आ;
गूढ़ जनम मउवति के
कठिन अथाह अगम भवसागर;
बेबस हो ऊ पार करे ना!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जेकर उलटी भइलि खोंपड़ी
हरदम उलटा सोचेला ऊ;
उलटा काम करे ला!
'हम बोलीं ला, हम जानीं ला;
हम पंडित हम चउधुर,
हमहीं सेसर धनी महान्
कदम-कदम पर हम के रोग
इहे 'अहंकार' दुनियाँ में!
शक-सुबहा से दूर निपुन हे!
जे कि वेसंशय का;
कबहीं सटे-मिलेवाला ना,
सज पदारथन के हठि
एगो ढेला ठोस समान
जुटल-मिलल बटुराइल;
देख समुझ मानेला
बस ओही के;
शक-सुबहाँ संदेह कहल बा!
जेंवरि देखि अन्हारा अचके
साँप समुझि भय मानल
भरम बतावे पंडित लोग!
हे वेलाग विरागी!
जेकरा सोत-लहरि-गोता में,
पुरुस बिगारू मति के
मन-बानी मति का करमन से
बिसयन का फंदा में बाझे
ओके लटका-चाह-लगाव
लासा-संग सटाव कहल बा!
उहे विन्दु-अस बिया,
हम-हमार का;
जटा बरोहियनवाला,
महा-विरिछ बरवा के!
हम-हमार के तूँ तोहार के
कहल गइल बा जरि दुखवा के!
इहे डहरिया जग में,
छटका-बिछिली वाली;
कबे कहीं झटका पर
चलत राहगीरन का
गोड़वा के छटका के
मुँह का भरे गिरावे
काँट-कूस गड़हा में!

अइसन नशा खिया के
रचवावे परपंच बखेड़ा;
वरियाई ढकेलि के
पाप-करम करवावे
घीचि नरक-जमपुर पहुँचावे!
कठिन अविद्या,
पाँच टेढ़ गठियन के
सहज-सुभावन,
अझुरावेवाली वरियार
दुख के असली रूप कहलि वा।
इहे मायाविन खटकिन,
तिननी नाँच नचावेवाली,
भरल खलक में
केतने जोमइल;
पंडित-विदमानन के
वे पानी कइ
कतहूँ के ना रखलसि!
हाल सुनीं गाँठन के
जे कि जनम-मरन के
लटका रहसु लगवले!
छनभंगुर के,
असत् अनित के जड़ के;
मानल सत् नित निरमल चेतन
अपवित्तर के परम-पवित्तर
दुख में देखल सुख के
ग्यान अनातम में आतम के
गाँठि अविद्या के ह पहिली!
दूसरे गाँठ मोह के जानीं
चाहे कहीं असमिता ओके!
महामोह के गाँठ तिसरकी,
सुख के इच्छा लालच विरती;
राग नाँव ओही के!
चउथा गाँठ डाह के मानीं
अनरथ के जरि असली!
दुख लगला का बाद चीत में
बसे बासना घिरिना के जे;
उहे कहाइल डाह!
एक किसिम से
बहे सोभाविक रस अपने से;

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जनम-जनम से चित में चपटल,
मउवति के डर हर जीवन में
कीट-फतगा
पशु पंछी भा मानुस
पंडित चतुर गँवार गुनी का,
'अभि-निवेश' हऽ ओकर नाँव !
एही पाँच गिरहियनवाली
जबर अविद्या का पँचड़ा में
बाझल मूढ़ परानी,
दुख बहुमत संसार घोर में;
बारबार जनम-मउवति का
अगम चकोह-चपेटे
बरबस डालल जाला !
'देखवइया सुनवइया हमहीं
हमहीं सभ कुछ जाने वाला।
कारज आ कारन सब हमहीं
अइसन मानि मोहवश
ऊ संसार बीच भटकेला !
पुरुस एक ऊ फइलल सगरे
परकिरिती नाहीं हऽ!
ना तऽ ओकर हऽ ई विकार !
पुरुस तेज के पुंज उजागर
सूध शांत निरलेप !
मन-बानीं से परे अछूता,
मति का जटा-जाल ले ऊपर !
बान्हन-मुकुति चीत में होला,
चीत सहज हऽ;
परकिरिती के कारज
बन्हन के कारन अग्यान,
ग्यान मुकुति के कारन;
कारन अधरम-धरम जगत के
ई कुल धरम बूधि के जानीं !
हे सुख-शांति-सुगति चहवइया !
एही से संसार बीच बसि
अविनासी पद पावे खातिर;
आतम-दरसी बाभन-मुनिजन
पालन करसु शील-संजम के;
बरम्हचरज के
बरत नेम निबहावसु
अउरी केतने
निपुन बाभनन के बतलावसु,
जे साधक बनि डेग बढ़ावसु
जोहे चलसु मुकुति पद उत्तम !"
मुनि अराड़ का मुँह से सुनि के
अइसन सवतुक मेंही बतिया;
राजकुँवर उनका से पुछलन
गूढ़-मुकुति-पद का बारे में;
दूसर ओकर जतन-जथारथ !
'हे मुनि पंडित ग्यानी !
कइसे बरम्हचरज ई
जबले जहवाँ रहि के
पालन कइल निबाहल जाला,
अब रउरा उहे बतलाईं !
साथे कहीं इहो कि
ओह धरम के;
कहाँ आखिरी छोर ?
अइसन पुछला पर अराड़ मुनि
ओही भारी कठिन धरम के
साहतर का मति-वचन मोताबिक,
नगद दोसरका;
सहज-साफ संछेप रूप में,
उनका खातिर;
नया अरथ का साथे,
प्रेम-भाव से कहलन !
"पहिले तऽ ऊ बरती साधक
घरके छोड़ि बने संन्यासी;
पालन करे शील संजम के
भेद भाव के छोड़ि बिनय से
सेवा-दया त्याग-तप सीखे
समदरसी बनि बिचरे सुख से !
जे कुछ मिले जहाँ से जइसे
ओके पा सनतोख-शांति से;
चिन्ता छोड़ि मगन-मन डोले !
नेति-निपुनता चतुराई से
पढ़े धरम-पोथिन के;
मन में बूझ-बिचार करेला !
नदी-तीर आ देवालय में
गुफा-खोह कुटिया में बन में;
वास करे एकांत जगह में !
तवहूँ डरि के
महामोह से राग-दोस से;

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

देखत हित-कएलान जथारथ,
तप-बएराग त्याग में;
इन्निरिन के बस कइले अपना,
जतन करे ला,
बोध-शांति खातिर मनवाँ का !
आगे बढ़ि के,
इच्छा लालच खीसि बोगएरह;
मलिन बिकारन से मनवाँ का,
चित के खाली राखि सजग हो;
ग्यान-ध्यान आ,
गौर गुनावन में भल लागल;
पहिली सुभ समाधि पावेला !
पाके ओह ध्यान का सुख के,
बस ओही के सोचत हरदम;
मुरुख आदिमी ना बिदमान,
पाइ विचित्तर सुख वा;
पद से गिरे रसातल जाय !
बस अइसन के विमल-शांति से,
जे बैरिनि हऽ;
इच्छा डाह जलन के,
वरम्हलोक पावेला लोग'—
एह किसिम का,
झठ गुमान-नसा में भूलल;
वरबस भटकि ठगल जाला ऊ !
बाकी जे विदमान पुरुस बा,
ऊ त सजग सुभावन;
तरक-जाल से काट-छाँट से,
रहि के दूर किनारे;
सहज ध्यान पावेला,
सनल प्रेम का सुख से !
ओह प्रेम से,
चित बेछिपित कइल गइला पर;
तत्त बिलच्छन के जे
देख-जाने नाहीं;
ऊत ऽ जाके,
उत्तम तेजवान देवन में;
देव तेज पद पावेला !
ओ पिरीति का सुख से,
अपना मन के निकालि ले;
ऊ पिरीति से सुन्न,
नगद बिलच्छन सुख सरूप भल;

पावे तीसर ध्यान समाधि
होके मगन ओह सुख में जे,
जतन करे ना;
बिमल बिलच्छन पदवा खातिर,
ऊ सुभ ग्यानी आ बिग्यानी
देवलोग का संगे,
सुख समान के पावेला !
ओइसन सुख पवलो पर,
जे भूले भरमे ना;
ओके ठोकर मारे,
ऊ बेलाग होइ दुख-सुख से;
ऊँच ग्यान का सीढ़ी पर चढ़ि,
चउथी बोध-दशा में पहुँचे,
नगद लाभ पावे समाधि के
छूटि जाय सुख-दुख ओकरा में,
होखे ना मन के वेएपार;
एसे कुछ अभिमानी लोग,
मुकुति कहेला ओही के !
बरम्हग्यान के तउलेवाला,
लोग बतावे ला कि;
'एह ध्यान के फल हऽ भाई,
बरम्हरूप देवतन का साथे;
बहुत समय तक,
बास करे ला जीव !'
ओहिजो, देंहि धरे वालन के,
दोस देखि मतिमान्;
ओह समाधि-दशा से उठि के,
तन धइला के;
रोग छोड़ावे खातिर,
हो असवार ग्यान का रथ पर
आगे बढ़े सुगति के जोहे !
डुबकी लगा विराग-नदी में,
रूप-रंग से बनल उदासी;
एही देंहि में जवन छेद वा,
पहिले उनका सूनापन के;
धारन करे भाव हिरदय में !
फेरु ठोस दरवन में,
भाव करे पोला अकास के !
दूसर ग्यानी पुरुसध्यान से,
बसल अकासे जवन आतमा;

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ओके खींचि बोध-बिरती से,
फिर ओही के;
देखत सहज अनंत रूप में,
असल बतुस के पावे!
दूसर-साधक,
निपुन धीर आतम-विद्या में;
आतम-बल से,
भाव आतमा के हटाइ के;
'कतहीं कुछऊ नइँखे,'
अइसन देखत-समुझत;
नइँखे कुछ के मानेवाला,
कहल पुकारल जाला!
तब आगे बढ़ि,
निकलल सींकि समान मूँजि से;
पिंजड़ा छोड़ि उड़ल जे पंछी,
ओकरा निअत सहज बस;
तन से बहरी भइल आतमा,
'मुकुत हो गइल;'
'दुलम सुगति पद पवलस,'
अइसन लोग कहे ला!
ई ऊ बिना निसान चिन्ह के,
अटल अलख अविनासी;
परम बरम्ह हउवे निरलेप!
जेकरा के कि,
कहसु तत्त के जानेवाला;
निपुन गुनी विदमान विचारक,
'मुकुति' सुगति निरवान!
एह किसिम से हम रउरा से,
सहज सरूप मुकुति के कहलीं;
साथे ओकर जतन बतवलीं,
अगर समुझ में आइल होखे;
अउरी रुचि जनाय जो मन में,
तब मानीं अपनाई!
इहे डहरिआ धइके,
जनक पराशर—;
जैगी सम आ,
दूसर मरमी लोग;
ऊँचा चढ़ल मुकुति पद पावल!"
राजकुँवर ऊ,
उन्हुकर अइसन बतिया सुनि के;

पूरा बूझि-विचारि,
पुरुब जनम का;
तीनि कुशल-मूलन का बल से,
अधिकारी बनि उत्तर दिहलन—
"बढ़ल एक से एक,
ई कएलान-भलाईवाला;
मेंहीं ग्यान-बचन हम सुनलीं!
बाकी तऽ नाहीं छुटला से,
तन-छेतर का जनवइया का;
एकरा के हम,
सरधा-भगति-बोध-हित लायक;
उत्तम शुभ पद मानत नइखीं!
छुटलो पर बिकार से,
परकिरती से;
तन-छेतर के जानेवाला,
चतुर आतमा-भीतर कल से;
परसव-धरमं सुभाव जनम के,
बीज-धरम उपराजे के बल;
वास करे ला,
आदि सनातन-जुग से;
अइसन हम समुझीला!
सूध आतमा मुकुत सुतंतर,
वें बान्हन्ह के;
एह किसिम के,
बूझ-समुझ बिसवास;
हिरदय भीतर रहले,
ऊ बन्हुआ हो जाई!
रीतु भूमि जल का अभाव में,
जइसे बीया ना अँकुरे ले;
बाकी ओह उपक रतन के पा,
सहज भाव से अँकुरे!
ठीक तइसहीं,
ओहू के हम मानी ला!
जे अग्यान करम टिसुना के,
काई कीट मइलि छुटला से;
सहज त्याग भइला से,
हिरदय भीतर रूप मुकुति के;
मनवाँ रचे उरेहे,
से तऽ उन्हुकर हटल कठिन बा;
भाव आतमा के रहला से!
ओह तीनि के,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तूरि लसतगां;
हीड़ पदारथ मिले भेंटाय!
बाकी तऽ जानीं जे,
रहे आतमा जहवाँ;
तहवाँ तीनों रहसु लुका के!
दोसन का मेंहीं बनि छिपले,
भइले ना मन के बेएपार;
अरदुवाइ होखला से बेसी,
सुगति मुकुति के;
बस खियाल भर होला!
अउरी अहंकार, मतलब कि—
हम हमार छुटला के,
चेत-खियाल कइल जे जाला;
उहो नाइ में धूरि उड़ावल,
भूवा का नदिआ में पँवरल!
जहवाँ रही आतमा हाजिर,
तहवाँ कतहीं कोना अँतरा;
अहंकार छिपि सटि के कल से,
राखी आपन बास जरूरे!
गुन आ गुनी खास करि,
अलग-अलग रहि सकसु कबे ना!
ओही तरे समुझिलीं रउरा,
बे गरमी के रूप आँचि के;
अगिनि कहीं ना पावल जाले!

जइसे देही,
रहे देंहि से पहिले नाहीं;
ठीक ओइसहीं,
नाहीं गुनी गुनन से पहिले!
एसे साबित बाति इहे कि,
पहिले से भल;
खुला मुकुत रहलो पर,
फेरु देंहि ई फँसे बन्हाय!
अउरी देहिआँ बिना आतमा,
जाने आ ना जानें वाला;
दू में एगो होइ सकेला!
जो बाटे ऊ जाने वाला,
तब तऽ ओकरा;
अबहीं जानल बाकी बा!
जानल बाकी बा जब ओकरा,
तब ऊ मुकुत कहाई नाहीं!
रउरा मति से जब ओकरा के,
कहल जाइ 'ना जाने वाला';
लाभ कवन तब,
ओह आतमा के मनला से?
काहे से कि,
बिना आतमा के तऽ;
साबित आ जड़ बतुस सनमुखे,
ठीक काठ आ भीति समान!"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बउध-लीला

एह किसिम से,
मुनि अराड़ के,
सवतुक धरम-विचार जानि के,
गउतम का सनतोख भइल ना !
एह धरम के,
समुझि-बूझि अधकपटा; .
ऊ आगे के डेग वढ़वलन!
मनवाँ सहजे मानो कइसे,
ग्यान-पियास बुताइल ना जब;
ना सुख-शांति भेंटाइल!
तब ऊ गइलन जोहत;
सघन शांत वन-भीतर,
संत सिरोमनि पंडित ग्यानी;
उदरक-रामपूत का,
भजन-ध्यान-तप-धाम-आसरम,
धरम-ग्यान के;
ऊगल रहे सुन्नर फुलवारी !
उदरक-साधु विमल हिरदय के,
आतम-दरसी शांत-संजमी;
हंस समान विचारक,
जड़-चेतन में दोस देखि के,
विलग होइ दूनो से;
गूढ़ तत्त के जनले रहलन !
काहें से कि—
मेंहीं कारनरूप,
चेतन भा जड़ दूनों;
सहज सहारा थेघ करम के !
ओसे अलग कहीं कुछ नाहीं,
नाम-अनाम रूप वे रूप !
तवो मुनि ऊ तत्पर होके,
ओह तत्त के जोहत रहलन !
कारन वा कि,
मति मेंहीं आ अहथिर होके;
बस ओइजे रुकि जाले,
अनते कतहीं जाले नाहीं !
एहीं से ओहिजा कुछ नाहीं,
चाहे जड़ भा चेतन !

काहें से कि,
पा ओहू के जीव जगत में;
फेरु लवटि के आवे ला !
भेद समुझि ई,
बोधि-ग्यान-अधिकारी उत्तम;
दुलम परमपद पावे खातिर,
उदरक मुनि के साथ छोड़ि के;
इच्छा से कएलान-शांति का,
पक्का निहचय कइ के गइलन;
राजरिखी प्रिय गय के नगरी
ओकरा नियर सोहत;
बन-परवत से भरल,
सुघर आसरम में तब !
जथारथ ग्यान।
निलाजना का तीरे,
ओह निराला;
उरुवेला तीरथ में,
त्यागी तपसीं संत बहुत सा;
आइ विराजसु सहज भाव से,
भजन ध्यान; तप-साधन खातिर !
नदी किनारे दूर दूर तक,
उनका तप कुटियन के;
सुघर सोहासुत छप्पर लउकसु।
उठत रहे जिनका में हरदम,
सहज सुगंधित धूआँ;
विमल अगिनि-होतर के !
ऊ तपसी मुनि,
दूसर-दूसर धरम-मतन के;
मति अनुसार समुझि के मानसु !
अउरी अपना चेलन का सँग,
बान्हि जमाति सुभावन;
रहसु साधन लीन सुतंतर !
उनका में से केतने,
नगरन में जा भिच्छा माँगसु;
आसरमन में रहि के,
गाइ भइँसिआ पालसु;
अउरी सरधालू लोगन से,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पाके दान गोटाह रुकमियाँ;
सुख सुबिधा में रहसु चैन से !
कठिन बरत उपवास नेम में,
लागल रहे लगन बहुतन के।
धरी साहसी संत लोग कुछ,
करें बरत चनरायन।
कतने ठढ़ेसरी बनि,
लागल रहसु भजन में।
कतने लटकि फेड़ में,
अति बीहड़ तप नेम निबाहसु।
केहू ठाढ़ रहे जल भीतर;
कठिन जाड़ का दिन में।
केहू पंचअगिनियाँ तापे
कुछ तपसी मुनि,
अति एकांत सघन जंगल में;
परवत का फाटिन में,
गुफा कंदरन में रहि;
ध्यान समाधि लगावसु !
कुछ अवधूत कपालिक,
खोपड़ियन का मुण्डमाल के;
धारन कइले,
पहिरि पशुन का;
खून चुवत खालन के,
घूमत रहसु उचारत मंतर;
रतिया उन्हुकर बीते,
जाइ मुरदघटिया में !
राजहंस मोती चुँगवइया,
बसल निलाजन-तीरे;
सूध शांत-एकांत जगह में,
जहवाँ शांत-सुधरमी;
पाँच तेयागी तपसी मुनिजन,
पाँचो दुशमन जीति सजग हो;
नेंम-बरत-संजम में लागल,
सहज भाव से मिललन उनके;
तप केऽ तेज पाइ के चमकत,
सोहत धरम-धजा फहरावत;
आ ठहरल पहिले से!
सुगति परमपद चाहेवाला,
पाँचो मुनी विनय के रूप;
उनके ओइजा देखि मगन-मन,
नेह लगन से;
गइलन उनका पास !
जइसे सहज बिसय इनरिन के,
ओहधनी लोगन पँजरा,
अनयासे अपने जा पहुँचसु;
जे पहिले का,
विमल पुन्नि-परतापे;
तन निरोग आ संपति पवलन !
विनय भाव से हुकुम मानि के,
धीर थीर चेला बनि पाँचो,
सेवा करसु खुशी से उन्हुकर;
जइसे चंचल आ बहुरंगी,
इनरिन से मन सेवल जाला !
जनम-मरन क अंत करे में,
तप से मदित जरूर मिली कुछ;
लउकी ड्हरि उपाइ भेंटाई,
अइसन मन में सोचि-विचारि;
तप साधन वड़ जोग-जतन में,
राजकुवँर अब भइलन लीन !
निराहार रहि मन के सोधत,
वरत नेम निबुकावत,
किसिम-किसिम के तप कइलन ऊ,
कठिन कलेस उठवलंन !
करत साधना साधत मन के,
देहियाँ जर-जर भइलि सूखि के;
अबराई बढ़ि गइल आखिरी,
लाँघि सिवाना पार चललि !
गाँठि जोड़ कुल्हि,
थाकि लहजि के भइलन ढीला;
असी बरिस के बूढ़ समान !
कुल्हि सूखि के लउकसु दूनो,
ठीक ऊँट के टँगरी जइसन।
हाड़ देखि पँजरिन के उन्हुका,
सकमक मालुम होखे जइसे;
उलहल फुल्ली अस महुवा के !
आँखि देखि डर लागे साचो,
जइसे गहिर कुआँ में तरई !
चाम माँथ के सिकुरल पचकल,
जइसे घाम-हवा से;
काँचे पर तोरल तितलउकी,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सूखे पचके आ मुरझाय !
देहिआँ के सुहुरवले मलले,
रोवाँ झरे गिरे धरती पर !
सर सर सरकि समय भागेला
कहीं सटे ठहरे ना तनिको;
नी केहू से नाता जोरे,
ओकरा कहाँ मोह लागेला !
ऊ बड़ शांति भाव से,
रंग-मसाला कूँची;
कला-कलमि मेंहीं ले,
बहुरंगी तसवीरि बनावत;
लाँघत हमनीं का सिवान के,
सहज सुभावन जाला;
बे सिवान का,
अगम अनंत लोक का ओर !

साधत जोग समाधि लगावत,
छव बरिस के दिनवाँ बीतल;
मनवाँ के ना बोध भेंटाइल,
ना ऊ हारल ना त जीतल !
गोताखोर बुड़किआ मरलसि,
थाहत गइल अथाहा जल में;
डुबि-डुबि के खोजलस मोती,
बाकी ऊपर आइल अबकी;
छूँछे हाँथ पसरले सोचत !
महा अपार-पार भवसागर,
पार करे का इच्छा से ऊ;
भोजन के सुभ समय जानि के,
बइरि तीलि चाउर के पारन;
कइलन पारी-पारी से तब !
तप से जेतने देंहि गललि,
ओतने उन्हकर तेज बढ़ल !
लहसलि दूबर देहिआँ,
सूखि के अँठई हो गइलो पर,
उन्हुकर जश आ सोभा तनिको;
छीजल भा मधिमाइल नाहीं !
दूसर लोगन का अँखिआ के,
कइलन मगन तइसहीं ऊ अब;
जइसे शरदरीतु का निरमल,

पाँख अँजोर पुरनवाँसी कें
ऊगल पूरन-कला चनरमा
कोइँन के बरबस विहँसावत !

मनवाँ सजग विचार-मगन हो,
चेतन-चित के;
साच डहरि सत् के लउकावे,
पावे सुख-आनंद !
काहें से कि—
'पाँच महल गिरदा का भीतर,
बसत आतमा राजा;
तीनि लोक चउदहो भुवन में,
जेकर राज बिराजत बाटे !
राज नगरिआ सुघर छबीली,
जहवाँ आठ खंड के बखरी;
नव दरवाजा लागल सोहत !
बाजत घंटा-शंख-नगारा,
बंशी मधुर राग-सुर-लय में !
नील बदरिआ तरई चमके,
लउकसु कबे चनरमा सुरुज;
कहीं खजाना सोना के सज,
नगद पेहान पोढ़ से ढाँकल !
कारीगरी कला के सवतुक,
कतहीं झलके सुघर नमूना,
चुनमुन विमल तलइआ,
जहवाँ चंदन-गंध-सुवासित;
कमल फूल विहँसत मुसकात !
नगरी बीच सोहासुत,
शोभा-रूप सजीला;
तीनि-चउक पर,
लालकमल फूलन से;
सजल तीनि सिंघासन !
कोटि सुरुज के तेज-जोति पा,
जहवाँ बइठल राज चलावत;
कबे-काल के झलकसु राजा ।"
"राजा का फलवारी भीतर,
पोसल बाड़ी पाँच बकरिया,
पाँचो के गुन पाँच रंग के
शबद-रूप-रस-गंध-परस के;
सरस सवदगर लेहना खाली,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खटरस भरल चटक मनमोहक !
केतनो चरसु हरिअरी;
कबहीं इन्हिकर पेट भरे ना !
उर-उर सुनत बकरिया दउरसु,
पगहा तोरि कबरले खूँटी;
ढीठ चसकले मानसु नाहीं !
जे बकरिन का परल फेंर में,
ओकरे सोरि कबरले जानीं !
महावीर मतिमान उहे बा,
जे बकरिन के रोग छोड़ावल;
महाकवि कठिन 'उर उर' के
चौकस संजम चाभुकि लेके
राजा दरसन देसु अइसने,
बकरिन का चरवाहन के !"

उरुवेला का गुफा-खोह से,
पवनदेव का दया छोह से;
गुनगुनात गँठिया के खोलत,
मन के बोधत आइल;
मीठ सुरीला तान सुनाइल !
कई नचनियाँ गवनहरिन के,
एक गिरोह बीच से वन का;
पा संजोग कहीं से आवत,
झमकि चलत पैजनी बजावत;
साथें बीन हाँथ में लिहले,
मधुर-रास-रस;
टपकावत कुछ गावत,
प्रेम-मगन मन जात जनाइल !
"तार बीन के ढील बहुत मति,
ना त ई तनिको ना बाजी;
बहुत कड़ेर करहु जनि भाई,
टूटी; तार बीन के
छूटी सभ चतुराई !"
गूढ़ सनेस धरम के पवलन,
मरम ध्यान के बुझलन गउतम;
तब मनवा के सोधि-बोधि के,
बिचिला सुगम डहरिआ धइलन !
इहवें उन्हुका धरम-भीति के,
पहिला नेंव जोराइल;

पाछे लें कुल्हि लेवरक लागल,
गोबरी भइल पोताइल !
दुशमन कठिन मानि दुनिआँ के,
भड़कि डेरायेवाला मुनि का;
मनवाँ में भासल कि—
"एह धरम से,
ना बयराग बढ़ी बल पाई;
बोध मिली भा सुगति भेंटाई !
ओह समय में जामुनि तर हम,
पवले रहलीं जवन उपाइ;
उहे उचित आ उत्तम होई !
बाकी त ओकरा के,
दूबरि देहियाँ पाइ सके ना !
कठिन पियास-भूख के मारल,
जेकर मनवाँ;
थाकल आ दोचित बा,
अइसन बेकल दुखी आदिमी
मन से मिले भेंटायेवाला,
फल के कइसे पाइ सक ला ?
इनरिन के तिरपित रखले पर,
उत्तम शांति मिले ला
दूसर बाति इहो जानीं कि
तिरपित रहले से इनरिन का;
शांत थीर मन होला !
धीर-थीर खुश शांत सुखी मन,
सहज समाधि सीधि पावेला !
जेकर चित समाधि में लागल,
ध्यान-जोग पद पर पहुँचल ऊ;
ध्यान-सीध भइले ओकरा के,
लउके अइसन सुगम डहरिआ;
जवना के धइ,
दुलम शांत सत—
अजर-अमर प्रिय,
शुभ अमिरित पद;
मिले अंत में !
जतन-जुगुति ई,
सफल तबे हो पाई;
जब एकरा के,
उचित अहार भेंटाई !
"किसिम-किसिम के जतन बाहरी,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बहुरंगी उतजोग लगा के;
तन के साधल,
कठिन कलेश उठावल;
बें मतलब के फजिहति !
माँथ मुड़ाइल चेला भइलन,
कूदि-छउकि के लिहलन;
कंठी-मंतर माला !
शंख-चकर के छाया लागल,
दागल साँढ़ होइ के हुँकड़त;
खड़िया लिहले फानसु सगरे,
नगद माल कचरेलन !
दया धरम-तप सधुवाई के,
सनदि भेंटाइल।
जाड़ा में जल-शयन, जेठ में —
पंच-अगिनी दस-अगिनि तपाइल !
पर मनवाँ के मोरि सफल के,
सीदति सासति बरियाई से ?
मुँगरिन मारि-कूटि के वरबस,
कब के साधू वनल बनावल ?
बालू से कब भीति उठलि बा,
उगलि रेत में बीया ?
के धकाश के तरई तोरल,
बारल चढ़िके दीया ?
कब पड़उँस के डोरि बराइलि,
चलनी में जल कहाँ भराइल ?
अइसे काम चली ना,
बालू पेरसे तेल चुई ना;
जबले मन में बोध भइल ना,
कंठी-माला काम करी ना !
महापुरुस ऊ,
मन में अइसन सोचि-विचारि;
भोजन के निहचय अब कइलन !
देहियाँ अति दूबर अबराइल,
रहल हाड़ के ठटरी भर बस !
निलाजना का निरमल जल में,
जब नहाइ ऊ ऊपर चढ़लन;
विरिछ तीर पर के भगती बस,
डाढ़ि झुकाइ सहारा दिहलन !
एहि समय देव मन मँथलन,
आइल गोपराज के बेटी;
देवि सुजाता,
नेह भरल हिरदय से !
सुघर सफेद शंख के माला,
सोहत रहल बाँहि में ओकरा;
तन पर नील रंग के सारी !
जइसे सुघर फेन-माला से,
विमल नील जलवाली उत्तिम;
जमुना जी के धारा सोहति !
रहे सुजाता पहुँचलि,
चंदन-रोरी धूप-दीप ले;
मेवा-मिसिरी-दूध डालि के,
केसरि-कसतूरी से छौंकल;
सजगर खीरि बनवले !
बरगद-बिरछ देव पूजा का,
शुभ-सवतुक इच्छा से !
भखले रहे मनवती ऊ कि,
"जब हम सफल मनोरथ होइबि;
पूजी साध हमार,
हम कराइबि बरबाबा के;
निरमल-हिरदय भाव-भगति से,
सुरस मधुर मनभावन;
खीरि नगद परसाद चढ़ाइबि'
हीरा-मोती रतन जड़ावल,
सुबरन-थार खीरि से भरि के;
देवि सुजाता,
गुनगुनात गावत मुसकात;
जइसे गइलि पहुँचि बरवा तर,
ठंढी सघन गाँछ-छाया में;
देखलसि बइठल,
महाविरागी तपेसरी के;
तप-समाधि में डूबल,
कल से पलथी मरले !
भाव-मगन-हिरदय के,
कइसे करीं बयान !
अब तक जग में,
के कहि सकल प्रेम के महिमा ?
सखि के कोमल प्रेमी-हिरदय,
भरल लबालब;
सूध प्रेम-रस छलकत,
गील करत अँखियन के !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2.

निरमल-भगति लगन-सरधा के;
परम पवित्तर,
तिरबेनी के धार बहवलसि !
तीरथराज-प्रयाग-अछयबट,
संत-समागम के तसबीरि;
झलकवलसि तहवाँ ततकाल !
मालुम भइल सुजाता का कि
परगट देव भेंटइलन,
जागल भाग हमार !
'साचौ दइब पलक दरियाई,
हिरदय-अयनक;
धूध साफ बा जेकर,
उहे जोति-दरसन शुभ पाई।'
बात कहत में,
पलक गिरत में;
प्रेम भगति-सरधा का,
तिरबेनी-संगम में;
करम-वचन-मन-चित बटोरि के,
बुड़ की मरलसि सखी सुजाता;
प्रम भरल सोना के थारी !
मुनि गउतम का आगे आइल !
सुरस-सवदगर,
भाव-भगति-रस-सींझल;
खइलन खीरि मगन-मन मुनि जी,
कले कले ओनचास कवर में;
बइठि निलाजन का किनार पर !
लागल भोग खीरि के उत्तिम,
छवो इनिरिया तिरपित कइ के;
भइलन मुनि अब,
सहज बोध पावे का जोग !
पवलन तेज चनरमा के ऊ,
शांति धीरता सागर के शुभ;
गाँठि खुलल मनवाँ के उन्हुका,
बोझ भइल कुछ हल्लुक;
अशुभ अविद्या का अन्हार के,
पहरा हटल—
घटल असुरन के;
बाधा-विधिन-कलेश !

महापुरुख गउतम का साथे,
पाँच बरम्हचारी खटकरमी—
मुनि पंडित मतिमान;
रहि के ध्यान लगावत रहलन,
तप समाधि अरचा-पूजा से;
मनवाँ के समुझावत सज से,
पगहा छान लगामि चढ़ा के;
जोग जुगुति से बान्हत रहलन !
खीर सुजातावाली,
खात देखि उनका के;
सोने का थारिया में,
'गिरल धरम से' जनलन पाँचों;
भइल नतीजा कि ओहिजा से,
संग छोड़ि के चललन अनते !

उरुवेला का—
सुघर शांत मनमोहक वन में,
पा संजोग कहीं से चलि के;
सोसतिक बाभन डहरि पकड़ले;
केश के बोझ माँथ पर लिहले;
जोहत बूटी जड़ी दवाई,
ठहरि एक दिन जंगल-झार;
घूमि-घामि के खेत-बधारि,
सहज सुभाविक आवत रहलन !
पगडंडी ले पँजरे दहिने,
गुनत-मँथत जोहत कुछ थाहत;
कुश के आठ अवाँसी चाहत;
पलथी मारि ध्यान में बइठल,
महापुरुख के दरसन पाके;
चट कुश दिहलन माँथ नवा के !
सुघर बनाइ आसनी कुश के,
शांत धीर मुनि गउतम कल से;
ठंढा-सघन-छाह पीपर तर,
चिंता छोड़ि बइठलन जमि के;
मन में पक्का निहचय कइ के,
ओह घरी तब;
महाबली गजराज समान,
'काल' नाँव के उत्तिम साँप;
'बोधग्यान शुभ पावे खातिर—
मुनि ई आइल बाड़न'—जानि,
महापुरुख के बिनती कइललस—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"हे मुनि तपसी !
परमधीर अति ग्यानी,
दबि रउरा चरनन से;
बारंबार धरतिया बाजति।
सुरुज नियर बा—
चमकत राउर तेज !
आज जरूरे पाइबि रउरा,
चाहल फल के अपना !
कमलनयन हे !
काहे से कि,
नीलकंठ पंछिन के पाँति;
घोरियावत घूमत आकाश,
करत आज राउर परिकरमा।
मंद पवन बहि रहल सुवासित,
एही से जनात बा निह्चय;
रउरा आज बउध हो जाइबि।"
अइसन विनय साँप के सुनि के—
"जब ले ना हम,
सफल-मनोरथ होइबि;
धरती पर ले,
तब ले ना ई आसन तोरबि;"
एतना परतिग्या कइ,
उत्तिम अह्थिर—
गेंड़ुरि मरले;
फन ऊपर कइ पिंडाकार;
सूतल सरप नियर मुनि गउतम;
बन्हलन शुभ आसन-'परंजंक' !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मार (कामदेव) के हार

राजरिसी-कुल में जे जनमल,
ओह महरसी मुनि का ओहिजा;
सुगति परमपद पावे खातिर,
परतिग्या कइ आसन मरले;
खुश संसार भइल, बाकी तऽ,
धरते झाँपी उठल बवंडर;
किसिम किसिम के,
बिधिन उपदरो होखे लागल !
टिशुना काम पाप के अगुवा,
'मार' फउदि ल,
आ पहुँचल खिसिआइल !
जेकर नाँव जगत में सभई,
जानत 'कामदेव' सरनाम ।

सुगति परमपद,
धरम-नेम-तप के जे दुसमन
बिसयन के परचारकदल के,
संगी सेनापति सरदार !
'पुहुप-बान' आ 'मदन' 'मार' हऽ
ओकरे दूसर नाँव !
पूत तीनि गो बाड़न ओकरा,
भरम, घमंड, हरख बलवान !
लइकी तीनि चतुर जगजाहिर;
अरति, प्रीति आ तिरिखा ।
अइसन खीसि छोभ के कारन;
पुछला पर उन्हनी का !
कामदेवता,
मुहवाँ माहुर नियर बनवले,
कहलन हाँफि बचनियाँ दुख के !
ई मुनि कवच पहिरि निहचय के,
धनुस सतोगुन के धारन कइ;
मति के बान तानि के—
हमरा,
बिसय-राज के जीतल चाहत ।
जो ई जीति लिही हमरा के,
बोध-ग्यान पा जाई;
तब दुनियाँ के;
डहरि परमद के बतलायी !
देखले-सुनले,
जो ई लत लोगन का लागल;
परिकल चोर भुसहुले दउरी,
बिनसी राज हमार चुहिलगर;
उजरी बिसयन के फुलवारी ।
जइसे धरम सुमारग से गिरि,
राजा निमी के राज बिलाइल !

एही से तऽ,
जब ल ना ई;
सुमति-ग्यान सतमारग पाई,
तबले हमरा कबजा में बा !
एकर धरम-बरत-सत संजम,
तोरे के हुमाँच हम वान्हबि ।
जइसे नदिया बढ़े बेग से,
बान्ह किनारा के तोरे के ।
तब परजा के मन सनकावे,
चउपट करे हेंगावेवाला;
'मार' धनुस फूलन के लके,
अउरी जग के मोहेवाला;
पाँचो बानन सहित संजग हो,
खिसियाइल अनसात लपकि के;
साथे पूतन के बटोरि के,
गइलन पहुँचि तुरत पीपर तर !
तब धनुहा का अगिला भागे,
बायाँ हाँथ अड़ा के आपन;
खेलि करत बानन से,
शांत धीर आसन पर बइठल;
भवसागर अथाह का,
पर जवइया चउकस मुनि से;
मार झझकि के कहलन—
"मउवतिया से,
डरे लुकायेवाला;
हे छतिरी ! अब उठऽ सजग हो,
कतरी काटि छटकि मति भागऽ;
पालन करऽ धरम के अपना,
डहरि सुगति के छोड़ऽ !
बानन से आ शुभ जग्यन से,
जग के जीति लगन से;

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एक लोक से ऊँचा चढ़ि के,
इन्द्र देवता के पद पावऽ !
एहिजा से निकले के,
ईहे डहरि सराहे लायक ।
बहुत पुरनियाँ राजा लोग,
इहे डहरिया अपनवले बा !
राजरिसी-कुल में जे जनमल,
ओकरा खातिर;
माँगे हाथ पसारे वाली !
भिखमंगी-विरती अपनावल;
कबहीं उचित कहाई नाहीं ।
हे बतिधर मतिमान !
जो ना आज इहाँ से उठलऽ,
तब तऽ अहथिर होके ठहरऽ;
जानि आपन परतिग्या छोड़ऽ !
हम अब उहे बान उठवलीं,
जेके मीनशत्रुसूपक पर;
समय पाइ के छोड़ले रहलीं !
हम एही बानन से,
राजा पुरुखा के;
कटलीं चिरुकी कान !
महाबली शांतनु के,
सहजे धरम छोड़वलीं;
नारद नीमरिखी के मोहलीं,
तिननी नाँच नँचवलीं !
तब के अइसन,
छेद भरल कल-छल का जुग में;
बात सवहुवन के पूछेला ?
बस अब जल्दी उठऽ चेति जा,
बान चाटि लेई ई तोहके !
चकवा-चकई नियर लोग जे,
प्रेम-पुजारी रति के प्रेमी;
अपना बेकति के पछपाती,
उन्हुका पर हम;
एकरा के ना छोड़ी।"
एतना कहलो पर जब गउतम,
तनिक कान ना कइलन;
ना आसन के तोरलन अपना ।
तब बेटा-बेटिन के,
आगे राखि 'मार' झट;
उन्हुका ऊपर छोड़लन बान !
ओह बान का छोड़लो पर जब;
मुनि ऊ तनिको,
ना कइलन परवाह;
ना अपना धीरज के छोड़लन !
उनके देखि ओइसहीं अहथिर,
यार दुखी चिंता से बेकल;
जीभि जाँति के बोललन—
"जेकरा से बेधला पर,
कठिन समाधि शंभ के टूटल;
पारबती खातिर घबड़इलन !
ओह बान के,
तनिको चिंता नइँखे इन्हिका !
का ई बिना चित्त के बाड़न,
कि तऽ ई 'ऊ' बाने ना हऽ ?
अइसन सोचि 'मार' घबड़ा के,
शाकिय-मुनि के;
शांति-धीरता,
भंग करे का इच्छा से तब;
सुमिरन कइलन,
अपना भारी;
निपुन ढीठ सरहँग सेना के !
रंग-बिरंगा शानी सरकस,
चतुर पैंतराबाज खेलाड़ी;
तब उन्हुकर पलटनिहा वीर
बरछी, बिरिछ पहाड़ गदा आ—
हाँथन में तरुवारि लेइ के,
चारो भर से घेरलन मुनि के !
सूअर, मछरी, घोड़ा, गदहा,
ऊँट नियर मुँहवाला केतने;
सिंघ, बाघ, भालू, हाथी के;
मुँह भकसावन पाके अउरीं
जूथ बान्हि के जुटलन ओहिजा !
केहू काना, कुबरा, अइँचा
बिलरंगा, नकिटेढ़ा केहू;
ओठकटा, मुहसुइटा केतने,
केहू बहुत बाँहि मुँहवाला,
केहू बिना जाँघि ठेहुन के;
घइला नियर जाँघि बा केकरो,
चोख दाँत नँह तेज बहुत के;

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बहुतन के मुँह आधा,
बहुत लोग बाँगुर, बकलोल;
केतने तन में राखि लपेटले-
केतने खून के टीका कइले;
केहू बानर के मुँहवाला,
हाथी नियर कान केहू के;
केतने लंगटे मुँह बिजुकावत,
साँप लपेटले गर-बँहियन में;
केहू हाथी खाल पहिरले,
लमहर ताड़ समान;
लोहू से लथपथ पगरी के,
केहू अपना माँथे बन्हले !
केकरो गर में,
खून चुवत मूँड़िन के माला !
केहू का तिरशूल हाँथ में,
केहू हाथे भाला !
कुछ दउरसु कुछ कूदसु,
कुछ फेंड़न का;
पुलुँगी पर चढ़ि नाचसु !
केतने गदा तानि के फुदकसु,
केतने हुँकड़सु साँढ़ समान !
अइसन भूतन के गन,
बोधि-बिरिछ के;
चारो भर से घेरि खड़ा हो,
मुनि के पकड़ल मारल चाहे;
बाकीं फरका ठहरल,
खोजत रहे हुकुम मालिक के !
गउतम मुनि आ कामदव के,
अइसन कठिन लड़ाई देखत;
पहिला पहर राति के बीतल !
धरती काँपलि,
मलिन भइल आकाश ।
दसो दिसा में,
शबद भइल आ लागलि आगि ।
उठलि जोर से आन्हीं,
बहल पवन चउवायी ।
तारागान ना लउकसु कतहीं,
दुखी चनरमा उगलन नाहीं;
बढ़ल आन्हार राति के बेसी,
बेकल भइल समुन्दर !

धरम परायन शषनाग जी,
विधिन देखि मुनिवर के;
खीसिन आँखि लाल कइ दुख से,
कामदेव पर बिगड़ल;
खोलि हजारो मुँह के अपना,
देहियाँ अँइठि जम्हाई लिहलन;
छोड़लन गरम-गरम फुँफकार !
मन से धरम-सीधि में लागल,
देवरिसी-गन;
कइलन दया 'मार' पर ।
खीसि कइल ऊ लोग तनिक ना,
चित-सुभाव से;
उदासीन रहला से !
बोधि-बिरिछ के देखि घेराइल,
मारदेव का !
मारुक कूर ढीठ सेना से ।
धरमी लोग सुगति चहवइया,
हाहाकार सरग से कइलन !
शांत धीर-चित चतुर महरसी,
धरमकाज का विधिन रूप में;
ठाढ़ देखि के,
बली मार-सेना के ओहिजा;
गाइन का लेंहड़ा में,
बइठल सिंघ समान;
निरभय रहि के,
चित्त ना चंचल कइलन !
मार देवता,
सेना के तइयार देखि तब;
हुकुम अंत में दिहलन,
मुनिवर के डेरवावे के !
सुनत हुकुम ऊ सेना उन्हुकर,
आपन-आपन;
गुन-बल-असर देखा के,
कइलसि बहुत जतन उतजोग;
मुनिवर के धीरज तोरे के;
पँजरा पहुँचि ठाढ़ कुछ भूत,
लमहर जीभि अनेकन काढ़ि;
लपलपाइ डेरवावत !
केतने गो तऽ,
बड़ी गोल अँखिया कइ लाल;

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चोख दाँत, मुँह बवले चाकर,
'खाइबि' ई धमकावसु !
ओइजा खड़ा ओह भूतन के,
रूप भाव डेरवावन देखि;
ना दुख मनलन बेकल भइलन,
शांत अडोल महरसी !
खीसिन आँखि तड़ेरले कवनो,
तब उन्हुका पर गदा उठवलस;
बाकी गदा उठावत मातर,
ओकरे साथे;
ओकर हाँथ बन्हाइल जकड़ल !
जइसे कबहीं पहिले,
बज्र उठावत,
जकड़ल रहे हाथ इन्दर के !
केतने भूत झनकि के,
पत्थल फेंड़ उठवलन;
मुनि का ऊपर छोड़े के।
बाकी पत्थल-फेंड़ सहित हीं,
गिरलन मुँह का भरे अपनहीं !
फूटि बज्र से छितिराइल हो,
मानों विन्ध्याचल क चोटी !
कुछ राकस उड़ि के आकाश में,
फेंकलन पत्थल-टांगा-फेंड़;
बाकी ऊ ना नीचे गिरलन,
रहलन तहँ अकाशे अँटकल;
जइसेसांझि समय के,
रंग-विरंगा मेघ-टुकड़वा !
जरत आगि क गोला भारी,
एगो भूत मुनि पर बिगलसि;
बाकी उनका तेज धरम से,
ऊ गोला ओइजे अकाश में;
टूक-टूक होके छितिराइल !
कवनो ऊगत सुरुज समान,
बड़े-बड़े लहकल अंगार;
बरिसवलसि ऊपर अकाश से !
अनुक कलप का अंन समय में,
जरत सुमेरू परबत;
सुवरन-शिला-चूर वरिसावत !
बोधि-बिरिछ का जरि तर,
चिनगारिन क़ा संगे;

फइलत रहे जवन अंगार,
ऊ मुनिवर का;
सहज-सनेह-शील का कारन,
लाल कमल के;
पतई बनि के बरिसल !
देंहि चित्त दूनों के,
दोचित दुखी बनावेवाला;
गरम मशाला जुटलो पर ऊ,
शाकिय मुनि अपना निहचय के;
बंधु समान पकड़ि के,
आसन से ना डोललन !
तब कुछ भूत फेरु बटुरा के,
मुँह से अपना साँप उगिललन !
उहो साँप फुफकरलन नाहीं,
ना चलि उनका नियरे गइलन;
जइसे केहू उनके,
मंतर से बन्हले हो !
केतने भूत बटुरि के,
बादरि बिजुली बनि के;
बिरिछ नियर उनका पर,
बरखा कइलन पत्थल के !
बाकी ऊहो,
फूल होइ के बरिसल !
ऐगो भूत बहुत खिसियाइल,
बान धनुस पर धइलसि;
धरत-धरत में,
जरल बान ऊ ओहिजे !
जइसे अबरू आ गरीब के,
रोस भीतरे-भीतर धधके !
दूसर भूत गदा ले दउरल,
बाकी बीच डहरि में,
बेकल हो भहराइल !
जइसे बेवस भइल आदमी,
गिरे खोह खंधक में;
चउपट करे उजारेवाला,
अनरथ के जरि;
खटरागी बिसयन में !
तब एगो करिया मेहरारू,
बस सकमक भुचेंग हो जइसन;
मुरदा के खपड़ोई लेके,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मुनि के मोहे आइलि !
बाकी सनकी नियर घूमि के,
ओइजे चक्कर काटे लागलि !
जइसे चंचल चित-वालन के,
मति ना रहे थीर हो;
देखि धरम-साहतर पोथिन के,
उनका घुमरी आवे !
बाघ-सिंघ का रंगरूप के,
तब कुछ भूत जोर से;
भारी गरजन कइलन,
जवना से डरिके घबड़ाके;
जीव-जंतु जंगल के,
चारो ओर लुकइलन !
उनका शंका भइल कि कतहीं—
बज्जर गिरल अकाशे फाटल !
हरिना आ हाथी घबड़ा के,
डेंकरत-चिकरत छिपलन भागि ।
दिन समान बोलत रतिओ में,
पंछी उड़लन चारो ओर !
किसिम-किसिम का,
डेरवावन शबदन के सुनि के;
जीवन का कँयला से डरि कि,
धीर मुनि ना डरलन;
ना उदास हो देंहि बटोरलन !
छिपल रूप में तब अकाश से,
केहू धरमी जीव महान !
देखि मार के,
बिना बैर के—;
बे कारन के,
जुलुम करत दुख देत रिखी के;
कहलन वचन गँभीर—
"कामदेव हे !
बिरथा-मेहनति जतन करऽ मति,
करम कसाई के अब छोड़ऽ;
मन के हांत बनावऽ !
तूँ इनका के डगा सके ना,
जइसे पवनवेग से,
हिलि ना सके सुमेरू !
चाहे अगिनि छोड़ि दे गरमी,
जल आपन गीलापन छोड़े;

धरती चले धीरता त्यागि,
बाकी बहुत जनम से;
पुन्नि बटोरेवाला ई मुनि,
अपना निहचय के न छोड़ी !
देखि समुझि के,
एकर सवतुक निहचय;
बल आ तेज,
दया जीवन पर;
सहजे ई बिसवास होत बा,
कि बे पवले—
हीर तत्तु के,
ई ना उठी छोड़ि के आसन !
जइसे बिना अन्हार मेंटवले,
सुरुज देव ऊगसु ना !
काठ रगरले आगि मिले ले,
धरती खोदले पानी;
पोढ़ विचार अटल परतिग्या,
जे आपन राखे ला;
ओकरा खातिर,
कवनो काम कठिन मति जानीं !
जो नेयाव से कइल जाय त,
सब कुछ होइ सकेला !
परल रोग में—
तन आ मन दुनो का,
जूझेवाला;
दोचित दुखी जगत पर,
दया करेवाला रिखी-मुनि के;
बिधिन कइल गलती बा !
महाबैद ई,
ग्यान रूप ओखधि के;
जोहे खातिर,
कठिन कलेश उठावत बाड़न !
जे मुनि—
केतने कुपथ पकड़ि के,
हरन कइल जा रहल जगत का;
सुख-कयलान-भलाई खातिर,
सहज सुमारग खोजि रहल बा;
ओइसन भला करेवाला के,
बिचिलावल ना उचित कहाई !
जइसे वन में डहरि भुलाइल,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वेवपारी के;
सुगम डहरिया—
बतलावे बाला के,
नइँखे उचित काम भटकावल !
दुनियाँ से अब,
सवतुक भाव बिनसि गइला से;
महा अन्हार भइल आवत बा !
ओकरा में ई,
ग्यान-चिराग जलावत बा !
अइसन कठिन अन्हार समय में,
बारत दिया बुतावल;
भला लोग खातिर तऽ,
तनिको अच्छा नइँख !
भवसागर का महाधार के,
पार करे में समरथहीन;
डूबत देखि जगत के,
ज लागल बा पार करे में;
ओकरा उलटा,
अकरम करम करे क;
के भलमानुस करी विचार ?
जेकर जटा छमा बा,
धीरज जरि बरियार;
फूलरूप शुभ चालिचलन आ
सुमिरन सुमति डहँगिया,
धरमरूप फल देबे खातिर;
पनफेवाला ग्यान-बिरिछ के,
शोरि उखारल नइँखे ठीक !
बोधि ग्यान के पावे खातिर,
जवन काम ई कइले बाड़न;
उनका आज सुफल होखे के,
नियत समय आइल बा !
एह जगहि पर बइठल बा ई,
जइसे पहिले,
सिद्ध संत मुनि बइठल रहलन !
काहें से कि,
परम पवित्तर देवभूमि ई;
सुधर नाभि धरती के,
सभई उत्तम गुन एकरा में !
धरती पर अब नइँखे अइसन,
दूसर कवनो देश कहीं;
जे तनिको इनका समाधि के,
भार बोझ सहि सके फबे !
एहि से अब,
मन में सोचि-विचारि;
कामदेव हे ! शोग करऽ मति !
ना तोहरा अपना महिमा के,
मद गुमान राखे के चाही !
नाशमान छनभंगुर सब कुछ,
बल-सुख-संपत्ति भोग !
इनका पर बिसवास कइल तऽ,
नीक काम नाहीं बा !
काहें अपना,
तीनि दिनन को चंचल पद पर;
तूँ घमंड में माँतल बाड़ऽ ?"
अइसन गूढ़ वचन सुनि उनकर,
अउरी देखि अचलता मुनि के;
कोशिश जतन भंग बेफल के,
झुकल डाढ़ि क बानर 'मार';
मुहवाँ दोबर मन मधुवाइल,
मारे लाजन ठिढुकीं टोवत;
चाटत ओठ—
माँथ खजुवावत,
कल से पोंछि दबाइ धसकलन !
तब उनकर ऊ सेना,
जेकर खुशी भुलाइलि सटकलि;
मेहनति भइलि अकारथ,
पत्थल फेंड़ नगिनि के गोला;
किसिम-किसिम के सब हथियार:
बिरथा भइल बिगाइल;
दिशा-दिशा में भागि लुकाइलि,
जइसे दुशमन का हाथन से;
सेनापति का मारल गइले,
तुरते अउरी सेना;
जान बचा के भाग !
कामदेव का—,
सेना सहित हारि के भगले;
कालरूप अग्यान-असुर के,
मुसुक बान्हि के पटकेवाला;
मुनि का विजयी भइले,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ल चान सहित आकाश,
नगद अलबेली—
सित नारि समान।

अउरी मंगलमय सुखदायी,
फूल-सहित पानी बरिसवलसि;
खुश हो बिमल सुबासित।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बोध-ग्यान

ध्यान-निपुन मुनि,
सहज धीरता शांति छमा से;
जोति मार का
बहुरंगी सेना के;
परम तत्त के जाने खातिर
मानस-भीतर ध्यान लगवलन !
मिलल सुगति-अमिरित के झरना,
देवलोक से आवत;
बोध-ग्यान के,
मंगल-मधुर-सनेस सुनावत !
सुन्दर सोत, लहरिया मोहक;
मन भावनि सुखदाई।
अंतर मन के-
अंखिया खुलिल ;
डहरिया लउकलि;
शंका छूटल,
बोध भइल, दुख भागल !
जे डूबल सागर का भीतर,
अभय सतोगुन-
शांति भाव ले;
ओकरे रतन भेंटाइल,
परल गले मोतिन के माला।
"कइसन सुन्दर रथ देहियाँ के
जेंहि पर चढ़ल आतमा राजा;
अकिलि सारथी नटखट चंचल
मनवाँ पोढ़ लगामि;
दसो इनिरिया भुटिया घोड़ा,
शबद-रूप-रस-गंध परस का;
बिसय-सड़किया,
दउरसु सरपट।
एहि चोला का भीतर भाई,
कुरुछेतर का समर भूइं सम,
देव-असुर के कठिन लड़ाई,
हरदम मचली रहे ले !
जें हारल से गइल रसातल,
जे जीतल ऊ भइल अमर बा !'

× ×

किसिम-किसिम का ध्यान-जोग के,
जेतना बिधि बाड़ी स;
सभ में पूरा निपुन होइ के,
पहिल पहर में मुनिवर;
अपना पहिले का जनमन के,
कथा रूप के सुमिरन कइलन !
'ओह जगहि में--
हम ई रहलीं,
ओइजा से गिरि एहजा अइलीं;'
एह तरह दे—
उनका सहजे,
परतछ देखला नियर—
हजारन;
जनल के बतिया परलि इयादि !
बत तवना-तवना जनमन में,
जनम-मरन के सुमिरन कइके;
महापुरुस ऊ परम दयालु,
कइलन दया दुखी जीवन पर !
अपना भाई-बंधु मीत-हित—
संबंधिन के एहिजे छोड़ि;
सभई जीव जनम ले अंते,
परल मोह टिसुना में;
केतने धंधा काम करेलन !
साचो ई संसार-,
बिना रइछा के;
जे बा चक्का नियार—
राति-दिन;
करम-धुरी पर घूमत।
अइसे सोच-विचार करत में,
इनरिन के जितवइया;
ओह मुनी के
मति ई निहचय कइलसि,
'दुनियाँ केरा थम्भ समान—
बिना सार के बा भीतर ले'।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

महाबली आ—
सभ विचार कन में अति उत्तिम,
ग्यान-दीठि वाला ऊ;
शांत महरसी,
दूसर पहर राति के अइले;
दइबीं नयन—
बिमल सुभ पवलन !
तब ऊ ओही
परम सूध दइवी नयनन से;
देखलन सभ संसार !
जइसे निरमल ऐनक बीच,
सहज-रूप-परिछाहीं लउके !
नीच ऊँच करमन के
ममता में परि करत परानी;
नीचे गिरत खोह-खंधक में,
ऊँचा चढ़त बढ़ंती पावत;
अइसन देखि मुनी का,
चित में दया बढ़ल जीवन पर !
अकरम करम कइल जे जीव,
ऊ अब दुरगति भोगि रहल बा !
जे दूसर, सुभ करम कइल ऊ,
सहजे सरगे पहुँचि रहल बा !
ई कुल महा अकरमी जीव,
रौरव-कुंभीपाक नरक में;
परि के भोगत रोवत बाड़न !
'हाय-बेचारा' कुछ त—
छटपटात डेंकरत चिचियात,
जरत लाल लोहा का खंभन;
धींचि बलाते—
चपकावल जा ताड़न !
कुछ के पिघिलल लोहा के रस,
आगि नियर जे लाल;
पकड़ि पियावल जाता !
लोहा का घइला में,
कूटल-पीसल अन्न समान;
मुँह के नीचे कइके,
कुछ जीवन के;
तेज आँचिवाला चूल्हन पर,
बरबस चढ़ा पकावल जाता !
कुछ गोड़न के,
बिलखि-बिलखि रोवलो पर;
लहकल अंगारन पर,
धइ के जारल जाता !
केतनन के तऽ,
ढीठ कटाह शिकारी कुक्कुर;
जिन्हिकर चोख दांत लोहा के,
नोंचि नोंचि के खात !
कुछ लोगन के,
परिकल कउवा ढीठ;
जिन्हिकर ठोर बनल लोहा के,
खोदि-खोदि के बरबस खात !
जिन्हिकर हाथ बन्हाइल बाटे,
अइसन कुछ जीवन के;
लकड़ी नियर—
तेज टांगी से,
काटल-चीरल जाता !
अइसन दुख में उन्हुकर,
अधम परान निकलतो नइंखे;
करम से पकड़ाइल बा !
'सुख पाइबि हम',
ए आशा से;
जवन काम ई कइलन,
दुख से छूटे खातिर;
ओकर फल ई दुखवे,
बेचारा हनि भोगत बाड़न !
ई पापी जन,
हँसि-हँसि पाप करम जे कइलन;
बूझ विचार भइल जब ओकर,
फलवा भोगत रोवत बाड़न !
पापी लोग पाप करमन के,
परतछ फल जो देखसु;
तब मरमन का,
घाही भइला नियर तुरंते
गरम खून मुँहवाँ से बोकरसु !
ई केतने बेचारा,
चित का चंचलता से;—
हीखेवाला,
तरह-तरह का 'खट' करमन से;
रंग-बिरंगा पशु पंछिन का,
अधम जोनि में पएदा भइलन !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अब जवनन में आके,
खाल-मांस आ बार-दांत भा;
चीड़ि दुशमनी मद का कारन
कुल-परिवार बंधु का देखत;
नित बहेलिया का हाँथन से,
इनकर जांन मरात !
एतने नाहीं,
घोड़ा बैल होइ ई;
मेहनति करत ठेठावत देहियाँ,
थाकि पियासन-भूखन ;
छटपटात आ पैना खात !
हाथी नियर बली भइलो पर,
माथ छेदाता;
नित आँकुश से कमजोरन का,
अउरी लातन का एड़िन से;
ठोकर मारि हँकाता !
इरिखा-डाह-दोस से जिन्हिकर,
हिरदय मइल रहल ऊ;
भूत-प्रेत के जोइनि पाके,
करम-दसा के भोगत बाड़न !
मुहवाँ छेद नियर सूई का,
पेट बा इन्हिकर छोंड़ि समान !
भूखि-पियासि सतावति हरदम,
पेट का धावन भइल बबंडर;
ई दर-दर के ठोकर खात !
इरिखा के फल होला अइसन,
जो ई भला आदिमी जनितन,
तब त शिवि समान दानी,
देहियों तक ले;
छेदि-काटि के व रितन दान !
ई कुछ कठिन परानी,
नरक समान गरभ का;
अपबित्तर गड़हा में,
गिरि के मानुस का जोइनि में;
बरबस कलेस-जातना !!
पहिले जनम-समय में,
दाई का हाँथन से;
पकड़इला पर,
कुहुँकि-कुहुँकि के रोवत;
जनुक पजावल हथियारन से,
छेदल काटल जाता !
कुल-परिवार प्रेम-बस होके,
पालत-पोसत;
सेवा-आदर करत राति-दिन;
तबो करमगति संग न छोड़े,
संचित गठरी बान्हल पीठी;
समय पाइके,
बहुत-बहुत दुख देले !
तबले कतहीं निहुरि.लुकाइलि,
पहुँचि बुढ़ापा आइलि;
'बाकी बा कइलीं नाहीं,
ओके पूरा करबि जरूरे;
हरदम अइसन टिसुना में परि,
तेजधार-चिंता-नदिया में;
चुभुकि-चुभुकि बूड़त उतिरात
कुछ दूसर जे पुन्नि बटोरलन,
सरगे जाइ पहुँचलन !
बाकी ओहिजो,
जरसु वासना का लहरन में,
जइसे लहकल आगी में !
इच्छा पूरन होखे नाहीं,
गिरसु तबलहीं ऊ नीचे के !
अँखिआ उन्हुकर ऊपर देखसु,
तेजहीन ऊ,
भइल सोग से आरत;
माला उन्हुकर,
लउकेले कुम्हिलाइलि !
बहुत परीव देव-तिरियन के,
अइसन लोगवा,
जब अनाथ आ बेचारा हो;
लागसु गिरे सरग से,
तब ऊ तिरिया दुखी होइ के,
उनके धइ आँचर में अपना
परल मोह-ममता में,
ताकसु लोर बहावसु !
देव-विमान ले न तब नीचे,
गिरत देखि अपना पियवन के;
ही तइआर बचावे खातिर,
गिरत ऊ तिरिया लागसु अइसन,
मानो टूटल तरई होखसु !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रंगबिरंगी माला गहना,
पहिर तिरियवा देवलोक के;
भभति ठाढ़ ओहिजे ले,
लोर भरल अँखियन से;
टुकुर-टुकुर ताके ली !
दूसरि तिरिया,
गिरल-पियन का;
प्रेम-डोरि से चउरि बन्हाइलि,
दुखी होइ के
हाँथन छाती पीटस् !
उहो सरग के बासी,
गिरत देखि अपना के;
बेकल होइ सोग से;
'हाय चइतरथ ! हाय पिया हे !
हाय मंदाकिनि !
हाय मेरु ! कहि;
आरत होके रोवेलन !
एह किसिम से,
जवन मिले मुसकिल से;
देवलोक ऊ,
छनभंगुर आ-
बेठेकान निहचय के;
परगट देखल जाता !
अउर इहो कि,
होनहार जेकर निहचित बा
ओ वियोग का कारन;
ऊ लउकत दुखदाई ।
ईहे अटल नेम दुनियाँ के
अइसन एकर सहज सुभाव !
तबो लोग ना देखसु,
कबहीं ऐकर ओइसन रूप !
सरगलोक के जानि सनातन,
जवन लोक इनरिन के जीति;
ओहिजा जाइ पहुँचलन,
उन्हुकर साध नसाइलि;
गिरलन उहो दुखी हो !
पीरा बहुत नरक में,
पशु-जोइनि में-;
एक दूसरा के धइ खाय,
भूखि-पियासि भूत-प्रेतन में;
हाल सुनीं मानुस के !
टिसुना बहुत सतावे उनके,
कड़ा कठिन दुख देले;
घुला-घुला के मारे !
ए धरती पर,
सरगलोक भा घोर नरक में;
बारंबार जनम ले मूवे,
एह किसिम से;
भूल-भुलइया में परि,
घुमवइया जीवन के;
कहीं जथारथ में सुख नइँखें !
बिना कील के बे अधार के,
ई संसार बड़ा तेजी से;
हरदम घूमि रहल बा !
चारो भर ले,
जीव घेराइल बा ओही में ।
ओके कतहीं,
जगहि शांति के;
नइँखे कबें भेंटाति !
एक तरह से,
पाँच जीवलोकन के
ध्यानी महापुरुस ऊ
अपना निरमल देवनयन से
शांत धीर हो देखलन ।
बाकी कहीं उन्हन में,
केरा-थम्भ नियर भीतर में
कुछ सारिल ना लउकल उनके !
बीति गइलि जब आधी रतिया
ध्यानी जोगिन में सेसर ऊ
नावँ-रूप-लीलामय जग का
हीर तत के जाने खातिर;
मन-चित-मति के,
सूध सतोगुन में ठहरा के;
सजग होइ इनरिन के बान्हि
धइलन गूढ़ धियान !
हा ! हा ! कहीं जीव ई
ना सुख शांति धीरता पावसु
बारंबार जनम ले आवसु
समय पाइ के होखसु बूढ़ !
छाया नियर लुका के झाँकति

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मउवति कहीं किवरवे ठाढ़ि
परवाना ले पहुँचे तुरते
रोवलो पर ना दसा देखावे
पकड़ि बान्हि ले जाय!
निहचय मानुस का अँखिया पर
काम मोहक;
बीहड़ घोर अन्हार
भारी परदा डलले बाटे!
दुख का महाबिपति से,
निकले वाली;
साच डहरिया लउकत नइंखे!
अरे! असलकी बतिया का हऽ
जेकरा करते,
आवसु पहुँचि बुढ़ापा मउवति!
ग्यानिन के सरदार सुरेमन
पइठि साच का भीतर;
तब देखलन कि,
'जनम लिहलके कारन असली;
निठुर बुढ़ापा मउवतिया के!
माँथ रही त पीरा होई,
फेंड़ रही त काटल जाई;
एह किसिम से,
ग्यानी धीर महरसी;
भीतर का अँखिया से
सभ-कुछ देखलन साफे!
कंवन जनम के,
कारन होई सकेला?
एह बिसय में,
मुनि जब सोचलन;
उनका के तब,
पता चलन कि—
करमन के ई भारी पंचड़ा,
कारन असल जनम के!"
भीतर से लउकल उनका के—
'करमे पगहा नाथ पछाड़ी,
चउरे नाथे नाँचि नचावे;
रूप देखावे नावें धरावे,
आखिर लोप करे सभ कुछ के!
कवन अँठिलिया,
आइलि कइसे;
गाइल के कब कहवाँ एके?
परिकिरती ना अँठिली रोपलसि;
नाहीं एकर सिरजन कइलसि
केहू दूसर परम सुतंतर
एकर करता नाहीं!
ना अभाव से भइल कबे ई,
ना आतम से बनल रचाइल!
जतन जुगुति से,
पहिला पोर बाँस के छेदले
सहजे बाकी पोर छेदाला!
एह तरह से,
असली कारन जानि जनम के;
मुनि के ग्यान बढ़ल आगे के
तब ऊ कोसिस कइ के;
ध्यान लगवलन फेरु!
अबकी उन के—
उपादान में,
मतलब—बिसयन का सँगरह में
मिलल लोक के कारन!
एह लोक में जीवन के जे,
किसिम किसिम के
सदाचार के,
मतलब—सवतुक चालि-चलन के
बरत-शील-जुगतिन के
करम-पुंज बटुरालन,
'उपादान' उनहीं के जानीं!
जइसे ईन्हन पाके,
सहजे आगि बने ले!
एह लोक में,
उपादान ई;
मतलब—
बिसयन के कुल सँगरह,
होला कवना जरि कारन से?
खोज-बिचार करत एकरा पर,
ऊ पहिले टिसुने देखलन।
जइसे पाइ हवा के,
अगिनी के चिनगारी;
जंगल में फइले ले,
ठीक तइसहीं;
मदति-इसारा पा टिसुना के,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मन के इच्छा कामे;
करम रूप जंगल हो जाला !
टिसुना काहें पएदा होले ?
एपर जब ऊ,
फेरु धियान लगवलन;
हो पूरा लवलीन मजे में,
धरत धियान मिलल उनका के—
'टिसुना के जरि बिया वेदना' !
ई संसार बन्हाइल—
कठिन वेदना से घिंचाइ के,
तिरपित होखे खातिर;
बेकल होके धावेला !
बेकल भइले पर पियासि से,
चाहे जल के पियल आदिमी
ना तऽ नाहीं !
फेरु मुनी ऊ इनिरीजीत,
होके लीन धियान-जोग में;
कारन एकर जानल चहलन—
कि कहवाँ से,
काहें उपजि वेदना आइलि ?
तक उन्हुका के,
'शउरि' वेदना का जनमे के;
असर-परस से घेरल लउकलि !
इनिरी, बिसय बतुस आ—
मनवाँ का संयोग मिलन के,
'अरस परस'—असपरस कहाला !
अरस-परस से भइल वेदना,
जइसे 'अरणी' काठ रगरले;
होला जनम अगिनि के !
साथ पाइ बिसयन के,
चाहे उन्हुकर;
सोच-विचार करत में,
मन का भीतर;
सुख-दुख चाहे ना सुख-दुख के,
जवन भाव उपजेला;
ओकरे परल वेदना नावँ !
अरस-परस के भाव कहाँ से,
काहे आइल ?
एपर धरत धियान सजग हो,
गूढ़ विचार करत में;
जनलन मुनिवर ग्यानी,
जग में छवो आयतन—
मतलब;
मन आ पाँच इनिरिया,
अरस-परस के कारन !
सूर आदिमी,
ना घइला के देखे;
काहें से कि,
अँखिया से ना
घइला के संजोग !
एसे इनिरिन का रहले पर
अरस-परस के उपजे भाव !
तब ऊ जानकर तत्तन के
छव आयतन का कारन के
करत विचार—
ग्यान से जनलन;
नाँवरूप के कारन उन्हुकर !
आँकुर का रहले पर,
डाढ़ि पतइया होले !
ओह किसिम से
नाँव-रूप रहले पर;
छवो आयतन होलन !
नाँव-रूप का कारन के जब,
कइलन खोज धियान लगवलन
तब पारंगत ग्यानी,
पंडित चतुर परीन
मुनी का,
नाँवरूप का जरि में बइठल,
लउकि गइल विग्यान;
कहीं चेतना भा मन ओके !
उगले पर विग्यान-जोति का,
नाँव रूप बस उगि पावेलन !
काहे से कि
बीया का सज से खिलले पर
आँकुर देखि परे ला।
फिन बिग्यान—
कहे के भाव;
चेतना संग्या;
कवना जरि से पएदा होला ?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अइसन सोचत,
ऊ देखलन कि;
नाँव रूप के मदति पाइ के,
ई विग्यान भइल निकलल बा !
एतना देखि, बिचारि मजे में;
ठहरल उन्हुकर मनवाँ ओहिजे,
शांत थीर हो बिचरे लागल;
गइल कहीं ना !
नाँवरूप बिसयन का,
छने-छने जुटि परतछ भइले;
मति का निजी रूप के,
सहज धारना जानीं,
ओही के समुझीं विग्यान;
चाहे कहीं चेतना ओके !
नाँवरूप होला ओकरे से,
नाँवरूप आधार;
जेकरा पर विग्यान खड़ा बा !
जल का भीतर—
नाइ आदमिन के ढोवेले,
समय पाई के सुखला;
उहे आदिमी ढोवसु ओके !
मन-विग्यान-चेतना इनका,
नाँवरूप से;
ठीक तइसने नाता !
एगो कारन,
दूसरा के मानल बा !
धीकल लोहा खढ़ के जारे,
खढ़वा जरि के धिकवे लोहा;
ओही तरे ओह दूनों का,
कारन-कारज के सम्बन्ध !
तत्तग्यान का—
जानकार लोगन में,
नगद मुकुट का—
हीरा नियर मुनी ऊ;
चमचमात तप-तेज-ग्यान से,
धरत धियान—
जानि गइलन कि,
नाँवरूप के;
जनम देत विग्यान !
नाँवरूप से छव आयतन,
ओह छवो से;
अरस-परस के जानीं !
अरस-परस से भइँलि वेदना
ओकरा कोखी जनमलि टिसुना;
टिसुना से बिसयन के सँगरह,
कसि के पकड़े वाला !
इनसे करमदसा आ पहुँचे,
जेके भव भा लोक कहीं !
तब ऊ मनलन ई निहचय कि,
'भव' से जनम,
जनम का भइले;
पहुँचि बुढ़ापा मउवति आवसु !
नास जनम के होई,
तबे बुढ़ापा मउवति रुकिहन
एह तरे ना !
करम के बड़ भारी लटका,
महाकठिन भवजाल;
जब बिनसी ओरियाई,
तबे जनम के;
होई सकेला नास !
टिसुना के जरि-सोरि कबरले,
एके छन में;
महाजाल बिसयन के,
कसि के पकड़ेंवाला,
बिनसे मिटे बिलाय !
जहाँ वेदना बिनसलि,
मतलब—;
मिटल छाप आ भाव,
सुख-दुख चाहे ना सुख-दुख के;
टिसुना के तब,
कतहीं पता ठेकान रहे ना !
अरस-परस का मेंटले,
बिनसि वेदना जाले निहचित;
अउरी छवो आयतन,
मन आ पाँचो इनिरी;
इन्हिकर भईले नास मजे में,
अरस-परस गायब हो जाला !
नाँव रूप के भईले लोप,
छवो आयतन के छय होला;
एकरा आगे,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जब विग्यान-चेतना-मन के;
सोरिया कबरे होखे नास,
नाँव रूप बस तब मेटेलन!
संसकार-छाया मेंटला पर,
मेंटेला विग्यान!
एह किसिम से मुनिवर जनलन,
एक-एक के;
कारन दूसर-दूसर के!
रहि ना गइलि अविद्या,
दूर भइल अग्यान-अन्हार!
उनकि बोध भेंटाइल,
हाँथे लागल;
ग्यान-रतन-धन हीरा!
बउध होइ ऊ,
निकलि ध्यान से बहरी;
सहज दसा में अइलन
भीतर चाहे बहरी,
उनका के कवनो लोकन में;
कहीं आतमा लउकल नाहीं!
आठ अलंगन बाला,
उत्तम जोग डहरिया धइके;
परम शांति ऊ पवलन!
चउथा पहर देवबेला में,
पह फाटे ले पहिले;
ऊखा रानीं का पहरा में,
रहलि शांति जब;
चल आ अचल सिरिहिटी,
तब ऊ रिखी धियानी;
अविनासी पद पवलन!
उनके, सभ कुछ जानेवाली;
मिललि ग्यान के दइबी जोति!
जब ऊ विमल बउध हो गइलन,
धरती घूमलि;
मद में माँतलि नारि समान,
सीधन का सँग—
दसो दिसन में फइलल तेज;
हँसल अकास नगारा ठनकल,
मगन होइ के;
देवता लोग बजावल!
बरखा बरिसल वे बदरी के,
बहलि बयारि मंद सुखदाई;
असमय बिरिछ गिरवलन,
उनका खातिर;
फूल सुवासित आ मीठा फल!
उनका कुटिया का चउगिरदा,
गिरल सरग से;
सुबरन हीरा मोती,
मनि मानिक आ—
नंदन बन के फूल सुगंधित;
पारिजात मंदार!
नदी तीर का,
विमल शांत जंगल के;
सोभा भइलि बिचित्तर!
जहाँ उगलि कंचन फुलवारी,
चंपा जूही चटक चमेली;
अलवेली बेइलि के!
हरत असोक सोक-चित-चिंता,
कतहीं पाकल तेन पियार!
अमलतास कचनार फुलाइल,
पनसेना पलास गदराइल;
धरती ऊपर चउक पुराइल,
मन के बरबस मोहेवाला!
धन्नि! मधुर वइसाख महीना,
पाख अँजोर पुरनवाँसी सुभ;
विमल चाननी उगलि टहाटह,
सोरह कला साजि के आपन;
चानदेवता खुस हो पूरा,
धरती पर अमिरित बरिसवलन!

जेकर जरि ऊपर अकास में,
डाढ़ि फुलुँगिया फइलल नीचे;
वेद सुघर पतई अनमोल,
जेकरा सुभ सीतल छाया में
कायम बा भूगोल-खगोल!
ओही ग्यान-बिरिछ का नीचे,
बोध-ग्यान के जोति मिललि आ—
सुगति-शांति के डहरि भेंटाइलि!!
जेकर मनवाँ बुड़की मरलस,
गइल छीर-सागर का भीतर;

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पियलस ऊ अमिरित के घरिया,
ओकरे गर में;
परल सुधर मोतिन के माला!
सुरसति के दरबार बिचित्तर,
उनका अइसन;
धीर-थीर-मति,
गुनी धुनी लिखवइया;
सुघर कलमियाँ कलप-बिरिछ के,
नगद दुवाति;
सात सागर के
धरती अइसन कागद लमहर;
तवहूँ ना उजियाइल,
वोधि-त्रिरिछ के;
वउधदेव के,
कथा लिखे में;
उनको हाँथ दुखाइल,
आखिर कलमि धराइलि!
वउधदेव भगवान,
महापुरुष मतिमान;
उनकर कथा अपार,
के करि सके वखान?
कवि का करे कगदही भइया,
ओकर कहाँ खेमाता?
वसी वनल आदति का अपना,
गोदना गोदि रहल बा!
ऊ का जाने,
कवन धान के होरहा होई,
कवन धान के पइया?

जोग-जतन-तप सफल भइल जब,
सिद्धि मिललि मुनिवर के;
ओह समय में,
केहू कुपित रहल ना;
रोगी-पापी,
कतहीं केहू लउकल नाहीं!
पूरन होइ जगत ई,
पवलस सोभा शांति!
नीचे का लोकन में,
जहवाँ वसल रहल जे;
तिरपित भइल खवरि ई पाके!

जइसे सुबरन कमल सुवासित,
देखि सभे के;
मन ललचेला,
तइसे उत्तम -
बिमल जसी इछ्वाकु बंस का,
धरम-ग्यान अवतार रिखी के;
सिद्ध भइल मुनि,
देवतागन आ मगन महरसी
चढ़ि बिमान पर अइलन ओहिजा,
देवे उनके आदर मान!
देवता सिद्ध-महरसी,
छिपले छिपल आड़ से;
ऊँच सुरन से,
उनकर असतुति कइलन सज से!
मुकुत होइ काया-कलेस से,
मुनि ऊ ओह जगहि पर;
बोध-ग्यान पवला का कारन,
मधुर नेह से गदगद होके;
हिरदय भीतर देखत,
किसिम-किसिम का;
जोगासन में,
दिन ओनचास बितवलन!
'कहीं आतमा नइँखे कवनो';
एह विचार-ग्यान-निहचय पर,
मनवाँ के ठहराइ मजे में,
कारज-कारन-तत्त नेम के;
सुबहित जानेवाला मुनिवर,
परमशांति-सुख खातिर;
जग के—
अपना-निरमल;
बोध नजरि से देखलन!
जग के झूठा,
खटकरमी परपंची;
बहुरंगी करमन के,
भारी पचड़ावाला;
काम-वासना-पतित-पापमय,
दूसर—सुगति डहरि के;
वहुते मेंही गूढ़ देखि के,
मुनि ऊ अचल भाव में;
अहथिर होइ ठहरलन!
तव आपन पहिला परतिग्या,
सुमिरन कइ आ—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जग के दुखी देखि ऊ,
महापुरुस मुनि ग्यानी;
सुरस-शांति-उपदेस करे के,
मन में इच्छा कइलन !
जग के बोध-ग्यान देवे के,
बउधदेव के;
मन क निहचित सँकलप जानि,
उनका नियरा, सरगलोक से;
देवता दू गो अइलन !
मुनि के साथी जानि धरम के,
पहुँचल पुरुस समुझि के उत्तम;
दूनो देव बहुत आदर से,
उनकर असतुति कइ के,
रुचिगर धरम बचनियाँ कहलन—
"का दुनियाँ के
भागि जोग नइँखे अइसन कि;
राउर चित अति कोमल,
सहज दया के सागर;
बेचारा दुखिया जीवन के,
रोवत बिलखत देखत नइँखे ?
धरम-सखा हे !
जग के डहरि देखावे वाला;
हाय ! धरम-रथ-पहिया कब के,
धँसलि पाँक हबसा में;
अब एकरा के बहरी घींचीं,
डहरि धरा डगराईं रथ के !
हे भवसागर के लँघवइया !
दुख-कलेस से,
दुनियाँ के उद्धार करीं !
जइसे कि उदार-चित,
धनी लोग धन के बाँटे ला;
तइसे रउरा,
अपना गुन के बाँटीं !
एह जगत भा सरगलोक में,
लोगवा बहुताँ;
चाहसु पूरा कइल सवारथ !
कारज करे जगत का हित के,
अइसन लोग बहुत दुरलभ वा !"
एतना कहि के दूनो देव,
जइसे पहिले आइल रहलन;
उड़ि के उहे डहरिया धइलन,
जगमग सरगलोक के गइलन !
मुनिवर जग का,
सुगति शांति हित खातिर;
आपन मन-चित-नेह लगवलन !
देखि-विचारि सुदिन सुभ मोका,
दसो दिसन के देवता आके,
उनके केतने बरतन दिहलन;
माँगि मधुकरी पावे खातिर !
ओह सभन के मुनिवर,
प्रेमभाव से धइलन !
ओही समय डहरि के धइले,
कहीं जात बनजारा दल के;
दूइ सेठ सेसर तब आके,
विनय-प्रेम से पूजा कइके;
मुनि के पहिली भिच्छा दिहलन !
मुनि अराड़ या उदरक दूनो,
'एह धरम के;
जाने-माने लायक रहलन,
बाकी अब ऊ नइँखन;
तन के छोड़ि सरग के गइलन'—
अइसन जानि मुनी ऊ,
उरुवेला का वन में;
निरंजना का तीरे,
करत साधना-जोग-जतन तप;
पाँचो साथी संन्यासिन के,
मन में सुमिरन कइलन !
जग के वा जे छोपले तोपले,
वड़ बीहड़ अग्यान अन्हार;
चारो भरले,
ओके खेंदि मेंटावे खातिर;
अनगुतहाँ का सुरुज नियर मुनि,
बहुत परीव भीमरथ वाली;
धन्नि सुघर नगरी के;
धरम भाव से जाये लगलन !
तब गजराज नियर सुभ,
सहज शांत धीमी गति;
कन्हिया सिंह नियर वाला ऊ,
कासी जाये का इच्छा से;
अपना देहियाँ के घुमाइ के,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बोधि-बिरिछ पर,
अप्पन सवतुक सरधावाली;
पोढ़ नजरि सुभ डललन !
उरुवेला से,
निरंजना का—
बहता निरमल जल से;
धरमी गावँ नावँ सेनापति,
तहवाँ का भगतन से;
बोधि-बिरिछ पीपर से,
राइ-सलाह लेइ के;
चिक्कनि ग्यान-डहरिया धइले,
बोध-ग्यान के;
सुबरन-दिया तरहथी पर ले,
बउधदेव अब डेग बढ़वलन;
धरम-ग्यान के परम पवित्तर,
सुरस सनेस सुनाइ समय पर;
सुगति-शांति सुख देबे वाली,
कासीपुरी ग्यान-तीरथ के !
सवतुक ग्यान-डहरि से चलि के,
जिनिगी का पैंतिसवाँ बरिसे;
बउधदेव जी,
गइलन नया नगरिया;
जहाँ टँगइली किसिम-किसिम के,
नया-नया तसबीरि !
कूँची कलमि उठाके,
समय भीति पर रंग चढ़ा के;
ई तसबीरि उरेहे वाला,
बउधदेव भगवान;
जग के, अपना—
मधुर धरम-उपदेस-ग्यान से,
सरग समान बनवलन !
दुख-कलेस भागल धरती से,
कल से पोंछि दबा के !
बहुते लच्छनमान बुझनउक,
लगन नेह सरधा के सेवक;
अइसन चतुर मेहनती माली,
उनका नियर समय से पाके;
चहकि उठलि फुलवारी !
परकिरती का,
कठिन भेदमय दूर नगर से;
नया विहान, नया दुनियाँ के,
मधुर सनेस सुनावे-;
सघर सरूप देखावे वाली,
ऊरवा देवी आके;
खेदि अन्हार उँघाई आलस,
कले-कले सभई के;
कइली सजग जगवली !
नवतुन जग के पहरा आइल,
मनमोहक बसंत लहराइल !
नंदनवन उतरल धरती पर,
किसिम-किसिम के फूल रँगीला;
सत्त-अहिंसा दया धरम के,
बेइलि, चंपा चटक चमेली,
कुंद मालती जूही;
समय पाइ मुसकइलन ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कासी-पयान

जोग जतंन तप-साधन आपन,
सज से पूरन भइले;
शांति मिललि मुनिवर के !
ओह समय पर,
जदपि डहरि धइ;
सुगत अकेले रहलन जात,
तबहूँ अइसन सोहत रहलन;
मानो उनका पाछा-पाछा,
भीड़ि चलति होखे लोगन के !
आगे कहीं डहरि में,
निरमल हिरदय वाला;
मिललन 'उपक' संत आजीवक;
मन-चित विमल तेज तन चमकत;
पहुँचल संत पुरुस के देखि;
हाँथ जोरि ऊ विनय भाव से,
एह किसिम के बतिया कहलन—
"जीवन-मुकुत संत हे !
जे चपटल बिसयन में बाड़न,
पाजी हठी ढीठ इनरिन के;
जे बनि दास पाछ धइ घूमत,
ओह सबहुआ;
संसारी जीवन का बीच,
रउरा इनिरीजीत होइके;
जग के जीतेवाला,
आतम-ग्यानी बानीं !
सरद-पुरनवांसी का,
चान नियर मुँहवाला;
उत्तम शांति-तेज से जगमग,
राउर हिरदय निरमल शांत;
बरत लिलार, शांति टपकति बा,
झलक रहल बा अंग-अंग से;
बोध-ग्यान संतोख !
तप का धपकत विमल तेज से,
तत्तन के जनवइया;
ग्यानी संत समान,
सोभा पावेवाला रउरा;
निहचय इनरिन के मालिक बनि,
उनके बस में रखले बानीं !
हे बड़भागी संत ;
आपन नावँ बताईं का हऽ ?
कवना गुरु से,
पवलीं अइसन उत्तम सिद्धि ?
बड़ी दया होइति हमरा पर,
कहितीं आपन सुभ महिमा जो !"
भगतन के बड़ नेही-छोही,
आदरमान करइया भगवन;
एतना वचन साधू के सुनि के,
उनका बोध सदुर सुख-खातिर;
थोरे, बाकी—
साच भलाई वाली बतिया,
प्रेमभाव से कहलन !
"केहू नाहीं गुरु हमार,
नाहीं केहू आदरवाला;
ना निंदा का जोग ;
हम निरवान सुगति पद पवलीं,
सेनापति सरदार धरम के;
हमरा के तूँ जानऽ !
असल जवन कुछ जानल चाहीं,
हम ओकरा के जनले बानीं;
कठिन-साधना-तप-समाधि से,
जेके दूसर जानि सके ना !
दुसमन नियर दुखन के जितलीं,
एही कारन से हमरा के;
लोग सुभावन 'बुद्ध' कहेला !
'विद्या-ग्यान-साधना-तप के,
जहाँ उगल गहगह फुलवारी;
सरधा-सुमति-सुगति-साधन के,
रंग-विरंगा फूल-निराला;
कले-कले मुसकात विनयबस,
अपना सहज-सुगंध-मधुरता;
मोहक सोभा सुघराई से,
बरबस ध्यान लोग के खींचसु !
जहाँ हंस का पिठिया बइठल
सुरसति खश हो बीन बजावति,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रस से सराबोर सातो सुर,
मधुर छतीसो राग-रागिनी;
सुना प्रेम-बस,
गाहँक-गुनी धुनी लोगन का;
मनवाँ के ललचावति !
गंगा-वरुना का संगम पर,
जहवाँ केतने संत सिरोमनि;
मनी महरसी तपसी साधक,
पंडित निपुन विचारक ग्यानी;
सरधा भगति विनय के मूरति,
बहती बिमल-ग्यान-धारा में;
बुड़की लगा ध्यान में लीन !
सुगति-मुकुति का—,
ओही जनम धरतिया;
परम पवित्तर,
कासीपुरी धरम-नगरी में;
बजा नगारा शंख धरम के,
बिमल शाँति-सुखदाई;
सवतुक सुगत-शील के,
नया धजा फहरावे खातिर;
जाइ रहल बानीं हम घूमत,
देखत-ताकत, समझत-बूझत;
दुखी लोग का रइछा खातिर,
बहुमत जनता का हित-साधन;
शांति-चैन-सुख खातिर !
नाहीं अपना देंहज सुख भा—
जस-आदर का प्रिय इच्छा से !
तरह तरह का कवलेसन से,
दुखी देखि लोगन के;
बोध-ग्यान पावे ले पहिले,
हम परतिग्या कइले रहलीं;
'कि अपने जब,
मुकुत होखिलीं पहिले;
मन के अइँठलि, गँठिया खोलीं,
सुगति परमपद पाईं
तब लोगन के मकुत बनाईं,
इनकर दुख के बान्हन छोरीं !
अपना लाभ-सवारथ खातिर,
धन-दउलति जे जमा करेलन;
उनकें हीन मलिन-मति,
दुरजन जानीं;
सुभ समाज-मंदिर के,
आगि लगा के फूँके वाला !
महापुरुस लोगन के संपति,
निहचय संचित होले;
धरम-सुमारग खातिर !
बहत जात धारा में,
दुखी परानी के जे;
ना बहरी कइ सके जतन से,
ओके वीर पुरुस मति जानी।
संपति से जे,
तिरपित कइल गरीबन के ना;
ओकरा के जनि दाता मानीं !
रहि के अपने सुखी निरोग,
सुघर सहज साधन से;
रोग-बेयाधि-बिपति से बेकल,
पीरा सहत दुखी जीवन के;
करे के दावा-बीरो चाहीं,
अपने धरम-सुमारग पर चलि,
पकड़ि कुराह चलत मूढ़न के;
उत्तम डहरि धरावल चाहीं !
जइसे दीया बरते तुरते,
हटे अन्हार लुकाय बिलाय;
ओही तरे सुमति जब आवे,
होखे सूध अँजोर टहक्का;
शांत बिमल हिरदय-मंदिर में,
बिसय-वासना ना रहि जाय !
जइसे अगिनि काठ में,
पवन अकासे;
धरती भीतर जल के,
होखल निहचित बाटे;
ठीक तइसहीं,
कासी में उपदेस धरम के;
ग्यान गया में जानीं !"
एकरा बाद अघाइल मन के
भिक्खु मने मन करत बड़ाई;
हाँथ जोरि के,
सरधा नेह बिनय से;
बउधदेव के माँथ नवावत,
लवटि डहरिया धइलसि आपन;

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बार-बार पाछे के ताकत !
आगे बढ़ला पर तब,
बउधदेव जी;
ओह पुरी कासी के देखलन,
जवन ग्यान के खानि;
आइ मिलसु जेकरा से,
गंगा बरुना दूनो;
हिरदय खोलि करत बिनती नित,
छोहनि पकड़ि कमल चरनन के;
विमल-भाव-जल डालि पखारत,
मानों मिलि के भेंटति होखसु;
दू गो सखी एक दूसर के !
सुघर सघन हरियर फेंड़न से;
सजल घेराइल चारो भर से;
सुरुज समान जोति से जगमग,
मिरिगदाव के गइलन मुनिवर;
जहाँ मुनिन के रहल आसरम,
परम पबित्तर शांत तेजमय !
रहनिहार ओइजा के,
महानाम कवड़िन्न अश्वजित्;
भदरजीत आ वासप,
पाँचो धीर संत संन्यासी,
बउधदेव के देखि, बटुरि के;
आपुस में बतियवलन—
"मुनि गउतम ऊ,
एहिजा आइ रहल बा;
ओह डहरि छोड़ेवाला के,
हमनीं का उठि;
नाहीं कबे करे के,
आदर भाव पलग्गी !
देहियाँ पोसेवाला,
इनरिन के गुलाम ऊ;
तप से थाकि पराइल !
जब ऊ पहिले बोली,
तब हमनो का बोले के !
काहें से कि,
सेवा कइल अतिथि पाहुन के;
उत्तम आरज धरम सनातन,
चाहे ऊ जइसन हो !"
अइसन निहचय कइलो पर जब,
कले-कले मुनि नियरा अइलन;
उनके देखि तुरंते पाँचो,
आपन पहिला निहचय छोड़लन !
सभई कइल पलग्गी,
केहू उठि के धइल कवँडल;
केहू खप्पर थाम्हल,
केहु चीवर लेके राखल;
केहू पाँव पखारे खातिर,
पानी लेके पहुँचल !
केहू झारि-बहारि बिछावल,
बइठे खातिर आसन !
एह क़िसिम से,
पाँचो मुनि ऊ;
सेवा उनकर कइलन,
बाकी नाँव पुरनका धइके,
बतियावल बोलल ना छोड़लन !
अइसन देखि तथागत,
ओह लोग पर;
दया करत कुछ कहलन—
"भिक्खु लोग हे !
तीनि गुनन से तीनि काल से,
मुकुत-पुरुस के;
पहिले नियर अनादर से ना,
नाँव लेइ के;
कबे पुकारल चाहीं !
पूजा आदर जोग बड़न के,
आदर-हीन सबद कइला से;
कहवइया के,
होला भारी पाप !
जब कि हमरा खातिर,
आदर-मान बड़ाई-निन्दा;
सभ बा एक समान,
बाकी तवहूँ;
उत्तम धरम डहरिया,
छोड़ि भरम में भूलल भटकल;
रउरा सभ के,
मोह छोड़ावल चाहत बानीं !
जवन आदिमी,
नाँव गुरू आ-
सरधा पूजा जोग बड़ के;
सहज धरे पुकारे ला जी,
ओकर धरम नसाला !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जइसे माई-बाप दूइ के,
तिरसकार कइला से;
धरमबाल-बच्चन के,
बिनसे चउपट होखे !
एह तरह से बकता मुनिवर
दया भाव से भरल चित्त से;
ओह लोग के,
दिहलन उत्तम सिच्छा !
बाकी मोह भरम का कारन,
मुनि के सुघर सिखावन;
ओ लोगन का,
मन के भावल नाहीं !
अउरी उलटे कहलन जा कि,
"हे मुनि गउतम !
तूँ तत्तन के जानत नइँखऽ,
तप-साधन के छोड़लऽ;
जबकि ऊ पद,
तप से पावल जाला !"
ओह लोग के,
अइसन बतिया सुनि के;
सेसर बकता,
मुनी तथागत कहलन—
'तप ले दूसर तत्त बोध ह,
लोग मूढ़ता का कारन जे;
तन कलेस के,
हठ से तप समुझेलन,
चाहे बिसयन में जे लीन;
दूनो दल ऊ,
गलत डहरिया धइले बाड़न !
एह तरह से,
मुकुति-परमपद मिले कबे ना !
जब देहियाँ अग्यानी जन के,
सीदति सासति बरियाई का;
जोग-जतन हठ तप-साधन से,
झटकि-सूखि के जरजर होले;
चित्तो उनकर तब हो जाला,
चंचल आ बेहोस !
ओह चित्त से होइ सके ना,
कुछ बेवहारिक ग्यान;
तब ओ परम तत्त के कइसे,
होइ सकेला बोध ?
जवन परानी,
बा अँजोर के चाहेवाला;
ऊ अन्हार के,
पानी से भेंवे के;
बेमतलब के जतन करे ना !
सहज ग्यान से बिनसेवाला,
भीतर के अग्यान;
तन का कठिन करम से,
तप-सासति-फजिहति से;
कबे दूर होई ना !
लकड़ी में के आगि,
लकड़ी के चिरला फरला से;
मिली न परगट होई !
बलुक अकिलि से,
जतन-जुगुति से पावल जाले !
ईहे हालि ग्यान के जानीं,
ऊहो जोग-जुगुति संजम से,
नेह लगन से;
पावल जाला !
काम वासना में लपिटाइल,
चपटल आ लवलीन;
पुरुसन के चित हरदम,
धूरि गंदगी से अन्हार से;
बरबस ढँकल रहेला !
एही से तेयाग से,
संजम नेम जतन से;
मिले भेंटाएवाला,
सुगम डहरिया पर ना जाय !
कइल कुपथ सेवन जे रोगी,
ओकरा रोग छुटे ना !
एही तरे भोग में चपटल,
फँसल लीन मानुस के;
कठिन रोग अग्यान,
कइसे होइ सकेला दूर ?
पाइ हवा लकड़ी के,
अगिनि शांत ना होले;
बलुक अधिक लहकेले,
तब रोगी लोगन के;
इच्छा-काम-वासना चिंता,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सुख-सुमिरन लालच टिसुना से;
जेके राग कहल बा,
भीनल मन-चित कइसे;
होइ सकेला सांत ?
एही से हम भोग-राग के,
तप-कलेस-हठ कठिन त्याग के;
दूनों मारग टेढ़ देखि के,
विचिली सुगम डहरिया धइलीं !
जे दुख झंझटि के मेंटाइ के,
सुखवो ले ऊपरि बा !
सवतुक दीठि रूप सूरुज से,
मतलब नगद ग्यान से;
एह डहरिया होत अँजोर !
राग-दोस आ,
मार-काट हिंसा बदला से;
दूर; ठीक सँकलप के,
सुघर तेजरथ;
एहि सुगम डहरि पर,
चलत मजे में !
सूधं भाव वाला ई मारग,
भरल सुघर सिच्छा से;
ठीक वचन में,
ठहरि करे आराम;
भाव असल कि,
चुगुली झूठ, कठोर बचनियाँ;
बे मतलब बकवास,
दूर होइ इनका से;
मीठी बानी बोलि प्रेम से,
पावे ला सुख सांति !
आगे बढ़ि के,
ठीक करम का फुलवारी में,
धीर-धीर हो करे विहार !
ठीक जीविका,
बूझी एकर मतलब;
सवतुक जियका जीये खातिर;
विना दोस के भोजन एकर।
ठीक जतन, इनरिन के संजम,
बुरा भाव के रोकल;
नीमन भावन के अपनावल,
उनके कायम राखि जोगावल;
इनके सेवक जानीं एकर !
ई सभकर सिरताज,
सभ साधन के राजा !
बहुत चुहिलगर,
ठीक इयादरूप नगरी में;
अछय शांति पावेला !
अउरी सुनी ध्यान से,
सुगम डहरिया ईहे;
चित के बान्हि बटोरि मजे में,
मन का मल विछेप के धोइ;
ठीक समाधि रूप सेजिया पर,
पूरा सुख से सूते ला !
ई हऽ सुगम डहरिया विचिली,
तीनों लोकन में सरनाम
आठ अलंगन वाला जोग !
एकरा साधन से लोगन के,
जनम बुढ़ापा मउवति वाला;
रोग रूप दुखवा छूटेला !
एह जगत् के जीवन,
दुख से भरल-पुरल बा !
दुख कलेस के कारन बा कुछ,
दुख से निहचय पिंड छुटेला;
होला ओकर नास।
सोरि उखारि दुखन के;
उनका अंत करे के,
मजिगर जतन डहरिया बाटे !
सवतुक एह चारि बतियन के,
सुबहित बोध भइलके;
सुगति परमपद के कारन बा,
जेकरा के हम;
अपना आँखिन देखले बानीं !
जनम, बुढापा, मउवति रोग
कुरुवारन सरसाती धाती;
दुहुट जबूनन के सँग साथ,
मेली मीत पिरीव लोग के;
मोह-विछोह वियोग,
उपजे वाला एह दुखन से;
जग के मानुस दुखिया बाड़न !
सुनीं; अगिनि के,
छोट रूप चिनगारी;
दहन करे जारे ले,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बउधदेव के,
ग्यान-सुजस सुनि;
आरत हो पछताये लगलन,
हथवा मले लजाये लगलन—
"कइसे छुटी हमन के करिखा,
मुहवाँ कवन देखाइबि जा?
लागल-पाप-कलंक धोइ के;
बोधि-ग्यान कब पाइबि जा?"
समय पाइ ओहू लोगन का,
मन में बोध भइल कि;—
जे आगे बढ़ि—,
बउधदेव के;
गुरू मानि अपनाई,
उनका सरन समाई;
बोध ग्यान के गमकि पवित्तर,
देस-देस पहुँचाई;
सील-सांति संजम के,
सुघर सोनहुला;
धरम-चिराग बारि घर-घर में,
नया जोति फइलाई;
उहे सुजस-सुख पाई,
सभके सुखी बनाई;
सच्चा साधु कहाई,
ओकर नाँव अमर हो जाई।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चेलन के सिच्छा

भगति भाव से भरल लबालब,
छलकत हिरदय-रूप कटोरा;
नेह लगन सरधा से पूरन,
लउकल पाँचो मुनि के !
मुनि गउतम दिहलन उपदेस,
सत्त-अहिंसा दया धरम के;
मंगल-मधुर सनेस !
अपना भारी महिमा से ऊ,
पाँच भिक्खु लोगन का बीच;
जग जाहिर हो सोभा पवलन,
जइसे तारन बीच चनरमा !
सत्त-अहिंसा दयाशील का,
चिक्कनि राज डहरि पर;
पहिला चक्का घुमल धरम के;
निकलि पाँक-हवसा से !
भारत माई हँसलि ठठा के,
गज भर छाती भइलि खसी से !
धन्निदेस भारत हमनीं के,
जहवाँ जनम पाइ मानुस के;
ग्यान सोहारी भगती पूवा,
भगवत-सेवा काजू-किसमिस;
भजन भाव सजगर अंगूर
पावे खातिर सभई तरसे;
देवतो लोग सिहकते बाड़न !
बहुत दिनन ले,
धरम-ग्यान नगरी कासी में;
छवले रहलि अन्हरिया राति,
ओकर दिनवाँ फिरल भागबस;
सरद रीतु का,
पूरनकला पुरनवाँसी के;
दूध समान अँजोरिया,
अवसर पाइ टहाटह ऊगलि;
मुकुति-बोध अमिरित बरिसावत,
जीवन-दान देत जीवन के !
विद्या विनय ग्यान के,
मुरझाइलि फुलवारी;
रस के पाइ रसे-रस,
लह लह भइलि पनफि के !
अश्वजीत, कवड़िन्न वोगएरह,
पाँचो तपसी पंडित;
ग्यान-जोति सुभ पाके
खुस हो माँथ मुड़वलन !
सत्त-अहिंसा चीवर पवलन,
दया-सील संघाटी;
सिच्छा सुभ अनमोल नया कि—
"बहुमत जनता का सुख खातिर,
नित कयलान भलाई खातिर,
धुनि के पक्की डहरि पकड़ले,
भिक्खु भाइयो ! चलते रहिहऽ !
तोहके लउकी दूइ डहरिया,
दूनो में दुख भाई;
पहिल डहरिया,
कठिन-साधना;
तप-समाधि-अरचा पूजा के,
दूसरि मोहक बिसय-वासना;
अनघा सुख-सिंगार के,
तीसरी डहरि बतावत बानीं;
ना अति दुख के,
ना अति सुख-सिंगार जलसा के;
समझि-बूझि जे डेग बढ़ाई,
ऊहे विजय-धजा फहराई !"
एक समय कासी के,
एगो सेठ, नावँ 'जस' जेकर;
दुख-दोचित उदास हो,
नावँ-सुजस सुनि बउधदेव के;
पहुँचल उनका पास !
लोगन का दोसन के,
अउरी मन के;
भाव भीतरी जानेवाला,
मुनी तथागत;
ग्यानी संत सिरोमनि,
शांति-भाव से जस से कहलन—
"सुगति मुकुति के,
कवनो खास समय ना होखे;

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एही से तोहरा खातिर तऽ,
उचित इहे होई कि;
'तू अब सुगत होइ जा।"
फइलल सुजस देस में जेकर,
ओह मुनी गउतम के;
रस से भरलि ग्यान के बतिया;
सुनि के जस के,
अइसनि सांति भेंटाइलि,
जइसे तपल कड़ेर धूप से;
केहू राहगीर बड़भागी,
पावे विमल नदी-जलधारा!
ऊ कुलपूत सेठ जस,
गिरहस्तो रहला फर;
पहिला संचित जतन जुगुति से,
घट्ठा परले कान्हि मलइले;
जीवन-मुकुति देंहि से,
मन से सूध बउधता पवलन!
जइसे धोवल उज्जर कपड़ा,
कवनो रंग से तुरत रंगाला;
तइसे ऊ सपूत कुल दीपक,
निपुन सेठ जस;
सुनते-सुनत खुसी से सहजे,
सवतुक साच धरम के मनलन;
सेसर बकुता बउधदेव जी,
जाने लायक;
साच धरम के जाने वाला,
अपने पूँगि सफल हो;
अउरी आपन,
देहि भेख पहिरन पोसाक,
अपने आप लजाये वाला;
'जस' के भाव जानि के कहलन—
"चाहे केहू,
गहना सुघर पहिरले होखे;
चाहे आपन माँथ मुड़वले,
बाकी जे वा समदरसी आ—
छव इनरिन के जीतेवाला,
उहे धरम के;
माने पाले जोग;
खाली भेख-निसान, धरम के;
कारन कबहीं होखे नाहीं!

तन से घरवा छोड़ि अलग हों,
जंगल में रहलो पर;
जे मनवाँ से,
इनरिन का बिसयन के;
सुमिरन करत रहेला,
ऊ गिरहस्ते मानल जाला!
तन से घरवा ना छोड़लो पर,
जीति मोह ममता के;
मन से सजग भइल जे,
इनरिन के बस में राखेला;
ओकरा के, विदमान कहेलन,
घरवा में रहलो पर,
बनवासी बयरागी!
एह तरह से सीधि पाइ के,
इरिखा के जरि-सोरि कबारि;
भिक्खु कहीं कवनों आसरम में,
रहि के मुकुत कहाला!
जइसे राजा,
दुसमन का सेना के;
जीते का इच्छा से,
धारन करे कवच के;
ठीक तइसहीं,
जीते खातिर;
दोसन का सेना के;
धारन करे भेख के भिक्खु!
तब मतिमान महरसी गउतम,
कहलन जस से—
"एहिजा आवऽ भिक्खु,';
एतना सुनि के ऊ कुलपूत,
घरवासी का ओही भेखे;
गइलन मुनि का पँजरा!
उनका साथे,
उनकर चउवन मीत पहुँचि के;
चेला भइलन मुनि के,
सवतुक साच धरम के मनलन!
सोड़ा लागल कपड़ा,
फिचले होला साफ;
ओही तरे पुरुब का संचित,
पुन्नि करम से धोवल;
सतसंगति का कारन ऊ सभ,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शुद्ध साफ हो गइल ग्यान पा!
ओ चेलन में
जीवन-मुकुती पावेवाला;
आठ पहिल चेलन से,
आदर सेवा पाके;
जीवन-मुकुतन में सेसर ऊ,
मुनिवर गउतम कहलन—
"सुनऽ भिक्खुओ!
तोहनी लोग सफल भइलऽ जा,
दूर चहेटि दुखन के!
जवन लोग दुखिया वा अबहीं,
ओह लोग के;
सेवा-मदति करऽ जा!
अब तोहनीं का,
दुनियाँ भर में सगरे;
अलग-अलग हो सुखी सुतंत,
टहरऽ घूमऽ;
धरम-डहरि के,
चिक्कनि सोधि बनावऽ जा!
दयाभाव से पूरन होके,
बेचारा दुखियन के;
नित कयलान करऽ जा!
मद में चूर सिद्धताई का,
कश्यप-भाइन के झुकाइ के;
बोध करावे करे सुधार,
अब हम जाइबि गया-धाम के;
जहवाँ बाटे,
राजरिखिन के बास अड़ार!
तब ऊ भिक्खु लोग सभ,
जिनका रहल तत्त के बोध;
हुकुम पाइ के गइलन अंते,
जहाँ तहाँ चउतरफा;
देस-देस का,
नगर धाम-गाँवन में!
एने हो निहचिन्त तथागत,
धइलन डहरि गया के!
चलते-चलते,
पहुँचि तपोवन भीतरु मुनिवर;
ओहिजा बास करइया,
तप का मूरति;
उत्तम मुनि कश्यप के देखलन!
तब पहाड़ भा बन में कतहीं,
ठहरे लायक रहलो पर ऊ;
मुनी संजमी गउतम,
कश्यप रिखि से;
ठहरे खातिर जगहा मँगलन!
तब रिखि कश्यप,
इरिखा का वस;
उन्हुके मारे का इच्छा से,
जग्य-हूम-मंडप का भीतर,
वास करे के जगहा दिहलन;
जहवाँ एगो,
विखधर काला नाग भयंकर;
बहुत दिनन ले,
रहे, रहत आसन जमाइ के!
देखि मुनि के,
निरभय सांति भाव से बइठल;
महासरप खिसिया के,
विख के लहरि उगिललस!
ओह खीसि से माँतल,
विख का अगिनि-लहरि से;
लागलि आगि जग्यशाला में,
बाकी अगिनि डेरा के;
ओ महातमा का देहियाँ के,
छुअबो नाहीं कइलस!
जानीं जे जइसे कि—
जवना घरी कलप के,
होत रहे ला अंत;
जरि जाला संसार समूचा
तबो पितामह बरम्हा;
सुख से बनल रहेलन!
ओही तरे महरसी गउतम,
भइले भसम जग्यशाला का;
अपना तप का बल पर,
सकुसल ओहिजे सोहत रहलन!
महासरप तब,
देखि मुनि के;
निरभय सांत होइ के बइठल,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अचरज में परि,
डर से काँपि पलग्गी कइलस !
मोहित भइल तेज से मुनि का,
खप्पर में जा बइठल कल से !
"अरे ! जरल संन्यासी,
संन्यासी जरि गइल हाय ऊ;"
अइसन मानि दुखी हो,
आँसु दया के भरले;
छलछलात अँखियन में,
ओहिजा के सभ आसरम वासी;
हल्ला-कूह मचवलन !
बीतलि राति, बिहान भइल जब,
ऊ मुनि गउतम,
खप्पर भीतर बइठल,
महासरप के लिहले,
सांति भाव से,
कले-कले मुसकात;
मुनि कश्यप का पास पहुँचि के,
उनका के देखलवलन !
तब ऊ मुनिवर,
तपेसरी ग्यानी गउतम के;
विमल तेज परताप,
अचरज सहित परगटे देखलन;
तवहूँ अपना ले वेसी ऊ,
गुनी निपून दुनियाँ में,
केहू के ना मनलन !
अति कोवँर-[illegible],
सहज [illegible]था के सागर;
[illegible]ापुरुस मुनि गउतम,
[illegible]ुन कश्यप के जानि विचार;
जतन अनेकन कइके,
उनका मनके पाप;
माँजि धोइ के दूर भगवलन !
आखिर मुनि कश्यप तव,
वउधदेव के;
मनलन बढ़ि उत्तम अपना ले !
अउरी उन्हुका,
तप महिमा से हारि मानि के;
सुगति धरम में नेह लगवलन !
पुरुब जनम का,
संचित सुभ करमन से;
भाग उदय हो गइल समय से,
जानि जथारथ समय ग्यान के !
उरूबेल कश्यप महराज,
अपना चेलन सहित पाँच सइ ;
बउध-धरम अपनवलन !
नदी-गया काश्यप तब दूनो ,
उनकर छोट दुलरुवा भाई ;
निपुन जेठ भाई के अपना ,
देखि सुपथ पर चलत प्रेम से ;
धइलन उनकर पाछ खसी से !
बढ़ि के कंठी जटा उतरलन ,
माँथ मुड़वलन चीवर पवलन ;
सुगति-धरम के डहरि पकड़लन !
एक समय संजोगन ,
गयासीस परबत पर कतहीं ;
लागलि आगि भयावनि ,
केतने जीव जंतु जरि गइलन
केतने जान बचवलन भागि !
बउधदेवजी ,
तीनों काश्यप भाइन का संग ;
भिक्खु लोग के;
जरत पहाड़ देखा के;
मुकुति-धरम के,
दिहलन सुभ उपदेस !
सभ दुखिया लोगन के,
नगद भलाईवाला ;
सवतुक वोध-सनेस !
"परबत के ई ऊँची चोटी,
जरति अगिनि से तइसे ;
लालच, खीसि, मोह ममता मद,
टिसुना डाह सोग का भीतर ;
तइसे सभ संसार ;
जरि के होत खँगार
सांति- ग्यान आ-
अगुवा विना जगत ई
रोग बुढ़ापा मउवतिया से,
बार-वार बिनसेला !
बहुत किसिम का,
दुखरूपी अगियन से;

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बहुते चतुर महाउत होई,
ऊहे बइठी पीठी एकरा;
कसि के आँकुस देई!
टिसुना बिखधर काली नागिनि,
डँसलसि जेके;
ओकर कुसल कहाँ ले होई?
एकरा बिख के लहरि चढ़े जब,
तन मन दूनो के भारी दुख;
सासति दुरगति करे नचावे,
घुला-घुला के मारे!
टिसुना जे के घाही कइलसि,
ऊ गरीब बेचारा;
अपना भीतर के बल खोवे,
तेज नसावे;
गड़हा में गिरि के चिचिआय!
पाके बार दाँत सभ टूटे,
जोति आँखि के चउपट होय;
कान सुने ना,
हाँथ गोड़ काँपे बल थाके;
तबहूँ टिसुना,
मस्त जवानी पाके;
चुरगे चहके मटकी मारे!
नया गुँजरिया नियर चोन्हाइल,
रसिक रूढ़ बूढ़न के,
नाँच नचा लतिया के;
अंते सरके करे सिकार!
अइसन लत्तर हऽ टिसना के,
जेकर सोरि पताले ठेकलि;
केतनो खोदखाद कइला पर,
जनम-जनम ले;
एकर जरि टूटे ना!
कारन बा कि;
एकर डापुट बीया,
आइल-गइल देंहि धइ भोगल;
गरभवास दुख हलकानी के,
लटका ना ओरिआए देले!
अइसन किला बनल टिसुना के,
जेकरा भीतर फउदि भरलि बा;
छापामार निपुन चतुरंगी,
लालच खीसि मौह ममता के!

विरले केहू वीर बघेला,
जामल मँहतारी के लाल;
आगे बढ़ि के जे एकरा के,
हुरपेटल धकिआवल;
कमर बान्हि तेगा सरिया के
धीर थीर हो;
बजनी बाजि पछारल!
हिम्मति बान्हि सज़ग रहलो पर,
ए से लड़ल सहज मत जानीं!
के ना परल जाल में एकरा,
कल से घुसुकि गइलि जब पँजरा;
ढीलि मोहिनी माया आपन,
ताल ठोंकि के हाँथ मिलवलसि;
तिरछी नजरि मारि मुसुकाइलि,
जादू टोना कइलसि!
अउरी केतने सहकल,
परिकल गोइयाँ लाल जुझवलसि!
फाँड़े बान्हि कलेवा साहस
ए के जीतल पहिला काम!
कवन लँगोटा जँघिया पहिरबि,
दाव-पयँतरा पेंच भिड़ाइबि;
धरबि तेज हथिआर हाँथ में,
कवना नगद जतन से जीतबि?
हरजाई पाजी टिसुना के,
मुसुक बान्हि के ढाहबि;
झोंटा पकड़ि उखारबि!
आगे इहे बताइबि सभ के,
बउध धरम का हरियर कंचन;
आठ डहँगिअनवाला,
कलपबिरिछ के;
सज तसवीरि उरेहि देखाइबि!

आलस छूटल हटल अन्हार,
भागल भरम कुहेस!
मुनिवर तेजवान परतापी,
बउधदेव सुरुज बनि उगलन;
आँखि खोलि सभई उठि बइठल,
भइल अँजोर टहक्का!
एका-एकी लउकल सभका,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

धँसल-धरमरथ-चक्का !
सभई कसि के जोर लगावल,
रथ खींचल टकसावल;
नाहा-गज-पुट्ठी तक डूबल,
रथ-चक्का हुबसा में;
निकलि तुरंते ऊपर आइल,
धोवल गइल साफ हो डगरल;
चउरस सिजिल सड़कि पर !
चतुर सारथी बउधदेव जी,
सजग होइ के रासि पकड़लन;
हाँकि धरमरथ आगे बढ़लन !
आगे-आगे रथ के घोड़ा,
पाछे लोग हजारन;
डेग बढ़ावल,
होइ मगन मन;
मजगर चिक्कन डहरि पाइके !
भूलि डहरिआ,
जे भटकल अन्हुवाइल;
ऊ राही अब सम्हरल,
ओके संगी साथी मिललन;
सुघर पड़ाव भेंटाइल !
मिलल कलेवा पुरहर सजगर,
बइठि बिरिछि का सघन छाँह तर;
ऊ ठहकल सुहताइल,
चिंता छोड़ि जुड़ाइल;
सुख धीरज के साँस लिहल सुभ !

धरमे से समाज कायम बा,
धरम रीढ़ तन के समाज का
विना धरम के,
दुनियाँ ठहरे नाहीं।
एह धरम-मंदिर के,
पहिली सीढ़ी सरधा।
देखि सील सुकरम सुभ,
सरधा जनमें जागे;
बढ़ि के पोढ़ बनेले।
सभई का हिरदय में,
सरधा खातिर जगहा चाहीं।
पहिली सीढ़ी पर सरधा का,
जब केहूके डेग पड़ी तऽ;
समय पाइ ऊ बढ़ी जरूरे,
आगे वाली;
नगद करम-सीढ़ीं पर !
निरमल सरधा धारा,
आगे चलि के;
मिललि प्रेम से,
जइसे गोमुख से आ
भागीरथी अलकनंदा से
मिलि के देवप्रयाग बसवलसि !
दइबी दया नेह का करते,
बहलि सुभावन;
ठीक तइसहीं,
भाव-भगति के;
परम पबित्तर सुरसरि धारा,
लोगन के दुख दूर भगावे;
सुगति परमपद का निसान तक,
उनका के पहुँचावे खातिर !
महापुरुस जनता के नायक,
जुग रचवइआ मुनी बिचारक;
बउधदेव दुनियाँ से,
मानुस-दुख के अंत करे के;
पूरा कोसिस कइलन !
उन्हुकर ई कहनाम रहल कि,—
"भिक्खु भाइयों !
समुझीं रउरा
दुनियाँ में दुख काहे बाटे ?
चीजन का छनभंगुरता के,
सहज सुभाविक फलवे दुख हऽ !
दुख-कलेस-छनभंगुरता में,
तनिको भेद कहीं ना !
कठिन जतन उतजोग जुटा के,
जवन चीज हम पवलीं;
उहो टिकल ठहरल ना,
तनिक अधिक छनभर ले !
चित में उठे बासना जेतना,
मिटे बुताय तुरंते छन में;
पानी का बुलबुला समान !
शाँति मिलेले सुगति मुकुति में !"
"मजिगर दीठि मजे में देखीं,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ठीक ग्यान अपनाईं !
सुभ सतकरमन खातिर,
ग्यान जथारथ चाहीं !
होला खड़ा बिचार-भीति पर,
चालि-चलन-आचार-महल आ -
बेवहारन के बड़ा !
ठीक ग्यान भइले पर,
होला असली निहचय।
अइसन समझि-बूझि के
निहचय करी ठीक से।
इच्छे दुखवा उपजावे ले,
एही से हर एक पुरुस का;
सँकलप ठीक कइल चाहीं कि,
हम ना इच्छा करबि बिसय के,
डाह करबि केहू से नाहीं।
बोलीं ठीक बचन चित सोधि,
धरम साच ले बढ़ि के -
दूसर नाहीं !
बिरही बानीं निंदा चुगुली,
झूठ वचन नाहक बकवाद;
ई सभ छोड़ल बड़ा जरूरी !
कइ के चलीं अकड़ जनि राखीं,
सान गुमान हटाईं !
जवना बातन का कहला से,
दूसर लोगन का हिरदय के;
पहुँचे चोट -
सिकाइति होखे,
ऊ सभ कबे कहल ना चाहीं !
टेढ़ बचन से,
बैर बिरोध सांत ना होला !
मानुस का सद्गति के,
कारन ओकर करमे होला !
जीव करमबस,
एह लोक में सुख-दुख भोग;
भा पारलोक डहरिआ धइले,
सरग-नरक लोकन के जाय !
अइसन सोचि बिचारि सजग हो,
ठीक जथारथ;
करम करे के चाहीं !
जिविका ठीक नीक अपनाईं,

करीं देंहि के पालन सज से;
बेजिविका के,
जीवन नइया चलल कठिन बा !
सभ मानुस का,
तन का रइछा खातिर;
कवनो जिविका परी करे के !
बाकी तः समुझीं जे
जिविका होखे सवतुक साच !
करीं ठीक उतजोग मजे में,
मेहनति से जनि जीव चोराईं।
सत करमन के,
भाव जगावे खातिर;
कोसिस करत रहे के चाहीं।
इनरिन के नित संजम नेम,
रोक बुरा भावन के;
सुभ भावन के,
पएदा कइल जगावल;
उनके कायम राखल,
इहे ठीक उतजोग !
करीं जथारथ सुमिरन,
राखीं ठीक इयाद !

काया चित्त वेदना मन का,
ठीक रूप आ धरमन के नित;
सुमिरन कइल जरूरी होला !
बिना ग्यान के मुकुति मिले ना,
बाकी तवले,
सूध ग्यान उपजे ना;
जब ले ओके,
धारन करे जोगावे लायक;
देहियाँ होले नाहीं !
ग्यान उदय हो,
एकरा खातिर;
सोधि देंहि के सूध बनावल,
बहुत जरूरी होला !
पाँचो बिधिन रोकि साँत कइ,
चित के सोधि-बोधि के;
ठीक समाधि लगाईं !
चंचलता के दूर भगा के,
चित के बान्हि मजे में;
सहज-ग्यान डोरी से,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एक निसाना राखीं;
ईहे ठीक समाधि कहाले !
जब चित चउकस चंगा होखे,
डुबकी मारीं ध्यान करीं नित;
धरीं समाधि थीर हो !"
आठ डंहँगिया इहे धरम के
इहे ग्यान के;
निरमल सुरसरि धारा !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

महान चेलन के संन्यास

राजा बिंबीसार प्रेम-बस,
बउध-सरन में;
धरम सरन में,
संघ-सरन में अइलन!
सुनि उपदेस सहज सुखदाई,
सभ रोगन के;
नगद अचूक दवाई,
ऊ कुल-सील-सुभावन;
सरधा-प्रेम भगति से,
महापुरुस मुनि बउधदेव से;
अरज लगवलन,
बिनती कइलन;
ठहरे खातिर,
सुघर बेनुबन फुलवारी में;
भिक्खु-संघ का साथ!
तब ऊ सुगति मुकुति के दाता,
ग्यान-दिया ले साथे अपना;
नवतुन सुघर सांत एकांत,
सजल बेनुबन का बिहार में;
उत्तम सुजन लोग का संगे,
लगलन रहे सांति से सुख से!
जइसे बरम्हा,
रहसु देवलोगन का साथे!
अवसर पाइ एक दिन,
एगो धीर संजमी ग्यानी;
इनरीजीत बउध-संन्यासी,
नाँव अश्वजित;
डहरि नगर में गइलन;
सुरस मधुकरी माँगे!
अपना सांति—
तेज-तप-बल से,
ऊ लोगन के घिंचलन;
बरबस मोहित कइलन!
सारदवती पूत संन्यासी,
त्यागी तेजपान परतापी,
कापिलेय अपना चेलन सँग;
जात डहरि में,
कहलन उनके देखि—
"सांत धीर मुनि सीलवान् हे!
नवतुन भेख तोहार देखि के,
मन हमार अचरज में बा!
के तोहार गुरुदेव,
अउरी ओकर सिच्छा का हऽ;
तूँ हमरा से,
अब ऊ कहऽ बतावऽ!"
अश्वजीत तब कहलन—
'राजहंस इछवाकु बंस के,
आग-पाछ के जानेवाला;
संत सिरोमनि उत्तम ग्यानी,
बउध देव जी गुरु हमार!
हे विदमान रिखी जी!
हम अग्यानीं बानीं,
अबहीं लगले;
धरम सरन में अइलीं हँ!
एही से मुनिवर के सिच्छा,
सज से कहे बतावे में हम;
पूरा समरथ नइँखीं,
"रिखि महान् ऊ कहले बाड़न,
सभ धरमन के;
कारन का बीया से,
पैदा होखे पनपेवाला!
दूसर उन्हुका,
अंत त्याग आ छुटकारा के;
गूढ़ कहनियाँ,
छन-छन बदलि बिलायेवाली;
अउरी ओकर जतन-डहरिआ,
सज से ऊ लउकवले बाड़न!"
ई सभ सुनि के,
सारिपूत के;
जेकर दूसर,
नावँ रहे उपतीस—
तुरत आँखि के परदा उघरल;
मरम धरम के,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मालुम भइल जनाइल !
साथे उन्हुकर हिरदय,
भइल सूध निरदोस सांतिमय !
'करवइआ नाहीं करमन के,
ना फल भोगेवाला;
केहू देंहि भेद जनवइआ,
ह इस्सर भगवान !
परकिरती घींचे ले डोरी,
सभ कुछ उहे करे करवावे;
फलवे से कुल्हि होला !'
अइसन मत-विचार पहिले ले,
मालुम रहे ओह पंडित का !
बाकी अब ऊ जानि गइल कि,
'कहीं आतमा नइँखे कवनो;
साच जथारथ-मत-माने में' !
'कपिल मुनी का मत में,
चउबिस तत्तन के गरोहवे;
जुटल बनल अंगन से,
देहियाँ हऽ ई !
एही से आखिर में एकर,
मोट बाहरी दोसे खाली;
काल-गाल में परि बिनसेला !'
बाकी ई मत,
पहिले वसल रहल मनवाँ में;
संत सुजन लोगन से सुनि के,
गौर-गुनावन कइले !
अब सिच्छा पा बउध-धरम के;
नया बिचार बनल ओकर कि,
मेंही चाहे मोट;
दूनों दोसन के एके गति,
होला उनकर;
सहज समान रूप से नास !
पहिल 'आतमा वाला',
जारी जुग-मत मनले;
हम हमार के,
मोह-भाव छूटे ना;
अइँठल-बइठल-गाँठि-गरूर !
वतिओ ई ठीके वा,
सुरुज-जोति आ दीया;
दूनों का रहला पर,
कइसे मेंटि सके ला;
भला अँजोर सुभावन फइलल ?
ऊ सुभावबस बनल रहे ला !
जइसे सहज कमल के डंटी,
टूटि टूक भइलो पर;
जुटल रहे ले;
बहुते में ही सगधागन से !
ठीक अइसने कपिल मुनी के,
सांखिय मत हऽ;
अउरी बिमल बउध-मत,
टूटल टूक नियर पत्थल का !
ई सभ भेद समुझि ऊ,
सारिपूँत मतिमान संत मुनि;
अश्वजीत के माथ नवा के,
भिच्छा ले संतोख राखि के;
गइलन डेग बढ़ा के,
नगद बेनुबन ओर !

सहज सांत गंभीर जोतिमय,
चेहरा चमकत हँसमुख;
उत्तम ग्यान बोध का कारन,
विद्या ग्यान समान सोहावन;
आवत सारिपूत के देखि,
मोगलान उन्हुका से कहलन—
"तेजवान तूँ लउकत बाड़ऽ,
का तोहरा के;
धरम सुमारग निपुन भेंटाइल ?
बड़ा अपूरब,
सुफल सुगति-सुख देबेवाली;
अइसन सांति जरूरे,
बेकारन के आइलि नइँखे !"
सारिपूत तब,
बउध-धरम के;
गूढ़ ग्यान कुल कहलन !
ओके खाली सुनले भर से,
मोगलान का;
वोध जथारथ भइल ग्यान के !
बाहरी आके,
करनन का केंचुल से;

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

झरना-जल-समान-चितवाला
मोगलान ऊ,
अँवरा नियर तरहथी पर का;
सभ तत्तन के देखत;
गइलन गुरु का पास!
चेलन का संग आवत,
ओह दूइ के देखि;
मुनिवर बउधदेव जी कहलन—
"दूनो बाभन,
मगध देस के संत सिरोमनि,
धरम धुरंधर ग्यानी पंडित;
विद्या-विनय-ग्यान भंडार!
लाल नगीना मात-पिता के,
मानसरोवर कमल-कुंज के;
राजहंस सरदार!
अब से हमरा सुगति-धरम के,
ईहे दूनो;
अगहर चेला रहिहन,
धरमधजा फहरइहन,
जनता के दुख दूर भगइहन!"
एतने में ऊ दूनो,
पुरुस सुलच्छन त्यागी;
पँजरा पहुँचि प्रेमबस,
निपुन महरसी का चरनन में;
भगति-भाव से माथ नवा के,
अरज लगवलन—
अमिरित सुरस पिये के!
तब ऊ महापुरुस मतिमान,
मेघ समान अभय बानीं में;
ओह लोग से कहलन—
"सुगति शांति-सुख चाहेवाला,
तोहनी दूनो जाना;
उत्तम धरम मजे में जानऽ!"
सुनि के मुनिं के मीठ बचनिआँ,
छन भर खातिर दूनो;
सुखी मगन मन भइलन!
जटा-दंड के छोड़ि बाद में,
गेरुवा धारन कइलन!
अइसन होके दूनो मुनि ऊ,
अपना सभ चेलन का साथे;
सीध तथागत बउधदेव के,
माथ नवाइ पलगगी कइलन;
अउरी उन्हुकर कहल मानि के,
सुघर सहज पद पवलन!
मगध देस के,
एगो अउरी बाभन;
कास्सप-कुल में सुरुज समान;
सुखी धनी-मानी खनदानी,
भाई-बंधु लोग-लइका आ—
सुख संपति के छोड़ि;
आइल सुगति परम पद खातिर!
धरम चउतरा,
सुघर बरम्हपूतक का;
नियरा सांति भाव से बइठल;
धरम धजा का,
सोभत सुबरन-डंड समान;
सेसर ग्यानी बउधदेव के,
निपुन सजग बाभन ऊ;
आँखि खोलि के देखलस!
माथ नवाइ पलगगी कइ तब,
हाँथ जोर फरके ले;
विनय वचन बोलल ऊ टाँठे-
"हे गुरुदेव!
संत कोमल-चित,
असरन-सरन, सरन में अपना;
दया करीं राखीं हमरा के,
हम राउर चेला सेवक!
सवतुक सीलवान तपसी हे!
एह अन्हार समय में,
रउरा बनीं अँजोर नयन-सुख;
सुगति-डहरिआ!"
सवतुक सूध देखाईं!"
अपना सधल सूध बानीं का,
निरमल ठंढा पानी से तब;
ओके तिरपित करत तथागत,
सुमति-ग्यान आ सुगति-मुकुति के
लागल लगन-लालसा ओकर,
पूरन करे मेटावे वाली;
सवतुक बतिया कहलन—
"हे मतिमान सुरेमन बाभन!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उत्तम-कुल-सपूत सिरताज,
तूँ सुख साँति सुगति सुभ जोहत;
आइल बाड़ऽ
हिरदय भीतर-
बिमल ग्यान के भूखि छिपवले !
हो कल्यान तोहार,
आवऽ एहिजा बइठऽ ! *
बउधदेव मुनि ग्यानी,
दुख चिन्ता से हीन,
सूध परमपद चाहेवाला;
सरधा-भगति बिनय के मूरति,
ओहि निपुन बाभन के;
गूढ़ धरम का सार अंश के,
भाव भरल सुभ सिच्छा दिहलन !
अपना तेज बूधि का बल से;
साधु सिरोमनि बउधदेव से
जानि धरम के जल्दी,
धरमधुरंधर निपुन भइलऊ,
नाँव धराइल
भिक्खु संत लोगन का;
रीति नेम मोताबिक,
नगद महाकाश्यप मसहूर !
हम हमार, ई दूनो,
सहज आतमा हउँवन; "
अइसन ओकर'
पहिले रहल बिचार !
'ऊ देहियाँ से अलगा,
सहज सूध निरकेवल;
नावें रूप का परदा भीतर,
उहे देंहि में बइठल आड़ा;
कल से डोरी घींचत,
जग का रंगभूमि में माँकत;
चलत पैंतरा सज से,
बहुरंगी तसबीरि देखावत; '
ईहो मानत रहे कबे ऊ !
"बाकी असल बात ई ना हऽ-
एह गूढ़ गंभीर मरम के,
सिच्छा पा ऊ आज समुझलस !

अबले बाभन परल भरम में,
रहल-भुलाइल भटकल !
सुगम डहरिया सुघर सजीली,
भागीन पवलस आज;
चारो उतम सूध साँच के,
जानि जतारथ रीति नेम गति;
संका दूर भइल मनवाँ के,
भागल भरम कुहस !
जवना काम नसा में चूर,
बेबस भइल बन्हाइल लोग;
बारंबार मोह में परि के,
जनमत-मरत कठिन दुख भोगत;
नाहक सगरे लबदा खात !
ओह काम के,
अनरथ अइलति असुभ जानि के;
साखा सोरि समेत छोड़ि अब,
सुखी भइल ऊ,
निपुन संजमी बाभन !
एक समान जानि हित-दुसमन,
सभ जीवन का हित में लीन;
मानस-रोगन से छुट्टी पा,
मस्त आतमाराम भइल ऊ !
छोड़िरूप आ-,
बाधा टक्कर ओकर;
रूप-नाँव के लतिअवलस ऊ,
सज से समुझि रूप-दोसन के !
रूप रहित देवतन के,
सहज ध्यान कइला से;
परमानंद बिमल सुखदाई,
जीवन-मुकुति मिले ले;
अइसन समुझि मुनी ऊ,
चित का सुन्न अभाव-दसा में;
कले-कले जा पहुँचल !
जइसे उमड़ल-
नदी बेगहो चंचल;
ठीक तइसहीं,
बली ढीठ इनरिन के;
अनरथ के जरि जानि,
आलस छोड़ि सजग हो;
जितलस ऊ उनका के !

* वेनुवन महाविहार की गंध कुटी से तीन कोस उत्तर वहुपूतक चैत्य के निकट (वर्तमान सिलाव के पास) वरगद के पेड़ के नीचे भगवान ने महाकाश्यप को प्रव्रज्या दी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बहुते चतुर महाउत होई,
ऊहे बइठी पीठी एकरा;
कसि के आँकुस देई!
टिसुना बिखधर काली नागिनि,
डँसलसि जेके;

ओकर कुसल कहाँ ले होई?
एकरा बिख के लहरि चढ़े जब,
तन मन दूनो के भारी दुख;
सासति दुरगति करे नचावे,
घुला-घुला के मारे!
टिसुना जे के घाही कइलसि,
ऊ गरीब बेचारा;
अपना भीतर के बल खोवे,
तेज नसावे;
गड़हा में गिरि के चिचिआय!
पाके बार दाँत सभ टूटे,
जोति आँखि के चउपट होय;
कान सुने ना,
हाँथ गोड़ काँपे बल थाके;
तबहूँ टिसुना,
मस्त जवानी पाके;
चुरुगे चहके मटकी मारे!
नया गुँजरिया नियर चोन्हाइल,
रसिक रूढ़ बूढ़न के,
नाँच नचा लतिया के;
अंते सरके करे सिकार!
अइसन लत्तर हऽ टिसना के,
जेकर सोरि पताले ठेकलि;
केतनो खोदखाद कइला पर,
जनम-जनम ले;
एकर जरि टूटे ना!
कारन बा कि;
एकर डापुट बीया,
आइल-गइल देंहि धइ भोगल;
गरभवास दुख हलकानी के,
लटका ना ओरिआए देले!
अइसन किला बनल टिसुना के,
जेकरा भीतर फउदि भरलि बा;
छापामार निपुन चतुरंगी,
लालच खीसि मोह ममता के!

विरले केहू बीर बघेला,
जामल मँहतारी के लाल;
आगे बढ़ि के जे एकरा के,
हुरपेटल धकिआवल;
कमर बान्हि तेगा सरिया के
धीर थीर हो;
बजनी बाजि पछारल!
हिम्मति बान्हि सजग रहलो पर,
ए से लड़ल सहज मत जानीं!
के ना परल जाल में एकरा,
कल से घुसुकि गइलि जब पँजरा;
ढीलि मोहिनी माया आपन,
ताल ठोंकि के हाँथ मिलवलसि;
तिरछी नजरि मारि मुसुकाइलि,
जादू टोना कइलसि!
अउरी केतने सहकल,
परिकल गोइयाँ लाल जुझवलसि!
फाँड़े बान्हि कलेवा साहस
ए के जीतल पहिला काम!
कवन लँगोटा जँघिया पहिरबि,
दाव-पयँतरा पेंच भिड़ाइबि;
धरबि तेज हथिआर हाँथ में,
कवना नगद जतन से जीतबि?
हरजाई पाजी टिसुना के,
मुसुक बान्हि के ढाहबि;
झोंटा पकड़ि उखारबि!
आगे इहे बताइबि सभ के,
बउध धरम का हरियर कंचन;
आठ डहँगिअनवाला,
कलपबिरिछ के;
सज तसवीरि उरेहि देखाइबि!

आलस छूटल हटल अन्हार,
भागल भरम कुहेस!
मुनिवर तेजवान परतापी,
बउधदेव सुरुज बनि उगलन;
आँखि खोलि सभई उठि बइठल,
भइल अँजोर टहक्का!
एका-एकी लउकल सभका,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

धँसल-धरमरथ-चक्का !
सभई कसि के जोर लगावल,
रथ खींचल टकसावल;
नाहा-गज-पुट्ठी तक डूबल,
रथ-चक्का हवसा में;
निकलि तुरंते ऊपर आइल,
धोवल गइल साफ हो डगरल;
चउरस सिजिल सड़कि पर !
चतुर सारथी बउधदेव जी,
सजग होइ के रासि पकड़लन;
हाँकि धरमरथ आगे बढ़लन !
आगे-आगे रथ के घोड़ा,
पाछे लोग हजारन;
डेग बढ़ावल,
होइ मगन मन;
मजगर चिक्कन डहरि पाइके !
भूलि डहरिआ,
जे भटकल अन्हुवाइल;
ऊ राही अब सम्हरल,
ओके संगी साथी मिललन;
सुघर पड़ाव भेंटाइल !
मिलल कलेवा पुरहर सजगर,
बइठि बिरिछि का सघन छाँह तर;
ऊ ठहकल सुहताइल,
चिंता छोड़ि जुड़ाइल;
सुख धीरज के साँस लिहल सुभ !

धरमे से समाज कायम बा,
धरम रीढ़ तन के समाज का
बिना धरम के,
दुनियाँ ठहरे नाहीं।
एह धरम-मंदिर के,
पहिली सीढ़ी सरधा।
देखि सील सुकरम सुभ,
सरधा जनमें जागे;
बढ़ि के पोढ़ बनेले।
सभई का हिरदय में,
सरधा खातिर जगहा चाहीं।
पहिली सीढ़ी पर सरधा का,
जब केहूके डेग पड़ी तऽ;
समय पाइ ऊ बढ़ी जरूरे,
आगे वाली;
नगद करम-सीढ़ीं पर !
निरमल सरधा धारा,
आगे चलि के;
मिललि प्रेम से,
जइसे गोमुख से आ
भागीरथी अलकनंदा से
मिलि के देवप्रयाग बसवलसि !
दइवी दया नेह का करते,
बहलि सुभावन;
ठीक तइसहीं,
भाव-भगति के;
परम पबित्तर सुरसरि धारा,
लोगन के दुख दूर भगावे;
सुगति परमपद का निसान तक,
उनका के पहुँचावे खातिर !
महापुरुस जनता के नायक,
जुग रचवइआ मुनी बिचारक;
बउधदेव दुनियाँ से,
मानुस-दुख के अंत करे के;
पूरा कोसिस कइलन !
उन्हुकर ई कहनाम रहल कि,—
"भिक्खु भाइयों !
समुझीं रउरा
दुनियाँ में दुख काहे बाटे ?
चीजन का छनभंगुरता के,
सहज सुभाविक फलवे दुख हऽ !
दुख-कलेस-छनभंगुरता में,
तनिको भेद कहीं ना !
कठिन जतन उतजोग जुटा के,
जवन चीज हम पवलीं;
उहो टिकल ठहरल ना,
तनिक अधिक छनभर ले !
चित में उठे बासना जेतना,
मिटे बुताय तुरंते छन में;
पानी का बुलबुला समान !
शाँति मिलेले सुगति मुकुति में !"
"मज़िगर दीठि मजे में देखीं,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ठीक ग्यान अपनाईं !
सुभ सतकरमन खातिर,
ग्यान जथारथ चाहीं !
होला खड़ा बिचार-भीति पर,
चालि-चलन-आचार-महल आ –
बेवहारन के बड़ा !
ठीक ग्यान भइले पर,
होला असली निहचय।
अइसन समझि-बूझि के
निहचय करीं ठीक से।
इच्छे दुखवा उपजावे ले,
एही से हर एक पुरुस का;
सँकलप ठीक कइल चाहीं कि,
हम ना इच्छा करबि बिसय के,
डाह करबि केहू से नाहीं।
बोलीं ठीक बचन चित सोधि,
धरम साच ले बढ़ि के-
दूसर नाहीं !
बिरही बानीं निंदा चुगुली,
झूठ वचन नाहक बकवाद;
ई सभ छोड़ल बड़ा जरूरी !
कइ के चलीं अकड़ जनि राखीं,
सान गुमान हटाईं !
जवना बातन का कहला से,
दूसर लोगन का हिरदय के;
पहुँचे चोट –
सिकाइति होखे,
ऊ सभ कबे कहल ना चाहीं !
टेढ़ बचन से,
बैर बिरोध सांत ना होला !
मानुस का सद्गति के,
कारन ओकर करमे होला !
जीव करमबस,
एह लोक में सुख-दुख भोग;
भा पारलोक डहरिआ धइले,
सरग-नरक लोकन के जाय !
अइसन सोचि बिचारि सजग हो,
ठीक जथारथ;
करम करे के चाहीं !
जिविका ठीक नीक अपनाईं,

करीं देंहि के पालन सज से;
बेजिविका के,
जीवन नइया चलल कठिन वा !
सभ मानुस का,
तन का रइछा खातिर;
कवनो जिविका परी करे के !
बाकी तः समुझीं जे
जिविका होखे सवतुक साच !
करीं ठीक उतजोग मजे में,
मेहनति से जनि जीव चोराईं।
सत करमन के,
भाव जगावे खातिर;
कोसिस करत रहे के चाहीं।
इनरिन के नित संजम नेम,
रोक बुरा भावन के;
सुभ भावन के,
पएदा कइल जगावल;
उनके कायम राखल,
इहे ठीक उतजोग !
करीं जथारथ सुमिरन,
राखीं ठीक इयाद !
काया चित्त वेदना मन का,
ठीक रूप आ धरमन के नित;
सुमिरन कइल जरूरी होला !
बिना ग्यान के मुकुति मिले ना,
बाकी तबले,
सूध ग्यान उपजे ना;
जब ले ओके,
धारन करे जोगावे लायक;
देहियाँ होले नाहीं !
ग्यान उदय हो,
एकरा खातिर;
सोधि देंहि के सूध बनावल,
बहुत जरूरी होला !
पाँचो विधिन रोकि साँत कइ,
चित के सोधि-बोधि के;
ठीक समाधि लगाईं !
चंचलता के दूर भगा के,
चित के बान्हि मजे में;
सहज-ग्यान डोरी से,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एक निसाना राखीं;
ईहे ठीक समाधि कहाले !
जब चित चउकस चंगा होखे,
डुबकी मारीं ध्यान करीं नित;
धरीं समाधि थीर, हो !"
आठ डंहँगिया इहे धरम के
इहे ग्यान के;
निरमल सुरसरि धारा !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

महान चेलन के संन्यास

राजा बिंबीसार प्रेम-बस,
बउध-सरन में;
धरम सरन में,
संघ-सरन में अइलन!
सुनि उपदेस सहज सुखदाई,
सभ रोगन के;
नगद अचूक दवाई,
ऊ कुल-सील-सुभावन;
सरधा-प्रेम भगति से,
महापुरुस मुनि बउधदेव से;
अरज लगवलन,
बिनती कइलन;
ठहरे खातिर,
सुघर बेनुबन फुलवारी में;
भिक्खु-संघ का साथ!
तब ऊ सुगति मुकुति के दाता,
ग्यान-दिया ले साथे अपना;
नवतुन सुघर सांत एकांत,
सजल बेनुबन का बिहार में;
उत्तम सुजन लोग का संगे,
लगलन रहे सांति से सुख से!
जइसे बरम्हा,
रहसु देवलोगन का साथे!
अवसर पाइ एक दिन,
एगो धीर संजमी ग्यानी;
इनरीजीत बउध-संन्यासी,
नाँव अश्वजित;
डहरि नगर में गइलन;
सुरस मधुकरी माँगे!
अपना सांति—
तेज-तप-बल से,
ऊ लोगन के घिंचलन;
बरबस मोहित कइलन!
सारदवती पूत संन्यासी,
त्यागी तेजपान परतापी,
कापिलेय अपना चेलन सँग;
जात डहरि में,
कहलन उनके देखि—
"सांत धीर मुनि सीलवान् हे!
नवतुन भेख तोहार देखि के,
मन हमार अचरज में बा!
के तोहार गुरुदेव,
अउरी ओकर सिच्छा का हऽ;
तूँ हमरा से,
अब ऊ कहऽ बतावऽ!"
अश्वजीत तब कहलन—
'राजहंस इछवाकु बंस के,
आग-पाछ के जानेवाला;
संत सिरोमनि उत्तम ग्यानी,
बउध देव जी गुरु हमार!
हे विदमान रिखी जी!
हम अग्यानीं वानीं,
अबहीं लगले;
धरम सरन में अइलीं हँ!
एही से मुनिवर के सिच्छा,
सज से कहे बतावे में हम;
पूरा समरथ नइँखीं,
"रिखि महान् ऊ कहले बाड़न,
सभ धरमन के;
कारन का बीया से,
पैदा होखे पनपेवाला!
दूसर उन्हुका,
अंत त्याग आ छुटकारा के;
गूढ़ कहनियाँ,
छन-छन बदलि बिलायेवाली;
अउरी ओकर जतन-डहरिआ,
सज से ऊ लउकवले बाड़न!"
ई सभ सुनि के,
सारिपूत के;
जेकर दूसर,
नावँ रहे उपतीस—
तुरत आँखि के परदा उघरल;
मरम धरम के,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मालुम भइल जनाइल !
साथे उन्हुकर हिरदय,
भइल सूध निरदोस सांतिमय !
'करवइआ नाहीं करमन के,
ना फल भोगेवाला;
केहू देंहि भेद जनवइआ,
ह इस्सर भगवान !
परकिरती घींचे ले डोरी,
सभ कुछ उहे करे करवावे;
फलवे से कुल्हि होला !'
अइसन मत-विचार पहिले ले,
मालुम रहे ओह पंडित का !
बाकी अब ऊ जानि गइल कि,
'कहीं आतमा नइँखे कवनो;
साच जथारथ-मत-माने में' !
'कपिल मुनी का मत में,
चउबिस तत्तन के गरोहवे;
जुटल बनल अंगन से,
देहियाँ हऽ ई !
एही से आखिर में एकर,
मोट बाहरी दोसे खाली;
काल-गाल में परि बिनसेला !'
बाकी ई मत,
पहिले बसल रहल मनवाँ में;
संत सुजन लोगन से सुनि के,
गौर-गुनावन कइले !
अब सिच्छा पा बउध-धरम के;
नया बिचार बनल ओकर कि,
मेंही चाहे मोट;
दूनों दोसन के एके गति,
होला उनकर;
सहज समान रूप से नास !
पहिल 'आतमा वाला',
जारी जुग-मत मनले;
हम हमार के,
मोह-भाव छूटे ना;
अइँठल-बइठल-गाँठि-गरूर !
बतिओ ई ठीके बा,
सुरुज-जोति आ दीया;
दूनों का रहला पर,
कइसे मेंटि सके ला;
भला अँजोर सुभावन फइलल ?
ऊ सुभावबस बनल रहे ला !
जइसे सहज कमल के डंटी,
टूटि टूक भइलो पर;
जुटल रहे ले;
बहुते में ही सगंधागन से !
ठीक अइसने कपिल मुनी के,
सांखिय मत हऽ;
अउरी बिमल बउध-मत,
टूटल टूक नियर पत्थल का !
ई सभ भेद समुझि ऊ,
सारिपूँत मतिमान संत मुनि;
अश्वजीत के माथ नवा के,
भिच्छा ले संतोख राखि के;
गइलन डेग बढ़ा के,
नगद बेनुबन ओर !

सहज सांत गंभीर जोतिमय,
चेहरा चमकत हँसमुख;
उत्तम ग्यान बोध का क़ारन,
विद्या ग्यान समान सोहावन;
आवत सारिपूत के देखि,
मोगलान उन्हुका से कहलन—
"तेजवान तूँ लउकत बाड़ऽ,
का तोहरा के;
धरम सुमारग निपुन भेंटाइल ?
बड़ा अपूरब,
सुफल सुगति-सुख देबेवाली;
अइसन सांति जरूरे,
बेकारन के आइलि नइँखे !"
सारिपूत तब,
बउध-धरम के;
गूढ़ ग्यान कुल कहलन !
ओके खाली सुनले भर से,
मोगलान का;
बोध जथारथ भइल ग्यान के !
बाहरी आके,
करनन का केंचुल से;

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

झरना-जल-समान-चितवाला
मोगलान ऊ,
अँवरा नियर तरहथी पर का;
सभ तत्तन के देखत;
गइलन गुरु का पास!
चेलन का संग आवत,
ओह दूइ के देखि;
मुनिवर बउधदेव जी कहलन—
"दूनो बाभन,
मगध देस के संत सिरोमनि,
धरम धुरंधर ग्यानी पंडित;
विद्या-विनय-ग्यान भंडार!
लाल नगीना मात-पिता के,
मानसरोवर कमल-कुंज के;
राजहंस सरदार!
अब से हमरा सुगति-धरम के,
ईहे दूनो;
अगहर चेला रहिहन,
धरमधजा फहरइहन,
जनता के दुख दूर भगइहन!"
एतने में ऊ दूनो,
पुरुस सुलच्छन त्यागी;
पँजरा पहुँचि प्रेमबस,
निपुन महरसी का चरनंन में;
भगति-भाव से माथ नवा के,
अरज लगवलन—
अमिरित सुरस पिये के!
तब ऊ महापुरुस मतिमान,
मेघ समान अभय बानीं में;
ओह लोग से कहलन—
"सुगति शांति-सुख चाहेवाला,
तोहनी दूनो जाना;
उत्तम धरम मजे में जानऽ!"
सुनि के मुनि के मीठ बचनिआँ,
छन भर खातिर दूनो;
सुखी मगन मन भइलन!
जटा-दंड के छोड़ि बाद में,
गेरुवा धारन कइलन!
अइसन होके दूनो मुनि ऊ,
अपना सभ चेलन का साथे;

सीध तथागत बउधदेव के,
माथ नवाइ पलग्गी कइलन;
अउरी उन्हुकर कहल मानि के,
सुघर सहज पद पवलन!
मगध देस के,
एगो अउरी बाभन;
कास्सप-कुल में सुरुज समान;
सुखी धनी-मानी खनदानी,
भाई-बंधु लोग-लइका आ—
सुख संपति के छोड़ि;
आइल सुगति परम पद खातिर!
धरम चउतरा,
सुघर बरम्हपूतक का;
नियरा सांति भाव से बइठल;
धरम धजा का,
सोभत सुबरन-डंड समान;
सेसर ग्यानी बउधदेव के,
निपुन सजग बाभन ऊ;
आँखि खोलि के देखलस!
माथ नवाइ पलग्गी कइ तब,
हाँथ जोर फरके ले;
विनय बचन बोलल ऊ टाँठे-
"हे गुरुदेव!
संत कोमल-चित,
असरन-सरन, सरन में अपना;
दया करीं राखीं हमरा के,
हम राउर चेला सेवक!
सवतुक सीलवान तपसी हे!
एह अन्हार समय में,
रउरा बनीं अँजोर नयन-सुख;
सुगति -डहरिआ!"
सवतुक सूध देखाईं!"
अपना सधल सूध बानीं का,
निरमल ठंढा पानी से तब;
ओके तिरपित करत तथागत,
सुमति-ग्यान आ सुगति-मुकुति के
लागल लगन-लालसा ओकर,
पूरन करे मेटावे वाली;
सवतुक बतिया कहलन—
"हे मतिमान सुरेमन बाभन!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उत्तम-कुल-सपूत सिरताज,
तूँ सुख साँति सुगति सुभ जोहत;
आइल बाड़ऽ
हिरदय भीतर–
बिमल ग्यान के भूखि छिपवले !
हो कल्यान तोहार,
आवऽ एहिजा बइठऽ ! *
बउधदेव मुनि ग्यानी,
दुख चिन्ता से हीन,
सूध परमपद चाहेवाला;
सरधा–भगति बिनय के मूरति,
ओहि निपुन बाभन के;
गूढ़ धरम का सार अंश के,
भाव भरल सुभ सिच्छा दिहलन !
अपना तेज बूधि का बल से;
साधु सिरोमनि बउधदेव से
जानि धरम के जल्दी,
धरमधुरंधर निपुन भइलऊ,
नाँव धराइल
भिक्खु संत लोगन का;
रीति नेम मोताविक,
नगद महाकाश्यप मसहूर !
हम हमार, ई दूनो,
सहज आतमा हउँवन; "
अइसन ओकर'
पहिले रहल विचार !
'ऊ देहियाँ से अलगा,
सहज सूध निरकेवल;
नावँ रूप का परदा भीतर,
उहे देंहि में बइठल आड़ा;
कल से डोरी घींचत,
जग का रंगभूमि में माँकत;
चलत पैंतरा सज से,
वहुरंगी तसवीरि देखावत; '
ईहो मानत रहे कवे ऊ !
"बाकी असल बात ई ना हऽ–
एह गूढ़ गंभीर मरम के,
सिच्छा पा ऊ आज समुझलस !

अबले बाभन परल भरम में,
रहल-भुलाइल भटकल !
सुगम डहरिया सुघर सजीली,
भागीन पवलस आज;
चारो उतम सूध साँच के,
जानि-जतारथ रीति नेम गति;
संका दूर भइल मनवाँ के,
भागल भरम कुहस !
जवना काम नसा में चूर,
बेवस भइल बन्हाइल लोग;
बारंबार मोह में परि के,
जनमत-मरत कठिन दुख भोगत;
नाहक सगरे लबदा खात !
ओह काम के,
अनरथ अइलति असुभ जानि के;
साखा सोरि समेत छोड़ि अब,
सुखी भइल ऊ,
निपुन संजमी बाभन !
एक समान जानि हित-दुसमन,
सभ जीवन का हित में लीन;
मानस-रोगन से छुट्टी पा,
मस्त आतमाराम भइल ऊ !
छोड़िरूप आ-,
बाधा टक्कर ओकर;
रूप-नाँव के लतिअवलस ऊ,
सज से समुझि रूप-दोसन के !
रूप रहित देवतन के,
सहज ध्यान कइला से;
परमानंद विमल सुखदाई,
जीवन-मुकुति मिले ले;
अइसन समुझि मुनी ऊ,
चित का सुन्न अभाव–दसा में;
कले-कले जा पहुँचल !
जइसे उमड़ल-
नदी वेग हो चंचल;
ठीक तइसहीं,
बली ढीठ इनरिन के;
अनरथ के जरि जानि,
आलस छोड़ि सजग हो;
जितलस ऊ उनका के !

* वेनुवन महाविहार की गंध कुटी से तीन कोस उत्तर वहुपूतक चैत्य के निकट (वर्तमान सिलाव के पास) वरगद के पेड़ के नीचे भगवान ने महाकाश्यप को प्रव्रज्या दी ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तब अति निरमल
जल से भरल तलाव समान;
सूध शांत हो,
परमानंद मगन-मन लउकल !
बिखधर काल सरप का,
मुँह में बइठल;
जीवन के छनभंगुर मानि,
सभ जीवन के जानि समान;
चंगा चउकस पोढ़ बनल ऊ
झूठा'हम'-गुमान के छोड़लस !
ग्यान-दिया का बिमल-जोति से,
दूर भगा अग्यान अन्हार;
जोग-साधना विद्या-बल से,
काटि अविद्या-माया के फन;
ऊपर उठि के
नासमान दुनियाँ से
सूध सनातन विमल तत्त के
देव-दुलम सुभ दरसन पवलस !
दसो बन्हन से छुट्टी पा
निपुन विचार-चिरुकिया रखले;
हाँथ जोरि मन-चित बटोरि के
प्रेम भगति वस मुनि के देखत;
थीर रहल ऊ सहजे !
सभ दोसन के,
जरि से खोदि उखारि
सील समाधि ग्यान से पूरन
जानकार तीनों विद्या के;
पंडित एक धीर मतिमान,
अपना तीन निपुन चेलन से
सरधा-नेह-भगति से सेवित
संत सिरोमनि बउधदेव के
तेज बिराजल तीन लोक में,
प्रभु बावन भगवान समान !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अनाथपिंडक के उपदेस

कासी कौसल के रजधानी,
श्रावस्ती नगरी मसहूर !
एक समय में,
सेठ जसी धनवान तहाँ के
ओह समय में,
जंबू दीप सुघर के,
सबले बड़हन सहर चुहिलगर
रहे गनात मनात।
जहाँ सुरेमन धनकुबेर भारत के,
प्रिय अनाथ पिंडक सुभ धरमी,
अउरी सेठ मृगार समान;
वसि ओकर मरजाद बढ़ावसु।
ओह लोग के 'सार्थ 'सुनामी;
नगद बनिज-बेंवसाई बेड़ा;
राह पकड़ि के तामलूक के,
पूरुब ओर बंगाला खाड़ी;
अउरी पच्छिम का सिवान पर,
भरूकच्छ से, सोपारा से
लाँघि अरबसागर के
दूर-दूर दीपन में पहुँचसु
जहवाँ अपना निपुन बूधि से
संपति के विस्तार करसु !
श्रावस्ती से,
प्रतिष्ठान तकवाली,
सिजिल डहरिया,
माहिसमती होत उज्जयिनी.
अउरी देखत-ताकत;
नगर गोनरद बिदिसा,
पहुँचे कवशांबी-साकेत !
दूसरि उत्तिम सुगम डहरिया;
राजगिरिह के;
होत तराई से पहाड़ का,
कावा काटत जाय !
जेकरा पर कि—
दैव जोग से,
परसु नगरिया,
कपिलबस्तु साकिय रजधानी;
कुसीनगर मल्लन के,
पावा, हाथीगाँव अपूरब;
पाटलिपुत्र, नगर नालंदा !
पूरब से पच्छिवँ के राह,
नदियन से तय होखे बहुताँ !
गंगा में सहजाति नगर आ,
जमुना जी में कवशांबी तक;
बड़-बड़ सजि बेंवपारिक नइया,
सहज भाव से जासु !
श्रावस्ती का मरजादा के,
देस-बिदेसन तक ले;
रहे सितारा चमकल !
सुबरन भूमि-सुमात्रा से ले,
जवदीप-जावा तक;
अउरी दक्खिन ओर सोहासुत,
चुनसुन दीप तामरपरनी तक;
ओकर आवाजाह,
चालू रहे बिसेस !
महानगरिया श्रावस्ती में,
हाथी सवार, घोड़ा सवार;
रथी, धनुसधारी आ
सजग सूरबीरन के;
नव किसिम के पलटन,
सभ दिन सहजे;
हथियारन के माँजि पोंछि के,
बेखटका तइआर रहे।
कोसलराज बली का,
पोढ़ निपुन सेना में;
जवन हूण सक बीर सुरेमन,
सरनामी तातार वोगएरह;
सामिल रहसु सुभावन,
परंपरा बस रीति नीति से !
दानी निपुन दया के सागर;
सुदत नाँव सरनाम !
राजगिरिह का नगरसेठ के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नाता में बहनोई;
गइल जरूरत का बस तहवाँ !
मुनि के जानि बिराजत ओहिजे,
साइति समय सुतार देखि के;
जागलि सहज लालसा ओकर
संत सुरेमन महापुरुस का;
परम पवित्तर दरसन खातिर !
भइल समागम,
सरधा प्रेम भगति के;
मिलल सुभाविक,
तिरबेनी के अमिरित धार !
पुरुब जनम के,
संचित पुन्नि उदय जब होला;
भागिन संत भेंटालन !
साधु संत त्यागी उपकारी,
सेवा दया बिनय के मूरति;
जहवाँ रहसु बिराजसु,
तहँवे गंगा जमुना सुरसति;
तीरथराज प्रयाग, धरमपति–
ग्यान अछ्यबट कंचन !
अइसन सोचि गइल ऊ सूते,
गौर-गुनावन प्रेम-भाव में;
रहि रहि के बूड़त रस लेत !
अँखिया केतनो मूँदे, बाकी!
मनवाँ का बरिआई,
खिरकी खुले पुतरिया झाँकसु;
तनिक उँघाई आवे नाहीं !
आतुरतावस,
समुझि बिहान राति के बरबस,
तीनि बेरि उठि बइठल,
आसमान में जोहत ताकत;
तिनडँड़िया, कचबचिआ,
कबे सतहवा-सुकवा !
आखिर रोकि सकल ना अपना,
बेकल मन के बेग !
कल से डेग उठा के पहुँचल,
जहाँ नगर के;
नगद पोढ़ नटका-दरवाजा !
दइबी दया नेह का बल से,
अपने आप खुलल झट़ फाटक !
जइसे पिंडक,
भइल नगर ले वहरी;
अचके गायब भइल अँजोर !
घोर अन्हार राति निचलावाँ,
सगरे सुनहट पाके
देहिया कुछ सिहिराइलि,
रोवाँ भइलन ठाढ़ !
तबहूँ बढ़त गइल ऊ,
सुघर सीतवन-भीतर;
जहाँ रहल मुनिवर के बास !
सहज सांत एकांत बिचित्तर,
सुखद देव-वेला में;
विमल ग्यान-गंगा का,
लहरन के रस लेत कले कल;
रिखी सिरोमनि टहरत रहलन !
देखि पहिलहीं,
सरधावान भगत के आवत;
प्रेम भगति सरधा का,
बसी वनल भगवान तथागत;
जगहा छोड़ि सुभावन
टहरे-घूमेवाली,
गइलन बइठि बिछल आसन पर !
एतने में आतुर ऊ,
पिंडक नियरा जाके;
सूध प्रेम बस;
मन-चित-माथ नवा के;
जोरि दसो नँह गदगद होके,
आठो अंग सहित धरती पर;
सूति दंडवत कइलस !
निरमल-मानसरोवर-जल में,
चउथी'पंचवीं चित-बिरती का;
विहँसत सुघर कमल फूलन के,
मोहक मधुर सुवास पाइ के;
मुनिवर खुस हो कहलनः–
"हं मतिमान जथारथ पंडित !
मरम धरम के जानेवाला,
नीनि छोड़ि तूँ अइलऽ एहिजा;
सुभ दरसन सतसंग-लालसा
हिरदय भीतर रखले !
परम पवित्तर उत्तम पद के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पावे के अधिकारी;
सुभ साइति संजोग पाइ के,
अब ओ पद के देखऽ!
हे संतन के सेवक राजा
सवतुक सील धीरता भारी;
विमल भाव सरधा के पुंज,
दया विनय सेवा के सुभगुन;
तोहरा में जे लउकत बाड़न,
उन्हुके आपन!
संचित पुन्नि प्रताप समुझिहऽ!
हे लछिमीपति!
सरधा सहित दान कइला से,
सुजस सुगंध जगत में फइले;
उत्तम फल होला परलोके!
अइसन समुझि गरीब-दुखिन में,
दान करऽ धन प्रेम मगन हो!
हे बुझनउक! लगन से,
जतन-जुगुति संजम से;
चालि चलन के सोधे अपना,
धोइ-माँजि के सूध बनावे!
सवतुक चालि -चलन से;
सेवा प्रेम-भगति से;
पाप रहित हो,
निरमल-हिरदय-मानुस;
सुगति-मुकुति-पद पावेला!
विसय-लीन भइला में,
टिसुना में लपिटइला में!
जवन दोस अयगुन बा,
दूसर ई कि;
बिसय-विमुख हो
रस के चसका छोड़ि सुभाविक;
त्याग डहरिया सुभ धइला में
जवन लाभ-गुन बाटे;
ओकरा के तूँ
भल सत्-असत् दूध-जल
अमिरित-माहुर परिखनहार
निरमल-ग्यान-नयन से देखऽ!
जग में बारंबार जनम-दुख;
रोग-बुढ़ापा मउवति के दुख
देखि-ताकि के समुझि-बूझि के
जतन करऽ अब;
सुगति-परमपद के पावे के!
जइसे ई सउँसे संसार,
नासवान छनभंगुर दुखमय;
लोगन के दुख देबेवाला,
ठीक तइसहीं,
सरगलोक बैकुंठ बिनासी;
कल-कल सरकि बिलायेवाला!
ऊहो देवतन का समाज के,
ओही तरे सतावे दुख दे!
इच्छा से मनवाँ दउरवले,
सुघर मनोरथ-महल उठवले
संग मोह ममताबस सटि के,
हम-हमार के पँचरा गवले;
दूनो लोक मिले ई
महा कठिन जंजाल!
एही से तूँ लटपट छोड़ऽ
फरिछा बनऽ निछक्का!
नासमान छनभंगुर बा जे
ओही के तूँ;
जानऽ दुख आ रोग!
बनलि धातु से
देहियाँ छनिक अनातम
एकरा से सुख मिली कहाँ ले?
जतन करऽ जाने के
उत्तम चार सचाइन के!
पहिल सचाई त दुखवे हऽ,
दूसर दुख के कारन;
दुख के होला अंत जरूरे,
इहे सचाई तीसर;
दुख के नास करे के,
बाटे उचित उपाइ;
ए के चउठा अंतिम जानऽ!
जीवन-मउवति दूनो के तूँ
जानऽ एक समान!
हम हमार से खाली सुन्न,
समझऽ कुल माया के खेल!
एह देंहि आ दुनियाँ के तूँ,
जानऽ धातु-बेकार!
छनिक विनासी जीवन से अब

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चित के जल्दी मुकुत करऽ !
काल अगिन में,
एह जगत के पाकत जानऽ !
जनम बुढ़ापा आदि दुखन के
आँखि खोलि के देखत;
डुबकी लगा-ग्यान-सागर में,
निरगुन आतम-मनि के खोजऽ !
राजा मुनि के,
एतना धरम बचनिआँ सुनि के;
सुरस धरम-अमिरित फल पवलन !
ओह समय ऊ,
अपना दुख-सागर आ-;
फइलल सउँसे जग के,
गइया-खुर के गुड्डुपी जनलन !
गिरहस्तो रहला पर,
राजा सहज भाव से पवलन
सुगति सांत आ गूढ़ ग्यान पद !
चाहे रउरा,
संन्यासी बनि बन में बिचरीं;
इच्छा छोड़ीं,
मन के मोड़ीं;
मुकुति-रतन-धन पावे खातिर,
चित के सोधि समाधि लगाईं;
भा परिवार बंधुभाई में,
घरवे रहि के मन के बोधीं;
धीर थीर हो चित के सोधीं,
भजन कहीं आ ध्यान धरीं नित;
सुगति लाभ आ ग्यान-बोध में,
कवनो भेद परी ना !
साच जगत के जानसु जे जन
जे बिसयन का रस के चीखसु
जिन्हकर अँखिया बेकल बाड़ी,
मोह-भरम के गरदा परले;
काँट-कूस गड़हा में दउरसु,
सहज डहरिआ देखसु नाहीं !
अइसन लोगवा सरबस खोके,
चउपट होखसु जासु रसातल !
बाकी अउरी लोग सुकरमी,
जे इनरिन के जीतेवाला;
ममता-मोह रोस-इरिखा से,
भेद भाव दलदल से दूर;
उन्हुके मिले सँजीवनि बूटी,
सहज सुगति सुभ सांति अपार !
सत आ असत उचित-अनुचित के
समझे-बूझ-परखे-;
सवतुक बाति विचारेवाली;
ठीक नजरिया,
नगद सुमति का भइले राजा
सरद रीतु का,
निरमल मेघ समान (सोहावन);
पवलन ग्यान सूध चमकीला !
ओह घरी ऊ-
'ई संसार बनल बे-कारन,
कि भगवान बनवलन एके
अइसन मनलन नाहीं !
'उलट-फेर बदली के छोड़ि,
दूसर कारन लउकत नइँखे;
जग का बने रूप पावे के !
ई दुनियाँ हऽ,
टिसुना-ललक-वासना-लालच;
एही लसगर
मनोबिकारन के फल !
ई संसार रहित जब,
नारायन के रचल बनावल;
तब ना एकर
अइसन रीति-नेम-गति लउकित !
केहू जीव कहीं ना
दुख-पीरा में बिलखित;
नाना-जोइनि-फंदा में परि
ठोकर खाइत भरमित !
देहियाँ पावेवालन के ना
अपना इच्छा-मरजी से भा
बे-इच्छा आ चाह-राह के
कुछ कारज भा भोग भेंटाला !
जो इन्हका के
अइसे भोग मिलित त !
भगवानों के मिलित जरूरे
साचो केहू
जो रहितन ईसर भगवान;
तब त उन्हुका बारे में कुछ
संका-दोबिधा होइत नाहीं !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लोग बिपति में,
ईसर के दुरबाद कहित ना;
ना तऽ अउरी कवनो,
देवन के मानित आ पूजित !
ई जग सनमुख लउकेवाला
नारायन के सँकलप हउवे
ईहो साबित नइँखे होत
ईसर एहिजा बाड़न नाहीं
तबो चलत बा जग के चक्का
भला कहीं तऽ
अइसन कइसे होइ सकेला ?
जो तऽ सहज समरथी,
महाराज ईसर के
सँकलप जग के चला रहल बा
तब ओही के;
करता मानल जाइ सकेला
अउरी ऊहे
काहे ना भगवान मनाई ?
जो भगवान बिना सँकलप के,
वे कारन के;
जग के रचसु बनावसु
तब ऊ लइका नियर अबूझ !
अपना मन-मति-हम-हिरदय पर,
नइँखे उन्हुकर कुछ अधिकार !
जो ऊ प्रभु मालिक भगवान,
अपना इच्छा से लोगन के;
सुख-दुख देलन,
तब ऊ इच्छाबसी कहइलन;
फेरु सुतंतर करता कइसन ?
जो ई कहल जाय कि,
मानुस भगवत का इच्छा से;
देहियाँ पाके करम करेला !
तब फल भोगेवाला,
भगवाने का होखल चाहीं;
ना मानुस का कबहीं !
जो ई कहल जाय कि,
ईसर सगरे जड़चेतन में;
उन्हुके रूप जगत ई हउवे,
तब ऊ रूप समान पाइ के,
सभे आदिमी ईसर भइलन;
बेबस मानुस नाहीं !"
एह किसिम से राजा सहजे,
भगवत-मत में देखलन दोस !
दूसर उन्हुके;
परकिरती-माया-मत लउकल
भरम भरल बेजरि के !
'जग के कवनो कारन नाहीं
जग ई बने सुभावन
ईहो मत तऽ
बिना दोस के नइँखे !
एह लोक में,
कारन रूप बीज से
कारज आँकुर देखल जाता !
करता एक, बहुत चीजन के
कारन होइ सके ना !
दूसर कि-संकलप एक जब,
तब अनेक चीजन का—
एह समकठा रूप जगत भा
तीन लोक चउदहो भुवन आ,
बरहमांड सउँसे के;
करता कइसे होइ सकेला ?
ई सुभाव बिभु कहल गइल बा,
जे कि सहज सनातन;
सगरे फइलल मानल जाला !
सहज-बियापी,
फइलल बिभू-पदारथ;
कवनो फेर-बदल भा--
फरक, रूप में रचे कबे ना;
ना पैदा करवइआ होला !
एह भेद का करते,
ना सुभाव बिभु;
कारन होइ सकेला !
कहल गइल बा जब सुभाव के,
सहज-बियापी;
तब सभ जगहा,
एक समान भाव से रहले,
सभ चीजन के कारन;
होखल चाहत रहे समान !
बाकी, अइसन होला नाहीं;
दुनियाँ में कम-बेसी;

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कारन देखल जाला !

कारन अइसन कारज होला,
ई त साफ जनाता !
तब निरगुन जे सहज सुभावन,
सगुन सरूपी बदलेवाली;
तिरगुनियाँ दुनियाँ के,
कारन कइसे होइ सकेला ?
'जब सुभाव अविकारी,
जग के कारन होइ सकेला';
अइसन मानल जाय,
तब कारज समकठा जगत ई;
कइसे बनी बिकारी ?
जो ई कहल जाय कि
नित्त सनातन सहज सुभाव;
हूऽ पैदा करवइओ,
ए से कारन होइ सकेला;
तब तऽ कारज-झुंड झोंटइला—
जटा-बरोहि कठिन के
कबे नास ना होखल चाहित !
अगर परानिन के बिसयन में;
लगन-लगाव सुभावन होला—
अइसन मानि लिआय;
तब तऽ कबहीं,
मकुति परम पद होइ सके ना !
काहें से कि
हूऽ सुभाव त नित्त सनातन;
अउरी नाहीं बदलेवाला।
जो सुभाव के,
हूऽ बिसेख पएदाइस;
तब त सहज समान भाव से,
एकरा फलनो के भल
ऊहे गुन-बिसेखता होई,
बाकी एह जगत में;
कबे फलन का बारे में हठि,
ई बतिआ ना देखल जाले;
एहि से सुभाव ना,
पएदा करता हउवे।
सहज-सुभाव-लगाव झुकाव,
मनवाँ से ना जानल जाय;
जइसे करता के झुकाव गति !
बाकी फलवा मन से लउके,
एही से सुभाव ना;
कारन होइ सकेला !
अपने आप सुभाव अचेतन,
तब फिर चेतन गाइ आदमी—
आदि देंहिधारिन के;
कारन कइसे होइ सकेला ?
पछुआ हँसुली हार वोगएरह,
गहनन के जरि कारन सोना;
हरदम परतछ लउकत बाटे।
बाकी कबे सुभाव सामने
कतहीं देखि परल ना।
तब ऊ जग के
कारन होइ सके ना !
कालो जग के
कारन होइ सके ना।
काहे से कि,
काल सनातन हउवे।
लागल रही सनातन कारन
ऊ त कबे चैन लेई ना !
एह ढंग से,
मुकुति-परमपद;
होइ सके ना कबहीं !
जो ई कहल जाय कि,
पुरुसे कारन हउवे;
तब काहे ना सभे परानी
आपन चाहल फल पावेला ?
केहू अपना दुख के
अपने कारन होइ सके ना !
मन के चाहल चीज सवतुकी
ना सुख साँति भेंटासु !
बेचहले दुख-बिपति वोगएरह;
खेदले फिरसु पाछ ना छोड़सु !
एह से त ई पुरुष परगटे
पराधीन लउकत बा;
तब कइसे कब,
करता होइ सकेला ?
पुरुस बराबर—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जतन करे सुभ काम करे के,
असुभ काम सें दबें डेराय;
तबो असुभ हो जाला,
सुभ नाहीं करि पावे !
जाड़ा गरमी बरखा
रोग सोग आफति से;
जब उतजोग पुरुस के,
बिरथा देखल जाता;
तब ई कबो सुतंतर नइँखे !
आखिर ई जग,
बनल अकारन नाहीं !
धरती पानी–
पवन वोगएरह का कारन से,
बिरिछ वोगएरह कारज;
अउरी भइल बीज से अँखुआ,
फेंड़न से फल देखल जाता !
जो ई जगत अकारन होइत,
तब कारज में;
मनवाँ लागित नाहीं !
सभई सभ कुछ पाइत,
सीधि मिलित कारज में निहचित !"
एही तरे अनेकन दोस
कारनवाला मत-बिचार में;
अउरी अघट अकारन भीतर,
राजा सुदत सजग हो देखलन;
सूध बूधिका बल से ;
तरह-तरह के ,
जड़ आ चेतन जीवो जग में;
किसिम-किसिम का,
कारन के;
पाइ भरोस-सहारा,
सहज भाव से पएदा होलन ;
जग में कुछुऊ,
बेकारन के नइँखे;
तबहूँ दुनियाँ,
सभ में सामिल;
सहज समान एक कारन के,
जानति-देखति नइँखे !
आपन संचित पुन्नि करम-फल,
सभ से उत्तम दान-लाभ आ
बउध-धरम-मत-ग्यान पाइ के;
धरमी सेठ सहित आदर से
मधुर बचनिआँ मुनि से कहलन–
"महापुरुस हे ग्यानी !
सुरुज-बंस-सासन-छाया में,
नगरी सुघर नाँव श्रावस्ती
तहवें वास हमार !
हम अपने का ठहरे खातिर,
चाहे अउरी संत लोग का
भजन-धरम-उपदेस-साधना;
ध्यान–धारना
गौर-गुनावन लायक;
ओहिजा एगो
नगद धरम-मठ;
बनवावल चाही लां !
रउरा रमता -संत सिरोमनि
रउरा खातिर;
राजमहल भा बन हो
दूनो एक समान !
तबहूँ ओह जगहि पर रहि के,
एह तुच्छ सेवक पर
नजरि दया के फेरीं !
चान नियर निरमल मनवाला
अटल-बिचारी -नेंम -ब्रत-पालक
बउधदेव भगवान
उचित बिचार जानि राजा के
दूसर उन्हुकर
विनय-भाव आ दान-लालसा
समुझि प्रेमबस कहलन–
"धन्नि भगत हे !
कइसन निपुन बिचार तोहार !
बिजुली नियर चंचला लछिमी,
तोहरा उन्हुकर
नइँखे तनिको ममता मोह !
उदासीन संपति से होके
तूँ सुख-सांति डहरिया धइले
खोजे चललऽ,
अजर अमर अविनासी पद के
धरम-काज में धन-संपति के
सूध प्रेमबस कइले त्याग;

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बहुत सुघर निरमल फल होला !
धरम सनातन सत् अविनासी,
रुचि तोहार ओकरा में !
दान-पुन्नि से तोहरा मन के,
हम खुश देखत बानीं !
एही से तूँ,
मुनि-जन-सहमत;
संका-हीन सचाई उत्तम,
जाने के अधिकारी बाड़ऽ !
आगी-बीच जरत घरवा से,
जवन काढ़ल गइल झपटि के;
ऊहे लाभ कहाई !
ठीक अइसहीं काल अगिनी में,
जरि बिनसत दउलतिया में ले;
जेतना दान दिआइल,
उहे रहेला बचता पूँजी !
पंडित-ग्यानी लोग दान के,
धन-संपति के,
उत्तम भोग बतावेला !
बाकी मूढ़ लोग ममताबस,
अपना बिसय भोग-सुख खातिर;
ओहि नासवान धनवाँ के,
धरे जोगावे राखला !
जे उत्तम अधिकारी बाटे,
समय मोताबिक;
ओके दिहल दान परमारथ
वीर पुरुस का—
समर भूमि में बहादुरी से;
लड़ला का समान बा !
मउवति से डर जाये वाला,
कायर लोग लड़े ना !
ओही तरे मोहबस बेकल,
बिसय-लीन भोगीजन;
दान करसु ना !
जवान परानी हरदम,
बे लचपच के फरिछा मन स;
लीन रहेला दान-धरम में;
अउरी दान देई खुस होला
उहे चतुर भलमानुस पंडित,
भल समाज में;
होला ओकर आदर-मान
दानी लोग जगत में,
कठिन भयावन बिपत्ति भोग से;
अलगा होके सुखी रहेला !
दान रूप सुभ सतकरमन का;
संचित पुन्नि-प्रताप-तेज से;
अंतकाल मउवति का बेरा,
उन्हुके मोह धरे ना !
एह लोक में—
दान-पुन्नि-फल,
होखे थोर भले ही;
बाकी अवसर पाके
भारी फल होला परलोके !
दान नियर मानुस के,
नाहीं केहू दूसर मीत
दानी, जो जनमे एहिजा तऽ
उत्तम राजा होला !
ऊहे सरगलोक जब जाला,
इनरदेव महराज बनेला;
देवन के अगुवा सिरताज !
पसु पंछी जो भइल कहीं तऽ
ओहू में उत्तम पद पावे।
दानी देव समान,
भोग चलेलन—
उन्हूका पाछे-पाछ !
सरग-लोक-सुख,
आगे खड़ा रहेलन !
सांति, सील आ छमा हरदमें,
उन्हुकर रहछक होलन !
दाने अमर बनावेवाला,
ऊहे सुख के जनम-सउदिया;
देव दुलभ आनंद-खजाना,
चित के सोधे बोधेवाला;
सेसर कारन धरम-ग्यान के !
दान-धरम से,
दुख का असल जथारथ कारन;
दूसर ओके दूर करे के,—
सहजे उत्तम—;
उचित जानकारी हो जाले !
साथे-साथ सुगम में,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दाता का भीतर के;
मइलि जरूर धोवाले !
दान करे से धन के पाप—
अरजे, राखे खरच आदि से;
होखेवाला दुख-चिंता से,
चित निरमल हो जाला !
प्रेम भाव सरधा से,
देबे वाला दाता तुरते;
अपना खीसि बंग के जीते !
दान-सुगति-साधन के उत्तम,
एक अंग परधान !
एकरा बल से,
भारी बिघिन मुकुति के,
टिसुना माह वोगएरह;
सहजे जीतल जालन !
जइसे लोगवा,
छाँह फूल फल खातिर;
गाँछ-बिरिछ के रोपे-पाले,
ओही तर निपुन विदमान;
अछय-सांति आ संपति खातिर,
प्रेम-भाव से दान करेलन !
संचित कइल जोगावल धन के;
दाने दिहल सुलायक जन के,
ओकर रइछा जानी !
दान देत गिरहस्ती लोग,
धन असार के;
असली हीर बतुस हित हीरा,
अउरी बिमल सुजस पावेला,
जे अनाज के दान करेला,
बल-पवरुख ऊ देला !
लुगा-कपड़ा दान कइल जे,
ऊ सोभा सुघराई देला !
बाकी, जे त मुनि लोगन के,
मठ भा कुटिया बनवावेला;
ओकर सभ कुछ,
दान दिहल कहलाई;
कुछ लोगवा तऽ
दान देइ के चाहसु भोग !
कुछ का मन में सुजस-चाहना,
सरग-लालसा कुछ लोगन का;

मन-बखरी में बइठलि,
दरवाजा-अँखिअन से;
मुलुकि-मुलुकि झाँके ले !
बिना चाहना वे सवारथ के,
निरमल दान करत तूँ बाड़ऽ;
एही से सुभसवतुक,
धरम-मरम-गति मालुम तोहरा !
धन्नि भगत हे !
धन्नि-धन्नि हे !
धन्नि-पुरुस तूँ पुन्नि-आतमा !
जल्दी पूरन होखे,
सभे तोहार मनोरथ !
ग्यान पाइ के उत्तम,
रज-तम दूइ गुनन का;
अझुराहटि से पिंड छोड़ावऽ
सुनी अनमोल सिखावन मुनि के,
बउध सरन में.
धरम-सरन में;
संघ-सरन में गइलन राजा !
बीतल राति बिहान भइल जब,
ऊ मुनिवर के;
भिक्खु संघ का साथे
नेवता देइ करवलन भोजन !
ओही समय मुनी से,
हुकुन पाई के,
मठ बनवावे खातिर;
उन्हुकर मनवा खुस हो.
नाँचि उठल अगराइल !
जइसे चितरकूट परबत पर,
रिमझिम सावन-मेघ देखि के
मस्त मगन-मन नाँचत मोर !
सरधावान सेठ ऊ,
तब साथे उपतीस भिक्खु का;
गइलन ओह नगर से !
राजगिरिह से श्रावस्ती के
जात डहरि में ऊ लोगन से;
सगरे कहत सुनावत गइलन—
हे बुझनउक बिचारेवाला;
रउरा लोग सुनीं जा !
जगहि जगहि से,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मठ बिहार सुभ बनवाईं जा !
बउधदेव भगवान,
धरती पर लिहलन अवतार !
हम उन्हुका के नेवता दिहलीं,
एह डहरिया से ऊ अइहन !'
जनम धरतिया.
श्रावस्ती में पहुँचि थीर हो;
धरमी राजा घूमि टहरि के,
कोसलपति महराज-राज में;
सदईं सभ सुख देबेवाला.
सजगर सुघर बिरि गँछियन से,
साजल साभा पावत;
जेत नावँ का बन के देखलन !
ओह सुघर बगिया के,
कीने का इच्छा से;
राजा कइलन विनय जेत से,
बगिया के मालिक से !
रहे जेत ऊ बड़ा लालची.
डही से बन-बाग जगहिआ
न देबे का इच्छा से,
बोलल साफे नगर सेठ से —
"धरती धन से पाटल जाय,
एतन कीमति दिहली पर हम;
ऊ बन देहबि नाहीं !"
"तप साधन परमारथ खातिर,
सुघर तपोवन संत निवास;
बनवावे का इच्छा से हम
एके कीनत बानी !"
एह किसिम से राजा
हठ से विनय जेत से कइके;
बाइस बिगहा के ऊ बगिया
नगद मोल सोने के सिक्का;
तुरत करोड़ अठारह देके,
भगति-भाव सतसंग-लगन से;
परमारथ सरधा से किनलन !
देख सुदत राजा के अइसन—
दान-लगन परमारथ भाव,
जेत सांति-सुख पवलस;
ओकरा हिरदय भीतर,
प्रेम भगति मुनिवर के जागल !
सउँसे बन उ दिहलस,
बउध-विहार बनावे खातिर !
बिरिछ लता से सघन ढकाइल,
परम पवित्तर सुघर जगहि में;
नंदन वन समान सुखदाई,
मठ बनवावे का इच्छा से:
ऊ अनाथपिण्डक तब,
कारीगरी भवन रचना के;
भेद-मरम गति जानेवाला,
भिक्खु सिरोमनी निपुन संजमी;
निरमल-मन उपतीस-देव का
निगरानी में,
मठ बनवावे लगलन !
राजा का बल-बुद्धि मोताबिक,
संपति-सरधा ग्यान समान;
मंगल मूरति रूप बिचितर,
मठवा बनि तइयार भइल !
ओकर सोभा-साज सरूप,
अइसन लोक-बिलच्छन झलके:
जनुक सरग से,
सुघर कुबेर भवनवाँ;
धरती ऊपर उतरल !
आइल जग में,
सुगति-बोध अमिरित के कुंड;
अछय खानि अनमोल तेजमय,
ग्यान-रतनधन-हीरा मनि के !

□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पिता-पूत-मिलाप

महापुरुस मुनि बउधदेव तब,
सूध ध्यान का बल से,
तेज प्रताप पाइ बेजोड़,
जीति अनेकन
पंडित आ विदमान लोग के,
साहृतर वेद पुरान-ग्यान के;
पूरा जानेवालन के !
पाँच पहाड़न का पंजा में,
बसल सुघर अति;
मगधराज का प्रिय राजधानी,
राजगिरिह से चललन आगे
पिता नगरिया—
कपिलवस्तु का ओर !
संत हजारन साथ लेइ के,
माँगि मधुकरी;
भोजन करत कलेकल,
टहरत घूमत करत भजनिआँ !
गाँव नगर के देखत-ताकत,
सुनत सांति से सज से;
सभई के कवलेस कहनिआँ,
मंगल धरम सनेस सुनावत;
लोगन के दुख दूर भगावत,
चलत डहरि के अंत लगाके;
पहुँचि निसाने गइलन !
दया पिता पर कइके,
जाइ नगर-पाँजर में,
जगहा देखि सूध एकांत,
साथे सभ जमाति के लिहले;
डेरा डालि ठहरलन !
समय पाइ के,
उपरोहित आ मंत्री लोग;
जब भेदिअन से,
अइसन खबरि सुनल कि;
'बउधदेव मुनि,
चाहल बिमल ग्यान के पाके;
सफल मनोरथ लवटल बाड़न',
तब दरबारे जाके;

अपना करतब-धरम मोताबिक,
राजा जी के;
उचित जानकारी दिहलन जा !
संत सिरोमनि बउधदेव के,
आइल सुनि के राजा;
लोर भरल अँखियन से गद्गद्
बेकल मन से;
देखे खातिर आतुर होके,
पुरवासिन संग चललन !
रिखि लोगन से घेरल,
निपुन सिरिहिटी नायक ;
बरम्हा अइसन;
पूत प्रतापी,
बउधदेव गउतम के,
साधु-संत सेवक चेलन से;
चारो भर से घेरल,
देखि सामने;
धरम-विचार करत मन ही मन,
छोड़ि सवारी राजा;
पएदल पंजरा गइलन !
पूत पिरीत गुनी गउतम के,
देखि भेख मुनि संन्यासी के;
धाही मन राजा के
बेकल भइल सहज ममताबस;
कंठ रुन्हाइल बोलो बंद !
ऊ परि मोह भरम में,
ना उन्हका के मुनि कहि सकलन,
ना कहि सकलन पूत !
देखि सजाबल देहिया आपन,
सुघर राजसी पहिरन से आ —
हीरा-मोती रतनहार से;
ओने नया जवान पूत के,
मुनि संन्यासी भेख उदासो;
गेरुवा अँचला चादरि के !
सहज सुभावन पिता-प्रेमबस,
पिघिलि करेजा राजा जी के;

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बनि के लोर छलकि अँखियन से,
बरबस बहरा आइल !
हिरदय भइल अधीर सोग से,
सभे इन्निरिआ बेकल भइली।
आखिर दुखिआ राजा,
लगलन करे विलाप !
देंखि पुत्र के,
नेह-छोह ममता से खाली,
सनमुख सूखल ताल देखी के;
दुखी पियासल पथिक समान,
चिंता-चिता-आँचि के झउँसल,
भइलन राजा बहुत निरास !
ममता-हीन उदास विरागी,
जनु तसबंरि उरेलि होखे;
बइठल देखि पूत के सनमुख,
राजा तनिको पा सकलन ना;
पूत-मिलन आनंद !
'सागर नील चुनरिआ जेकर,
अइसन सउँसे धरती;
तेजवंत परतापी राजा,
महावीर मांधाता अइसन;
रहिती जेकरा सासन में,
ऊहे आज बनल संन्यासी,
साधारन लोगन का घर-घर,
भोजन-भिच्छा माँगि प्रेम से;
जीवन के बेवहार निबाहत !
जे धीरज में मेरु समान,
महिमा जेकर सुरज नियर बा;
सोभा तेज-चनरमा अइसन,
चालि मंद गजराज समान;
बानीं टनक साँढ़ ले बढ़ि के
तबो जगत जीते का जगह;
खात-फिरत ऊ,
भला भीखि के अन्न !"
'पिता हमार अबो हमरा के,
बेटा मानत बाड़न'
अइसन जानि बउध मुनि;
तुरत तहाँ ले,
उड़ि के गइलन बादरि ऊपर !
तब कुछ देर फेरु ऊ,
चललन पवनदेव का तन पर;
छुवलन रथ के सुरुजदेव का,
अउरी धइलन देंहि अनेकन;
फेरु बनवलन एके !
तब ऊ महापुरुस मुनि सोध,
बिना बिघिन के;
गइलन पइठि धरतिया भीतर,
जल का ऊपर चललन;
परबत-पेटे घुसरि दउरलन,
जइसे पंछी उड़े अकासे !
अब ऊ आधा देहीं,
मेघ नियर पानी बरिसवलन;
अउरी आधा तन से;
सुरज नियर आकासलोक में;
तेजवान बनि शोभा पवलन !
एह किसिम से बउधदेव जी,
जोग-प्रताप रधि-सोधि बल;
राजा के देखला के,
दिहलन सुख-आनंद !
अउरी दूसर सुरज-समान,
आसमान में ठहरि मजे में;
दिहलन सुभ उपदेस धरम के !
"हे राजा जी !
राउरा मन के
भाव-मरम हम जानत बानीं !
पूत-प्रेम आनंद छोड़ी के,
धारन करीं धरम-आनंद !
कबे आजले पहिले,
केहू पूत पिता के;
जे ना दिहले लिहले होखे
बोध रूप उ अमिरित उत्तम;
रउरा अब मंजूर करीं !
हे राजा जी !
करम-सुभाव,
करम के कारन;
अउरी करम-विपाक, सहज-फल
गति-बल करम-सहारा !
इहे चारि गूढ़ मरम हऽ,
एकर ओजन जानीं !
हे व्रतधारी निपुन संजमी !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ई सउँसे संसार करम का,
अइंठल धागा से बान्हल बा;
एके निहचित मानी !
सभई से बरियाई—
करम करावे वाली,
परकिरती के पहिया;
हरदम घूमि रहल बा,
तीन गुनन का बल से !
केहू जग में,
जनम लिहल ना अइसन;
जे ना चढ़ल ओह पहिया पर !
एसे अइसन करम करी जे,
दुनियाँ खातिर;
हो सुख-सांति भलाईवाला !
जब मउवति के बेरा आई,
डेरा लागी कूच करे तऽ;
धन दउलति ई महल-अँटारो,
राज-संपदा भाई बंधु;
केहू संग धरी ना !
चढ़ि करमन का उड़नखटोला,
जाई जीव अकेला ?
पाप पुन्नि सुभ असुभ करमवाँ,
पगहा नाथ पछाड़ो बनिहन;
साथे लागल जइहन !
सुभ करमे हऽ मीत जीव के,
पाप करम दुसमनवाँ !
एही से दुनियाँ का—
करम भूइँ में आके,
करमन के गति भेद सहित अब;
सजसे जानीं रउरा !
हे राजा जी !
जीव करमबस होके,
सरग नरकवा में घूमेला !
तीनि भेद करमन के,
सुभ आ असुभ दुइ तऽ साफे;
तीसर उन्हुकर मेल खिचड़िआ,
ईहे तीनि जगत के कारन !
ई कुल सोचि समुझि के,
रउरा अपना मन के;
धरम सुगति दूनो दरजा में,
लगा मजे में राखीं !
मन बानीं का करमन के अब,
सोधीं माँजीं सुघ बनाईं;
एह किसिम से पाईं सांति !
जानि जगत् के—
सागर लहरि नियर अति चंचल,
चित से बनल उदासी;
धरमारथ उत्तम करमन से,
करम मोह फन काटीं !
गरहमंडली चक्का अइसन,
ई सउँसे संसार—
जेकर भीतर लोक अनेकन,
घूमि रहल बा तेजी से !
समय पाइ देवतो गिरि जालन,
कहीं कवन गति मानुस के·
आतम आनंद असल आनन्द,
सुगति परम सुख हउवे !
धन संपति सुख जग में,
सरप-बास वाला घर भीतर—
रहला नियर भयावन !
ई संसार अगिनि से—
जरत मकान नियर बा,
फँसल बिपति में भारी !
एसे उचित इहे कि,
जनम, बुढ़ापा, मउवतिया का;
बिपति रोग से खाली,
उत्तम पद के खोजीं !
हे राजा जी !
इच्छा, बैर, प्रीति, ममता के,
लमहर पलटन जीतीं !
ओकरा जितले,
कुछऊ ना बाँचे जीते के !
दुख के, दुख कारन के,
दुख का नास अंत के;
अंत करे के जतन जुगुतिआ,
ई कुल्हि जानि समुझि लिहला पर
भय अग्यान नसालन !"
राजा एह किसिम से,
उन्हुकर मधुर बचन बसुनि;
अउरी देखि महातम मान,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सुख संतोख पाइ खुश भइलन;
कहलन प्रेम मगन नइ के;
"महापुरुष हे !
राउरि दया भइल हमरा पर—
कि सुभ दरसन दिहलीं !
उत्तम साइति-घरी आजु जब
महा मोह रूपी फंदा से,
कठिन बिपति से दुख से,
कइलीं हमके पार !
हे महातमा !
राउर जनम सफल बा,
अब हम बिना पूत के नइँखीं !
रउरा छोड़ि राजलछिमी के
काम जथारथ कइलीं;
भाई बंधु हीत संगी के—
छोड़ि निकललीं इहो ठीक बा;
कठिन जोग तप कइली ठीके;
अउरी ठीक इहे कि
हमरा ऊपर दया देखवलीं !
पहिल पुरान-समइया,
नगद-जमाना-जुग के;
धरम-धुरंधर,
राजरिसी बरम्हरसी लोग
जेके पाइ सफल ना;
जग्यदान से;
कठिन-साधन तप से
बिमल ग्यान ऊ पवलीं रउरा;
दुखी लोग का रइछा खातिर !
रउरा राजा होके,
घर में रहि के;
जीवन के पालन भर करितीं,
बाकी, संत-मुनि बनि;
काटि कठिन भव-फंदा,
उग्हकर पिंड छोड़ाइ सकीला !
ग्यान बोध आ सीधि पाइ के,
रउरा भव-बाधा के जितलीं
बिना राज के,
दुनियाँ का सिरताज समान;
सांति चैन-सुख-रस बरिसाबत;
सोभा पावत बानीं !"

अइसे कहि के बारंबार
सूध सचाई—
उत्तम हितकारी के जानत;
धरमी राजा प्रेम भगति से,
पूत-सपूत-संत मुनिवर के;
माँथ नवाइ पलग्गी कइलन !
ओह समय में,
जोग-सीधि से पूरा;
अउरी पिता-बंधु भाइन से,
पूजा आदर पावत;
बउधदेव के देखि;
बहुत लोग घर छोड़े खातिर;
मन में निहचय कइलन !
केतने राजकुवँर सुनि,
सूध धरम-उपदेस सवतुकी;
घर से निकलि बिरागी भइलन
छोड़लन रोवत-बिखलत;
भाई बंधु हीत संबंधी,
अउरी अपना प्रिय भोगन के !
अनिरुधक, आनंद, नंद आ—
किरमिल-कुंडधान, उपनंद;
बउध मुनि से,
सुनि के सिच्छा पुन्नि-धरम कें
घर के फंदा तोरि निकललन;
होके बउध धरम क बंदा !
मन में मधुर लालसा लिहले
सुगति सांति-सुख पावेवाली !
एह किसिम से देखा-देखी,
जानी महातम-मरम धरम के,
ओह कुवँर लोगन के,
भेद भरम-अझराहटि वाली;
गलति सिच्छा देवेवाला,
गुरुहा बाभन देवदत्त तब;
ओही तरे छोड़ि घर चललन,
अउरी गुरु के पूत उदासी;
भइलन उहे डहरिआ !
ओह सभन के,
होत देखि संन्यासी;
चट से चतुर उपालि बिचारत,
घरिए भर में;

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

घर-घरनी गिरहस्ती वाला,
सभ परपंच बखेड़ा छोड़ि;
बउध-धरम अपनवलन !
तब राजा सूधोदन.
देखि बिराग पूत के अपना;
राजभार भाइन के देके,
रिखिन समान बना जिनिगी के !
धरम ध्यान सतसंग भजन में,
आपन समय बितावे लमलन !
ओने दूसर कदम उठल कि,
ओहिजा नया मुँड़ाइल ;
ओह संत त्यागिन का
पुरवासिन का साथे;
बउधदेव नगरी में गइलन;
मन चित सोधि बान्हि के,
सबतुक संजम का डोरी से
संत सुरेमन महापुरुस का
डेग नगर में धरते ;
लोर बहावत पुरवासी सभ,
बारंबार फूल बरिसावल;
धूमदीप से नेह बिनय से
कइल बहुत आदर सतकार !
राजकुँवर के,
नगर बीच आइल सुनि ;
मेहरारू देवढ़िन से अचके,
आइ कितन में बहरीवाला;
खिरकिन पर ले झांके लगली !
मुनि बहत्तर धारण कइलो पर,
गाँठ बिरिछ के बोकलावाला;
छिपल साँझि का बादरि भीतर,
सुरुजदेव का योति समान;
उन्हुकर चमकत मुँहवाँ देखि,
रोवली से उन्हनी का !
नीचे में मुँह कइले,
सुध सांत-चित;
चमचमात मुनिवर के देखि,
बेचारी बेकल मेहरारू;
आपुस में बतिआवे लगली—
'माँथ मुड़ाके गुदरी लिहले,
भले सहज सुघराई इन्हिकर;
थोरे बहुत तोपाइलि बा,
तबो तेज धपकत बा उत्तम;
जइसे चीरि मेघ के परदा,
सुरुज ज्योति फइलेले !
हथियारन के धारन कइले,
पलटनिहाँ बीरन का बीच;
राजनिसान सोनहुला छाता,
हीरा जड़ल मुकुट माँथा पर;
डोलत चँवर बीच से सज से,
चले जोग इ पुरुस भला अब;
पएदल चलत कवडल लिहले !
जिनका पासे,
हाथी घोड़ा रथ असवारी;
सभ कुछ होइ अनघा,
उहे आज डोकी ले;
भिखिया माँगत घूमत बाड़न !
पहिरि सुघर पोसाक राजसी,
पदुमराग मोतिन के माला;
कबे चलल जे राज डहरि पर,
ताकल धनियाँ लोग,
उहे आज मुँह नीचे कइले;
कले-कले चलि जाता !
कवन तत्त ई खोजत बाड़न,
जे कि सबतुक मधुर प्रेम के;
बरियाई लतिया के,
धइलन अइसन भेख ?
सुख के छोड़ि लोग लइका का,
एह नेम हठ धरम बरत से;
भला मगन मन बाड़न !
राजहंसिनी जसोधरा तऽ,
सोग दाह से झुलसि जरूरे;
केतना बेकल होईं !
सरद पुरनवाँसी का,
विमल अँजोरिया नियर चमाचम;
मुहवाँ जेकर झलकत बाटे,
अपना ओह दुलरुवा;
गुनी सुलायक सुघर पूत के,
तपसि भेख देखि के राजा;
होइहन खुस कि दुखी उदास ?
लोर बहावत लाल दुलरुवा—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

राहुल के मुँहे देखि,
जो ना इन्हिका मोह भइल तऽ;
बड़ा कठिन इन्हिकर व्रत नेम !
एहि कठिन तप जोग जतन से;
देहियाँ इन्हिकर;
गइल सूखि दुबराइति
बाकी तऽ सुघराई निहचित,
जइसनि के तइसनि बा !
ए से इहे जनाता,
इनिरीजीत निपुन जोगी ई,
सांति जरूरे पवले बाड़न !"
एह किसिम से दुख से बेकल,
करत बिलाप लोर ढरकावत;
सुसुकि सुसुकि अँचरा से पोछत,
नया पुरान सभे मेहरारू;
इनके देखत रहली !
ओने घूमि मधुकरी माँगत,
देखि दुखी हो कहलन राजा-
हे महातमा निपुन दयानिधि !
का हमके लजाववन बानीं,
हमरा कुल के रीति इहे ह ?
बउधदेव जी,
विनय भाव से तब कहलन कि—
'नाहीं, ई तऽ हउवे,
बउधलोग का कुल के रीति।'
सगरे नगर घूमि के मुनिवर
राजमहल में गइलन !
लोग हजारन धावत, आवत
जयजयकार सुनावत;
महापुरुस मतिमान तथागत,
संत सिरोमनि का खातिर में !
जइसे देवदया से,
सरद रीतु का नील अकासे;
सोरह कला साजि के बिहँसत,
मंगल बिमल चनरमा उगि के;
सरगलोक से डेग बढ़ावत,
अमिरित रस बरिसावत;
मिरितलोक में आवत ?
साथेसाथ हजारन तारा,
झूमि-झूमि आनन्द मनावत!
रसे-रसे मुसकात !
ठीक तइसहीं,
आगे-आगे बउधदेव जी;
लदल फूल माला से,
गेरुवा चीवर धारन कइले;
पाछे चेला भिक्खु हजारन,
सांतिभाव से चलत कले-कल;
पहुँचि महल में अइलन !
कुल परिवार मीत हित समके
संगे लेके राजा;
तुरत राजसी रीति ढंग से
कइलन सज से;
प्रेमभाव से
जथाजोग आदर-सतकार !
मधुर मालती जूही बेला,
पारिजात आ हरिचंदन के,
माला सुघर बना के,
दही दूबि रोरी कपूर संग;
मलयागिरि चंदन-केसरि ले,
सुबरन थार सजा के;
सुभ मंतर वेदन के,
वेदुवा लोगन से पढ़वावत;
विधिवत पूजा भइल भाव से !
घी के बारि चिराग हजारन,
भइल आरती सज से !
बाजल घड़ी घंट घड़ियाल,
ठनकल संख विहँसि ततकाल।
काजू-किसमिस मेवा-माखन,
सेव-अनार बदाम दियाइल;
भिक्खु लोग के
मधुर नरम नइवेद !
एगो जसोधरा भर खाली,
माई दाई का कहलो पर;
जलसा में ना सामिल भइली !
उन्हकर ई कहनान रहल कि
जो हमरा पर
दया उहाँ के होई;
तब तऽ अपने
हमके दरसन देबि उहाँ का
एतना कहि के तपसिन देवी,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मन में अपना सोचे लगली;
"मनसा भाव रहल जे बाकी,
उहे आजु का पूरा होता ?
भला कहीं तऽ भिखमंगा बनि
लवटि नगर के अइलन;
कपिलवस्तु, सोभा सिरताज !
राजभोग से ना अघाइ के
मानों अबकी बेरि उहाँ का;
हाँथ पसारत बानी आपन
घूमि दुवारि-दुवारि !
कुलमरजादा रीति नसा के
राजधरम के लाते मारि !

मुनि के आदर होत देखि के
देवदत्त के माथा ठनकल;
ऊ भुसुराये मनके लगलन,
आड़े आड़ कले कल !
"जे घर फूंकल आगि लगावल;
सोभा साज सिंगार नसावल;
राजधरम राजा के छोड़ल,
कुल-परिवार मीत-हित सभ के;
लतिआवल डहकावल नाहक,
महल मसान बना के भागल;
अब का पहुँचल रंग जमावे,
जरल घाव पर छिरिके नून ?"
भले सुनल ना केहू
तनिको ध्यान दिहल ना;
तबो बाज अइलन ना,
ऊ बतिआ बाउर कहला से !
खल लोगन के चाल अइसने,
जनम-जनम के आदत उनकर,
सुजन संत-सगति पवलो पर
बनल सुभाव मलिन छूटे ना

एतने में आँगन से फुदुकत,
राहुल भीतर पहुँचल !
माई ! चुप रहु सांत,
पहुँचि पिता जी अइलों !

आजु उहाँ का
तोर मनोरथ पूरा कइलीं !
तबले बउधदेव सुनि,
डेग बढ़ा के भीतर गइलन;
गोपा के सुभ दरसन दिहलन !
अउरी संत सुभावन,
ठान अंठान ठानि कोहनाइल;
जसोधरा से,
कोमल मधुर बचनियाँ कहलन-
"हे देवी अब मानऽ !
बतिया तोहरे रहलि अंत में,
आइल पहुँचि दुवारे तोहरा;
ई भिखारि समदरसी संत !
एकरा नजरी,
सभई एक बराबर;
अपनावे का जोग उहे जे
दुखी गरीब अबूझ अजान !
सहज गरीब लोग के हिरदय,
सोझ साँच आ निरमल होला;
उनका भीतर बहुत रहेला
तिरगुन तीनि दोस के—
धोइ मेटावे वाला;
सरधा-प्रेम भगति-सेवा के,
सुभ तिरबेनी धार !
राम गरीब नेवाज,
सबरी, के निखाद के
दिहलन केतना आदर !
साधु-संत से,
हानि कबे ना होला !
हे बड़भागिनि !
धरम नेम व्रत पालेवाली
समुझऽ अपना दुख के अंत !
गउतम के ई कमी रहल कि
छिपि के निकलि गइल चुपके से !
बाकी, मिलल पुन्नि फल उत्तम
हाथे लागल;
ग्यान-रतनधन-हीरा !
रोग बुढ़ापा मउवतिआ से
पिंड छुटल अब;
खोजि-हेरि के पवलीं आखिर,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सहज-सुगति-अमिरित के झरना" !
जसोधरा तब बोललि—
"आई, देव बिराजीं एहिजा,
दीनानाथ दया के सागर !
दुनियाँ के भगवान ! !
इहे जीति राउर हे नाथ !
कि अबला के अपनवलीं अब,
बेचारी नारी के;
अइसन भारी आदर दिहलीं !
परते राउर नर्जार दया के,
मोह राति के हटल अन्हार;
भागल भरम कुहेस !
साच पिरीति सुफल सुभ,
मिलल परगटे;
हमके सुगति हमार" !
जसोधरा के,
एतना विनय बचनियाँ सुनि के
ग्यानी बउधदेव महराज,
सांति भाव से कहलन—
"हे गोपे, सुनु !
नारी ना बेचारी,
नारी आसा सरधा;
जग का समर-भूईं में,
जीवन-रथ के उत्तम पहिया;
सोचि-समुझि के रचल बनावल !
तन मन से ऊ,
जीवदया के मूरति ?
जब हम बन में,
भूखे बिलटि सुखइलीं;
देहियाँ बाँचलि रहलि बटुरि के,
कुछ हाड़न के ठटरी भर बस !
तब हमरा के,
माई जाति सुजाता नारी;
दया देखवलसि
आइलि खीरि खिअवलसि, जाव बचावलसि !
एही तरे भजन में बिचरत,
नीलांजल नदिया का पांजर;
उरुबेला का,
सांत सघन सुनसान निराला,
बन का भीतर;
बइठि पुन्नि पीपर तर
जब हम धेयान समाधि लगवलीं;
तोहरे धीर धेयान बल तहवाँ,
कामदेव का सेना से लड़;
धरम हमार बचवलसि !
बेसी का हम कहीं बताई,
जेकर पालन रइछा कइलू;
उहे जथारथ धरम नारि के।

राहुल-माता दरसन पवली,
भिच्छा में राहुल के दिहली;
हुकुम पाइ माई के,
भिक्खु खुसी से होखे खातिर;
झुकि के पिता चरन में राहुल,
सहज बपौती हकवा आपन;
विनय सील के मँगलन !
जागल सहज लालसा उन्हुकर,
असत् छोड़ि सत् के जाने के;
लाँघि अन्हार डहरि दुखवाली,
सुगम अँजोर ओर जाये के;
मउवतिआ के जीति जतन से;
सुगति अमर पद के पावे के !
हुकुम खुसी से दिहलन मुनिवर,
बउध-सरन में, धरम-सरन में,
संघ-सरन में जाये के !
धन्नि राजकुल भइल आज दिन !
जसोधरा के कोखि धन्नि !
धन्नि त्याग के भाव निराला,
जहाँ न मोह अहमिता ममता;
रोस-दोस के लेस !

कइसन ऊ मन के विराग कि,
आधीराति अन्हारा अचके;
छिपि के जान बचा के,
परतिग्या का मरजादा के;
भूलि भटकि लतिया के,
भोली भाली धरमसंगिनी;
जसोधरा से छल से,
चुपके चोर बनल निकलल जे;
हिरदय जेंकर,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रहल भला पइसन कमजोर,
साहस छूटल,
टूटल बान्ह धीरताई के;
बात बनल ना,
परगट कहि के;
भजन-भाव में जाये वाली !
आज तमासा देखीं ओकर,
राजमहल में पहुंचल का ?
बाल-लाल गोदी के केकर,
के ओकरा के कोखी ढोवल,
आपन दूध पिआवल ?
हाँथ पसारि दान लेबे में,
तनिको अटक भइल ना !
ओठें कंठे धूरि सटल ना ! !
नारी साचे,
सेवा दया विनय के मूरति;
नारी सती भगवती !
नारी जग के माई,
सभके रचे बनावे;
पालन-पोसन करे लगन से !
नारी-हिरदय,
निरमल गंगा-धार !
धोवत सभकर पाप गंदगी,
नारी छमा-सांति अवतार !
नारी दुरगम दइबी माया,
महापुरुस के लीला !
नारी गूढ़ अविद्या विद्या,
नारी हऽ परकिरती;
सिरजन मूल सिरिहिटी धूरी !
जेही नियमभाव से सुमिरल,
सरन गइल कि उबरल;
नइआ ओकर लगल पार !

जें संसारी लोग मोह बस,
सुभ करमन से अलग रहल बा,
त्यागी साधू-संत के कबही,
भिच्छटा टुकड़ा देले नइँखे,
अउरी अबही जे संन्यासी,
मनवाँ के ना जीते जोग;
जिन्हके सांति मिलल ना,
उन्हके सुगति भेंटाई कइसे ?
हम-हमार पँचड़ा में बाँझल,
ममता-मोह कलह-कीचड़ में;
फँसल दुखी जग का लोगन के,
कइसे भला भलाई होई ?
अइसन बतिया मन में सोचत,
बहुमत जनता का सुख खातिर;
मुनिवर भिक्खु लोग का साथे,
निकल नगर से बहरी अइलन !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

साधु-संत जोगी-संन्यासी,
सुजन सुधरमी निपुन लोग जे;
उन्हुकर सवतुक धरम सुभावन
भजन त्याग तप संजम सेवा;
बेचारा दुखिया अग्यानी,
भूलल भटकल गिरल लोग से;
सुपट सुमारग सोझ देखावल
हितकारी उपदेस सुनावल;
बहिआँ पकड़ि उठावल
करम-धरम लउकावल;
जीवन का सुभ नगद निसाने,
बे खटका पहुँचावल।
एही नीति-रीति मोताबिक
ऊ तपसी विग्यानी,
जगत-आतमा मुनिवर;
लोगन के प्रिय बउधदेव जी
दया करत जनता पर;
कुछ दिन कपिलवस्तु में रहलन !
भइल समय से,
कथा-पुरान धरम के सिच्छा;
सरधा-प्रेम भगति से
सभे लोग पहुँचलावल भिच्छा !
एह किसिम से,
अपना तप-बल तेज ग्यान से
लोगन का भीतर के
दूर भगा अग्यान अन्हार;
महापुरुस ऊ,
कोसलराज प्रसेनजीत का
राज-सिवाना भीतर बढ़लन।
गाँव-नगर में विचरत-घूमत,
माँगि मधुकरी खात कले-कल;
लोगन के उपदेस सुनावत,
हिरदय के अग्यान हटावत।
जइसे सुरुजदेव किरनन से,
चलत अन्हार भगावत चमकत !
धइले उत्तम राज डहरिआ,
गइलन पहुँचि मजे में;
कारीगरी कला से धन से
मन से रचल सजावल सोभत;
सरगलोक के नगद नमूना,।
रजधानी साकेत नगरिआ !
ओहिजा से चलि,
धपकत कैलास समान सुघर,
सुभ महल अँटारिन से मजिगर;
मधुरस भरल गहागह ऊगल,
लहलहात ललका फूलन से;
प्रिय असोक बिरिछन के पँतिआ,
जेकरा ऊपर गुनी गहकिआ;
झूमि-झूमि गावत भूलन से,
जहाँ भँवर भाइन का साथे
राग-रंग-रस लेत कोइलिआ
पंचम सुर में कुहुकति सुख से !
सुबरन माला धारन कइले
राजा सुदत, कलस में—
परम पवित्तर जल ले
चंदन धूप दीप फूलन से
पूजा कइ सरधा से
महापुरुस मुनिवर के
दान जेतवन दिहलन !
अइसन सुघर जेंतवन भीतर
बनल बिहार सजीला;
श्रावस्ती से बहुत दूर ना
नाहीं बहुते नियरा !
चारी भर से सांत जगहि में,
दक्खिन दरवाजा का पास !
जहाँ हजारन साँत कोठरी,
आँगन सहित फइल घर उत्तम,
सभा बटोर करे के मंडप;
मजिगर अगिनीसाला,
पानी धिकवे खातिर !
कहीं पोढ़ भंडार कोठरी,
कहीं नहाये धोवेवाला;

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जनता-घर सजदार नमूना !
कतहीं सुघर तलइआ केतने,
चारो भर से घेरा जिनका;
सजल सुघर फूलन से !
कहीं अनेकन पैखानाघर,
घरवा कहीं पेसाब करे के !
एतने नाहीं,
कहीं सजीली गंध-कुटी तऽ
कहीं सांत कोसंब कुटी !
ई कुल रचि तइआर करे में,
सरधावान सुदत के;
चउवन कोटि असरफी लागल !
ओह समय राजा प्रसेनजित,
साकिय मुनि का दरसन खातिर;
पहुँचि जेतवन का बिहार में,
सरधा सहित पलग्गी कइ के;
रस से भरल वचनियाँ कहलन—
"हे मुनि संत सिरोमनि !
बड़ा भाग कोसलवासिन के,
काहें से कि रउरा;
एहिजा वास करबि अब,
होई भजन-भाव सतसंगति;
धरम-धजा फहराई !
ऊ कुल देस अभागा,
जहाँ चरनियाँ;
रउरा नियर संत लोगन के,
समय पाइ के पहुँचल नाहीं !
हे प्रभु सभ कुछ जानेवाला,
राउर सुभ दरसन से;
परजा सहित आज हम,
सफल मनोरथ भइलीं !
महापुरुस लोगन के,
परम पवित्तर दरसन;
बहुत भाग से होला,
केहू-केहू बड़भागिन के !
साथ पाइ फूलन के,
तुरते हवा सुगंधित होले;
संग सुमेरु के पा पंछी,
सोना के हो जालन !
तीनों लोकन के सरदार,
राउरा बास करे से;
बन ई भइल पवित्तर !
जइसे बिसवामितर मुनी का,
सुभ चरनन का परले;
तिरसंकू के भइल भवनवाँ !
महामुनी हे !
एह जगत में लाभ अनेकन,
भाई-बंधु पूत-परिवार;
सभ कुछ नासमान छनभंगुर,
बस एगो राउर सतसंगे;
लउकत बा अविनासी !
हे मुनिनाथ दया के सागर !
अतिकोमल-चित संत-सिरोमनि !
हमरा नियर अधम के हरदम,
होत रहे ई दरसन राउर !
साधु पुरुस हे !
प्रिय के इच्छा, बैर प्रीति आ-
राज-धरम का दुख से
बहुत दुखी बेकल हम बानी !"
इन्द्र नियर राजा प्रसेनजित,
सेकर अइसन बतिया सुनि के;
अउरी इच्छा में लालच में
उन्हुके समुझि सनाइल;
चित के पेरे फेरेवाला —
साहस दिहला नियर बउध मुनि;
सवतुक चिक्कनि बतिया कहलव
"हे मल राजरिखिन में सेसर !
मति तोहार अति धीर थीर आ-
पोढ़ सांत सवतुक बा;
जे कि समदरसी संतन में,
अइसन सरधा जागल !
जे सेसर भलमानुस लोग,
उत्तम साधुन के सतसंगति,
प्रेमभाव में रँगल सनाइल;
सरधालू होके चाहेलन,
ऊ साचो नीचे ले;
जल्दी ऊपर जाइल चाहसु !
काहें से कि,
मन तोहार बा चंचल;
एही से हम तोहरा हित के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कुछ बतिआ बतलाईवि !
ओके सुनि के हे महराज !
कारज में ले आवऽ !
जवना से सिच्छा हमार ई,
सीध सफल हो जाय !
काल निरदयी;
जब तोहरा के;
पकड़ि जोर से घींची,
ओह समय में संगे तोहरा;
जाई नाहीं केहू;
बस तोहार करम भर जाई !
जो तूँ सुभ निरमल जस चाहऽ,
तब तऽ नेम धरम का साथें;
परजा पालन करऽ प्रेम से !
मोह जाल में फँसि के
धरम सुमारग छोड़ले ;
सरग लोक में जगह मिले ना !
पहिले के राजा किरसासु
धरम-भाव से;
धरती के पालन कइला से,
उत्तम सरगलोक के गइलन;
अउरी, गिरल धरम से,
कूर निकुंभ विमल कासी में,
धरती बीच समाइल !
सीलवान हे !
हम सुभ असुभ करम के,
दिहलीं ई परतोख ।
धरम-भाव से,
पालन करत जगत् के;
कोसिस करऽ सुजस पावें के !
हे भलमानुस !
लोगन के जनि कबे सतावऽ,
इन्नरिन का लगामि के ;
ढील करऽ मति,
खोलि दुवार झरोखा घर के ;
उन्हुका के जनि छुट्टा छोड़ऽ ।
पापिन के मति संगति राखऽ,
मन के हेठ कुमारग में जनि;
कबे भरम बस भूलि लगावऽ. !
धरम-मरम जानेवालन के
मति गुमानवस करऽ अनादर !
तपसिन के जनि दुख पहुँचावऽ
पाप-बिरितिआ में मन रखले;
बरत पबित्तर करऽ कबे मति !
असुभ जबून वासना के जनि,
मदति मसाला लीहऽ !
निंदा लायक घाटि करम के
मत राखऽ वेवहार !
मद का बस मत बनऽ आलसी,
खुसी मन से सतसंग करऽ !
निरमल जस के नास करऽ मत,
मन तोहार ई;
कबे झूठ मंजूर करे जनि !
साधु भगत हे !
साहतर-धरम मोताबिक,
धरती के कर,
छठवाँ भाग उपज के,
तोहरा लिहल उचित बा !
बउध-धरम में,
मन लगाइ के ;
साधुन के सतसंग करऽ !
एह जनम में,
अइसन जतन करे के चाहीं;
जेकरा करते,
अब मिलि सके परम पद उत्तम !
रइछा करत बीज के,
बरम्हचरज व्रत पालत;
उपराजत विद्या सुभ ग्यान,
अउरी राखि धीरता मन में;
भउवतिआ के सुमिरत,
जीति कलेस मोह अग्यान;
सरन सुमारग के सुभ पकड़ऽ !
लोग परीन निपून मतिमान,
देखल वा जेकर फल पहिले,
ओइसन सज बीया बोवेलन;
नाहीं तऽ बावसु ना !
एहि किसिम से,
तूँ हुँ अइसन करम करऽ अब ;
जेकरा फल के,
साधु लोग देखले बा पहिले !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दुनियाँ में जे,
नगद ऊँच पद पर रहलो पर;
पाप करम में लीन रहेला,
रहलो पर अँजोर में अपने;
ओकर चित अन्हार में बाटे !
धीर पुरुस जे,
पुन्नि-धरम में लीन रहेला;
भले सुजस होखे ना ओकर,
भा अन्हार में वइठल होऊ;
बाटे ओकर चित अँजोर में !
उत्तम कुल आ—,
ऊँचा पदवाला मानुस के;
मनवाँ सुध धरम से होला !
हीन वंस आ—,
हेठ दरजवा वाला के मन:
पाप-दोस का करते,
वड़ गहिरी अग्यान-नदी में;
तेजधार का बीच,
जहाँ मोह मंगर के डेरा;
घोर अन्हार रात निचलावाँ,
छटपटात वूड़त उतिरात !
जे वा भोग-चटोर आदिमी,
ओकर लाग-सुभाव सहज गति;
हेठा जायेवाली होले,
ऊँचा पद पर;
जाइ सके ना कब्रहीं !
हे राजा ! अब एह दसा में,
तोहरा जइसन उचित जनाय;
करऽ ओइसने काम !
केहू जीव जगत में,
परमारथ सुभ धरम ग्यान के;
पुन्नि करमवाँ करे जोग ना !
करबो करे अगर जो,
तब ओकर फल ;
दूसर खातिर होइ सके ना !
करनिहार जे,
ऊहे भोगेवाला !
करम बिपाक मिटे ना,
करमन के फल होला निहचित !
जवन काम ना कइल गइल हो,
ओकर कबहों;
कवनो निहचित फल ना होला ।
बिना काम के कइले,
एह लोक में भा परलोके;
कवनो भोग मिले ना,
अउरी, एह जनम-मउवति के
पँचड़ा बिनसे नाहीं ।
एही से तूँ सतकरमन के,
करनिहार बनि जा अब !
ओइसन पाप-लीन मानुस के
जीवलोक में एहिजा;
ना सुख सांति भेंटाय !
अउरी कि ऊ आतमघाती,
जब परलोक पुरी में पहुँची;
ओहिजो अपना,
कइल पाप के फलवा भोगी ।
जनम बुढ़ापा मउवति रोग,
ई चारो दुख;
परबत नियर सामने ठाढ़ ।
इनसे अदंकि घेराइल मानुस,
छोड़ि डहरि अन्हुवाइल;
पराधीन हो,
भटकेलन हरदमे जगत में !
जब ई दुखवा,
परबस मानुस के घेरेलन;
ओह घरी सज से पिठिया के,
जतन जुगुति सूझे ना ।
हारि-दाव तब आखिर,
धरम-सरनियाँ रइछक होले ।
अरदुवाइ जीवन के
बिजुली अइसन;
तनिका भर ले चमकेवाली ।
सुख-सवाद इनिरिन के,
छन भर ठहरि सरकि के भागे;
नाहक धरम नसावे !
जगत बन्हाइल बा ई
मउवति का मुट्ठी में;
अचल अकेल धरम के जानीं
साधु-भगत हे !
इन्दर नियर तजवल जिंन्हिकर,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अइसन राजा लोग;
जे समर-भूमि में लड़ि के
देवतो दल के जीतल;
ऊहो लोग बुता के
दुख के भागी बनल अंत में!
समय पाइ के,
धरती होली लोप;
परलय के आगी में,
जरे सुमेरु परबत;
महासागरो सूखल,
तब मानुस के का गिनती बा?
चलि के पवन रुकेलन,
सुरुजदेव तपि;
नीचे में गिरि जालन,
जरि के अगिनि बुताली;
एह जगत में,
सभ कुछ बदलेवाला!
बड़ा सजग हो मानुस,
देहिआँ के हरदम पालेला;
किसिम-किसिम के,
उत्तम रसगर भोग जुटा के;
करे दुलार जतनिआँ पूरा,
तबहूँ ना जीएला!
अइसन दसा जगत के बाटे,
तबो आदिमी;
मान मोह आ मद में,
चूर होइ के;
सुख से तानि चदरिआ,
पसरि पलंग पर सूतेला!
हे राजा बुझनउक सयान!
तूँ अइसे मति सूतऽ!
चंचल जगरूपी झूला प,
चढ़ल आदिमी मूढ़;
जवना पर बिसवास करेलन,
बाकी नियरे धिउकलि;
मउवति के ना देखि सकेलन,
जे कि निहचित
कबे टरेवाली ना!
पाप-रहित हे!
जेकर फल दुखदाई,
ओकर सेवन;
कबे कइल ना चाहीं!
अउरी ओह काम के,
करीं भुलइलो पर ना;
जेकर फलवा,
रोग-सोग दुख देइ!
ओके मीत कहीं ना,
जकरा में ना;
सही मीत के,
कहल सुघर गुन होखे!
एही तरे ग्यान ऊ,
उत्तम नाहीं;
दुख के मिटा सके जे नाहीं!
महाराज हे!
जो तोहरा में बाटे ग्यान,
तब ई निहचय बा कि;
फेरु तोहार जनम ना होई!
अउरी हे प्रिय!
केहू तरे अगर जे होखल,
तब ऊ बिना रूप के होई!
बिनसनहार असुभ के घरवा
एह देंहि के जो तूँ
फिर फिर धरत रहऽ त;
जानऽ कि बिसयन से,
छुटकारा ना पाइ सकेलऽ!
बिना रूप के देवतो लोग,
करमबसी आ नासवान हऽ!
त्यागसुगति में सुभ बिराग में,
तूँ मनवाँ के पकड़ि लगावऽ!
दुनिआँ से सटला में,
चाहे बिसयन में फँसला में,
नइखे तनिको सांति!
गति, निवास आ करम-सहारा,
देहिआँ दुख के कारन!
सुगति-बोध का भइले,
करज देंहि के;
तुरत खतम हो जाला!
बस अकेल इच्छे बा,
कारन असल जनम के
अउरी, जीवन के जनमल के
दुखवा ईहे जानीं!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एही से तऽ,
जेकर पिंड छुटल इच्छा से;
सभे दुखन से ऊ छुटि जाला !
बे सरूप आ--
रूप धरेवालन में,
अउरी एहिजा तक कि
देवतो सभ में,
इच्छा कहीं लुका के
कोना अँतरा बास करे ले !
एह तरह से,
चाह लगाव बहाव रुके ना
अउरी एही करते,
बारंबार जनमवाँ होला।
छव किसिम के मइल बिचार,
इच्छा, लालच, खीसि, मोह, मद;
इरिखा, डाह, कुराह,
इन्हिका गिरदा भीतर
जवन लोग बिचरेला,
उन्हुकर फेरु जनमवाँ--
दूसरी देहिआँ धइ के आइल;
कइसे होई बंद ?
ईहे असली जाने जोग,
अउरी दूसर नाहीं !
ईहे उत्तम सुद्ध बुद्धि हऽ
ईहे सुब्रहित ग्यान सुबोध;
बस एही के जानल चाहीं !
ई नाहीं हऽ,
गिरहस्तन के धरम डहरिआ
अइसन सोचल--
बतिआ काटल-छाँटल
खइँचि त्रिनल ना चाहीं !
काहें से कि,
चाहे रहे महल में;
भा बनवाँ में बास करे,
पावल जे सुभ-सांति-चैन कल
जीअत बाटे उहे असल में,
ओकरे जीवन सफल कहाई !
घूम-धाम में,
जे ढँहकल अउँसाइल;
लूह-तपिस में
जरल-तपल-अकुलाइल;
जल में पइठि सुखी ऊ होला,
सहज मेघ-बरखा से;
सभई सुख पावेला !
घोर अन्हारो में दीया से,
सभ कुछ सुबहित लउकेला;
ठीक अइसहीं केकरो,
कुल भा उमिरि सबूत सनदि ना
बलुक जोग तप बोध बिचारे
होला आदर सरधा जोग !
केहू केहू लोग सुधरमी,
रँगल बिराग रंग में सहजे
कबे काल संजोगन
ठेठ बुढ़ापा अइले
बन में बास करेलन,
बाकी त ऊ ओहिजा;
जोग धरम तप का साधन में,
ना लागल रहि सकसु टाँठ बनि
बलुक सिकार बनेलन,
कमजोरी आलस के;
ए से बरत भंग भइला से
उन्हुकर घसकि अधोगति होले !
दूसर लोग सुजन सुविचारी
घरवे रहि के;
हरदम अपना करम-धरम में,
भाव भगति से लागल;
ततपरता से चलत रहेलन !
पुरुसारथ-बस सजग होइ ऊ,
बेवहारिक करमन में;
सूध रहेलन पूरा,
अउरी एह किसिम से;
नगद परमपदवा पावेलन !
कठिन घोर अग्यान- अन्हार,
महा भयावन सागर;
बली वासना लहरनवाला,
जनमे जेकर जल हऽ;
जतन-लड़ाई,
करनिहार लोगन का बीच;
खाली ऊहे बचि पावेला,
जे कि सजग होइ के जागल;

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सवसुक सुरता आ बलरूपी,
पतवारन से सजलि जोड़ाइलि;
परम ग्यानरूपी सज नइआ,
अपना पँजरा राखेला !"
एह तरह से,
बिसयन में पूरा लपिटाइल
राजा जी तब,
ओह मुनी ग्यानी गउतम के
मुँह से एह किसिम के,
धरम-ग्यान सुन पाके
अउरी जानि, राज के अपना,
नासवान छनभंगुर सपना
सावत्थी के फेरु लवटलन !
मुनि के धरम रंग में,
रँगल देखि राजा के;
हीत-मीत पंडित दरबारी,
सभे डाहबस मुनि से;
उन्हुके जीते के इच्छा से,
करामाति देखलावे खातिर
हठबस अरज-गरज कइलन जा !
राजा के सुनि विनय अरजिआ,
मुनि सिरोमनि इनिरीजीत;
अपना अचरजवाली,
करामाति के;
तब देखलावे लगलन !
जइसे सुरुजदेव जी,
तेजहीन कइ;
तारन के जमाति के,
आसमान में उगि चमकेलन;
ओही तरे बउधमुनि,
जोग तेज से जगमग;
सज से चमके लगलन !
अउरी बहुत किसिम से
अचरल भरल तेजवल
करामाति भरपूर देखा के

तरह-तरह के मत मनवइआ;
सभई बड़ लोगन के,
सहजे तुरत हराके
पूरा तिरपित कइलन !
रिसि तेज सुभ लउकवला से
सावत्थी का सभ लोगन से;
पूजा आदर पाके मुनिवर,
अपना माई—
मायादेवी जी के,
पुन्नि धरम उपदेस सुनावे;
ऊपर चढ़िके सरगे गइलन !
ओहिजा ऊ माई के,
दिहलन सिच्छा सहज सुबोध !
रहिके चारि महीना ओहिजे,
बरखा-बास-समय में;
देवतन से भिच्छा पा,
धरम-जोति फइला के;
फेरु धरतिआ ओर लवटलन !
देवतो लोग सांति के पावल,
अउरी निरमल चित से;
आसमान में,
आपन-आपन;
उड़न खटोलन बइठल
नयनन से इच्छा भर;
नीचे धरती ओर देर ले,
बउध मुनी के देखल !
एने धरती प ले,
केतने राजा लोग प्रेमबस
मुँह ऊँचा कइ,
सुरुज समान तेज-बल वाला;
बउधदेव के
आदर करत दसो नँह जोरि;
ऊँच सुरन में,
जयजयकार सुनावत;
उनुके माँथ नवावल !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

संन्यास के सोता आ चेलन के सिच्छा

भजन त्यांग तप,
बोध-गिआन सुभ —;
संगति धरम के सोता,
धरती माई का गोदी में;
के बतलाई कब ले,
झूमि झमकि लहरात बहत बा ?
जब दुनिआँ में भइल बिहान,
पह फाटेले पहर पहिलहीं;
रिखि मुनियन के परम पवित्तर,
भारत देस हमन के;
रिखि-मुनि लायक लाल ललकि के;
मानसरोवर का किनार पर;
करम कवँडल लिहले गइलन,
आलस छोड़ि बुड़्किया मरलन !
तब अति धीर-थीर हो,
सुघर सांत एकांत जगहि में;
जोग-जुगुति से,
मन चित बान्हि बइठलन;
ध्यान लगाके ढूँढ़े लगलन !
आखिर संजम-नेम लगन से,
नेह भरल नयनन से तकले;
पुरुब दिसा में झलकलि लाली !
कले-कले कुछ देर बाद तब,
लउकलि बिमल सोनहुली जोति;
सगरे भइल अँजोर टहक्का !
ऊगल धरम-ग्यान के चक्का !!
एतने में कुछ,
कल-कल सबद सुनाइल;
झुरकत पवन सुगंधित आइल !
खुलल नयन जब बढ़ल कदम ऊ,
तीनि गुनन का पहिया पर चढ़ि;
आगे लउकल धावत आवत,
सभ जीवन के जीवनदाता;
मधुर सांत निरमल जलवाला,
मनमोहक-छबि-झरना !
देखि सुघर जल जीवनदाता !
सभई के हित खातिर;
मुनि सभ सोचल जतन कइल तब,
परबत-जंगल-झार-खार से;
डहरि बनाके ओके,
देस बीच पहुँचावल !
अइसन निरमल सोता पाके,
बहुत लोग तऽ गोता मारल;
मेंटा-काँटी घइली-गगरा,
लोटा बिहँसि बुड़ावल;
केहू देहिआँ धोवल माँजल,
केहू मन के मइलि छोड़ावल;
केतने पाप पराछित धोके,
पूरा फरिछा भइलन !
मुनि सभ कहल बतावल,
सभई के समुझावल—
"झरना जल के,
कबहीं गंदा करिहऽ जा जनि;
एकर सोत रुकी जब,
जल गंदा हो जाई;
ना सुख-सांति मिली केहू के,
सभे पियासन मरी बिलटि के !
बहता पानी निरमल होला,
रुकल बन्हाइल सरि के महँके;
सहज सुभाविक गति सोता के,
जे रोकल ऊ दुसमन सभकर !"
तब से केतना जुग से,
सुरू सनातन घरी समय से;
रिखि-मुनि सजग भाव से,
मिलि के पहरा देत जागि के;
पारा-पारी,
एके हरदम राखत अइलन !
पुरुखन के सुभ नेम-धरम के,
रच्छा कइल बढ़ावल आगे;
हऽ सपूत लोगन के,
पहिला करतब-धरम पवित्तर !
ई कुल्हि सोचि-समझि के,
ग्यानी मुनिवर गउतम;

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

धरम-गेआन सोता के,
सांति-सुगति लहरन के;
कायम राखे खातिर,
सवतुक निपुन—
सभे गुन आगर,
सुजन-समाज नमूना;
पहरेदार संत सनेआसी,
सरधावान भगत गिरहस्त;
सभके चुनि-चुनि चेला कइलन!
भजन त्याग तप,
सेवा दया धरम के;
पहरदार बनवलन!

सरगलोक में,
आपन माई आ देवन के!
धरम-ग्यान-उपदेस सुना के,
बउधदेव जी;
अउरी सरधावान लोग के,
सिच्छा देबे खातिर;
टहरे-घूमे लगलन सगरे!
पाँच पहाड़न का फाटिन में,
बसल गाँव में;
जीवक, सूर, जोतिसक, सोन,
अउरी, निपुन अंगदक;—
नियर-आदि भगत लोगन के,
सवतुक सिच्छा दिहलन!
तब ऊ डेग बढ़ा के,
प्रिय गंधार-राज पुसकर के;
नगद धरम सिच्छा दे,
संघ-सरन में लिहलन!
संत-सिरोमनि तेजवान ऊ,
फेरु विपुल परबत पर जा के;
भगत हेमवत अउर सतागर,
दूर जच्छ अगुवन के;
धरम-सनेस सुनवलन!
पहुँचि आमबन में जीवक के,
रात-समय में;
अपना पाँचो सइ-रानिन संग,
मगध नरेस अजातसत्रु के

धरम धुरंधर उत्तम ग्यानी,
बउधदेव जी;
बउध-धरम के सिच्छा दिहलन!
तब परवान पहाड़े जाके,
सांति-ध्यान में लागल;
भगत परायन बाभन के ऊ,
सवतुक धरम-कथा के;
सुबहित अरथ सुना के,
धरम-सरन में लिहलन!
नंददेव के,
पतिबरता माई तब;
पहुँचि वेणुकंटक में,
उनसे सिच्छा लिहली!
इनिरीजीत बउध मुनि,
नगरी उत्तम नावँ भानुमति;
तहवाँ जाके,
जग्य-धरम के प्रेमी;
कूटदत्त बाभन के,
सुगति-धरम के सिच्छा दिहलन
तब विदेह परबत प,
भला पंचसिख;
प्रिय गंधरव पूत का संगे,
असुरन आ देवन के;
पुन्नि-धरम में,
भइल अटल बिसवास!
एकरा बाद पहुँचि के,
नगद अंग नगरी में;
पूरन भद्दर भगत जच्छ आ,
दंडसेत संग;
पिंगल चंड वोगएरह,
बड़े-बड़े साँपन के;
उत्तम धरम-डहरिआ,
सहजे गइलि देखावलि!
आपन गाँव नगर में,
सरगे जाए का इच्छा से;
करत भजन तप,
बाभन निपुन केन आ सेल;
ओहू दूनो के मुनि,
सुगति डहरिआ सुगम धरवलन!
सावत्थी के अंगुलिमाल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बाभन दुहुट कूर हतेआर;
दउरल मुनि के मारे,
बाकी ओकर एक चलल ना;
आखिर थाकि भइल बेहाल !
अपना तप बल तेज ग्यान से,
बउधदेव जी;
ओकर मन-चित सूध बनवलन !
हाँथ जोरि ऊ गिरल सरन में,
ध्यान लगा सुनलस उपदेस !
चोरी-डाँका हतिया-पाप,
छूटि गइल सभ अपने-आप !
तब फिर जाइ विदेह नगर में,
ऊ मुनि बकता सेसर;
बरम्हा का समान बड़ भारी;
अरदुवाइवाला, खटकरमी;
बरम्हायू पंडित के जितलन,
काट-छाँट बतकही-बहस में !
तब दयालु-चित,
ऊ भगवान तथागत;
उत्तर, सत्तक, सिंघ वोगररह,
सभ लिछवी सरदारन के;
बउध धरम के सिच्छा दिहलन !
एही तरे पहुँचि भद्दर में,
एगो भलमानुस का
सुखी सांत धनवान सुजन बड़;
निपुन सुलायक,
पूत दयालू दानी;
मेंडक के तब,
मुनी महातपसी ऊ;
सुमति विमल सभ दिहलन !
अउरी आगे,
बैसाली नगरी के;
ताल बीच रहवइया,
भारी दुहुट कुकरमी
माँसु खवइया राछछ,
मरकट के तब
सुभ उपदेस सुनाइ सुधरलन !
ओकरा बाद गुरु ऊ,
मुनी सिरोमनि इनिरीजीत;
गइलन गया नगर में,
गुफा-कंदरन के रहवइआं
भजनानंदी रिखि लोगनके
अउरी सुचीलोम, खर;
दूइ कूर जच्छन के
सुगत-धरम के सिच्छा दिहलन !
फेरु पहुँचि के,
धरमपुरी कासी में
दसवल बउधदेव जी
असित मुनी के खास भतीजा
उत्तम कतियायन बाभन के,
प्रिय हितकारी सिच्छा दिहलन !
अउरी अलकावति नगरिआ,
नगद चुहिलगर,
मन के मोहे वाली में जा;
मुनी सुधरमी बउधदेव जी,
सवतुक सूध बिचारन वाला;
भद्दर नाँव जच्छ एगो के,
सुगत-धरम के बोध करवलन !
एही तरे धरम-चरचा में,
टहरत घूमत;
देस-नगर-गाँवन में,
तब ऊ दइबी महिमा वाला;
महापुरुस मुनि गउतम,
जाइ नगर सोपारा;
नामी सेठ महाजन—
असतवकरनी सतकरमी के,
दिहलन हितकारी उपदेस !
भगत सेठ ऊ,
तब अति सरधा का बस;
एगो बहुते उत्तम,
सवतुक सुख-साधन से पूरन;
अनघा चंदन भरल सजावल,
संत-निवास बिहार बना के;
मुनि गउतम के दिहलन !
अउरी महीवती नगरी में,
जहाँ मुनी के
चरन चिन्ह से सोभित;
एगो पत्थल-खंड सुघर बा,
तहाँ उहाँ का;
कपिल नाँव के तपसी मनि के,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सहज बोध-ग्यान सुभ दिहलीं !
जाइ सेतविक वन में,
उत्तिम गुरु ऊ मुनिवर;
एगो मना आ तोता के,
बाभन नियर पढ़वलन विद्या !
जमुना नदी किनारे,
कउसांबी नगरी में जाके;
जे धनसेठ घोसाल भगत आ--
अउरी धनी महाजन रहलन,
सभके उत्तिम बउध-धरम के;
सिच्छा दिहलन सज से !
भारी सरप नाँव अपलाप,
रहनिहार गंधार देस के;
ओहू के मुनि गउतम,
अपना तप-बर तेज असर से;
साधु-सुझाव—
जहर से हीन;
अउरी इनरीजीत बनवलन !
तब फिरु काल समान जगत के,
समरथ बिख से जारे में;
केतने बिखधर साँपन के ऊ,
पारी-पारी से चेला कइ
दिहलन दया: धरम-उपदेस
तीनों लोकन के जीवन के,
सुघर धरम-सिच्छा दिहला से
बउधदेव के सुभ जस दिन-दिन
बढ़ल कले कल;
सागर नियर पुरनवाँसी के !
बाकी, एह किसिम के
देखि बढंती उन्हुकर
देवदत्त खीसिन बउरइलन।
डाह जलन से संजम छोड़ि,
ऊ हठि, केतने नीच करमवाँ
लगलन करे सुभावन !
मन में इरिखा के रहला से,
धरम-संघ में फूट डालि ऊ;
बरबस कहल करवलन।
अउरी मुनि से—
प्रेम बढ़वला के बदला में,
उन्हुके दुख कलेस देबे के;
हो गइलन तइआर !
महानीच खल मति वाला ऊ,
गिधकूट परबत से;
एगो भारी पत्थल,
मुनि के ऊपर ठेलि गिरलवन !
ऊ ना गिरि के मुनि के ऊपर,
फरका गिरल,फूटि छितिराइल !
राज डहरिआ धइले,
वउधदेव के जात देखि ऊ;
झट जमराज समान भयंकर,
नाला गिरि हाथी के छोड़लन।
दउरत आन्हीं नियर रहल जे,
गरजत परलय मेघ समान !
जम के रूप ओह हाथी के,
सनकि दउरले;
मरल लोग के—
लासि अँतड़िआ हाड़ खून से,
छिल-बिल राजडहरि पर !
डेग धइल तक कठिन रहे !
ऊ मतवाला हाथी,
जँघिअन के दाँतन से चीरत;
अपना सूँढ़े,
उठा-उठा अँतड़िन के;
बीगत रहे अकासे !
ओह समय प,
सनल खून में;
ओ हाथी के रूप,
परलय बेरा के डेरवावन,—
काल नियन हो गइल रहे !
सरल मांस आ—
चरबी से लपिटाइल,
रँगल खून में;
खीसिन मतवाला हो दउरत,
ओ हाथी के देखि;
तुरत डेरा के काँपत,
लोग नगर से भागे लागल !
ओह मस्त पट्ठा हाथी के,
जम का डंड समान भयंकर ;
परलयवाली काल-अगिन का—
लपट समान नयनवाला,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जोर-जोर से गरजत
निरदय दुहुट रूप में देखि;
नगर-निवासी,
हाहाकार मचावे लगलन !
केहू तऽ नगरी के छोड़ल,
भागल बहरी ओर !
केहू कतहीं,
दूसर के घर भीतर;
जान बचावत घुसरल।
केहू दउरि पराइल डर से !
केहू कहीं लुकाइल डर से !
सिंघ समान बली कुछ लोग,
कइके ई बिचारि कि--
कतहीं ई मतवाला हाथी,
बउध मुनी के;
घाही करे सतावे मति कुछ,--
आपन जान तरहथी पर ले;
होके बेपरवाह,
झट हाथी के ओर दउरलन !
केहू बढ़ि के,
पारल हाँक महाउत के तब;
केहू हाथी के डेरवावल,
केहू ओके;
लालच दे फुसिलावे लागल !
हाँथ जोरि के केहू
लागल करे मनावन !
देखि तमासा अइसन,
कोठन ऊपर बइठल तिरिया;
बाँहि उठाके रोवे लगली।
केतने डर से बेकल होके,
हाँथन अँखिआ ढाँपि मोहबस;
बिलखि-बिलखि के रोवली !
महा दुहुट ऊ खूनी हाथी,
दुख से बेकल—
लोगन के रोकलो पर;
जल्दी बउधदेव के सनमुख,
दउरल आके पहुँचल !
एतनो पर ऊ मुनिवर,
मउन सांत आ—
अचल धीर चित रहलन।

ना ऊ तनिको डरलन,
नाहीं कतहीं भइलन ठाढ़;
अउरी ना खिसिअइलन मन में,
निरभय आगे बढ़ते गइलन !
जेकरा दिल में दया प्रेम बा
सभई जीवन खातिर;
जे बा सभकर मीत
अउरी जवना—
इनिरीजीत मुनी के
देवतो बतिया मानेलन
ओही बउधदेव के
महाबली गजराज
कइसे करी बिरोध-बुराई ?
देखि ओह पागल हाथी के,
बउधदेव के;
सभई चेला-चाटी
भागि चलल दूरे से
बस एगो आनंद अकेले
उनका पाछे-पाछे
छाया नियर चलत रहि गइलन !
दउरत ऊ खिसिआइल हाथी
जब पँजरा आ पहुँचल
तब मुनिवर के
दइबी महिमा तेज सकति से;
भइल भितरिआ ग्यानी अइसन !
ऊ झुकाइ के देहिआँ आपन,
पँखिआँ कटल पहाड़ समान;
सूँढ़ बढ़ा के
माँथ नवाइ—
मुनी के;
सुभ चरनन के छुवलस !
जइसे सुरुजदेव महराज
सहज सुभावन परेम-मगन हो;
बादरि लोगन के देहिआँ पर,
अपना किरिन हाथ के;
कल से फइलावेलन
ओही तरे मुनी ऊ ग्यानी
ओह बली हाथी का माँथे
अपना सुघर हाँथ के धइलन !
जल से भरल बदरिआ अइसन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अचल थीर कानन के—
ओह झुकल हाथी के देखि;
महापुरुस ऊ,
शांति-धरम के सिच्छा दिहलन!
सभ जीवन के,
जीव बधऽ मति;
खास तरह से,
बिना दोसवाला के;
अउरी नाहीं कबहीं।
हे हाथी! अब चेतऽ
जीवन के बधला से;
होला हतिआ-पाप!
एकरा कारन,
सात अगाही जन मन तक ले
ना सुख शांति भेंटाले,
होला ना तनिको कयलान!
काम, मोह आ घिरिना,
ई तीनों मद;
बड़ा कठिन बरिआर,
इनके जीतल बहुत टेढ़ हऽ!
इनका के जितले प,
रिखिमुनि सुगति मुकुति पावेलन!
हे गजराज! लाज के राखऽ,
गाढ़ दिनन के गति के समुझत;
बनऽ ओइसने तूँ हूँ!
छोड़ि घोर-अग्यान-मोह के,
सहज सुभाविक गति के पावऽ
हे हाथी! तूँ
काम मोह का करते;
दुनियाँरूपी कीच-पाँक में,
फेरु लवटि के गिरिह मति!"
बउधदेव के,
अइसन मीठ बचनिआँ सुनिके;
ऊ हाथी मदहीन होइके,
पवलस सहज सुभाविक रूप।
उत्तिम अमिरित पीएवाला,
भगिगर जीव समान;
ओके सुभ आनंद भेंटाइल!
खीसि छोड़ि तुरते ऊ,
मुनिवर के चरनन में;
माँथ नवाइ पलगी कइलस!
सभ लोगन के,
चेहरा खिलल खुसी से;
सभई मुनि के
जयजयकार मनावल!
प्रेम मगन हो
विमल सुजस के गावल!!
केहू-केहू
हाथीओ के
बड़कापन के;
लागल करे बखान।
केहू बउध मुनी के,
जोरे लागल हाँथ कहीं तऽ
केहू दूसर,
कइल बड़ाई हाथी के!
एह किसिम से
ओह नगर के;
हर कोना से,
अउरी राज महल से;
तिरिआ लोग हजारन,
पहुँचि-पहुँचि के
लूगा-गहना फल-फूलन से
लागल करे मुनी के आदर!
अउरी ओने हाथी,
उत्तिम विद्या पढ़लें;
भल बिदारथी नियन सील से,
माँथ नवाइ मूँदि नयनन के,
बइठि गइल मुनिवर के पँजरा।
जे लोगन पहिले,
सरधा नाहीं रहल धरम में
ओहू सभ के,
सरधा प्रेम भइल अब;
जेकरा भीतर,
पहिले सरधा रहल थोरहूँ;
ओकर बढ़ि के पोढ़ भइल
मगधनरेस अजातसत्रु जब,
राजमहल से;
देखलन झुकत विनयबस,
मुनि का सनमुख;
मतवाला गजराजो के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तब तऽ उन्हुका;
भारी अचरज लागल !
अउरी उन्हुका मन के भीतर,
सरधा उपजलि बउधदेव में !
जइसे कलिजुग के गइले आ—
सतजुग के गइला प;
धन आ धरम बढ़ेला दूनो,
ओही तरे मुनी के;
बढलन सुजस धरम सुभ दूनो !
लाख जतन उतजोग लगाईं,
खल के खलई छूटे नाहीं;
कोइला केतनो मलि-मलि धोईं,
तबहूँ उज्जर होला कहवाँ ?
कई जनम के,
संचित करमन से गतिबल पा;
जीव-सुभाव बने ला,
जेकर बदलल कठिने जानीं !

मरिचा मिसिरी में पगला से,
कहाँ तिताई छोड़ेला ?
सरप पोसि के,
केतनो दूध पिआईं;
तबहूँ ओकर,
जहरे बढ़ी सुभावन;
रहनि-चालि लति छूटे कहवाँ,
ऊ कटला से,
मुँहवाँ कब मोरेला ?
देवदत्त सरदार खलन के,
अपना खल सुभाव के कारन
मुनिवर के बारे में,
भारी पाप भरल आ—
बहुते नीच करमवाँ कइके;
राजा-परजा, साधू-बाभन,
सभ से निंदा-कहुँकारी सुनि
गिरलन जाइ रसातल !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अंबपालो के फुलवारी

कबहीं कहीं समय ठहरे ना,
नेम मोताबिक चलत रहेला !
सभ के उहे थकावे नाथे,
ओके थाकल देखल के ?
नाहीं बेसी ना तनिको कम,
जनम-जनम के करम-छापबस;
जीव जगत में,
ओह सिपाही का पहरा में;
जीवन गति के पूरा कइके,
कल से भेख बदलि के आपन;
डेग कढ़ा के अंते जाला !
रोपि धरम के कलप-बिरिछ के,
जल से पटा खादि दे मजिगर;
कोड़ि सोहि के सेवा कइके;
पूरा पोढ़ बना के;
बउधदेव मुनि,
आपन पहरा बिता सजग हो;
दया करत दुनियाँ पर,
ध्यान लगवलन आखिर;
सहज परम पद,
सुभ निरवान सुगति के ओर !
थोरे समय बाद ऊ,
राजगिरिह से;
पाटलिपुत्र नगर के अइलन !
तहवाँ ओही नगर नाँव पर-
बनल चइत में,
ऊ कुछ समय ठहरलन;
चतुर काल गति जानेवाला !
मगध राज के मंत्री,
बरसकार मतिमान;
ओहिजा गंगा के किनार पर,
लिच्छविअन से रच्छा खातिर;
किला बना मजबूत सजीला,
नगरी नया बसावत रहलन !
ओह किला में-
सरगलोक से;
धन ले आवत,
ऊ मुनि ग्यानी देखलन !
तब कुछ मरम समझि के,
बचन अगासी ई कहलन कि—
"समय पाइ के,
दुनियाँ में ई;
होई नगर बहुत मसहूर;
बढ़ी नाँव जस एकर,
ई सभकर सिरताज बनीं !"
बउधदेव भगवान,
जेह दुआरी बहरी अइलन;
बरसकार अधिकारी,
सरधा परेम भगति बस;
धइलन ओकर नाँव सुभावन,
प्रिय 'गउतम दरवाजा !'
भवसागर के—
ओह पार तक देखेवाला,
जानकार जोग विद्या के,
बउधदेव मुनि,
पहुँचि किनारे गंगा जी के;
किसिम-किसिम के रंग बिरंगी,
नावन पर चढ़ि,
पार जात लोगन के देखि;
मन में अपना सोचे लगलन—
"हमहूँ पार करीं गंगा के,
एक काठ के नइआ से—
तब ई उचित कहाई ना !
एही से हमरा जल्दी से,
जोग-सिद्धि के बल से;
ओह पार जाए के चाहीं !"
अइसन सोचि मुनी ऊ,
देखेवालन के अँखिआ से;
अंतिरीछ हो तुरते,
अपन सभ चेलन के साथे;
गूढ़ जोग विद्या का बल से
पवन वेग ले बेसी गति से;
ओह पार आसमान डहरि से,
बेखटके चलि गइलन !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'दुख के सागर,
गेयान रूप नइआ से;
पार कइल जाला ई रीति,'
एह बाति के जानेवाला;
इनरजीत मुनी ऊ,
कठही नइआ बिना सहज में;
कइलन नदिआ पार!
ओह समय ओ मुनि के,
एह किसिम से;
ओह पार के गइल देखि के,
लोग रहल ओहिजा जे;—
गंगा पार जवइआ,
पार करत जे लोग रहे;
अउरी पार गइल जे,
सभइ लोग चिहाइल पूरा;
अचरज में बूड़ल उतिराइल!
सभ कुछ जानेवाला,
बउधदेव भगवान;
जवन घाट से,
ओह पार गंगा के गइलन;
ओकर नाँव जगत् में,
गउतम-तीरथ,
भइल सहज मसहूर!
तब मुनि गउतम,
गांग किनारा से आगे बढ़ि;
'कोटि' गाँव में गइलन!
ओहिजा ऊ लोगन के,
सिच्छा दिहलन;
बिसय बिमुख हो,
चित के सोधि सूध कइ;
असल निसाना पर राखे के!
फेरु बढ़त ऊ
'नदिका, गाँव पहुँचलन।
ओहिजा एक राति भर रहि के,
ऊ चेलन के साथे;
बयसाली नगरी के गइलन!
जहाँ ठहरि के,
अंबपालि के फुलवारी में,
रहत गरीबन के हित.

कुछ दिन समय बितबलन आपन!
मुनिवर के अइला के,
समाचार सुनि;
माया रूप मोहनी तिरिआ,
सुघरि अंबपाली ऊ;
रथ पर चढ़ि के,
गइलि मगन मन;
बउधदेव के पास!
पूजा खातिर आइल,
भल लोगन के कुल के
तिरिआ नियर भेख में सादा,
उज्जर बहतर धारन कइले;
अलता-आँजन-गंध-सुगंधित,
गहना साज सिंगार छोड़ि के;
आइल रहे विनयबस,
ऊ मुनिवर के पास!
नित घमंड से सुघराई के,
अउरी मद से
बढ़त नया जवानी के ऊ,
लिच्छविअन के—
मन आ धन के;
हरत रहे बरबस सुभाव बस!
आपन रूप जवानी के बल,
मद गुमान में डूबलि;
मजिगर मोहक अंगनवाली,
बन के देवी नियन सुघर ऊ;
रथ से उतरि तुरंते,
सजगर सांत बाग में घूसलि!
ओ चंचल नयनन वाली आ—
गिरलि नजरि से,
कुलवन्तिन तिरिअन का
कहुँकारी घिरिना कलंक के
सहज सनदिआ पावेवाली
अंबपालि के आवत देखि,
बउधदेव रिखि ग्यानी;
मेघ समान गरजि के
अपना चेलन से कहलन कि—
"कमजोरन के मन के
मँथे घुमावे, मोहेवाली;

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सुघरि अंबपाली आवति बा,
ए से तोहनी लोग सजग हो;
बोध बिचार दवाई के बल,
अपना के संजम में राखि;
ग्यान-दसा में,
आसन मारि थीर होखऽ जा !
समुझ बिचार ग्यान खाली,
दुरबल लोगन खातिर;
तिरिअन के नियरा रहला ले,
ले हथियार डँटल दुसमन भा—
पास सरप बिखधर के;
रहल कहीं अच्छा बा !
सूतलि चाहे बइठलि होखे,
ठाढ़ कहीं भा जात डहरि में
चाहे हो तसबीरि रूप में
हर हालति में तिरिआ;
पुरुसन का मनवाँ के,
बरबस हरन करेली !
परलि कठिन आफति में,
चाहे रोवति होखे;
भा बेचारी हीन दसा में,
जूरा खोलि बइठि झंखति हो;
चाहे आरति मे तबहूँ,
ऊ मोहे खींचे मन-चित के !
तिरिआ रचि के भेख देखाऊ,
सोभा साज सिंगार बाहरी;
अपना भीतर का दोसन के,
लुकवावे तोपेली !
अउरी झलक देखा के
सहज बनाऊ चटक गुनन के
डालि मुरुख लोगन के
पोढ़ मोह फंदा में;
उनकर नास करेली !
तिरिआ दुख के खानि,
असत अनातम रूप;
अपवित्तर आ छन में,
बुल्ला निअन बिलाएवाली—
एह ग्यान के,
समुझेवालन के मन
कबहीं उनका

तिरछी मद से भरलि नजर के
मोह फंद में बाझी ना।
जिन्हिकर पाजी मनवाँ,
चसकल हठवस;
बिगरल आ बउराइल,
ऊ तऽ उनके ठेलि गिरवलस
अंतिम नरक रसातल में !
जे लोगन के मनवाँ,
भोगन के परतछ बिखय के
जानकार बा,
उनका के ई—
भोग जोगके नासेवाला;
मोहफंद में डालि सकसु ना !
एही से अब
बुद्धीरूपी तीर सिजिल आ—
सकती रूपी धनुस सम्हारि
चेत कवच के पहिरि मजे में
एह भोगरूपी जंजाली—
कठिन मरम प;
पूरा डूबि लोग सोचऽ !
चंचल चित से
चंचल नयनन वाली;
धनिअन के मुँहवाँ के
देखेवालन खातिर;
ईहे अधिका अच्छा बाकि
सूआ धीकल लाल लेइके,
ऊ आपन अँखिआ फोरसु जा !
बिखयन के नित सुमिरे सोचे—
उनकर चिन्ता राखेवाला,
अंत समय में;
जब देहिआँ के छोड़े ला,
तब ऊ निहचय बेबस होके;
नरक लोक में, चाहे—
पसु जोइनि में जाला !
एही से ए भय के जानि,
रूप बाहरी पर ललचा के;
चाहीं ना गिरि जाये के।
जे देखेला,
सूध भीतरी रूप;
उहे असली देखेवाला हऽ !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ना इच्छन के बस में,
कबे इन्दिरिआ होली;
ना तऽ बिसय भुलइलो,
इन्दिरिन के बस होलन।
जे बिसयन के चाहे ला,
ऊहे बान्हल जाला!
बिसयबली आ पोढ़ इन्दिरिआ,
एक दूसरा से आपुस में;
सज से जुटल बन्हाइल वाड़ी,
जइसे दूगो बैला;
एक जुवाठी नाधल,
बरबस जुटि के घूमेलन।
आँखि रूप के देखेले,
तब ई मनवाँ ध्यान करेला!
एह ध्यान से
होला जनम सहज इच्छा के;
अउरी इच्छा रहित सांति सुख,
एही से उपजेला!
बिना विचारल आवे समुझल,
भोगन में डूबल रहला से;
सभ दुख होलन
दुरगति करे नचावेवाला!
बिसयन में ममता के राखल,
उनका में लपिटाइल;
निहचय मानुस के कुल दुख आ-
सभ विपतिन के असली कारन!
इहे सोचि के तोहनी लोग,
आपन चेत गवँइहऽ जा मति;
अउरी अपना हित के,
रखिहऽ जा कुछ ध्यान;
तोहनीं लोग सजग हो पूरा
धरिहऽ अपना—
सुभ सरूप के ध्यान!"
रूप असल में का हऽ
जिन्हिका एकर बोध रहल ना;
जे ना अबहीं पहुँचल रहलन,
तत्त-ध्यान के पार;
अपना ओइसन—
नवसिखआ चेलन के,
ध्यान-सिखावे वाला;

बउधदेव के सनमुख,
सुघरि अंबपाली ऊ
हाँथ जोरि के ठाढ़ भइलि
ठंढा सांत बिरिछ छाया में,
देखि मुनी के;
आँखि मूँदि के बइठल,
अउरी उन्हुका—
सुभ कारज में,
आइल देखि आम-बगिआ के;
ऊ खुस भइलि मने मन बहुते!
सहज सुहावन चंचल,
आपन अँखिअन के ऊ;
कइके जतन सम्हरलसि।
अउरी सरधा-बिनय-प्रेम बस,
संत होइ के पूरा;
संतसिरोमनी के ऊ
माँथ नवाइ पलग्गी कइलसि!
हुकुम पाइ तब मुनि के,
बइठि गइल ऊ
हाँथ जोरि के दूनो!
तब ऊ मुनिवर,
ओकरा समझे लायक;
धरम भरल हितवाली,
उत्तिम बतिआ कहलन ओ से—
एह घरी प एहिजा,
भाव तोहार पवित्तर बाटे;
मनवाँ बाटे पूरा सूध
तबहूँ नयकी धनिअन में,
धरम-डहर जाने के;
सवतुक सुभ इच्छा तऽ,
बहुते मुमकिन से जागे ले।
विपति-बइरिकंटी में—
अझुराइल तिरिअन के,
परल बेमारी में रोगिन के;
संजम नेम जतनवालन के,
अउरी अकिलवंद लोगन के;
होले रुची जरूर धरम में,
एमे ना तनिको संदेह!
सहज सुभावन,
चंचल ढीठ इन्दिरिअन वाली;

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नया नारि जे,
बिसय भोग से—
पुरहर भइल एह दुनिया में;
धरमो के कारज में,
मदत देसु मनचित से,
अउरी ओके पोढ़ बनावसु;
तब तऽ ई अचरज के बतिआ!
इहे तोहार नगद धन बा कि-
मनवाँ सूध तोहार,
लागल पुन्नि धरम के ओर?
काहें से कि—
एह बिनासी आ छनभंगुर;
सपना नियन जगत में,
धरमे सभसे उत्तिम धन बा!
अरदुवाइ के बितले,
नया जवानी बिनसे ले।
मउवति के अइला प,
जिनिगी के चिराग बुति जाला
रोग देंहि के नास करे ला,
बाकी, नास धरम के;
केहू ना करि सके कवो!
चूँकी सुख के पाछे—
दउरेवाला लोगन के,
कबहीं ना कबहीं तऽ;
कहीं जरूर जबून बिगारू,
ना मनवाँ के भावेवाला;
हीन हेठ से काम परेला--
उनका से होला संजोग,
अउरी कबहीं;
प्रिय सुखदाई आ उत्तिम से.
होला कठिन बियोग!
एही से बस खाली--
एगो धरम-डहरिआ,
सूध सनातन अचल अटलि बा!
पराधीनता में दुख बहुते,
सांति चैन-सुख-
सहज सुतंतरता में।
मानुस-कुल में जनमल--
सभे तिरिअवा,
पराधीनता के कोल्हू में;
अँखिआ तोपि नधाइल बाड़ी।
नारि लोगन के,
पराधीनता से परसव से;
होला भारी दुख-कवलेस
एही से हे अंबपालि! अब,
तोहरा कवनो,
उचित नतिजा पर आ—
ठीक-ठेकाने पहुँचल चाहीं;"
जदपि अंबपाली ऊ
गोरी रहलि मस्त मतवाली;
बाकी, बूधि बिचार भाव में,
बुढ़िआ निअन सांति-धीरज से;
खुस हो मुनि के बतिआ सुनलसि!
सुरस धरम- रस सानल,
मुनि के मधुर बचनिआँ सुनि के;
ऊ अपना मन-चित में,
जमि के बइठल;
सभे बासना-टिसुना छोड़लसि!
तिरिआ होखे के खियाल के,
हीन समझि ऊ;
अपना जीवन-बिरती—
बेसवा के पेसा के,
घिरिना भरल नजर से देखलसि!
नीक आम के—
फूललि मोजरि अइसन,
ऊ झुकि परलि मुनीचरनन में!
संत-सिरोमनि के दरसन से,
ओकर पाप पराइल!
जइसे सरद पुरनवाँसी के,
चमचम विमल अँजोरिआ देखत;
भागि चलेला चोर अन्हार!
नदी-नार के गंदा पानी,
गंगा जी में मिलि के;
गंगाजल हो जाला!
लोहा पास पहुँचि पारस के,
सोना सूध बने ला!
ओही तरे साधु-सत संगति,
खटरागन के दूर भगा के;
सेवा-दया धरम-सिच्छा से,
जीवन-दसा सुधारे ले!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तब ऊ गिरलि भुलाइलि नारी,
विमल धरम-गंगा में;
डुबकी मारि सूध हो,
फिर से उठि के ठाढ़ भइलि !
ओह घरी पर
मन के सोधे बोधे वाली;
ग्यान-भूखि से बेकल हो ऊ,
हाँथ जोरि के दूनों;
सरस बचनिआँ
मुनिवर बउधदेव से कहलसि—
"महापुरुष हे !
अपना असल निसाने,
रउरा जाइ पहुँचलीं;
भवसागर के कइलीं पार ;
हे दयालु-चित संत—
जगत हितकारी !
हमरा धरम-लाभ-हित खातिर,
करीं सफल भिच्छा हमार अब !"

मुनिवर जानि जगत के—,
अन्ने के बल-आस-सहारे—
कायम कुसल फरत आ फूलत
अउरी ओकर;
अटल भगति के देखि,
सहज खुसी से मउन भाव से,
दिहलन आपन मंजूरी तब !
जइसे निपुन किसान,
ठीक समय साइत-सुतार से;
बीआ बोइ खेत में,
मनवाँ में संतोख करेला;
ओही तरे काल के—
गूढ़ मरम गति जाने वाला-
के मुनि अंबपालि के;
सज से सिच्छा दे के,
ओकरा ऊपर—
तिरपित दया-नजरिआ फेरलन !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अरदुवाइ के निरलय

अंबपालि तब,
मुनि के भाव समुझि के;
पाव लागि उनका के,
अपना घरवा पहुँचलि !
समाचार सुनि लिच्छबि लोग,
मुनिवर के देखे के;
लगन-लालसा मन में रखले,
लागल करे तुरत तइआरी !
कवनो दल के,
हाथी घोड़ा बहतर हार;
धपकत रहल धपाधप उज्जर !
अउरी कुछ के,
छाता, पगरी–
रथ आ धजा निसानी;
रहे सोहासुत नीला रंग के,
कुछ के सुघर केसरिया दगदग !
हीरा मोती मनि अनमोल,
सुघर सोनहुला रंग-बिरंगा;-
गहना से सजिधजि के,
अपना-अपना;
मन के चाह मोताबिक
धारन कइ पहिरन पोसाक,
घर-घर से निकलल ऊ लोग !
ऊँचकी चाकर छाती,
मोढ़ा साँढ़ समान
शंख नियर गरदनियाँ,
मुँहवाँ सुघर सोहावन
बहिआँ जिन्हिकर लमहरि,
लटकलि जँघिअन तक ले;
अइसन ऊ सभ
देखे लायक बीर जवान;
सरगलोक में देव समान
सोभा पावत रहलन !
असवारिन से उतरे खातिर,
जब ऊ लोग हिलावल तन तब;
जेकरा भीतर बिजुली चमके,
ओइसन बीहड़ गति-बल वाला–
साँझि समय के मेघ समान;
उन्हुकर सोभा झलकल !
मुनि के पास पहुँचि ऊ लोग;
हिलत पगड़िअन वाला—
अभिमानी माँथन से;
धरती छूअत,
कइल पलग्गी मुनि के !
रहल जदपि ऊ लोग गुमानी,
तवो धरम के सुभ लालच बस
ओहिजा नीचे बइठल !
बउधदेव का सनमुख,
बइठल निरमल रंग-बिरंगा
लिच्छबिअन के मंडल,
बादरि-हीन सुरुज का पंजरा
सोहल इन्दरधनुस समान !
सेनापति सरदार सिंह तब,
लिच्छबिअन के राजा;
बनल सुघर सोना का
सिंघ-सरूपी सिंघासन पर,
सहजभाव से बइठल !
अउरी सभई रीति नेम-बस,
बइठल भुइँएँ धरती पर बस !
देस-काल जानेवालन में,
तब ऊ सेसर–
बउधदेव भगवान,
धरम सुजस आ अरदुवाइ के
दिनदिन सहज बढ़ावेवाला,
बचन सुरस हितकारी कहलन
'हे राजा जी !
पुन्नि धरम में,
ई तोहार जे–
उत्तिम सरधा भगती जागलि,
ऊ ए राज रूप धन बल से;
बा अधिका अनमोल ?
सुघर रूप राउर ई

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दानी राज-पोसाक;
ओतना सोभा नइँखे देत,
जेतना कि ई राउर-
सबतुक सील सुभाव !
निपुन सुलायक धन्नि सुजन जन,
बड़ भागी ई बज्जी लोग;
अइसन हम मानींला !
काहे से कि;
सूध साच के खोजेवाला
जानिवकार धरम के रउरा
बानीं उन्हुकर-
अगुवा ओ सरदार !
धरम धुरंधर,
बिना खीसि के;
साच अटल परतिग्यावाला,
नेमबरत के पक्का राजा!
एह जगत में,
पुन्नि-हीन परजाजन खातिर;
होलन बहुत दुलम दुसवार !
एह देस का ऊपर,
धरमदेव के;
दया बड़ा भारी बा,
जेकर तोहरा जइसन;
ग्यानी आ सुभधरमी राजा,
राज-चलावे वाला बाटे !
नदिआ पवँरेवाली गइया,
पाछे होली साँढ़न के।
नेति-निपुन राजा से,
सहज सुरच्छित सांत देस में;
परजासुख से वास करे ले !
एह किसिम का-
ऊँच सील के;
जतनजुगुति से तोहरा हरदम,
चाहीं रइछा राखे के !
कामो ले अति सुथर सुजस के,
कवहीं छोड़ल चाहीं ना !
हे मतिमान सुजन सरदार !
सांति, सुजस, विसवास, धीरता;
अउरी उत्तिम परलोकन के,
सुभ सवतुक आनंद;

ई सभ
सूध सीलरूपी गाँछी के;
नीक सुरस पाकल फल हुउवन !
इहे धरतिआ,
चर आ अचर जगत के
हुउवे असल सहारा।
एही तरे सील ई,
सभे गुनन के;
सुभ अड़ार आ सरन-अधार !
बिना पाँखि के उड़ल जाय ना,
बिना नाइ के;
नदी पार ना जाइल जाला !
ठीक तइसहीं बिना सील के
सुगति परमपद
पावल जाइ सके ना !
धनवानो आ रुपगर मानुस,
बिना सील के;
फल-फूलन से भरल, कँटइला—
बिरिछ समान जनालन !
चाहे गहना से पोसाक से,
सजि के सुघर महल में;
बास करत ऊ होखे,
ओकर सील सुभाव चालि जो;
सवतुक सूध नीक बा,
तब ऊ साचे
मुनी-महरसी बाटे !
चाहे केला-छाल पहिरले;
जटा मुकुट से सोहत;
रहत कुटी में होखे,
बाकी चालि-चलन से हीन;
गिरल नेम संजम से !
तब ऊ साधू,
ढोंगी बकुला भगत कहाला !
पानी पी के रहनिहार हो,
चाहे हवा पिअत हो;
भा पवहारी—
कंदमूल फल खायेवाला,
चालि चलन के—
जो ना पक्का होखे;
तब ऊ कबहीं,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सूध पवित्तर होइ सके ना !
चालि-चलन के चउपट,
हीन विचारनवाला;
गिरल जबून परानीं,
पसु समान वा !
ऊ सुभ पुन्नि धरम के,
भागी नाहीं होला !
कबे छेदवाला बरतन में,
पानी ठहरे नाहीं !
धरम-करम से गिरल लोग जे,
उन्हुका के दुनियाँ में;
अबिसवास भय, अजस, कलंक,
अउरी अछय असांति मिले ले;
मरलो पर ऊ दुखवा भोगिहन !
सहज सील ई–
सुभ आचार-विचार;
सरग डहरि लउकावे ला !,
अउरी अपने-आप चलंता;
सरगलोक के जायेवाली,
पोढ़ नीक नइआ समान बा !
बिसय-वासना, खीसि,डाह से,
बेकल चित वाला मानुस के;
कइल करम सुभ बिनसेला !
एसे सभसे पहिले,
सूध चालि से;
संजम सील जतन से,
दोसन पर धावा कइ;
चित के सूध बनावऽ !
बिजय बढ़ंती चाहेवाला–
मानुस का पहिले तऽ,
छोड़ल चाहीं सान-गुमान !
सान-गुमान घमंड गुनन के,
ओहीं तरे ढँके ला;
जइसे धूवाँ आगी के !
गुन भीतर रहलो पर;
ढँकला से गुमान से;
झलक देखावसु नाहीं !
तारा, सुरुज,चनरमा,
आसमान में रहलो पर;
बादरि का घेरला से,

देखि परसु ना !
चंचलता अकुताके,
लाज-सँकोच नसावेला !
सोग धीरता के चाटे ला,
अउरी उमिरि बुढ़ापा;
बल आ तेज हरे ले !
ई घमंड तऽ,
सभे गुनन का जरि के ;
पूरा खोदि उखारे फेंके !
जवन आदिमी,
छनभंगुर जीवन में;
अपना के बस,
सभई ले बड़ माने ला;
ऊ मतिमान कहाला नाहीं !
इरिखा से, घमंड से,
दइत लोग देवतन से हारल;
अउर पताले गइल गिरावल,
त्रिपुरासुर के बध करवा के !
बिसयन के इच्छे हऽ काम,
उनसे सटि के नेह लगावल;
सहज भाव से राग कहाला।
काम राग ई दूनों,
सहज सुभाविक जानीं दुसमन
छिपल छली बलवान !,
मीत भेख में मिलि के कल से;
सभ मरमन के काटेलन !
काम-राग रूपी आगी आ--
आगि ठेठ संसारी,
दूनो एक समान !
काम-राग रूपी आगी के,
लहरि बरे तब;
नीनि राति के आवे नाहीं।
काम राग के अगिनि समान,
दूसरि अगिनि बली ना होले !
बाकी ई आगी मतवाली,
ताल पोखरा में डललो पर;
कबहीं बूते नाहीं !
आगी से जरि बिनसल वन में
समय पाइ के फिर से;
गाँछ-बिरिछ अँकुरेलन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

काम-राग रूपी आगी से,
झउँसाइल हिरदय में;
फिर से धरम उगे ना!
काम-राग का पेरले मानुस,
सुख खोजे में;
लीन रहे ला दिन आ राति!
अउरी ई कि--
सुख के चाहेवाला,
आतुरताबस;
घाटि नीच करमन के कइके,
अधम हीन गति पावेला!
राग काम से पैदा होला,
मरम असल कि--
बिसय वलाते मन के खींचसु,
मनवाँ रस के चीखे चसके
उनसे नेह लगावे!
ओह नेह लासा-लूसी से
सहज सुभावन इच्छा जनमे।
इच्छा परदा भीतर वइठलि,
बिसय-रूप के करे धियान;
यह धेव से,
उपजे ममता मोह!
मोह-जाल बहुते दुखदाई,
सभरोगन के असली कारन।
एही से बस बिसय समान,
भारी दुसमन दूसर नाहीं!
बिसय नाँव का महारोग के,
मूढ़ बूधि के लोग;
देखि सके ना!
रउरा संजम का लगामि के,
पकड़ि हाँथ में सज से;
आतमघाती--
वली बिसय के देखीं!
पंडित आ विदमान,
जिनकर हिरदय निरमल सांत;
अनुचित-उचित विचारेवाला,
ऊ बिसयन के, कूर काम के;
जानि जबून तुच्छ छनभंगुर,
दुख आ पाप सरूप;
परिछाहीं ना धांगसु उनकर,

रहसु किनारे दूर!
पइठि पदारथ का जरि भीतरं
जानि बतुस का तत्त ग्यान के
चित्त तुरंते,
राग-रहित हो जाला!
तब फिर कबहीं नाहीं,
सत आ असत बतुस में;
पैदा होला काम!
बहुत पिरीव बतुस का--
सहज गुनन के चिन्ता कइले,
मानुस के बसतू सें;
जइसे होला राग,
ओही तरे बतुस का;
दोसन पर बिचार कइला से,
पैदा होले खीसि!
जे किरोध के जीतल चाहे
ऊ जनि बसी राग के होखे!
जइसे घूवाँ उठे आगि से,
ओही तरे राग से;
जनमे खीसि-किरोध!
खीसि चित्त के सघन अन्हार
दुसमन खास मिताई के;
घातक मान बड़ाई के,
जरि अपमान अनादर के!
एही से तऽ,
चाही नाहीं खीसि करे के;
कोसिस कइके छोड़ल चाहीं!
अकिलवंद बुझनउक आदमी,
काटेवाला--
बिखधर सरप भयंकर के ना;
कवहीं पाछ धरे ला।
जवन मूढ़ नासमझ आदमी
खिसियाला त सहजें;
बाकी खीसि वेग के
रोक-सम्हार तनिक जाने ना
ओद-काँच लकड़ी समान ऊ
धूवाँ सहित सुनुगि के;
हरदम जरे भीतरे-भीतर!
खीसि-अगिनि के तेज लहरिया,
खीसि करेवाला का;

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हिरदय के पहिले तऽ,
खूंव जरावे साधे-सोधे;
पाछे ले बढ़ला पर,
बहुंत दूसरन के झउँसेले !
ओह देहधारी बैरिन से,
वरबिरोध डाह कइला से;
कवन नफा कि—
जे खुद अपने,
सहज सनातन कठिन रोग से;
दुख कवलेस उठावत बाड़न !
लीन भलाई में जीवन का,
ऊ मुनि ग्यानी;
दोसी जानि समुझि राजा के,
एह किसिम से उनके
दिहलन नीक जथारथ सिच्छा !
बैद रोग के गतिबल जानि,
रोग छोड़ावे खातिर;
समय मोताबिक उचित दवाई,
रोगी जन के देलन !
बउधदेव मुनि,
जनम बुढ़ापा करन ओगएरह;
महाकठिन रोगन से,
पिंड छोड़ावे खातिर;
लिच्छबिअन के,
तत्तग्यान रूपी अनमोल;
सुघर दवाई,
समझि-बूझि के दिहलन !
सुनि के उत्तिम सिच्छा,
भइल मगन लिच्छवि-सरदार;
हार,बिजाइठ कुंडल तन के,
सुगवुगात झलकावत;
भाव-प्रेम बस मुनि के
माँथ नवाइ पलग्गी कइलन !
मुनि के घर ले जाये खातिर,
हाँथ जोरि भिच्छा के;
अरज कइल ऊ लोग !
मुनि तब कहलन—
"अंबपालि के पहिले,
देइ चुकल बानीं हम बात !
भला रईस धनी का पाछा,
केहू दुरबल साधारन के;
ठोकरावल चाही ना !"
हम से पहिले एह मुनी के
खातिर-सेवा कइलसि एगो,
मामूली मेहरारू;
एह बाति के,
ऊ सभ समुझि अनादर आपन;
कोप कइल खिझिआइल !
सिच्छा सुनि मुनिवर के,
ठंढा भइल फेरु ऊ लोग;
जइसे मंतर का बल,
जहर साँप के निकले ला !
अंबपालि तब भोरे,
उन्हुकर खातिर-सेवा कइलसि !
बउधदेव मुनि,
ओकरा बाद तहाँ ले;
बेनुमती नगरी के गइलन,
करे चतुरमासा के बास !
ओहिजा बरसा रितु भर रहि के,
ऊ मुनि सभ कुछ जानेवाला;
फेरु लवटि बैसाली अइलन !
एहिजा 'मरकट'-ताल किनारे,
सांत-चित्त हो जाइ बइठलन;
एक बिरिछ का नीचे !
सांतिभाव से ओहिजा,
मुनि के बइठल देखि;
काम देवता पँजरा जा के,
ओह समइया,
माँथ नवा के कहलन--
"महापुरुस हे आतम ग्यानी !
नीलाजन नदिआ के तीरे,
पहिले कहले रहलीं हम कि—
'कारज खतम भइल अब
ताकीं सुगति परमपद;
असल निसान अकथ के !'
'जबतक ले हम,
दुखी पतित पापी लोगन के;
कइ ना लीं उधार-सुधार,
तब ले सुगति डहरिआ;
हरगिज पकड़बि नाहीं—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अइसन सुभ परतिग्या,
रउरा कइले रहलीं !
अब तऽ बहुत परमपद पवलन,
बहुत डहरि में बाड़न;
सभे सुगति सुभ पइहन,
रउरा चलीं परमपद के !"
जीवन-मुकुत महामुनि सेसर
उन्हुका ओह बचन के सुनि के;
कहलन उनसे—
"ठीक आज से
तीनि महीना बाद;
नासवान देहिआँ के छोड़ि,
हम निरवान परमपद लेबि !
तूँ जनि अधिका सोच करऽ !"
काम देवता,
सुनि उनुकर परतिग्या;
सफल मनोरथ खुसी मनावत,
आपन कारज पूरा कइके
गइलन प्रिय अड़ार के अपना !
तब मुनिवर देहिआँ से,
अरदुवाइ के खींचि बटोरि;
चित भीतर ले अइलन,
अउरी चित के चट परान में;
सहज भाव से कइके लीन,
जोग जुगुति से जोड़लन !
मुनिवर जब परान के रोकलन,
तब अकास से,
अति डेरवावन;
मेरू के चट्टान समान,
तारा टूटि टूक हो गिरलन
परवत सहित धरतिआ काँपलि
चटक जोति हारन से पूरन;
हरति तेज के
डेरवावे दुख देबेवाली;
बिजुलि रहि-रहि चमके लागलि !
अउरी हठि तीनों लोकन में,
गरजत चारो ओर;
बज्जर लगलन गिरे भयंकर !
गाँछ बिरिछ जिनका ऊपर के-
अउरी बड़ा-बड़ा चट्टान,
रहले उड़त हवा में;
अइसन परबत बारंबार,
करत भयानक सब्द काँपि के
दसो दिसन के जारत,
लगलन जरे अपनहूँ
तेज अगिनि लहरन से !
परलय नियर बिकट डेरवावनि'
सरब-गरासी;
नावँ रूप के चाटेवाली,
ओह दसा के देखि;
सहज समाधि जोग से उठि के
मुनी सिरोमनि कहलन—
"जेकर अरदुवाइ अब,
बीति चुकल बा;
अइसन हम—
देहिआँ के अपना,
जेकर धूरा टूटि गइल बा,
ओइसन रथवा नियर जोगा के
अपना बल से निपुनाई से,
कल से खींचत बानीं !
अब ई बंदा,
भवफंदा में डालेवाली,
अरदुवाइ से निकलि चुकल बा
जइसे फूटल अंडा में ले,
पंछी निकलि गइल हो !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लिच्छबिन पर दया

मुनि के सच्चा सेवक,
निपुन भिक्खु आनन्द;
ऊ भारी भूडोल देखि के,
घबड़इलन आ काँपे लगलन,
उनका घुमरी आइल,
गिरलन ऊ धरती पर
जइसे जरि कटला पर
अचके फेंड़ गिरे ला।
फेरु सम्हरि के सजग होइ के,
गूढ़ मरमगति जानेवाला –
ग्यानी महापुरुस से,
ओकर कारन पुछलन !
तब मुनि नायक,
बली सानियल सिंघ समान
अभय होइ के,
प्रिय चेला से बोललन—
"धरती पर के बास हमार,
पूरा होइ चुकल बा।
भरदुवाइ के हमरा,
तीनि महीना काफी बा अब।"
अइसन सुनि आनन्द
घाही होइ करेजा धइलन।
बेकल सोग-बदरिआ,
उनका हिरदय के धक्का दे;
लोर रूप धारन कइ,
वहि के चलल आँखि से बहरी;
धीरज संजम बान्ह तोरि के !
जइसे हाथी का तोरला से,
देवदारु का सुघर फेंड़ से;
रस के धार बहेला !
मुनी तथागत,
उनकर गुरु सुजन-सग आपन,
हीतमीत आ सभ कुछ रहलन।
एही से ऊ,
सोग-अगिनि के तेज आँचि से;
झउँसाइल दुख भोगत,
बिलखि-बिलखि के रोवे लगलन !
"पूजा जोग गुरु के,
निहचित महापयान जानि के;
मन हमार दुख से घबड़ाइल,
देंहि बिपति के मारल थउसल;
चिन्ता से थाकल सिहिराइल !
सुनलो धरम-करम अब,
लोप भइल जाता हिरदय से !
हाय ! भला ई,
महापुरुस मुनि जोगी;
साधुसंत पंडित सभई के—
सरधा आदर सेवा लायक,
देहिआँ छोड़ल चाहत बाड़न !
सभ लोकन के जोति अँजोर,
अचके अथई गायब होई !
सघन पापरूपी जंगल में,
भटके भरमेवाला;
छोड़ि सुमारग हटल किनारे,
करम बिमुख जीवन के,
डहरि देखावेवाला अचके,
होताड़न अतिरीछ।
ओहटा जायेवाली—
सुगति डहरिआ धइके,
बढ़त जात थाकल सिहिराइल;
कठिन पियासन बेकल,
राहगीर लोगन का—
हैरानी तिरिखा आहस के,
छन में सहज मेंटावेवाला;
भरल सुरस जल निरमल ताल,
अचके सूखि रहल बा !
धन से हीन गरीब आदमी,
जिनका पासे ओढ़ना नइखे,
जे अग्यान रूप ठंढा से,
ठिठुरल काँपत बाड़न
उन्हुका जाड़ारूपी दुख के,
दूर भगावेवाली;

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लहकल ग्यान-अगिनि अब,
बूति रहल बा!"
एह किसिम से,
कठिन सोग से बेकल;
हदसन डरल सूखि बटुराइल,
प्रिय चेला आनंद भगत के
बोध देत समुझावत,
असल ग्यान के जानेवाला;
ग्यानिन के सिरताज बउधमुनि,
सुरस बचनिआँ बोललन—
"हे बाचा आनंद!
तोहरा जग के—
भेद असल में जानल चाहीं।
एह जगत् में
नावँ रूप के पावेवाला,
पैदा भइल पदारथ कवनो;
थीर अडोल टिकाऊ नाहीं।
हे प्रिय भगत नगीना!
हम त तोहसे बहुत पहिलहीं
साफ-साफ कहले रहलीं कि—
'दुनिआँ के परपंच बखेड़ा,
दावघात-दंगल में;
सुख मानेवाला लोगन के,
सहज सांतचित दयाभाव से;
तोहरा देखल चाहीं।
जे करता से पैदा होला,
ऊ छनभंगुर बिनसेवाला!
एह लोक में,
सहज सुतंतर;
अपना बस में कुछऊ नइँखे।
एही से तऽ,
केहू प्रानी एहिजा;
अजर-अमर होखे में,
समरथ नाहीं बा।
देहिं धरेवाला जो—
होइतन नित अविनासी,
तब का होइत बदलेवाला?
अउरी का रहि जाइत
सहज जरूरति,
सुगति परमपद के तब?
आदि अंत गति—
जनम मरन के,
होखित एक समान!
दूसर बतिआ ई कि—
हे प्रिय चेला!
एक समान दसा के भागी,
तब तोहार भा—
अउरी दूसर लोगन के,
हमरा खातिर—
एहि किसिम के,
सरधा कइसे होइत?
एह भाव से हम तोहरा के,
सभ डहरिआ,
सूध साफ लउकवलीं।
बउधदेव केहू से,
कुछ ना कबे छिपावसु
एह मरम के समझऽ तूँ।
हम देहिआँ के,
राखीं चाहे छोड़ीं;
दूनों एक समान।
काहे से कि—
होलन बउध धरम के मूरति।
मरे विलाये वाली—
छनभंगुर देहिआँ से
कवन नफा बा तोहरा?
हमरा जाये के बेरा में,
ग्यान-बिराग-त्याग से सज से;
सजग होइ के
सरधा नेह लगन से
बारल बा हमार ई
सुघर-धरम-उपदेस-चिराग।
एही से तऽ,
रही बरत सभ दिन ई।
एह दिया का सुभ अँजोर में,
आपन करतब-धरम समुझि के
जागल रहऽ चतुर बनि के तूँ।
छोड़ऽ सभ परपंच बखेड़ा,
पहुँचऽ अपना अलल निसाने।
असुभ अन्हार बिपति से

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मन के बचा सोधि के राखऽ
एह दिया से,
भीतर का अन्हार के,
होला सहजे नास !
तीनि दसा आ तीनि गुनन के,
खोइआ बनउर गरदा काढ़ि;
सूध नरम रूई से,
एकर बाती बनलि पुराइलि;
पुरहर पोढ़ बोथाइलि सज से,
गाढ़ ग्यान विग्यान तेल से;
सातो देवढ़ सात महल ले
आपन बिमल जोति फइलावे !
एह देंहि के,
हाड़-मांस, चरबी-चमड़ा आ—
मइला-मूँत खँखार-लार से,
भरल; घिनावन गंध रोगमय;
सजग नयन से देखल जे,
ओकरा जग में;
देहि मोह रहि जाला नाहीं !
मानस-धरम जनम संकलप के,
ओकरा बास नास परलय के;
सांत चित्त से जे देखेला,
नजरि-दोस में;
ऊ ना कबें परे लपिटाय।
'करम मोताबिक जनमलि,
सहज वेदने दूख हऽ;—
अइसन जे देखेला,
ऊ सुख-भाव नाँव संग्या के;
सजग होइ के ज़ीएला !
हे प्रिय सुजन संजमी बरती !
एह चारि के,
गूढ़ भेद के जानऽ तूँ;
अउरी दुख का अंत नास के,
एक अकेला कारन;
एह डहरि में चित के रोपऽ।
हमरा ओह पार गइला पर,
एह डहरि के धइले;
धीर थीर चित रहिहन जे,
ऊ अनमोल परमपद पइहन।"
एह किसिम से मुनिवर,

अपना चेला;
निपुन भिक्खु आनंद भगत के
दिहलन सुभ उपदेस।
तब ई हाल जानि के,
भगति भाव का कारन;
जल्दी-जल्दी लिच्छबि लोग,
ओहिजा आके वटूरल।
बात सुगति परलोक गमन के,
ओह घरी पर सुनि के;
मुनि में भगती राखेवाला
सभे लिच्छवी जन-गन
दुखी उदास सोग से बेकल
सुख सिंगार ठोकरावल;
छोड़ल धंधा काम।
गोड़ लागि के गुरु के,
बोले का इच्छा से;
खड़ा भइल ऊ लोग किनारे।
उनका मन के भाव समुझि के,
मुनी सिरोमनि कहलन उनसे--
"रउरा सभका चित में,
हमके लेके;
जे कुछ परदा होइ रहल वा,
ऊ हम जानत वानीं।
एही से अब,
ऊहे रउरा लोग;
सोग मोह का कारन
अउरन नियर होइ के अइलीं।
लछिमीवान निपुन भइलो पर
रउरा सभ में;
बहुत दुलम गुन वाड़न।
अरदुवाइ-वल,
सहज बढ़ावेवाला;
सूध सुजस सुभ,
अउरी उत्तम भाव धरम के
रउरा हिरदय में वा !
धरम बचन सुनि के हमार जो,
ग्यान भइल हो रउरा सभ का
तब पयान से हमरा,
बिरथा सोग करीं मति।
बदले वाला चंचल जग में,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दॆंहि काल के भोजन हउवे;
जीवन हऽ छनभंगुर !
एहिजा कुछऊ. हरदम--
कायम रहे टिके वाला ना !
इनिरीजीत महापंडित मुनि,
तपेसरी ग्यानी महातमा;
भइलन अतिरी आ बसीठ भा
अउरी केतने उत्तम संत !
उहो काल का बस में होके,
छोड़ि कलेवर गइलन !
एहिजा सभ कुछ.
नासवान छनभंगुर बाटे !
इन्दर नियर महापरतापी.
धन धरती के सुघर सिंगार;
तीनि लोक के जीतेवाला,
देवरूप राजा मांधाता;
अउरी नामी बीर जगत-पति,
महाभाग, नाभाग !
सभ एहिजा से,
मरि के गइल बिलाइल !
साधु संत तपसी राजा आ--
बली बीर विदमान्,
केहू अइसन नाहीं;
जेकर नास भइल ना !
भागीरथी 'जजाती' राम,
पुरुरवा' 'अज' नहुस वोगएरह;
अउरी हीन करम करवइआ,
कूर घमंडी कउरव-लोग;
सभे काल के कवर भइल !
समय पाइ के सुरुजो,
गिरि जालन आकास लोक से;
देवलोक से गिरसु देवता,
भइलन खतम सएकड़ो इन्दर।
एहिजा केहू,
हरदम ठहरेवाला नाहीं !
अउरी बउध मुनी जे भइलन
ऊ अँजोर से विमल बूधि का
दुनियाँ के उजियार बनाके,
तेल ओराइल दिया समान;
आखिरकार बुतइलन पूरा !

आगे अउरी,
तपसी बउधमुनी जे होइहन;
उहो चमकि के,
लकड़ी का जरला पर,
आगी नियर सांत हो जइहन !
बिदमानन के,
उहे डहरि धइ हमरो;
जाइल चाहीं एहिजा से।
नाँव रूप वाली देहिआँ ई,
बे कारन ना ढोवल चाहीं !
बहुत सुघरि मन भावनि,
बैसाली नगरी से;
अब हम डेग बढ़ा के,
आगे जाइल चाहत बानीं !
रउरा सभका,
चाहीं नाहीं सोग करे के !
एह लोक के
असरन, छनिक, बिनासी, दुखमय,
जानि समुझि के रउरा लोग,
संग-मोह-ममता के छोड़ि;
डहरि धरीं बइराग ग्यान के !"
एह किसिम से मुनिवर,
सभ उपदेस सुना के;
अपनें उत्तम सूध तेज से,
जगमगात चमकत नित;
गरमी-रितु का सुरुज समान,
कलें-कले उत्तर के बढ़लन !
तव अँखिअन से लोर बहावत,
दुखी लिच्छवी भाई-बन्धु
पाछे-पाछे चललन !
उनका जूथरूप में चलले
गहना तन के,
झनझन बाजत रहलन !
अउरी ऊ सिर नीचे कइके,
रहलन करत बिलाप !
"हाय ! सोनहुली,
सूध जोति वाली सुभ—
बत्तिस लच्छन से भरपूर;
देहिआँ गुरु के बिनसी !
भला छनिक भगवानो ?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हाय! बोध-अमिरित का
तेज भूखि से बेकल
बेचारा अबोध वच्चन के
ग्यानरूप प्रिय दूध सुरस अति
देबेवाली गइया,
अचके छोड़ि रहलि बा!
जे अन्हार के नास कइल आ—
असल महीन बतुस लउकावल,
मुनी रूप ऊ ग्यान सुरुज अब;
चाहि रहल बा डूबे के!
भव का कठिन ताप से झुलसल,
जल-भंडार ताल आ पोखर;
चाहेवाला सभ लोगन के,
धरम-बान्ह अब;
अचके टूटि रहल बा!
हाय! बहुत दुख के ई बात!
भवफंदा में फँसल बन्हाइल,
सीलहीन निरदयी काल का;
हाँथन से घिसिआवल जात,
बहुत दुखी लोगन के;
रइछा करे छोड़ावे वाला
मुनी दया के सागर;
चललन उनके छोड़ि!"
एह किसिम से करत बिलाप,
मुहवाँ मलिन सोग से जिन्हिकर;
अइसन गुन से हीन अनाथ,
लिच्छबिअन के मुनिवर
घर लवटें के कहलन।
जिन्हिकर मनवाँ,
सटल मोह ममता में मुनि का
अइसन ऊ लिच्छवि सरदार,
दुखी भइल दुख से वियोग का
घर के लवटे खातिर;
मुसकिल से भइलन तइयर।
मोह बुद्धि का कारन,
बेकल भइल सोग से उन्हुकर
डेग बढ़े ना आगे!
जइसे बहुत धार का सनमुख
जायेवाली लहरि चले में;
समरथ नाहीं होले!
एह तरह से,
दुखी देंहि ले लाचारी से
घर लवटल ऊ लोग!
मानों मुरदा फेंकि नहा के
नदी तीर से लवटल होखसु!
जवन लोग जिनिगी में,
कबे हारि आ दुख ना देखल
निपुन समर-विद्या में,
बिकट तेज बानन से,
खट्टा कइल दाँत दुसमन के
जिन्हिकर तन-बल, धन-पुरुसारथ
राज-मुकुट पहिरावे वाला,
उहे आज मनवाँ उदास कइ,
कल से धइलन डेग नगर में!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सुगति के डहरि

जब मुनि गइलन,
सुगति परम पद खातिर;
तब वैसाली नगरी,
घिरि अन्हार से;
असुर राहु का पाले,
सुरुजदेव का परले;
दिसन समान सुभाविक,
भइलि तेज से हीन!
धन-संपति से पूरन नगरी,
भीतर बसनिहार लोगन
दुख के कारन,
बिधवा नियर हीन सोभा से
बनलि अभागिनि लउकलि!
रूप बिना विद्या के,
ग्यान बिना करनी के;
बल के बिना बुद्धि आ–
संजम बिना सक्ति के पुंज!
सुभ आचार-विचार बिना धन,
बेसरधा के प्रेम;
बेसवतुक उतजोग लच्छिमी,
करतब बिना धरम आ–
सरद्-रीतु कातिक-कुवार में,
बेबरखा के
सुखत धान के खेत।
जइसे सोभा पावसु नाहीं,
एही तरे बिना मुनिवर के;
सोभाहीन भइलि ऊ नगरी!
कठिन सोग का कारन तहिंआ
कवनो घर में,
आगि बरलि ना भोजन पाकल!
पानी तक ले,
गइल कंठ में ना केहू का!
सुजस गाइ मुनिवर के,
रोवत रहे बिलखि ऊ लोग!
ना त केहू,
केहू से कुछ बोलल;
ना कुछ पूछल,
नाहीं कइल कामधंधा कुछ!
जहाँ-तहाँ सभ जगहा,
रोवत रहल बइठि के!
तहाँ बनल बेचारा,
बली बीर सेनापति सिंह;
दुखी भइल मुनि का वियोग में,
लगलन करे बिलाप!
उन्हुकर सभे इनिरिआ,
सोग-ताप से बेकल रहली!
"हाय! जवन मुनि,
झूठ पखंडी बद-बकबादी;
धरम-बिचारक दल के,
सूध तेज तप-बल से अपना;
सभा बीच सहजे हराइ के,
दिहलन सुघर धरम-उपदेस;
उहे आज उठि उत्तर चललन,
महाकाल के ओर!
धरम-धुरंधर सामी जग के,
दया प्रेम के सागर मुनिवर;
करत बिलाप दुखी हमनी के,
छोड़ि गाढ़ में कइसे;
सांति-लाभ खातिर जा ताड़न?
पापी नहुस सरग से गिरि के
जइसे भइल तेज से हीन;
ठीक तइसहीं,
बिना ओह मुनिवर के
ई धरती अब,
भइलि सोग का जोग!
जइसे जड़हल–
दुखिअन के आगी आ,
गरमी से बेकल के;
होला सरन सूध ठंढा जल,
ओही तरे बउध मुनि;
उत्तम सरन अकेला,
दुखी आदमिन खातिर रहलन;
अब आगे का होई?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मुनि समान अइसन के बा जे,
धरम-करम से हीन अभागा;
मउवति का फंदा में बाझल,
एह अधम पापिन के;
भवसागर से पार क़री अब ?
अगिनित दोसन के जितलो पर,
सज से धारन कइलो पर, सुभ—
सूध ग्यान रूपी हथियार !
आग-पाछ के जानेवाला,
दुनियाँ के गुरुदेव सिरोमनि;
सजग धरम-सेनापति लायक,
चललन अब बिनास का ओर !
इच्छा रूपी,
महाभयंकर लहरन वाला;
अउरी जेकरा भीतर,
बहुत कामरूपी घरियार;
अइसन भवसागर से,
बेचारा पापिन के;
ग्यानरूप नइआ से,
पार कइल जे मुनिवर;
रोग बेमारी जेकर फूल,
जेकर धोंधढ़ डाढ़ि बुढ़ापा
ओह सघन संसार-बिरिछ के,
जवन बउध मुनि
तेज ग्यानरूपी टांगी से,
सहजे काटि गिरवलन;
सांति-डहरि जे धइलन,
मोह-कोखि से पैदा
महा कठिन अग्यान भरम के
जतन जुगुति से कइलन नास
सूध ग्यान सुभ पवलन,
अउरी ओकर ठीक ढंग से;
दिहलन सभके सिच्छा !
जे निरबीज कइल दोसन के,
दया कइल जीवन पर;
लीन रहत दूसर का हित में,
अपनइती के त्याग कइल;
ऊहो मुनिवर,
काल-गाल में जइहन !
एह लोक में तब के
जीअत रही भला जी ?
मउवति सभ दिन बनलि रहे ले,
ओकर नजरि समान;
भेद-बुद्धि ऊ राखे नाहीं !
धनी-गरीब, मुरुख भा पंडित,
एकर भेद-भाव ना ओकरा—
अइसन समझि-बूझि जे लोग
सजग रहेला धरम-काज में
ऊहे एहिजा देखेला !
एह किसिम से,
सुरस ग्यान-रस पीएवाला
मानुस-बंस-सिरोमनि-सिंह,
जनम-दोस के निंदा कइलन;
जनम-नास के बहुत बड़ाई !
असल जनम-जरि काटे खातिर;
उत्तम बरत-नेम पाले आ—
चंचल चित के रोके खातिर,
सुभ सवतुक मत मनलन !
सांति-डहरि पर चले लगन से,
भवसागर के पार करे आ—
सभ लोगन के,
एक बराबर देखेवाली;
सूध नजरि सुभ पावे खातिर
जनम-नास के,
लगलन कोसिस करे बीर ऊ !
ओह समय सरदार सिंह ऊ,
मुनी नेवरतिक दिहलन दान
मलिन मोह छोड़लन आ—
मनलन सुन्न एह धरती के !
तब मतवाला हाथी अइसन,
तेजवान मुनि गउतम;
देहिआँ पूरा फेरि ठहरि कुछ
नगर ओर देखत कहलन कि—
"हे वैसाली ! एह जनम में,
हम फिर तोहके देखबि नाहीं;
काहे से कि
मंगलमुखी सुखी हे !
हे बड़भागिनि !
हम सुभ सांत परम पद खातिर
जाइ रहल बानीं अब !"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सहजे प्रेमबस मांथ नववले,
अपना पाछे आवेवाला;
सभ लोगन के,
बउधदेव मुनि देखलन, अउरी—
'एह लोग के मनवाँ,
माया ममता में बाझल बा';
अइसन जानि समुझि के,
सभई के लवटवलन!
तब ऊ इनिरीजीत तथागत,
कले-कले चलि;
भोगवती नगरी के गइलन।
ओहिजा कुछ छन रुकि के,
सेवक लोगन से कहलन कि—
"हमरा गइला पर रउरा सभ,
नेह लगन से, निपुनाई से
धरम-डहरि पर चलवि सजग हो!
इहे असल उत्तम आनंद,
एके छोड़ि सभे कुछ निहचित
झूठ भरम आ सपना।
हम ना जवन सुत्त में लिखलीं,
अउरी जे ना;
बिनय रूप में आवे,
ओके हमरा मत का उलटा;
चाहीं सभका जाने के,
अउरी ना माने के चाहीं।
जेकरा में ना विनय-बिचार,
ऊ नाहीं हऽ बचन हमार;
नाहीं त धरमे हऽ!
बिनय असल में संजम नेम,
सुभ आचार-बिचार।
भिक्खु-भिक्खुनी सभका एके,
मानल चाहीं;
सरधा-प्रेम सचाई से।
बचन पवित्तर लोगन के नित,
सुनीं ध्यान से मानीं;
उहे धरम हऽ जानीं,
उहे विनय हऽ;
ऊहे बचन हमार।
बाकी सभ तऽ
चउपट करे हेंगावेवाला।
मेहीं निपुन बुद्धि का—
सहज अभाव कमी का कारन,
भा संदेह भरम का करते;
चाहे बिसय-मोह-चसका बस,
लोग छोड़ि अनमोल मनी के
ललकि काँच पकड़ेलन!
जइसे छेदि, काटि आ—
रगरि तपा के,
जाँच कइल जाला सोना के
ओही तरे सुत्त आ—
चालि-चलन बेवहार देखि के
रउरा लोग धरम के
निपुनाई से जाँच करीं।
जे अग्यानी लोग,
नाहीं पढ़ल धरम पोथिन के
ऊ अनुचित के उचित बतावसु,
अउरी उचित घोर अनुचित के
एह किसिम से उलटा देखसु।
साहतर-बचन धरमपोथिन के
अरथ-भाव आ सबद-रूप से
नेम मोताबिक समुझल चाहीं।
नाहीं तऽ जानीं कि—
जे उलटा हथियार धइल ऊ,
अपने अंगन के काटे ला!
सबद-ग्यान बे भइले,
अरथ-बोध साहतर के;
ओही तरे दुलम बा,
बिना रूप-रेखा के जइसे;
मुसकिल बा केहू के चीन्हल।
उहे चतुर मतिमान जगत में,
जे तऽ जरि का भीतर जा के
असल अरथ के पकड़े ला।
ठीक अरथ के ना जनला से,
नास धरम के होला।"
अइसन कहि के,
बउधदेव भगवान;
गइलन पावापुरी समय पर।
तहवाँ मल्ल लोग जुटि;

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

धूम-धाम से उनुकर,
कइल बहुत सतकार!
तहाँ दयानिधि,
भगत चुन्द का--
आमब्बाग में;
चेलन का सँग रहलन!
ओहिजे ओकर नेवता मानि,
भिक्खु संघ का साथे;
अंतिम भोजन कइलन!
सभई का भोजन कइला पर,
भगति-प्रेम का बस में भगवन;
चुन्द भगत के सिच्छा दिहलन।
तब ओहिजा से चलि के,
कुसीनगर में गइलन!
साथ चुंद का गउतम,
प्रिय इरावती नदी लाँघि के;
पहुँचि-नगर पाँजर में,
सांत सुघर फुलवारी भीतर,
ताल किनारे जाइ बइठलन।
नहँ समान तोता का,
लाल रंग देहिआँ के जेकरा;
ऊ मुनि गउतम,
हिरनवती नदिआ में,
पइठि नइहलन सज से।
फेर सोग से बेकल,
सेवक निपुन पासबरती अति;
प्रिय आनंद भिक्खु से कहलन—
"हे आनंद धीर धरि,
ओह दूइ सनमुख का—
सघन साल बिरिछन का बीच;
उत्तर के सिरहाना कइ के,
मंच हमार बिछावऽ!
हम थाकल बानीं अब—
ओठँघि करबि आराम।"
तब गुरुवर के,
एह तरह के;
गूढ़ बचनिआँ सुनि के,
लोर बहावत अँखिअन से आ—
करत बिलाप धीरता खोवत,
सूते खातिर,
ऊ आनंद बिछा के आसन;
हाँथ जोड़ि के अरज लगवलन।
तब ऊ पुरुस सिंह मुनि नायक,
अछय सनातन गाढ़ नींद आ—
सभे दुखन के;
जरि से खोदि मिटावे खातिर
सांत-चित्त से;
अंतिम आसन पर जा
कल से करवट दिहलन!
तहाँ एक ठेहुन पर,
गोड़ दुसरका धइके;
तकिआ बना बाँहि के,
लगा माँथ तर;
ऊ मुनि मुँह के,
चेलन ओर घुमाके सुतलन!
ओह समय पर,
सभई दिसा सांत हो गइली।
चहचह बंद भइल पंछिन के,
जीव-जंतु सभ रहलन मौन;
दुनिआँ मानों जकड़ि गइलि हो!
बिना हवा का वहले,
डोलत रहे फेंड़ के पतई;
मानों हिरदय का पीरा से,
ताप जलन से;
उन्हुकर अंग-अंग सिहरत हो।
ऊ मन मरले,
मुरझाइल फूलन के
धरती पर टपकावत रहलन,
जानुक मुनि का सोग बिरह में
लोर गिरावत होखसु।
सेजिआ पर आराम सांति का,
हरदम खातिर जे सूतल ऊ;
संत दयानिधि
बउधदेव मुनि,
आँसू से भींजल मुँह;
दुखी चित्त आनंद भगत से,
एह किसिम से कहलन—
"हे मतिमान निपुन आनंद!
मल्लन के हमरा पयान के,
समय बता दऽ जाके!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ऊहो लोग परमपद देखे,
जे में कि पाछे ले,
होखे मत उनका पछताव।
तब आँसू पोंछत बेचारा,
दुखी भिक्खु आनन्द;
मल्लन से कहलन कि—
'अब गुरुदेव तथागत,
सुगति परमपद का इच्छा से;
आसन पर जा ओठँघल बाड़न'।
एतना कहि ऊ,
बहुत जोर से रोवे लगलन!
ऊ दुखदाई समाचार सुनि,
बेकल दुखी इनिरिअनवाला;
मल्ल लोग डरि,
ओही तरे घरन से निकलल;
जइसे बेकल बैल--
सिंह का डर से!
जिन्हिकर अँखिया भींजत रहली,
काँपति रहे देंहि आ--
उड़ल उदास रंग चेहरा के
अइसन मल्ल लोग ऊ,
पुन्नि छिन्न भइला पर,
सरगलोक से गिरल ढकेलल;
देवतन नियर तहाँ बटुराइल!
भइल सोग से बेकल,
गरम लोर ढरकावत
मुनि चरनन के भेंवत,
हाँथ जोरि के करत पलग्गी;
मौन भाव से,
मुनि का सनमुख;
ठाढ़ भइल ऊ लोग!
तब मुनिवर कहलन कि—
'सुख के जगहा,
दुख के भाव उचित अब नइँखे!
ई अति कठिन दुलम आ—
विनती कइल निसाना उत्तम,
हमके आज भेंटाइ रहल बा!
सुखमय पुन्नि मिलल ऊ हमके,
जे ना कबे पंच भूतन से;
मिले भेंटायेवाला!

ई हऽ जनम रहित सुभ दइबी—
सहज सनातन अचल सांत पद
जेकरा के पवला पर,
सोग कबे ना होय!
जनम करावेवाला,
करमन के हम;
समझि पहिलहीं,
जरि से कटलीं!
बचल करम का बल पर,
दोसन के घर;
परालबधवाली हमार ई,
देंहि आजुओ कायम बा।
अब ई समय सोग के नइँखे,
रउरा सभ बे मतलब;
काहें रोवत बानीं?
दुख के जरि ई,
पँच भइन का--
पंचाइति-चंदा-बेहरी से
मिलि के बनल हमार देंहि अब
खतम होत बा आजु।"
तब मुनिवर का मुँह से,
निहचित समय सुगति के सुनि के
मल्लन में एगो अति बूढ़,
सभके बोधत धीरज देत;
एहि किसिम से बोलल—
'सुगत मुनी खातिर अब,
चाहीं नाहीं सोग करे के
काहे से कि—
समय पाइके देवतो,
गिरसु सरग से नीचे!
फेरु भला गउतम तऽ
जइसे जरत भवन से,
तुरते निकलत होखसु!
तबहूँ हिरदय दुखी होत बा,
एकर ई कारन कि—
'जिन' अब नाहीं मिलिहन।
दुनिआँ के जे करे भलाई
ओकरा मउवति पर के
हित-कइला के मानेवाला
भला दुखी होई ना!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बेटा नियर दुलरुवा,
मल्लन के ई बतिया सुनि के;
मेघ नियर धुनिवाला,
महापुरुस तब;
अरथ-गँभीर बचनिआँ बोललन—
"कठिन जोग के,
जे आचरनरूप में अपना;
सज से ना बेवहार करी,
खाली हमरा दरसन भर से;
ओके सुगति भेंटाई नाहीं'।
जवन आदिमी हमरा मत के,
पालन करिहन;
नेह लगन से हरदम,
बिना दरसनो के हमरा ऊ;
सभे दुखन से छुटिहन।
बिना दवाई का सेवन के,
गुनी बैद का दरसन भर से;
रोगन से लोगन के,
पिंड छुटेला नाहीं!
मुकुति परम पदवी तऽ,
ठीक अइसने;
कहल गइल बा!
एही से आलस के छोड़ि,
बीज-तेज का बल से;
सुभ हितकारी;
धरम-नेम के;
नित बेवहार करीं।
जिनिगी, तेज हवा में राखल—
टेम्हि नियर दीया का चंचल!"
एह किसिम का—
सुघर बचन से मुनि का,
बोध पाइ के मल्ल-समाज;
उनुका बिरह सोग-चिन्ता से,
बेकल हिरदयवाला;
दुखी होत अति,
तेजधारवाली नदिआ का—
बीच नाभ के;
लँघला नियर बहुत मुसकिल से,
रोवत घर के पहुँचल!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

महामुकुती

तव सब सुघर गुनन से पूरन,
तिरदंडी मुनि एगो;
नाँव सुभद्र संत रमता-चित,
सुगति परमपद चाहेवाला
मुनि के देखे अइलन !
"सहज-सुगति का—
अंतिम छन में पहुँच,
सिद्ध संत का दरसन खातिर!
हम एहिजा अइलीं हूँ।
असल निसाने पहुँचल—
महापुरुस के दरसन;
परब समइआ,
दूजि अमावस—
विमल पुरनवाँसी का—
मंगल रूप-सहज-हितकारी,
चानदेव का दरसन अइसन;
होला बहुत दुलम दुसवार !
हम ओ मुनि के देखवि,
दुख का अंतिम ओह किनारे;
जे जाइल चाहत बा !
बे सुभ दरसन दिहले,
कहीं सुरुज ऊ;
बादरि से जनि जासु ढँकाइ !"
धरम-ग्यान सीखे का बहने,
कहीं साधू ई;
हरतुत-येथ-जवाब करसु जनि,
एह भरम संका से;
उनके ऊ सेवक आनंद,
प्रिय-दरसन से रोकलन !
लोगन का भावन के
सहजे जानेवाला;
मुनिनायक ऊ
ओह भगत साधू के
देखि निरास तुरत कहलन कि—
"हे आनंद चतुर ! तू
उनका के जनि रोकऽ !"

सुखी-सांत-मन,
संत सुभद्र निपुन तव;
विनय भाव से झुकि के,
गइलन उनका पास !
पाँव लागि के, सांति सुमति से;
समय मोताबिक बचन कढ़वलन—
'हे भगवान दयानिधि !
रउरा जवना—
सुगति-डहरि के धइके,
भवसागर दुरगम के लँघलीं;
अउरी-धरम बिचारक,
संतन का मारग से;
ऊ कुछ दूसर बाटे--
ई हम सुनले बानीं !
हे कोमल-चित-संत !
ऊ मारग कइसन हऽ ?
ओके हमसे,
बतलावे के दया करीं !
हम जाने का—
लगन-लालसा से अइलीं हूँ;
ना कि करे बकबाद बहस !"
तब मुनि सुगत देखि के सरधा,
सुजन सुभद्र भगत के;
सुगम डहरिआ,
आठ अंगवाली के;
अरथ सहित बतलवलन सज से !
नई धरम-सिच्छा सुभ सुनते,
भागल भरम-कुहेस तुरंते;
दूर हटल अग्यान-अन्हार !
महा वैद के,
नया सजीला आँजन;
जइसे आँखिन में लागल कि,
माँड़ा, मोतिआबीन, धुंध आ--
रोहुवा, फूली, नजला;
सभे रोग भगलन लुकाइ के,
नजरि दूर तक देखे लागलि !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ओह सुभद्र संत ग्यानी के
मन के खुसी बखानीं कइसे?
जइसे डहरि भुलाइल वनियाँ,
संजोगन घर पहुँचि समय पर;
मिलि परिवार सुजन संगी से,
सुखी मगन हो जाला!
जवन डहरिआ धइले,
अब तक हम चललीं हँ;
ऊ सुखदाई सुगम रहलि ना--
अइसन सोचि-समुझि के,
मुनि सुभद्र ततकाल;
पहिला मारग छोड़लन!
"ओह डहरि में,
रज आ तम से मिलि के;
थोरे संचित होला!
एही से बस,
सत्त सनाइल रज से;
पुन्नि-करम के,
सहज बढंती होले!
बुद्धि जतन आ विद्याबल से,
बढ़ल करम ऊ;
पैदा करे सत्त के।
तब ओकरा से साफ परगटे,
होला नास करम-फल के!
ई बिचार तऽ उन्हुकर,
नइँखे ठीक जनात।
भला करम के,
कइसे होला अंत बिनास?
काहें से कि,
गुन त नित्त सनातन हउवन;
होइ सके ना उन्हुकर नास!
कोसिस कइला से कबहीं जो,
होखे खतम करम केहू के;
समय पाइ के तबहूँ,
ऊ बटुराइ सके ला फेरु।
कारन बा कि सत्त नित्त हऽ
ओह सनातन नित्त सत्त के;
भला बढंती कइसे होई?
एही से तऽ,
नास करम के होइ सके ना;
ना मिलि सके सांति सुभ!
ओह मती में,
जनम जीव के;
सहज सुभावन मानल बा,
अउरी ऊ सुभाव ह—
नाहीं बदलेवाला!
तब ओकरा में कइसे,
सुगति परमपद होइ सके ला?
'जग के जरि कारन हऽ इच्छा'—
ईहे मत बिचार वा उत्तम।
कारन का अभाव में
कारज के अभाव हो जाला!
'छोड़ि देंहि के,
कवनो नित्त आतमा नइखें'-
ई हऽ निहचित उचित बिचार।
ना ई जगत आतमा के फले,
नाहीं एकर करता,
कतहीं कवनो ईसर!
धरम अनेकन का खिचड़ी से
होला जनम परानिन के सभ;
ईहे मत हऽ विमल बउध-मत!
नेम सनातन ईहे,
जगत सरूप-रूप में
परगट होत रहे ला।
ना तऽ एकर परलय होला,
ना ई नित अबिनासी!
एह तरह ऊ बाभन,
जानि बउध-मत;
अउरी ओके,
तरक मथानी से मँथि;
पहिला मत के छोड़ि अभय हो,
उत्तम सुगम बउध-मत मनलन।
सबसे बढ़िआँ नगद धरम-पा,
मानो ऊ तिरपित हो;
सुख-सागर में बुड़लन!
तब सोअत मुनिवर के देखि,
विनय-भाव से झुकि के;
एह किसिम से बोललन
"पूजा बिनय-जोग गुरुवर के,
मउअति देखल सनमुख;

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हमरा खातिर नइँखे ठीक।
एही से एकरा ले पहिले,
हम ई आपन देहिआँ छोड़ि
नगद परमपद पाइबि!"
तब ऊ पाव लागि के मुनि के
परबत नियर थीर आ—
चुप्प होइ के,
एके छन में;
पवन-झँकोरल दीया अइसन,
पा लिहलन सुभ सांत परमपद!
आधी राति बीति-गइला पर,
विमल चनरमा के जब
सुघर अँजोरिया फइललि
सँउसे वन हो गइल सांत अति
सभ चेलन के;
अंतिम हुकुम सुनवलन—
"बाद सुगति का हमरा,
पातिमोक्ख ई;[1]
रउरा सभ के,
एगो निहचित—
आचारज-दीआ आ,
सिच्छा देवेवाला होखे!
रउरा सभका,
ओही के अधीन होइ के
काम करे के चाहीं!
हुकुम मानि के ओकरे,
सुभ आचरन बनावल चाहीं।
सुगति-मुकुति का वादो हमरा,
ओही तरे पढ़ी ओकरा के
जइसे आज पढ़ल ऊ जाता!
तन, बानीं, आ मन के
सुध बनावे खातिर
सांसारिक-विरती के छोडीं।
खेत-खजाना धन-धरती के
जमा कइल पँजिआवल;
लाल धिकावल लोहा अइसन
समुझि जरावेवाला, छोड़ीं।
गाँछ-विरिछ के काटल,
धरती-जोतल-खोदल;
रउरा लोगन खातिर,
धंधा उचित कहाई नाहीं!
बनि बिचवान कइल पंचाइति,
चतुराई आ जंतर-मंतर;
कुटिलाई, धूरताई, सिद्धि
ई कुल्हि हऽ दुखदाई
चाहीं इन के छोड़े के!
पातिमोक्ख ई,
सार सील के;
भिक्खु साधुसंतन के,
जीवन का बेवहार दसा में;
पाप करम से रोकेवाला।
इहे मुकुति के जरि आ—
ध्यान-समाधि—लाभ सुभ ग्यान;
असल निसाने,
वेखटका पहुँचावेवाला।
सील सहज ई,
उत्तिम बिमल ग्यान अनमोल,
सीले पुन्नि परमपद,
सीले सेसर नगद धरम हऽ,
सील अछय धन-खानि।
सील-सुमति-गति निरमल रहले,
सभे इनिरिआ सांत रहेली;
कबहीं चंचल होली नाहीं।
जइसे लाठी ले चरवाहा,
फसिल चरे से;
पसुअन के रोकेला,
उनके राखे दूर।
ओहीतरे सील का बल से,
छवो इनिरिअन के बिसयन से,
सजग होइके रोकल चाही।
बिसयन का बाजार में,
इनिरीरूपी घोड़न के;
खुला सुतंतर छोड़ेवाला,
मानुस बहकि सुमारग से सुभ,
रस के चीखे धावेला।
बाकी, बिसयन से ऊ,
तिरपित होला नाहीं;
फँसि के आखिर दुखवा भोगे।

१ बुद्ध-निर्मित ग्रंथ-विशेष।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जइसे बिगड़ल पाजी घोड़ा,
पकड़ि कुराह भइल वेकाबू
पीठी बइठल असवरवा के,
दुखजंजाल बिपति में डाले;
दुरगति करे गिरावे खाला।
बली दुसमनन से दुख होला,
खाली एही जग में;
बाकी तऽ जे,
बिसय भोगरूपी दुसमन के;
भइल सिकार धराइल,
एह लोक आ परलोकन में,
परबस हो ऊ दुख भोगेला।
एही से सभई का,
इनिरीजीत बने के चाहीं।
इनिरिन का बस,
कबहीं होखे नाहीं।
बिसय-भोग-रस चाहे वाला;
ओही तरे बसी इनिरिन का;
बहकि भुलाके होलन,
जइसे हरिना ललकि लोभ से;
खल बहेलिअन का फंदा में,
बरबस जाइ फँसेलन!
एह जगत में,
बाघ, साँप, जरती आगी से;
चाहे सठ दुसमन से,
ना ओतना डर मानल चाहीं;
जेतना अपने चंचल चित से,
जेकरा मधु लउकेला,
बाकी, खतरा नाहीं।
जइसे सेना बीच रहेला,
एगो सेनापति सरदार;
ओही तरे बीच इनिरिन का,
मनवाँ चउधुर लंबरदार।
ओ मनवाँ के जीति सकल जे,
जीति लिहल ऊ सभ इनिरिन के!
लोहा का आँकुस से
नाहीं बस में होखेवाला;
मतवाला हाथी समान भा—
गाँछ बिरिछ पर कूदे वाला,
बानर नियर सभे के मनवाँ;
सहज सुभावन चंचल।
एकरा के घूमे धावे के,
मोका दीहल चाहीं ना।
मनका परम सुतंतर भइले,
कबहीं सांति मिले ना।
बाकी एकरा,
धीर थीर भइला पर;
कारज पूरा होला।
भोजन करीं उचित ओजन से,
ठीक दवाई अइसन।
अउरी एसे,
करीं प्रेम भा घिरिना नाहीं।
ओतने खाईं,
जेतना से कि भूखि मिटे आ;
देहिआँ कायम रहे मजे में।
जइसे भँवरा,
फूलन के रस लेला;
बाकी, फूलन के ऊ,
छेदे काटे नाहीं;
ओही तरे मधुकरी भोजन,
टहरि घूमि के माँगत;
केहू के ना,
दुख पहुँचावल चाहीं।
बहुत बटोरि जमा कइ,
राखे के ना चाहीं।
नाहीं तऽ दुखभागी निहचय,
कबहीं परी बने के।
मधु बटोरि रखले मधुमाँछी,
कबे जिअकिअन से, लालचबस;
आखिरकार उड़ावल जाली।
सँउसे दिन आ—
पहिला-पछिला पहर राति के,
जोग-जतन जप-भजन ध्यान में;
जागि बिताईं कल से।
ना अधिका सूतीं आ जागीं,
लागल रहीं लगन से;
नित समाज के हित सोचे में।
काल-अगिनि से,
जरत जगत का रहले;
सँउसे राति उचित का सूतल?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हिरदय भीतर छिपि के बइठल,
घात लगवले मारे खातिर;
दोस-दुसमनन का जगला पर,
केकरा भला उँघाई आई ?
जइसे मंतर का बल घर से
काला साँप निकालल जाला;
ओहीतरे ग्यान का बल से,
हिरदय का दोसन के,
बहरी खेदि, सांति से सुख से;
सूतऽ तोहनी लोग।
बिना दोस के बहरी कइले,
नाहीं सूतल चाहीं।
लाज काम के उत्तिम परदा,
चालि चलन के गहना।
पकड़ि कुराह चलेवालन के,
ई आँकुस बरिआर।
ए से सभका,
लाज-सँकोच जोगावल चाहीं।
लाज जोगावे वाला मानुस,
जग में पूजल जाला।
बिदमानन से, सुजन लोग से,
आदर पावेला ऊ।
बाकी, जे निरलज्ज,
हित आ अहित उचित-अनुचित का;
बूझ-बिचार-ग्यान से खाली,
पसु समान ओकरा के जानीं।
दुसमन बली अमर जो मारे,
तबहूँ ओके;
बदला में ना मारल चाहीं।
अउरी चाहीं नाहीं,
रुक्खर बतिआ बोले के।
छमा सुघर उत्तिम बल,
छमा निअन तप दूसर नाहीं।
छमा मीत हित नगद नगीना;
छमा धरम के मूल।
छमावान का,
बल आ धीरज होला।
जे दूसर के,
सहि ना सकसु कठोर बचनिआँ,
ऊ ना चलसु धरम-मारग पर,
ना होखे उन्हुकर कयलान।
धरम, सुजस, गुन, रूप, गेयान—
धन-संपति सभ कुछ के;
नास करे ले खीसि।
एसे खीसि नियर ना;
दूसर केहू दुसमन !
खीसि संत संन्यासी खातिर,
अनुचित आ दुखदाई।
काँट-कूस गड़हा खाई में,
बरबस ठेलि गिरावे वाली
बाकी उहे खीसि, ना—
अनुचित ओतना;
गिरहस्ती जीवन में।
काहे से कि--
बहुताँ सभ गिरहस्त,
होलन भरल बहुत इच्छा से;
अउरी इन्हिका बारे में कुछ
ना उन्हुकर परतिग्या होले।
रउरा सभका हिरदय भीतर
जब कबहीं जागे अभिमान;
तब रउरा सभ,
आपन गेरुवा बहतर देखीं;
देखीं मूड़ल माँथ कवंडल।
जब कि केतने,
समझदार गिरहस्तो;
ई अभिमान मेंटावे खातिर,
कोसिस करसु रात-दिन।
तब जे सिच्छा पावल,
माँथ मुड़ावल;
माँगि मधुकरी खात फिरे ला,
ओकरा बारे में हम
दूसर का बतिआईं ?
छल आ धरम दूइके जानीं,
एक दूसरा का अति उलटा।
छल दुनिआँ के,
छले ठगे भरमावे खातिर।
धरम जगत का,
सुख कयलान भलाई खातिर।
बहुरंगी इच्छावालन के,
ज दुख होला;

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ऊ ना होखे,
वे इच्छावालन के।
एसे गुन का गँहकिन का नित,
इच्छा रहित बने के;
जतन करे के चाहीं।
अगर सुगति तूँ चाहत बाड़ऽ,
तब संतोख भाव अपनावऽ;
हिरदय भीतर पूरा।
भइले पर संतोख असल में,
एहिजा सचमुच;
सच्चा सुख-आनन्द मिलेला।
संतोखे सुभ नगद धरम हऽ,
संतोखी जन धरती ऊपर;
सांति चैन से सूतेलन।
बाकी लोग असंतोखी तऽ
सरगो में सुख पावसु नाहीं।
अनघा धन भइलो पर,
लोग असंतोखी सुभाववस;
हरदम रहसु दलिद्दर।
संतोखी निरधन भइलो पर,
नित धनवान रहलन।
परम सांति चहवइआ,
बुद्धिमान मानुस का;
सुख में चपटल चाही नाहीं।
देखि सुखी लोगन के,
देवलोग आ अगुवा उन्हुकर;
इनरदेव महराज,
डाहन बैर करेलन।
चपटल, सटल, संग, लपिटाइल,
दुख रूपी फेंड़वाँ के जरि हऽ;
एही से अपना सम्बन्धी,
चाहे दूसर सुजनलोग का;
मोह लाग लटका के छोड़ीं!
चपटल सटल लोग दुनिआँ में,
ओही तरे फँसेला;
जइसे बूढ़ा हाथी
फँसे पाँक दलदल में।
कारज केतनो कठिन दुलम हो,
होला सीध जतन ऊदम से।
नदी-धार का बहले हरदम,
पत्थल के चट्टानों आखिर;
पातर होइ खिया के।
पुरुसारथ उतजोग कइल जे,
ओकरा खातिर;
कुछऊ दुरलभ नाहीं।
एही से मनचित बटोरि के,
बनऽ ऊदमी जतन करऽ।
आपन भार उतारि माँथ से,
तूँ फरका जनि फेंकऽ!
जवन आदिमी,
अरनिन के रगरे में;
तिले-तिले ठहरे ला,
ओकरा खातिर;
कठिन काठ से अगिनि निकालल!
एसे जहवाँ मेहनति होले,
ओहिजे सीधि मिले ले।
सजग होइ के सुरता रख ले,
दोसन के ना लागे घात।
काय, वेदना, चित्त, धरम का
असल रूप के जानल;
अउरी उन्हुकर राखल चेत,
इहे ठीक सुरता इयाद हऽ;
सभे देह धारिन के मीत,
इहे असल रइछक हितकारी।
सुरता चेत खियाल बिगरले,
निहचय सभ कुछ बिनसेला!
एही से तूँ ढील परऽ जनि
राखऽ सुरता ठीक!
इनिरीजीत जती संन्यासी,
निपुन संजमी संतन खातिर;
सुरता सवतुक पोढ़ कवच ह।
ओके पहिरि चतुर ऊ लोग,
वली विसयरूपी बैरिन से;
ओही तरे लड़ेला,
जइसे मानो वीर जवान;
कवच पहिरि निरभय हो,
समर भूमि में;
डटि दुसमन से लोहा लेलन!
एही से अपना भावन के,
सोधि सूध कइ;

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सासन अंकुस राखि चित्त पर,
जग का उदय अस्त के जानत;
जतन करऽ सवतुक समाधि के।
जिन्हिकर चित्त समाधि-जोग से,
सांत भइल आ ठहरल;
भाव-बिचार धोवा के,
होइ गइल अति निरमल;
अइसन मन-समाधि से सीध,
पुरुसन का मनवाँ में,
मानस-दुख ना होला!
जइसे पक्का पोढ़ बाँध से,
जल का बढ़त बहाव-वेग के;
मेंहनति कइके रोकल जाला,
ओही तरे समाधि लगा के;
चित के रोकल-सोधल जाला!
जइसे धनिक लोग के रइछा,
धन आ धरम आदिमीजन भा—
घर दुवार से होला;
ओहीं तरे संत संन्यासी,
जोगी जती मुनी घर-त्यागी;
इन्हिकर रइछा होले खाली,
बस चउकस निरमल समाधि से!
बोध-ग्यान के. जानीं,
जनम-बुढ़ापा मउवति रूपी—
महासमुंदर बीच,
एगो नाइ समान।
मोह-अन्हार राति में ईहे,
मानो बरत चिराग;
सभ रोगन के दूर करे के
उत्तिम सहज दवाई;
अउरी दोस रूप बिरिछन के,
काटि गिरावेवाली टाँगी।
विद्या ग्यान जतन संजम से,
निरमल बोध बढ़ावल चाहीं!
जेकरा बिमल बोधमय आँखि,
उहे आदिमी अँखिगर साचो!
जे घरबार छोड़ि के निकलल,
तबहूँ लागल रहल चित्त का—
बहुरंगी बेवहारन में;
ओकर कबहीं हित ना होई,
दूनो लोक नसा के आपन;
आखिर में ऊ पहुँची,
जमपुर नरक रसातल में!
पुरुसारथ के,
मीत समुझि अपनाईं;
जानीं आलस के बड़ दुसमन!
पुरुसारथ से सींधि मिले ले,
छय बिनास आलस से होला!
गुरु दयालु के,
जवन उचित करतब हऽ;
अब हम एहिजा,
ओकर पालन कइलीं!
आगे रउरा सभका
नेह लगन से;
साधन जतन करे के चाहीं!
परबत पर, बन में, बिहार में,
जहवाँ कतहीं;
आसन राउर होखे,
पालन करीं धरम के अपना;
आलस-बस जनि चूकीं कबहीं!
नाड़ी-नबज देखि रोगी के,
तन के दसा बिचारि मजे में;
उचित दवाई दिहल बतावल,
एतने निपुन बैद के काम!
बाकी, ठीक समय पर;
संजम-नेम मोताबिक;
सेवन कइल दवाई,
जिमवारी हऽ रोगी के!
ठीक डहरिआ बतलवलो पर,
राहगीर जो;
पकड़ि कुराह जात मनमानी,
बिनसि जाय तऽ;
डहरि बतावे वाला,
दोसी नाहीं होई;
ना ओकरा पर करज रही कुछ
जो हमरा बतलवला,
उत्तिम चारि सचाइन में;
रउरा सभ में केकरो,
होखे कुछ संदेह भरम तऽ
पूछि समुझि के दूर करीं!"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एह किसिम से,
मुनिवर का कहला पर;
सभई चुप आ सांत रहल !
तनिको भरम रहे ना केकरो,
एही से कुछ कहल गइल ना !
तब उन्हुका मनवाँ के भाव,
जानि समुझि कहलन अनिरूध
"चाहे हवा बहल रुकि जाय,
सुरुजदेव ठंढा हो जासु;
गरम चनरमा होखसु,
तबो जगत में;
चारो सचकी बतिआ,
साबित करी झूठ ना केहू !
जेकरा के दुख कहल गइल बा,
ऊ सुख नाहीं हउवे।
दुखे असल में दुख के कारन,
एकरा के गँठिआलीं !
कारन के जब नास भइल कि—
मुकुति जरूरे होई !
दुख विनसे के,
जतन जरूरे बाटे !
सांत-सुगति निरवान दसा में,
सभ परपंच नसाला।
मन बानीं ना पहुँचे ओहिजा;
तब के भला बतावे कइसे;
सुगति परमसुख,
परम रूप के रूप ?
एही से हे मुनिवर !
चारि सचाइन में केहू का
नइँखे कुछ संदेह !
बाकी, जे ना अवहीं,
असल निसाने पहुँचे पवलन;
ऊ ई सोचि दुखी बाड़न कि—
'मुनिवर मुकुति ओर अब चललन'।
अबहीं एहिजा,
नया नया जे;
धरम-सरन में अइलन हँ,
जिनके अबहीं,
आपन असल निसान मिलल ना;
उहो बचनिआँ सुनि के राउर,
पहुँचि निसाने गइलन !
जइसे चमक पाइ बिजुली के,
छिपल चीज लउकेले !
जीवन मुकुत संत जन,
जे अपना करतब के;
राई-रत्ती पूरा कइलन,
जा चुकलन भवसागर पार;
ऊहो रउरा नित वियोग में,
भारी दुख से थउसल बाड़न !"
एह किसिम के,
सुनि अनिरूध-वचनिआँ;
जानकार तत्तन के,
वउधदेव मुनि;
असल मरम जनलो पर,
ए के फिर से सुनलन;
अउरी अपना—
चेलन का मनचित के,
पोढ़ बनावे खातिर;
प्रेम-भाव से कहलन—
"हे अनिरूध ! सभे जीवन के,
मउवति निहचित बाटे;
चाहे उन्हुकर, अरदुवाइ हो,
जुग भर तक काहें ना ?
जीवन के संजोग-वियोग,
कबहीं ना ह नित्त सनातन !
हम जब आपन आ दूसर के
सभे काम पूरा कइ दिहलीं;
तब हमरा अधिका जिअला से,
कवन लाभ दुनिआँ का बा ?
सरगलोक आ एह जगत में,
सिच्छा लायक रहलन जे;
ओह सभन के,
होइ चुकल अब सिच्छा !
हम सभई के,
धरम सुमारग पर पहुँचवलीं !
एही धरमदूत भिक्खुन का,—
परंपरा से;
सुभ उतजोग जतन से,
धरम हमार नगद ई;
समय पाइ जनता में फइली !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एह धरम से जग में,
होई सांति टिकाऊ!
असल सुभाव जगत के जानि,
असुभ मलिन अग्यान-भरम से;
उपजल एह सोग के छोड़ऽ!
अइसन जतन करऽ तूँ,
जेकरा से कि;
फेर जनम जनि होखे।
ग्यान-दिआ बरला से,
जब अँजोर हो जाला;
'जग ई बिना सार के,
अइसन लउके लागे ला;
तब अहार मउवति के होके,
फिर से जिअला नियन परम सुख;
होला साचो ओके!
ई देहिआँ हऽ दुख के घरवा,
सभ परपंच बखेड़ा के जरि।
भइले एकर नास,
दुख-बीपति के जरि दुसमन का;
मरला नियर, जगत में;
केकरा नाहीं,
भला सांति-सुख होई!
चर आ अचर सभे के,
नास काल अइला पर होला!
आइल बा अब काल हमार,
सोग छोड़ि के सजग रहऽ तूँ;
इहे हमार वचन अंतिम हऽ"
तब ऊ ध्यानी मुनिवर,
पहिल ध्यान में गइलन।
फेर दूसरा आ तीसर में,
एह किसिम से;
एक एक कइ,
गइलन अंतिम ध्यानदसा में।
तब ध्यानन से,
नव समाधिअन में जा;
द'जावस फिर नीचे आके,
मुनी ध्यान में अइसन पहिला!
तब ओकरो से फेरु निकलि के,
चउथ ध्यान में गइलन।
फेर चउथका ध्यानजोग से,
मुनिवर हरदम खातिर;
महासांति में भइलन लीन!
तहिआ, जब मुनि देहिआँ छोड़लन;
ओह घरी भारी आन्ही से,
धक्का खा करवटिआ लेत;
नाइ समान धरतिआ,
बहुत जोर से काँपे लागलि;
अउरी चारो ओर कड़कि के,
गिरे बिजुलिआ बारंबार!
पवनदेव का रुकि गइलो पर,
अगिनि बिना लकड़ी के;
बे धूवाँ जिभिआ लपका के,
लागलि बरे हहकि के!
मानो मोहक दइबी,
सुघर चइतरथ बन के;
जारे खातिर सरग लोक में,
बन-अगिनी के लहरि उठलि हो!
आसमान से,
लहरि सयकड़न उगिलत;
लगलन गिरे बजू डेरवावन!
मानों खिसिकट इन्नरदेव,
दानव-दल के जीते खातिर;
ओहन के छोड़ले होखसु!
बिरिछन के जरि-सोरि उखाड़त,
धूरि भरल झक्कड़ तूफान;
लागल बहे हहरि के!
अंधड़ के थपरा खा परबत,
दुखी होइ चोटिन के अपना;
आसमान में फेंके लगले!
भइलन मलिन चनरमा,
आपन तेज-अँजोर गवाँ के!
ढबरी भइल हिड़ाइल जल में,
जइसे राजहंस लपिटाइल;
नरकट आ सेवार-बीच में,
होखे फँसल घेराइल!
बे बदरी के,
जदपि रहे आकास;
ऊपर रहलन उगल चनरमा,
तबहूँ सगरे चारों ओर;
छवले घोर अन्हार रहे!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खउलत रहल नदिन के पानी,
जनुक बियोग-ताप से मुनि का;
हिरदय उन्हुकर लहकि गइल हो !
साल-बिरिछ सन्मुख के,
सुघर डाढ़ि रूपी हाँथन से;
झुकि के, असमय
कोंवर-कोंवर फूल सुगंधित,
मुनि का तन पर छोड़लन !
आसमान में,
नाग पाँच फनवाला;
थीर भाव से रहलन ठाढ़ !
ऊ मुनिवर के,
प्रेम-भगति से देखत रहलन।
अँखिआ उन्हुकर,
सोग-दरद से रहली लाल;
फनवा उन्हुकर रहलन बंद,
अउरी देहिआँ—
रहलि थीर काबू में !
सरगलोक में,
लीन धरम-कारज में रहले;
धरम-सभा राजा कुबेर के
सांत धीर रहि;
ना तऽ लोर बहवलसि,
नाहीं कइलसि सोग !
सुभकारज, उपकार धरम के,
रिनी देवता लोग;
मुनिवर खातिर,
भगति-भाव सरधा रहलो पर;
दुख-दोचित हो घबड़ाइल ना !
काहें से कि उन्हुका—
दुनिआँ का सुभाव से,
रहे उदासी घिरिना !
निरमल सवतुक नगद धरम से,
पावेवाला सुख-संतोख;
देव-समाज जच्छ किन्नर आ—
नागराज, गंधरब सभे;
सोग-बिरह में तड़पत रोवत,
आसमान में रहलन ठाढ़ !
एगो कामदेव बस,
पूरा भइले मन के साध;
अपना सभ समाज का साथ,
कूदि फानि के खुसी मनवलन;
हँसलन खूब ठठाके !
साँप निअन फुफ़करलन केतने,
केतने मगन होइ के नँचलन,
झालि, संख, मिरदंग बजाके !
ओह समय में,
मारि बजू के खाके;
पाँखि कटइला परबत अइसन,
मद सूखल गजराज समान;
अउरी सींघि टूटि गइला पर,
बैल नियर संसार;
हीन भइल सोभा से !
ओह घरी ई दुनिआँ,
ठीक ओइसने लउकल;
जइसे चान बिना आकास,
ठंढक से मुरझाइल सूखल;—
कमलनवाला ताल-चवँरवा,
चाहे धन-अभाव में;
विफल भइलि विद्या लउकेले !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

परमपद के सराहना

तब केहू मानीन देवता,
उड़नखटोला का झँखिआ से;
आपन माँथ झुका कुछ बहरी,
ओह घरी पर देखि सुगत के;
करत बिचार बचन ई कहलन—
"हाय! जगत ई सँउसे,
नासवान छनभंगुर!
जीव-जनम मउवति आ—
छयबिनास का,
नेम अधीन बन्हाइल।
जेकर जनम-मरन ना होखे,
उहे असल में भगिगर!
ग्यान लहरि हऽ जेकर,
सुजस जोति आ—
जनमे इन्हन लकड़ी;
अइसन चमकत—
बउधदेवरूपी आगी के,
अटलकालरूपी जल;
कइलस पूरा सांत!"
सरगलोक में रहलो पर जे,
ओहिजा का भोगन में;
लपिटाइल ना,
अइसन पोढ़ बिचारनवाला;
केहू सेसर मुनिवर,
देखि तथागत के बोलल कि—
"एह तीनि लोकन में,
नइँखे अइसन कवनो चीज,
जेकर नाहीं होखे नास!
निरमल परम ग्यान जे पावल,
उहो मुनी गुरुदेव जगत के;
गइलन कालवसी हो!
जीवलोक ई,
भइल मोहबस आन्हर मूढ़;
जे कि चीन्हि सकल ना,
तत्तग्यान का सुरुजदेव आ—
सांतिदूत मुनिवर के!"
तब अति निपुन भिक्खु अनिरूध,
जे दुनिआँ के जितले रहलन;
जिन्हिका तनिको,
रहल मोह भा लटपट नाहीं,
मुनिवर बिना देखि ऊ;
एह लोक के बे अँजोर के,
सांति धीरता का सँग;
मधुरस भरल बचनिआँ बोललन—
"करमन का दवँरी में नाधल,
पोढ़ नाथ नकिआ में डलले;
चतुर लोग का,
दसा देखि दुनिआँ के;
मन में गौर कइल चाही कि
कालबज्र का कठिन चोट से,
मुनिरूपी ई पोढ़ पहाड़;
टूटि गिरल छितिराइल!
ई असार संसार बिनासी,
जीव लोक कहलाला।
खतम कइल मारल जे,
बली दोसरूपी हाथिन के;
मुनिरूपी ऊ सिंह सानिअल,
आज अपनहीं बिनसल!
तीनि किसिम का,
सिजिल करमरूपी बरतन में,
इच्छारूपी तेज अगिनि से;
सिझनिहार लोगन के,
अमिरित सुरस पिआवेवाला;
मुनी लीन हो गइलन।
एहिजा उन्हुकर,
अब के रइछा करी दयालु!
जेकर एगो आँकुर,
दूइ डाढ़ि छव बीआ;
अउरी फलवा पाँच।
अइसन दोस-बिरिछ के,
जे मुनिरूपी हाथी;
तोरि हिलाइ उखड़लन,
ऊहो नाहीं रहलन!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जइसे इन्दर जल बरिसा के,
तिरपित करसु सभन के;
ठीक तइसहीं,
सुरस-ग्यान-अमिरित से;
चेलन के अघवा के,
गइलन मुनिवर;
महासांति-सागर का भीतर !
जेह किसिम से,
राजन के सिरताज कुबेर;
सभे तरह का,
धन के मालिक होलन;
मुनी तइसहीं,
जप-तप जोग ग्यान के गुन के;
मालिक साबिक रहलन !
जइसे परले बहुत कुहेस
बनवाँ छिपल तोपाइल;
अउरी बादरि बीच ढँकाइल,
सुरुजदेव ना सोभा पावसु;
तइसे टँकल सोग से उन्हुका,
दुनिआँ सोभति नइँखे !
जइसे सुरुज अन्हार भगावसु,
ओही तरे निपुन मुनि ग्यानी;
दुख अग्यान नसा के,
अपना जनमकरम से;
जग के बना पवित्तर,
छोड़ि हमन के गइलन;
अब ना फेरु लवटिहन !
बहुत लोग दुनिआँ से,
दुख-संताप पाइ के;
मुनि का सरन-छाँह में गइलन !
काहें से कि—
दुख-भव-जाल मेटावे खातिर,
होखल रहे जनमवाँ उन्हुकर।
मुनि दुनिआँ के,
सुभ-हितकारी—
सुगति-डहरिआ पर पहुँचवलन !
अपना सूध गुनन से,
तरलन धरती भरके !
उनके अपने पुन्नि-तेज से,
उन्हुकर निरमल सुजस बढ़ल !

धीरज से ऊ छोड़लन राज,
गुन से सभ लोगन के मोहलन;
अउरी जवन दान सुभ,
पहिले केहू दीहल नाहीं;
अइसन सवतुक दान अमोल
लालच छोड़ि जगत के दिहलन !
ऊ जबून करमन के,
कबहीं नाहीं कइलन।
सवतुक धरम-करम के,
पालन हरदम कइलन !
इच्छा दुसमन के बस राखि,
सोरि उखड़लन पाप अधम के !
ऊ मुनि इनिरीजीत,
सांति धीरता से संजम से;
छोड़ि आठ पाँचो के जितलन !
तींनि किसिम के करम छोड़िके;
सूध-बूध का बल से!
बूझ बिचार तीनि के कइलन !
अपना मधुर बचन-अमिरित से,
ऊ दुनिआँ के;
तिरपित कइलन खूब !
छमा-सांति से जीति खीसि के,
कइलन धरम-लीन चेलन के;
अउरी उन्हुकर,
चिंता-सोग हटवलन !
ओह निपुन जोगी के,
चित्त कबे डोलल ना;
कहुँकारी निंदा से,
ना दुनियाबी बेवहारन में;
कबहीं उन्हुकर मनवाँ लागल !
ऊ महातमा,
अपने भवसागर के लाँघि;
मोह-भँवर में डूबत,
बेचारा असहाय लोग के;
सहजे पार उतरलन !
सांति पाइ के अपने,
दिहलन ओहू सभके !
मरजादा-गौरव में,
उत्तिम मेरु समान।
धरती नियर छमा में,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दाता दानिन का समाज में;
मेघ नियर सखरज हितकारी
ऊ मुनि नइँखन आजु!
पूत निअन जे,
कइल दुलार जगत के;
चेला निअन ग्यान गुन,
मन-चित-सोधि सिखावल;
अउरी परजा नियर प्रेम से,
सज-से पालल-पोसल;
ऊ मुनि नँइखन आजु!
कामदेव खिसिआइल,
सेना सहित अनेकन बार;
जवना मुनि से,
लोहा लेके हरलन;
ऊहे छली काम खल नायक,
साथ होइ मउवति का आजु;
उन्हुका के जीते में,
समरथ भइल सफलता पवलस!
मुनि ऊ ग्यानी, दयाव्रंत अति,
गिरल चंचलो चितवालन के;
बिहलन सुभ सिच्छा आ–
मलिन चित के उनका,
धोइ माँजि के फरिछा कइलन!
अब के एहिजा,
अवरू दुखी निरास लोग के;
पार उतारी देई सांति?
मुनी बिना अब,
ई संसार असार उझंख;
सूखि झंझाइल नदी नियर भा,
सुरुजदेव का डुबले;
सोभाहीन अकास समान!
मुनिवर बिना आजु ई दुनिआँ,
बुद्धिहीन बिद्या आ–
बें धिचार के करनी,
चाहे धरम-दया से हीन!
ई संसार सुगत के खोके,
बिना माँथ का फउदि नियर भा;
रथ समान, जेकरा ना–
केहू निपुन सारथी होखे!
आजु सुगति चाहेवालन के,
दुख कवलेस ओइसने बाटे;
सरद रीतु में जइसे,
बे बरदी के आसमान हो;
बिना चनरमा वाला,
जइसे कि उन्हुकर दुखवा जे–
जहाँ हवा ना डोलति होखे;
जइसे कि उन्हुकर दुखवा जे
जीअल चाहसु बाकी;
भूइँ-सेज पर मूवत होखसु!"
ऊ मुनि, जीवन-मुकुत संत आ–
सीध सफल भइलो पर,
दोस जगत के;
अउरी गुनवाँ गुरु के,
वारंवार बखनलन!
काहे से कि–
मोतिआबीन भइइ अँखिअन के,
सूध बनावे;
निरमल जोति सुभाविक,
फिर लवटावेवाला;
गुनी बँद गुरुवर के,
बहुत रिनी ऊ रहलन!
ओह जगहि पर,
जवन भिक्खु ना रहलन;
भेद मरम जनवइआ,
ऊ त रोवत-कलपत रहलन;
बाकी जे तऽ,
रहलन जानकार तत्तन के;
ऊ दुनिआँ के,
नासवान छनभंगुर जानि;
धीरज नाहीं छोड़लन!
बिजुली गिरला निअन खबरिआ,
महापुरुस का;
सुगति परमपद के गइला के,
फइलल चारो ओर!
सुनते मल्ल लोग घवड़ाइल,
घाहील होइ करेजा धइले;
दउरत ओहिजा पहुँचल,
अउरी जइसे;
बेंग साँप से पकड़ाइल हो,
तइसे पुक्का फारि बिलखि के;

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लगलन करे बिलाप !
तेज ताप से हीन,
सूरुजदेव समान;
वेपरान के मुनि के देखि,
मोहरूप मुरुछा में डूबत;
परम भगति का कारन,
ओहनी लोग बिलखि के;
रोवे लागल बारंबार !
धरम गुरु का,
सुगति लोक गइला से,
कठिन-वियोग-सोग से,
होत रहे बेकल जे लोग;
उनहीं में ले,
एगो धरमी धीर मल्ल तब;
जानि समुझि के बोलल :—
"जवन जगत-गुरु,
सूति गइल लोगन के;
कइलन सजग जगवलन,
ऊ तब तानि चदरिआ;
मउवति का सेजिआ पर,
अपने सूतल बाड़न !
हाय ! संत जे अपना,
तेज ग्यानरूपी किरनन से ;
असुभ अन्हार महा घनघोर,
नित बेदाग नसवलन;
उहे बूधिरूपी सूरुज सुभ,
आजु डूबि के;
फइलवलन दुनिआँ में,
फेरु ओइसने घोर अन्हार !
बिनसल धरम बिमान,
नयन जगत के बंद भइल अब;
आग-पाछ सनमुख के,
सभ कुछ सहजे में देखल जे !
धरम बान्ह टूटल अचके में,
जे हमनी के रइछा कइलस;
दुख-सागर के लहरन से !
हाय ! महाजन के ई,
माल-खजाना लादल नइआ;
बीच नदी-धारा में डूबलि,
बिनसि गइल सरवस हमनीं के !"

एह किसिम से,
केहू रोवे लागल;
केहू बहुत बिलाप कइल आ–
केहू रखले रहल धीरता,
केतने भइलन मौन !
तब कुछ मल्ल बिलाप करत उठि,
सूँढ़ निअर बँहिअन से;
मुनि के लासि उठा के,
एगो नया अमोल पालकी;
सुघर सजलि सोनावाली में,
अति आदर सरधा से रखलन !
अउरी किसिम-किसिम का,
माला-फूल-सुगंध साज से;
प्रेम भगति बस होके,
रीति-नियम से पूजा कइलन !
तब सभ लिहल उठाइ पालकी,
जय जयकार मनावत !
ओह समइआ कुछ सुकुवारी,
मल्ल कुँवारी;
बाजत जिन्हिकर रहे सुभाविक,
कड़ा करधनी हार, पछुअवा;
ऊ आगे बढ़ि,
ताना रँगवाला हाँथन से;
तुरत पालकी का ऊपर में,
बिजुली नियर सुघर चमकीली;
नया चाननी तनली;
केहू उज्जर माला गाँथल,
सिजिल सजावल छाता तानल;
केहू सुबरन डंडावाला,
उज्जर चँवर डोलावल !
नामी निपुन मल्ल-सरदार,
ओह सजावल;
सुघर पालकी के जब,
धइलन अपना कान्हे;
तब ऊपर आकास लोक में,
भेरी बाजे लागलि;
जइसे बरखा के बेरा में,
गरजत होखसु मेघ !
आसमान से,
देवनदी गंगा का;

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गमगम करत सोनहुला,
खिलल कमल फूलन के;
बरखा कुछ छन होखल ;
जनुक कलोल करत जल भीतर,
देवलोग का;
मतवाला हाथिन का सूँढ़न,
झटका खाइ गिरल ऊ होखसु !
सरग लोक से,
तब देवता, गंधरब, सीध सभ;
नंदनवन का,
पारिजात मंदार वोगएरह;
सुघर सुगंधित फूलन के ले,
सरधा भरलि अँजुरिआ;
परेम-भगति से अरपित कइलन !
धप-धप धपकत उज्जर,
ऊपर के लहरात;
सुघर पताकन से आ-
उज्जर माला हारन से सजि,
सोभा पावति;
ओह पालकी के कन्हिआ पर,
लेके कले-कले ऊ मल्ल;
राह पवित्तर धइके गावत,
घंटा संख बजावत चललन !
बारंबार लोग सभ,
सुसुकत लोर बहावत;
मुनि का बिनय पदन के गावत,
सरधा-प्रेम-भगतिवस;
उनके माँथ नवावत रहलन !
एह किसिम से,
बीच गाँव से डहरि पकड़ले;
आगे बढ़ल बिमान !
नाग-दुवरिआ से बहरी हो,
हिरनवती नदिआ के;
पार कइल ऊ लोग !
तब सभ मल्ल-समाज समचि के
बटुरल पहुँचल तहवाँ;
रहल जहाँ बनवावल,
चइत मुकुट बंधन उनहीं के !
ओह चइत का नीचे,
चिता बनलि भगवन के;
उन्हुका जस आ नावँ मोताबिक !

तब ऊ लोग चिता का ऊपर,
चंदन, अगर, गुगुल, लाची आ—
धूप, कपूर, घीव के,
ढेर लगावल साजल !
अउरी सोग-दाह से,
साँप समान साँसि के घींचत;
मुनि के देंहि सुवासित,
ओपर सज से राखल !
एकरा बाद नहा के,
कपड़ा नया बदलि के;
चारि मल्ल सरदार,
दीआ बारि, चिता में;
आगि धरावल चहलन !
तीनि बेरि सुनुगावे खातिर,
दीआ गइलि लगावलि;
बाकी, चिता बरलि ना,
मानो मंतर से बान्हलि हो !
मल्ल लोग तब,
कारन जाने खातिर;
भिक्खु सुरेमन जानिबकार,
मुनि अनिरूध सीध से;
हाँथ जोरि के कइल सवाल—।
मरम समुझि के सहजे,
मुनि अनिरूध बतवलन उनसे—
"संत सिरोमनि चेला अगहर,
भिक्खु संघ सरदार;
निपुन महा कास्सप जी,
पाँच सइ भिक्खुन का;
दरसन खातिर आवत;
कुसीनगर पावा का-
बीच डहरि में पहुँचल बाड़न !
जबले ऊ अइहन ना,
चिता बरी ना;
केतनो जतन करीं जा !"
एही बीच दुखी बेचारा,
मुनि कास्सप धावत आ गइलन !
पहुँचि चिता का पँजरा,
चीवर एक कान्हि पर कइके;
हाँथ जोरि सरधा का साथ;
पाँचो सइ भिक्खुन का संगे,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

घूमि चिता का चारो ओर,
तीनि बेरि परिकरमा कइके,
गुरु चरनन के खोलि प्रेमवस;
पूजि नववलन माँथ !
एतने के तऽ देरि रहे, बस;
चिता तुरंते,
लहकलि अपने-आप !
अगिनिदेव तब,
मुनि का माँस, चाम. रोवाँ आ—
सभ अंगन के,
जारि खाक कइ दिहलन;
जिनके पाप रहे ना—
कबहीं जारि सकल !
सहज दया तब—
भइलि मेघ के,
चिता बुता ऊ ठंढा कइलन !
मल्ल लोग तब,
हाड़न का टुकड़न के
बीनि-बटोरि-धोइ के सज से,
धइके सोने का कलसा में;
अपना नगद नगर में,
राखे के तइआरी कइलन !
सभा-भवन में गन का,
छिरिकल गइल सुगंधित गंध !
सगरे गइल बिछावल,
गमगम गमकत फूल !
चटक चाननी नील रंग के,
ऊपर गइलि लगावलि !
बनल रहे जेकरा में,
सोना का तारन से;
तारा, पनई, फूल !
सतरंगी फूलन के,
माला हार टँगाइल;
चारो ओर दिवालन पर !
सभा-भवन ले,
चइत मुकुट बंधन तक;
दूनो ओर डहरि का,
टाँगल गइल सोहासुत परदा !
ओहू पर कपड़ा के,
भजिगर चनवाँ लागल !

किसिम-किसिम से तव ओकरो के
कारीगरी-कला से. गुन से;
सज से गइल सजावल !
पाँचो धजा पाँच रंगवाली,
ऊपर में फहरावल गइली !
नगर-गलिन में सगरे,
केरा-थंभ गड़ाइल;
अउरी जल से भरल कलसवा,
उन्हुका पास धराइल !
जरत मसाल देखावत आगे,
गंगा जमुनी हउदावाला;
सुघर सिंगार कइल हाथी पर,
साथ धातु का,
सोने का कलसा के धइके;
पूजत गंध, दीप, फूलन से
नाँचि-कूदि के करत तमासा;
गावत गीति बजावत बाजा,
घुमा नगर से;
सभा-भवन पहुँचा के,
चंदन का चउकी पर;
राखि प्रेम से,
उज्जर छाता गइल लगावल !
अइसन कइके,
कुसी नगर का; --
मल्ल लोग के,
चउधुर लंबरदार;
धातु-कलस के सभा-भवन में,
सात दिनन ले रखलन;
बरछी-भाला-तरुवारन से,
सजल सिपाहिन से घेरवा के !
ओह सिपाहिन बाद,
सटल एक दूसर से;
हाथी खड़ा करवलन !
उन्हुका पाछे,
एक एक से दूर
घोड़ा, रथ आ वीर लड़ाकू
दाँत हिलावे वाला !
सभका पीछे, तीर धनुस ले,
सजग सिपाही पहरेदार !
एह तरह से,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जोजन एक जमीनि घेराइलि !
बालक, बूढ़, जवान नगर के
सात दिनन तक;
नाँचि-गान, बाजा, माला से,
महापुरुस का;
धातु-रूप के पूजा कइलन !
ओही बीच कहीं ई,
गावत सुनल गइल कि—
"एह कलस में,
उहे धातु बा;
चिता-अगिन जेकरा के
जारि सकल ना।
जइसे कवे धातु बरम्हा के,
परलय आगी जारि सके ना !
मंगलमय ई धातु अमोल,
जग के सूध पवित्तर—
करे बनावेवाली !
मुनि का सरधा-भाव-भगति से
ए के एहिजा;
हमनीं राखत बानीं !
ई दुनिआँ के,
देई उत्तम सांति !
अरे ! काल केतना कठोर जे,
मुनी सिरोमनि के ना छोड़लस;
जेकरा धरम-सुजस के,
गंध सुगंधित जग में फइलल !
जेकर सुरुज-समान,
रहल बिराजत तेज;
जे दुनिआँ में कइल अँजोर,
ओह संत के देहिआँ जारि;
अगिनी बस. हाड़े भर छोड़ली !"
जवन मल्ल रन-बीच हँकड़ि के,
बली दुस्मनन के जितलन आ—
बनलन ना बेचारा कबहीं,
कइलन सोग दूर अपनन के
सभके सुख पहुँचवलन,
एह समय में ऊहो;
लोर बहावत बिलखत रहलन !

❁

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

धातु के बँटवारा

बीतत समय देर ना लागे,
गोड़ दबा ई चुप्पे भागे !
सभकर आदि अंत जाने ई,
एकर जानल केहू नाहीं।
कब का होई
एह बेद के बतलावे के;
मन बानीं के जहाँ पहुँच ना,
ओह जगह का अकथ कथा के;
के कवना भाखा में
कइसे कहे सुनावे ?
कुछ दिन समय गइल जब बीति
महापुरुस के लीला;
बनलि कहनिआँ गीति,
एही समय बीर मल्लन से;
पूजल जात धातु के उन्हुका
लेबे खातिर;
पास-पड़ोसे बसल बहादुर,
सात भगत राजन के;
राजदूत पारा-पारी से
ओह जगहि पर अइलन !
मुनि का धातु-खंड में,
बहुत गाढ़ सरधा रहला से
दूसर अपना बल गउरव से,
मल्ल लोग सोचल कि—
धातु-भाग दिहला ले,
लड़ि के निपटल अच्छा बाटे !
खबर पावते—
सभा-भवन में;
सभ चउधुर सरदार पहुँचि के,
गुनल-मँथल सोचल बतिआवल !
ओही समय देस, दुनिआँ, दिन;
इनके देखे परखे वाला,
बोलल एगो चउधुर बूढ़—
"भारत देस हमन के,
धरती के साकेत नगरिआ।
भूमि जहाँ के सोनावाली,

हीरा, मोती, रतन, जवाहिर;
मरकत मनि के खानि जहाँ !
जहाँ सिंधु गंगा जमुना आ—
सुरसति, सरजू, सोन, गंडकी,
झूमि झमकि गावति लहराति;
सभकर मनवाँ मोहसु सहजे,
अपना ओर बोलावसु !
जहवाँ बिहरत हँसत पंचनद
पंचामृत बाँटत लोगन के !
जहाँ बिन्हाचल का गोदी से,
धावति आवति अमरकंटकी;
गुनी नरबदा माई,
महाकाल से छिपरा मिलि के;
डाँटि-डपटि के दूर भगावति,
हमनीं का रोगन के !
जहाँ भगति-सेवा में लागलि,
गदगद हो फल-फूल साथ ले;
गोदावरी संतगुन गावति,
दंडकवन में बिचरति;
गोड़ लागि मुनिअन के,
धरम-सनेस सुनावे खातिर—
दक्खिन पूरुब का कोना में,
सागर का लहरन से खेलत;
छिटफुट गाड़ि पताका आपन,
बसल बहरवाँसू भाइन के;
जाले पुरुबी सागर तीर !
कावा काटि जहाँ कावेरी
पच्छिम से पूरुब के धावलि;
रंगनाथ के चरन पखारति
निरमल चित्त भजनिआँ गावति
सागर बीच समाधि लगा के,
मधुर ग्यान-अमिरित-रस खोजे !
जहाँ उगलि चंदन के बगिआ,
लाची-लता लवँग के झालर;
सगरे देंहि लपेटले !
कहीं नारियर, कहीं कसइली,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कतहीं सेव-अँगूर-बदाम !
कतहीं काजू, कहीं अनार,
कहीं चमेली, जूही, चंपा,
कतहीं तेन, पियार !
कहीं छोहाड़ा, कहीं नरंगी,
कहीं आम, अखरोट मुनाका;
मेवा के सजगर भंडार !
गमगमाति ललचावति सभके,
कहीं किअरिआ केसरि वाली।
ओही उत्तम देस बीच ई
सुघर महाजनपद हमनीं के;
नामी मल्ल सूरबीरन के,
जसी दुलरुवी जनम धरतिआ !
तहाँ बहुत पहिले ले,
हिरनवती नदिआ का तीरे;
इछवाकू-कुल-पूत सपूत
गाड़ि पताका आपन
धन-जन-बूधि जतन से,
नगरी नया बसवलन;
कुसावती धइ नाँव ।
उहे नगरिआ,
कुसीनगर जेकरा के;
आजो लोग कहेला;
सोभा, सान, सिंगार हमन के;
जनपद के रजधानी
जहाँ चलल ना अवले
केहू के मनमानी !
धन्न भाग मानीं कि—
महापुरुस के,
भइल परमपद एहिजा;
हमनीं का नगरी में !
भूलीं मति गउरव के एकरा
धन-धरती के ठीका केकरा ?
जे आइल ऊ गइल टहरि के,
पकड़वि रउओ ओह डहरि के !
आखिर देहिआँ बिनसी;
जस-अपजस रहि जाई !"
एतना सुनत तमकि के,
बोलल दूसर बीर जवान
"हमरो बतिआ सुनीं सभे कुछ,
गीनल सोरहो नामी;
बली महाजनपदन बीच ई,
मल्ल महाजनपद हमनीं के;
बहुत दिनन ले,
आपन ठोस ठाँव रखले बा !
केकरा के ई सर ना कइलस,
के ना एकर लोहा मानल ?
दूतन का अइला के,
समरभूमि के नेंवता जानीं।
तरुवारिन के माँजी अपना,
भाला-बरछा तीर-धनुस के;
सरिआईं चमकाईं !
रंग कुरंगे लउकि रहल बा,
बहल हवा चउवाई !
रन-बदरी किंचराए लागलि,
का ठेकान कि कब केने ले;
झंझटि झटका आई ?
रउरा सभ कवनो कीमति पर,
धातु-भाग जनि देईं !
सभसे कठिन जाति अपमान,
सान जाति के राखल चाहीं;
ओकरा रइछा खातिर,
जान भले हीं देईं !
जिनका भीतर,
सान जाति के नइँखे;
उनके जिअते मुरदा जानीं,
चाहे मानीं पसुन समान !
छतिरी असल उहे जे,
माँथ देइ मरजादा राखे !
करनी करे समय पर,
झूठे नाहीं माँखे !"
तब दूतन का मुँह से सुनि के,
धातु-भाग ना देवेवाली;
सान गुमान भरल बतिआ के,
ऊ सातो राजा खिसिआइल;
सागर-लहरि समान,
साथ फउदि का अइसन ओहिजा !
सेना का घोड़न का,
हिहिनाहट से;
अउरी हाथिन का चिघाड़ से,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अँदकि डेराके नगर-निवासी;
बहरी से पुर भीतर गइलन!
मगध-नरेस अजातशत्रु आ—
बइसाली के सानी लिच्छवि,
कपिलवस्तु के साकिय बीर;
रामग्राम के कोलिय,
अल्लकप्प के बुली बहादुर;
मल्ल लोग पावा के,
बाभन बेठदीप के बासी;
ई सातो राजा मिलि,
कुसपुर का बहरा जंगल में;
डेरा दे सलाह से,
सेना का टुकड़िन के;
ठहरे खातिर,
सिविर बना मजबूत;
खिसिन हुँकड़त बिरझल,
मल्ल लोग के;
सनमुख रन में उतरे खातिर,
बजा नगाड़ा,
बारबार ललकारे लगलन!
सातो गरहन नियर, समय पा,
एक जगह पर,
सातो राजन का जुटला से,
सागर परबत सहित धरतिआ,
कठिन उपदरो मचले
बहुत जोर से काँपे लागलि!
हाथी घोड़ा रथ पयदलिहा,
चतुरंगी सेना का चलले;
उड़ल धूरि गरदा से,
सूरज का छिपला के कारन;
बरबस दुरदिन भइल सतवलस!
राजा लोग नगर के,
घेरि लिहल जब चारो भर से;
जइसे परलय का बेरा में,
सागर बढ़ि चंचल लहरन से;
धरती के घेरे ला!
नगर-निवासी तब धीरज धइ,
भय के छोड़ि एक हो जुटलन;
अउरी घेरा का ऊपर चढ़ि,
दुसमन-दल पर धावा बोललन!

चमकीली तरुवार बरछिआ,
तेज तीर बउराइल उनकर;
जुलुम बिरोधिन का सेना पर,
चमकत रहलन बाज समान!
सानी सिंह नियर बलवान,
केहू-केहू गरजे लागल;
केहू बढ़ि के फुँकलन संख,
केहू अपना तरुवारन के;
झट मियान से बहरी खींचि,
धूमि पैंतरा देबे लागल!
वीरन के मेहरारू,
बिजय-लालसा से दिल खोलि;
माला-फूल, कपूर दिया आ—
मलयागिरि चंदन केसरि ले,
गावत रन के मंगल गीत;
अपना रनधीरन मरदन के,
नेह छोह से पूजा कइली!
केतने माई लोग,
उठि अपना काँपत हाँथन से;
समर-बीच निरभय हो,—
पुरुसारथ देखलावे वाला;
अपना धीर बीर पूतन के,
कवच, ढाल आ—
तरकस तीर वोगएरह,
हथिआरन से साजल!
कुछ तिरिआ जे कादर रहली
अपना मरदन का हाँथन के;
धनुस पकड़ि मुँह नीचे कइले,
ना जा सकली आगे;
ना तऽ रहली ठाढ़ थीर हो!
मल्लन के जब एह किसिम से,
सजल मजे में;
अउरी घइला भीतर बंद,
सरपन नियर सरकि के;
लोहा लेवे खातिर निकलत,
देखल राजा लोग;
तब पूरा खिसिआके,
महासमर लेबे के ठानल!
रंग कुरंग भइल जब अइसन,
द्रोण नाँव के केहू;

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नगद समरथी बाभन,
समर ओर मुँह कइले;
बढ़त देखि बीरन के,
रस से भरलि बचनिआँ बोलल --
"बाहर का मोरचा पर,
भिड़ल दुसमनन का टुकड़ी के;
हथिआरन से जीतल,
रउरा लोगन खातिर;
बाटे सहज जरूर,
बाकी, परकोटा के--
भीतर का दुसमन के;
जीतल नइँखं सहज सुनीं,
ओहू पर जो,
मिलि-जुल होखसु एक
तब त बहुते दुरलभ जानीं!
कहीं अगर संजोगन,
घेरि नगरिआ;
भीतरे छेंकि दुसमनन के कुल
जीतल गइल तबो तऽ;
धरम-जूध एकरा के,
कबो कहल जाई ना।
बलुक कहाई हत्या
निरदोसी पुरबासिन के!
बल-घमंडवस भीतर घुसि के,
जो अनेति-अनिआयन
रउरा कइलीं जूध
तब धरमी इनसाफिन पर ना;
होई राउर विजय कबे!
सुनि के घुसल नगर में,
जीव महज मामूली
बल-पवरुख देखलइहन,
काहे से कि अनजानो में;
गोड़न से दबि ठोकर खाकें,
छोटो जीव किरवना चिउँटी;
बहुत जोर से काटेलन!
जे बिसयन का रस के चीखे,
चाहे सुजस बड़ाई खातिर;
सँउसे धरती जितलन.
ऊहो राजा;
काल-कवर हो गइलन!

एही से तऽ,
संपति, धरम, काम-इच्छा के
रूप जथारथ देखि मजें में
बूझ-बिचार-ग्यान से;
सांति-जतन से,
सुख चाहेवालन का;
सभ बेवहार करे के चाहीं!
हथिआरन से जीतल,
मानुस-मनवाँ फेर;
खिसिआला भड़केला,
बाकी, सांति-जतन से जीतल;
लोगन के मन,
हरदम खातिर होला सांत!
ई कुल रउरा सभका,
बलबूता का बहरी बा!
राउर सेना,
दुसमन का सेना के;
ना मोक़ाबिला करी कबे!
जवना साकिय-मुनि के,
रउरा सभ सरधावस;
आदर मान कइल चाहीं ला,
उनहीं का सिच्छा के मानि;
छमा सांति आ दया प्रेम के,
सुभ आचरन करे के चाहीं।"
जदपि रहे राजा ऊ लोग,
तबहूँ ऊ दयालु भल बाभन;
निरभय होके,
मरजादा वाला बाभन का –
चालि-सुभाव मोताबिक,
दया-प्रेम बस;
बे लटपट के फरिछा बतिआ,
असली हित के कहलन!
ओ दयालु बाभन का,
एह तरह से;
निरभय हो कहला पर,
ऊ बलवान प्रतापी राजा;
सांति-भाव से,
एह किसिम से कहलन -
"रउरा मीत नियर ई,
नीक जथारथ बतिआ;

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

समय मोताबिक,
असल भलाईवाली कहलीं !
एही से अब रउरो,
सुनीं हमार कहलकी
'प्रेम धरम में बा हमनीं के,
अउरी अपना बल-पवरुख के
बाटे असल भरोसा !
इहे लड़ाई के कारन बा !
अक्सरहाँ दुनिआँ में,
इच्छा आ लालचबस;
जूध करे ला लोग :
हमनीं का तऽ मुनि चरनन में,
सरधा-भाव-भगति का भइले;
सहज सुभावन,
गहले बानीं जा हथिआर !
चेदिराज सिसुपाल गुमानी,
बल-घमंड से;
कइले रहलन जूध कृष्ण से !
तब जे मुनि घमंड के जितलन,
उन्हुका पूजा खातिर;
हम अपना जीवन के,
काहे ना संकठ में डालीं ?
वृस्नी-अंधक राजा लोग,
कनिआँ खातिर;
उतरि समर में कइल लड़ाई !
तब जे मुनिवर,
बिसय-वासना जितलन;
उन्हुका पूजा खातिर,
हम अपना जीवन के,
काहे ना संकठ में डालीं ?
परसुराम मुनि खीसिन,
छतिरिन के जरि खोदलन
कइलन उन्हुकर नास !,
तब जे मुनी खीसि के जितलन;
उनका पूजा खातिर,
हम अपना जीवन के;
काहे ना जोखिम में डालीं ?
ओही तरे एलि पक दूनों,
मोह बमी हो;
लड़ि आपुस में,
बिनसि रसातल गइलन !
तब जे मुनी मोह के जितलन,
उनका पूजा खातिर;
हम अपना जीवन के;
काहे ना जोखिम में डालीं ?
जग में बहुत तरह के,
ई आ अइसन दूसर;
अनुचित जूध अनेकन भइलन,
हमनीं का मुनिवर का,
पूजा खातिर;
ई हितकारी,
समर लड़ी काहे ना ?
इहे हमन के,
असली मनसा बाटे !
दूत होइ के,
रउरा जल्दी जाईं !
अउरी बिना लड़ाई कइले,
काम बने ई
अइसन सवतुक जतन लगाईं !
पास हमन का,
बा अनघा हथिआर;
लड़हूँ में हमनीं का,
निपुन समरथी बानीं !
बाकी, राउर सिच्छा सुनि के,
बेग हमन के;
ओही तरे रुकल बा,
जइसे मंतर का बल;
सहजे साँप रुकेला !"
तब ऊ चउधुर बाभन
हुकुम लेइ राजन के
गुनत नगर में गइलन हाली
अउरी जथा-समय से;
मल्ल लोग से कहलन—
"तेज तीर, तरुवार, बरछिआ,
नया चमकवाली ले;
बीर कवचधारी बलवान,
लोहा लेवे का इच्छा से;
हो तइआर मजे में,
रउरा सभ का;
नगर-दुवरिआ पर आ—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गरजत बाड़न सिंह समान !
पोढ़, अचूक, जुझारू,
हथिआरन के देखलो पर ऊ;
मुनि के धरम सुमिरि के,
भय कुछ मानत बाड़न;
बाकी, डरत समर से नइखन !
ना घमंड से,
अउरी नाहीं राजलोभ से,
बलुक मुनी का भगति-भाव से,
हमनी एहिजा आइल बानीं;
बात हमन के मानल चाहीं"
अइसन बा उन्हुकर कहनाम !
'ऊ मुनि जइसे,
राउर गुरू सिरोमनि हउवन;
ओही तरे गुरू हमनो के,
हउवन ए के जानीं !
काहें से कि--
जगत गुरू ऊ हउवन,
उन्हुका धातु-खंड का—
पूजा खातिर,
हमनीं एहिजा आइल बानीं !
एह जगत में,
हाय ! धरम का कंजूसी से
जतना पाप-दोस लागेला,
अउरी दूसर तरह कबे ना
लागे ओतना पाप !
कंजूसी से बोलल पाप,
अउरी ई जानीं कि;
धरमघात कइलो हऽ पाप,
पाप धरम के दुसमन हउवे !
धातु भाग जो,
दीहल नइखीं चाहत रउरा;
तबो किला से बहरी आके,
पहुँचि दुवारे ठहरल;
बीर अतिथि-पाहुन लोगन के,
बीर करम से;
खातिर-सेवा करीं प्रेम से !
जिन्हिकर बल-पवरुख बा,
किला-कोटि-फाटक का भीतर;
तीर-धनुस में नाहीं,
ऊ छतिरी का कुल में
जनमल नइखन जानीं !"
राजा लोग पठवले बाटे,
रउरा सभ के
इहे सनेस कहाव,
जेकरा में बा;
प्रम-भाव-साहस आ—
भयवद्दी के नाता गाढ़ा !
हमहूँ अपना मन में,
एह बिसय पर;
नेह लगन बस सोचले बानी !
एकरा आगे,
अब हमरो कुछ सुनीं सभे—
"कलह, लड़ाई, मन-मुटाव से
ना तऽ सुख आ सांति मिले ले;
नाहीं होला धरम-पुन्न कुछ !
काहे से कि --
मुनिओ जी तऽ,
हरदम छमा सांति के;
सिच्छा देले बाड़न !
जग में मानुस बहुते,
धन आ बिसय-बासना खातिर;
जूध करे जूझेलन !
जे बड़भागी महापुरुस सभ,
धरम-बान्ह मरजादा वाला;
रचि के रइछा कइले बाड़न,
उन्हुका मति-बिचार से;
ई दूनो तऽ उलटे बाड़न !
जे मुनि अपने,
सांति पाइ के;
सहज सांति अउरिन के दिहलन,
दिहलन सिच्छा दया-धरम के;
ओह दयालु मुनी का—
पूजा खातिर,
बिरथा मार-काट कइ;
लोगन के जनि दुख देईं जा !
ओह लोग के धातु-भाग दे,
रउरा सभ होइबि जा;
धरम-सुजस के भागी !
ई सभ राजा,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बनिहन राउर मीत;
सांति मिली जनता के !
सांति-बिमुख लोगन के,
नाता नेह धरम से;
कोसिस कइके जोड़ल चाहीं !
धीर पुरुस जे,
अइसन काम करेलन;
धरम-पुन्नि के,
ऊ सुभ भागी होलन;
ग्यानिन के सिरताज,
महामुनी कहले बाड़न कि;
'सभ दानन में,
धरम दान उत्तम हऽ;
धन-दाता तऽ बाड़न कतने,
बाकी, नगद धरम के दाता;
बहुते दुरलभ जानीं।"
द्रोनाचारज नियर, निपुन--
विदमान;
ओह द्रोन बाभन के,
सुजस-सांति-सुख देवेवाली;
धरम-बचनिआँ सुनि के,
मल्ल लोग ऊ बोलल उनसे --
"हे बाभन-सरदार !
उत्तिम मीत समान,
बाभन का सुभ सवतुक गुन से;
राउर बचन भरल बा !
बिगरल पाजी घोड़न अइसन,
हमनीं राह-कुराह पकड़ि के;
भटकत रहलीं हँ जा,
बाकी रउरा,
अब हमनीं के;
सहज सुमारग पर पहुँचवलीं !
बिना छेद ढुँढ़ले आ-
बे विरोध के,
सनमति होके;
एह समय हमनीं का,
कइल ओइसने चाहीं;
जइसन कि रउरा कहलीं हँऽ !
साच दयालु मीत के,
सिच्छा मानल उचिते बाटे !
काहे कि जे लोग मीत का;
बतिआ के ठोकरावेलन,
ऊ पाछे विपत्ति में पड़ि के;
पछतालन दुख भोगेलन !"
एतना कहि ऊ,
बीर मल्ल सरदार,
मुनि का परम पवित्तर;
धइल धातु के,
बाँटि आठ भागन में;
एक एक कइ सात भाग तऽ,
ओह सात राजन के दिहलन,
भाग आठवाँ रखलन अपने !
धातु भाग ले खुस हो राजा,
गइलन अपना-अपना देस !
अपना नगरन में जा,
सभई राजा;
मंगलमय सुखदाई,
ओह धातु के राखे खातिर;
बनववलन असतूप तुरंते !
अपना देस-नगर में,
मठ बनवावे का इच्छा से;
बाभन द्रोन पंच मतिमान,
बस, कलसे भर लिहलन खाली !
पिछड़ि पिप्पलीवन के मोरिय,
थोरे देरि बाद में;
पहुँचि ओह जगहा पर,
मुनि का प्रेम-भगति बस;
भसम खुसी से लेके गइलन !
एह तरे धरती पर,
धातु भागवाला सुभ आठ;
कलसा वाला नउवाँ,
दसवाँ चिता भसमवाँ वाला;
बनलन ई असतूप,
मुनि के सुघर इआद-सरूप !
मंगल-रूप धजन से सोहत,
धप-धप धपकत उज्जर;
परबत अइसन असतूपन के,
केतने राजा--
साथ जमींदारन का;
भाई-बंधु सहित कुछ बाभन,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अउरी कतने,
आस-पास के परजा लोग;
भाव-भगति से पूजे लगलन !
असतूपन पर,
लागल जले अखंड-चिराग !
टन-टन बाजे लागल,
घंटा दिन आ राति !
गंध, दिया, माला-फूलन से,
पूजा कइके राजा लोग;
बिनय-पदन के,
बाँचे लागल पाठ !
गाँव-नगर, तीरथ-धामन में,
मड़ई ले महल अँटारी तक;
बऊध-मुनि का निरमल जस के,
कथा गवाये लागल !
इन्दपत्त, सागल, गंधार,
सिन्धु देस, सौवीर, सुरठ आ—
कासी, कोसल, चेदि, अवंती,
सूनापरान्त ले सगरे;
बउध-धरम के बरल चिराग !
सत्त-अहिंसा-दया सांति के,
सुघर सोनहुली जोति, कले-कल;
फइलि गइलि सभ ओर !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

धरम-बिचार

बिरिछ, पहाड़, नदी आ सागर,
बस एतने से;
ना संसार बनल ई !
ना तऽ एके,
ईंट पत्थलनवाला जानीं;
ना केहू के,
गढ़ल रचल मनमानीं !
बहुत बिचार करबि जब,
झलकी तब रउरा के साफे;
कि संसार सुघर ई,
लोगन के भावे-भरमावे;
कठिन-मोह-फंदा में,
पकड़ि फँसावे वाला;
मनवाँ के सँकलप आ—
सहज बिचारन के मूरति हऽ !
नेति-नेम से,
सूध सचाई पर ई;
बनल टिकल बा !
ग्यानी मुनी लोग ओही के,
'रित' आ 'सत' कहले बा !
जइसे ई देहिआँ परानमय,
सभई के लउकति बा;
निकलि परान गइल जब अंते,
तब देहिआँ के;
के ना मुरदा माने ?
ई बस, लासि कहाले,
गंदा मानलि जाले;
लोगवा देखि डेराला,
एही से गाड़े-जारेला !
माटी पानी के मिलाइ के,
बनलि देंहि ई;
सुरुवे के मुरदा हऽ !
एही तरे समुझि लीं,
माटी-पानी का मिलला से;
बनल रचाइल,
सनमुख लउके वाला;
संसारो ई मुरदा हउवे,
बे परान-जीवन के !

एकरा में जीवन-गति नाहीं,
असल बीजमय आपन !
माटी-पानी वाला,
एह गोल धोन्हा के;
ना कहि सकीं जगत हम !
जइसे बे परान का तन के,
हम जिंदा कहि सकीं कवे ना,
ओकर नाँव लासि हऽ !
ओही तरे धरतिओ,
मुरदा अइसन;
गौर-गुनावन-समरथ-हीन !
रउरा एगो,
पत्थल का टुकड़ा के लेईं;
गुनी कला के जानेवाला,
कारीगर ओकरा के;
सुरू करेला गढ़े बनावे,
गढ़त-गढ़त कुछ समय बाद तऽ;
एगो-मजिगर मूरति,
आके परगट होले !
मूरति का चेहरा पर,
खुसी-सोग-चिन्ता आ—
बोध, सांति, सुख-दुख गँभीरता,
किसिम-किसिम के भाव अनेकन;
देखेवालन का झलकेलन !
ओह सभे भावन के,
पत्थल के ना—
कलाकार के जानीं !
रूप सुघर ऊ
पत्थल के ना-
कलाकार का,
कारीगरी कला के हउवे !
कोहँरा वाला चाक,
अपना चाकर पीठी;
सानल माँटी का धोन्हा के,
धरे चढ़ावे—
चारो ओर घुमावे;
बाकी, जब अँगुरी कोंहरा के,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कारीगरी-कला-गुनवाली;
ओह गोल धोन्हा पर,
घूमे लागेली सँ;
तब मति पूछीं,
देखते-देखत;
ऊहे धोन्हा माँटीवाला,
रंग-बिरंगा;
रूप धरे लागे ला!
उहे रूप जे ओके,
धोन्हा से हिगरावे ला;
देला ओके अलगा नाँव,
अलगा गुन, कीमति भा;—
अलगा आदर मान!
माटी तऽ हऽ,
सहज सनातन साच;
बाकी, कोंहरा कलाकार ऊ,
जवन रूप ओकरा के देला;
ऊ तऽ कारीगरी, कला गुन रूपी,
सुघर सचाई हउवे!
कला- सचाई,
सहज सनातन—
असल सचाई ले तऽ,
वेसी सुघर नीक रुचिगर आ-
कारज लायक होले!
एही तरे जगत ई,
बस, माटी के धोन्हा एगो;
बाकी जुग-जुग ले एकरा के
ग्यानी रिखि-मुनिअन के;
बिमल विचार अमोल,
सुघर रूप, गुन, मरजादा सुभ;
देते आवत बाड़न!
एही से जो, हम दुनिआँ के,
रिखि-मुनिअन के;
देन कहीं, मानीं तऽ,
अनुचित नाहीं होई।
वेद अइसना मुनी विचारक,
जुग-रचवइआ -
जन-नायक लोगन के,
*अमिरित पूत कहेलन!

पत्थल के ऊ अनगढ़ ढोका,
कलाकार का—
कारीगरी कला के;
मदति पाइ के बनल देवता!
धोन्हा माटीवाला,
कलाकार का;
अँगुरिन का छुवते, बस,
कुछ से कुछ हो गइल तुरंत!
ओही तरे जगत ई,
समय-समय से;
ग्यानी मुनी जनन का,
सुभ अनमोल बिचारन के सुनि;
पकड़ि सुगंधित संगति उन्हुकर,
नई जिनिगिया, नया रूपबल;
गति सोभा सुघराई पवलसि!
जो, महातमा, संत, बिचारक,
ग्यानी महापुरुस उपकारी;
एकरा के ना गढ़ले रहितन,
तब ई दुनिआँ होइति कइसन;
एके हमनीं,
सोचि सकीं ना आज!
जइसे 'रित' आ 'सत' पर,
ई संसार टिकल बा;
ओही तरे बिचारन के ई,
दुनिओ 'रित' आ 'सत' पर;
ठहरलि बनलि सजलि वा!
समय-समय पर,
अमिरित पूत महान;
उतरि धरतिआ पर आवेलन,
अउरी, चलत बिचारन पर जे;
करम-छाप के,
धूरि जमा हो जाले;
जवना से कि—
उनकर सहजरूप छिपि जाला;
हो जाला भरमावे वाला,
ओके झारि-बहारि पोंछि के;
साफ करेलन
जइसे केहु करिखाइल सीसा के;
माँजि पोंछि चमका दे!
सहज बिचारन पर जब,

* अथर्व, ६-१८.२

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

छा जाले अग्यान-मइलिआ;
तब ई जगवा,
बूझ-विचारो वाला;
घोर अन्हार असुग से,
कुछ ढँकि जाला;
बल बढ़ि जाला मलिन असत के!
मोका मिले झूठ के,
पनपे-फइले खातिर;
होला नास सचाई के ना
ऊ तोपाइ भर जाले!
जइसे सुरुजदेव छिपि जालन,
गरदा धूरि-बवंडर से!
'रित' आ 'सत' के
जवन दूइ गो धारा;
मूल बिन्दु से फूटल रहली,
ऊहे दूनो धरवा;
फइलि जगतमय भइली!
सभे विचारक ग्यानी;
साधु संत आ—
अमिरित पूत महान,
एही 'रित' आ 'सत' के;
हउवन देन अमोल!
ना कि ऊ कुछ आपन;
खास किसिम के,
नई कमाई लेके;
धरती पर आवेलन!
सहज-ग्यान आ-
बिमल बिचारनवाली,
परंपरा-धारा ई;
नावँ-रूप धइ,
जग में आवेवाला;
जीवन का मति-गति-पवरुख ले,
हरदम के बहरी हऽ!
ना तऽ केहू,
परंपरा का ओह धार के;
कवहीं फोरि वहावल,
ना ओकरा के मेटा सके ला!
'रित' आ 'सत' के,
असल सोत कहवाँ बा;
एह दूइ धारन के,

कब ले होई अंत;
के कहि सकी बताई एके?
मन-बानी, मति से, नयनन से
ओ के पावल जाइ सके ना!
जुग-जुग में, दुनिआँ में,
बड़े-बड़े मुनि संत विचारक;
परगट होके,
सूध विचारन के फइलवलन!
ऊ विचार तऽ,
हमनीं का देखे में;
होइ सकेलन उन्हुकर देन,
उनके ओह सभन के;
देखेवाला मानल जाई,
सिरजेवाला नाहीं!
बउधदेव जी,
बस अइसन के;
महापुरुस, मुनि ग्यानी रहलन!
जे दुनिआँ का दुख के,
दूर करे के;
कठिन जतन पुरुसारथ कइलन!
अब आगे के सुनीं बयान,
उन्हुकर चेला लोग कइल का;
कइसे कवना जतन-जुगुति से,
जग में सगरे,
धरम-जोति फइलावल!

×

महापुरुस जुग-सिरजनिहार,
संत-सुरेमन ग्यानी;
दइबी धरम-दूत,
जनता के नायक;
करम-जोग परवत का,
ऊँची चोटी पर चढ़ि;
बजा धरम के बीना,
जुग-बानीं, जुग-धरम सनेस;
मोहक नया-सुरन में,
गाइ सुनावे वाला!
घोर अन्हार राति में,
भूलल-भटकल;
दुखी राहगीरन के,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ग्यान-दिया ले;
डहरि देखावे वाला !
सुभ बिकरम संवत ले,
बरिस चारि सइ छब्बिस पहिले;
केंचुलि छोड़ि देहि के अपना,
पाइ सहज निरवान;
लीन महासागर में भइलन !
सहज-सुभावन,
तब कुछ उठल तूफान बवंडर;
बहुत लोग घबड़ाइल !
दुनिआँ हऽ ई बड़ी बिचित्तर,
के एकरा लीला के समझे ?
कइसे जीवन गति के जाने,
कि कुराह धइ;
भरमे भटके नाहीं ?
देखते मनमोहक बिसयन के,
पाजी ढीठ इनिरिआ;
खोलि झरोखा खिरिकी घर के,
कल से उनके मटकी मारसु;
भीतर आवे खातिर !
जहाँ सुजन के मड़ई-कुटिआ,
तहँ दुरजनो के डेरा बा !
देव-असुर के,
ठेक कबे फरिआइल नाहीं !
जहाँ मुनी के चरित महान,
अनयासे सभई का मनके;
भावे आ ललचावे,
उनका उत्तम चालि-चलन आ -
दइवी तेज; बिचित्तर सुभगुन!
त्याग अमोल कठिन, तप-संजम,
निरमल ग्यान, सांति सवतुक के;
आदर मान कइल सभलोग !
ओहिजे केतने दुरजन,
इनरिन के गुलाम खलनायक;
घोड़न के सरपट दउरावे,
करे दुमेला,
मनवाँ का दरवारे;
अउरी बिसयन का बराति में,
मोजरा देखे खातिर;
मुनि के अपना सुगम डहरि के,
रोड़ा-काँटा जनलन !
देवदत्त के कथा सुनलहीं बानीं,
सुनीं हाल आगे के।
मुनि के चउधुर चेला,
संतन के सरदार !
भिक्खु महाकाश्यपजी,
पाँच सइ भिक्खुन का साथे,
मुनि का दरसन खातिर आवत;
कुसीनगर-पावा का,
बीच-डहरि में रहलन;
तब एगो आजीवक साधु,
उन्हुका से कहलन कि—
'सुगत-मुनी का,
परमधाम के गइले;
समय सात दिन बीतल।'
एतना सुनते,
बहुत भिक्खु तऽ;
रहलन बोध-बिराग-हीन जे,
रोवे-कलपे—
माँथ-धुने पछताये लगलन !
भिक्खु बिरागी ग्यानी,
छनभंगुरता के इआद कइ;
समुझि नास-लय का लीला के,
दुख-बियोग के सहलन !
बाकी एगो बूढ़ मुँड़ाइल,
नाँव सुभद्द हुलासन कहलस—
"भला भइल कि,
सुगत मुनी रहलन ना;
'ई करिहऽ तऽ
ई जनि करिहऽ;
अइसन नेम-कनून कवाहटि,
एकरा से तऽ पिंड छुटल अब;
नाकिन दम हो गइल रहल हऽ !
अब हमनीं का,
छुट्टा बिचरबि !
बायें-दहिने देखि-ताकि के;
कबे काल जिभिआ लपका के,
चरबि हरिअरी रसगर;
मनवाँ के बहलाइबि जा !"
ई बतिआ सुनि माँथा ठनकल,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ग्यानी संत महाकाश्यप के !
हाल अगाही सोचि धरम के,
उनके चिन्ता-फिकिरि सतवलस !
ऊ मनवाँ में तय कइलन कि—
उनका ऊपर;
भगवन बउधदेव कें,
जवन बोझ आ पहुँचल;
ओकरा के अब,
पूरा करे निबाहे खातिर;
बउध-संघ के सभा बोलावल जाय !
बुढ़वा भिक्खु सुभद्द समान,
संका रहे बहुत लोगन का—
मनवाँ में छवले कि,
'सुगत मुनी का उठि गइला पर;
धरम लोप हो जाई !
कुछ बिचार कइला का बाद,
राजगिरिह के;—
जगहि चुनाइल,
धरम-संघ के;
सभा बोलावे खातिर !
निहचित कइल समय पर,
पाँच पहाड़न का पंजा में
बसल बिराजत राजगिरिह का,
सुघर सप्तपरनी-गूफा में;
बिकरम का संवत ले,
बरिस चारि सइ छब्बिस पहिले;
बरखा रितु चढ़ते अकास में,
सभा संघ के जुटलि समचि के !
सभ संतन के राइ भइलि कि,
पहिल महिना में मिलि-जुलि के;
टूटल-फूटल,
बने मरम्मत होय !
ओही राइ मोताबिक,
पहिले भइलि मरम्मति;
बाद महीना दूसर,
सावन चढ़ते;
सुरू भइलि संगीति !
भिक्खु पाँच सइ,
चुनल चुनावल जुटलन।
अगुवा मानि महाकाश्यप के !

भिक्खु रहल जे अरहत,
ऊहे सामिल भइल सभा में !
भिक्खुसंघ का,
अगुवा का नाता से;
संत महाकाश्यप तब,
महाराज का तपसी चेला—
निपुन संजमी सेवक;
प्रिय आनन्द भिक्खु से पुछलन,
कतना मेंही धरम-सवाल !
बिनय सवाल पुछाइल,
लायक समुझि उपालि चतुर से !
काहे से कि,
पहिले तऽ मुनि का जीवन में;
सभ उपदेस धरम के,
भिक्खु लोग सुनि कंठ करसु जा।
लिखलि रहे ना पोथी कवनो,
संजम-नेम धरम-सिच्छा के !
मुनिवर के मंगल उपदेस,
दुइ किसिम के देत सनेस !
पहिला मेंही गूढ़ ग्यान के,
दूसर संजम-नेम-सील के;
सवतुक चालि-चलन के,
जीवन का बेवहार-दसा में;
भिक्खु-भिक्खुनी संघन खातिर !
जनता के मुँहलगुवी भासा,
पाली कहे साफ हिगरा के।
'धम्म' 'विनय' दूनो के नाँव,
इनही से होई निबुकाँव।
भिक्खु लोग का धरम-सभा से,
काटि-छाँटि के धोइ-पोंछि के;
सजल-सँवारल,
इहँवें पहिला नेम रचाइल;
पोथी बनलि लिखाइलि !
बउध-धरम-इतिहास-जगत में,
ई पहिली संगीति कहाइलि !
पंडित लोग बिचारल,
छँटनी कइल तिखारल !
जहाँ-तहाँ छूटल-छितिराइल,
कोना-अँतरा परल भुलाइल;
बचन-रतन अनमोल जुटा के,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सज से पोंछि रखाइल !
महापुरुस के कहल बतावल,
सवतुक सहज सनेस;
सुभ हितकारी,
मधुर धरम उपदेस !
जोरि-बटोरि लिखाइल सज से,
होखल तीनि सनूखि !
'सुत्त', 'विनय', 'अभिधम्मपिटक' तव,
ओ तीनों के नावँ धराइल !
'सुत्तपिटक' में,
बउध-मुनि के;
वचन-कथन बटुराइल !
'सुत्त पिटक' के,
भइल पाँच गो भाग !
'खुद्दक निकाय' पहिला के नाँव,
जेकर एगो अंग 'धम्मपद';
बउध-लोग के गीता !
बाकी चार निकाय कहाइल,
'दिग्घ-निकाय', मज्झिमनिकाय';
'संयुत्त निकाय' सुघर आ—
अंतिम 'अंगुत्तर-निकाय' !
सुत्तपिटक दरसन-विचार के,
पहिली पोढ़ सनूखि !
'विनय-पिटक' संदूखि दोसरकी,
भिक्खु-भिक्खुनी संघन खातिर;
बेवहारिक जीवन के,
संजम-नेम-सिखावन-सवतुक !
अब 'अभिधम्मपिटक' के जानीं,
तीसरि ग्यान-रतन-धन वाली;
अति अनमोल सनूखि !
जेकरा भीतर भरल जोगावल,
बउधदेव का—
विमल विचारन के सोकड़ आ—,
सोधल गूढ़-ग्यान-विग्यान !
तीनों के मिलाइ के,
नाँव धराइल 'त्रिपिटक,;
जिनके पंडित लोग कहेला,
बउध-धरम के वेद !

× ×

'धरम', 'विनय', सुभ;
सहज सील गुन,
इनके पढ़े-पढ़ावे;
डहरि देखावे,
साजे सरिआवे के काम;
भिक्खु लोग अपना में बाँटल,
राजी खुसी अँगेछल !
केहू बनल 'धम्मधर' मन से,
भइल 'सुत्तधर' केहू !
केहू बढ़ल विनयधर' होके,
कहीं 'मातिकाधर' सनमति से
धरम-धजा फहरावे चललन !

दुनिआँ चढ़लि समय का रथ पर,
सूरुज-चान सारथी जेकर !
चउरस सिजिल सड़कि पर,
बढ़ल धरम-रथ आगे !
सभई मिलि के घींचल ओके,
देस-देस में, गाँव-नगर में;
समय पाइ पहुँचावल !
सरधा-प्रेम भगति बस,
धरमी लोगवा माँथ नवावल !
सगरो आदर पूजा पाके,
भिक्खु लोग कुछ बहकल;
सिजिल डहरिआ छोड़ि बगल हो,
मनवाँ उन्हुकर लागल माँके !
लंबरदारे पकड़ाइल जब,
तब अउरिन के हाल कहीं का ?
पाजी ढीठ इनिरिआ,
सहज-सुभावन;
झाँकि झरोखन से बिसयन के,
चुरुगे फाने छुउकेली !
रथवा हाँकनिहार सारथी,
गमकि पाइ विसयन के;
उन्हुकर ध्यान करे लागल तऽ,
भँगुवाइल भरमल कुछ !
एही घरी झटकि मोका पा,
रथ पर बइठल;
कतने भिक्खु मलिन मनवाला,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अँखिया सेंकलन;
मउज उड़वलन!
मुहवाँ घुमा लफा जिभिआ के,
छिपल कले-कल;
रस के चीखे लगलन!
परदा परल आँखि पर उनका,
जब लगामि कुछ ढीलि भइलि;
रथ के घोड़ा छोड़ि डहरिआ,
मनमाना आगे के भगलन!
पहिआ डगरि किनारे जाके,
फेंड़न से टकराइल!
एतने में दिन,
बरिस एक सइ बीतल!
धरम-फउदिआ,
भिक्खु-संघ के;
अउरी ओकर—
केतने भिक्खु-सिपाही,
समय-दसा संसरग-लाग बस;
लाचारी बउरा के,
भेद बढ़वलन बाजे लगलन;
एक दूसरा से आपुस में;
कुछ सूतल-कुछ जागल,
भरमत मोह-नसा में;
बहुत भिक्खु मनमानी कइलन,
नाता तोरि संघ से आपन;
परम सुतंतर भइलन!
अगते पहुँचे खातिर,
आतुर होके तिरछे चललन;
सड़कि छोड़ि पगडंडी धइलन,
दुलुके दउरे लगलन!
एकर भइल नतीजा-तब कि,
ठोकर खाके;
गिरलन मुँह का भरें काँट में,
गुड़कल गोड़ रसातल गइलन!
झगड़ा बढ़ल वासना फइलल,
जगहे-जगहि बिसाइन मँहकल!
पकड़ि डहरिआ जायेवाला,
राही कतने,
ओह बइसला से उबिआ के,
मुँदलन आपन नाकि सजग हो!

एह किसिम से;
तपसी महापुरुस के बारल;
बउध-धरम के चमकत दीया,
जब तनिका मधिमाइल लउकल;
तब गुल झारे-साजे,
टेम्हि बढ़ावे-तेल लगावे;
अउरी, सभ झंझटि सझुराके,
भेद-बिरोध मेटावे खातिर;
विकरम सन्-संवत ले,
बरिस तीनि सइ छब्बिस पहिले;
समय पाइ के बइसाली में,
बउध-भिक्खु बटुरइलन!
भेद-बिरोध-पताका पहिले,
बज्जि देस के भिक्खु उठवलन;
जाला कहल
बज्जि पुत्तक जिनका के!
दसगो अइसन काम,
करत रहे ऊ लोग;
जिनके जस काकण्डक पूत,
धरम-मोताबिक;
जायज नाहीं गानत रहलन!
ऊ उनका कामन के,
सुभ सवतुक-जीवन का उलटा;
अउरी अधरमवाला जानसु!
एकर भइल नतीजा ई कि—
बज्जि-भिक्खु उन्हुका के,
छाँटि संघ से बहरी कइलन!
तब ओहिजा ले,
ऊ कवसांबी गइलन;
अउरी पच्छिम देस अवंती,
आ दक्खिन का—
भिक्खु लोग के
नेंवता देइ बोलवलन!
जे से कि ऊ सनमति होके,
एह मामिला के निपटावसु;
रोकसु डटि के,
अधरम के फइलाव-बढंती!
एह बीच पच्छिम से,
साठि भिक्खु अइलन आ—
भिक्खु अठासी;

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दक्खिन भा अवंति से जुटलन !
विनय-चेरउरी-हँथजोरी से,
सोरो के रेवत सहजाति;
धइल बोलावल गइलन !
कुल मिलि ओहिजा,
भिक्खु सात सइ बटुरल रहलन !
दसो भेदवाली वतिअन पर,
एक-एक कइ, भइल बिचार;
दसो नजायज मानल गइली !
सँउसे सभा-संघ के,
एक राइ से;
इहे फइसिला कइलस !
बज्जि-भिक्खु लोगन का—
चालि चलन के,
सभई अनुचित कहल-बतावल;
डुग्गी पीटि जोर से !
भिक्खु सात सइ साथे,
विनय धरम के कइलन पाठ;
अउरी उन्हुकर,
एगो नया रूप रचि लिखलन !
ई दूसरि संगीति कहाइलि,
तुरते एकर कथा लिखाइलि !
वज्जिलोग का मन के,
अइँठलि गाँठि खुललि ना !
बहुत दिनन के लागलि,
लति जबून छूटलि ना !
दूसर चूल्हा जोरि-जरा के,
उन्हुकर खिचड़ी अलगा पाकलि !
मनवाँ लागल करे पैंतरा,
हरिन-चउकड़ी फानल !
कवसांबी में उनका—
महासंघ के
दूसर मेला लागल !
दस हजार के जुटलि जमाति,
भिक्खु लोग कटरावल-पागल !
चउका लीपल-पोतल धाँगल,
आपन अलगे राग अलापल !
'धम्म', 'विनय' के नेम बनावल,
डहरि दूसरे नापल !
पहिला धरम-विनय के,
पाले-माने वाला;
पूरा नेम निबाहेवाला,
बउध-धरम के राही पहिला;
जवन डहरिआ धइके,
कइलन आपन नाँव;
दुख-कलेस के दूर भगवलन,
भइल देस के कुछ उबहावँ !
ओह डहरि के लोग,
नाँव दिहल 'असथविरवाद' के !
पहिला राही,
पानी-पीढ़ा पवलन सगरे;
खातिर भइल पुजइलन सज से !
दूसर दल के,
लोगवा अँइकल-परिखल;
नावों राखल उनहीं जोग,
तुरत 'महासांघिक' मसहूर !
समझि-बूझि के लूरि-सहूर !!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

धरम-बढ़ंती

मिरिगडाह का कठिन आँचि में,
धरती जब जरि भइलि खँगार!
जीव-जंतु सभई अकुलाइल,
झुलसल सोभा-साज सिंगार!
दसो दिसन के,
हवा रुकलि अइसन कि;
हिले न पीपर पात!
सहज-सुभावन भइल छोभ तव,
परकिरती का रीति-नेम में;
उलट-फेर भइला से!
कइलन कोप बिधाता,
बरबस—!
छुटल हाँथ से तीर!
हरहरात कतहीं ले अचके,
पहुँचि गइल अंधड़-तूफान!
जिन्हिकर सोरि पताले ठेकलि,
अइसन फेंड़ उखड़लन कतने;
उजरि गइल चिरइन के खोंता,
मड़ई छान्हि उजरली;
खपड़ो के घरवा भहरइलन!
भइल अन्हार डहरि ना सूझे,
वहुत लोग जूझल ब्रेबूझे!
आफति देखि बूधि चकराइलि,
हिम्मति बिगरलि;
धीरज छूटल,
गोड़ उठल कतनन के!
भाग-पराह मचल लाचारन,
जान बचावे खातिर!
काहें से कि,
वड़ा मोह जीवन के होला!
रन के निठुर भयंकर नेंवत,
ठीक अइसहीं आवेला!
निरदोसन के खून बहावे,
लाखन माँथ गिरावेला!
जालिम जुलुम मिटा दूनो के,
जब भूडोल मँचावेला!
कोठा-कोठी, महल-अँटारी,
छनभर में भहरावेला!

× ×

जुलुम अनेति पाप का—
लहकलि जरति चिता से,
आवसु निकलि भवानी रन के;
पहिरि मुंड के माला गर में,
ले हाँथे चमकत तरुवारि!
गरजति हुँकड़ति,
बढ़ि ललकारति;
चढ़ल सिंघ का पिठिआ मइआ,
दुरगा चंडी काली!
जुलुम मेंटावे,
पोंछे लोर सबुर दे सभके;
डालि गले जयमाल मगन हो,
दवल पिसाइल दुखी लोग का!
संख धरम के फूँके,
दुनिआँ नया बनावे खातिर!
जनता जागे सजग होइ तब,
सुनि माई के ई सनेस कि—
'जालिमन के सिर झुकावल,
लोर पी के दिन बितावल;
कायरन के काम हऽ!
अति भयंकर पाप हऽ!!'

× ×

समय पाइ के ठीक अइसहीं,
जब कलिंग में लोहा लागल;
रन के बादरि चढ़ि मँड़राइलि,
तेज चमाचम तड़पलि बिजली;
रनचंडी खप्पर ले आइलि,
जींभि निकलले लहू पिये के!
रथपर चढ़ि के महाकाल का,
बढ़ल हजारन लोग समर में!
भइल लहू से लथपथ धरती,
पाटि गइलि लासन से!!
नाहक लोग पिसाइल कतने,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नदी बहलि लोहू के !
अइसन लहूलुहान देखि आ—
पिता-पूत, माता-मेहरि के,
छातीं पीटल कुहुँकल रोवल !
केतने घर के माँगि धोवाइल,
लाल नगीना खोवल !
उघरि गइल भीतर के परदा,
कल से केहू;
मेंही बीना तार बजावल !
मन-मंदिर में,
सांति-धरम के दिआ जरावल !
बइठल असुभ अन्हार हटा के,
ग्यान-जोति फइलावल !
प्रेम-बिरह के आँचि देखि के,
पसिजे चनरकांत चितामनि,
धूप-ताप-दुख पाके तनिको;
लयनू जइसे टघरेला !
तइसे दुख-बिलाप से बेकल,
कोमल चित असोक के पिघलल;
बनि के लोर छलकि आँखिन से,
ढरकि गइल धरती पर !
भइलन अति उदास ऊ,
माँथ धुनसु सोचसु पछतासु,
मन के दुखवा कहल बने ना;
हीन-करम-फल सोचि डेरासु !
चिन्ता इहे सतावे उनके,
कि—'हे दइब ! हाय ! अब
लागल खून धोवाई कइसे,
मेंटी ई कलंक के टीका ?
दुख संका से काँपि करेजा
मुँह के आवे फिरि-फिरि हरदम !
बहुतन का आँखिन में,
मतलब मोतिआबीन भइल;
लालच के माँड़ा छवलस,
बेकल कइलस मनवाँ सभकर;
कपट-मिरिगवा सोना के !
परल अकिलि पर परदा,
दउरल लोग मोह में सरपट;
तीर-धनुस तरुवारि तेग ले,
जोस-रोस-बस होके पागल !
रन के इहे मसाला जग में,
सुख-सुविधा आ लाभ-सवारथ;
मद-गुमान घिरिना-किरोध का,
महा घिनावनि बलि-बेदी पर;
जनता के बलिदान करे !
उरुवा पर बइठलि लछिमिनिआँ,
भूलि राजमद-सासन में;
लोहू पिअत आदिमी कब लें;
अपने भाई-बंधु, मीत-हित;
सोझ सुजन अबरू लोगन के !

× ×

"के असोक का मति के फेरल ?
बान्हल के सागर लहराइल ?
जादू फूँकि लहरिआ घेरल ?
सहज-समाधि-साधना-बल से,
रन के खून खराबी रोकल ?
मारुक-भाव, बिरोध बैर के,
जीव-दया, जन-हित सेवा आ—
प्रेम-सांति में बदलल !
बलुवा-रेता के पटाइ के,
गंगा का निरमल धारा से;
फल-फूलन के बाग उगावल !
झाट पत्थल के कठिन करेजा,
मोमि नियर टघरावल !
हिरदय भीतर सील-सचाई,
दया-दान सुभ-सुगत-धरम के;
मूरति सुघर बनावल !"

× ×

पकड़ल जे लगामि मनवाँ के,
सजग होइ के सज से !
इनिरिन का घोड़न के,
संजम के चाभुकि ले मोड़ल !
धन-धरती, के लालच छोड़ल,
नाता-नेह धरम से जोड़ल !
मोह कइल ना,
घर-घरनी, बेटा-बेटी के;
ममता का फँदा के तोड़ल !
सुख-दुख आदर आ अपमान,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जानल इनके एक समान !
पहिरल गेरुवा बसन उदासी,
संत विरागी त्यागी;
ग्यान-लीन-साधक उपकारी,
निपुन भिक्खु संन्यासी;
सूध लँगोटी धारी,
बउध-धरम के मानेवाला !
उहे महापुरुस मतिमान,
कसि के कमर, हाँथ में लेके
सरधा-लगन-सुमति के फरुहा,
कठिन-भगीरथ-जतन-जुगुति से;
खोदि काटि जंगल झाड़िन के,
विनय-सील-साधन से, तप से;
फेरलन गंगा का धारा के !
सागर का लहरन के घेरलन !!

× ×

सुनि के बउध-धरम के सिच्छा,
सत्त-अहिंसा, दया-प्रेम के;
मंगल-मधुर-सनेस !
राज-मुकुट झुकि गइल चरन में,
संघ-सरन में, धरम-सरन में,
मोगलि-पूत तिस्स के आपन,
मनलन गुरू असोक नरेस !
मोगलिपूत तिस्स महराज
विद्या-विनय धरम के पंडित;
निपुन संजमी बाभन रहलन !
सोरह बरिस उमिरिआ होते;
ऊ पढ़ि के तीनों वेदन के;
छवो अंगन सहित मजे में,
पूरा कइले रहलन !
थेर सिगव से,
बउध-धरम के सिच्छा पाके;
रहलन पहुँचल अरहत-पद तक !
उनहीं के ई असर भइल कि,
राजन के सिरताज असोक;
अपना बेटा निपुन महेन्दर,
अउरी सहज सुसीला --
बेटी चतुर संघमित्ता के;
संघ-सरन में दिहलन !

बड़ा खुसी से,
सरधा नेह लगन से;
दूनो भिक्खु-भिक्खुनी भइलन !
समय पाइ के,
सामणेर निगरोध कुवँर के;
विनय त्याग तप संजम देखि,
सरधावान नरेस असोक;
नेवँति महल में उनके,
सतसंगति से लाभ उठवलन;
अउरी थोरे दिन में,
तीन सरन आ पाँचसील में;
मन-चित रँगलन सज से !
आगे चलि तब,
भाव-भगतिवस राजा;
खोलि खजाना,
हुकुम करमचारिन के देके;
झट तइआर करवलन,
सुघर असोकाराम बिहार !
एतने नाहीं, अउरी कइलन;
साठि हजार भिक्खु लोगन के,
भोजन खातिर नेम-बन्हान !

× ×

बउधदेव का,
सुभ निरवान-समय ले;
सवा दूइ सइ बरिस बाद में,
प्रिय दरसी असोक-रजधानी;
पटना-पाटलिपुत्त नगर में,—
जेकर चरन पखारसु;
सुरसरि अपना निरमल जल से,
सुभ आरज असथविरवाद के;
लायक नायक,
संत सुरेमन ग्यानी;
मोगलि-पूत तिस्स जी,
कोसिस कइलन;
भिक्खु-संघ में मेल करावे,
दल के भेद मेटावे खातिर !

× ×

अपना अनुचित चालि-चलन आ—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

धरम-बिरोधी बेवहारन से;
भिक्खु लोग जे,
छाँटि निकालल रहे संघ से;
प्रिय असोक का,
बउध-धरम मनला का बाद;
उहो लोग लवटि के,
फेरु संघ में आइल-चाहल !
ऊ अपनें बतिअन के,
अपना ढंगे कहसु-सुनसु आ—
अपना मन के काम करसु जा !
अउरी उनके,
बउध-धरम-मत;
कहि बतला के,
बले चलावल चाहसु जा !
घेर मोगलीपूत तिस्स का,
भारी दुख पहुँचल एकरा से !
तव ऊ ऊबि कलह-झंझटि से,
अहोगंग परबत पर जाके;
सात बरिस तक,
रहि एकांत वास में;
तप-साधन, सुभ-ध्यान-ग्यान में,
आपन समय बितवलन !
बउध-संघ में,
झूठा-लबरा;
भिक्खु मलिन मन,
धरम-दरोही;
कादर कइल गोल गरिआर,
धरम-बिरिछ के,
छेदे छीले;
अंग भंग कइ,
सोमाहीन बनावेवाला;
एतना जुमल-बढ़ल रहलन कि,
सात बरिस ले,
भइल उपोसथ-विधि ना !
बहुत लोग मनमाना,
अपने माँथ मुड़ा के;
गेरुआ बहतर धारन कइले
बिचरत फिरसु मठन में !
बरिआई ऊ लोग बान्हि दल
कबे उपोसथ;

संघ-करम भा—
सुभ पवारणा-नेम ओगएरह;
सभे धरम-धंधन में,
घुसरि-पइठि के;
सधुवाई के,
सनदि-छाप हँथिआवल चाहसु !

कई बरिस ले,
नइखे होत उपोसथ;
सुनि ई हालि असोक,
भेजि एक मंत्री के;
जहाँ असोकाराम बिहार,
उन्हुका से कहलन कि,
झगड़ा-झंझटि के निपटा के,
चाहीं भइल उपोसथ के विधि !
मंत्री मठ में जाके,
कइलन जमा भिक्खु लोगन के;
अउरी उनसे,
धरमी राजा का सनेस के;
भगति-भाव से कहलन !
राजा के हुकुमो सुनला पर,
भिक्खु-संघ मंजूर कइल ना;
'तिरथिक' लोगन से मिलि,
कइल उपोसथ विधि के !
एकर फलवा भइल खराब,
ऊ मंत्री कुछ गलती कइलन;
हुकुम समुझि सकलन ना,
ठीक ढंग से राजा जी के !
बरिआई ऊ,
राज-हुकुम मनवावल चहलन !
एकरा चलते माँथ कटाइल,
कुछ असथविर भिक्खु संतन के !
एकर बेवरा,
जब राजा का काने पहुँचल;
तब ऊ बहुत दुखी भइलन आ—
तुरत पहुँचि के मठ में,
ओह भइल गलती पर;
माँथ धुनत पूरा पछतात,
जोरि दसो नहँ माफी मँगलन !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'असल दोस केकर बा',
एह बाति के लेके;
भिक्खु-संघ में भइल दूइ मत!
केहू दोस मढ़ल राजा पर,
केहू उनके;
दोसी मानल नाहीं!
आखिर एकरा,
उचित फएसला खातिर;
एक राई हो सभई,
थेर तिस्स के मानल पंच!
सोरह असथविरन के,
निपुन सेवकन का संग;
अउरी सोरह मंत्री आपन,
राजा भेजलन;
अहोगंग परबत पर,
गुरूदेव के;
तुरत बोलावे खातिर!
काहें से कि,
मदति मिलित उनका से;
धरम-हानि के झट रोके में!
सुनि राजा के बिनय-सनेस,
संतन के सरदार तिस्स मुनि;
बइठि नाव पर बिहरत.
सुरसरि का लहरन के,
लेत मधुर आनंद;
ठीक समय पर,
पाटलिपुत्त पहुँचलन!
अगवानी में उनका,
राजा गइलन अपने;
गंगा जी का तीरे!
अउरी, जल में हेलि उतरलन;
भाव-भगति से मुनि के!
कइ उन्हुकर आदर-सतकार,
राखल गइल मजे में;
जथाजोग सुख-मरजादा दे!
तब सुनि बिनय-बचन लोगन के,
चमतकार देखलावे खातिर;
मुनी ओइसने कइलन!
सीधि तेज गुरुवर के देखि,
सवतुक नगद-धरम में;
राजा के बिसवास बढ़ल!
सांत थीर भइला पर मुनि का,
राजा उन्हुका से पुछलन कि–
'भिक्खु लोग का बध से,
पाप भइल का कुछ हमरो के'?
थेर तिस्स मुनि,
सुनि तब उत्तर दिहलन--
'बिना खराब नेति के,
कवनो अधरम होइ सके ना!
जब मारे के,
हुकुम रहल ना राउर;
ना मनवे में,
अइसन कवनो भाव रहल!
तब के कही भला कि,
पाप भइल रउरा के!'
एतना सुनि के,
संका मेटि गइलि राजा के
सांति मिललि उनका के!
ग्यानी थेर तिस्स जी,
सात दिनन तक;
राजा के सुभ सिच्छा दिहलन,
उत्तम बउध-धरम के!
एकरा बाद तुरंते,
धरम-धुरंधर राजा;
सभे भिक्खु लोगन के,
एगो सभा बोलवलन!
अपना-अपना मत के,
कहे-बतावे;
हितकर सिद्ध करे के,
मोका दीहल गइल सभन के!
सवतुक साच कवन-मत हउवे,
ई पुछला पर;
सभई कहल 'विभज्जवाद' के!
भिक्खु-संघ तब सूध होइ के,
सहज-सुमति से;
कइल उपोसथ विधि के!
ए से सभकर,
पाप व्रासना छूटलि;
अउरी छूटल पिंड,
मलिन असुभ धरमन से!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

× ×

एकरा बाद तिस्स मुनि,
ओहिजा बटुरल;
भारी भिक्खु-समाज-बीच से,
तीनों पिटकन में पारंगत;
पंडित पूरा जानिबकार,
एक हजार भिक्खु संतन के;
ठोंकि-ठेठाके चुनलन !
जे से कि ऊ लोग बटुरि के,
सूध जथारथ बउध-धरम-मत;
निहचित-करसु रचसु जा !
धन्य लाल ! धरमी-नरेस ऊ
जेकरा· निपुन धरम-सासन में;
सुरसरि का किनार पर,
बनल बउध मठ;
सुघर असोकाराम-भवन में,
पाटलिपुत्त-रतन-अनमोल;
बाभन-बंस उजागर,
मोगलिपूत तिस्स के;
मानि सभापति,
सुरू भइलि तीसरि संगीति !
महापंडितन के ई मेला,
लागल रहे समचि के;
पूरा नव-महीना !
एह किसिम से,
सोधल-लिखल गइल 'त्रिपिटक' के !
थेर महामुनि,
'कथावत्थु' के रचलन !
भइल बिसेस परायन,
गूढ़ग्यान 'अभिधम्म-पिटक' के !
एतने नाहीं,
जुटि के भइल खूब बतकूचन,
जहाँ-जहाँ दोबिधा संका के;
तनिको जगहि मिललि केहू के !
मन के मइलि धोवाइलि सज से,
हिरदय सभे पखारल;
निरमल गंगा-जल पी !
बउध-धरम के छीर-समुंदर,
एक हजार मँथनिआँ लेके;
मिललन बहुत रतन अनमोल,
अंत समय अमिरित के घरिआ;
सरधावान मेहनती,
खोजी निपुन भिक्खुदल पावल !
सफल भइलि तीसरि संगीति;
धरम-कुटी में लेवरक लागल,
गोबरी भइलि पोताइलि भीति !
साधु संत-तपसी मुनि ग्यानी,
जहाँ कहीं बटुरालन;
ओहिजे तीरथराज प्रयाग,
ग्यान-अछयवट कंचन;
सभई के सुख देवेवाला !
उहँवें सरगलोक साकेत,
धरमपुरी देवतन के बास !
एह धरममेला से,
ईहे असली लाभ भइल कि;
धरम-दूत भारत से,
बहरी के देसन में गइलन;
देवभूमि के,
धरम-सनेस सुनावे खातिर !
अमिरितपूत महामुनि,
बउधदेव का ग्यान-दिआ के;
निरमल जोति जगत में,
फइलावे पहुँचावे खातिर !!
एह कलमि में हमरा,·
ऊ बलवें कहवाँ कि;
ओह लाल का गुन के गावे,
जेकर धरम-बिचार निराला !
चालिचलन सुभ सवतुक,
पुरुसारथ-परमारथ-सेवा;
सभ कुछ निपुन निराला !
चंचल चतुर परायेवाली,
लछिमिनिआँ के जे ठहरावल;
उरुवा के बइठा के,
कहीं फेंड़-रुख का खोंढ़रा में;
अउरी; खोलि खजाना,
धरम-काज सुभ—
संतन का सेवा में;
दोबिधा चिंता छोड़ि लगावल !
बेटा-बेटी जे जनमावल,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अइसन सुजन-सुलच्छन-लायक;
जे अपना जीवन के,
धरम-काज जन-सेवा खातिर;
प्रेम-खुसी से,
कइलन दान !

ऊहे लाल असोक महान,
सिच्छा मानि गुरू के अपना;
मदति-मसाला देके पूरा,
देस-देस में भेजलन दूत !
मोगलिपूत तिस्स महराज,
भिक्खु-संघ से मिलि के;
महापुरुस का,
ओह सुघर सपना के
चहलन कारज में बदलल कि—
'बहुतन का सुख सांति भलाई,
सबतुक सेवा खातिर;
भिक्खु लोग हे !
बिचरत रहिहऽ तोहनीं लोग'।
एकर भइल नतीजा ई कि;
केतने पूत सपूत देस के,
मानुस का जीवन के;
समुझि जथारथ मतलब,
मोह छोड़ि के;
जोड़ू-जाँता सोना के,
भिक्खु, बिरागी, त्यागी बनलन,
गइलन धरम-दिआ ले;
लाँघि सिवान बिदेस !
उनका मन में भेद रहल ना,
सगरे आपन घरवे जनलन;
अउरी, जग का सभ लोगन के,
अपने भाई-बंधु !
पूरा कइ संगीति तीसरी,
उज्जर दिन में, सुभ साइति पर;
कातिक मास-पुरनवाँसी के,
मज्झंतिक असथविर भेजइलन;
कासमीर-कपिसा-गंधार,
महादेव महिसक-मंडल में
धीर भिक्खु रच्छित बनबासी !
यवनक भिक्खु धरमरच्छित के,
कहल गइल कि,
'रउरा तऽ जाईं अपरांत !
महाधरम रच्छित मुनि ग्यानी
धरम-सनेस सुनावे;
जाइ पहुँचलन,
बीर मराठा देस !
धीर, सांत, मतिमान, साहसी,
भिक्खु महारच्छित के;
लायक समुझि भेजाइल,
जवन भाइअन का प्रिय देस;
अंतियोक दूसर का,
सुभ सासन छाया में;
दूर सीरिआ-बकटिरिआ में !
ओहिजो ले आगे बढ़ि,
केहू सागर पार कइल आ-
अंतकीनि का,
मेसिदोनिआँ पहुँचल !
धुनी भिक्खु कुछ गइलन,
एपीरस में;
धरम-धजा फहरावे;
जहाँ अलिकसुन्दर राजा के,
रहल बिराजत गति-बल-तेज !
संत लोग के महिमा,
साचो बड़ी बिचित्तर !
ओह भिक्खु लोगन के,
साहस जोखीं रउरा;
देखीं उनकर,
अचरजवाला कारज;
जे जा रोमन-राज-नगरिआ,
बंसी टेरि धरम के;
प्रेम-सांति सुभ-
नेति-दया के राग सुनवलन !
ओही तिथि साइत पर,
संत सुरइला;
मज्झिम, कासप गोतर,
मूलदेव, सहदेव वोगएरह;
पहुँचि हिमाचल देस,
धरम सनेस सुनवलन;
ओहिजा का प्रेमी लोगन के !
धरमधुरंधर पंडित,
रमता भिक्खु सोण उत्तर के;

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सुवरन भूमि देस बरमा में,
कहल गइल जाये के;
भ्रम्म-जाति के सिच्छा देवे,
पाठ पढ़ावे धरम-ग्यान के!

बउधदेव का,
अपना जीवन भर में;
बउध-धरम के सुभ परचार,
मगध, अंग आ बज्जि, मल्ल ले;
कोसल, वत्स, अवंती,
एतने तक में होत रहे बस!
बाक़ी, धन्नि! धन्नि! ऊ,
धरमी पुरुस असोक नरेस;
जे अति प्रेम, लगन, सरधा से,
एह धरम के;
सँउसे जगके धरम बनवलन,
अउरी, देवभूमि भारत का;
राज-धरम-पद पर बइठा के,
मरजादा आ सुजस-धजा के;
कहवाँ ना फहरवलन!
एह ले आगे बढ़ि,
गुरूदेव का साथे;
बउध-धरम-तिरथन के,
भगति-भाव से दरसन कइलन!
बउध-मुनी का,
धरम-चारिकन-नियर सोहासुत;
धरम-जातरा उनकर,
समय-समय से होखे!
समर-पयान-समान सान से,
जमींदार, सरदार, गुनीजन;
हाथी-घोड़न के जमाति बड़,

रानिन के रनिवास;
राज-करमचारी, मंत्री आ—
भिक्खु हजारन लेके साथे,
राजा करसु जातरा आपन!
धरमी निपुन नरेस,
बउध-धरम-तिरथन में सगरे;
दरसन-पूजा खातिर,
सुघर धरम-असतूप हजारन;
बनववलन धन दे सरधा से!
एतने नाहीं,
सुभ उपदेस धरम के;
अउरी सवतुक विनय सील के,
मंगल-मधुर-सनेस;
पत्थल का मजिगर खंभन पर,
पंडित-कारीगर गुनिअन से;
सोधि-सोधि सज से लिखववलन,
तब उनका के;
उत्तर दिसा हिमालय से ले,
दक्खिन में मैसूर राज तक;
पुरुबी सागर तीर उड़ीसा,
पच्छिम सुरठ-काठिआबाड़;
एह बीच में सगरे,
गाड़ि खड़ा करववलन!
बउधमुनी आ—
दूसर बउध-भिक्खु संतन का,
धातु-खंड के धइ के;
पत्थल का डिब्बा भा—
चानी का मंजूखा भीतर,
उनका ऊपर देस-देस में;
नामी सुभ जगहन पर,
बनववलन उत्तम हितकारी;
चउरासी हजार असतूप!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

धरम अछयबट कंचन

आजु सामने लउकेवाली,
दुनिआँ काल्हि रही ना !
एहिजा सभ कुछ,
छन-छन बदलेवाला !
कबहीं भइल अन्हार सघन तऽ
होला कबे अँजोर टहक्का !
जे चमकत लउकत बा,
चढ़ि अकास में ऊँचा !
ऊहो आखिर नीचे आई,
तेज-ताप-गति थाकी ओकर;
बनल अधीन नेम काकवनो,
छोड़ि जगहिआ आपन;
ओकरो हटत देर ना लागी !
लाचारन ऊ;
सोभाहीन बनी आ भागी !!
दूसर का हम कहीं बताईं,
ई समरथ बानीं का नइँखे;
कि कुछ भेद जगत के,
कहे बतावे;
लोगन के समुझावे !
दुनिआँ अइसनि,
केतना बेर बनलि आ बिगड़लि !
ना जाने ई,
कहवाँ ले आवे ले;
अउरी, आखिर कहवाँ जाले !
हम अँटकर से,
कले-कले टोई ला !
जब कुछ समुझीं नाहीं,
तब अपना बल, बुधि, ग्यान के
थाह पाइ रोई ला !
बाकी साहस खोईं नाहीं,
फेरु सुभावन;
ललकि लगन से सोचीं ला !
आखिर उहे सनातन,
रिखि मुनिअन के;
कहल बतावल मानि-समुझि के,
बोध-सांति पाईं ला !
'रित' आ 'सत' के,
अछय-अनंत धरमचक्का ई;
चलत रहेला हरदम !
महापुरुस मतिमान बिचारक,
ओही का सासन के मानि;
नया तेज-बल-साहस पाके,
फेरु डहरि का;
काँट-कूस, कूड़ा-करकट के,
सोधि हटा के;
कदम बढ़ावसु आगे !
हम, बस एतने जानीं ला कि,
रउरा पास समय बा;
अउरी बाटे,
प्रिय हितकारी अनंतता सुभ;
सासन-संजम नेम-धरम बा,
धरती ऊपर,
सरग बसावेवाला;
करमजोग सवतुक बा,
तब काहें के रउरा;
भूली, भटकी, घबड़ाईं ला ?
धरम-अछयबट का छायातर,
चलीं सांति-सुख पाईं
ठहरीं आ सुहताईं,
ध्यान लगाईं सोचीं-समुझीं;
तब आगे के डेग बढ़ाईं !
धूप-घाम चाहे जाड़ा में,
डहरि चलंता राहगीर के;
कब बबूर का,
काँट भरलि पातरि छाया में;
सुख आ सांति मिले ले ?

× ×

धरम-अछयबट-कंचन,
रहे सनातन सभ दिन;
ओकर जरि ना,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सरे गले मेंटे ले !
उचित-समय पर,
फेरु पनपि हरिअर हो;
छाया आपन,
सघन-सांत-सुखदाई
फइलावे ले !
महापुरुस मुनि बउधदेव जी,
ओही सघन बिरिछतर;
बइठि मजे में,
खइलन खीरि सुजातावाली !
केतना दिन के लहजल-थाकल,
पवलन सुख आ सांति !
तब उठि डेग बढ़ाके,
ओकरे भाई;
बोधि-बिरिछ-तर गइलन !
जहाँ ग्यान-सागर में,
गोता लगा, पइठि के भीतर;
अगिरित कलस जोहि ले अइलन !
समय पाइ के,
ना जाने केकरा इच्छा से;
ओही धरम-बिरिछ के बीआ,
लाल महेन्दर;
लंका लेके गइलन रोपलन !
खुदे अपनहूँ गलि धरती में,
बनलन बीआ डाढ़ि बरोहि;
अबहूँ जेकरा सघन छाँहतर,
बइठि मजे में;
सिंहल-पूत-सपूत-कुलीन,
पावत बाड़न सुख आ सांति !

लंका हऽ भारत के,
बहुत पुराना खेमा !
लोगवा कहे बतावे ला कि,
सुभ विकरम संवत ले;
बरिसि चारि सइ छत्तिस पहिले,
बउध-मुनी का;
सुभ निरवान-साल में,
लाट देस गुजरात सुघर के;
बीर साहसी खोजी,
राजकुँवर मतिमान विजय सिंह;
अपना संगी-साथिन के ले,
नई पोढ़ नइआ पर चढ़ि के;
होत सुपारा,
मउज लेत सागर-लहरन के;
धइलन आपन डेग उतरि के,
चुनमुन दीप ताम्रपरनी में !
लाल विजय का,
नगद 'सिंह' पदवी पर;
दीप ताम्रपरनी के,
दूसर सिंहल नाँव परल तब !
बहुत समय का बाद,
रामायन का परंपरा के;
हो गइले ओहिजा परचार,
लंका नाँव भइल मसहूर !
कुवँर विजय आ साथी उनकर,
सहजे जीति दीप का;
पहिला असल निवासिन के,
आपन विजय-धजा फहरवलन !
कुवँर विजय का,
विजय-समय का;
सवा दूइ सइ बरिस बाद तक,
प्रिय सिंहल लोगन का,
बउध-धरम से,
चीन्हा-परची भइल रहे ना !
जेह समय में,
जम्बू-दीप देस भारत में;
प्रियदरसी राजा असोक के,
सुजस-धजा फहराति रहे, आ–
बाजति रहे धरम के बंसी;
सगरे कोना-कोना में !
ओही समय देस लंका में,
राजा तिस्स जसी परतापी;
एहि के राज सिंहासन पर, सुभ
सेवा करसु प्रेम से सभकर !
एही समय पहुँचि लंका में,
निपुन-असोक-सपूत;
बीआ रोपलन बउध-धरम के !

× ×

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इन्दगुप्त असथविर चतुर का,
देख-रेख में तीनि बरिस में;
बनि तइआर भइल जब,
सुघर असोकाराम बिहार !
बना सभापति तिस्स मुनी के,
गिरिह-बास के;
उतसो-पूजा भइल मजे में !
पहुँचि ओह अवसर पर राजा,
भिक्खु-संघ का बीच ठाढ़ हो;
बिनय-भाव से पुछलन—
'संत लोग अब,
कइके दया बतावसु कि हम;
मंगल-धरम-बिरिछ के,
रोपनिहार दयाद; धरम-कुल;
साझीदार हईं कि ना ?'
गुरु सिरोमनि तिस्स मुनी तब,
उनका से कहलन कि—
'चाहे केतनो दान करीं कुछ,
धरम-दयाद वनबि ना रउरा;
धरम दयाद बनेला उहे,
जे अपना संग सोझ सुलायक;
गुनी पूत के,
बना संत संन्यासी;
धरम-बिया रोपे ला !
तब असोक आतुर हो,
धरम-दयाद बने का;
सुभ सवतुक इच्छा से,
बायें-दहिने ताकत;
देखलन खड़ा बगल में,
लायक पूत महेन्दर के !
ऊ मनवाँ में अपना,
ई गुनले रहलन कि;
'तिस्स-कुँवर जब,
भिक्खु-संत हो गइलन;
तब इनहीं के,
राज-कुँवर के पदवा देबि !'
बाकी, सोचि तुरंते ई कि -,
राज-कुँवर का पद ले,
भिक्खु भइल उत्तम बा;
निपुन नरेस पूत से पुछलन !

काहे से कि,
उनका मोह रहल ना;
बेटो तक के दान करे में,
धरम काज जन-सेवा खातिर !
भला ! कहीं तऽ,
पूत सबद के;
माने-मतलब,
केतना लोगवा जाने ला ?
बहुत लोग त जग में,
बिसय-बासना-बस हा;
बेटा-बेटी जनमावेलन !
ना उनका के,
सवतुक सिच्छा देसु कबे भा
उत्तम रहनि-चालि सिखलावसु !
जब ऊ अपनें,
पकड़ि डहरिआ नीमन;
धरम-करम सुभ करसु कबे ना,
तब बेटन से;
काहे आसा राखेलन ?
'पू' के माने भइल पवित्तर,
'त' से तारे—
रइछा करे उबारेवाला !
जनम पाइ जे,
कुल के करे पवित्तर;
मातु-पिता-पुरखन के,
अपना सुभ करमन से तारे;
उनकर नाँव-सुजस फइलावे,
कुल का धरम-करम के;
सवतुक-परंपरा के राखत,
समय मोताबिक कुल-चिराग में;
बाती तेल लगावे,
अउरी ओके;
पाप-बवंडर का झोंका से,
रहि के सजग बचावे !
पूत कहीं मानीं ओकरे के,
बाकिन के बस, पोंटा जानीं !

× ×

धन्नि ! महेन्दर पूत निराला,
धन्नि ! सुलच्छनि बेटी;

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सहज-साधुनी,
देवि संघमित्ता ऊ;
जे कि जानि पिता के इच्छा,
हँसी-खुसी से;
भिक्खु-भिक्खुनी भइलन,
धरमदूत हो लंका गइलन !
पूत सपूत उहे हऽ,
पर-हित खातिर त्याग कइल जे;
ममता-मोह-छोह-धन-जन के !
धरम-काज में;
दीन-दुखी-जन का सेवा में
जेकर मनवाँ लागल सज से;
भजन, त्याग, तप-व्रत से जेकरा,
कुल-परिवार तरल भवसागर;
चढ़ि विमान बैकुंठ गइल !
ओकरे जनम सफल साचो के,
जेकर सुकरम-सुजस-सुगंध;
फइलि जगत में,
सभके सुख पहुँचावे ला !

× ×

धन्नि ! घरी ऊ,
राज-कुँवर जब;
लाते मारि राज-सिंहासन,
हीरा-मोती, मेवा-माखन;
सुख-सोभा-सिंगार सभन के,
बीस बरिस का;
चढ़ती नई जवानी में,
पहिरि लंगोटी गेरुवावाली;
संन्यासी बनि चललन विचरे,
आपन राज समुझि के सगरे !
संत सिरोमनि,
भिक्खु तिस्स के बना उपधिआ
आचारज पद,
महादेव के देके;
संघ कुँवर के,
'सामणेर' बनववलस पहिले !
तब कुछ दिन तक,
विनय-सील सुभ—
संजम-नेम सिखा के,
मज्झंतिक असथविर चतुर का;
देख-रेख में,
भिक्खु बनावल गइल अंत में !
राजकुँवारी,
देवि संघमित्ता तब;
बरिस अठारह के बस रहली !
ओही नई उमिरिआ में ऊ,
थेरि धरमपाला आ--
निपुन आयुपाला से;
ले संन्यास-धरम के सिच्छा,
गेरुवा बहतर धारन कइली;
कठिन त्याग देखलवली !
राजकुँवर ले पाछे आके,
उनका साथे,
परिछांहीं बनि चलली !

× ×

धन्नि ! धन्नि ! ऊ पंछी,
जे पिंजड़ा के मोह छोड़ि के;
आसमान में उड़लन,
काहे ना ऊ,
सोनेवाला होखे !
बड़ा कठिन पिंजड़ा के मोह,
कसि के जे खींचे पकड़े ला !
एह जगत-जंगल के,
कइसन ई पंछी जे;
कबहीं उड़ि के निकलि गइल जो,
तबो लवटि के पाछे;
लोर भरल नयनन से,
पिंजड़ा के ताके ला !
पास पहुँचि घोरिआ के,
बरबस ओकरा भीतर;
बंद भइल चाहे ला !

× ×

प्रिय असथविर महेन्दर,
इठ्ठिअ आ कुछ अउरी—
असथविरन के;
सेवक निपुन भगत भंडुक आ—
देवि संघमित्ता का बेटा,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चतुर सुमन के;
'सामणेर' रहलन जे,
साथे लेके;
कातिक मास पुरनवाँसी के,
छोड़ि असोकाराम बिहार;
लंका जाये खातिर,
कइलन बिहँसि पयान!
राजगिरिह के घेरेवाला,
देस दक्खिना गिरि में विचरत;
छव महीना तक ऊ,
सुख से समय बिता के;
त्रिदिसा जाइ पहुँचलन,
जहाँ रहे उनकर ननिआउर!
ओह समय उनकर मँहतारी
गइल नइहरे रहली!
ऊ असथविर संत के,
आइल देखि प्रेमबस;
सुभ चरनन में माँथ नववली,
खातिर कइली, भिच्छा दिहली!
तव असथविर सहित ऊ,
सभ संतन के;
वेदिस-गिरि नगरी का,
अपने बनवावल प्रिय;
सुभ एकांत सांत अति,
महाबिहार सुघर में;
भाव-भगति बस बास करवली!
ओहिजा एक महीना ले रहि,
भिक्खु महेन्दर आगे बढ़लन!
देस-नगर-धामन में बिचरत,
देखत-ताकत;
धरम सनेस सुनावत,
संतन सहित लाँघि के सागर;
जेठ पुरनवाँसी का दिन ऊ,
लंका पहुँचि मजे में;
रजधानी अनुराधपुरी का,
पुरुब-दिसा में;
मिसिरक-मिहिन्तले परवत पर,
आसन जमा ठहरलन!
ओही दिन लंका में,
जेठा-मूल पुरनवाँसी के;

उतसो दिनवाँ रहे पवित्तर!
राजा मंत्रिन से कहि
'पीटि ढिंढोरा,
उतसो करीं मगन हो,
खेलीं-कूदीं, मउज मनाईं।'—
अपने गइलन.
चउवालिस हजार पुरुसन सँग;
परबत ऊपर करे सिकार!
तब ओहिजा के,
परबतवासी देवता;
मुनि असथविर धरम-नायक आ—
अउरी सभ संतन के,
राजाजी के;
दरसन लाभ करावे खातिर,
धइके रूप मिरिग रोहित के;
घासि पतइआ टूँगत,
नियरे बिचरे लगलन!
'एह घरी पलखत परला में,
मारल अच्छा नइँखे;
अइसन सोचि दयालु नरेस,
ताली ठोंकि जोर से;
कइलन सजग मिरिग के!
मिरिगा भागल,
आमन का बगिआ से होके!
पाछ पकड़ि के ओकर,
राजा चलत-वढ़त आगे के
आमनवाली,
परवत-चोटी पर जा चढ़लन!
असथविरन का पँजरा जाके,
मिरिगा गायब भइल अंत में!

एही तरे बहाना कवनो,
लेके कबहीं;
सुभ संजोगन,
पुन्नि उदय भइला पर;
संत लोग के दरसन होला!
दरसन होते, पाप पराला,
मलिन-वासना मन के छूटे;
हिरदय-भीतर,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

धरम-भाव जागे ला !
'तिस्स ! तिस्स ! एहिजा तूँ आवऽ',
अइसे कहि के;
जब असथविर पुकरलन;
तब अचरज में पड़ि के राजा,
मनवाँ में सोचे लगलन कि--
'गेरुवा बसन उदास पहिरले,
कवन पुरुस ई हऽ जे;
नाँव हमार पुकारे ला !'
चलीं पास पूछीं तऽ !'
एह किसिम से नियरा जुटि के,
एक दूसरा से बतिआवत;
चीन्हा-परची भइल मजे में !
राजा जब जनलन कि,
धरम दूत भारत से अइलन;
बउध-भिक्खु ई,
मोर नियर तब मनवाँ उनुकर;
मगन होइ के नाँचि उठल !
सुनि असथविर-राज से,
उत्तम धरम कहनिआँ,
'चूला-हत्थि-पदोपम-सुत्त' !
चउवालिस हजार लोगन सँग,
बउध-धरम सुभ मनलन राजा
बउध भइल लंका के लोग,
भागि चलल उनकर दुख-रोग !
ओह समय में, अनुला देवी;
धरम सरन में,
जाये का अपना इच्छा के;
राजा जी से कहली !
तब राजा असथविर-राज से,
उनकर विनय सुनवलन !
सुनि के मुनिवर उत्तर दिहलन--
'धरम मोताबिक,
हमरा नइँखे हक कि,
हम नारी लोगन के;
संघ-सरन में लेईं,
अउरी उनके;
त्याग-धरम के सिच्छा देईं !
जम्मू-दीप देस भारत का,
पाटलिपुत्त नगर में;
बहिनि संघमित्ता थेरी बा,
ओकरे के बोलवाईं !
हे ! राजा जी रउरा,
अइसन पाती भेजीं कि ऊ;
बोधि-बिरिछ के,
डाढ़ो साथे लेके आवे !
ई सनेस मिलला पर,
महाबोधि तब;
गंगा में लदिके नइआ पर,
लाँघि बिन्हाचल परबत;
सात दिनन में,
तामलुक जा पहुँचलि !
धरमी पुरुस असोक नरेस,
अगहन का पहिला परिवा के;
लोगन का सँग 'महाबोधि' के,
अपना कान्हे लेके;
गरदनि भर पानी में हेलि,
सरधा से नइआ पर धइलन !
अउरी थेरि संघमित्ता के,
भगत सेवकन का सँग;
चढ़ा प्रेम से,
दीप ताम्रपरनी के भेजलन !
बीच डहरि में,
सात दिनन ले;
नागराज लोगन से,
पूजल जाके महाबोधि ऊ;
फेरु लदाइल,
ओही सुभ नइआ पर !
जंबुकोल पट्टन से होत,
चारि दिनन में नइआ;
महाबोधि के लेके,
पहुँचि गइलि अनुराधपुरी के !
अनुला देवी साथे अपना,
पाँच सइ लइकिन आ--;
राजमहल का,
पाँच सइ नारिन के लेके;
थेरि संघमित्ता से;
त्याग-धरम के सिच्छा लिहली,
तुरत भिक्खुनी भइली !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

राजा के प्रिय भगिनो,
कुँवर अरिठ तव;
पाँच सइ लोगन का साथे,
पास पहुँचि असथविर राज का,
भइलन भिक्खु खुसी से !

संत सुरेमन ग्यानी,
निपुन बिरागी त्यागी;
भिक्खु महेन्दर के ई,
धरम-काज में लंका आइल;
सिंहल जाति-भाइयन खातिर,
उनका सुभ इतिहास जगत के;
घटना एगो रहलि अमोल !
नगद नाँव से मुनि का,
तनिको नाता बाटे जेकर;
अउरी जहवाँ,
उनकर चरन परल वा;
ऊ कुल जगहा,
लंकावालन खातिर,
परम पवित्तर बाड़न !

× ×

राजा मुनि से विनती कइलन,
नंदनवन में ठहरे खातिर !
एकरा पर मुनिवर कहलन कि—
'ई बा वहुते पास नगर का,
एही से मन,
एहिजा ठहरल चाहत नइँखे !
तव राजा जी उनके,
महामेघ बन में ले गइलन;
जहाँ फूल-फल छाया उत्तम,
जगहा सूध सांत एकांत;
अउरी जल के रहे सुपास !
ना तऽ नियरा,
नाहीं बहुते दूर नगर का;
देखि ओह बगिआ के,
मुनि का परल पसंद !
संतन सहित उहाँ के,
आसन ओहिजा लागल !
भाव-भगति का कारन,

थोरहीं दिन में निपुन नरेस
महामेघ वन भीतर,
मुनि का ठहरे खातिर;
महाबिहार सुघर बनववलन
थेरि संघमित्ता आ—
अउरी थेरि भिक्खुनिन खातिर,
अलगा दूसर बनल बिहार
साथे ओकरा,
बनलन वारह सुघर मकान !
जेकरा में ले,
उत्तम तीनि घरन में;
महाबोधि के ढोवेवाला,
प्रिय जहाजि के;
सुभ पतवार पाल आ—
ऊपर के मसतूल,
मधुर इयाद सरूप जोगाके;
राखल गइल प्रेम से !
सिंहल लोग बतावेला कि,
वोधगया में;
जेह सघन पीपर तर,
सिद्धारथ के ग्यान मिलल आ—
बउधदेव ऊ भइलन;
ओके पाछे प्रिय असोक के
दूसरि रानी तिस्सरच्छिता;
डाह-खीसिबस,
हठि कटववलसि, कइलसि चउपट !
एह किसिम से,
बोधि-बिरिछ के सग संतान;
उहे बिरिछवा हउवे,
जेके थेरि संघमित्ता ऊ;
सरधावस ले जाके,
प्रिय अनुराधपुरी में
जतन-जुगुति से रोपली !
लंका का भाइन के,
कइके बहुत भलाई;
उनकर उत्तम सुबरन-दीप,
भिक्खु सिरोमनि;
बउधदेव भगवान समान,
असथविरन के नायक;
लाल महेन्दर,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अस्सी बरिस उमिरि भइला पर;
सुघर चइत परबत पर,
रहिके बरखा रितु में;
भजन-ध्यान में समय बितावत,
निरमल सरद कुवार महीना,
पाख अँजोर आठ दिन गइले;
पवलन सुभ निरवान!
अइसन सुनते,
वेकल भइल सोग से;
दुखिया 'उत्तिय' राजा,
पहुँचि ओह जगहा पर,
गोड़ लागि असथविर राज के;
बहुत देर ले रोवलन!
फेरु तुरंते,
सुभ देहिआँ के उनका;
सोनेवाली सुघर दोनि में,
तेल सुगंधित भरि के;
राखल गइल मजे में!
ओह दोनि के कइके वंद,
दूसर नया सोनहुला;
सुभ विमान में,
सज से सजा धराइल!
तब पलटनि का साथे,
भारी भीड़ि सहित लोगन का;
सहज सुघर मंगल विमान के,
पूजत माँथ नवावत;
चारो ओर नगर घोरिआवत,
जयजयकार मनावत;
फूलन का बरखा का बीच.
महाविहार-भवन में ले जा;
राखल गइल सात दिन!
केरा थंभ गड़ाइल अनघा,
कलसा जल से भरल धराइल।
रंग-विरंगा फूल सुगंधित,
माला-हार टँगाइल।
धजा-पताका फहरल सगरे,
घी से भरल चिराग बराइल!
जगहि-जगहि पर,
आगि राखि अथरा में,
धूप-दसांगि, कपूर गुगुल आ—
चंदन-धूरि डलाइल।
एह तरह का सुभ साजन से,
महाविहार सुघर आ—
चारो ओर तीनि जोजन ले,
धरती गइलि सजावल!
सात दिनन ले,
भाव-भगति से पूजा कइके,
सुभ विमान ले गइलन राजा;
थेर लोग का,
चमन वन्धमालक में!
पूरुब ओर चमन का
चिता सुगंधित सिजिल सजाइलि।
तब विमान के धइके ऊपर,
कइल गइल अंतिम सतकार!
फेरु बाद में,
चिता सांत भइला पर;
धातु-खंड के,
सरधा से बिनवा के,
धइल गइल सुबरन-डिबिआ में!
अउरी ओह जगहि पर राजा,
सुघर चइत बनववलन!
आधा भाग धातु के ले के,
सुभ एकांत चइत-परबत पर;
वनल नीक दूसर असतूप!
एहीतरे धरम-सेवा आ
लोगन के हित करत प्रेम से,
निपुन महाथेरी प्रिय;
परम साधुनी देवि भगवती,
बहिन संघमित्ता ऊ;
छनभंगुर जीवन के,
वरिस ओनासी पूरा कइके;
पवली सुभ निरवान!
ओने लाल महेन्दर त्यागी,
मंगल धरम-सनेस सुनावत;
करत भलाई सभ लोगन के,
भजन-ध्यान में;
बिता वरिस अरतालिस,
पूरा अस्सी के हो;
नासवान देहिआँ के छोड़लन!
भाई-बहिन धन्नि ऊ दूनो,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

धन्नि ! जनम के सुभ दिन उनका;
धन्नि ! पिता आ माता !
धन्नि ! सभन के सवतुक त्याग !!
मानुस के ई जीवन,
साचो सफल भइल उनहीं के !
देहिआँ ई माटी के सभकर,
आखिर माटी होले !
बाकी, ओह दूइ के माटी,
लंका का माटी में मिलि के;
देवभूमि भारत से,
प्रिय सिंहल-पूतन के;
जोरलसि अइसन,
गाढ़-नेह के नाता;
जेकर टूटल बहुत कठिन वा !

× ×

सुख-दुख, साँझि-बिहान राति-दिन,
रथ का चक्का नियर हरदमे;
बिना ठहरले चलत रहेलन !
इहे सनातन नेम जगत के,
एहिजा सभ कुछ,
छन-छन बदले वाला !
सुख के समय सरकि के निकलल,
उठल बवंडर भारी;
हिलल राज-सिंहासन !
बदलल दिन आ दसा देस के,
साइति घरी जमाना जोग,
सभकुछ पलटल;
आइल दुख के पहरा !
तमिल लोग लंका पर चढ़ि के,
भाग उत्तरी के जीतल आ—
प्रिय अनुराधपुरी के !
बरिस छिहत्तर रहल देस पर,
उनकर कोड़ा-कबजा !
एकरा बाद समय कुछ बदलल,
दुरदिन गइल सुदिन आ पहुँचल;
भागि-भोग के पासा पलटल,
सिंहल का जनता पर;
दया भइलि भगवन के !
सुभ संजोगन,
ओहिजा का धरती पर;
जनमल एगो लाल नगीना,
वीर प्रतापी बट्ठगामणी,
'अभय महामतिमान !
सुभ विकरम संवत् ले,
सहज बरिस चउवालिस पहिले;
खेदि दराविड़ लोगन के ऊ,
कुल लंका आ—
प्रिय अनुराधपुरी के;
बाति कहत में झट लवटवलस !
बट्ठगामणी,
अभय पूत लंका के;
धरम-जगत आ—
राजनेति दूनो के,
भइल धुरंधर वीर !
धरमी राजा,
अपना हुकुम-घरी में;
लंका का धरती पर,
सभसे बड़ असतूप निराला;
'रतनमाल' चइत बनववलन !
बट्ठगामणी अभय चतुर के,
राज हुकुमति के दिन;
बउध-बरम खातिर तऽ,
रहल बड़ा अनमोल !
समय पाइ अनुराधपुरी का,
महा विहार-भवन में;
भिक्खु लोग का महासंघ के,
भारी मेला लागल !
विनय, सुत्त, अभिधम्मपिटक आ—
उनका अट्ठकथन के,
भइल परायन पाठ गजे में !
तव एकांत समुझि के,
पास 'मातले' का अति
'अलुलेना' का बड़ गूफा में,
इहे लिखल सोधल सरिआवल;
पूरा पाली 'त्रिपिटक',
साजि-छाँटि परबत-फाटी के;
चिक्कन कइल दिवालन पर,
कारीगर लोगन का;
निपुनाई धीरज संजम से,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खोदल गइल प्रेम-से !

× ×

असथविरन से छाँटल लोग,
ओही समय कइल उतजोग !
डहरि पकड़ि सरवास्तिवाद के,
बटुरल जाके नालंदा में !
नया जमाना जुग के देखि,
समझि-बूझि लोगन के रीति;
नया विचारनवाला भिक्खु,
समय मोताबिक नया ढंग से;
चहलन रचल धरम के भीति !
भिक्खु-समाज बटुरि के ओहिजा,
सुत्त, विनय, आ धम्म-नेम के;
काटि-छाँटि साजल सरियावल !
छोड़ि पुरान-डहरिया पहिली,
नयी सड़कि सुभ सुगम बनावल !
एने बदलल—
समय-दसा दिन;
मगधदेस में,
अब ना रहल सितारा चमकत;
प्रिय मोरियराजा लोगन के !
देखि समय का गति के,
हालि अगाही जानि-समुझि कुछ;
संत समाज बढ़ल आगे के !
केतने भिक्खु पहुँचलन दक्खिन
केतने मथुरा जाइ ठहरलन !
दक्खिन से कुछ लोग निकलि तब,
गइलन कासमीर गंधार !
केतने बढ़त धरम फइलावत,
बीच एसिया का देसन में;
भय संका के छोड़ि पहुँचलन !
पुरुस बली ना कबहीं,
हरदम समय रहल बलवान !
मोरिय-राज-पताका,
उखड़ि गइलि जब बल घटला से,
तेज सान के खोके अपना,
महिमावाला सूरुज;
पच्छिम डुबलन जाके।
ओही समय पाइके मोका,
जंबू दीप देस भारत कां;
उत्तर पच्छिम का कोना में,
नया सितारा चमकल,
जोनक वीर जवानन के !
जवन लोग कें,
सुजस-पताका उड़लि देस में।
कायम भइल राज-बल उनकर,
हुकुम, सान, कानून !
पहिला राजा भइल मिलिंद
बनलि 'साकला' में रजधानी !
ओकरा राज-सिवाना भीतर,
पेसावर, कपिसा, गंधार;
उत्तर कावुल घाटी,
देस सिंधु, पंजाब, सुघर आ—
सुरठ काठियाबाड़;
एतने नाहीं,
प्रिय उत्तर परदेस सिजिल के;
पच्छिमवाला भाग,
इहे देस कुल रहलन !
रहे मिलिंद बहुत विदमान,
धरम-बिचारक ग्यानी;
निपुन सुजन मतिमान !
ऊ सुभ सवतुक विमल ग्यान के,
खोजी रहल गंभीर !
बउध-धरम का असलहीर के,
समुझल चाहत रहे मजे में !
ओकरा मन में,
संका रहल जवन कुछ;
दूर करे खातिर ओही के,
खोजत रहल लगन से;
निपुन सिद्ध संतन के !
बड़ा भागि से सुभ संजोगन,
उत्तम संत भेंटालन !
कबे एक दिन राजा,
रजधानी का राज डहरि पर,
एगो बउध-भिक्खु के देखलन;
भोजन खातिर जात !
देखि भिक्खु के,
चमचम चमकत चेहरा;
सांति, धीरता, संजम, नेम,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अंसर परल राजा का मन पर!
तब विहान भइला ऊ,
पाँच सइ जवनक-लोगन के,
अपना साथे लेके;
सागल का 'परिवेण' नाँव का;
बउध-बिहार नगद में पहुँचल!
जहवाँ ओह घरी पर,
ठहरल रहलन;
नागसेन असथविर महान!
बउध-धरम के लेके,
राजा से, उनका से;
भइल बहुत सतसंग!
पाछे अरज मानि राजा के,
कई दिनन तक राजमहल में;
जारी रहलि धरम-चरचा ऊ!
आखिर में राजा के!
मेंटि गइलि कुल संका!
गदगद हो ऊ भाव-प्रेमवस,
बउध-धरम के मनलन!
ओह देस के जनता,
अउरी जवनक लोग;
सभई राजधरम अपनावल!
राजा के बल मदति पाइके,
धरम बढ़ल आगे के!
गेरुवा चीवर धारन कइले,
रखले अपना पासे;
सहज कवंडल खप्पर भर वस,
भिक्खु सयकड़न गइलन;
बाहर पच्छिम का देसन में!
राजधरम भइला से,
तूती बोललि बउध-धरम के!
छत्रपलोग धजा फहरावल,
समय पाइ मथुरा उज्जैन!
धरम धुरंधर राजा,
सुघर मिलिंद-बिहार बना के;
नागसेन के दिहलन दान!
कुछ दिन बाद राज कइला का,
राजहुकूमति का लगामि के,
ऊ बेटा का हाथन में दे;
भइलन भिक्ख खुसी से!
भला! रहेला कायम केकर
हुकुम-कनून जगत में हरदम?
प्रिय मिलिन्द का उठि गइला पर,
जवन-हुकूमति विनसलि!
बाकी, अमर रही जुग-जुग ले,
ओह निपुन धरमी राजा के;
प्रिय हितकारी सेवा,
दया दान उपकार!
जेकर साच गवाह दूइ गो,
अब ले जीअत बाड़न!
पहिल 'मिलिन्द पन्ह' के पन्ना,
दूसर राज चिन्ह ऊ सिक्का;
जेकरा पर बा,
बनल धरम-चक्का के छापा।

× ×

बस एतने में,
सजगी समय-सिपाही;
उठि घंटा पर मुँगरी मरलस,
तब देरी का;
तनिका भर में,
बदलि गइल सासन के पहरा;
आइल केहू दूसर वीर!
चीनी, तुरकिस्तान देस से,
सक लोगन का यूची-कुल के;
दल एगो परधान 'कुसान',
भारत में आ पहुँचल!
कुजुल-कसस पहिला सरदार,
आपन झंडा गाड़ि देस में;
कायम कइलस राज-हुकूमति
बउध-धरम के मनलस!
ओहीकुल में आगे चलि के,
भइल कनिष्क निपुन परतापी;
मानि सुमति 'सरवास्तिवाद' के
धरम-धजा फहरावे वाला!
बनल पुरुसपुर पेशावर में,
ओकर सुभ रजधानी।
राज हुकूमति के लगामि जब,
प्रिय कनिष्क का हाथे आइलि;
तब सुख-सांति बिराजलि,
उत्तर भारत का धरती पर!
बउध-धरम का आसमान में,
उगलन नया चनरमा-सूरुज!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

धरम-करम के चक्का,
घूमे लागल तेजी से !
निपुन सात घोड़न का,
लाल सोहासुत रथ पर चढ़ि के;
अइलन पहिले,
सुरुज देव महाराज !
उनहीं का सँग,
आ पहुँचल प्रिय नया बिहान !
नया तेज बल-साहस पाके,
धरम-जोति मुसुकाइलि।
गहगह भइलि ग्यान-फुलवारी,
फूललि-फरलि मजे में !
पाली भासा का जगहा पर,
संसकीरित के;
फेरु भइल आदर-सतकार !
कारीगरी कला का जग में,
भइल तरक्की;
प्रिय गंधार-कला के।
एही घरी बने तब लागलि,
बउधदेव आ—
बोधिसत्व के मूरति !
बउध-धरम के नगद पताका
जगहि-जगहि लहराये लागल,
मध्य एसिया भीतर;
खोतन, कासगर, यारकंद ले,
प्रिय भारत का मध्यदेस तक !
बउध-धरम खातिर तऽ,
सभ से बड़ सेवा कनिष्क के;
इहे भइल कि,
पारस, अस्सघोस, वसुमित्त;
एह निपुन पंडित लोगन का,
सुभ सलाह के मानि;
ऊ तत्पर हो नेह-लगन से,
बउध-धरम के;
भारी सभा करवलन !
विकरम संवत्,
ठीक एक सइ संतावन में;
कासमीर का,
कुंडलवन-बिहार में;
सुभ सरवास्तिवाद के,
मानेवाला पंडित भिक्खू;
चुनल-चुनावल,
पाँच सइ बटुरइलन !
ई चउथी संगीति कहाइलि,
एकर हाल बयान लिखाइल !
प्रिय वसुमित्त सभापति भइलन
अउरी उनका नीचे;
सिजिल सँवारक मदती पंच,
बनलन अस्सघोस विद्गान।
सोधि-सवाँरि धरम पोथिन के,
सजसे लिखे-लिखावे खातिर !
बउध-पंडितन का सरधा आ –
सुमति-धीरता पुरुसारथ से,
लिखलि गइलि त्रिपिटक पर टीका !
निरमल सँसकीरित भासा में,
बनलन तीनि लाख असलोक !
'महा-विभासा',
परल ओह टीका के नाँव !
ई संगीति भइलि जब पूर,
तब तामा का;
ना जाने केतना पत्तान पर,
तीनि लाख असलोकनवाली;
सुघर 'विभासा' टीका,
सज से गइलि उतारलि,
पंडित-कारीगर लोगन का;
निपुनाई धीरज साहस से !
धन्नि ! कनिष्क महान्,
सरधावान कला के प्रेमी;
तामावाला–
ओह लिखल पत्तन के,
पत्थल का संदूखन में धइ;
बंद करवलन उनके !
ओही संदूखन के,
सज से राखे खातिर;
बनल रहे असतूप नया !
एह किसिम से,
ग्यान-रतन-धन के सनूखि ऊ,
ओह नगद असतूप नया में;
राखल गइली,
धरम-ग्यान का रइछा खातिर !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

× ×

सभे चीज दुनिआँ के,
भीतर बाहर कतहीं वाली;–
बनल तत्त दरबन से,
चाहे चित का भावन से;
कायम बाड़ी जानीं !
उनका के सत मानीं !
ऊ बाड़ी कि नाहीं;
एकरा में कुछ
सक-सुबहाँ जनि राखीं !'
इहे असल में,
बा 'सरवास्तिवाद' के कहना !
सभसे पहिले,
एही मत के संत बिचारक;
परमानुन के देखलन जनलन,
उनका पर कुछ;
कइलन बूझ-बिचार !
सुभ सरवास्तिवाद मत,
असल जथारथ बोध बिचार !
हमनीं का इनरिन से,
बाहर का दुनिआँ के;
जवन रूप परतछ लउकेला,
ऊहे रूप जथारथ सवतुक;
माने ला ई लोग !
मानि 'बिभासा' का बिचार के,
जवन भिक्खु चललन उनका के;
लोग कहल 'बैभासिक' !
एही मत के मानेवाला,
आचारज बसुबंधु हाँकड़ी;
इनका ले कुछ आगे बढ़ि के,
रचलन गूढ़ ग्यान के पोथी;
दीआ रूपी,
प्रिय अभिधरम कोस के !
बैभासिक लोगन से,
थोरे फरक बिचारन वाला;
आपन अलगा संघ बनवलन !
ई अभिधम्मपिटक के,
बउधदेव के;
कहल बचन मनलन ना !

कवन मोल करितन तव,
नई विभासाटीका के !
मुनि का कहल सुत्त-बचनन के,
साच असल मनलन ई।
सुत्तान्तन के मनला से वस,
इनकर नाँव परल सौत्तान्तिक !
सौत्तान्तिक-मत
पहिले रोपि-थापि पनपवलन;
भिक्खु कुमारलात आचारज,
तच्छसिला के बासी !
अपना धरम विचारन के ई,
कथारूप में रचि के;
लोगन के समुझवलन !
जेकर नगद नमूना,
सहज 'कलपना मंडतिका' के,
मानि सकी ला रउरा !
निरमल सँसकीरित-भासा में,
पोथी हऽ ई;
अस्सी गो कहनिन के !

× ×

भारत देस हमन के,
खानि सुघर रतनन के !
धरती ऊपर नगद नमूना,
ग्यानी धरम-विचारक एहिजा;
समय-समय पर भइलन !
जेनिएँ आँखि घुमाईं,
लाल निराला देखवि रउरा !
जे भइलन वेजोड़ जगत में।
अपना .जुग-जीवन में !
पुरुसारथ-परमारथ सेवा,
गूढ़ ग्यान-बिग्यान-जोग में !
बिक्रम संवत,
बरिस दूइ सइ तेइस गइले;
मध्य बरार देस में;
बाभन-कुल में;
नागार्जुन के जनम भइल सुभ !
ऊ रहलन अवतार धरम के,
सुघर रूप सुभ सहज-ग्यान के !
सभ वेदन के पढ़ि के,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गौर गुनावन कइले रहलन !
अउरी देखले जनले रहलन,
बाभन लोगन का प्रिय;
केतने गूढ़ धरम पोथिन के !
बउध-भिक्खु भइला पर,
एहू निपुन धरम का;
त्रिपिटक चाहे अउरी,
ग्यान-पुंज पोथिन के;
खाली नब्बे दिन में,
सज से देखलन जनलन !
जब संतोख भइल ना मन में,
तब बढ़ि खोजे चललन;
अउरी गूढ़ धरम-सुत्तन के !
करत जतन पुरुसारथ आखिर,
जाइ हिमालय का फाटिन में;
एगो प्रिय असथविर भिक्खु से,
मिललन उनके;
महायान के सुत्त अमोल !
भिक्खु महापंडित ऊ ग्यानी,
बहुतां रहसु सिरीपरबत पर !
वैदिक आ तंतर विद्यो के,
आचारज़ मानल ऊ जालन !
कहल गइल बा उनके,
सिद्ध रसायन-विद्या के !
'सुन्नवाद' मद्धिम-मत वाली,
कई धरम पोथिन के रचि ऊ;
जनता के हित कइलन,
बनलन जस के भागी !
पोथी सभ ले उत्तम,
गूढ़ ग्यान वाली के;
नाँव 'माधमिक कारिका' हऽ,
'संसय-भरम-मल-जारिका' हऽ;
'बउध-मत-परचारिका' हऽ !

× ×

बउध-धरम के,
भइलन अबले;
दूइ भेद परधान देस में-
'हीनयान' आ 'महायान' सुभ !
हीनयान के,
रथ साधारन जानीं;
रचल-बनावल,
अपने बइठे भर के !
एकरा पर चढ़ि,
गिनल-गुँथल कुछ लोग;
जाला अपना असल निसाने !
चाहे एके,
बउध-धरम के पहिली;
टेढ़-टाढ़ पगडंडी मानीं !
बस मुसकिल से एक दूइ के,
धइके निबुकेवाली !
हीनयान हऽ खास तरह से,
धरम भिक्खु लोगन के;
अउरी भगत लोग के नाहीं !
केहू-केहू एह के,
'श्रावकयान' कहेला !
जेकर सिच्छा सुनि के लोग,
भवसागर के पार करेला;
कठिन जतन-साधन से,
जग का सुख के लात मारि आ;—
हम हमार के ममता छोड़ि !
ई हऽ हीन डहरिआ
देंहज लाभ-सवारथवाली !
एकरा में बा,
बस अपने विराग आ—
सुगति मुकुति के सिच्छा;
परमारथ के नाहीं !
महयान के,
नीक फइल लमहर रथ जानीं;
चाहे समुझीं,
भारी पोढ़ जहाजि !
बहुत लोग जेकरा पर चढ़ि के,
लाँघि अगम-भवसागर;
असल निसाने पहुँचसु,
पावसु सुगति-सांति सुख उत्तम !
ई हऽ गंगा जी के,
परम-पवित्तर निरमल धारा;
सभकर पाप गंदगी धोवे,
तारे पार उतारे वाली !
ई हऽ साचो,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दीन दहालु दया के सागर;
सभलोगन का उन्नति,
सुगति सांति-सुख खातिर;
खोलि खजाना ग्यान-रतन के,
भेद छोड़ि के बाँटेवाला !
पहिला सागर खारा,
देव-असुर के;
भेद-भाव राखे ला !
केहू के तऽ अमिरित देला,
केहू के भुलवा के;
दुख में डालेवाली मदिरा !
हीनयान के मानेवाला,
भिक्खु संतजन जइसे;
हटि समाज से अलगा,
बनि के मठ-बिहार के वासी;
मूँजि नियर मनवाँ के थूरसु,
साधसु ध्यान-समाधि जोग-तप !
ओही तरे मुनी का,
बिनय-शील सिच्छा के;
सवतुक धरम-ग्यान के,
मठ-बिहार का फाटक भीतर;
बंद राखि के,
घूमे दीहल चाहसु ना !
एक ओर तऽ,
मेंही धरम-सवालन पर ई;
बउधदेव का चुप रहला के,
'जगत जीव ईस्सर के;
उनकर नाहीं मानल', जनलन !
अउरी दूसर ओर,
बउध-मुनी का अंग-अंग के;
पूजा लायक मानि,
उनका बार, दाँत, नहँ चाहे;
भसम, धातुखंडन पर,
सुघर निराला;
सुभ मंदिर असतूपन के रचि;
अपने मुनि का प्रिय मूरति के;
ईस्सर का आसन पर,
धइके पूजे लगलन !
बस एतने से,
उनका भाव मरन के जानीं !

ओने भिक्खुदयालु,
महायान-मत मानेवाला;
बिना भेद के,
सभलोगन के!
दया-धरम के सिच्छा दिहलन,
संजम नेम सिखवलन !
डेग वढ़ा के थापन
सगरे जग में गइलन;
भाईबंधु सभन के जानि !
महायान का मत के गढ़ि के,
सिजिल रूप देबेवालन में;
पहिला कारीगर आचारज,
अस्सघोस के जानीं !
कुछ विदमान लोग उनका के,
हीनयान के;
आचारज मानेला !
बाकी, एकर असल सबूत,
उनहीं के प्रिय पोथी;
'महायान सरधोत्पाद',
बे संदेह मनाई !
उनका बचन मोताबिक,
परमारथ के सूध सचाई;
हीर तत्त 'तथता' हऽ !
थीति-नजरि से ओके,
कहल 'भूत तथता' वा !
केहू निपुन-पुरुस जब,
लाँघि सिवान बुद्धि के;
आगे डेग धरे ला,
तब ऊ जाला;
बऊध-ग्यान का ओर !
बाकी साथे-साथ,
इहो समुझि लीं रउरा कि जे;
ग्यान, बुद्धि के;
हऽ विनास ना !
मदति बुद्धिए से ले,
ग्यान ओर हम;
कदम बढाइ सकीं ला !
ओह बुद्धि के,
जो हम घाँटी फोरीं;
तब दरवाजा बोध ग्यान के,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हमरा खातिर;
रही हरदमे बंद !
खुद ग्याने ऊ,
भरम- अविद्या का कारन से;
बूधि रूप से भासे ला !
असघोस कहले बाड़न कि,—
'जइसे सांत धीर सागर जल,
पवन-उपाधि नधइले;
धइ केतना लहरन के रूप,
साफ परगटे झलकेला !
ठीक तइसहीं,
निरमल ग्यान-रूप ऊ;
हीर-पदारथ अंतिम तत्त,
भरम अविद्या-
चाहे कहीं मलिन अग्यान;
इनहीं का करते बस,
हीन बुद्धि-बलवाला;
फँसल घेराइल जीव,
हिगरि अनेकन का सरूप में;
सहज सुभावन भासित होला !
जइसे माँटी नाँव भेद से,
घइली, मेंटा, नाद वोगयरह;
तरह तरह का,
रूपन में भासे ले;
ओही तरे सूध निरकेवल,
हीर तत्त ऊ असली;
नाँव भेद का कारन,
जीवन का बहुरंगी;
मोहक रूपन में भासे ला !
साच कहीं तऽ हीर तत्त ई,
असल 'भूत तथता' हऽ;
वे विकार आ रूप नाँव के !
असुभ अविद्या से मिलिजुलि के,
केतना बिलग नाँव रूपन में;
जनुक विकारी हो भासे ले !
विसय-जगत आ-
विसयी जीव रूप में,
भासित ई सउँसे संसार;
एही मिलल-जुलल घिघोराइल,
नाँव रूपवाली 'तथता' के;
रचल गूढ़ लीला हऽ !
जब संजोगन,
जतन-जुगुति से;
निरमल ग्यान भेंटाला,
तब ई मालुम हो जाला कि;
मति से मिलल-सटल ई,
बिसय-जगत आ बिसयी जीव;
जेकर कवनो नाँव रूप ना,
ओह भूततथता के छोड़ि;
अउरी कुछऊ नाहीं !
बउध-ग्यान हऽ ई हे,
ई हे परमानंद !
अमिरित रूप तत्त ई हे हऽ,
एकरा के देखले हऽ;
जीवन के असली परमारथ !
ई हे परम धरम हऽ,
जे के समुझल कहल बने ना !
'सुन्नवाद'-मत मानेवाला,
अपना के खुद कहसु 'माधमिक' !
एह माधमिक के मतलब ह,
बिचिली डहरि पकड़ि के—
जायेवाला राही !
सत आ असत,
असुभ-सुभ;
पाप-पुन्नि सभका में,
सूत रूप में सामिल;
जीवन गति आ-
जोति तेज उनका के देत,
अउरी उनकर;
बनलो पर आधार सहारा,
उनका ले हऽ,
बहुत बिलच्छन आ बेलाग !
ई हे बिचिली डहरि बिचित्तर,
सुगत मुनी के कहल बतावल !
सुन्न सबद के,
ऊलटा अरथ समुझि के;
पुरुब आ पच्छिम के,
केतने निपुन विचारक;
मलिन भरम बस एके,
बे-जरिवाली बतिआ;

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चाहे अड़गुड़,
माने-मतलब-हीन डहरिआ;
असुभ सुतंतर सिद्ध करेलन !
हम तऽ पूरा जोर लगाके,
इहे कहब कि;
सुन्न सबद के माने असली,
मति-बानी से दूर !
कहें-बतावे में जेकरा के;
बानी समरथ हीन बेचारी !

× ×

अब आगे के हाल सुनीं कुछ,
मनचित सोधि सांत हो !
धरम-बिरिछ ई अजर अमर हऽ,
एकर सोरि पताले ठेकलि !
केतने लोग बहकि बउरा के,
बरबस टाँगी फरुसा लेके;
खोदे-काटे खातिर,
पूरा जोर लगवलन !
बाकी एकर बिगरल का ?
आपन लूरि-सहूर देखा ऊ,
दाँत चिआरि रसातल गइलन !
डाढ़ि-छिउँकिआ जरिखट,
ऊपर ले कुल्हिए कटलो पर;
धरती में ले,
गोजा नया निकलि के हरिअर;
कनखा फोरलसि पलुहल !
फेरु सघन-छायातर ओकरा,
बइठि लोग सुहताइल;
खाइल नीक सुरस फल,
पावल सुख आ सांति !
इहे सनातन रीति,
सभ दिन ले आवति वा !
जे नयनन के खोलि समय पर,
चलत धरम-चक्का के;
कहीं छटकि गड़हा में,
लेवठल आ अझुराइल देखि;
आँवन-हाल बदलि के दूसर,
धूरा नया लगाके;
पाँक धोइ नाहा, आरा, गज,
वेला-पुट्ठी तक के;
फेरु सजग हो,
सिजिल सड़कि पर डगरावति वा !

समय पाइ के,
बउध-धरम का कलप-बिरिछ में,
नया मीठ फल लागल दू गो
बरिस चारि सइ,
सुभ बिकरम संवत का लगभग;
वीर समुद्र गुपुत राजा का,
राज-काल में;
कउसिक-वंशी बाभन-कुल में,
पेशावर में;
भइलन दूइ रतन अनमोल !
पंडित राज असंग नगीना,
आचारज वसुबंधु महान !
दूनो एक लाद के भाई,
सवतुक साधु-सुभाव चालि के !
विमल बउध-मत,
'जोगाचार' निपुन भा-
सुभ 'विग्यानवाद' के,
जाने-माने रोपेवाला;
ग्यानी-पुरुस रहल ऊ लोग !
एह दूइ भाइन का बाद,
एही मत में आगे चलि के;
दक्खिन में कांची का पँजरा,
गाँव 'सिंह-वक्तर' में;
बाभन-कुल में,
भइलन महापुरुस दिङ्नाग;
बउध-'नेयाव'- ग्यान के,
नगद्द सुरेमन पंडित !
साच कहीं त ऊहे एके,
सिरजे थापे रोपेवाला !
बउध-नेयाव-जगत में,
उनकर बहुत ऊँच जगहा वा !
बउध-धरम का आसमान में,
आगे उगलन;
विमल जोति फइलावेवाला,
सरद-पुरनवाँसी के चान ;

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जेकरा सांत सरस किरनन से,
धरती ऊपर अमिरित वरिसल !
ऊ बिदमान सिरोमन,
विद्या-सागर सुरस सवदगर;
ग्यान-रतन-धन सोकड़,
नालंदा का प्रिय आचारज;
धरमपाल के चेला,
पारस-पुरुस जोग पूजा का;
रहलन सानी सिंह समान,
धन्नि ! धरमकीरति मतिमान !

अब आगे के सुनीं बयान,
कइसे कव आ कहवाँ:
वउध-भिक्खु लोगन के,
भइल साहसिक धरम-पयान !
बउधदेव का जुग ले,
बहुत पहिलहूँ;
सुबरन भूँइ सुघर वरमा से,
निपुन देस भारत के;
बेवपारिक संबंध रहे !
बाकी सभसे पहिले;
भारत-धरम-पताका,
पियदरसी असोक का;
राज-काल में फहरल !
पाटलिपुत्त नगर का,
नगद तीसरी धरम-सभा से;
असथविरन का नायक,
लायक मोगलिपूत तिस्स के;
हुकुम पाइ के,
भिक्खु सोण आ उत्तर;
सुभ विकरम संवत ले पहिले,
वरिस एक सइ नब्बे आ छव;
कातिक मास पुरनवाँसी के,
आपन डेग वढ़वलन
सुवरन भूँइ देस बरमा में,
पहुँचि धरम के;
नया चिराग जरावे खातिर !
दुनिआ का लीला के,
के समुझ-समुझावे ?

धरम-काज में बिघिन परेलां,
कठिन जाँच कुछ होले पहिले !
ठोंकि-ठेठा के देखल जाला
धरमदूत लोगन के !
जे तऽ रहल बिरागी त्यागी
बिनयी सीली आ उपकारी !
ऊहे पहुँचल पूँगल,
धरम-धजा फहरावल !
सुजस सांति सुख पावल,
जीवन सफल वनावल !
जवना जुग में,
धरमदूत बरमा में गइलन;
ओह समय कुछ,
दसा देस के रहे बिचित्तर !
एगो कूर राछसी,
निकलि समुंदर का भीतर ले;
राजमहल में जनमेवाला,
लइकन के धइ खाय !
देखीं भला ! घरी साइत कि,
ओही समय महल में;
वालक एगो जनमल !
जइसे भिक्खु सोन आ उत्तर,
पहुँचि देस में;
सागर तीरे नाँव लगा के,
उतरि ठाढ़ भइलन धरती पर !
असथविरन के देखि अचक्के,
सोझलोग ओहिजा के;
हाहाकार मचावत दउरल !
हो हथियारवंद जा पहुँचल,
उनका पँजरा मारे खातिर !
'वाति कहीं कि का हऽ -
पूछि कहल असथविर लोग तब—
'हमनीं का तऽ,
हईं साधु-संन्यासी;
सेवक रउरे सभ के,
ओह राछसिन के साथी ना !'
ओही घरी सहज संजोगन,
कूर राछसिन ऊ हठि;
आपन दल-वल ले के,
सागर ले बहरी आ निकललि !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ओकें देखते लोग बटुरि के,
हल्ला-कूह मचावल !
सिद्ध संत असथविर लोग तब,
तुरत जोग-बल तप से अपना;
पैंदा कइके,
दूना कूर भयंकर राछस;
साथी सहित राछसिन के झट,
चारो भर से घेरलन !
संत लोग के,
तप-बल देखि डेराइलि;
कूर राछसी समुझि-बूझि कि—
'मिलल देस ई एह लोग के',
भागि गइलि दल लेके आपन !
चारो भर ले,
ओह देस का;
रइछा के उपाइ कइ,
ऊ दूनो असथविर महान;
ओहिजा बटुराइल लोगन के,
'बरम्हजाल' सुभ धरम सुत्त के;
उत्तम सिच्छा दिहलन !
बहुत लोग खुस होके,
सरन-सील अपनावल !
साठि हजार देस बासिन के,
धरम-नयन खुलि गइलन !
ऊँच कुलन के,
साढ़े तीनि हजार कुवाँरी;
अउरी डेढ़ हजार कुवाँर,
बउध-धरम अपना के;
भिक्खु भिक्खुनी भइलन !
ओह समय से,
राजघराना भीतर;
जनमेवाला सभ लइकन के,
प्रिय सोणुत्तर;
नाँव धराये लागल !
बउध-धरम का साथे ओहिजा,
चतुर गुनी सिच्छित सुभ करमी;
धरम-देस भारत के,
पहुँचल होई;
बिनय-शील-सवतुक गुन,
सभ आचार-बिचार !
एकरा में केहू का,
ना होई तनिको संदेह !
दक्खिन बरमा का धरती पर,
डेढ़ हजार बरिस ले पहिले;
पिऊ जाति का,
बउध धरम मनला के;
नगद सबूत मिलल कुछ बाटे !
एह जाति का बहुत पुरानी,
प्रिय रजधानी;
नगर सिरीछेत्तर के,
खँड़हर आजो;
'हेआवजा' में बाटे ठाढ़ !
ओकरा पँजरे,
नीक गाँव मौङ्गन में;
सोना का दूगो पत्तन पर,
दक्खिन का कदंब अच्छरि आ-
प्रिय पाली भासा में,
खोदल बउध-वचन पावल बा !
ओह वचन के,
लिहल गइल बा;
सिंहल का पाली त्रिपिटक से !
हेआवजा में दूसर,
पाली-पत्थल-लेख मिलल बा !
जइके होखे,
सिजिल ताड़ के पोथी;
ठीक ओइसने,
सोना वाला;
बीस सुघर पत्तन पर,
बउध-धरम के;
एगो मजिगर पोथी
लिखल मिललि बा ओहिजे !
दक्खिन बरमा,
हऽ तलैंग जाति के देस !
पिऊ जाति-भाइन समान ऊ,
समरथवान सुकरमी,
पूरा धुनी तलैंगो लोग;
भिक्खु सोण उत्तर आ,
प्रिय असथविर महेन्दरवाला;
थेर बउध-मत,
मानत रहे प्रेम से !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उनकर देस सुहेल,
रहे पोढ़ गढ़ बउध-धरम के!
नगरी हंसावती मोहिनी,
'अउरी सहज दुलरुई'
सुघर सुघरमावती नमूना,
बउध-धरम आ-
बिद्या कारीगरी कला के;
रहली गढ़ बेजोड़!
उनहीं के अब लोग आज के,
पेगू आ थातोन कहत वा!
जब महमूद गजनवी,
चला जुलुम के चक्की;
नगर बनारस,
चउपट कइले होई;
बाद पचास बरिस का ओकरा,
राज रहे पेगू में;
चतुर तिस्स राजा के!
दंत कथा ओहिजा के,
इहे बतावति वा कि;
ऊ पहिले तऽ,
रहल सुरू में बाभन-धरमी!
डाह राखि बउधन से,
उनका नीक बउध-मुरतिन के;
गड़हा खाइन में फेंकवा दे!
एक समय में,
पेगू के बनिआइनि एगो;
सुघरि सुलच्छनि भदरा देवी,
बउध-मुनी में;
भाव भगति सुभ राखेवाली,
रहे नहाति नगर का;
निरमल जलवाला पोखरा में!
एतने में ओकरा गोड़न से,
ठेकलि फेंकलि;
बउधदेव के मूरति एगो!
ऊ राजा के,
खिसिआइल जनलो पर;
धोइ पोंछि मूरति के,
मंदिर में चादर से धइलसि!
जब राजा के खबर मिलल तऽ,
बहुत कोप कइलन ऊ!

बाकी, देखि बिचार पोढ़ आं-
नगद नीक सुघराई;
ओह नया जुवती के,
मनवाँ उनकर रीझल।
तब दूसर का,
भुला गइल कुल खीझल!
ऊ जुवती के,
तुरत बना पटरानी आपन;
बउध-धरम कइलन मंजूर!
धरम-सुधार करे खातिर जब,
तिब्बत गइलन;
दीपंकर श्री ग्यान!
ओही समय धरम के,
दसा रहे गिरती पर;
देस उत्तरी बरमो में!
एही बीच देस का,
सुखी तलैंग वंस के;
एगो निपुन सपूत,
कदम बढ़ा के आगे आइल;
बउध-धरम अपनवलस,
बनल सुरेमन भिक्खु!
नाँव परल ओकर सिन् अरहन,
पोथिन के वा ई कहनाम!
सिन् अरहन त्रिपिटक आ-
केतने गूढ़ धरम पोथिन के,
रहलन निपुन पारखी पंडित!
कसि के कमर प्रेमबस चललन,
म्रम्म जाति में;
करे धरम-परचार!
ऊ पगान का राजा,
प्रिय अनिरूध चतुर;
धरम-प्रेम के सुनि के,
छोड़ि नगर थातोन;
जा पगान का पँजरा,
बन में आसन जमा खुसी से;
भजन-भाव में लगलन!
लोग एक दिन लेके उनके,
गइल पास राजा का!
चीन्हा-परचे बात-चीत जब,
भइल भिक्खु से राजा जी का;

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तब ऊ बिनती कइलन उनसे,
बउध-मुनी के कहल-बतावल;
कुछ उपदेस सुनावे खातिर!
सिद्ध-संत सिन् अरहन,
सरधावान भगत राजा के;

एह किसिम के सवतुक,
सिच्छा दिहलन कि ऊ;
गदगद हो के कहलन—
'सरन हमार आज से,
दूसर केहू नइँखे!
हे प्रिय सामी! सुनीं आजु से,
हम आपन देहिआँ आ जीवन;
अरपि देत बानीं रउरा के,
रउरे नगद धरम के;
अपनावत अब बानीं!
एह किसिम से,
ऊ राजा अनिरूध,
महायान का कोखी जनमल;
बज्र्यानमत छोड़ि,
सुभ असयविरवाद अपनवलन!
सिन् अरहन का,
सुभ सलाह के मानि;
धुनी भगतराज अनिरूध,
अपना एगो;
चतुर-राजमंत्री के,
भेंट-नजरि दे भेजलन;
प्रिय थातोन नरेस,
सुखी मनोहर का दरबारे;
बउध-धरम-पोथी त्रिपिटक आ-
परम पवित्तर धातुन खातिर!
हठ गुमान में भूलि मनोहर,
कुछ दिहलन ना;
विनय प्रेम का बदले उलटे
टेढ़ जबाब सुनवलन ई कि; -
'तोहरा नियर गइल-गुजरल आ-
हीन बुद्धिवालन का पासे,
त्रिपिटक आ धातुन के,
भेजल जाइ सके ना!
सिंह राज के चरबी,
सोना का उत्तम बरतन में;
राखल जाइ सके ले
माँटीवाला में ना!'
बाति टेढ़ ई,
बनलि आगि में घीव!
सुनि राजा अनिरूध,
भारी पलटन लेके;
प्रिय थातोन नगर पर;
कइलन तुरत चढ़ाई;

आखिरकार मनोहर,
भाई-बंधु मीत-मंतिरिन संग;
'पकड़ि कैद हो,'
झंखि पगान नगर के अइलन!
एतने नाहीं,
त्रिपिटक के कुल पोथी;
अउरी बउध-भिक्खु विदमान,
अइलन ओही लगले!
करीं खियाल ओह सोभा के,
जब कि राजा जी का;
बत्तिस गो उज्जर हाथिन पर
तीसो त्रिपिटक पोथी;
ओह तलेंग देस ले,
भ्रम्म-देस में अइली!
अउरी उनका साथे-साथ,
भिक्खु संत त्यागी बिदमान;
आदर से ले आइल गइलन!
उहे समय हऽ जब बरमा से,
अड़गुड़ तांतरिक बउध-मत;
अउरी ओकर.—
प्रिय उपरोहित उपरोहित आरी';
भइलन विदा सदा के!
नया धरम-जुग,
सुभ भइल मंगल हितकारी!
ओने चोल देस के राजा,
सांत सुखी सिंहल के;
डलले रहल घोर संकठ में!
चोलन का धावा से,
भारी हानि भइल सिंहल के!
चउपट भइली,
बउध धरम के पोथी केतने;

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भिक्खु संत कम भइलन !
तब ओहिजा के राजा,
बिजयबाहु प्रिय;
भेजि धरम पोथी कुछ,
भिक्खु लोग का साथे;
धरमी बरमी राजा
प्रिय अनिरूध चतुर के;
मदति-मसाला खातिर लिखलन !
एही बीच मदति ले पहिले,
बिजयबाहु के विजय भइलि आ-
चोल हारि के भगलन !
एने पा सनेस के,
सुखी पगान नरेस;
बउध-भिक्खु लोगन का साथे,
नगद धरमपोथिन के भेंजलन;
अउरी एगो उज्जर हाथी,
वीर 'विजय' सिंहल राजा के !
साथे अरज लगवलन,
बउध-मुनी का ;
दाँत-धातु खातिर सुभ !
सिंहल नायक खुसी भाव से,
उनकर इच्छा पूरन कइलन !
एकरा पहिले,
ऊ अनिरूध नरेस;
थेर 'कित्तरा' से कुछ,
धातु-भाग प्रिय पवले रहलन !
एह धरम-धातुन पर,
पूजा खातिर सभका;
ऊ सरधा से,
कइलन सुरू बनावे;
स्वेजिगोन में,
एगो सुघर महा असतूप !
पूरा भइल जवन आगे जा,
उनका लायक बेटा;
धुनी केनजित्था का हाथे !
सिनू-अरहन का पुरुसारथ से,
दक्खिन बरमावाली;
गुनी तलैंग जाति के,
रहन-सहन आ—
नीक नगद आचार-विचार;

ब्रम्म-देस उत्तर बरमा के,
बहुत थोरे दिन में;
रगर साथ से अपना,
गुनी चतुर भलमानुस;
साजि बनवलस सहजे !
पुरुस समरथी;
प्रिय अनिरूध राज के;
पूत सपूत केनजित्था ऊ,
अपना बापे नियर रहल, अति;—
साच सुजन लायक सुभकरमी !
भगति-भाव सरधा से,
बनअवलस ऊ;
केतने मंदिर आ असतूप !
जिनका में ले,
प्रिय 'आनंद विहार' सुघर के;
नगद राजधानी पगान आ—
बरमा का सिवान ले बहरो,
दूर दूर तक,
नाँव सुजस सुभ फइलल !
एह विहार सिजिल का,
पहिली परिकरमा का;
पोढ़ दिवालन भीतर,
अस्सी सुघर झरोखन में;
बउध मुनी का,
सहज सुरू जीवन से;
बोध-ग्यान होखे तक वाली,
कुल घटनन के;
मूरति नीक बनलि बाड़ी सँ !
देवालन पर,
अउरी ढालन पर विहार;
कलईवाली,
माटी का प्रिय तसवीरन के;
निपुनाई से सज से,
रूप-रूप में;
रचल उरेहल बाटे !
ओह सभन में,
एक-एक का नीचे;
प्रिय तलैंग-भासा में,
संछेपे;
कुछ-कुछ लिखल गइल बा !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ऊपरवाला दूसर तह में,
माटी के चमकीली मूरति;
रचल सजावल बाड़ी,
जिनका में कुल;
साढ़े पाँचो सइ प्रिय जातक
रूप रूप में
रचल देखावल बाड़न !
पहिला बरमी राजा,
रहल केनजित्थे ऊ;
जे कि बोध गया का,
महाविहार-भवन के;
फेरु मरम्मत करा मजे में,
धरम-चिराग जरे खातिर नित;
अनघा संपति,
दानरूप में भेजलस !
सिन् अरहन का बाद देस में,
भिक्खु पंथगू ;
संघराज भइलन ओहिजा के !
सिंहल रहे पुरान पोढ़ गढ़,
थेरवाद के;
भारी महिमावाला !
एही से ओहिजा का,
बनल पुराना असतूपन आ-
संघ-विहार-मठन का,
दरसन-खातिर;
बहुत भिक्खु सरधाबस,
जाइल करसु हरदमे
एक बेर जायेवालन में,
नायक उत्तरजीव थेर संग;
नया जवान धुनी आ त्यागी,
सामणेर चपटो के;
नाँव मिलत बा आदरवाला !
सिंहल वासी भिक्खु संजमी,
देखि विनय सरधा चपदा के;
उनके भिक्खु बनवलन !
भिक्खु बनल चपटा के,
सिंहल का सुभ परंपरा में;
घटना रहे बड़ा अनमोल !
एकरा करते,
पिछिला तीनि सइ बरिसन से;
कले-कले चलि आवत,
भेद-भाव आ खींचातानी;
सिंहल-बरमी,
दूनों थेर-भिक्खु-संघन के;
सहजे में ओरिआइल !
सिंहल में दस बरिस ठहरि के,
चपटा सज से पढ़लन त्रिपिटक;
अउरी उनका अट्ठकथन के !
अब ऊ रहलन,
संत सुरेमन त्यागी;
भिक्खुराज असथविर महान् !
समय पाइ जब,
अपना देस भूमि बरमा के;
ऊ विचार कइलन लवटे के,
तब सोचलन कि—
'गुरुवर उत्तरजीव,
वूढ़ महा असथविर राज का;
मरि गइला पर,
जब पगान का;
भिक्खु लोग का साथे,
हम सुभ विनय करम के;
चाहबि नाहीं कइल अगर जो,
विनय करम तब;
कइसे करबि अकेले,
बिना पाँच संतन का गन का ?
एसे अच्छा होई कि हम,
त्रिपिटक का बिदमान;
चारि दूसरा,
भिक्खु लोग का साथे;
लवटीं अपना देस' !
ई बिचारि ऊ,
भिक्खु तामलुक देसी;
महा थेर मतिमान सीवली,
प्रिय कंबोजराज-संतान;—
तामलिंद आ—
कांची का आनंद,
अउरी लंका वासी राहुल;
एहि चारि महा थेरन के,
साथे लिहले;
बारह सइ अरतिस-ओनतालिस,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सुभ विकरम संवत् में;
लवटि पगान पहुँचलन !
चपटा सिंहल परंपरा के,
मन में राखि गुमान;
दूसर भिक्खु लोग का साथे,
विनय-करम कइलन ना !
भइल संघ में तब से,
दूइ भेद बरमा में;
ब्रम्म-संघ आ-
सिंहल-संघ नावँ के !
जब चपटा का,
ई अभिमान रहल कि;
भिक्खु हईं हम,
महा महेन्दर वाला;
उत्तम महाविहार-संघ का,
परंपरा के !
तब दूसर लोगम का,
काहे ना घमंड होइत कि;
हमनों का तऽ,
निपुन धरम-संगीति तीसरी;
भारतवाली के भेजल प्रिय-,
भिक्खु सोणउत्तर का,
परंपरा के संत हईं जा !
जतन कइल ई लोग बहुत कि,
भिक्खु सोण उत्तर आ—
भिक्खु महेन्दर;
एके परंपरा के हउवनि,
बाकी तनिको असर परल ना;
हठी भिक्खु चपटा का दल पर !
चपटा चाहे साथी उनकर,
रहलन निपुन संजमी पंडित;
विनय नेम के मानेवाला !
एही से उनका पर,
ओह घरी का राजा;
सीथू के कुछ,
सरधा रहल बिसेस !
जे से कि ऊ खुस हो,
ओह लोग के;
मदत-मसाला दिहलन पूरा !
भइल नगद फल एकर,
कि बरमा में;
सिंहल संघ बढ़ल आगे के !
चपटा का साथिन में राहुल,
सभले अधिका पंडित रहलन !
सहज सुभावन राजा सीथू,
उनका आदर भाव भगति में;
भोज एकदिन कइलन !
ओहिजे राहुल,
एगो सुघर नया जुवती पर!
मोहित होके,
निहचय कइलन;
भिक्खु भेख छोड़े के !

चपटा चाहे अउरी दूसर,
भिक्खु संत असथविर महान;
केतनो कोसिस कइलन,
उनका के समुझावे के;
बाकी कवनो असर परल ना !
भिक्खु भेख आ-
सील सँकोच छोड़ि के राहुल;
गइलन देस मलाया !
एह नया घटना से,
पोढ़ सिंहली भिक्खु-संघ के;
भारी धक्का लागल !
थोरे दिन का बाद,
देहिआँ छूटि गइलि चपटो के !
तामलिंद, आनंद, सीवली,
ओही लगन भाव सरधा से;
नगद पगान नगर में रहि के,
रहलन करत धरम परचार !
ई ऊ समय रहल कि,
जब भारत में;
तुरुक लोग के राज-हुकूमत,
कायम भइल रहे कुछ !
कुतुबुद्दीन गुलाम साह का,
सेनापति जुलुमी मतवाला;
बखतियार के,
धावा भइल बिहार राज पर !
ऊ पालन का,
रजधानी पर कबजा कइलस;

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लुटलस महल बिहारन के !
नालंदा के चउपट कइलस,
भिक्खु लोग के;
मारि काटि के सोपह !
ओने मुसलमान वउरा के,
पुन्नि धाम कासी आ--
रिसि-पत्तन प्रिय सारनाथ के;
लूटि-फूँकि कइलन बरबाद !
उत्तर आ पुरुबी भारत में,
बउध भिक्खु लोगन के;
अउरी उनका,
मठ मंदिर असतूपन के;
सरबनास हो चुकल रहे !
जेकरा साथे,
ओहिजा फइलल;
महायान के कनखा,
तांतरिक बउध-मत;
हरदम खातिर,
होत रहे बरबाद !

× ×

धम्मचेति का जुग में,
फेरु तलैंग-सितारा चमकल !
छोड़ि भिक्खु जीवन ऊ,
राजकाज में आइल रहलन !
एसे उनका,
रहे धरम में सरधा पूरा !
सिंहल-बरमी,
दूनो परंपरा का;
संघ भेद के,
दूर करे खातिर ऊ;
बाइस निपुन भिक्खु संतन के,
उनका चेलन का संग;
अपना दूइ राज मँतिरिन का,
निगरानी में लंका भेजलन !
कयलानी नदिया का बीच,
भिक्खु-संघ सिंहल के;
बरमी भिक्खु लोग के,
फेरु धरम के सिच्छा देके;
सवतुक संत बनवलस !

भिक्खु लवटलन,
अपना बरमा देस !
सिंहवाला भिक्खु-संघ के
धम्मचेति कइलन मंजूर ।
उनकर मरजी-मदति पाइ के,
बढ़ल सिंहली संघ जोर से !
ओकर तूँती बोले लागल
बरमा भर में सगरे !

× ×

दूसर बरमी राजा,
मिन्-दोन-मिन् के हालि सुनीं !
ऊ विदमान् भिक्खु लोगन के,
जुटा प्रेम से;
तीनि बरिस तक,
देख रेख में अपना,
नया रूप त्रिपिटक के दिहलन;
सोधि-सवाँरि मजे में !
सँउसे त्रिपिटक के ई रूप,
सुघर संगमरमर का;
पटरिन पर खोदवा के,
पास माँडले का अति;
कुथो-दाच का सुभ बिहार में,
लगववलन सरधा से;
धरम-ग्यान का रइछा खातिर !
महिमा देखीं वउधदेव के,
धरम देस भारत आ -
धरमी बरमी भाइन के कि
बउध-धरम आजो बा;
राज-धरम वरमा के !

× ×

हाल कहत अब वानीं,
दक्खिन पूरुब का देसन के;
जहवाँ भारत का लोगन के,
खेमा, वास अड़ार रहे !
पसरल, फूलल-फरल मजे में,
उनके विद्या, बुद्धि, तेज, बल;
कारीगरी-कला-गुन,
सुभ आचार-विचार !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सुबरन दीप-सुमात्रा,
हिन्द एसिया के हऽ;
एगो भारी टापू !
लंका आ दक्खिन भारत से,
बेवपारिक जहाज-बेड़न का;
पार करे में बंग बंगाला खाढ़ी,
बीच डहरि में परले एकर;
रहल ठोस कीमति आ ठाँव !
एह देस के,
सभसे पोढ़ पुराना;
राजनेति के अड्डा
सिरी विजय मसहूर रहल !
पलेम्बंङ् का नया नाँव से,
कंपर नदिआ का किनार पर;
आजो जे कायम बा !
एह देस में,
बउथ-धरम के मानेवाला।
पहिला राजा भइल सयोलि !
बिकरम संवत,
सुध सात सइ एकतालिस में;
एहिजा बउध-नरेस,
श्री जयनागवली के;
सुजस-धजा सुभ,
अपना भुज़बल पुरुसारथ से;
सुखी सुतंतर होके,
मउज लेत लहरन के;
फहरति रहे समुंदर बीच !
हिन्द महासागर का,
सभ टापुन का बीच;
सिरी बिजय ई,
बिनय, सील, विद्या गुन;
कारींगरी-कला आ-
सुभ आचार-विचार धरम के,
रहे अखाढ़ा उत्तम !
संसकीरित विद्या के,
एहिजा रहे विश्वविद्यालय !
सात वरिस तक,
ईचिङ् एहिजे रहिके;
पढ़लस केतने
गूढ़ धरम पोथिन के;

विमल ग्यान गुन पवलस !
दीपंकर भारत के,
पंडितराज नगीना;
रहि के एहिजा,
महापुरुस विदमान सिरोमनि;
धरमपाल का सुभचरनन में,
साधन कइलन;
बारह वरिस लगन से,
पढ़लन सवतुक विद्या;
सिखलन केतने,
गूढ़ ग्यान-विग्यान !
बउध-धरम का,
महायान-शाखा के,
गढ़ मजबूत रहल ई !
साच कहीं तऽ,
सुघर नगरिआ
सिरी बिजय ई,
धरती ऊपर !
नगद नया वैकुंठ चुहिलगर,
प्रिय शैलेन्दर कुल का;
धरमधुरंधर,
धुनी राजनायक लोगन के;
रचल वसावल हउवे !
कबहीं एहिजा,
सिरि विजयेन्दर राजा;
राजगुरु असथविर महान्,
भिक्खु जयंत गुनी से कहि के;
वजववले रहलन सुभ,
ईंटन वाला;
तीनि सुघर असतूप !
जब ऊ संत जयंत,
छोड़ि जगत के;
गइलन अंते,
तव उनकर प्रिय चेला अधिमुख;
तीनि पुराना,
असतूपन का पँजरा;
पोढ़ सिजिल ईंटन से,
दूसर दूगो;
नीक नया असतूप बनवलन !
एह राज में—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बउधदेव के,
पीतरवाली मूरति एगो;
छठवीं सइबरिसी के,
परबत सेगुनटोग नाँव का;
कवनो जगहा में पावलि वा।
दूसरि पत्थल वाली,
पावल गइलि कवे जाँबी में !

× ×

जावा हऽ भारत के,
वहुत पुराना खेंमा !
एकें बगिआ सजगर जानीं,
मन के सोहे मोहे वाली !
जावा वाली धरती,
खेती-बारी खातिर;
सब दिन ले दुनिआँ में,
हऽ पूरा मसहूर !
एकरा बन-संपति के,
बात कहीं का;
जग में ओकर,
दूसर पटतर नइँखे !
बहुत पुरान धरम पोथिन में,
सगरें एकर;
नाँव नगद जवदीप लिखल बा !
बिकरम संवत्,
ठीक चारि सइ एकहत्तर में;
चीनी धरमदूत ऊ,
फाहियान भारत से;
लंका होके लवटत,
पाँच महीना;
एह दीप में रहि के,
पढ़लन बउध-धरम पोथिन के !
ओह घरी पर एहिजा,
वउध-धरम के;
धजा रहे फहरात !
भारत का संतन के,
साहस सेवा त्याग देखि के;
रोवाँ ठाढ़ होत बा,
लोर गिरत नयनन से;
वृद्धि थाकि थहराति पराति !

काशमीर का,
संघानंद नरेस निपुन के;
लायक पूत धूनी गूनवरमा,
राजसिंहासन के ठोकरा के,
बनलन त्यागी भिक्खु !
ऊ राजा के,
रहलन पूत अकेला !
जब राजा मरलन आ-
लोग कहल उनका के,
राज-हुकूमत का लगाम के;
पकड़ि सिंहासन पर बइठे के,
तवो ध्यान ऊ दिहलन नाहीं;
सिजिल ग्यान-बयराग-डहरि धइ,
आगे बढ़ते गइलन !
धरम-काज परहित-सेवा. में,
मेवा मिलत रहे उनका के !
तीस वरिस का नया उमिरि में,
संसारिक-सुख-लालच छोड़ि;
सुनि के सुजस देस-सिंहल के,
धरमदूत बनि;
ऊ साहस सरधा से,
मगन होइ के गइलन ओहिजा !
कुछ दिन सिंहल में रहि,
ऊ लोगन के;
विनय सील के सिच्छा दिहलन,
बउध-धरम का गूढ़ ग्यान के;
रसे-रसे समुझवलन !
वहता पानी रमता संत,
निरमल रहिं के,
सभई के सुख देलन !
एक जगहि बन्हला रुकला से,
बरबस गंदा होलन !
अइसन सोचि सुभावन,
संत सुरेमन ग्यानी;
धूनी वीर गुनबरमा,
बिचरत जाइ पहुँचलन जावा !
सुनि के उनसे,
बउध-धरम के सिच्छा सवतुक;
सुखी राजमाता आ-
धरमी राजा प्रिय जावा के,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बउध-धरम अपनवलन !
समय पाइ के,
भिक्खु सिरोमनि गुणवरमा के;
सुजस चीन जा पहुँचल !
नेवँता पाके,
ओहिजा का राजा के;
भारत का बेवपारी,
नंदी का जहाज में चढ़ि के;
संत साहसी सुभ करमी ऊ
चारि सइ अस्सी आ आठ;
सुभ विकरम संवत् में.
बउध-धरम के झंडा लिहले;
जाइ पहुँचलन नानकिंग में !
बाकी कुछुवे दिन रहि,
आपन पहरा पूरा कइके;
पैंसठ बरिस उमिरि भइला पर,
माटी का देहिआँ के;
धरती पर ओठँघा के,
पवलन सुभ निरवान !
जावा पर दक्खिन भारत के
भारी छाप मिलत बा
दू सइ सुभ विकरम संवत् का,
आस-पास में,
सिंहल, चीन, किरात, मलय तक,
बउध-धरम के;
भइल रहे परचार !
ओह घरी पर, दक्खिन भारत देस;
नदी विमल कृष्णा का तीरे,
धरणी कोट नगरिआ;
धान्य कटक ऊ,
अँगुठीनग अमरावति;
तीरथ रहे बहुत मसहूर !
एकर बा ओहिजा के,
चइत बड़ा भारी परमान !
रचल गइल जे,
सुभ बिकरम संवत् का;
सुरू समय ले,
बरिस सयकड़न पहिले !
सुघर चइत ऊ,
निपुन भवन-रचना विद्या के;
मूरति कारीगरी कला के;
समुझल जाला नगद नमूना;
बिना जोड़ पटतर के !
एकर उत्तम,
कारीगरी-कला ई;
गुनी सातवाहन लोगन के,
हउवे देन अमोल !
जे आगे चलि,
फूलल-फरलि मजे में;
इछ्वाकुन का,
भाव-भगति-सरधा से;
नागारजुन कोंडा का,
महा चइत का सुघर कला में !
जावा के जानीं तसवीर,
दक्खिन वासी;
पल्लव राजवंस आ—
ओहिजा का लोगन का,
सुभ आचार-बिचारन के !
जावा अउरी हिन्द चीन में,
सैव धरम के महिमा;
देखे में आवत बा !
कांची के का कहीं कहानी,
जे हमनीं के दिहलस केतन;
रतन सुघर अनमोल !
कविजन में दंडी आ भारवि,
रहलन एकरे लाल नगीना !
ऊ दिन घरी धन्नि जब,
एह धरम-नगरी में;
महा पुरुस विद्मान विचारक
दिङ्नाग के जनम भइल !
पंडितराज धरम कीरति के,
जनम भइल सुभ;
एही पुन्नि देस में !
धन्य ! पल्लवन वाली,
परग पवित्तर–
पुरी सात में एक;
प्रिय कांची का आगा,
के ना आपन पगरी पटकल ?
उत्तर भारत वासी,
गुपुत बंस के;
बीर सिरोमनि राजा,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रिय समुद्रगुपुतो तऽ;
पल्लवराजा बिसुनगोप के,
कबहीं माँथ नववले रहलन !
संसकीरित परधान भइल जब,
ओकर तूती बोले लागलि;
तब ऊ कांची बनलि अखाड़ा,
विद्या-ग्यान-कला के !
प्रिय कादंब-राजकुल-थापक,
ऊ मयूर सरमा सरधालु;
एहिजें आइल रहलन.
पढ़े प्रेम से सुभ बेदन के !
जावा आ चंपा में,
सँसकीरित लेखन के;
बहुत मिलल के,
साफ बतावत बां कि
धरम दूत कांचो के,
अइलन एहिजो ओह समय में;
जब कि पल्लव देस,
प्राकृत भासा छोड़ि-छाड़ि के;
सँसकीरित के,
बनल रहे गढ़ पोढ़ !
पच्छिम जावा-बताविया का,
राजा पूरन बरमावाली;
नीक नगरिआ सुखी तारुमा,
सुघर राजधानी के;
पहिले जाके देखीं !
जहवाँ भारत-धरम-पताका,
बिकरम संवत;
पाँच सइ का लगभग,
रहे हँसति लहराति ;
तब बढ़ि चलीं बीच जावा में,
नीक कलिंग राज में !
ओहिजा पहुँचि, चढ़ीं परबत पर,
देखीं प्रिय मयदान दिओङ् !
जहाँ पांडवन वाला, वाड़न—
सुभ मंदिर मसहूर !
सिव, दुरगा, गनेस आ—
बरम्हा बिसुन महेस वोगयरह,
सभ देवतन के !
अब सयलेन्दर बंसी,
राजन के कुछ सुनी कहानी !
जावा भा सुबरन दीपे तक;
उनकर बउध-धरम के प्रेम,
रहे बन्हाइल नाहीं !
नालंदा में,
सुबरन दीप नरेस;
वालापुत्तदेव प्रिय,
एगो नगद बिहार बना के !
देवपाल राजा के,
कीमति भेजि कई गाँवन के;
कइले रहलन सवतुक दान !
ओने जाके चोल देस में,
नगर नागपट्टन में
प्रिय सयलेन्दर राजा;
मारबिजयतुंग वरमा,
चूड़ामनि बिहार बनवा के;
दस सइ वावन,
सुभ बिकरम संवत् में
गाँव अनय मंगल के,
भाव भगति बस कइलन दान !
मंदिर-भवन-नकासी,
कारीगरी विचित्तर;
पहिले चलि के देखीं,
चंडी कलसन वाला,
चंडी का मंदिर में !
ऊ मंदिर बा ठाढ़,
एगो चउकोर चउतरा पर !
मंदिर के परधान भाग वा,
सवतुक बरगाकार !
ओकर नकटा दरवाजा पर,
बनल सुघर कीरति-मुँह बाटे!
जेकरा मुँह से,
पाँच कमल सुभ लटकत बाड़न !
केतने मजिगर मूरति,
दरवाजा पर;
रचल उरेहल बाड़ा !
दरवाजा का दूनो बगली,
दीवालन का;
ऊपर का हिस्सा में,
बाड़े रचल सुघर तसबीर !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

छत जहवाँ ले सुरू होत बा,
ओहिजा सिजिल सोझ पाँतिन में;
बउध-मुरतिआ
नीक बनावल बाड़ी !
भीतर सुभ सिंहासन,
कायम बाटे अबहीं;
जेकरा ऊपर सोभत होइहन,
तारा देवी कबहीं !
ओहिजा ले बढ़ि,
देखीं चंडी सेवू !
जहवाँ कबहीं,
बउध-मंदिरनवाला;
नगरे रहल वसावल !
दू सइ गज लंबा आ—
एक सइ अस्सी गज चाकर,
नगद सिजिल आंगन का;
चारो भर ले,
एक सइ अरसठ सुभ,
सुघर मंदिरनवाली;
दोहरी सजगर पाँति बनल बा !
बनल बीच के,
प्रिय मंदिर परधान;
दू पाँतिन में रहे घेराइल,
दूसर नीक वहत्तर;
देव मंदिरन से सुभ !
चंडी मेन्दुत
सयलेन्दर जुगवाला;
दूसर सुघर बउध-मंदिर हऽ !
ई बा बनल—
तीस गज लंबा,
छब्बीस गज चाकर आ
बाइस फुट ऊँवा बेदा पर।
असली मंदिर, बनल बीच में,
पनरह गज में बाटे !
दीवालन पर,
कई सुघर मुरतिन के;
सिजिल पाँति सोहति बा !
पाँति बीचवाली का,
उत्तर पूरुब ओर;
कमलासन पर,
आठ भुजावली देवी के;
मूरति नगद बनलि बा !
उनका दूनो बगले,
तेज चमक वाली सुभ;
दूगो मानुस मूरति बाड़ी !
एक हाथ में जिनका,
कमल फूल आ—
दूसर में प्रिय चवँर बिराजत !
देवी का दहिना हाँथन में,
संख, बज्र, माला आ बिंब;
अउरी बायें हाँथन में बा,
फरसा, आँकुस, पोथी;
बनल सोहासुत मजिगर !
एह पाँति का सनमुख,
सुघर पदुमसर से सुभ;
तीनि उठत पदुमासन,
नीक उरेहि देखावल बाड़न !
जिनिका में कि बिचिला,
दूगो ले कुछ ऊँचा बाटे !
ओह बीचवाला पर,
पाइ सहारा दू नागन के;
असली मूरति देवी वाली,
बइठल सोभि रहलि बा !
जेकर दूगो हाँथ,
ध्यान-दसा में, गोदी में बा !
बाकी दू गो में ले;
एगो में माला आ,—
दूसर में बा पोथी !
पाछे का देवालि सिजिल पर,
बिचिली-रूप-पाँति का;
ठीक बीच में,
मूरति बाटे;
अवलोकेसर बोधिसत्व के !
मेन्दुत का मंदिर में,
बउधदेव आ बोधिसत्व के;
केतने अइसन,
मजिगर मूरति बाड़ी !
एहिजा एगो,
दस फुट ऊँच;
बउधदेव के मूरति,
बस एके पत्थल से;

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गढ़लि बनावलि बाटे !
ओकरा आसन का पीढ़ा में
एगो सुभ चक्का का
दूनो ओर मिरिग दू बाड़न !
ईहे खाली,
फेरु धरम चक्का के;
फेरि घुमावे वाली,
सारनाथ का रूप-दसा के,
साफ बतावत नइँखे;
बलुक हाँथ दूनो ऊ,
बाड़न देत गवाही ओकरे !
बउधदेव के मूरति,
सीधा सादा चीवर में बस;
बिना बनावट के बाड़ी सँ !
बाकी, बोधिसत्व आ—
मंजुसिरि के मूरति,
नीमन कपड़ा से, गहना से;
सज से साजल सोहति बाड़ी !
एहिजा ले कुछ आगे,
चंडी पवान का मंदिर के;
सुघर इमारति बाटे !
थोरे में ई चुनमुन मंदिर,
निपुन दराविड़ रीति-रंग में;
जावी कारीगरी कला के,
सुघर रूप झलकावत बा !
बोरोबुदूर के हाल कही के,
जेके देखि सभन के;
बुद्धि होत हयरान झँवान !
बोरोबुदूर हऽ,
सयलेन्दर कुलवाला;
गुनी धुनी धरमी राजन का,
बउध-धरम भगती के;
परम पवित्तर सवतुक रूप !
बोरोबुदूर असतूप निराला,
सुघराई आ—
कारीगरी कला के;
अमर इयादगारी अचरजमय !
एह महा असतूप सिजिल पर,
बउधदेव के;
जीवन-कथा बिचित्तर,

चाहे केतने जातक-घटना;
नीक नगद प्रिय तसबीरन में,
रचल उरेहल बाड़ी !
जे कि अपना,
कारीगरी-कला-निपुनाई;
गुन-चतुराई खातिर,
जगभर में बाड़ी मसहूर !
बोरोबुदूर में, असल सचाई,
धारन कइले बाटे;
सुघर गूढ़ सपना के रूप !
एहिजा ठोस पत्थलन भीतर,
बाजी मारे वाली;
बिजयी नगद कलपना,
चाहे मन का गरभ-दसा के
मेंही भाव निराला,
सिरजे रचे बनावे वाला;
केतना सुघर रूप धारन कइ,
ओह घरी पर सनमुख आइल;
ई बा सोचे समुझे लायक !
अचरजकारी गूढ़ भेद के
ई हऽ एगो उत्तम;
सुभ-मानस तसबीर !
दुनियाँ का कवनो कोना में,
कारीगरी कला के;
गुन का बारीकी आ—
मति का चतुराई के;
आपन रूप देखावे खातिर,
एतना सुघर सजीला जगहा
अउरी अइसन नीमन,
परकिरती के;
सिजिल सुभाविक सोभा,
कबे मिलल ना !
बोरोबुदूर के,
ई प्रिय नगद इमारति भारी;
हऽ असतूप सुघर कि,
मजिगर महल महान्;
ए के ले के;
बिदमानन में बूधि भेद बा !
प्रियदरसी असोक आ—
सुंग-काल का

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

साँची का चइतन से;
अमरावति आ धान्यकटक का,
प्रिय चइतन तक;
असतूपन का,
पहिली उन्नति-दसा-रूप के
हमनीं देखत बानीं!
एह समय में मूरति अबहीं
ना रहली परधान!
पहिल बउध-मुरतिन के,
गढ़ल बनावल रहे सुरू भर!
बोधि सत्व के,
जनमो अवे रहल ना!
सुरू तीसरी से ले,
अठवीं सइबरिसी तक;
पाँच सइ बरिसन में,
पहिले महायान आ—
पाछे तंतर-यान रूप में,
बउध-धरम में;
भारी उलट-फेर कुछ होखल!
हीनयान आ महायान का,
सुत्तन के जब;
करी मोकाबिल तउलीं,
तब देखबि कि
हीनयान आ वज्रयान का,
कुल विचार धारन में;
अरचा-पूजा, धरम-करम आ—
देवतन का तसबीरन में,
भारी अंतर लउकत बाटे!
पाँच सइ बरिसन में
सीधा-सादा;
असतूपन का जगहा,
मुरति आ तसबीरन वाला;
मजिगर महलन ओर लोग के,
अधिका रहल झुकाव!
बोरोबुदूर में,
पहिले का चइतन आ—
पाछे का मूरति महलन के;
मेल विचित्तर बाटे!
सुघर सिरीचक्कर का,
नगद नमूना पर ई;

सूध सरबतोभद्दर वाला,
रूप ढंग में;
सज से रचल बनावल बा
काहे से कि ए में,
रचि के सुघर सुमेरू परबत;
साथे-साथ मजे में,
सुभ आ असुभ करमफल;
प्रिय मूरति रूपन में,
रचल देखावल बाड़न!
सुघर जहाज-रूप के
अइसन रचल उरेहल मूरति;
अबके कतहीं बनले नइँखे!
ई असतूप नगद मनमोहक,
चारो भर ले;
एक-एक का ऊपर,
सीढ़ीनूमा,
नव चक्करन के मिलि;
सज से रचल बनावल बाटे!
जिनका में कि
हर चक्कर ऊपर के;
अपना ले नीचे वाला से
थोरे भीतर के बटुरल बा!
सभ ले ऊपर का चक्कर पर,
घंटाकार चइत बा!
चक्करवाली दीवालन में,
बनल हरेक झरोखा भीतर;
ध्यानी बउधदेव के,
मूरति बइठावलि बा!
ध्यानी बउध लोग के
एह झरोखन में बइठावत;
ई खियाल राखल बाटे कि
प्रिय अछोभ मूरति हो पूरुब-
दक्खिन ओर रतन संभव के;
पच्छिम में अमिताभ देव आ—
उत्तर ओर अमोघसिद्धि के!
चारि चक्करन के ई हाल,
चढ़ी पाँचवाँ चक्कर में जब;
तब रउरा के,
दीवालन का-
सुघर झरोखन भीतर सगरे,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रिय वैरोचन बउधदेव के;
मूरति मिली नगद बइठावलि !
ऊपर वाला तीनों चक्कर,
सनतावन आ सातगुना छव !
अउरी ठीक तीस गज,
घेरा वाला वाड़न !
जिनका में कि,
बत्तीस, चउबिस आ सोरह गो
असतूपन के,
रचल सजावल बाटे !
एह सभे सुभ असतूपन में,
बउधदेव के;
एगो-एगो मूरति,
चतुराई से बइठावलि बा !
आरी वाला,
सभ असतूपन अइसन;
बीचो वाला;
घंटाकार सुघर असतूप,
दोहरा खिलल कमल पर;
बनल मजे में बा !
ओह अमर बोरोबुदूर का
गलिआरन में कुल मिलि;
पनरह सइ तसबीर सुघर सुभ
रचल उरेहल बाड़ी
मन के मोहें सोहे वाला !
कतहीं तऽ लोगन का,
जीवन के तसबीर सुघर बा;
कहीं लड़ाई आ हतिआ के !
कतहीं किसिम-किसिम का;
जीवन का बध आ वान्हन के,
रूप जथारथ खींचल बाटे !
केतने तसबीरन में,
रूप भयंकर नरकलोक के;
अउरी कुछ में,
सुख आनन्द सरग के;
सज से लउकावल बा !
कतहीं धरमी दाता,
सेठ सुदत्त भगत के;
सुघर जेतवन,
महाबिहार सिजिल बनवा के

बउधदेव के,
दान कइल देखलावल बा !
बोरोबुदूर का,
कारीगरी-कला आ—
रचल उरेहल,
मनमोहक भावन के;
कइसे करीं बड़ाई ?
ओकरा खातिर सबदे नइँखन !
ओतने नाहीं,
केतने वेरि हमार कलमिआ
साहस धीरज खो के,
भागि लुकाइ गइलि बसता में !
कले-कले पुचकारत ओके,
हम बहरी ले अइलीं;
अउरी अपना,
टूटल-फूटल मामूली सबदन में;
डरत-लजात कथन कुछ कइलीं
अब आगे के हिम्मति नइँखे !
गुनी धुनी परतापी,
धन-बल आ पुरुसारथवाला;
प्रिय सयलेन्दरवंसी राजा,
विद्या-गति, सिच्छागुन;
पोथी रचना चाहे,
गूढ़-ग्यान-छेतर में;
कवन देन दिहलन सुभ,
जावा का लोगन के;
एकरा बारे में तऽ,
कुछऊ कहल कठिन बा !
काहे से कि
बोरोबुदूर असतूप नियर ऊ
ठोस पोढ़ पत्थल
रहली नाहीं रचल बनावल,
जे कि मूढ़ धरम-अन्हराई;
चाहे मति का जड़ता,
पिनिक सूर सठता से;
एतना जुग से,
लड़ि के बाँचल रहिती !
सयलेन्दर राजन का वाद,
प्रिय सिंदोक नरेस;
नया राजकुल कायम कइलन !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ई रहलन राजा परतापी,
सैव-धरम के मानत !
उनका बाद राजगद्दी के,
पवली उनकर लायक बेटी;
राजहंसिनी,
सिरि ईसान तुंग विजया प्रिय !
उनकर एगो पदवी,
सुगत पच्छ सहा हऽ
जे से पता चलत बाटे कि
बउध-धरम ऊ मानत रहली !
अब तक धरम देस जावा में,
सँसकीरित भासा के
सवतुक पहरा रहे बिराजत,
पोथी पतरा;
रचल जाय ओही में !
कलेकले अब जावी भासा
लहसे पनफे लागलि !
धरमवंस प्रिय राजा भइलन,
ओहिजा का जनता के;
मिलल सुबहिता सुख आ सांति !
थोरहीं दिन में,
पहरा बदलल फेरु !
धरमवंस के खास दमाद,
एरलंग परतापी;
दर दर के ठोकर खा,
आफति-बिपति घोर संकठ आ—
दुख-कलेस का, गाढ़ दिनन के,
वीर पुरुस का;
चाल-सुभाव मोताबिक,
चतुराई से काटि-बिता के,
राज-हुकूमति का लगामि के;
अपना हाँथन में ले,
जावा के दिन-दसा सुधरलन;
फेरु मजे में,
धरम-धजा फहराये लागल !
उनकर चतुर सुलच्छनि बेटी,
धरम-सरन में गइलि खुसी से;
भइलि भिक्खुनी आखिर !
नेति-निपुन सुभ धरमी राजा,
नगर पुचङ्ग्न में सरधाबस;
संघ बिहार नगद बनववलन !
इनहीं का पहरा में,
*कवि-भासा में;
'रामायन' 'कृष्णायन',
'पारथ-जग्ये', अमरमाला आ—
'भारत-जुद्ध' नाँव के पोथी
सभका ग्यान भलाई खातिर,
बिदमानन का नया कलम से;
लिखल बनावल गइली।
आगे चलि के,
सिंह-सारि कुलवाला राजा;
बउध-धरम के आदर दिहलन !
किरित नगर राजा का,
तंतर-मंतरवाला,
बउध-सैव धरमन पर,
सरधा रहे अपार !
'तंतरयान' धरम-मारग के,
ऊ रहलन साधक बरियार !
तेरहसइ तँयतालीस
सुभ बिकरम संवत्
तीस सेवकन का साथे ऊ,
मूरति सुघर अमोघ पास के;
अपना चारि चतुर अमलन से,
सुबरन दीप भेजि के;
'धरमासरे' नगर में,
आदर से थापित करववलन !
ओह देस के,
सभई बाभन छतिरी;
बयस सुदर आ उनकर राजा,
सिरि तिरभुवनराज प्रिय,
ओह बउध-मूरति के
भाव-भगति से पूजत रहलन !
किरित नगर तांतरिक नरेस,
रहलन कट्टर भगत सुरइला;
असली तंतर-साधन,
सजगर पंचमकारन के !
एही से ऊ आगे चलि के,
अपने चउपट भइलन;
साथे-साथ देस जावा के

---

*संस्कृत भाषा से निकली जावा की भाषा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सरवनास का;
पँजरा तक पहुँचवलन !
तब दूसर सरदार देस के,
प्रिय कृतराज नरेस;
पकड़ि डहरिआ पुरुखनवाली,
नया नीक मजपहित नगर के;
बना राजधानी सुभ,
धरम धजा फहरवलन !
सिव आ बउधदेव दूनो के
निपुन भगत ऊ रहलन !
प्रिय मजपहित नगर का,
राजमहल में;
ऊ सरधा से,
सुघर बउध मंदिर बनववलन !
सिव के ठीक ओइसने मंदिर,
बनववलन सिमपिंङ् में !
जेकर नाँव आज के,
चंदी सुंबेर बाटे !

× ×

कइसे कहीं कवन गुन गाईं
हम भारत माता का;
धरम धुरंधर,
त्यागी वीर सपूतन के !
साधु संत पंडित मुनि ग्यानी,
कइसे कहाँ-कहाँ जा;
कवन जतन कइ,
धरम-धजा फहरवलन;
लोगन के सुभ गुन सिखलाके,
सुख-सुविधा पहुँचवलन !
एकर कथा बड़ा लमहर बा,
एह छोट पोथी में;
कइसे ओके लिखीं बताईं ?
जावा, कंबुज, बाली,
कवन देस बा खाली;
जहवाँ परम पवित्तर,
निपुन चरन संतन के;
समय पाइके पहुँचल नाहीं !
चंपा, स्याम, मलाया सगरे,
भाई-बंधु भइल सभ हमरे !

अब बाली के कथा सुनीं कुछ,
पूरा ध्यान लगाके !
बतलाइबि हम,
समय देखि के संछेपे में !
बाली आ जावा का बीच,
डेढ़ मइल का;
खाढ़ी के दूरी भर बा !
बाली देस निवासी,
पुरुस बहादुर बाड़न कइसन;
एके समुझीं रउरे !
जावा पर इसलाम धरम के,
नया पताका हरियर;
थोरे बल से फहरल आखिर !
बाकी कट्टर बाली वीर,
अपना धरम-धुनी पुरुखन के;
मोंछि अबो ले,
कायम रखले बाड़न;
ओही तरे सान से !
सउँसे देस नगद ई,
झलकि रहल बा;
लहसलि सुघर सजल प्रिय,
हितकारी फुलवारी अइसन !
धरती बाड़ी,
बहुत उपजवाली सुभ।
चाउर, मकई, मटर, कपास,
अउरी ऊखि, तमाखू एहिजा
पूरा पएदा होला !
फलो गरम देसन वाला कुल,
होलन अनघा रुचिगर !
जावा से ना,
सीधे भारत देस निपुन से;
सभ आचार-बिचार धरम सुभ,
पवलन चतुर सुलच्छन;
धरमी बाली बासी !
दंतकथा बाली के,
एहिजा का लोगन के;
दानी बलि राजा के,
बंसज खास बतावे ले !
राजा बलि का नगद नाँव पर,
एकर बाली नाँव परल बा !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पाँच सइ पचहत्तर,
सुभ बिकरम संवत में;
बाली का राजा के,
पहिला दूत चतुर बिदमान;
गइल परोसी,
चीन देस का;
राजा का दरबारे!
ई-चिङ् का लिखला से,
पता चलत बाटे कि
ओह समय में एहिजा
बउध-धरम के
सांति-धजा लहरात रहे!
प्रिय कौडिन्न नाँव के,
धरमी राजा
रहलन राज सिंहासन पर!
बाली के बासिंदा आजो,
बाभन-छतिरी;
निपुन बैस आ सूदर,
एह चारि जातिन में;
बेंटल बिराजत बाड़न!
बाभन बाड़न हिगरल,
दूइ दलन में!
सैव-बराभन,
बउध-बराभन;
उनके कहल पुकारल जाला!
एहिजा आदर मान बहुत बा,
सैव बराभन लोगन के!
'बूतूराहू' पहिला सैव बराभन,
तेलंगाना आन्ध्रदेस से
एहिजा आके झंडा गड़लन।
सैव-बउध में एह देस में,
बहुत भेद ना मानल जाला!
एह लोग का
अपना सुभ नजरन में;
सिव आ बउधदेव, ई दूनो
एके भाई हउवन!
अबो देस में,
सैव-धरम बाटे परधान!
बउधदेव के लोग कहे ला
सिव के छोटका भाई!

जग्य-समय में हरदम,
चारि सैव आ-
एक बउध-उपरोहित;
नेंवेंति बोलावल जालन।
राजन का मरला पर,
देंहि-दाह किरिआ का बेरा;
सिव-धरमी उपरोहित जी के
ले आइल जल;
सूध कइल मंतर के
बउध-मारगी;
उपरोहित का जल का साथे
नेम मोताबिक;
सहज मिलावल जाला!
बाली का नदिअन के,
हमने बाली;
नदिअन का नाँवन पर;
गंगा-जमुना सिंधु-नरब्रदा;
कावेरी बा नाँव!
उनका जल के,
अइसन सूध पवित्तर;
नाहीं मानल जाला!
मोका पर ओकरा के,
सूध कइल जाला मंतर से!
बेसी का हम कहीं बखानीं,
बाली के भारत के;
एगो चुनमुन गुटका जानीं!

× ×

आलस छोड़ीं डेग उठाईं,
चलीं बोर्‌नियो देस!
पहिले जहवाँ,
भारत का लोगन के;
खेमा, बास अड़ार रहे सुभ!
महकम नदी किनारे,
जवन पुराना लेख मिलल बा;
ओसे पता चलत बाटे कि,
तीनि सइ सनतावन;
सुभ विकरम संवत का लगभग
एहिजा बाभन-धरम-पताका;
एड़ जमा फहरात रहे!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बाभन-छतिरी लोग हजारन,
आके रहलन बसल मजे में ;
पूजा-अरचा, धरम-काज सुभ,
जग्य-दान सभ होत रहे !
कोम्बेंग का एगो गूफा में,
मूरति बहुत मिललि बाड़ी सँ !
सिव, गनेस, नंदी, अगस्त संग,
महाकाल, नंदीसर, बरम्हा;
कारतिकेय के,
परमुख ओ में वाड़ी ;
वाकी मूरति;
बउध-धरम के जानीं !
हिंदू-धरम देस में,
एक हजार बरिस ले बेसी
कायम रहि के,
फलल-फरल मजे में !
मउरा कमांग का पास,
प्रिय कोतावेगन में;
वउधदेव के,
बहुत चुहिलगर मूरति;
पीतरवाली मिललि रहे !
एहू से आगे बढ़ि,
फीलीपीन आ-
सेलीबिज दीपन तक;
भइल साहसिक धरम जातरा
भारत-वासी,
बउध-भिक्खु संतन के !
एकर बेवरा,
कहति-बतावति बाटे;
सेलीबिज का,
'करमा' नदी किनारे:
पावल गइलि सुघर ऊ,
बउधदेव के;
पीतर वाली मूरति !

चंपा हऽ भारत के,
बहुत पुराना अंग !
ओहिजो के अब हाल सुनीं कुछ;
जानीं धरम-विचार लोग के !

चीन देस का,
सुभ पोथी-पुरान रचवइआ
निपुन पंडितन का अनुसार,
चलत बिकरमी संवत
दूइ सइ ओनचास नगद में
कायम भइल राज चंपा के !
पहिला हिंदू-राजा
सिरीमार रहलन एहिजा के !
चंपा वाला,
पहिला प्रिय हिन्दू राजन के;
चीन देस का साथे;
टेंढ़ घरेलू,
कलह-लड़ाई वाली बाटे !
सिरी भद्रवरमन महराज,
रहलन धरमी राजा;
जे कि माइसोन नगरी में,
सिव मंदिर मसहूर;
भदरेसर के बनववलन सुभ !
आगे चलि के,
राजा गंगराज भइलन जे;
सुभ करमी आ त्यागी रहलन !
राज हुकूमति का लगाम के,
दे भतीज का हाँथन में ऊ;
छोड़ि राज, सिंहासन,
भारत जा गंगा का तीरे;
भजन-भाव में,
आपन-जीवन-समय वितवलन !
एही का लगभग कुछ,
भइल देस पर;
भारी चीनी हमला !
चंपापुर में आके,
तन-हो-ये;
भारी लूट मचवलस !
तोड़ि फोड़ि केतने मुरतिन के,
पवलस सोना;
नगद हजारों मन ऊ !
एही तरे संभु बरमन का,
राज-समय में फेरु;
दूसर हमला भइल चीन के !
केतना दिन के संचित सोना,
निपुन अठारह गो राजन के;

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अउरी तेरह सइ पचास गो,
बउध-धरम के पोथी;
लूटि चीन के गइली !
जदपि देस में,
बिकरम संवत-
चारि सइ का पहिले,
बउध-धरम सुभ,
अपनो आसन रहे जमवले;
बाकी सैव-धरम के,
रहे मान-मरजादा बेसी !
ऊहे हरदम एहिजा,
रहल धरम परधान !
चंपा का कुल,
सइ में नब्बे गो लेखन में;
सिव-पूजा क चरचा बाटे !
माइसोन आ पो नगरी के,
सभ मंदिर बनवावल रहलन;
सिव-मुरतिन के,
पधरावे पूजे के !
सिवपूजा का साथे-साथ,
उमा, भगवती, गौरी;
भूमीसरी, महादेवी के,
मूरति पूजल गइली !
चतुरभुजी विसनू के एहिजा,
कई किसिम के मूरति;
पावल बाड़ी कुछ जगहन में !
कहीं वासुकी का देहिआँ पर,
विसनू लेटल बाड़न;
छीर-समुंदर भीतर !
कतहीं गोबरधन के,
हाँथे लेके ठाढ़।
पहिले त चंपा में,
साढ़े आठ सइ बरिसन तक;
सैव धरम परधान रहल !
आगे चलि के,
नउवीं सइबरसी से;
बउध-धरम क असर बढ़ल !
एहिजो बउध-सैव धरमन में,
कवनो ठेक रहल ना !
बउध भिक्खु लोगन के,
आदर मान भइल भरपूर;
राजन का दरबारो में !
एही घरी देस के राजा,
इन्दर बरमा दूसर;
सुघर बउध-मंदिर बनवा के,
नव सइ बत्तीस सुभ बिकरम में;
लछिमीन्दर-लोकेसर वाली,
मूरति सुभ बइठवलन !
अउरी महाबिहार नगद बनववलन,
भिक्खु लोग का;
भजन-ध्यान-तप साधन खातिर !
बिकरम संवत-
नव सइ ओनसठ में,
भिक्खु-संघ-असथविर सुरेमन;
नागपुहुप का आदर में भल,
दूसर चमनरेस सुभधरमी;
सिरीभद्र बरमन प्रिय,
'प्रमुदित-लोकेसर'-बिहार के;
सरधा से बनववलन !
एकरा भीतर थापित,
पत्थल लेख बतावत बा कि;
ओह समय तक एहिजा,
महायान आ ओकर कनखा
वज्रयान तांतरिक बउध-मत,
रहल पहुँचि के;
आपन एड़ जमाइ चुकल !
डोंग-डुओंग बउध-लोगन के,
परमुख अड्डा रहल सोहावन !
ओह पुराना जुग में जेकर,
नाँव रहल अमरावति
चंपा में मसहूर !
एहिजा केतने,
पीतर आ पत्थल के
अवलोकेसर,
प्रग्यापारमिता भा
बउधदेव के मूरति
पावल बाड़ी मजिगर !

× ×

चंपा का पच्छिम में बाटे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

देस सुघर फूनान !
एहिजा पहिले-पहिल आइ के,
राजवंस के रोपे वाला
राजा रहलन सिरि कवडिन्न !
दूसर राजा उनका बाद,
भइलन फान्-चे-मन् !
उनकर राज सिवान,
बढ़ि के पहुँचल;
पूरुब ओर मलाया तकले !
बिकरम संवत्—
तीनिसइ का लगभग,
ऊ नरेस मतिमान;
धरम-भूमि भारत का
पाटलिपुत्त नगर में;
सक मुरुंड राजा का
सिजिल राज दरवारे;
भेंट नजरि का साथे
भेजले रहलन;
राजदूत के अपना।
राजदूत ओहिजी के,
एह दूत का साथे;
चलि के आइल रहलन,
प्रिय फूनान देस में;
भयवद्दी का नाते !
एह देस में,
जयबरमा कवडिन्न चतुर का;
राज-काल में,
बउध-धरम के
धजा रहे फहराति !
ओह समय में इनकर;
चीनदेस से बहुत गाढ़ संबंध रहे !
एही जुग में,
दूइ भिक्खु एहिजा के
संघपाल आ मंदरसेन
चीन देस में गइलन;
बउध-धरम के
सुरस सनेस सुनावे !
संघपाल उनका में,
केतने भासा जानेवाला;
भारी पंडित रहलन !

'वू' राजा के हुकुम पाइ के
सोरह वरिस चीन में रहि ऊ
उलथा कइलन,
बउध-धरम पोथिन के;
प्रिय चीनी भासा में !

× ×

मनवाँ माने नाहीं,
बनल उड़ंकू धावेला !
बोध-विचार राखि हिरदय में
सहज-सुभावन;
अपना प्रिय पुरुखन के
सुमिर प्रेम से
उनकर सुभ जस गावेला !
सुख-संपति में भूलि मोहबस,
सेवा-त्याग-देन के उनका;
जे ना करसु इआद,
उनका के मानसु ना;
पसुए जानीं साचो !
सिरी विजय हो,
जावा, बाली, चंपा धाँगत;
अपना त्यागी तपसी,
धुनी पंडितन आ संतन के;
भाव-भगति से माँथ नवावत,
मंदिर-मठ-प्रिय असतूपन के;
दरसन कइके,
अइलीं अपना छोटका भारत,
रुचिगर कंबुज देस !
साच कहीं तऽ,
जंबूदीप बरस भारत के;
बहुत दिनन तक,
अंग पोढ़ परधान रहल ई !
कंबु रिखी आ-
सुघर परी मेरा से,
कंबुज राज बंस सुभ;
कायम भइल बढ़ल आगे के !
एकर नावें भर कंबोज,
भारतवाला नइँखे
बलके एगो समय रहल ऊ,
जब ई देस सुहेल;

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हर बातन में,
रूप रहे सकमक भारत के!
संसकीरित के पढ़े-पठावे,
कथा-पुरान सुनावे;
पंडित-सभा, सासतर-वेद,
वाद-विबाद बहस के;
एहिजो ओइसन,
सुभ परचार रहे;
जइसन हरख-समय आ—
पाछे का जुग में भारत में!
कंबुज का संसकीरित वाला,
सरस पद्यमय;
प्रिय पत्थल लेखन के,
पढ़ि के बरबस;
कालिदास, भवभूति, भारवी,
तुरत इआद परेलन!
कंबोजिन के रचल बनावल,
प्रिय अंकोर थोम आ—
सिरि अंकोरवाट नगरन के,
अउरी उनका;
प्रिय महलन के देखि,
एलौरा का
सुभ कैलास सुघर के
रूप समाने झलके ला!
जइसे हमनीं
करन, भोज आ—
प्रिय असोक सुभ धरमी,
चाहे निपुन हरखवरधन के;
धरमपाल, गोविदचंद के,
करत इआद प्रेम सरधा से;
छाती-माँथा ऊँच करीं ला,
ओही तरे आज के;
कंबुज-देस-सपूत,
अपना श्रुतबरमा-जयबरमा;
अउरी गुनी सुरुजबरमा का,
धरम-विचार कला-करनी के;
राखेलन गउरव अभिमान!
कुछ लोगन का राइ मोताविक,
पहिला राजा;
भइलन प्रिय श्रुतबरमा।

दूसर लोग बतावेला कि
बीर चतुर भववरमा;
कायम कइलन,
ई कंबोज-राज सुभ!
धुनी महेन्दर बरमा;
बइठि राजगद्दी पर,
लोगन के दिन-दसा सुधरलन!
काल-करम के चक्का,
हरदम चलत रहेला!
ठीक समय से पहरा बदले,
लोग सामने आवे दूसर;
आपन करतब-लीला
गुन-अवगुन देखलावे!
आगे चलि के धरमी राजा,
जयबरमा दूसर का जुग में
हवा देस के बदललि;
भइलि तरक्की पूरा
बनलन मंदिर धाम!
एह देस कंबुज के,
महावीर ऊ मानल जालन!
उहे बसवलन,
सुघर नगर अंकोर थोम के;
अउरी रचि बनववलन
सुभमंदिर बायोन सिजिल के!
पदवी उनकर रहे परम भट्टारक
सिव केवल उपरोहित रहलन!
सजल राजधानी प्रिय
रहे हरिहरालय पुरी सुघर!
एही समय देस भारत से
राजा के नेंवता पा
अइलन एहिजा,
कठिन गढ़तंतर विद्या के
एको पंडित निपुन महान्!
बाभन बंस सिरोमनि,
नाँव हिरनदामा मतिमान!
राजा का कहला से,
पुराचरन ऊ कइलन अइसन;
जे से कि प्रियकंबुज देस,
रहे मातहत जावा का ना!
मनसा पूरन भइल समय से,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कंबुज भइल सुतंतर !
अगिला नामी राजा,
भइलन गुनी जसोबरमा प्रिय !
नगर जसोधर पुर हऽ
उनकर सभले उत्तम किरती !
कंबुपुरी आ—
सिरि अंकोरथोम हऽ
ओकरे दूसर नाँव !
बायोने के कहल गइल बा;
सिव-आसरम लेखन में !
सीवसोम आ बामसीव मिलि,
बउध-आसरम ले एकरा के
सीव-आसरम नगद बनवलन !
एलौरावाला, कयलास
काटि पहाड़ निकालल बाटे;
जब कि ई बायोन,
बनल पत्थलन से बा;
उनके जोड़ि जुटा के सज से !
एह महादेवालय में सुभ,
एलौरा का;
ओ कयलास समान
केतने सुघर सिवाला बाड़न !
जिनका पत्थलवाली,
मजिगर भारी दीवालन पर;
किसिम-किसिम के,
देखे जोग रूप-तसवीर;
सुघर सोहावनि,
कयलासे समान कुछ;
बाकी ओसे अधिका कतहीं,
मूरति का रूपन में;
रचल उरेहलि बाड़ी !
बायोने में पाछे ले अब,
कहीं खोदाई कइला पर सज;
कुछ मूरति-पाँतिन के,
एगो तीसर तह पावल बा
जेकरा में कि
अवलोकेसर बोधिसत्त जी,
ठाढ़ कमल पर बाड़न ।
उनका मुकुट बीच अमिताभ;
अउरी सभ हाँथन में
कमल फूल, पोथी आ-
माला-अएनक बाटे !
चारो भर ले,
उड़त परी बाड़ी सँ !
ई तह देखि बिचारि,
फ्रांसीसी पंडित फीनो भा
अउरी कुछ लोगन के
अब खिआल ई वा कि
'पहिले ई बायोन रहल हऽ
महायान-बउध-देवालय !
जेकरा में मूरति परधान
अवलोकेसर वोधिसत्त के
होई कबे बिराजति !'

× ×

अठवीं नउवीं दसवीं,
सइवरखी में—
एकर ई मतलब कि—
जेह समय कनउज में;
राज-रियासत
रहे बिराजत;
प्रिय गुरजर प्रतिहारन के
कंबुज अपना
बाभन-भगती खातिर
रहे बहुत मसहूर !
जगह-जगह से ओहिजा
बाभन निपुन गुनी बिदमान
रहलन जात खिंचा के !
जइसे कि दिल्ली का
मुसलमान राजन का युग में;
काबिल मुल्ला,
फारस-बलख-बुखारा तक के !
धरमभूमि-कंबुज में,
बउध-धरम के;
महायान-मत पहुँचल पहिले !
ई फइलल ना खाली,
बनि के बाभन-धरम बिरोधी
जोड़ीदार मोकाबिल वाला,
बलके साबित भइल सहायक !
एही से बस एकर,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सइवधरम से
साज मजे में बइठि सकल आ
मुनी बउध देवो के,
तिर-मुरती में जगहि मिललि !
ओह समय में,
बउध-सइव धरमन में एहिजा
कवनो भेद-बिरोध रहल ना !
बाकी आगे चलि के,
लंका वाला;
बउध-धरम-मत,
हीनयान जे रहल
एहिजा आके पहुँचल,
एके बेलि बदललस;
भेदभाव अलगाहटि में !
बउध-धरम के,
सभसे पहिला लेख
सतवीं सइबरखी का
सुरुवे के पावल बा !
दूसर लेख मिलल बा,
सक संवत् सुभ
सात सइ तेरह के
प्रसत-त-क्रम में !
जेकरा में कि
लोकेसर का प्रिय मूरति के
थापित कइला के चरचा बा !
एह सुहेल देस में
केतने दूसर
बउध-देवता आ देविन का
सुभ अरचा-पूजा भा–
प्रिय मुरतिन के पधरवला के
चरचा बा अउरी लेखन में !
थम-पुओक में पावल,
जयबरमा पंचम का
बिकरम संवत्
दस सइ पैंतालिस का
लिखल लेख में,
बउधदेव आ –
प्रग्यापारमिता, लोकेसर-
मइतरेय, बरजिन, इन्दर का
पूजा-भगती के चरचा बा !

एह छत्र देवी-देवन के ऊ
पूजा-सेवा कइले रहलन;
पदुम बिरोचन,
बउध-साधु मतिमान !
हाल सुनी 'अंकोरवाट के,
जेकर माने भइल—
नगर-देवालय !
एकरा के कब
बनवावल के;
कवना देवता खातिर
एके साफ बतावे वाला
कतहीं कवनो लेख मिलल ना !
बिदमानन के,
बा खिआल अइसन कि
सूरुज-बरमा दूसर,
अउरी उनकर;
गुरू दिवाकर पंडित,
एकरा के बनववलन !
सायद ओह समय ई,
रहल-बिसुन-देवालय
एह घरी जे,
बनल हीनयानी बिहार बा !
एकरा पत्थल का लेखन में,
परम-बिसनो लोक राजा के;
बहुत जिकिर आवत बा,
जे सूरुज-बरमे दूसर के;
मरला पर के नाँव रहे !
बाकी ए में,
दोबिधा ई बाटे कि
जहवाँ सूरुज-बरमा
रहलन बउध महायानी प्रिय;
ओहिजा एह सिजिल मंदिर में
महायान के
कवनो चिन्ह मिलत बाटे ना !
कंबुज-कारीगरी-कला में
ऊँचाई आ चकराई के
रूप बनावट का अनुसार
मेल मिलावे वाली;
कोसिस सफल सुघर अति;
प्रिय सूरुजबरमा का

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बनवावल अंकोरवाट में
झलकत बाटे !
एह नगद मंदिर बिसाल के,
देखते केहू देखनिहार;
दोविधा आ अचरज में पड़ि के
सोचे लागेला कि
ई मानुस भा देवन के
रचल बनावल होई !
बनल अढ़ाई मील फइल का
सज लमहर भारी घेरा में;
एह महामंदिर का,
चारो भरले खाई बाटे;
सात सइ फुट चाकर !
जे के एगो,
झीले मानल जाई !
भीतर जाये खातिर,
एगो पूल बनल बा;
छत्तीस फुट के चाकर !
जेकरा जिजिल कठघरा का
दूनो ओर नाग बाड़न सँ;
जिनकर प्रिय फट,
आगे बाड़न सभ ले !
तीनि हजार फीट चउकोर
पत्थल का मेढ़ी पर;
सोसतिक का आकार-रूप में
बाटे मंदिर बनल बिसाल !
पइठे का परमुख दुवार से
भीतर जाते;
एगो गली मिलति बा
जे कि लगभग
आध मील का घेरा में बा !
अउरी ए में,
ठीक पचीस सइ फुट --
लंका तक ले;
बिस्नो आ जम का बारे में,
कहनी-तसवीर सोहासुत
रचल उरेहल बाटे !
ढँकलि डहरि ई,
सुभ परिकरमावाली;
देवालय का,
बहरी का घेरा के;
पहिला अंग निपुन हऽ !
असली दरवाजा से,
चढ़ि के ऊपर जाये खातिर
सींढ़ी मजिगर बाड़ी !
जहवाँ ले ऊपर गइला पर
सोसतिक रूपनवाला
आँगन नगद चारि गो बाड़न,
अउरी ठीक ओइसने
गली गइलि चारो भर बाटे !
बनल किनारन पर कुछ
बाड़ी सुघर मिनार।
एह दूसरा तल्ला से चढ़ि
ऊपर के गइला पर;
एगो भारी आँगन,
फेरु मिलत बा
जेकरा सभे किनारन पर प्रिय
बुरुज-कंगूरा बाड़न सोहत !
एह्‌ पोढ़ सजल मेंढ़ी से,
चढ़ि ऊपर के जाये खातिर
फेरु बनल सींढ़ी बाड़ीं सँ।
जहवाँ बीच फरस पर,
सूँढ़ाकार सिजिल मेंढ़ी पर;
मंदिर असल बनल बा रचि के !
ई देवालय धरती पर ले,
दू सइ फुट ऊँचा बा ;
मंदिरवाला बिचिला सूरा
बाटे सभले ऊँचा !
चारो भर कोनन पर
बाड़न चार कंगूरा !
एह सुघर-सूरा-चोटिन के
भुवनेसर-मंदिर का;
नगद-सिखर से,
कुछ मोकाबिला होइ सकेला;
बाकी त अंकोरवाट का:
प्रिय मंदिर के चोटी,
नव भाग में बाटे !
अउरी ई जनात बाटे कि
थोरे-थोरे का दूरी पर
मोतिन के माला कुछ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नीक लपेटलि बाड़ी !
जे कि भुवनेसर मंदिर का
सुघर सिखर में नइँखे !
एह किसिम से सँउसे मंदिर,
निपुन खमेर-कला के;
अमर नमूना रूप ठाढ़ बा !
जेके कहे-बताबे खातिर
सबदे नइँखन पूरा !
अबे सुनीं कंबुज के
अउरी सुरस कथा कुछ !
जयबरमा सतवाँ के जानीं,
प्रिय असोक कंबुज के;
सुभ धरमी उपकारी !
उनका मरि गइला का बाद,
रहे दिआइल उनके;
'महापरम सौगत' के नाँव,
जे से उनकर;
धरम-बिचार जनाता साफे !
ऊ रहलन कंबोज देस के,
राजा प्रिय महान परतापी !
चंपा चमन, मलाया मजिगर,
अउरी देस सुहेल पगानो;
रहलन अंगराज के उनके !
ता-प्रो-हम के,
पत्थल-लेख बतावत बा कि—
जयबरमा मतिमान सातवाँ;
सुघर नगरिआ
राज-बिभार बसा के;
प्रग्या-पारमिता का,
सेवा खातिर कइलन दान !
एह लेख में,
ओ मंदिर का पूजा खातिर
दिहल दान के चरचा बाटे !
आगे लेख बतावत बा कि—
रितु बसंत में,
चइव सुदी अठिमी से
सूध पुरनवाँसी तक,
साले-साल नेम से
बउध-धरम का
रीति-रेवाज मोताबिक;
सुखदाई उतसो बसंत के
जाय मनावल सज से,
अउरी दूइ जग्य सुभ होखसु !
एह निपुन राजा के,
अस्पताल संबंधी;
दस गो पत्थल-लेख—
मिलल बाड़न सँ !
लेखन में पहिले तऽ
बउधदेव का
सुभ 'निरमान-धरम-संभोग'
एह 'तीनि-कायन' के
बाटे कइल पलग्गी,
रोग-बेयाधि हटावेवाला;
भेखज गुरु बउध आ—
बोधिसत्त, सत सुरुज बइरोचन
अउरी देवचनर रोची भा
चनर बिरोचन रोहिनीस के
महिमा गावल बाटे !
फेरु सहज शुभ-धरमी
जयबरमा का;
बारे में बा साफ लिखल कि—
"मानुस का देहिआँ के
दुख-कलेस उनका के
सहज-सुभावन,
निजी आतमा के दुख
मालुम भइल अपार !
ऊ रोगी ले उनके,
रहल ढेर दुखदाई !
काहे से कि
आपन नाहीं
परजा के दुख
दुखी बनावे ला राजा के !
बइदक-विद्या जानेवाला,
निपुन गुनी वएदन के;
जोर मदति ले,
चतुर पुरुस ऊ
दुसमन घोर राज भर का
कठिन असुभ रोगन के
मारि नसवलन सहजे !"
पता लेख से बा लागत कि—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ई अरोग-साला प्रिय
बउधदेव-भेखज गुरुवर का
सुभ मंदिर का,
चारो भरले जासु बनावल !
अउरी रहसु खुलल ऊ,
चारो जातिन खातिर !
ई कंबोज नरेस,
सुखी सातवाँ जयबरमा, जे-
प्रिय कनउजिआ राजा,
जयचंदा का जुग में रहलन;
अपना राज-सिवाना भर में
एक दूइ ना;
सही सइ ले दू गो अधिका,
असपताल आ-
'भेखज-गुरु-मंदिर' सुभ;
"जेकर नाँव आज,
भइल दवाई खाना"
आठ सइ में दू कम,
हितकारी बनववले रहलन !
जयबरमा सतवाँ का,
लेख 'फिमानक वाला में;
बउध-मुनी का तीनि काय आ-
लोकेसर का
आराधन के बात लिखल बा !
राजा के दूनो प्रिय रानी,
रहली बउध-धरम के मानत !
दूसरि रानी,
बड़ बहिनी पहिली के;
बउध-धरम-पोथिन के,
भारी पंडित रहलीं !
निपुन नगेंदर तुंग, तिलकोतर;
अउरी विमल नरेन्दर-आसरम,
तीनों बउध-विहारन में ऊ;
बउध-भिक्खुनी-दल के,
रहली सिच्छा देले !
एह देस में,
महायान का बाद
लंका से चलि,
हीनयान आ पहुँचल !
इहे कारन बा कि,
बउध-धरम कायम बा;
अबहीं तक ले ओहिजा !

× ×

थाई देस स्याम में
बउध-धरम सुभ;
बहुत पुराना जुग ले
फूलल-फरल मजे में !
मूल जगह थाई लोगन के
चीनदेस के;
यून्नराज रहे प्रिय !
सेचू आन आ यून्ननवाली,
डहरि पकड़ि के होत असाम;
सुभ बिकरम संवत ले,
बरिस सएकड़न पहिले;
बिकिरीवाला चीनी माल
खास तरह से;
सुधर रेसमी कपड़ा,
आवे भारत-देस !
एही डहरी भारतवासी,
आगे का चीनी-रहता पर;
चिन्दवीन, मीकांग सोहासुत
इरावदी प्रिय सालवीन आ-
लाल नदी का तीरे;
आपन खेमा,
नगद बसवले रहलन !
एह देस के,
बीर पुरुस ऊ लोग
नाँव नीक गंधार धइल !
जे कि कायम रहल मजे में
चउदह सइ संवत तक !
बाद मनीपुर आ असाम का
हिन्दू राज रहे ता-चिन के !
जेकरा ले पचहत्तर कोस,
अउरी पूरव;
चिन्दवीन नदिआ का पार,
दूसर हिन्दू राज रहल !
आज-काल का,
प्रिय चीनी-परदेस;
यून्नन में तब,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

राज रहल सुभ ननचाऊ के;
जेके तली कहे ला केहू !
ओह खास जगहा के,
परंपरा बतलावति बा कि;
ए के प्रिय अशोक राजा के,
पूत बसवले रहलन !
एहिजे राज रहल थाइन के !
चीनी लोगन से सुरुवे ले,
यून्नन का थाइन के
रहे लड़ाई ठेक !
थाई-भाई,
अपना प्रिय आजादी खातिर
रहलन लड़त हरदमे जुटि के !
ऊ अपना गंधार देस आ-
ओकर सुभ रजधानी ताली,
अउरी प्रिय बिदेह-मिथिला के
राखसु नित अभिमान !
'सान'[1] सबद के,
दूसर रूप स्याम हऽ !
एह 'सान' सबदे से
हान, हाम, अहोम-अहाम;
अउरी असम-असाम बनल !
इहे अहोम ज़ाति वस,
चउदह सइ बिकरम का लगभग.
पहुँचि असाम देस में;
नगद नाँव ई दिहलस ए के !
थाई, सान. अहोम,
सभे एक गंधार बंस के
साबिक कनखा हउवन !
पोंग-तुक अउरी —,
फ्रा पाथोमनगर के;
बहुत पुराना खंडहर,
साबित इहे करत बाड़न कि
दूइ सइ बिकरम का,
आस-पास तक
बउध-धरम एहिजा तक
आके फइलल रहल मजे में !
एगो धरम-इमारत
के कुछ खँड़हर,
बउधदेव के मूरति;
अउरी सुघर धरम चक्का सुभ,
पावल बाड़न;
सहज खोदाई कइला पर !
एकरा कुछ दिन बाद समय के
केतने खँड़हर
अउरी कुछ तऽ
मूरति-कारिगरी-कला के;
नगद नमूना उत्तम,
बाड़न मिलल कई जगहा पर
जिनका पर कि
गुपुत-कला के
भारी असर मिलत बा !
नउवीं सइबरखी का
सुरू समय में;
मगध-सिवासी भिक्खु
चनर-गुपुत के
ओहिजा रहल बहुत परभाव !
इरावदी आ-
सालवीन का बीच
एगो थाई राज नीक के;
नाँव रहे कउसांबी !
चीन देस का धूनी घुमक्कड़
ई-चिंग का अनुसार;
थाइन का प्रिय,
एह पुरान सुहेल देस से;
चीनी तिरथ-जातिरी बीस
बिकरमवाली;
पहिली अउरी,
दूसरि-तीसरि सइबरखी में
रहलन भारत देस गइल !
धरमी चीनी राजा
दस सइ एकइस;
सुभ बिकरम संवत में
एही सुगम डहरि से
तीनि सइ धरम दूतन के
खोजे खातिर
बउध-धरम-पोथिन के,
भारत भेजले रहलन !
थाई राजन का महिमा से,

---
१ सान-बान = ठाट-बाट ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भाव-भगति से उनके;
बउध-धरम के थेरवाद-मत
अउरी पाली-भासा;
सँउसे देस स्याम आ-
प्रिय लाओस सुघर में
फइललि-पसरलि-
फूललि-फरलि मजे में !
स्यामी राजवंस के,
उदय होत बा सुखोदया से
पहिला राजा,
रहलन इनरादित्त !
अपना सग बड़ भाई का
मरि गइला पर;
विकरम संवत
तेरह सइ चालिस में
रामखम्हेंग सुधरमी
सुखोदया के;
राज-सिंहासन पवलन !
उनका राजा होते,
दसा देस के बदललि;
लोगन के सुख सांति मिललि !
स्याम-देस के
सभले बड़ प्रतापी राजा;
रहलन रामखम्हेंग !
उनकर एगो—
भारी काम रहल कि
स्यामी भासा खातिर;
अच्छरि नया बनवलन !
दूसर अपना,
सुघर राजधानी सुभ;
सुखोदया के,
कइलन बहुत तरक्की !
ओहिजा केतने,
बउध-बिहार सुघर बनववलन !
जहवाँ रहलन मुनि आचारज,
पूजा-सरधा जोग;
भिक्खु निपुन विदमान,
अउरी एगो;
प्रिय असथविर महान् !
विकरम-संवत,
चउदह सइ बारह में;
सुखोदया का सिंहासन पर,
जाइ बिरजलन,
दूसर राजा;
सुरुज-वंस सिरि राम !
बउध-धरम में,
सरधा उनकर रहल अपार !
खुदे अपनहूँ भिक्खु होइ के,
ऊ लोगन में,
बउध-धरम के;
सज से सुभ परचार करसु !
सरधा बस ऊ,
बउध-बिहार अनेकन;
रचि बनववले रहलन
संवत चउदह सइ चउदह में
खम्-फेन्-फेत् में;
सिरी-रतन सुभ महाधातु के
भाव-भगतिवस राखे खातिर
एगो नया बिहार सजीला
बनववलन ऊ फेरु !
तबसे बहुताँ,
रहसु अपनहूँ ओहिजे !
बाभन आ तपसिन का
अरचा-पूजा खातिर;
धरमी राजा
महादेव-बिसनू का
मुरतिन के थापित करववलन !
संवत चउदह सइ ओनइस में
ऊ कुछ निपुन पंडितन के आ—
प्रिय विदमान भिक्खु लोगन के
सिंहल भेजलन
संघराज सामी के;
बोला स्याम ले आवे खातिर !
सामी संघराज ऊ,
राजा के नेंवता पा अइलन !
उनहीं का सलाह आ—
जोर-मदत से
बउध-धरम पाली-भासा के
थाई-देस श्याम में
मिलल सहारा पोढ़

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अउरी ऊ बढ़ि,
सुबरन गाँव, आलवी;
हरि पुंजय-योनक-खमेर का
कई छोट हिन्दू राजन में,
आसानी से फइलल !
हिरदय-राजे का सुभ जुग में,
थाई धावा कइके;
मजिगर मेनान तराई पर
ओहिजा नाँव अजोध्या वाली,
नगरी नई बसवलन !
धीरे-धीरे ओकर,
वढ़ल मान-महिमा-मरजादा !
सुभ चउदहवीं शताबदी का,
बीच-समय से;
बीच अठारहवीं तक,
पुरी अजोध्या रहल स्याम के
निपुन राजधानी प्रिय !
विकरम संवत,
चउदह सइ अठारह में ऊ;
बनल अखाड़ा,
स्याम-देस का;
विद्या कारीगरी-कला आ—
सुभ आचार-विचारन के !
स्याम सुधरमी भगत-देस में,
बउध-धरम के सुभ परचार
अउरी पढ़ल-पढ़ावल,
बउध-वेद त्रिपिटक पोथिन के,
बढ़ते गइल कले-कल आगे !
सिंहल-देस समान,
महा थेर मेधंकर;
चउदह सइ तिरासी—
सुभ विकरम संवत में,
एहिजो बउध-पाद बनववलन;
सुघर सिजिल पत्थल में !
विकरम संवत,
सतरह सइ तेरह का लगभग;
स्यामी राजा फ़ा-नाराई,
समय-दसा के समुझि देस का;
निपुन जहाजी अड्डा—
बंदरगाहन के कुल,
डच-फ्रांसीसी!
पोरतुगीज-अँगरेज,
सभ बेवपारिन खातिर;
लाचारी से खोललन !
अउरी-लूई—
पनरहवाँ का पास
रइछा-मेल-मिताई खातिर;
दूइ दूत-दल भेजलन !
योरूप के बेवपारी
भला बाज अइतन कब;
दाव-पयँतरा चललन खूब !
एकर भइल नतीजा ई कि
कल-कल, गति बल-समरथ;
घटते गइल अजोध्या के कुछ !
बाकी तबहूँ
बउध धरम के
ओहिजा एतना
बल-परभाव रहल कि;
सिंहल वासी
अपना किहें फेरु से
भिक्खु-संघ सुभ
कायम करे सुधारे खातिर
सिच्छा देके सवतुक;
मदति स्याम से मंगलन !
सामी राजा,
खातिर कइलन;
चतुर सिंहली धरमदूत के !
अउरी भेजलन,
परमुख भिक्खु उपालि निपुन के !
जे लंका जा,
संघ-राज सरणंकर के आ—
कुछ अउरिन के;
दिहलन सुभ संन्यास !
ई बतिआ हऽ,
बीच अठारहवीं—
सताबदी के !
बाद अठारह सइ ओनतालिस,
सुभ बिकरम संवत में;
चाउ-फया-चकरी प्रिय,
नया राजकुल कायम कइलन;

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जे अबहीं ले चलते जाता!
ओह समइआ भिक्खु लोग में,
कई दोस आ घुसरल रहलन!
त्रिपिटक का पाठन में
रहे गड़बड़ी भइल बहुत कुछ!
नया नरेस निपुन सरधालू
एह सभे दोसन के
दूर करे के,
बीड़ा तुरत उठवलन!
त्रिपिटक-पाठ सुधारे खातिर,
ऊ एगो संगीति बोलवलन!
अउरी नया पाठवाला प्रिय
सोधल सूध सिजिल त्रिपिटक के;
सज से राखे खातिर,
खास किसिम के;
नया भवन एगो बनववलन!
प्रिय राजा मोंकुत का बाद
उनकर लायक बेटा;
चतुर गुनी चूड़ालंकार
बिकरम संवत;
ओनइस सइ पचीस में
राजा होके,
बउधं-धरम के;
भारी कारज कइलन!
ऊ पूरा पाली त्रिपिटक के,
सामी सहज अच्छरन में प्रिय;
उजुग होइ छपववलन
लोगन का हित खातिर!
अबो स्याम में
राजा-परजा सभई;
बउध-धरम मानत बा!
ओहिजा बीस हजार बउध मठ,
अउरी एक लाख ले बेसी;
भिक्खु संत जन बाड़न अवहीं!

× ×

मलय-देस का कुछ भागन से
सँसकीरित-भासा के;
पत्थल लेख मिलल बाड़न जे,
चउथी पँचवीं सइबरसी में;

नगद देस भारत में चलता,
सहज अच्छरन में प्रिय।
उनका में ले
तीनि लेख तऽ निहचित;
बउध धरम संबंधी बाड़न!
उनसे सीध होत बाटे कि
ओह समय में एहिजा
बउध धरम के
रहे नीक परचार!
सभले उत्तम
बँचल पुराना चीन्हा;
बा 'लिगोर' में पावल!
असल कहीं तऽ,
रहल बउध लोगन के;
ई एगो अड्डा बरिआर!
बउध धरम के
महायान मत;
एह देस में
छठवीं बिकरम सइबरसी में
अवसर पाके फइलल!
एह बात के साफ कहत बा
प्रिय केद्दाह नगर का पँजरा
पावल एगो लेख!
महायान मत
अठवीं नउवीं सइबरसी तक;
एहिजा पनपत रहल मजे में!
निपुन लिगोर नगर में पावल,
एगो पत्थल लेख मोताबिक;
राजा अउरी—
उनकर धरम-पुजारी;
बउध देवतन खातिर,
ईंटनवाला;
सुघर तीनि मंदिर आ—
पाँच पोढ़ असतूप नगीना
सरधा से बनववलन!
ई असतूप सजीला
बिकरम संवत;
आठ सइ बत्तिस में बनलन!

× ×

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कवनो सिच्छित निपुन सुलच्छन,
गुनी जाति खातिर के;
पुरुखन का इतिहास-कथा आ
साबिक परंपरा के जानल
समुझल सज से,
सुभ आचार-बिचारन के कुल
बहुत जरूरी होला!
उत्तर पच्छिमवाला,
दूर देस काबुल-कंधार;
बहुत पुराना जुग ले
जम्मू-दीप देस भारत के;
अपने अंग रहल हऽ खास!
सुभ बिकरम संवत ले,
सइ बरिस पहिले से;
सँउसे दसवीं सइबरसी तक
बीरन के प्रिय धरती
ई अफगानिस्तान;
बउध-धरम, बिद्या बल,
कारीगरी-कला, गुन;
सवतुक ग्यान बिमलमति
सुभ आचार विचारन के प्रिय;
अड्डा निपुन रहल हऽ!
के असंग का,
जनम-भूमि के जानत नईंख?
दिङनाग के गुरू महान्
वउध धरम के ऊँच बिचारक
ऊ बसुबंधु सुरेमन पंडित
एही प्रिय गंधार देस के
लाल नगीना रहलन!
पच्छिम से चढ़ि आवेवाला,
तेज बवंडर आन्हीं अइसन;
केतने धुनी घुमंतूदल का
कठिन चोट के सहिके पहिले;
ईहे पाठ पढ़वलस उनके
धरम-भूमि भारत का
विद्या, गुन, विचार सुभ,
पुरुसारथ आ विनय सील के!
चीनी संत घुमक्कड़
फाहियान भा ह्वेनसांग के
लिखल बयान बतावत बा कि,

देस बीर अफगानन के ई;
बउध-धरम का,
मरजादा-महिमामय;
जगमगात-इतिहास-कथा के,
छेतर नगद रहल हऽ!
बामियान का,
प्रिय परबत-फाटिन में!
एक मइल तक फइलल,
चइत-खँड़हर के देखला से
बउध-धरम-महिमा आ—
कारीगरी-कला का
सुघर सोनहुला जुग के
कुछ-कुछ झलक मिलत बा!
ओ असतूप-खँड़हरन का,
पूरुब-पच्छिम दूनो ओर;
बउधदेव के,
दू गो भारी मूरति
काटि पहाड़ी चट्टानन के
रचल बनावल बाड़ी!
पूरुब वाली,
ऊँच एक सइ बीस नगद फुट
दूसर पच्छिमवाली,
ऊँच एक सइ पचहत्तर फुट;
अमर-रूप गंधार-कला के,
बाड़ी अबहीं ठाढ़!
कहीं सिजिल घाटिन में,
केतने मजिगर-मूरति
अउरी सुघर भीति-तसबीर;
पावल बाटे उत्तम!

पूरुबवाला,
चीनी तुरकिस्तान;
अउरी पच्छिम वाला,
रूसी तुरकिस्तान;
दूनो मिलि के,
मध्य-एसिया देस कहालन!
दूनो भाग नगद ई,
बउध-धरम के
अड्डा निपुन रहल हऽ!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एहिजा बेसी चरचा होई,
चीनी तुरकिस्ताने के कुछ !
बाकी एकर,
ई मतलब नइँखे कि;
पच्छिम वाला मध्य एसिया,
बउध-धरम-इतिहास जगत में;
कम कीमति के बाटे !
ओकर अति मसहूर सोहासुत,
नगर बुखारा;
बिमल बउध-धरमे के,
सुरति करावे वाला,
सिजिल सरूप-नगर हऽ !
आजो ऊ मंगोल
एह 'बिहार' सबद के;
अपना सहज उचारन में
साफ 'बुखार' कहेलन
तूरुक अउरी—
उनहूँ से पहिले के जाति,
अपना भासा में 'बिहार' के
रहली करत उचारन ईहे !
बढ़ि इसलाम धरम का
आ पहुँचे ले पहिले
एहिजा एगो,
भारी बउध-बिहार रहे
जेकरा करते एह नगर के
ई सुभ नाँव भइल मसहूर !
तेरमिज का पास खोदाई में
केतने गंधार-कला के
मूरति सुघर मिललि बाड़ी सँ !
हेनसांग का जुग में
एह तुखार देस में सगरे
फइलल रहलन बउध-बिहार !

समरकंद में
सुघर बिहार कई गो रहलन !
बखतर वाला भारी
बउध-बिहार सजीला
रहल बहुत मसहूर !
लोब नोर ले दक्खिन,
बास रहल सोग्दी लोगन के !

जहवाँ बउधो मत के
मानेवाला रहलन !
ओह समय के,
बउध-भिक्खु बिदमान;
बउध-धरम-पोथिन के,
उलथा कइले रहलन;
ओहिजा का सोग्दी भासा में !

× ×

मध्य-एसिया वाली,
तरिम-तराई का नगरन के;
कथा-पुरान सुनीं कुछ !
दक्खिन ओर तरिम का
नगर-पुराना खोतन के बा
खोतन-राज 'खुतन'
कायम भइला का,
वरिस एक सइ पेंसठ बाद;
बिकरम वाली,
अंतिम दूसरि सइबरसी में
राजा भइलन,
निपुन बिजयसंभव प्रिय !
एह बिजय-संभव का,
बरिस पाँचवाँ में सुभ;
बउध-धरम के,
नेंव परलि खोतन में !
राजगुरू आरज बइरोचन,
नया खोतनी-भासा खातिर;
एगो अच्छरि रूप सजीला,
रचि कइलन तइआर !
नीक नआ अच्छर ई,
सुघर लिखावट वाला;
सहजे निकलल,
सज ब्राह्मी अच्छर से !
बउध-धरम खोतन के दिहलस,
धरम-बिचार-ग्यान के पोथी !
नाँव तबे ले,
ओहिजा का राजा लोगन के;
संसकीरित में होखे लागल !
बाद बिजय-संभव का,
अठवीं कुल-पीढ़ी में;

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

राजा भइलन बिजय-बिरिज प्रिय !
उनकर गुरू महान,
भारतवासी भिक्खु;
बउधदूत मुनि रहलन !
देख-रेख में जिनका
गइल बनावल,
एगो बउध-बिहार !
बउधदूत जी
एगो दूसर सिजिल बिहार
गो-सिरिंग परवत पर
रचि बनववले रहलन !
राजा बिजय बिरिज मतिमान,
'संघ-घोस' के;
भारत से बोलवा के
आपन सिच्छक रखलन;
अउरी सुभ असतूप कई गो
सरधा से बनववलन !
सुभ धरमी राजा का
लइका रहलन तीनि !
पहिल जेठ रहलन जे,
ऊ तऽ गइलन भारत;
घूमे तीरथ धामन के !
दूसर होके भिक्खु,
धरमानंद नाँव धारन कइ;
भजन-भाव तप जन-सेवा में
जीवन-समय बितावे सुख से
गइलन पुन्नि भारते-देस !
रहल तीसरा
बिजय-धरम जे;
ऊ राजा प्रिय हांखल
नामी बीर बाप का जगहा !
तिब्बत वाली परंपरा का,
कहला का अनुसार
सभले जेठका लइका
प्रिय दोनदरो;
भारत से लवटे का बेरि
अपना साथे;
लेके अइलन,
मुनि भदंत समंत सिद्धी के;
जे कि तरिम तराई भर में,

सुभ सरवास्तिवाद के
टहरि-घूमि कइलन परचार !
बिजय धरम के पूत बिजय सिंह,
गा-जग का राजा से लड़ि के;
ओके बउध बनवलन !
सहज बउध भइला पर-
ओकर
नाँव परल आनंदसेन सुभ !
सत करमी आनंदसेन का,
प्रिय बेटी के
आ-लो-जा से भइल बिआह !
जे कि देस कासगर बीच
बउध-धरम के फइलावे में
जोर-मदत दिहलन आ-
ओहिजा एगो,
बऊध-बिहार नीक बनववलन !
बिजय सिंह का बाद,
राजा भइलन;
बीर बिजय संगराम !
ऊहो दूसर,
बउध बिहार नगद बनववलन !
एही समय निपुन अरहत मुनि,
धरमपाल खोतन में अइलन !
अगिला राजा,
चतुर बिजय बिकरम का जुग में,
जब ऊ कुँवर नबालिक रहलन;
राज-काज कुल देखसु,
मंत्री उनकर;
धीर आ-मला-केमेग,
तब दूनो मिलि;
बहुत बिहार बिमल आ -
सुभ असतूप सजीला
सरधा से बनववलन !
फाहियान कूचा से चलि के,
चारि सइ संतावन
प्रिय बिकरम संवत में
खोतन पहुँचल रहलन !
ओह समय में ओहिज़ा,
बउध-धरम सुभ;

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रहे फुलाइल-फरल मजे में !
उनकर बा बयान कि—
"बहुत सुखी आ—
धन-संपति से पूरन,
नगद राज ई बाटे !
गाँव बसल बाड़न घन,
लोगवा बा खुसहाल !
बाड़न भिक्खु हजारन एहिजा
बाकी बेसी;
महायान-मत मानेवाला !
मरमी संत धुमक्कड़,
फाहियान ऊ;
बहुत बड़ाई कइले बाड़न,
सभ संघारामन में
आगंतुक भिक्खुन का,
सज सबतुक खातिर-सेवा के !
ओह समय खोतन में,
हर परिवारिक घरका सनमुख;
होखे एगो,
छोट नगद असतूप !
फाहियान खुद अपने,
सिजिल गोमती सुभ बिहार में
ठहरल रहलन,
देखि सुबहिता-
सतसंगति आ सांति;
जेकरा में कि बास रहे प्रिय,
महायान-मत मानेवाला;
तीनि हजार भिक्खु संतन के !
सज खोतन नगरी में,
बउधदेव का;
प्रिय मूरति के,
धूमधाम से साले-साल;
सोभा-जतरा निकले !
ई मेला बसंत में होखे,
जब कि चउदह;
भारी महाबिहारन का सुभ,
मुरतिन के नगरी में;
सुघर सजावल रथ पर,
जलुस-जातरा निकले नीक !
फाहियान से,
बरिस अढ़ाई सइ का बाद;
हेनसंग खोतन में आके,
सुभ सरवास्तिवाद मतवाला
एगो प्रिय बिहार में,
ठहरल रहलन आठ महीना !
उनकर बा बयान कि—
"एहिजा का लोगन के,
रीति-रेवाज बड़ा अच्छा बा !
चालिचलन सवतुक आ,
चित निरमल कोमल बा !
बहुत खुला दिल के ऊ बाड़न
मेला भा उतसो से;
सहज-प्रेम राखेलन !
अपना हालत पर उनका बा
मनवाँ में पूरा संतोख !
प्रिय गाना-विद्या के,
बा एहिजा बहुते परचार !
लोग नाँचि-बाजा-गाना के
बहुते प्रेमी बाड़न !
उनकर लेख, लिखावट-अच्छरि,
पोथी-पतरा नेम-कनून;
भारत अइसन बाड़न !
बउध-धरम के,
एहिजा बहुत मान-आदर बा !
बाड़न संघाराम एक सइ
जहवाँ लायक-धरमी;
भिक्खु रहेलन पाँच हजार !
जिनका में ले—
बाड़न अधिका
महायान के मानेवाला !"
खोतन,
बहुत समय पहिले ले;
बउध-धरम मानत आवत बा !
बिकरम वाली—
अंतिम दूसरि सइवरसी के,
चीनी बउध माउचेन्;
प्रिय खोतन नगरी में,
'देखले रहलन;
बहुत भिक्ख लोगन के !'
खोतन वाला

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मजिगर बउध-विहारन में सुभ
संसकीरित आ-
सहज खोतनी भासा का प्रिय
सुघर धरम पोथिन के
रहत रहे उत्तम भंडार !
चीन देस के
बउध-धरम के
नीक दुलम पोथी कुछ
रहली मिलल खोतने से तऽ !
जिनका में ले,
रहे नगद ऊ
प्रिय 'अवतंसक' सुत्त समूहो
जे के सिच्छानंद महान्;
सात सइ सतसठ बिकरम में
मोल समुझि ले जाके;
प्रिय चीनी-भासा में
सज से उलथा कइलन !

× ×

नगर कासगर,
रेसम का पुरान डहरी में;
अइसन जगहा पर बा,
जहवाँ ले कि;
फरगाना आ वक्छु,
दूनो ओरी जायेवाला;
रहता अलगा होलन !
चांग-क्यांग का,
लवटि देस गइला पर ;
सुभ बिकरम संवत ले,
बरिस एक सइ पहिले;
सुघर सोग्द आ—
देस बाखतर का संग,
निपुन चीन के;
बढ़ल बड़ा तेजी से,
नगद बनिज-बेवपार !
दूनो प्रिय देसन के,
जायेवाली राह;
कासगरे ले फूटल रहली।
एही से विकरम का,
पहिली सइबरखी में चीन;
कइलस एके,
अपना कोड़ा-कबजा में !
बरिस सयकड़न बाद,
जब चीनी कानून हुकूमत;
समय पाइ कमजोर भइल कुछ,
तब खोतन एकरा के
अपना हद में सामिल कइलस !
फेरु बाद में,
कुछ दिन खातिर;
चीन कासगर के ले लिहलस !
बाकी, यूची लोग,
गूढ़ मामिला में एहिजा का
दे के दखल तुरंत,
अपना रुचि का लायक
बीर चतुर राजा के,
गद्दी पर बइठावल !
एही सुभ साइति पर,
भारतवासी-
बउध भिक्खु संतन के
पुन्नि चरन एहिजा आ पहुँचल !
उनके सहज दया आ-
सरधा-प्रेम-लगन-सेवा से,
बउध-धरम झट फइलल एहिजा
अउरी ओकर धाक जमल !
पोथिन से ई मालुम बा कि
नगर कासगर आ खोतन पर
प्रिय कनिष्क के,
कायम रहे दखल कबजा जब
ओह समय त
बउध-धरम सुभ
एहिजा रहल जरूरे !
हुवेनसांग लिखले बाड़न कि
चुंगलिन ले पुरुब तक;
राज रहे फइलल कनिष्क के !
पंडित धीर परीन घुमक्कड़,
फाहियान ऊ
चीनी धरमदूत मतिमान
बिकरम संवत
सही चारि सौ संतावन में,
रहे कासगर में आइल जब;

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ओह घरी पर एहिजा
पंचबारसिक उतसो
रहे मनावल जात
जेकरा में कि,
बउध-धातु के
होत रहे सुभ दरसन !
एहिजा एगो
रहल बिहार सुघर सुखदाई
जहवाँ एक हजार
भिक्खु महायानी परबीन
रहि के करसु भजन तप
लोगन के सेवा आ—
बउध-धरम-परचार !
बिकरम-संवत
पाँच सइ सतरह में
एहिजा के राजा सुभ धरमी
भेजले रहलन;
बउधदेव के चीवर एगो
बड़भागी चीनी दरबारे !
एकरा कुछ दिन बाद
गइल कासगर
स्वेत हुणन का हाँथे !
दूसर चीनी संत घुमक्कड़
हेनोसाँग कहत बाड़न कि
'बाड़न एहिजा
भिक्खु हजारो ले कुछ अधिका
सुभ सरवास्तिवाद के
पूरा मानेवाला !'
हेनसांग के
टहर-घूम का जुग में
नगर कासगर कूचा—
बलख, बाखतर, बामियान में
रहलन केतने
भिक्खु बिहार हीनयानी आ
यारकंद खोतन में
निपुन महायानी सुभ !

× ×

कई पुरानन में सुभ चरचा
नगद दीप कुस के आइल बा !
'बृहत संहिता'
प्रिय जोतिस-पोथी में
पंडित निपुन बराहमिहिर जी
सक; सूलिक, पल्लव आ—
चीन बोगयरह का संग
कुसिक जाति के
जिकिर जगहि से कइले बाड़न !
संसकीरित सबदन के
चीनी अरथ बतावे वाली;
सबद-खजाना का सज,
एगो सुभ पोथी में;
ओकर नाँव लिखल बा 'कूचिन' !
आजु-काल चीनी-भासा में,
लोग कहेला कूची ओके !
कचा एगो बहुत पुराना
राज रहे चुनमुनवाँ !
बिकरम वाली,
पहिली सइबरिखी ले;
बरिस सयकड़न पहिले,
जेकर पता मिलत बा !
पहिले सैरामों त,
कूचा परदेसे में;
सामिल रहे अंग बनि ओकर
कूचा रहल राज में
प्रिय असोक राजा का !
एके साफ कहत बा,
धरम-गरंथ पुराना;
सुभ 'असोक-अवदान' हमन से
चीनी भासा वाला !
निपुन नगर कूचा के,
चीन देस से;
पच्छिम जायेवाला,
रेसम का डहरी पर;
रहे बसल सज,
बहुत सुबहिता से प्रिय सुख से !
मन के मोहत,
बरबस खींचि बोलावत;
बेवपारी बनजारा अउरी-
संत घुमक्कड़,
राजा परजा सभ के !
साच कहीं त कूचा,
मध्य एसिया का धरती पर;

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रहे नमूना उत्तम,
विद्या ग्यान धरम आ—
कारीगरी कला के!
मध्य एसिया वासी,
मानुस ओके;
नालंदा कासी कयलास!
बिकरम संवत,
तीनि सइ का लगभग;
निपुन नगर ऊ,
बउध-धरम के;
रहल नगद अड्डा बरिआर!
ओहिजा रहलन सोहत,
एक हजार बउध-मंदिर आ—
सिजिल सांत सुख देवेवाला,
धपकत उत्तम संघ-बिहार!
संघ-बिहार सुघर ओहिजा के,
कारीगरी-कला-निपुनाई;
मति-मरजादा-चतुराई के,
रहलन सवतुक मूरति!
फाहियान कूचा में,
देखले रहलन;
हीनयान मत मानेवाला,
चारि हजार भिक्खु लोगन के!
पहिले त कूचा में,
हीनयान के रहे दबदबा;
बाकी आगे चलि के,
पंडित निपुन धीर विदमान;
भिक्खु कुमारजीव का करते,
बनल पोढ़ गढ़ महायान के!
टहरि घूमि दुनिआँ के देखत,
दरसन करत भागि संजोगन;
विद्या-धरम-ग्यान-गुन-अड्डा,
प्रिय तीरथ-धामन के;
हेनसांग कूचा में आके;
पहुँचल रहलन;
बिकरम संवत,
छव सइ सही सतासी में सुभ!
कूचा रहे नगर मनमोहक
सुघर सांत सुखदाई।
लोग रहे एहिजा के,
निपुन गान-बाजा में!
ओह घरी एहिजा का
एक सइ सज;
संघ-बिहारन में प्रिय
पाँच हजार भिक्खु रहलन जे
मानसु मत सरवास्तिवाद के!
बउध भिक्खु कूचा के,
पढ़सु धरम पोथिन के अपना;
भारतीय-भासा में!
नगद राजधानी से उत्तार,
रहलन दूगो बउध-बिहार;
जिनका में कि,
बउधदेव के थापित मूरति
नब्बे फूट ले,
वेसी ऊँचा रहली!
उनकर सज सुघराई,
कारीगरी कला चतुराई
साचो, मानुस का मति-गति ले,
बहरा रहे जनात!
ओह समय कूचा में,
मोंछगुपुत सरवास्तिवाद के;
नामी भिक्खु निपुन पंडित आ—
विदमानन के अगुवा रहलन!
भारत आके,
बीस बरिस तक;
ऊ सँसकीरित भासा,
रहलन सज से पढ़ले!
बेयाकरन-बिसे में उनकर
रहे नाँव जस खास तरह से!
एह किसिम से,
नउवीं बिकरम-सइबरखी का;
पहिल पहर तक,
नगद देस कूचा में
बउध-धरम के
धजा रहे फहरात!

× ×

भारतीय संतन का,
महिमा के हम गाईं का?
समय भीति पर,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गाढ़ सिआही से खूबी से;
सरोसती का पोढ़ कलमि से,
लिखल जुगन का;
उनका सुजस-कथा के,
मूढ़ बहिर बेसान जान का
गौरवहीन गलित मुरदन के
बिरथा बाँचि सुनाईं का ?
उनकर जिनिगी,
मुरदो ले बेहजि बा
जे मानुस के
देव-दुलम जीवन सुभ पाके
नाहक बिसयन में फँसि,
पुरुखन के सेवा उपकार
भूलि मोह अग्यान भरम बस
मद-गुमान में माँकत बाड़न !
उनका कहाँ पता बाटे कि,
भारी करज बोझ हमनीं का
पिठिया पर लादल बा !
ओके बिना चुकवले,
कबे जीव बाँची ना !
कठिन मिरिग टिसुना ई
ना जाने कि कब ले;
दुलुकावति दउरावति,
केतनन के जमपुर पहुँचवलसि !
एतने नाहीं,
गरदनिआँ में;
भारी पत्थल बान्हि पाप के
लिहले गइलि रसातल आखिर
लख चउरासी में भरमवलसि !
जिनका हिरदय-भीतर,
देस जाति के मानवता के
तनिको गौरव बाटे;
जे पुरुखन का पुरुसारथ के
सरस कहनिआँ सुनि के
करम-धरम के
मरजादा कुछ रखले बाड़न,
आँखि खोलि के देखसु ऊ कि—
हमनीं के अभिमानी पुरुखा,
रिखी मुनी पंडित परधान;
कइसे कठिनाई से लड़लन,
आपन माँथ झुकवलन नाहीं !
निरभय सांत धीर रहि,
आगे डेग वढ़ा के;
कहाँ धरतिआ पर ना गइलन !
ऊ साहस आ नेह लगन बस
करासहर तुरफानों में जा
भयवद्दी के नाता जोड़लन
बेचारा दुखिया मानुस के
सांति प्रेम सेवा पुरुसारथ,
त्याग-सचाई दया विनय के
सवतुक पाठ पढ़ा के,
नेति-धरम के
धपकत उत्तम
विजय-धजा फहरवलन !

× ×

कूचा से पुरुब का ओर,
करासहर तुरफान लाँघि के
चीन देस का,
उत्तर पच्छिम का सिवान पर;
तुनह्वांग नगर बसल बा !
बहुत पुराना जुग में,
यूची सक लोगन के;
ओहिजा रहल निवास !
फेरु कबे हूणन आ—
कबहीं तंगुत, कबे अवार,
कबे काल उइगुर तुरुकन के
रहे राजधानी ऊ !
तकलावाली,
भारी मरूभूमि का पँजरा
देस पच्छिमी आ भारत का
राहगीर भा बेवपारिन के
ओहिजा रहे पड़ाव।
एकरा करते सहज सुभावन,
भारतवासी;
धुनी धुमक्कड़ संत;
पहुँचि समय से ओहिजो,
आसन जमा अड़कि के;
निरमल चित्त लगन सरधा से,
मंगल धरम-सनेस सुनवलन !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ठीक नगर से दक्खिन-पच्छिम,
नदी किनारे;
बे जंगल-झाड़िन के,
खुला पहाड़न के पाँती बा!
जे कि खोदि बनावल,
सुघर सिजिल गूफन का कारन;
मधुमांछी का छाता अइसन,
मालुम होली सकमक!
एही से उनका के,
सहस-बउध-गूफा बिहार का,
सहज नाँव से;
लोग जुगन से जानत बा!
तुनह्वांगवाली पहिली गूफा,
चउथी बिकरम सइवरखी का
बीच समय में,
खोदि बनावल गइली।
केतने गूफा,
वनली छठवीं सइबरिखी में।
जानीं रउरा उनके,
वेई-कुल का बउध-कला के
सवतुक सुघर नमूना!
ओह सुघर गूफन में,
केतने मजिगर मूरति
देखे में आवेली!
गूफावाली
भीतर का भीतिन पर
बनल सिजिल तसवीर अनेकन
अबे मजे में कायम बाड़ी!
तुनह्वांगवाली बहुत पुरानी,
मूरति आ सुभ तसवीरन में;
पाइबि रउरा,
कुछ यूनानी असर देखावत;
प्रिय गंधार-कलाके।
परबत ऊपर सगरे
सँउसे चट्टानन का
पूरी लंबाई पर,
लगातार गूफन के
गँव-विचार से रचि खोदल बा!
भीतरवाली सज गूफा में,
पैंतालिस फुट लंबा;
चारो कोन बराबर,
चट्टानन के काटि रचल बा
सुघर सोहासुत मंडप एगो!
ओह सिजिल मंडप में,
प्रिय अमिताभदेव के
बहुत बड़ी सज मूरति
निपुनाई से बइठावलि बा!
जेकरा अगल-बगल में,
छोट देवतन के कुछ मूरति;
ठीक ठेकाने थापित बाड़ी!
ओह पाँति में उनका,
बउधदेव आ बोधिसत्त जी;
चाहे दूसर सभे देवता,
सामिल लउकत बाड़न!
कुल्हिए मूरति ओह गुफन के,
महायान से,
बाड़ी नाता राखत!
केतने मूरति ऊँचा बाड़ी,
मानुस का आकार बराबर!
दू गो बहुत बड़ा मुरतिन में
एगो नब्बे फुट ऊँच बा!
ओह जगहि का,
सबले अधिक पुरानी;
सुघर सिजिल गूफन के,
विकरम संवत;
चारि सइ तेइस में,
लोचुन आ फालिङ् दू भिक्खु
अपने पुरुसारथ से,
रचि कइले रहलन तइआर!
अब तुनह्वांग गुफा का
भारी ग्यान-खजाना;
पोथिन के कुछ हाल सुनीं!
जे कि हमरा,
ग्यानी गुनी पुरनिआँ पुरुखा;
जनहितकारी रिखि मुनिअन के,
अमिरित रूपी;
परसादी बाड़ी अनमोल!
धन्नि! धन्नि! ऊ,
फ्रांस देस के;
धुनी गुनी विदमान पेलिओ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जैं कि एगो तावी साधु;
वाङ्ताऊ से मिलि के,
दुरलभ पोथिनवाला;
अचरज भरल रतन धन,
सहजे खोजि निकललन !
पोथिन में अधिका तऽ,
सज से बान्हल आ सरिआवल;
प्रिय कुंडली रूप में मिलली !
खोजी पंडित निपुन पेलिओ
पनरह हजार कुंडलिआ,
सज से देखलन जँचलन !
उनका में ले एक तिहाई,
ऊ अपना के;
बीछि बराइ निकललन !
अधिका पोथी,
बउध-धरम-संबंधी रहली !
बाद पेलिओ का इसटाइन,
फेरु ललकि तुनह्वांग पहुँचलन !
ऊहो चउबिस भरलि सनूखि,
दिनी हाँथ-लेखन के;
अउरी चारि सनूखि,
तसवीरन, गोटन आ—
किसिम-किसिम का चीजन वाली;
पाँच हजार दाम दे पवलन !
भारतीय संतन के,
बल-विद्या-मति-मेहनति देखीं;
जिनका कठिन त्याग से तप से,
बउध-धरम के;
सुघर सोनहुला दीपक,
ओहिजो बरि के;
सुखमय विमल जोति फइलवलस !
तुनहवांग का पोथिन में,
उइगुर, भोट, तुखारी अउरी;
संसकीरित भासा के,
केतने उत्तम पोथी मिलली !

× ×

पहिली बिकरम सइबरिखी का,
सुरू समय से;
हूण वंस का सभ जातिन में,
बउध-धरम के
धुनी भिक्खु पहुँचवलन !
आगे चलि के,
बली कबीला से हूणन का;
तोपा, तुरुक, अवार निकललन
अउरी उइगुर आ मंगोल !
अभय अवारन में त,
तेज तंगुतन नियर सुभावन;
बउध-धरम के,
रहल असर आ धाक !
एतने नाहीं,
ओह घरी तुरुकन का;
सभे दलन में,
बउध-धरम के,
लउकत रहे बहुत परभाव !
समय पाइ तुरुकन के भाई,
उइगुर आगे अइलन !
कवले उइगुर भाई,
बउध-धरम अपनवलन;
एकर सवतुक,
सन संवत बतलावल;
सहज काम त नइँखे !
बाकी उनका जोड़-जुगुत के,
ठाढ़ मोकाबिल होखेवाला
जाति-बिरादर
रहलन जब कि
बउध-धरम के मानत
अउरी ई कि हूण वंस का
सभे जातिअन में जा,
बउध-धरम के चउकस दूत
सुभ बिकरम संवत का—
पहिले सइ बरिसन का भीतर,
कइलन सुरू धरम-परचार !
तब काहें ना,
हम कहि सकीं साफ कि
जब ले उइगुर होस सम्हरलन,
पग धइलन इतिहास-जगत में;
उनकर अधिका भाग तबे ले,
बउध-धरम के
सुगम-डहरि धइ चलल प्रेम से !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बिकरमवाली,
एगारहवीं सइबरिखी में
सुखी देस कूचा पर,
राज रहे उइगुर वीरन के !
अउरी ओहू ले पहिले ऊ,
नउवीं सइबरिखी में;
तिब्बतिअन के,
बीच एसिया से हटाइ के
आपन धाक जमवले रहलन !
उइगुर भासा वाली,
पोथिन के उलथा देखला से;
ई जनात बाटे कि,
बउध-धरम-पोथी बहुतेरी;
सीधा सँसकीरित से नाहीं,
बलुक तुखारी अति कोमल;
सक-भासा से,
उइगुर में उलथा हो,
नेह-लगन बस पहुँचल रहली !
सहज तुखार नियर उइगुर में,
सुभ सरवास्तिवाद के;
रहे नगद परचार !

× ×

भारतवासी धुनी साहसी,
धरमदूत संतन के टोली;
लगन प्रेम सरधावस,
नदी पहाड़ सघन जंगल आ;
बीहड़ मरूभूमि के लांघत,
नगद परोसी देस चीन में;
महापुरुस मुनि बउधदेव के,
मंगल धरम-सनेस सुनावे;
बहुत पहिलहीं,
पहुँचलि रहलि सुभावन !
चीन देस के,
दंत-कथा बतलावति बा कि;
पुरुबी ज्ञान वंस के राजा,
महाराज मतिमान मिङती;
एक समय संजोगन,
देखलन अइसन;
अचरज भरल सुघर सपना कि
'उड़ल अकासलोक से आइल;
एक आदिमी सज सोना के !
ऊ धीरे से,
आपन डेग बढ़ाके;
तब राजा का,
मन में उठल सवाल अनेकन;
चंचल चित चउतरफा धावल !
भोर भइल दरबार सजल जब,
राजा अपना दरबारिन से;
ओह गूढ़ सपना के,
माने मतलब पुछलन !
पंडित आ दरबारी सभई,
धीर गुनी मतिमान;
बतिया सुनल निखारल जाँचल,
मति अनुसार विचारल-बूझल !
आखिर गौर गुनावन कइके,
सुद्ध भाव हिरदय के;
उनका से बतलावल ई कि
'पच्छिम में बा,
भारत देस नमूना;
विद्या ग्यान धरम के,
परम पवित्तर जनम-धरतिआ !
जहवाँ मन के मोहे वाली,
दइबी सोभा सुख सुघराई;
ना जाने कब से लउकति बा !
चमकत जहवाँ,
रितु बसंत के लीला-मंडप;
फल फूलन के बाग निराला !
जहाँ कोइलिआ कुहुकति हरदम,
मधुर राग मस्ती के;
बरबस बोला सुनावति !
सोना-चानी हीरा-मोता,
धन-संपति, केतना दरबन के;
जहाँ अछय भंडार !
साधु-संत तपसी मुनि-ग्यानी,
जन-हितकारी रिखि लोगन के;
सुघर सोहासुत करम-भूमि जे !
माँथे जेकरा,
मुकुट नियर सोहत सज;
परबतराज हिमालय !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

घेरि प्रेमवस तीनि ओर से,
सागर जेकर चरन पखारत !
सहज दुलरुवा देस दइब के,
सुखमय लीला भूमि !'
देखि धरम के हानि लोक में,
दयासिंधु भगवान समय से;
महापुरुस अवतार रूप में,
जहवाँ परगट होखसु बहुताँ !
ओहिजे संजम सील सुगति के,
सत्त अहिंसा दया भगति के;
सूरज उगलन भइल बिहान !
नयी जोति मुसुकाइलि आइलि,
आसमान में भजिगर लाली !
महापुरुस अवतार तथागत,
बउधदेव जी परगट भइलन !
समय पाइ ऊ,
एहिजो दरसन दीहन;
बहुमत जनता का सुख खातिर,
सुमति भलाई खातिर !
आई नया बिहान चीन में,
बदली हवा जमाना पलटी;
घूमी धरम ग्यान के चक्का !
देखी लोग अँजोर टहक्का !
बही सुरस अमिरित के धार,
पाई लोग सुगति सुख सांति !"
सपना इहे बतावत बा,
हित के डहरि देखावत बा !'

× ×

राजा के मन.
देखि मधुर सुभ सपना;
सरधा प्रेम भगति गदगद,
सजग भइल आ जागल !
संका छोड़ि सोधि पाँचो के,
सुद्ध सांत हिरदय से;
धरमकाज में लागल !
ऊ भारत से,
बउध-धरमपोथिन आ;
धरम धुरंधर पंडित ग्यानी,
धुनी भिक्खु संतन के;
बिनती आ सेवा से,
जल्दी से ले आवे खातिर;
भेजलन अपना,
तीनि अनुभवी;
राज करमचारिन के चुनि के !
सेनापति तासाई इन आ-
बैद निपुन विदमान सांत-चित,
चउकस चउधुर सिङ विङ;
अउरी उनका साथे,
वांग-सांग मतिमान पुजारी;
पनरह चतुर धीर दूतन के
सजग मंडली ले के;
डेग बढ़वलन आगे !
दूइ बरिस का बाद भागि से
मध्य-एसिया भीतर
देस सोहासुत यूएह-ची में,
भारतवासी;
दूइ भिक्खु संतन से,
ओह मंडली का सरधा से;
भेंट भइल सुभ लगन समय से !
ओह भिक्खु लोगन के,
चीनी नाँव रहे सुभ;
किया-येह-मोतान नगद आ-
चु-फा-लान सुभ सुन्दर !
भारतीय भासा में जिनके,
लोग कहे ला;
धरमरतन कास्यप मातंग !
पर-उपकारी,
सांत धरम-मूरति संतन से;
दूत मंडली,
कई बउध-मूरति आ—
संसकीरित भासा के,
साठि लाख ले;
अधिका सबदनवाला,
धरम-गरंथ अनेकन;
विनय प्रेमवस पवलसि !
एकरा बाद कहीं का,
धरम धुरंधर धुनी लोग के;
पुरुसारथ आ—
बोध लालसावाली,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अमर-कथा सुभ पढ़ि के
लोर बहल आँखिन से
गला रुन्हाइल आवत बा अब !
देखीं रउरा,
सरधा-भाव-भगति के महिमा !
दूनो भिक्खु संत आ—
ओह धरमपोथिन के;
उज्जर घोड़ा पर बइठाके,
दूत लोग ऊ;
बिकरम संवत,
एक सइ एकसठ में;
प्रिय लोयांग नगर ले अइलन !
प्रेम-भाव से,
राजा से मिलला का बाद;
साधु धुनी ऊ दूनो,
हो-लू मठ में रहि के;
लगलन करे धरम-परचार !
पहिला पंडित,
प्रिय कास्यप मातंग घुमक्कड़;
मध्यदेस भारत के
बाभन कुल के;
रतन नगीना रहलन !
जे कि नाँच नचावे वाली,
नई जवानी का पहरा में;
अपना विमल बुद्धि विद्या आ–
धरम-प्रेम सेवा-गुन खातिर,
गइलन गिनल लाल मसहूर !
उरपेरक दइबी महिमा से,
पुरुसारथ-तप-तेज ग्यान के;
सुभ सजीव मूरति ऊ,
कठिन त्याग उतजोग जतन से,
पढ़लन बहुत धरम पोथिन के !
फेरु टहरि के पच्छिम गइलन,
जम्मू कासमीर आ—
वीर बाभनाबाद पहरुआ,
निपुन देस गंधार !
एहू ले आगे बढ़ि,
भारत का सिवान ले बहरा;
धरमवीर ऊ,
कई छोट देसन में घूमत;
बउध-धरम फइलावत,
आखिरकार पहुँचलन चीन !
धरम रतन ऊ संत दुसरको,
ओही मध्यदेस के रहलन !
साथे दूनो भिक्खु,
हान वंस का सुभ रजधानी,
प्रिय लोयांग पहुँचलन !
इहे रहल भारत से,
चीन देस का;
भाव भगति भा भयवद्दी के
पहिल सवतुक नाता !
बउध भिक्खु लोगन के,
ठीक ढंग से;
बउध-धरम-परचार चीन में,
बिकरम वाली;
अंत दूसरी सइबरसी में,
सुरू भइल आगे बढ़ि !
ओह समय में
बउध-धरम-परचारक कुछुवो
भारत के रहलन ना
बलुक बहुत-सा
मध्य एसिया का देसन से
चलि सरधावस,
दूर चीन में पहुँचल रहलन !
ओह सभन में
त्यागी राज कुँवर पारथियन
'आन-सी काउ' धुरंधर,
भइलन अति मसहूर !
राज छोड़ि काका के अपना,
धारन कइ चीवर-संघाटी
साथ कवंडल खप्पर लिहले
विनय सील के मानत पूरा
संवत दू सइ पाँच बिकरमी
पुन्नि-काल में
ऊ लोयांग नगर का पँजरा
सुभ स्वेतास्व-बिहार नगद में
जाके डेरा धइलन आपन
मधुर-लालसा से सेवा का !
चीन देस में,
बउध-धरम का परल नेंव के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

असली पोढ़ बनावे वाला,
ओही राजकुँवर के जानीं!
बीस बरिस ओहिजा रहि
कठिन साधना से अपना ऊ
कुल नब्बे आ पाँच
बउध-धरम-पोथिन के
सँसकीरित ले
प्रिय चीनी भासा में कइलन!
बाकी उनका में ले,
अब बस पचपन बाँचल बाड़ी!
अनसी काउ-धुनी का,
एके-दूइ बरिस का बाद;
भिक्खु साहसी लोकछेम जी
चलि लोयाङ पहुँचलन!
ऊ यूची-कुल-सक साखा के,
रहलन निपुन सपूत!
जे कि अपना,
सहज-साधना-मय जीवन में;
तेइस चुनल धरम पोथिन के
सँसकीरित का मूल रूप ले
प्रिय चीनी-भासा में कइलन!
लोकछेम का वाद समय से,
विनय-सील के जानेवाला
भारतवासी भिक्खु महाबल,
अउरी गुनी धरम फल;
पहुँचि सिजिल लोयाङ नगरिआ,
संत-समागम से सरधाबस;
कुछ अउरी पोथिन के,
चीनी उलथा कइलन!
एह किसिम से कुल मिलि,
पुरुबी हान-बंस में
चारि सइ चवँतिस पोथिन के
चीनी उलथा भइल मजे में!
दू सइ सात धरम पोथिन का
उलथा करवइअन के;
नांव पता कुछ मालुम नइखे!
ओह सभन में,
सइए का करीब पोथी अब,
पावल जाइ सके ली!
हान बंस के,

राज बिनसि गइला का बाद;
सू, वेई, ऊ,
तीनों बली राजबंसन के
भइल चीन पर सासन!
तीनि भाग में देस बँटाइल,
बल घटि गइल कुमति से
कवनो काम बढ़ल आगे ना!
राजनेति का मति-विचार से
आगे का पचास बरिसन तक
रहल चीन कमजोर!
बाकी तबहूँ बउध-धरम के
रुकलि तरक्की नाहीं!
ओह तीनि बंसन में वेई
उत्तर अउरी मध्य चीन में
रखलन आपन,
राज हुकूमति कायम!
जेकर ऊहे,
रहे राजधानी लोयाङ्!
ऊ बंसिन के राज रहे प्रिय,
नदी याङ्ची का दक्खिन में
सागर का पँजरा के भाग!
रहल नानकिङ्
जेकर सुभ रजधानी!
तीसर राज रहल सू
ओरे पच्छिम का सिवान पर
बना चेङ्तू के सरकारी
राज-काज के अड्डा!
राजबंस ऊ रहे असल में,
ओही हानबंस के साखा!
एही से ऊ,
सँउसे देस चीन के;
राजा होखे के अधिकारी
समुझत रहल सहज अपना के!
अबो नगर लोयाङ् नगद ऊ,
रहे राजधानी प्रिय
सुख सोभा के धाम!
ऊ लरिकइएँ,
चारो वेद पुरान अठारह;
अउरी केतने :दूसर,
बाभन-धरम-गरंथन के पढ़ि;

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गूढ़ ग्यान के,
मरम असल जाने के
कोसिस कइलन पूरा !
आगे चलि के,
बउध-धरम अपना के
हीनयान आ महायान का
सुभ सुत्तन-विनयन के
पढ़लन अति सरधा से !
अब का बात रहल पूछे के,
बोध भइल जब मनवाँ जागल;
काहे ना ऊ,
बनल उडंकू धावें ?
करतब-ग्यान-ध्यान के पंडित
संत धरमफल;
सुभ स्वेतास्व बिहार पुराना,
ओही लगन-प्रेम-सरधा आ—
सांति-सुबहिता से अति सज से
बउध-धरम के,
करत रहल परचार !
उलट-फेर सासन के,
धरम-दूत संतन के;
छेड़-छाड़ कइलसि ना !
वेई कुल का राजकाल में
पाँच निपुन उलथा करवइआ
बारह चुनल धरम-पोथिन के,
सज से उलथा कइलन
सँसकीरित ले,
चीनी जनता का भासा में !
भिक्खु धरम-फल
मध्यदेस के
बहुत धनी बाभन-कुल-भूसन
पूत सपूत निराला रहलन !
लाँघि सिवान देस के आपना
धरम-धजा फहरावे चललन;
मातपिता के,
कोखि पवित्तर कइलन !
मध्य-एसिया का देसन में,
सरधावान भगत लोगन के
बउध-धरम के
मधुरस भरल सनेस सुनावत

सुभ बिकरम संवत का,
दू सइ सही ओनासी में ऊ
जा लोयाङ पहुँचलन !
सोग्द देस के,
भिक्खु संघबरमा भल;
दूसर नामी पंडित रहलन
जे लोयांग नगर में
तीनि सइ नव संवत में जा
सुभ स्वेतास्व बिहार नगद में,
संतन का संग रहि के
बउध-धरम के
उत्तम सेवा कइलन !
उनका दूइ बरिस का बाद
धरमसत्त आ
चउथा बरिसे पोयङ
पहुँचि राजनगरी लोयाङ
प्रिय बिहार में रहि ओहिजा का
उलथा कइलन;
कई धरमपोथिन के !
राज दक्खिनी ऊ का
नगर नानकिङ;
निपुन राजधानी के
ओहू जुग में
रहे बहुत मरजादा !
सहज सोहासुत चीन दक्खिनी
एक तरह से;
भारत आ ओकरा से
दक्खिनवाला !
सभे बउधदेसन का,
धरम दूत संतन के
सवतुक कारज-भूमि रहे सुभ !
चीन दक्खिनी में तब,
सभे ओह जगहन से
सागर का लहरन से खेलत
टहरत पहुँचल सहज रहे कुछ !
दूसर कि आसाम होइ के
सुगम राह धरती के
ओह समय में
रहल मजे में चालू !
एही से भारत भा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दक्खिन का देसन के;
दूत धरम परचारक
दक्खिन अधिका पहुँचत रहलन !
ऊ-बंसी राजन का,
राज समय में;
पाँच निपुन उलथा-करवइआ,
भारतीय पोथिन के
उलथा कइले रहलन
जिनका में ले
पंडित ची-चियेन प्रिय
दक्खिन चीन-राज के
सभसे बड़ उलथा करवइआ;
सरधावान भगत भल रहलन !
ऊ यूची-शक-कुल-सिरताज
रहलन भिक्खु संत ना;
वलुक-बउध-मत-प्रेमी
सुभकरमी गिरहस्त !
हानबंस का अंत समय में,
आइल रहलन चीन !
लोकछेम का पासे रहि ऊ
विद्या पढ़ले रहलन !
राज-हुकूमति में उत्तर का
उथल-पुथल मचला से
ऊ चलि गइलन
ऊ-कुल-सासन वाला
सांत देस दक्खिन में !
ओहिजा उनके, राजकुँवर के
विद्या-गुरु बनवलन राजा !
राजा का दरबारे उनकर
रहल बहुत आदर आ मान !
पहिला ऊ-राजा गुनगाँहक,
उनके "पो-शी"—
प्रिय 'विदमान-पुरुस' के
पदवी देले रहलन !
मध्य एसिया-मंडल-बासी,
रहला का नाते ऊ
पंडितराज 'चियेन'
छव पड़ोसी देसनवाली;
भासा जानत रहलन सज से !
ऊ कुल्हि मिलि के,
एक सइ ले—
नगद सताइस अधिका,
बउध-धरम-पोथिन के
उलथा कइले रहलन
जिनका में ले
अबो मिलल बाड़ी ओनचास !
बिकरम-संवत
दू सइ बाद एकासी सुभ में
भारतवासी दू बिदमान
भिक्खु बिघिन आ लिउ-येन्
जाइ पहुँचलन चीन !
बिघिन निपुन-पंडित-कुलवाला,
बाभन रहलन उत्तम !
जे पढ़ि वेद साहतर पूरा
बउध बनल रहलन बिचारि के !
टहरि-घूमि केतना देसन में
आखिर में ऊ;
दूर चीन में पहुँचल रहलन,
जहवाँ अपना सांत-निवास
प्रिय वु-चांग में रहि के
बोध-ग्यान गीता समान सुभ
सुरस धम्मपद के चीनी में
सज से उलथा कइलन !

सर सर सरकि समय भागे ला
कहीं बहुत ठहरे ना
नाना रूप धरे ला !
एक समान कहाँ गति एकर
केहू कबहीं देखल ?
रथ पर चढ़ि के
सात सुघर घोड़न का
कले-कले जे सुरुज देवता
चढ़ि ऊँचा आकास लोक में
तेज ताप मरजादा पावसु !
उहे काल-गति का अनुसार,
मलिन-मुखी दुखिआ बनि
नीचे गिरि पच्छिम डूबेलन !
पुरुबी हान-बंस का बाद,
फहरति रहलि देस में जिनकर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भारी माहिमावाली
राज-धजा तिनरंगी
ओहू तीनि राज-बंसन के
चमकत तेज सितारा डूबल !
राजनेति का रंगभूमि के
परदा गिरल उठल तेजी से !
कायम भइल देस में दूसर,
राज पच्छिमी छिन्-बंसिन के
बिकरम-संवत,
तीनि सइ बाइस में !
एह बंस के राजा
चांङ-आन से –
जहवाँ का सुभ सुघर सांत अति
सभ मंदिरन-बिहारन भीतर;
बउध-धरम का,
बिनय सील संजम आ—
सुभ आचार-बिचारन के प्रिय,
जोति अखंड सोनहुली;
जरति रहे सुख-सोभा रूप–
अपना राज-देस-जनता पर,
सही हुकूमति कइलन;
सजग पचास बरिस तक !
ओह समय से लाभ उठा के,
पनरह बिदमानन के टोली;
कुल मिलि चारि सइ चउवालिस
बउध-धरमपोथिन के
चीनी उलथा कइलसि
जिनका में अब थोरे
पावल जाइ सकेली !
धरमरच्छ के,
उलथा करवइअन में
रहे मिलल पहिला उत्तम पद !
ऊ पुरुसारथ नेह-लगन से,
दू सइ अधिक एगारह
चुनल धरमपोथिन के
उलथा कइले रहलन
प्रिय चीनी-भासा में !
बाकी अब उनका में,
बँचल बानवे बाड़ी !
धरमरच्छ रहलन सक-बंसी,
धरम-धुरंधर गुनी जाति के
बहुत पुराना जुग ले,
उनकर धुनी पुरनिआँ पुरुखा
आ तुनहांग नगर में
रहलन बसल बाहुबल—
नेति-धरम संजम से !
आठ बरिस का लोच उमिरि में
ऊ भारत का
एगो बउध-भिक्खु से
सामणेर हो
तेज-बुद्धि-बल पुरुसारथ से
बहुते थोर समय में
सभे साहतर-बिद्या पढ़ि के,
भइलन निपुन सिरोमनि पंडित !
घूमत देस-बिदेस फेरु ऊ,
गइलन धरम-भूमि भारत में;
जहवाँ उनके,
मिललन धरम-गरंथ अनेकन !
धरमरच्छ बिदमान बिचित्तर,
छत्तिस भासा जानत रहलन !
बिकरम–संवत,
तीनि सइ एकतालिस में ऊ
लवटि चाङ–अन अइलन
अउरी ओहिजा एगो
बउध--बिहार नगद बनववलन !
उनका किहँ हजारन,
भल बिदारथी बिद्या प्रेमी
बउध धरम के
सिच्छा पावत रहलन !
दूसर भिक्खु संत अन् फा किङ्
पारथिआ के वासी;
संवत् तीनि सइ अरतिस में,
चीन पहुँचि के
रहलन धरम-काज में लागल !
ऊ असोक-अवदान सरस सज
बउध-कथा पोथी के;
चीनी उलथा कइले रहलन ;
निपुन पच्छिमी छिन-बंसिन का
राजकाल में;
बउध-धरम-हितकारी,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दूर-दूर ले फइलल !
बनलन नगद बिहार अनेकन
अउरी मन के मोहेवाली;
बहुत बउध-मूरति प्रिय
रचला गढ़ल गइली स !
छिन,बंसी राजा वू-ती का
राज-काल में;
बउध-मंदिरन के आ–
बउधदेव का प्रिय मुरतिन के!
रहे बहुत आदर आ मान !
भाव-भगति से,
पूजा उनकर होत रहे नित
ओ-लोआङ-मंदिरन वाला,
लेखन का अनुसार;
छिन-बंसिन का राज-काल में,
चालिस गो मठ रहलन ओहिजा !
खास-पच्छिमी छिन-रजधानी
प्रिय लोयाङ नगर में;
रहलन दस गो बउध-विहार !

× ×

उथल-पुथल का ओह समय में,
दूर उत्तरी भाग चीन में;
हूण जातिअन के अदंक-भय
रहे बहुत बढ़ि के दुख देत !
याङसी का दक्खिन में
छाङ्-अन से कुछ आगे
एगो राजकुँवर भइ
निपुन साहसी वीर
नानकिङ में
नया राजकुल कायम कइलन
देखि समय-गति बूझि-बिचारि !
हूणन का अदंक आ—
जुलुम जोर से भागि,
बहुते-चीनी दक्खिन गइलन !
भागि पहुँचला से लोगन का
सहज दक्खिनी चीन-राज के
आबादी बढ़ि गइलि चउगुनी !
उत्तरवाला लोग पहुँचि के,
कई जिला आ नगर-इलाका
नया बसवलन आपन !
जिनके कि ऊ
अपना ओह पुराना
गाँवन-नगरन का नाँवन पर
लगलन फेरु पुकारे !
एह किसिम से
पुरुबी-छिनबंसी सरदार;
बिकरम-संवत,
तीनि सइ चउहत्तर में सुभ
राजबंस के नयी पताका,
नानकिङ् में गाड़ि
चीनी जनता के सुख दिहलन
सेवा कइलन प्रेम-सांति !
पुरुबी छिन-कुलवाला
सभई राजन का हिरदय में
बउध-धरम का फुलवारी के
सज से सींचेवाली
भाव-भगति सरधा के
बहति रहै तिरबेनी धार !
बाकी नउवाँ राजा
प्रिय हियाउ-ऊ-ती सुभकरमी;
चीनी राजा रहल पहिलका
जे कि बउध-धरम के
खुलि कइलसि मंजूर !
नानकिङ तऽ,
वू-बंसी-सासन छाया में
बउध-धरम-दूतन के
रहबे कइल पोढ़ उत्तम गढ़ !
जबले छिन-बंसिन के,
राज रहे सुभ कायम;
चीनी बउधन का हिरदय में
सरधा-दीप सजीला;
बरत रहे जगमग सज से !
एह बंस का राज-काल में,
सतरह गो उलथा करवइआ;
सरधावान निपुन बिदमान;
उलथावाला
कठिन काम के कइलन !
सभसे पहिले सिरीमित्त जी,
उलथा कइलन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तंतरवाली सुभ पोथिन के !
एहि जुग में,
धरमरतन पंडित सिरताज
एक सइ दस,
सँसकीरित पोथिन के
चीनी उलथा कइलन !
धरम सील संजम आ—
सांति सुबहिता सुख का,
एह समय में;
बहुत बउध बिदमान
कासमीर से अइलन चीन !
जिनका में ले
संघभूति, प्रिय धरमनंदि आ—
संघदेव के;
नाँव सुजस दूनो देसन में
फइलल रहे मजे में
संघभूति सरवास्तिबाद के,
सरहंग पंडित रहलन !
ऊ सरवास्तिवाद मत वाली,
बहुत धरम पोथिन के लिहले
कासमीर से,
उत्तर चीन देस का
सिजिल राजधानी छाङ-अन में
बिकरम संवत,
चारि सइ अरतिस में;
धरमदूत बनि पहुँचल रहलन !
प्रिय अभिधरम बिभासा सँउसे,
उनका रहे इआद जबानी !
ऊ 'अभिधरम बिभासा के सज,
चीनी उलथा कइलन ।
एतने नाहीं,
प्रिय आरज बसुमित्त गुनी का;
'बोधि-सत्त संगीत सासतर,
अउरी धरमरच्छ का
'बउध चरित्तर सुत्त' समान,
हितकारी पोथिन के
भिक्खु धरमनंदि आ -
संघभूति से मदति पाइ के,
प्रिय चीनी भासा में रचलन !
एह समय के,

सभसे निपुन बड़ बिदमान;
भिक्खु धरमनंदि गुरु ग्यानी
भारतीय ना होके
यू-एह-चि के,
भगत तुखारी;
सँसकिरित का,
सुभ आगम पोथिन के
भारी पंडित रहलन !
सुत्तपिटक का सभ अंगन के
उनका पूरा बोध रहे !
बिकरम संवत,
चारि सइ एकतालिस में ऊ
छङ्-अन पहुँचि प्रेम से
चारि आगमन के चीनी में,
सज से उलथा कइलन !
ओहिजा रहि के
दूइ बरिस का भीतर
सँसकीरित का
'मध्यम' आ 'एकोत्तर आगम';
दूइ धरम-पोथिन के अउरी,
ऊ रचलन चीनी में !
भिक्खु कुमारबोधि जी,
मध्य एसियाबासी;
प्रिय तुरफान राज का
राजा के गुरुदेव;
चारि सइ ओनतालिस--
सुभ बिकरम संवत में,
ओहिजा ले चलि चीन पहुँचलन
बउध धरम के
करे नगद परचार !
ऊ सुभ भाव-भगति सरधा से,
बिमल ग्यान आगम पोथिन के;
कइलन सुरू सोहासुत उलथा !
जेकरा के आगे चलि
गउतम संघभूति प्रिय
पूरा कइलन सज से !

× ×

आगे हाल सुनीं अब
चीनी बउध-धरम का

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सुघर सोनहुला-जुग के !
जब कि धुनी महापंडित ऊ
संत सिरोमनि तपसी त्यागी;
भिक्खु कुमारजीव निरमल-चित,
चीन बोलावल गइलन !
एही समय चीन में
विमल चनरमा नियर महान
दूसर साधु-पुरुस मतिमान
सील-विनय-विद्या-भंडार,
भिक्खु साहसी धरम-धुरंधर
निपुन बिचारक ता-ओ-आन,
बउध-धरम का सेवा खातिर
भाव भगति सरधा से
करम-भूमि में आगे अइलन !
तीनि सइ ओनहत्तर,
सुभ विकरम संवत में
जिला 'फू-लिङ' भीतर
एगो कनफूसी-मतवाला
भला चतुर पंडित का घर में
जनम भइल उनकर सुभ !
सात बरिस का लोच उमिरि में
उनकर माई-बाप अचक्के;
उनके छोड़ि सरग के गइलन !
पाँच बरिस के
समय बिता के अउरी
ऊहो घरवा छोड़ि निकललन,
भइलन जब अँखिफोर !
सुरुवे ले माया-ममता का
जरि में टांगी लागल !
एगो गवँई,
विमल बउध-मंदिर में
बनि के भिक्खु विरागी
आसन जमा ठहरि ऊ
लगलन पढ़े लगन से
बउध-धरम-पोथिन के !
चउबिस बरिस उमिरि भइला पर
उनकर गुरु महान्
आगे विद्या-विनय-सील के,
ऊँची सिच्छा पावे खातिर
उनके नानकिङ नगरी में
'बउध दान' का पासे भेजलन !
बिकरम संवत,
चारि सइ बाइस में
नगर ह्विआंङ यांङ में
ताओ-आन पहुँचि के
कुछ दिन ले तऽ
मठ स्वेतास्व सिजिल में रहलन !
आगे चलि के
सुघर तान धारा मठ में ऊ
लगलन रहे सांति से सुख से !
ओहिजा उनकर
पनरह बरिस समय सुभ
बउध धरम कारज में बीतल
तीनि लेख लिखलन ऊ,
बउध-धरम पोथिन पर;
ओह सांत नगरी में।
एतने नाहीं,
केतने दुलम बउध-पोथिन के
नेह लगन पुरुसारथ से ऊ
खोजि जुटवलन चारो भर से !
सुरू ह्वान-जुग से ले
छिन-बंसिन का;
सवतुक जुग तक वाली,
नीक बउध पोथिन के
जोरि जमा कइ
ऊ उनका पर
सहज टीपनी लिखलन !
उनकर सुभ किरती ऊ,
नगद 'परीच्छित-
बउध गरंथ सुची,
छिन-कुल भूसन;
धुनी ह्वि-आओ वूती,
सुभ धरमी राजा का
राज-काल में,
बिकरम संवत
चारि सइ एकतालिस में,
पूरा भइलि लिखा के !
चारि बरिस का बाद
ताओ-आन पहुँचलन छाङ्-अन् !
तातारी सेनापति

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

फू-चिएन सरबा से
ओहिजा उनकर,
कइलन बहुत मान सतकार !
धरम गरंथन खातिर
अपना गाढ़ प्रेम का कारन
ताओ-आन सुभावन,
ओहू नगरी में रहि
बउध धरम का,
सुभ परचार काम में लगलन !
हान-बंस का बाद;
चीनी-बउध धरम के
दू गो साखा भइली !
पहिली 'ध्यान धरम' आ—
दूसर 'प्रग्या पारमिता' प्रिय !
ता-ओ-आन ओह दूनो के
नायक मानल जालन !
एह किसिम से
बरिस तिहत्तर तक ऊ
बउध-धरम के सेवा कइके
विकरम-संवत;
चारि सइ चालिस का—
दुइ बरिस का बाद माघ में
नासवान देहिआँ के छोड़ि
मैतरेय बउध का निअरा
तुसित सरग में गइलन
जवना साल महामुनि
ता-ओ-आन सरग के गइलन
ओही साल निपुन छिन्-राजा
फू-की-येन मरइलन !
ऊ रहलन विद्या के प्रेमी
बउध-धरम के कट्टर पोसक
सवतुक भगत महान !
सँसकीरित-पोथिन के
चीनी उलथा देखि दोसमय
पंडित चा-ओ-आन परीन
उनके सोधि सुद्ध कइ !
नगद बनावे खातिर,
रहलन परल सोच में भारी !
मध्य-एसिआ-भीतर
सुघर राज कूचा के
संघ-सिरोमनि
पंडितराज कुमारजीव के
नाँव बहुत ऊ सुनले रहलन !
एही से राजा से कहलन
उनका के बोलवावे के !
फू-की-येन कुमारजीव के
तुरत बोलावे खातिर
कूची राजा,
प्रिय पो-चा का पास;
अपना राजदूत के भेजलन
बाकी राजा पो-चा
तीस-बरिस से संघ-राज बनि
अपना किहें रहत चलि आवत
ग्यानी संत कुमारजीव के
दीहल नाहीं चहलन
राजा एके
अपना मरजादा का
बहुत खिलाफ समुझलन !
अउरी झट अपना सेनापति
प्रिय लुई-कुवाङ के
कूचा-करा सहर-तुरफान
सभई देसन का सेना के
साथे लड़लो पर हराइ के
पंडित के ले आवे खातिर
निरभय ओहिजा भेजलन !
विजयी सेनापति ऊ,
अबे राजधानी छाङ्-अन् में
लवटि तहाँ ले
पहुँचल नाहीं रहलन
कि राहे में
राजा का हतिआ के
असुभ खबरि सुनलन ऊ !
ओही घरी विचार छोड़ि तब
ओह राजधानी जाये के
ऊ फु-चाङ् में
एगो नया सुतंतर
सुघर राज कायम कइ
सोरह बरिस कुमार-जीव के
अपना रजधानी में रखलन !
नया बंस छाङ्-अन् के,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रिय पछिला छिन्-बंस कहाइल
याङ्-चाङ् भइलन,
एह बंस के पहिला राजा !
फेरु जगहि पर उनका,
भइलन राजा याङ्-हिङ् !
ऊ दूनो राज परतापी,
रहलन बउध-धरम सुभ मानत !
उनका सुखमय राजकाल में,
बउध-धरम-पोथिन के रचना
बढ़ि उन्नति का,
बहुत ऊँच दरजा पर पहुँचलि !
ओह समय का
उलथा करवइअन में
रहलन कूचावाला
भिक्खु कुमारोजीव !
संत बउध-जस,
रहलन गुरु कुमारजीव के
उहो ओह समय का
सुभ-कारज में सामिल रहलन !
धुनी पुरुस-पारस ऊ
सांत धीर निरमल-चित
एगो कसमीरी-बाभन का
उत्तम कुल में पैदा भइलन !
लरिकइएँ ले उनका,
बउधमुनी का सुभ सिच्छा में;
रहल गाढ़ सरधा आ प्रेम !
बाभन-धरमी,
पोथिन के पढ़ला का बाद
महायान आ—
हीन-यान दूनों का
प्रिय पोथिन के पढ़ि ऊ
बनलन भिक्खु बिरागी !
भिक्खु-धरम अपना के,
एके जगहा बइठल
विनय-नेम का उलटा होला !
अइसन जानि समुझि ऊ
भिक्खु बउध-जस
कासमीर से बहरी
टहरत-घूमत देस अनेकन
सरधावान भगत लोगन के
धरम-सनेस सुनावत
दूर कासगर जाइ पहुँचलन !
ओह राज के राजा,
बउध-धरम के मानेवाला
कइलन उनकर,
बहुत सुघर आदर सतकार !
एही घरी कुमारजीव ऊ
कासमीर से कूचा लवटत
नगर कासगर पहुँचल रहलन !
ऊ कुछ समय ठहरि के ओहिजा
लगलन पढ़े गुरू से अपना !
महाबिरागी भिक्खु बउध-जस
फेरु समय से;
चीनी राजा के नेंवता पा
पहुँचि राजधानी छाङ्-अन् में
धरम काज में लगलन !
ऊ थोरे पोथिन के
चीनी उलथा कइलन
मदति पाइ के,
फो-नी-येन, बउध-इसमिरती
निपुन भिक्खु पंडित से !
तेज बिलच्छन विमल बुद्धि के
रहलन बहुत बड़ा बिदमान्
सांत धीर गंभीर बिचारक
केतने भासा जानेवाला !

× ×

पंडित-राज कुमार जीव प्रिय,
भारतीय पोथिन का
चीनी-उलथा करवइअन में
बाड़न पुरुस अकेला,
विद्यावान गुनी बेजोड़ !
उनकर पिता कुमारायन जी
रहलन एगो,
भारतवासी भिक्खु !
सुंदरिअन का—
सुघर देस कूचा जा,
काल-करम सुभाव गुन;
ए चारो का घेरा में परि
राजा का बहीनि जीवा से

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कइलन प्रेम-बिआह !
जनम भइल जब
विमल सपूत कुमार जीव के
तब उनकर महँतारी,
एगो नगद बउध-मंदिर में
सहज थीरता से रहि
उनकर पालन-पोसन कइली !
सात बरिस का लोच उमिरि में
एक हजार मधुर पद;
पढ़ि के रोज इआद करे का
सहज सुभाविक गति से
बउध-धरम-पोथिन के,
पढ़े सुरू कइलन ऊ
नेह लगन सरधा से !
उमिरि भइलि जब नव बरिस के
तव बेटा का,
उत्तम सिच्छा खातिर;
माई जीवा,
उनका के साथे ले;
कूचा से कसमीर पहुँचली !
जहवाँ ओह समय का,
निपुन बउध विदमान;
बउधदत्त का,
सुभ चरनन के सेवा कइके;
लगलन पढ़े कुमार जीव ऊ
बउध-धरम-पोथिन के !
बउधदत्त जी का बारे में
इहे कहल जाला कि
एक हलार सलोक रोज ऊ,
बना सकत रहलन अपने से
अउरी पहिलेवाली,
गूढ़ धरम पोथिन के
ओतने लिखल सलोक,
रहलन पढ़िओ सकत मजे में !
पूत कुमारायन-जीवा के
धुनी लगन के पक्का;
करमवीर मतिधीर जवान,
बइठि पुन्नि चरनन में उनके;
'मद्धिम' आ 'दीरघ-आगम' के
पढ़ले रहलन सज से !

जिनका में कि—,
चालिस लाखो ले कुछ अधिका
सिजिल सबद बाड़न स !
एह किसिम से,
बीस बरिस का पोढ़ उमिरि तक
भारी पंडित बनि के
लाल कुमारजीव ऊ;
माई का संग,
लवटि पहुँचलन कूचा !
सहज सुभावन
नेह लगन सरधा से
पिता डहरिआ धइले,
जीवन का सुभगति के सोचि;
उचित समय पर ऊहो,
बनलन भिक्खू बिरागी !
अपना विद्या बुद्धि सील गुन,
पुरुसारथ-सेवा से;
समय-दसा अनुसार,
आगे बढ़ि भइलन ऊ,
पंडित-राज कमार जीव प्रिय
संघ-सिरोमनि भिक्खु !
ओह रूप में,
तीस बरिस ओहिजा रहि
महायान के,
कइलन बहुत सुघर परचार !
विद्या के महिमा के गावे,
मलयागिरि चंदन का
सुभ सुगंध के
कइसे कहाँ छिपावे ?
देस-विदेस सभत्तर,
उनकर विमल सुजस मनमोहक
पवन-बेग से फइलल !
सरधावस केतना देसन से,
सुभ चरनन का दरसन खातिर
नेंवता आवे लागल !
भला कहीं तऽ,
सुद्ध सुगंधित सोना;
के ना देखल चाही ?
अमिरित रस बरिसावे वाला,
विमल चनरमा;

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बे कलंक दागी के
केकरा के ना सुख पहुँच इहन ?
ओइसन महापुरुस का,
हितकर दरसन खातिर
केकर मनवाँ ललचित नाहीं?
बाकी तऽ जानीं जे,
परमारथ के मजिगर बेड़ा
विद्यावान गुनी संतन के,
बड़ा भागि से दरसन होला;
संचित पुन्नि उदय भइला पर!
संत कुमारजीव उपकारी
पहिले तऽ कु-चाङ पहुँचि के
कुछ दिन ठहरि धरम फइलवलन!
बाकी भल चीनी राजा का,
बार-बार बिनती कइला पर;
बिकरम संवत-
चारि सइ अनठावन में सुभ,
छाङ्-अन जाइ पहुँचलन!
उनकर मधुर मातु-भासा प्रिय
सिजिल देस कूचा में
बोलल जायेवाली
रहलि 'तुखारी-खं!
कासमीर में,
बहुत समय तक रहले;
ओहिजो का भासा पर,
उनकर रहे नगद अधिकार!
सँसकीरित तऽ,
उनका पढ़े-लिखे आ—
कथा-बहस-सिच्छा के
भासा रहे सुरस उत्तम सुभ!
चउमुख राज-खिला कूचा में,
चीनी आ तुरुकन का;
मिलल सिवाना पर रहला से,
ओहू दू भसन के उनका
पुरहर बोध रहे!

× ×

पंडित निपुन कुमारजीव का,
चीन पहुचला का पहिले जे
मध्य एसियाबासी चाहे,
अउरी दूसर भिक्खु
लागल रहलन
उलथा का कारज में
उनका पूरा,
भासाबोध रहल ना!
एकरा करते
उलथा सज से होखे नाहीं!
बहुत बेर तऽ पढ़वइअन का,
केतने पोथिन का उलथा के
अरथ समुझ में आवे ना कुछ!
राजा याउ-हिङ के
प्रेम भरल बिनती सुनि
भिक्खु कुमारजीव तब,
ओह दोस के दूर करे के
बीरा सहज उठवलन!
उनके मदति करे के,
आठ सइ विदमान दिअवलन!
उनकर काम रहल कि,
संसकीरित का—
नयी धरम पोथिन के
उलथा कइल मजे में
अउरी पहिले वाला
ओह पुराना सभ उलथन के
सोधे सरिआवे आ—
सज से सहज सुधार करे में,
पंडित राज धुनी के
नेह लगन से मदति दिहल डटि!
जेह समय ऊ कारज,
चलत रहत होखे तब;
कबे-काल के धरमी राजा,
अपने आके बइठसु ओहिजा!
विद्या विनय सील के सागर
भिक्खु सुरेमन ग्यानी;
पंडित निपुन नगीना,
धीर करमजोगी सुभधरमी;
लाल कुमारजीव का,
उलथा कइल धरम पोथिन में
तीनि सइ में,
आज छप्पने कायम बाड़ी!
उलथा का कारज में,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उनकर विद्या बुद्धि तेज बल;
झलकि रहल बा साफे !
'महा परग्या-
पारमिता-सुत्तन' का
सिजिल सुगम उलथा में
पाँच सइ पंडित लिखवइआ,
अउरी 'सधरम-पुंडरीक' आ–
'बरम्ह परीपृच्छा' सुत्तन के
उलथा करे लिखे में
दूइ हजार भिक्खु मिलि
मदति देसु उनका के !
'विमल-किरति-निरदेस-सुत्त का,
उलथा में उनका के
पास-बगल का
बारह सइ बउध भगतन के
मदति मिललि सरधा स !
चेलन का बारे में,
रहलन ऊ बड़ भगिगर !
जवना सुभ कारज के
कइलन सुरू धरम-हित खातिर;
ओके उनकर लाएक चेला,
जारी रखलन बहुत दिनन तक !
उनका कुल चेलन में
'ताओ-सेन' निपुन आ–
प्रिय 'सेंग-चाओ';
रहलन अति मसहूर !
'एह किसिम से महापुरुस ऊ
पंडित हीरा रतन अमोल
बारह बरिस ठहरि छाङ्-अन् में
सरोसती का सुभ मंदिर में
वोध-ग्यान तप-पुरुसारथ के,
अमर सोनहुला दीप बारि सज
कदम बढ़वलन आगे !
पँचरंगा केंचुल देहिआँ के,
बस एकहत्तर बरिस राखि के
विकरम-संवत,
चारि सइ सत्तर में
दिहलन एहिजे बिहँसि उतारि !
पाँच पदारथ तीनि गुनन का
एह छनिक देहिआँ के
सभई एहिजे छोड़ि अचक्के
ना जाने कहवाँ सरकेलन !
अबले केहू एकर
ठोस भेद पावल ना !
कबो लवटि अनजान देस से
मरम असल बतलावल नाहीं !
मन बानी के का मजाल कि—
ओह बिचित्तर गूढ़ दसा के
कवनो खल से बोध करावे?
ग्यानी जन बतलावेलन कि—
जे तत्तन के जानल,
समुझल गूढ़ भेद करमन के;
उहे असल में,
सुगम डहरिआ धइले;
संसय-दुख से छुटकारा पा,
अगम-बोध सागर का भीतर;
लहरन से हिलि-मिलि के बिहँसल,
सुगति-सांति-सुख पावल !
ओह मुकुति-निरवान-दसा के,
मन-बानी-मति का समरथ ले
जानीं बहुते दूर !'
बिसयन में लपिटाइल
बैर बिरोध-कलह का
तेज अगिनि-लवरन में झुलसत
रउरा नाहक जूझत बानीं !
केतना बेरि बचा के
दूर हटा दिहलो पर
टिसुना भरम मोह ममताबस,
लपटि-झपटि के;
ओकरे भीतर कूदत बानीं !
ना जाने ई कइसन,
माँड़ा, मोतिआबीन रतौन्हीं;
आँखिन में छवलसि कि—
अपना असल रूप के,
देखत चिन्हत नइखीं !
देहिआँ भले छोट छनभंगुर,
बाकी ईहे असली साधन;
बोध ग्यान भा परमारथ के !
ईहे खीला,
करमन का चक्का के;

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चारो ओर घुमावे वाली !
आठ महल का,
नव दरवाजा वाली
एह अँटारी भीतर
ना जाने कि–
कवन जोति कहवाँ बइठलि बा
जे कि बउधदेव भा
दूसर अउरी अवतारन आ–
संत सुधारक,
मुनी महापुरुसन के
पुरुसारथ तप विनय सील के,
बहुरंगी तसबीरि बना के;
समय घरी पर,
लउकावे झलकावे खातिर
बरबस करे इसारा !
एही से एकरा के
देवदुलम मानल बा
देवतो सिहकसु
एके पावे खातिर !
जे पावल से समुझल नाहीं
समुझल जे ऊ पावल नाहीं !

× ×

बउध-धरम के,
विमल जोति कहवाँ ना फइललि
के ना ओसे लाभ उठावल
सुगति सांति सुख पावल !
ओकर महिमा बहुते भारी
सुजस सुगंधित मोहक
जेकरा करते,
के ना पहुँचल एहिजा
विद्या-विनय-ग्यान गुन सीखे,
दरसन करे मुनी संतन के !
चीन देस में,
बउध-धरम का
बहुत निपुन पोथिन के
उलथा तवतक
भइल रहे सरधा से सज से !
बाकी तऽ केहू के
ध्यान गइल ना रहल समय से
विनयपिटक का
हितकारी उलथा का ओर !
सरधावान साहसी सेवक
भिक्खु सुरेमन त्यागी
फाहियान के,
निरमल नयन-जोति जब
ओह ओर जा पहुँचलि,
तब ऊ भाव-भगति बस
प्रिय अनमोल विनय-पोथिन के
खोजि जुटा ले आवे खातिर
चललन भारत देस !
चतुर साहसी धरम-धुरंधर
चीनी नवजुवकन के
एगो चउकस टोली,
पहिले-पहिल बिकरमी संवत
चारि सइ छप्पन में,
निपुन राजधानी छाङ्-अन से
अपना धरम-ग्यान आ—
सुभ आचार-बिचारन वाला
गुरूदेस भारत के;
कइलस साहस भरल पयान !
मनसा भाव रहल टोली के,
विमल बउध-तिरथन के दरसन
अउरी खोजि जुटावल
विनय-धरम पोथिन के !
ओह कठिन वीहड़ पयान में,
फाहियान मतिधीर साहसी
वीर बिरागी संत-सिपाही,
टोली के प्रिय नायक रहलन !
छाङ्-अनसे जब चलि के
तुनहुवांग गइलन ऊ
तब ओहिजा के
राजपाल सुभधरमी;
गोबी वाली मरूभूमि के,
लांघे खातिर
उनके उचित मदति पहुँचवलन !
कठिन धीरता से साहस से,
पार जाइ गोबी का
ऊ तुरफान पहुँचलन !
ओहिजा कुछ दिन रुकि के,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एगो संत-घुमक्कड़ का संग;
अति बीहड़ तकला मकान का,
भारी मरूभूमि के
बहुत दुसह दुख कठिनाई से
पार कइ कुल्हि पेंतिस दिन में
बे आहस के कुसल-छेम से
हँसत पहुँचलन खोतन!
गोबी आ तकला मकान का
कठिनाई के कथा सुनावत
फाहियान कहले बाड़न कि –
'कठिनाई से भगितीं कहवाँ,
करमन का पँचड़ा से
भगले पिंड छुटे ना!
पंछी का पाँखिन में
कहीं आगि लागलि जो
त ऊ उड़ि के भगले
कइसे भला बुताई?
बीर पुरुस बरम्हा का,
रेखो पर मारेलन मेख!
मानुस के प्रिय देहिआँ पा के
जे ना आफति कठिनाई से
डटि के लोहा लीहल
ऊ माई के दूध लजवलस
दाग लगवलस कुल में अपना,
नाँव हँसवलस मानुस-तन के!
केतने बिगरल दुहुट आतमा,
अउरी हवा गरम दुखदाई
ओह भयंकर मरुभूमिन में
रहली डेरा डलले
जे ना कबे भुलइलो
जीअत छोड़सु केहू के!
ना त ऊपर चिरईं लउकसु
नाहीं नीचे पसुवे कवनो!
डहरी का निसान के,
खोजि कइसहूँ पावे खातिर
चारो ओरि नजरि डललो पर
मूअल आदमिअन का;
जहाँ तहाँ छितिराइल
हड़वारिन के छोड़ि
कुछऊ लउके नाहीं!

× ×

ऊ 'खोतन' तऽ बहुत पहिलहीं
चारि सइ बरिसन से
रहे देस बउधन के!
फाहियान भिक्खुन के ओहिजा
देखलन विनय नेम के पालत!
खोतन से चलला पर
पार करत परबत नदिअन के
ऊ गंधार-देस में अइलन,
जहवाँ प्रिय असोक का कुल के
राजा धरम बिबरधन,
रहलन राज चलावत
सहज सांति से सुख से!
एह किसिम से
चउअन दिन का बाद
ऊ कसमीर पहुँचलन!
फेरु तहाँ ले,
कठिनाई से सिंधु लाँघि के
अइलन प्रिय उडियान नगर के
जे कि ओह समय में
बउध-धरम के;
अड्डा रहे सुघर सुखमय सुभ!
एकरा बाद बढ़त दक्खिन के
पहुँचि पुरुसपुर-पेसावर में;
ऊ कनिस्क के रचल बनवावल
सुभ असतूप सुघर सज देखलन;
अउरी आगे चलि के,
देखलन तच्छसिला नगरी के
जहाँ रहे सुरसति के,
उगलि मोहिनी
प्रिय गहगह फुलवारी!
विद्या कला ग्यान के मंदिर,
सोहत रहे सजीला!
चउँसठि कला, चउदहो विद्या
गूढ़ ग्यान-विग्यान निराला
सीखे खातिर जहवाँ,
देस-देस का;
सरधावान ग्यान-प्रेमिन के,
लागल रहे हरदमे मेला!
धन्नि! लगन साहस पुरुसारथ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ओह धुरंधर धरमदूत के
जे कि सक-छतरप लोगन के
रचलि सजावलि बउध-नगरिआ
मथुरा के दरसन कइ
सहज सांति-सुख से गद्‌गद हो
प्रिय कपित्थ, कनउज आ—
निपुन अजोधा नगरी अइलन !
एही तरे कले-कल,
ऊ श्रावस्ती
कपिलवस्तु, बइसाली,
अउरी मगध-राजधानी प्रिय
पाटलिपुत्र पहुँचलन !
विद्या ग्यान धरम का नगरी,
नालंदा के दरसन कइलन
सोभा देखलन राजगिरिह के !
अउरी आगे बढ़ि के,
संचित पुन्नि उदय भइला से
परम पबित्तर तीरथ,
बोधगया कासी जा;
"गुरु-दुआरा के दरसन कइ"
ऊ अपना जीवन के
साचो सफल समुझलन !
कवसांबी के,
सुघर 'घोसिताराम' भला कब
उनके नाहीं खोजित !
ओहिजो जा ऊ,
कुछ दिन आपन समय बितवलन
विनय ग्यान सीखे में !
फेरु लवटि कासी से,
पाटलिपुत्र पहुँचि ऊ
तीनि बरिस रहि,
संसकीरित-पाली भासा के
बोले-लिखे सिखलन !
एतने नाहीं,
आपन अउरी समय बचा ऊ;
नेह लगनबस,
विनय-पिटक-पोथिन के;
नकल करे में सहज लगवलन !
एह तरे छाङ्-अन से चलि के,
भारत तक पहुँचे में;
छव बरिस लागल उनका के !
छव बरिस ऊ रहलन एहिजा
विद्या विनय ग्यान गुन सीखत
फेरु लवटि के
तीन बरिस में चीन पहुँचलन !
विनयपिटक, दीरघ-आगम आ—
'संजुत्तागम-सुत्त' निपुन संग
'सजुत-संचय-पिटक' निअर सुभ
केतने बउध-धरम-पोथिन के
जोरि जुटा ऊ
साथ देस ले गइलन !
ओही साथे केतने
मजिगर बउध-मुरतिओ गइली !
नगद विनय-पोथिन के खोजत
गंगा का निरमल धारा के
नेह भरल नयनन से देखत
आखिर में ऊ संत बिरागी!
सागर का सुभ दरसन खातिर
दूर किनारे;
नगर तामलुक जाइ पहुँचलन !
ओहिजा ले चढ़ि के जहाज पर
चउदह दिन में
धरम-देस लंका के गइलन !
दूइ बरिस लंका में रहि के
केतने संसकीरित पोथिन के
जिनकर पता रहे ना,
तबतक चीनी विदमानन के
खोजि जुटा के
नकल करत रहलन तइआर!
भला कहीं तऽ,
छाङ्-अन से चलले उनका के
पनरह बरिस समय निअराइल,
काहे ना मनवाँ घबड़ाइत;
जनम-भूमि का दरसन खातिर !
'लवटि चीन जल्दी पहुँचीं अब'
ई बिचारि ऊ;
एगो बेवपारिक जहाज में,
चढ़ि के चललन जावा !
ऊ जहाज सागर में,
उठला से भारी तूफान

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

परल रहे आफति में !
बारह दिन का बाद,
गरह टरल दुख भागल
बढ़ल जहजवा आगे !
एही तरे बिपति-बाधा से,
नब्बे दिन तक लोहा लेत
नाँव जपत मुनि बउधदेव के
सहज सुखी ऊ कुसल-छेम से
जाइ उतरलन,
जावा का कंचन किनार पर !
पाँच महीना रहि के ओहिजा,
प्रेम-भरल आँखिन से
जनम भूमि के ताकत
चढ़ि जहाज पर दूसर
प्रिय चिंगचाउ नगर का
सज मोहक धरती पर अपना
पहिले-पहिल कदम सुभ धइलन !
एगो जाड़ा आ गरमी के,
दिन बिताइ के ओह नगर में
पुरुबी छिन्-कुल का रजधानी,
नगद नगरिआ नानकिङ ऊ
राजी-खुसी पहुँचलन !
पनरह बरिस कठिन तप कइके
सहज तीस देसन में घूमत
महाघुमक्कड़ धीर पुरुस ऊ,
जवना सुभ अनमोल ग्यान के
भारी नगद खजाना
विनय-पिटक का प्रिय पोथिन भा—
दूसर अउरी सुभ सुत्तन के
जोगा जतन से,
लेके पहुँचल रहलन
ओके धरम-गुरुन का आगा
भाव-भगति से अरपित कइलन !
भइल राजधानी में
भारी उतसो तुरत खुसी से !
भाव-भगति सरधावस,
राजा परजा सभे बटुरि के
धरमदूत प्रिय फाहियान के,
कइल बहुत आदर सतकार !
अपना बाकी जीवन के ऊ
सांत दक्खिनी चीन-राज का
बउध-बिहारन भीतर
विनयपिटक के
सुभ परचार करे में
सुख से घूमि बितवलन !
एह ढंग से
आठ किसिम का रंगबिरंगी
परकिरती के रचल बनावल
जवन चदरिआ मजिगर;
बरिस छिआसी तक ओढ़लन ऊ
ओके आखिर एहिजे छोड़ि
सुभ निरवान सुगति-सुख पवलन,
भइलन लीन अगम सागर में !

× ×

फाहियान के,
साहस रहे महान;
प्रेम-भाव आदर सरधा से,
हरदम उनकर नाँव लिआई
भलमानुस लोगन का बीच !
भारत लंका चतुर चीन आ—
सभ बउध-देसन के जनता
मानत रही जुगन तक
उनकर सुभ उपकार !
बाकी साथे,
रउरा इहो इआद करीं कि
हमरो फाहियान रहलन प्रिय !
चीन देस में जायेवाला,
ऊ कास्यप मातंग धरमफल
भिक्खु संघ बरमा आ—
धरमरच्छ, प्रिय संघ देव जी,
धरमरतन गुनबरमा !
संत कुमारजीव, गुनभद्दर,
चाहे धुनी धीर परमारथ
गउतम-प्रग्या अउरी,
निपुन नरेन्दरजस भा
पंडित भल जिन-गुपुत दिवाकर,
सिच्छानंद, बोधिरुचि
केतने महापुरुस मुनि,
अमर लाल माई के,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कहाँ कलेस उठवलन थोरे?
उनकर कइल काम का,
रहे कहीं कम महिमा वाला?
जे कि हमरा,
भला! हजारन;
चुनल अमोल धरम-पोथिन के,
चीनी भासा में उलथा कइ;
लिहलन बचा बुद्धि का बल से,
काल-गाल में परि के;
चउपट होखे बिनसे से!
प्रिय लोयाङ, सिजिल छाङ-अन आ–
नानकिङ का,
ओह राज-नगरन में;
जहाँ-तहाँ छितिराइलि,
उनकर हाड़ ठटरिआ;
का हमरा हिरदय में,
कवनो भाव जगावति नइँखी?

× ×

कठिन काल-गति का अनुसार,
दूर दक्खिन भाग में;
अंत भइल जब,
प्रिय पुरुबी छिन्-राजबंस के;
बिकरम संवत,
ठीक चारि सइ सतहत्तर में!
ओह समय से,
संवत छव सइ चालिस का;
छव बरिस अउरी आगे तक,
समय-समय से ओहिजा;
छव राज-बंसन के,
तूती बोललि तेज बिराजल;
चमकल राज-सितारा!
ओह छव में सामिल रहलन,
वू, पुरुबी छिन, लियू सुंग आ -
चेन, लियाङ, दक्खिनी छि-कुल!
लियू-सुंग-बंसी राजन के,
राज हुकूमति;
सुरू चारि सइ सतहत्तर से,
पाँच सइ छत्तिस तक;
कायम रहे मजे में!

सहज सुधरमी ओह बंस का,
राजकाल में;
केतने बउध-भिक्खु भारत से
विद्या-ग्यान-धरम का
सुभ-परचार बढंती खातीर
लांघि पहाड़ नदिन के अइलन!
जिनका में ले,
भिक्खु बउध भद्दर आ -
बउध जीव, गुनबरमा;
धुनी संघ बरमा, गुनभद्दर
धरममित्रा मतिमान विमल-चित;
पहुँचि समय से
बउध-धरम पोथिन के
संसकीरित से.
चीनी उलथा कइलन!
तोपा-कुल का,
सिजिल सांत पहरा में;
जवन सात नामी विदमान,
उलथा के सुभ कारज कइलन
ओह लोग में,
भिक्खु धरमरुचि;
दक्खिन भारतबासी,
तीनि धरम पोथिन के
नया रूप सज दिहलन!
भिक्खु बउध भद्दर बड़ ग्यानी,
संवत चारि सइ सत्तर का–
दुइ बरिस का बाद
पहुँचि चुहिलगर नगर नानकिङ,
विद्यापीठ सांत-मठ में रहि;
फाहियान का साथे,
'सांघिक-विनय' विमल के
चालिस सज खंडन में,
उलथा कइलन;
प्रिय चीनी भासा में!
आगे चलि ऊ दूनो,
छव खंड में;
भारी महिमा वाला
उत्तम परिनिरवान-सुत्त के
मजिगर उलथा कइलन!
एतने नाहीं,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

संत बउध भद्दर जी
ओही मठ में रहि के,
प्रिय 'अवतंसक-सुत्त सुगम के
सज पचास भागन में;
उलथा पूरन कइलन !
अउरी हाल सुनीं अब,
दूसर नामी विदमानन के !
बउधसांत उत्तर भारत के,
रहलन भिक्खु गुनी आ ग्यानी;
पाँच सइ सत्तहत्तर,
सुभ बिकरम संवत में;
चीन पहुँचि ऊ,
ओनइस बरिस ठहरि के;
बउध-धरम के
सवतुक सेवा कइलन !
उनका सोधल आ सरिआवल,
निपुन धरमपोथिन में;
अब्बो नव गो बाँचल बाड़ी !
भिक्खु बोधिरुचि,
उत्तर भारतबासी;
तीनों पिटकन के आचारज,
संत करमजोगी भल रहलन !
जे कि बउध-धरम का,
सुभ परचार-काज का धुन में
भारत से चलि काशमीर आ–
अगेवाला,
ऊँच बरफमय;
बिकट पहाड़न के झट लांघत,
मध्य एसिया होत;
विकरम संवत,
पाँच सइ पैंसठ में
प्रिय लोयाङ पहुँचलन !
ओह देस के राजा,
सहज-सुधरमी भल 'सुवेन-ऊ'
उनका खातिर खास,
एगो मजिगर मठ बनववलन !
उलथा का कारज में उनके,
मदति नेम से देवे खातिर;
राजा रखलन,
संसकीरित के जानेवाला;
सात सइ भिक्खुन के !
पंडित राज परीन,
रहि लोयाङ नगर में;
पूरा बरिस सताइस,
उलथा कइलन
ओनतालिस पोथिन के,
जिनका में कि;
अबो तीस गो बाँचल बाड़ी !
संत सांतचित बोधिधरम के,
निपुन चीन-जापान देस का
बउध-धरम-इतिसास-कथा में
नाँव सुजस कम नइखे !
ओह दूइ देसन में ऊहे,
पहिले-पहिल 'ध्यान-मत' रोपलन;
जेकरा के चीनी भासा में,
लोग कहेला 'चान';
जापानी ओही के,
'जेन' कहेलन;
अपना प्रिय भासा में !

हाल सुनीं अब,
धरमरच्छ के;
जे रहलन कसमीर-निवासी,
बाभन-बंस-उजागर;
भारतीय मुनि भिक्खु !
कासमीर से चलि ऊ,
सरधावान भगत भल;
चीन देस का,
तुनहुवांग नगरी में गइलन;
चारि सइ सत्तर का लगभग !
जहवाँ कुछ दिन रहि के,
बउध-धरम का ग्यान-जग्य में;
आपन आहुति डललन !
उनकर उलथा कइल एगारह,
उत्तम धरम-गरंथ;
महायान के,
संचित ग्यान-खजाना;
अछय अमोल सोहासुत बाड़न !
जिनका में ले,
रतन विमल सुभ ग्यान जोतिमय;
महिमावान, महा–

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

परिनिरवान सुत्त प्रिय,
घीव भरल फुलबत्तीवाला;
सुबरन दीपक निअर अखंड,
चटक जोति फइला के आपन;
भल चीनी जनता के,
गाढ़ समय में;
सजगर चिक्कनि डहरि देखवलस!
तोपा-कुल पर,
चीनी भिक्खु महान्;
सी-तान-याउ गुनी के,
रहे बहुत परभाव!
ऊ वेई राजा से,
कहि-समुझा के
उत्तर साँसी का परवत में,
पत्थल काटि पाँच गो,
गुफा सिजिल बनववलन!
जें 'युवान-कङ' के गूफा कहि,
जगवा में बाड़ी मसहूर!
उनका भीतर,
बउधदेव के मूरति केतने
खोदि बनावल बाड़ी!
जिनका में सभई ले बड़हन,
सत्तर फुट ऊँची मुसुका के;
कहति जुगन का,
धरम-प्रेम सुभ भाव-भगति आ;
वैर-विरोध-कलह के,
गूढ़ कहनिआँ मौन भाव से!
एतने नाहीं,
प्रिय राजा तो पाहुङ;
पाँच-अठाइस,
सुभ बिकरम संवत में;
कसकुट आ सोना के,
तैंतालिस फुट ऊँची;
बउधदेव के मूरति एगो,
मजिगर मनमोहक बनववलन!
ईहे हउवँनि,
ऊ तो-पा नरेस जे
बउध-धरम का,
गौर-गुनावन सेवा खातिर
छोड़ि राज सिंहासन
आपन जीवन-समय लगवलन!
अपने घर का उत्तम पंडित
भिक्खु सुरेमन प्रग्यारुचि का;
लगन त्याग सेवा के,
सुघर कथा हम;
कइसे नाहीं कहीं भला त?
विद्या-ग्यान-धरम का नगरी,
प्रिय सिवपुरी बनारस;
रिसि-पत्तन कासी का,
एगो बाभन-कुल के,
पूत सपूत निपुन ऊ रहलन!
लरिकइएँ ले उनका,
संसकीरित विद्या से;
सहज सुभावन,
प्रेम रहे अति गाढ़!
भाव भगतिबस गुरु चरनन के,
गंगाजल से धोके;
चरनामिरित लेत नित,
ऊ बड़भागी;
गुरु किरिपा से,
विद्या-सागर का भीतर जा;
गहिरी डुबुकी मरलन!
विमल बउध आ—
बाभन धरमगरंथन के ऊ,
बहुत लगन मेहनति से;
सज से पढ़ले रहलन!
जनता का सेवा के,
मानुस का जीवन के;
पहिला करतब-धरम समुझि सुभ,
ऊ भारत के धरमदूत हो;
देस अनेकन घूमत,
ग्यान-जोति फइलावत;
पाँच तिहत्तर,
सुभ बिकरम संवत में;
वेई राजन का रजधानी,
प्रिय लोयाङ पहुँचलन!
राज नगररिआ,
जब ओहिजा ले;
बदलि 'येह' जा पहुँचलि,
ओही साथ उहो तब;

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ओह नगरिआ गइलन !
उनकर उलथा कइल बनावल,
सोधल आ सरिआवल;
तेइस नगद धरम पोथिन में,
तेरह गो कायम रहि
ओह धुरंधर धुनी संत के;
मधुर इआद जगावत बाड़ी !
एह किसिम से,
निपुन उत्तरी-पुरुवीवेई;
अउरी छि-बंसी राजन का,
सुखमय राजकाल में;
बउध-धरम के,
भारी उन्नति भइलि चीन में !
बनलन बउध-बिहार हजारन,
मूरति सुघर गढ़इली !
देखि अजंता एलोरा के,
गुफा-बिहार बनावल गइलन !
जिनका भीतर रंगबिरंगी,
सज तसबीर रचइली !
तो-पा अउरी,—
दूसर राजकुलन के नायक;
गुफा-बिहारन के बनववलन,
बउध-भिक्खु संतन का;
भजन ध्यान तप खातिर !
जिनका में से,
साँसी के तिआन-युङ्;
सांतुंग के लीचेङ,
लोआंङ का निअरा के लुङ मेन
अउरी तुनहुवांग पाँजर के,
गुफा-बिहार सजीला
बेसी महिमा वाला बाड़न !
एह सभे जगहन का
कारीगरी कला पर
तच्छसीला, पेशावर, मथुरा
अउरी केतने
पच्छिम वाला,
नगद एसिआई देसन का
सुघर कला के,
पूरा असर परल बा !
एह समय के,
बहुत बड़ उलथा करवइआ;
धरमछेम जी,
मध्यदेस भारत का;
निपुन बिहार राज भा—
पाँजरवाला पुरुबी
प्रिय उत्तर परदेस बीच के,
धरम-धुरंधर पंडित रहलन !
विद्यावान गुनी आचारज,
गुरु धरमजस का सेवा में;
भाव भगति से,
बीस बरिस तक रहि ऊ;
हीनयान आ महायान का,
गूढ़ धरमपोथिन के;
बहुत ध्यान से पढ़लन गुनलन !
कुछ दिन बाद तहाँ ले,
कासमीर गइलन ऊ !
ओहिजो ले आगे बढ़ि,
नदी पहाड़ अनेकन लाँघत;
मध्य एसिआ होत,
कंसू जाइ पहुँचलन !
ओह समय में,
लाङ्-चाऊ परदेस नगद पर;
हूण नरेस बली परतापी,
चिन-किन्-मोङ्-सू-येन;
राज करत रहलन सुख से !
धरमछेम के,
सुजस बड़ाई सुनि ऊ;
बुला प्रेम-सरधा से उनके,
आपन गुरु बनवलन !
अउरी उनसे विनती कइलन,
अपना राज-देस में सगरे;
बउध-धरम सुभ फइलावे के !
धरम-गरंथन के चीनी में,
बदले खातिर;
विनय मानि राजा के,
तीनि बरिस तक;
ऊ चीनी भासा के पढ़लन !
फेरु सुरू कइलन तब,
उलथा वाला काम !
केतने नगद धरम पोथिन के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भइल समय से उलथा;
जिनका में ले,
प्रिय 'सूबरन-परभास-सुत्त आ–
सहज 'महा-निरवान-सुत्त' संग,
सुघर 'उपासक-सील-सुत्त' के
रचना परमुख जानीं!
उनकर सबसे उत्तम कारज,
एगो भइल इहे कि
'असुव-घोस' का 'बउध-चरित' के
ऊ चीनी-भासा में रचलन!
पहिल लियांग नरेस,
प्रिय 'हिज-आओ-येन;
जे आगे चलि,
वू-ती का सज सुघर नाँव से;
भइलन भल मसहूर!
बिकरम संवत,
पाँच सइ ओनसठि से;
छव सइ चउदह तक,
नानकिङ में कइलन राज!
निपुन सुधरमी,
प्रिय वू-ती का राजकाल में
बउध धरम के,
भइलि तरक्की भारी!
ओह समय में,
राज नगरिआ नानकिङ में;
सात सइ ले अधिका,
सिजिल बउध-मठ रहलन!
बउध-धरम का मत-बिचार के,
सोधे सरिआवे आ–;
सरधावान भगत लोगन के,
सुभ उपदेस सुनावे खातिर;
नामी भिक्खु हजारन अउरी,–
गुनी गरंथन क रचवइआ;
समय-समय से बटुरसु ओहिजा!
ऊहे धरमी राजा
पहिले पहिल राज में अपना
विदमानन के जुटा जतन कइ
बउध-धरम का ग्यान-खजाना
तिरपिटकन के,
जोरि जुटा रचववलन;
प्रिय चीनी-भासा में!

× ×

जेंचुवान में बाड़न
उत्तम गुफा-बिहार पुराना
जे कि तुनहुवांग से,
कम कीमति के नइखन!
ओहिजो वाली
कारीगी-कला पर
भारतीय गुनिअन का
सुघर कला के
असर परल बा!
ओकर सभसे नगद नमूना
भारी महिमा वाला
बउध-झरोखा अउरी,
सुघर हजार बउध-चोटी के
गुनी लोग माने ला!
ऊ प्रिय चोटी,
'कांग-युवान' नगर का पँजरा;
एगो परबत पर बा
जेकरा भीतर,
सात-आठ सइ;
सुघर झरोखा बाड़न!
उनके एगो चीनी हाकिम,
वेईकांग बनवले रहलन!
सिजिल झरोखन में से कुछ में
बउधदेव मुनि
बोधि सत्त आ–
भिक्खु लोग के;
मूरति मजिगर बाड़ी!
ओहि परबत ऊपर,
सोरह फूट लमहर सज
ध्यानी बउधदेव के,
मूरति सुघर बनलि बा!
सांत-उत्तरी वेई जुग में
लांघि-सिवाना चीन देस के
तीरथ-जतरा होखे लागलि!
संवत पाँच-सइ अरसठि में,
प्रिय लियांग राजा 'ऊ',
प्रेम उमंग जोस सरधा से;

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गुरू देस भारत से लवटल,
एगो चीनी दल के;
कइलन बड़ आदर-सतकार !
ऊ दल सुभ धरमी राजा का,
खास हुकुम से
चंदन का लकड़ी के
बउधदेव के मूरति एगो
ओहिजा से बनवा के
साथे ले आवे खातिर
भेजल रहे भगति बस !
संवत पाँच तिहत्तर में जे,
भिक्खु समाज गइल भारत के
तीरथ-जतरा खातिर,
ओमें वेई-कुल के;
पहिल पुरानी भगतिन
निपुन रानिओं रहली !
धुनी भगत सुङ यून बहुत-सा
संगी-साथी अउरी–
भिक्खु धीर भल त्यागी,
हुई-सेङ के साथे ले
पाँच सइ पचहत्तर,
सुभ बिकरम-संवत में
डहरि पकड़ि के
मध्य-एसिया वाली;
प्रेम भगति साहस से,
तीरथ-धाम-जातरा खातिर
प्रिय गंधार देस में गइलन !
अउरी दिन-भल-संवत,
पाँच ओनासी का आखिर में
एक सइ सत्तर गो,
महायान-सुत्तन आ–
दूसर नगद गरंथन के ले
कुसल-छेम से,
लवटि देस के अइलन !

× ×

धरमा-चारज सी-चे-मोङ,
बउध-धरम के;
सरधावान भगत बड़ रहलन !
संवत चारि सइ एकसठ में

चउदह गो मीतन का साथे
ऊ भारत का,
धरम-जातरा खातिर
कइलन नगद पयान !
तुनहुवांग से होत,
लोबनोर का;
खार-झील से दक्खिन-पच्छिम
सांग-सान गइलन ऊ !
फेरु तहाँ ले आगे बढ़ि के,
कूचा आ खोतन का
बउध-बिहारन के सुभ
दरसन करत प्रेम से
दुनिआँ का सभ ले ऊँचा छत,
बड़ बीहड़ पामीर पहुँचलन !
कठिन चढ़ाई से ओहिजा का,
थाकि थउसि घबड़ा के;
तीरथ-प्रेमी नव जातिरी
आखिर चीन लवटलन !
बाकी लोग बढ़ल आगे के
बाकी कहीं बीच राहे में
उनकर भारतीय साथी भल,
ताउ-लोङ संग छोड़ि अचक्के
चलि दिहलन सुरधाम !
धीर-धुरंधर बीर-बाँकुड़ा,
संत-सिपाही चेइमोङ;
हिम्मति हारेवाला,
सहज आदिमी रहलन नाहीं !
उनकर कठिन-करेजा,
रहे बनल इसपात सुद्ध के !
ऊ अपना प्रिय,
चारि धुनी मीतन का साथ;
सिंधु पार कइ,
दरसन करत प्रेम से,
सभ तीरथ धामन के
कपिलवस्तु से होके
पाटलिपुत्त पहुँचलन !
ओहिजा उनका,
एगो बाभन पंडित भारी;
प्रिय रेवत से,
भेंट भइल भल सुभ संजोगन !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रेवत रहलन,
बउध-धरम के मानेवाला !
राजा चनरगुपुत ऊ-
बीर विकरमादित्त,
उनके बहुते मानसु !
ऊ एगो असतूप बहुत बड़,
सुघर सूध चानी के;
निपुन तीस फुट ऊँचा,
सरधा से बनववले रहलन !
पंडित रेवत,
चीनी भगत संत चे-मोङ के;
'विनय-महा सांघिक' आ—
'परिनिरवान-सुत्त भा,
अउरी दूसर पोथी दिहलन !
कई वरिस भारत में रहि के,
विनय ध्यान-गुन सीखत;
मो-चेङ् अपना देस लवटलन !

× ×

सरधावान भगत भल,
सहज सुधरमी राजा;
प्रिय लियाङ-वू-ती का
सांति-धरम-मय राजकाल में
सभ ले निपुन विलच्छन
धीर करम जोगी बिदमान
भिक्खु सुरेमन पंडित
धुनी गुनी परमारथ
चीन पहुँचि के;
भारी अचरज वाला
धरम-काज सुभ कइलन !
परमारथ के जनम रहे सुभ,
सिपरा नदी किनारे;
प्रिय उज्जैन नगर का,
एगो पढ़ल-लिखल भल
धरमी बाभन-कुल में !
बेद-पुरान ग्यान का
गूढ़ गरंथन के आ-
बउध-धरम पोथिन के,
भाव भगति वस;
गहिराई से पढ़ि ऊ,

माया-ममता मोह-लोभ का;
पोढ़ फंद के काटि सहज में;
घर के छोड़ि बिरागी बनलन,
चललन जन-हित;
धरम-काज सेवा में,
भारत से बाहर का,
सरधालू धरमी देसन के !
साहस-भरल जातरा वाला,
सवख लहू बनि;
दउरत रहे नसन में उनका !
घूमत-घामत,
ऊ गुपुतन का प्रिय रजधानी!
पाटलिपुत्र पहुँचलन
अउरी ओहिजे जमि के
बउध-ग्यान का गूढ़ मरम के
विनय सील से;
ध्यान कसौटी पर कसि
कल से देखत रहलन !
ओही घरी विकरमी संवत,
पाँच सइ नब्बे-छव में सुभ
सँसकीरित का
निपुन धरम पोथिन आ;
केहू बड़ बिदमान सुधरमी
धुनी संत के खोजत,
चीनी दूत-मंडली;
मगघ राजधानी में पहुँचलि !
मगध-राज मतिमान तुरंते,
प्रिय चीनी राजा का
मधुर-लालसा के आदर दे
बहुत नगद पोथिन का साथ
परमारथ के,
चीन देस जाये के;
सहजे में कइलन तइआर !
पंडित धीर धुनी ऊ,
सागर का लहरन से
हिलि-मिलि के बोलत-बतिआवत,
सुगम डहरिआ धइले;
लंका-जावा,
हिंदचीन से होत;
छव सइ तीन बिकरमी में सुभ,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बउध-ग्यान-दीपक ले;
राज-नगरिआ नानकिंग में,
प्रेम भाव-बस जाइ पहुँचलन !
धरमी राजा कइलन उनकर,
बहुत सुघर आदर-सतकार !
अउरी उनका,
सुभ-निवास के खातिर;
पा-यून् वाला सुघर सजीला,
राज महल प्रिय दिहलन !
ओहिजा कुछ दिन रहि ऊ,
उलथा के सुभ कारज कइलन !
बाकी तऽ चउतरफा,
बैर-बिरोध लड़ाई-हलचल
देखि, तहाँ से
मनवाँ उनकर उचटल !
पहुँचि फेरु ऊ नानकिंग में,
चेन्-कुवाङ-सू का बिहार में
अपना चेलन सहित मजे में
लगलन रहे प्रेम से !
सुभ 'सुवरन-परभास-सुत्त' का
नगद सुद्ध उलथा के
बिकरम-संवत,
छव-सइ चउदह में
ऊ लिखि पूरा कइलन !
बरमा जाये खातिर,
मनवाँ उनकर ललके;
बाकी, भिक्खु संत गिरहस्त
सभे भगत चेलन के,
प्रेम विनय हठ;
अइसन गाढ़ रहे कि
चहलो पर ऊ
चीन छोड़ि सकलन ना !
ठहरि 'नान-यू-ये' का,
सांत सिजिल मठ में तब;
मदति लेइ चेलन से अपना,
पहिले का उलथन के!
सोधे आ सरिआवे लगलन !
प्रिय राजा हुवेन-ती,
सुभ-धरमी का राजकाल में;
कई बरिस तक,
नानकिंग में रहि ऊ
'सम-परिगरह-सुत्त' के,
हितकारी-उपदेस विमल अति
सरधावान भगत लोगन के
सहज सुनावत रहलन !
जनम-भूमि के महिमा
बैकुंठो ले भारी !
महापुरुस मरजादा वाला
रामो कइलन विनय-बड़ाई
जनम-भूमि साकेत-धाम आ -
परस पवित्तर,
प्रिय सरजू माई के !
पंडित परमारथ के
मधुर इआद जनम-धरती के;
बारंबार सतावे !
ऊ चाहसु कि,
धरम-धाम भारत के लवटीं;
एक बेर नयनन से अपना
भगवन बउधदेव के
देखीं लीला-भूमि फेर से !
दरसन करीं गया कासी के,
पहुँचीं तच्छसिला नालंदा;
जोरि दसो नँह करीं पल्लगी,
बिकरमसिला उदंतपुरी के !
अइसन सोचि-बिचारि समय से
जब जहाजि पर चढ़ि के!
भारत के चललन ऊ
तब संजोगन;
कवनो कारन का बस,
कतहीं सागर का किनार पर;
बंदरगाह पाइ के,
ओ जहाज का रुकले;
सहज सुभावन,
निकलि भीड़ि से बहरी;
नीचे आइ उतरलन !
एही बीच लोग ओहिजा के
नाँव सुजस सुनि उनकर;
दरसन खातिर दउरल,
भीड़ि लगावल घेरल !
कुछ दिन ठहरे खातिर,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विनय-प्रेम हठ देखि लोग के
लाचारन ऊ,
कुछ दिन रुकलन ओहिजा !
फेरु जहाज पकड़ि के दूसर,
जब आगे बढ़लन तऽ
सागर बीच अचक्के
उठल बहुत भारी तूफान !
ओह दसा में उनका
लाचारी बस
परल उतरि जाये के
पास नगर कान्तन का !
दइबी लीला बड़ी बिचित्तर,
ओकर समुझल कहल कठिन बा !
काल करम गति जानल,
संचित करमन का खाई के;
संसारी जीवन के
साधारन साधन का बल पर;
जोम गुमान सान बस
फाने खातिर माँकल
ठीक तइसने जानीं जइसे
अगराइल बाँगुर बवँना के
लेंणई के सीढ़ी पर चढ़ि के,
धवलागिरि, कैलास, सुमेरू—
परबत के चोटिन के,
लाँघे खातिर
जोर हुमाँच ललकि के बान्हल !
हल्लुक मति मानुस के,
काछा काछि हुमाँच बान्हि के
केतनो जतन करेले,
भवसागर के
थाह लगावे खातिर,
बाकी ओकर
कवनो उकुति चले ना,
ऊ आखिर थाके भहराय !

आखिरकार संत परमारथ,
ओहिजे रहि के
जीवन समय बितावे लगलन
भजन, ध्यान तप गौर गुनावन;

अउरी प्रेमी धरमी-जन के
धरम-करम के,
सुभ उपदेस करे में !
एह किसिम से,
सहज बरिस एकहत्तर तक ऊ
चीनी जनता के सेवा कइ,
बउध-धरम-मंदिर में
बारि अखंड ग्यान-दीपक सुभ,
पाँच पंच का
बहुरंगी तनवाँ के,
मसकल ढील पुरान छककिआ
कल से छोड़ि नगर कांतन में,
सुगति धाम के गइलन !
ओह सुघर मसहूर नगर में,
चिता-भसम पर उनका
सुभ इआदगारी में,
उनकर चेला लोग बनावल
एगो सुघर बड़ा असतूप !
संत कुमारजीव का बाद
भिक्खु सुरेमन त्यागी,
निपुन करम जोगी विदमान,
धरमदूत परमारथ
रहलन निहचय;
सभका ले बड़ भारी,
भारतीय उलथा करवइआ !
धरमी धीर लियांग बंस का,
उत्तम-राजकाल में!
ऊ ओनइस पोथिन के
उलथा कइलन पूरा !
अउरी निपुन चेन-सासन में,
सुघर एकावन गो के !
उनका ओह नगद सत्तर गो
बउध-धरम पोथिन में
मिलत बत्तिसे बाड़ी आज !

× ×

पुरुवी-वेई कुल के,
राज बिनसि गइला का बाद
छव सइ सात बिकरमी में सुभ
कायम भइल उत्तरी ची-कुल;

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जकर रहे राजधानी प्रिय,
नगद नगरिआ येह!
ओह बंस का राजा
वेन-हुवेन धुनी धरमी का
सांति-धरममय राजकाल में
धरमधुरंधर धीर साहसी
भिक्खु नरेन्दरजस विदमान्,
ग्यानी गुरू देस भारत से
पाँच संत साथिन का संगे
धरमदूत बनि,
बउध-धरम के
हितकारी उपदेस सुनावे,
सरधावान भगत सुभ धरमी
चीन देस के चललन!
पकड़ि डहरिआ
अति बीहड़ बरफीली;
केतने कठिन ऊँच परबत आ—
मरुभूमिन के लाँघि,
उत्तर ओर बढ़त ऊ
धुनी जवान-अवार लोग का
दूर देस में जाइ पहुँचलन!
ओह घरी पर,
हठी अवारन आ तुरुकन में
रहे लड़ाई होत!
तब कुछ सोचि-विचारि बीच में
संत नरेन्दरजस मतिमान
बचत लड़ाई का जगहन से,
तुरुक लोग का गरम देस से
उत्तर बढ़ि के,
दूर हजारन कोस;
सुघर सांत बैकाल झील का
पँजरा जाइ ठहरलन!
धन्नि! साहसी धुनी घुमक्कड़
देवभूमि भारत के
नगद नगीना लाल सुलायक!
बली वीर तुरुकन का,
सहज विजय का बाद;
विकरम संवत,
पाँच सइ तेरह में
संत निपुन ऊ,
प्रिय रजधानी येह पहुँचलन!
अउरी ओहिजा;
रहि तियेन-पिङ के बिहार में
सात धरमपोथिन के
उलथा कइलन
प्रिय चीनी भासा में!
भिक्खु नरेन्दरजस के
चीनी जनता आ साधुन में
रहे बहुत आदर सनमान!
आगे चलि के,
राजकाल में
चतुर उत्तरी चाउ-बंस के,
भारतवासी
चारि भिक्खु विदमान,
ग्यानभदर, जिनजस आ—
जसोगुपुत, जिनगुपुत महान;
चाउ राजधानी छाङ-अन में,
प्रेम लगन साहस के
जोरि बटोरि पहुँचलन!
अपना सवतुक पुरुसारथ आ—
सूध तेज मति का अनुसार
सभे संत कुछ ना कुछ
उलथा के सुभ कारज कइलन!
मगध निवासी,
निपुन उपधिआ जिनजस
छव धरमपोथिन के,
उलथा कइलन पूरा!
जिनका में से
'महामेघ' आ—
'प्रिय अभिसमय-सुत्त' सुभ
अबो मिलत बा,
प्रेमी भगत-जनन के!
ओह चारि संतन में
भिक्खु धीर जिन गुपुत गुनी के,
कारज सभ से अधिका,
कीमति वाला रहे सोहासुत!

× ×

कई सइ बरिसन का बाद,
सुइ-वंस का करते
फेरु चीन में,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भइलि एकता कायम!
जेकर लायक नायक रहलन
चाउ-वंस के हाकिम एगो
चउकस याङ-ची-येन!
ऊ हराइ के
कई छोट राजन के
बिकरम संवत
छव सइ अरतिस में
सुइ-बंस के कायम कइलन!
एह वंश का
निपुन राज-सासन में
बहुत तरक्की भइलि देस के!
बउध-धरम खातिर त साचो,
एकर सभ बेवहार रहे भल
हितकारी आ सीधा!
चीनी बउध-धरम का;
प्रिय इतिहास-पुरान-कथा में;
एह समय के;
भारी कीमति बाटे!
बैर-बिरोध लड़ाई चाहे,
राज-कोप का कारन;
कुछ दिन बीच समय में,
बउध-धरम के
सासति-दुरगति भइलि रहे जे,
अंत भइल अब ओकर!
खोज करत पंडित लोगन के
निपुन गुनी राजा के
नजरि गइलि जब
भिक्खु नरेन्दरजस पर,
तब ऊ बिकरम संवत,
छव सइ ओनतालिस में
बड़ आदर सरधा से
छाङ्-अन् नगर बोलावल गइलन!
अइला पर राजा उनका के
विनय भाव से सहज सउँपलन
सुभकारज उलथा के!
ता-हिङ-चन का,
मठ में रहि ऊ
आठ धरम पोथिन के
उलथा कइलन पूरा!

आगे चलि जब
देखल गइल दोस कुछ
उनका ओ उलथन में
तब सोधे-सरियावे खातिर
केहू गुनी पुरुस के
सहज सवाँचत-पूछत
पता मिलल लोगन के
भिक्खु सुरेमन पंडित
प्रिय जिनगुपुत धुनी के!
जे कि दस बरिसन से
बइठल रहलन
तुरुक लोग का बीच!
राजा उनके खोजि-बोला के
उलथा करअइअन के दल के
अगुवा कायम कइलन!
धीर धुनी पंडित ऊ,
अउरी उनकर निपुन मंडली
मिलि के नेह लगन से,
ओनतालिस पोथिन के
उलथा-कारज पूरा कइली!
सुइ-वंस के राजकुवँर भल,
भगत सुधरमी तेङ;
एनके उत्तम संत मानि के
आपन गुरू बनवलन!
आगे दूसर पंडित
मुनि नालन्दजसस प्रिय,
भिक्खु साहसी त्यागी,
पच्छिम भारतवाला,
सुभ उज्जैन नगर के वासी
बिकरम संवत
छव सइ पनरह में
जाइ पहुँचलन चीन!
ऊ छाङ्-अन का,
ता-हिङ-चन मठ में रहि
संत धरम प्रग्या का साथे
संवत छव सइ सोरह में
सात धरमपोथिन के
सिजिल एकावन गो खंडन में
सज से उलथा कइलन!
ओकरा बाद धुनी ऊ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अउरी आठ धरम पोथिन के
तेइस भागन में सज,
उलथा कइलन पूरन !

थाङ-वंस के राजकाल के
बउध-धरम के
सुघर सोनहुला जुग सुभ जानीं !
राजा निपुन पहिलका
ताई-त्सुंग सुधरमी
बउध-धरम के मानत रहलन
बहुत प्रेम सरधा से !
समर भूमि में जूझल,
सानी बीरन का इआद में
दस बउध-मठ बनववलन ऊ,
जिनका में के
अबो सात गो कायम बाड़न !
अपना राज-काल का
ठीक बीसवाँ बरिसे
ऊ भारत से आइल,
भिक्खु धीर विदमान साहसी
प्रिय परभाकर मित्त धुनी आ,—
ओहिजा के हितकारी,
धरम-जातरा से लवटल भल
दूत धीर चउकस-चित,
भिक्खु हुवेनसांग के
सुघर सवागत कइलन !
उनका सरग सिधरले
राजा भइलन
पुरुस सुधरमीः काओ-त्सुंग !
बउध-धरम के सुभ सिच्छा से,
चित निरमल भइला पर
ऊ गदगद हो,
राज नगर छाङ-अन् में;
'वाई-चांग', हिजन-यत,
अउरी तूजी-पाई, चिनकू
केतने मठ मजिगर बनववलन !
एतने नाहीं,
प्रिय ताई-युआन में
मठ लिसान आ,—
पिएन-चाउ नगर में;
यी-हीजन मठ,
बनलन उनहीं के किरपा से !
संत सांत परभाकरमित्त,
देस मध्य भारत के
रहलन सरमन ग्यानी !
जे कि छव-सइ चउरासी
सुभ बिकरम-संवत में
चीन पहुँचि के,
तीनि धरमपोथिन के
मजिगर उलथा कइलन !
पंडितराज असंग जसी का
'महायान सुत्तालकार;
सुघर धरमपोथी के उलथा
उनकर काज रहे बड़ भारी !
भिक्खु सिरोमनि नंदी
ओही सुखी चुहिलगर
मध्यदेश के
रहलन संत जसी मसहूर !
जे कि संवत
सात सइ बारह में
राजा काओ-त्सुंग निपुन के
सुखमय काल में
चीन पहुँचलन,
अपना साथे लेके
हीनयान आ महायान के
पनरह सइ धरम-पोथिन के !
भिक्खु दिवाकर,
मध्यदेस भारत के वासी
संवत् सात सइ तिरपन में
चीन पहुँचि के
चउबिस सुभ खंडन में
नगद अठारह
बउध-धरमपोथिन के
चीनी उलथा कइलन !
भिक्खु सुभाकर सिंह
मध्य उत्तरी भारतीय आ-
साकिय-मुनि के चाचा
सुखी अमिरितोदन के
जायल-पोयल रहलन !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ऊ पुरुबी भारत के
नालंदा विद्यामंदिर में
कुछ दिन रहि के,
विनय सील के
सिच्छा रहलन पवले !
सहज सुभावन,
लोगन के हित खातिर
अस्सी बरिसन के हड्डी में
जोस जवानी के भरि;
बहुत धरम-पोथिन के लिहले
संवत् सात तिहत्तर में सुभ
ऊ जा चीन पहुँचलन !
अउरी ओहिजा
ओनइस बरिस राखि देहिआँ के
बउध-धरम के सेवा कइलन !
पहिले पहिल साथ उनहीं का
बउधन के तंतर-मंतर-मत
'बजर-यान' प्रिय,
चीन देश में पइठल !
साधारन जनता खातिर तब,
ऊहे भिक्खु सुभाकर
देवन के एगो दल
झट कइलन तइआर !
मान महातम,
बढ़ल मंतरन आ देवन के !
वैरोचन आ बजरपानि के
पूजा होखे लागल !
हाल सुनीं अब,
भारी महिमावाला;
उत्तम संत हुवेन साँग के !
जें कि बिकरम संवत्,
छव छियासी में सुभ
गुरुदुवारा-
देवभूमि भारत के
विमल बउध-तिरथन के
दरसन करे ग्यान-गुन सीखें-
निकलि अकेले,
निरभय डेग बढ़वलन !
ऊहे धरम-जातरा आखिर
उनका के जग जाहिर
धरमदूत मसहूर बनवलसि
मध्य एसिया वाला,
बीहड़ ऊँच पहाड़न अउरी
मरुभूमिन के,
खतरा भरल जातरा कइके
मउवति के मुँहवाँ से
बारंबार बचत संजोगन
संवत् छव सइ नब्बे में
भारत देस पहुँचलन !
टहरत-घूमत,
तीरथ-धाम धरम-नगरन में;
अउरी बउध-धरम पोथिन के,
तच्छसिला नालंदा में रहि;
पढ़त धरम-गुरुवन से,
एहिजा उनकर
समय बरिस दस बीतल,
सांति-भाव से सुख से !
फेरु डहरिआ धइले ऊहे
मध्य एसिया वाली;
सफल मनोरथ हो ऊ,
छव सइ सत्तावन;
निपुन बउध-पोथिन के
अपना साथे लिहले
जनम-धरतिआ चीन लवटलन !
उलथा करवइआ का नाते,
पंडित संत हुवेन सांग भल
बसुबंधू आ धरमपाल के,
बउध-धरम के खास किसिम के
चीन देश में फइलावे में
अधिका प्रेम उमंग देखवलन !
उनकर बाकी जीवन
सुघर राजधानी छाङ्-अन् में
अपना चेलन के संग
उलथा वाला
सुभ कारज में बीतल !
तिरपिटकन के,
सुगम अरथ-पोथी प्रिय
महाबिभासा के ऊ
चीनी उलथा कइलन !
एतने नाहीं;

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जोगाचार-पंथ आ-
सुभ विग्यानवाद के,
संसकीरित पोथिन के,
दिहलन चीनी रूप !
ऊ सुरसति के लाल निराला,
भिक्खु सुरेमन ग्यानी
पंडित रतन अमोल जोतिमय,
दिङ्नाग के
निपुन 'न्यायमुख' अउरी—
'आलंबन-पारिख' के,
सज से उलथा कइलन !
अपना मउवति-घरी आखिरी,
संवत् सात सइ एकइस तक
ऊ पचहत्तर गो पोथिन के
उलथा पूरा कइले रहलन !

× ×

सुनीं कथा अब रुचिगर
दूसर नामी पुरुस नगीना
चीनी भिक्खु बिरागी,
धरम जातिरी प्रिय ई-चिङ के !
थाङ-बंस के राजा
ताइ-चुङ् के राजकाल में
नगद नगर चो-शाङ् में,
बिकरम संवत
छव बानबे में सुभ,
जनम भइल ई-चिङ् के;
ओही जुग में—जबकि
बउध-धरम के
ज़रि से खोदि उखारे खातिर
कोसिस होति रहे कुछ !
साधारन सिच्छा के बाद,
बारह बरिस उमिरि भइला पर
मन में उनका
भारत जाये वाली
मधुर लालसा जागलि !
बाकी आपन सुभ इच्छा ऊ
ओनइस बरिस दवा के रखलन !
उनका प्रिय आँखिन का आगा,
धरम भूमि भारत के साथे;
चीन देस के
मधुर प्रेम-संबंध रहे सुभ !
समय दसा कब
एक समान रहेले ?
बउध-धरम पर
नजरि राज-सासन के
घूमलि टेढ़ सनीचर वाली !
परल कठिन आफति के
काँस-कराही में ऊ !
बाकी धरमी-जन तऽ
आफति-बिपति सहेलन;
सांति-धीरता से कल से !
मति उनकर घबड़ाले नाहीं
सोचि-समुझि के
जतन-जुगुति से,
अगम-बिपति-सागर के
सहजे पार करेले !
दूसर थाङ-नरेस निठुर के
कोड़नवाली,
कठिन मारि परलो पर,
बउध-धरम प्रिय फेरु
रहे जीव-जांगर से,
कुसल सुखी खुस पूरा !
चीन देस से,
तीरथ-प्रेमी धरम-जातिरी
रहलन भारत आवत-जात !
जहवाँ विद्या-कला-ग्यान आ—
सुख-संपति के
रहे अछय भंडार !
बहुत दिनन से मोका देखत,
जोहत साइति-घरी-सुतार !
आखिर बिकरम संवत
सात अठाइस में सुभ
ई-चिङ् चढ़ि जहाज में
प्रिय कांतन-नगरी से
चललन भारत देस !
बिमल बउध-तिरथन का
दरसन के इच्छा से !
दूसर रहे लालसा उनका
मनवाँ में बइठलि कि
'सुरसति के नइहरवा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विद्यामंदिरवन में जाके,
ग्यानी धरम-पुजारिन से मिलि,
मन बानीं काया के सोधीं;
सीखीं पूजा-अरचा !
समय पाइ के ध्यान लगाईं,
देखीं बिमल जोति नयनन से !
दम के साधि बड़किआ मारीं,
गूढ़ ग्यान-सागर में !
सांत धीर बनि,
जोग-जतन से,
जोहीं रतन अमोल' !
एह भाव से
ऊ आगे बढ़ि
देखत सुबरनदीप सजीला,
अउरी सिरीविजय के
बिहँसति विद्या-फुलवारी के
मधुर-गंध-रस लेत,
होत मलाया कल से,
लाँघि बंगाला खाढ़ीः
संवत सात तीस बिकरम में,
पुरुबी-सागर तीर तामलुक
पहुँचि उतरलन पहिले !
अउरी ओह नगर में
एक बरिस तक रहि के
सँसकीरित भासा के
आपन ग्यान बढ़वलन !
तब ऊ दरसन कइलन पहिले
कुसीनगर आ बोध गया के;
पाछे देखलन टहरि-घूमि के
राजगिरिह कासी कवसांबी !
नालंदा में
दस बरिस तक रहि ऊ
पढ़लन-गुनलन
बउध-धरम-पोथिन के !
तब भारत के
नगद धरम-नगरन से
चारि सइ के लगभग
बउध-गरंथन के सुभ
जोरि जुटा के,
चीनदेस खातिर ले चललन

बिकरम संवत
सातबयालिस में ऊ
नगर तामलुक से चलि,
कई साल लंका में
ठहरि बिता दिहला के बाद,
सात-छियालिस में सुभ
सुघर नगरिआ सिरी-विजय में,
पहुँचि प्रेम से
छव बरिस तक रहलन !
जहवाँ उनकर दिनवाँ बीतल,
पढ़े-गुने आ—
सँसकीरित पोथिन के
उलथा सुगम करे में !
एह किसिम से घूमत,
सहज पचीस बरिस तक
ई-चिङ देखलन देस सोहासुत,
सिजिल एक सइ तीस !
आखिर मन के राधत-बोधत,
विद्या-विनय सील-संजम आ—
ग्यानी संतन का संगति से
संवत सात सइ बावन में,
अपना देस लवटि के
ऊ लोयाङ नगर के
सुघर 'परम सुख' मठ में
लगलन रहे सांति से !
दू सइ तीस नगद खंडन में
छप्पन निपुन बउध-पोथिन के
सज उलथा कइलन ऊ !
ई-चिङ के भारत-भरमन आ,—
कई दक्खिनी
टापू-देसन में जाये के
असली मनसा
रहे विनय के जोहि जुटावल !
उनकर सभ ले बड़ काम बा
सुभ सरवास्तिवाद के
असली विनय-पिटक के
सज उलथा चीनी भासा में !
ओकरा उलथा खातिर
उनका निगरानी में
चउवँन गो विदमान

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सात बरिस तक लागल रहलन !

× ×

सिच्छानंद संत शक-बंसी,
खोतन देस-निवासी
बउध-धरम के भारी पंडित,
रतन नगीना रहलन !
चीन देस का
निपुन भली महरानी
प्रिय वू-चो तियान के
नेंवता पा के
राजदूत के जरिए
सुभ 'अवतंसक-सुत्त साथ ले
संवत सात सइ बावन में
ऊ चलि चीन पहुँचलन !
रानी के कहला से,
ओह नगद हितकारी
सवतुक धरम-सुत्त के
ऊ उलथा कइलन चीनी में
तीन बरिस तक रहि के,
ता-पी येङ-युन् के विहार में !
सुत्त सुघर लंकावतार के
उलथा के पूरा कइलन ऊ;
सात सइ सनतावन में शुभ !
उनकर रचल धरम-पोथिन में
सोरह अबो मिलत बाड़ी सँ !
भिक्खु बोधिरुचि,
दक्खिन भारतवासी,
कासप-गोतरवाला,
सहज-सुधरमी बाभन-कुल के
पंडित-रतन नगीना रहलन !
महरानी वू-चो-तियान् के
राज-काल के
हीरा-रतन अमोल जोतिमय
सुघर तीसरा जानीं उनके !
उनकर नाँव पहिलका
रहे धरमरुचि;
जे के बदलि सुलच्छनि रानी
नया नाँव ई धइले रहली !
सात पचास बिकरमी से ले,
संवत सात सइ सत्तर तक
चीनदेस में बीस बरिस रहि,
ऊ पचपन गो
बउध-धरम पोथिन के
चीनी उलथा कइलन;
जिनका में ले
अबो मिलत एकतालिस बाड़ी !
एह किसिम से
विनय शील संजम आ—
सवतुक जोगजनन से
तन के चीवर-संघाटी के,
एक सइ छप्पन-बरिसन तक
राखि मजे में,
बे मसकल आ बिना दाग के,
लवटवलन ऊ
प्रिय धरमी-दाता के;
अउरी अपने,
डहरि पकड़लन सुगति-धाम के !
महायान के दूसर भारी,
सुत्त-समूह सजीला
'रतन-कूट' के उलथा,
संत बोधिरुचि उपकारी के
रहे अमर सेवा सुभ !
जेकरा भीतर,
सुखावती-वीयूह-सुत्त के
भगत चीन-जापान देस के
असर मान-मरजादावाली
एगो भारी,
बउध-धरम-मंडली निपुन के
ग्यानमयी गीता प्रिय जानीं !

× ×

तंतर-मत के
आचारज बिदमान निपुन प्रिय
बजर-बोधि के
जनम रहे सुभ
दक्खिन भारत वाली
परम-पवित्तर;

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

धरम-पुरी-कांची के
एगो बाभन-कुल में
इनकर पिता सुलायक पंडित,
कांची के पल्लव-राजा के
रहलन प्रिय गुरुदेव !
अपना गुरु के साथे,
बजर-बोधि नालंदा जाके
सज से पढ़लन-गुनलन,
हीनयान-मत के पोथिन के !
पोढ़ परीन पचास बरिस के
रहे उमिरिआ उनकर
जब ऊ अपना चेला
निपुन अमोघ बजर के साथे
संवत् सात छिहत्तर में सुभ,
चीन पहुँचि के
तंतर-मत के
डललन असली नेंव !
संवत् सात सइ अस्सी से
सहज नवासी तक ऊ
तंतर-मत का
नगद एगारह गो पोथिन के
चीनी उलथा कइलन !
आखिर जवना प्रिय चोला से
एकहत्तर बरिसन तक
भजन ध्यान तप पुरुसारथ ऊ
अइलन करत प्रेम से सज से
ओके बिना मोह ममता के
ओहिजे छोड़ि सरकलन
परमधाम के कल से !
भिक्खु अमोघ-बजर प्रिय,
उत्तर भारतवासी
उत्तम बाभन-कुल के
रहलन पंडित-पुरुस नमूना !
जे एकइस के लोच उमिरि में,
अपना गुरू सिरोमनि
बजर-बोधि के साथे,
चीन देस में पहुँचल रहलन !
ओह समय में ओहिजा
तंतर-मत के
महिमा-मान बढ़ल एतना कि
तंतर के पोथिन के
जोहि जुटा ले आवे खातिर
चीनी राजा भेंजलन उनके
लंका आ भारत के !
अपना एगो धरम-लेख में
ऊ कहले बाड़न कि—
"लरिकइएँ ले
हम अपना गुरुदेव गुनी के
भाव-भगति-सरधा से
रहलीं सेवा करत नेम से
डटि चउदह बरिसन तक;
अउरी उनसे
गूढ़ जोग-विद्या के
सिच्छा पावत रहलीं !
फेरु चीन से
भारत के पाँचों खंडन में
जाके बहुत जतन से
धरम-सुत्त आ—
निपुन सासतर वाली
पाँच सइ ले अधिका
चुनल नगद पोथिन के
कइलीं जमा खोजि के !
ई पोथी अइसन रहली सँ
जे अबहीं तक
चीन देस में
ना आइल रहली सँ
ठीक आठ सइ तीनि विकरमी
संवत् में हम
लवटि राजधानी के अइलीं;
तब से आठ अठाइस—
आज घरी तक
सतहत्तर पोथिन के
चीनी उलथा कइलीं !"
तंतर के पोथिन के लेके
लवटि चीन अइला पर
जोगीराज अमोघ बजर के
आदर-मान मिलल घर-घर से,
राजा परजा सभ लोगन से !
एह तरह से
बरिस छिहत्तर तक रहि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बउध धरम के सुभ-सेवा में
ऊ अपना तन के केंचुलि के
ओहिजे छोड़ि बिना गम के
संवत् आठ सइ एकतिस में
सुगति-धाम के गइलन !
कुल मिलि के ऊ
नगद एक सइ आठ
तंतर मत वाली पोथिन के
चीनी उलथा कइलन !
उनका सेवा से खुस होके
राजा देले रहलन
कुछ जागीरि भेंट में उनके,
तीनि हजार मेहनती
भल परजा-जन वाली !

× ×

सुंग-काल में बउध-धरम के
दसा रहे साधारन !
जदपि अबो ऊ
निपटे निरबल भइल रहे ना
बाकी त पच्छिम के
कई बउध-धरमी देसन में
विजय मुसलमानन के,
ओहर से बाहर के;
धुनी धरम-परचारक अउरी
त्यागी पंडित विदमानन के
आइल हठ बस रोकलसि !
सुंग बंस के धरमी राजा
ताइत्-सुङ के राज-काल में
बहुत भिक्खु भारत से अइलन,
जे बाड़न मसहूर चीन के
बउध-धरम इतिहास-जगत में !
संत सरल-चित धरमदेव जी,
नालंदा-बिहार के
भिक्खु सुरेमन रहलन !
जे कि संवत्
एक हजार तीस बिकरम में
चीन पहुँचि के
दस सइ अरतिस तक
फा-ती-येन् के;
नगद नाँव से
सहज छियालिस
सँसकीरित पोथिन के
चीनी उलथा कइलन !
दस सइ ओनतालिस
सुभ विकरम में
राजा उनके पदवी दिहलन
चाङ-चाउ-ता-सी के;
अउरी नाँव बदलि के
कइलन फा-सी-येन् !
ओह समय से
संवत दस सइ अंठावन
अपना मउवति के दिनवाँ तक
ऊ साहस आ नेह लगन बस
अउरी चुनल बहत्तर
निपुन बउध-पोथिन के
उलथा कइलन पूरा !
उनका प्रिय उलथन में
अधिका गिनती
धारणिअन के बाटे !
नगद धरम-सुत्तन के
पाठे भर कइला से
मानल जात रहे बड़ पुन्नि !
बाकी त सुत्तन के
रहे कलेवर भारी !
उनकर पाठ कइल जल्दी में
रहे कठिन ना होखे लायक !
ओही खातिर
दस पाँच डाँड़िन के
सहज धारणी
गइली रचल अनेकन !
जिनका के पढ़ला में
कमे समय लागे आ—
सुत्तन नियर पुन्नि सुभ होखे !
ओह समय भारत में
महायान ना मंतर यान
अउरी सील समाधि-सहज ना,
बजर-यान के
बंसी बाजति रहे सुरीली !
दूसर धरमदूत प्रिय
दान पाल उज्जैन नगर के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

निपुन बउेध सन्यासी रहलन।
जें कुल मिलि के,
एक सइ दस-एक चुनल सज
बउध-धरम-पोथिन के
उलथा कइलन रचि के !
भिक्खु तीसरा नामी,
धरमरच्छ ऊ मद्धिम मंडल
गाधिनगर,जमदगिनिपुरी भा
गांग किनारा वाला,
भल कारूस देस के रहलन !
संवत् दस सइ एकसठि में
चीन पहुँचि ऊ
केतने नगद बउध पोथिन के
संसकीरित ले रूप बदलि के
प्रिय चीनी भासा में कइलन !
साधु-संत त्यागी संन्यासी
देहियाँ धइ जग में आवेलन;
जुलुम-पाप अधरम के रोके,
बीया बोवे सुभ करमन के;
पुन्नि धरम फइलावे !
इहे भाव हिरदय में रखले
धरम रच्छ सुरसति सपूत ऊ
मन-बानी-करमन से
करत धरम-सेवा सुभ
ग्यान-जग्य में
आपन आहुति डालि सुगंधित,
उमिरि छानबे के भइला पर
एक हजार एक सइ पनरह
सुभ विकरम संवत् में
पाँच-पचीस-तीनि के देहिआँ
छोड़ि खुसी से ओहिजे,
परम धाम के गइलन !

× ×

नगद परोसी देस चीन में
बउध-धरम के सेवा के सुभ
राम-कहनियाँ कहि के एतने
अब इम हालि सुनाइबि
कुछ अउरी भगतन के !
धन्य ! संत भारत के,
जिनका विद्या-विनय-सील आ—
साहस-त्याग प्रेम-पुरुसारथ,
भाव-भगति सरधा से,
धरम अछयबट कंचन
अबो हमनके देखत वानीं !
ई संतन के महिमें ह कि
ओहू जुग में धरम-जातिरी
मामूली साधन से,
पकड़ि डहरिया बीहड़
पार करत बरफीला परबत,
बिना अटक आ बे आहस के
पामीरो के छत पर चढ़लन !
गोबी भा तकलामकान के,
भारी मरुभूमिन के
लँघलन जान हथेली पर ले,
अउरी गरजत महाराछछिन
गरम हवा निरदयी दुहुट के
चोटी बजा पछरलन !
सागर के छाती पर चढ़ि के
कठिनाइन के ललकरलन आ—;
पोढ़ करेजा कइके,
तूफानन से भिड़लन !
काहे से कि
आफति-बिपति देखि के सनमुख
साधु पुरुस घबड़ालन नाहीं;
ना त कठिनाइन के
माँथ नवा के पाछे लवटसु !
ऊ जातीय-धरम आ—
सान-मान-मरजादा वाला
सुभ करमन से
जीव चोरा के भागसु नाहीं,
बलके धीर थीर रहि
निरभय डेग बढ़ावत
असल निसाना पर पहुँचेलन !
सहज सुधरमी,
भारतीय संतन के
रोपल बोधि-बिरिछ के डढ़िआ
अपना सघन छाँह तर,
चीनी जनता के बइठा के
सुमति सांति सुख दिहलसि !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अउरी आपन अंग जानि के
विद्या विनय ग्यान आ—
संजम सील सिखवलसि !
एतने नाहीं,
कारीगरी-कला-गुन,
ध्यान-समाधि-जोग-तंतर कुल,
लायक चेला जानि बतवलसि !
गुरु-चेला के
परम पबित्तर नाता
बहुत दिनन ले निबहल सज से,
जे के देखलन
सभ देसन के अँखिगर लोग !
केतने संत भगत ओहिजो से
भाव-भगति सरधा से अइलन
देखे खातिर
महापुरुस मुनि बउधदेव के;
लीला भूमि सोहासुत,
विद्या-बोध-विचार-सील के;
गमगमात गहगह नंदनबन,
परमपवित्तर जनम-धरतिया
प्रेम-सांतिमय बउध धरम के !
उनकर मनसा भाव रहल कि
अपना गुरूदुवारा
बोधगया-कासी के,
दरसन करीं, पुन्नि-सुख लूटीं,
जीवन-सफल बनाईं !
संतन के सतसंगति कइके
विमल-ग्यान-अमिरित के
सज से छाक लगाईं !
ईहे मधुर लालसा लिहले,
फाहियान, ई-चिङ् आ—;
प्रेमी संत ह्वेनसांग ऊ,
कठिन कलेस उठा के
सारीपुत्त, महाकाश्यप आ—
प्रियदरसी असोक के
करमभूमि में अइलन !
आजो ओह पुराना
परम पवित्तर,
नगद नेह-नाता के
गुरु आ चेला,
दूनो कुल के,
सहज सुधरमी
लायक सुजन सपूत लोग के
ओही तरे निबाहल चाहीं !
दाव-घात धोखा के
मलिन भाव रखला से
भला भलाई होई कइसे ?
गुरु-चेला के,
लड़त-देखि आपुस में
प्रिय काश्यप-मातंग, धरमफल,
गुनवरमा-परमारथ,
फाहियान आ ई-चिङ्,
सभे महापुरुसन के
दुखी आतमा,
माँथ धुनी, पछताई !

× ×

धुनी सिपाही जाति घुमंतू,
खित्तन आ तंगुत लोगन में
बउध-धरम परचारक,
सुरू सातवीं सताबदी में
पहुँचल रहलन
धरम सनेस सुनावे !
कुछ पुरान तंगुत-लेखन से
पता चलत बाटे कि
सबसे बउध-तिरिपिटक
उलथा कइ तंगुत-भासा में
छापल रहे मजे में,
राज-बंस के
दान दया सरधा से !
सुंग-बंस के तीसर दुसमन
रहलन ऊ जुरचेन;
जे आमूर नदी के तीरे,
आ अउरी उत्तर में
आपन अड्डा रखले रहलन !
उनकर जाति रहे तुंगूसी,
पसु के पालेवाली;
धनी रमंता निपुन सिकारी !
पहिले त समाज उनकर ऊ
भूत प्रेत पूजे आ—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रहे पहिलका
बनबासी जीवन में !
बाकी सतई सताबदी के
अंत समय में
बउध-धरम-परचारक
उनका बीच पहुँचि के
धरम-करम आ,
सुभ सवतुक जीवन के
हितकारी उपदेस सुनवलन !
साधारन पिछड़ल जातिन में
धरम-ग्यान के
सुभ परचार करे के
जवन उमंग लगन आ—
ललक लालसा
जागल रहे समय से,
ओह बउध मुनियें के
ऊ ना रहे बुताइलि अवहीं !
जुरचेनन में
बउध धरम के
भइल रहे बहुते परचार !

× ×

विकरम संवत्
तेरह सइ ले पहिले
मंगोलन में
बउध-धरम के;
कवनो असर रहे ना !
संवत् तेरह सइ पनरह में
मंगोलन के चउकस चउधुर
सेनापति सरदार सरगना,
कुबिले खान बहादुर
प्रिय दोलोन-नोर के,
उत्तर पच्छिम साङ-तोन में
नेंवति बोलवलन
एगो सुघर धरममेला सुभ,
जवना में कि—
तीनि हजार बउध-संन्यासी
अउरी दू सइ तावी साधू,
जुटलन नेंवता पाके !
दूइ सइ कनफूसी ओ में

पंच होइ के अइलन !
बउधन के मुखिआ रहलन प्रिय
संत तिब्बती;
भिक्खु फगसपा अति मसहूर,
काट-छाँट बहसा-बहसी में
विजय भइलि बउधन के !
तावी हरलन,
अउरी उनकर सतरह नेता
पहिल बचनियाँ के अनुसार
माँथ मुड़ा के
बउध-भिक्खु हो गइलन !
बउध-लोग के उनकर
दूइ सइ सैंतिस मठ
बूझ-बिचार मोताबिक;
चट लवटावल गइलन !
कुबिले खान महान
मनलन बउध-धरम के !
संवत् तेरह सइ सतरह में,
बइठि राज-सिंहासन पर ऊ
पंडित राज फगसपा के प्रिय
राजगुरू के
मरजादा पद दिहलन
अउरी अरपित कइलन
राज नगद तिब्बत के !
पंडित गुनी फगसपा
उलथो के सुभ कारज कइलन !
उनका कहला के अनुसार
कुबिले खान धुनी सरदार
मंगोली-भासा में
बउध-धरम पोथिन के
उलथा सुरू करवलन;
बाकी ना ऊ
चलल बहुत दिन तक कि—;
संत फगसपा,
पाइ खबरिआ
दूर अगम अनजान लोक के
का जाने कवना हाकिम के
काम अमोल छोड़ि अधकपटे,
छनभंगुर जीवन के
बरिस बयालिसवाँ बिताइ के,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

संवत् तेरह सइ सँतिस में
चलि दिहलन अचके अकुताइल !
भिक्खु फगसपा करमबीर के,
एगो अउरी काम रहें सुभ;
चीनी तिरपिटकन के,
एगो नया बंस सँगरह के
परगट कइल छापि के !
गुनी बीर कुबले के बाद
जेन चुंग आ—
वोयन्थू प्रिय खान महान
बउध-ग्यान भंडार सजीला
विमल तिरिपिटक आ अउरी कुछ
निपुन धरमपोथिन के,
मंगोली भासा में
सज उलथा करवा के
मन के सहजे मोहेवाली
सोना के सुभ अच्छरिअन में
लिखववलन सरधा से !

× ×

बाद चीन के
बउध-धरम के अगिला डेग
संवत् चारि सइ ओनतिस में
परल कोरिया के धरती पर
कथा-पुरान कोरियावाली
तीनि सोहासुत राज-जुगन में
बाँटल जाइ सकेले !
पहिला जुग सुभ,
रहे निपुन हितकारी;
उत्तम सिला-राज के !
राज सुघर ऊ
संवत् पाँच पचासी में सुभ
बउध-धरम के मनलसि !
ओह समय से
अगिला तीनि सइ बरिसन तक
सिला बउध आचार-विचारन
अउरी प्रिय बेवपार-बनिज के
परमुख अड्डा बनि के
सोहत रहे मजे में !
आगे चलि के ओहिजा
नव सइ पचहत्तर
सुभ विकरम संवत में
वांग-बंस के
राज भइल कायम सज !
ओह राज-कुल के सासन में
बउध-धरम के
भइलि तरक्की भारी !
बनलन बउध-बिहार अनेकन
जहवाँ जमि के
भारतीय संतन के टोली
लोगन के सुभ सिच्छा दिहलसि
प्रिय सवतुक-जीवन के !

भगत कोरिया से कुछ पूरुब
सांत महासागर के बीच
सोहि रहल बा सिजिल अखाड़ा
धुनी करमबीरन के—
देस निपुन जापान !
जेकर पूरा ढाँचा
विद्या, कारीगरी, कला, गुन
सुभ सवतुक आचार-बिचार
बउध-धरम भा
अउरी भारतीय संतन के
मानल जाई देन !
ओह दूर दुनिआँ तक
बउध-ग्यान-सूरुज के
धरम-जातरा के कुछ
सुनीं कहनियाँ रउरा !
बीच कोरिया वाला
प्रिय बज्जर परबत के
मोहक देवदारु बन
नदी तीर आ—
सुखी सांत गवईं पाँजर में
महापुरुस मुनि बउधदेव के
गूँजत धरम-सनेस-सुरस सुभ
कदम बढ़ा के पहुँचल ओहिजा
यू-देन-जी आ-
पिव-हुन-सा से
छव सइ नव;

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सुभ बिकरम संवत् में,
जब कि धुनी कुदारा-राजा
भेंजत पाहुर प्रेम-भाव से,
साथी राजा या मा तो के पास
भेंजलन बउध-धरम-पोथी कुछ
मूरति मजिगर बउधदेव आ—
जीवन-मुकुत बउध-संतन के;
अउरी साथे,
पूजा के समगिरिही !
ओही सुभ मोका पर
अपना मधुर प्रेम-पाती में
ऊ लिखले रहलन कि—
"पुन्नि धरम ई,
सिच्छा के कुल्हिये अंगन में
बहुते उत्तम बाटे !
बाकी त एकरा के
जानल आ समुझल मुसकिल बा !
चीनो के मुनियन के
समुझल एके
सहज रहल ना !
एह धरम के मानेवाला
बेहद सुख आनंद सांति आ-
विमल बउधताई तक
पावे के होलन हकदार !
चिन्तामनि जइसे कि-
मन के सभ इच्छन के
पूरा करे जुमावेवाली
सहज भाव से समुझल जाले !
ओही तरे रतन ई
मानुस के सवतुक इच्छा के
पूरा कइला बिना रहे ना !
नगद धरम ई,
दूर देस भारत से
संतन के तप..त्याग दया से
चलत कोरिया आइल !
डहरी के सभई देसन के
बहुमत जनता
माने ले एकरा के
भाव भगति सरधा से
एह किसिम से,
जब ऊ प्रेम-भेंट आ पाती
पहुँचलि जापानी दरबारे,
तब राजा के दरबारी कुछ
सेना के हाकिम-अमला आ
उपरोहित शिन्तो-दल
बउध-धरम मनला के
कइलन खड़ा बिरोध-बखेड़ा !
ई बिरोध गति,
छउकि छटकि घुसकुरिआ काटत,
चललि पचास बरिस तक !
बाकी ओह लोग के
अड़ि बिरोध कइलो पर
बउध-धरम प्रिय
लोगन के हिरदय के
खिंचलसि अपना ओर !
ओही भल प्रेमी भगतन में
रहलन वत्तिसत्रौं मीकोता
सूशुन तेन्नो -
अउरी उनकर रानी !
संवत् छव सइ एकतिस में
बउध-भगत राजा-रानी के
जनमल एगो
लायक पूत बिलच्छन !
उहे पुरुस परतापी,
शो तोकू आगे चलि
संवत् छव चारि नव में सुभ
राज-काज के बागडोरि के
अपना हाथन में लिहला पर
बउध-धरम के
राज-धरम प्रिय मनलन
पीटि ढिंढोरा सज से !
समय पाइ के ओसाका में
तेन्नो जी के
बनल आसरम बाँका !
ओह आसरम में सुभ
भाग चारि गो रहलन !
सुघर बउध मठ—
बिमल-आसरम,
बेस दवाईखाना एगो;

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अउरी उत्तम विद्यालय प्रिय !
जेकरा में कि
हितकारी सवतुक बिचार आ
कला-ग्यान-गुन धरम-करम के
सिच्छा दीहल जाय !
ओह समय जापान
कला-ग्यान-बिग्यान-बोध में
रहे कोर अनजान !
प्रिय राजा शो-तो-कू,
जहाँ सयकड़न विद्या-प्रेमी
नवजुवकन के
सिच्छा पावे खातिर
चीन-कोरिया भेजलन
ओहिजे केतने
भवन-इमारति के कारीगर
कलाकार मूरति-गढ़वइआ
सज तसबीरि उरेहे वाला,
राज-लोहार-जोलाहा-बढ़ई,
किसिम-किसिम के गुनीजनन के
बोला प्रेम से
सिच्छा सुरू करवलन
जापानी जनता के !
ऊहे धरमी राजा,
संवत् छव सइ एकसठि में
प्रिय जापान देस के
सतरह धारा वाला
पहिला नेम-कनून बनवलन !
जे कि आजो ओहिजा खातिर
बाटे बड़ अभिमान सान के
चीन सराहे लायक !
शो-तो-कू के,
बनवावल सज मंदिरवन में
होरयो जी के मंदिर
बा सबले परधान !
उनकर हिरदय
रहे बिमल अति
सराबोर सरधा-भगती से !
ध्यान लगा ऊ,
आतम-ग्यान-रतन के ढूँढ़सु !
ओही सुद्ध भाव के
देखलावे खातिर ऊ
होरयो-जी के
अवलोकेसर बोधिसत्त के,
मूरति सुघर बिचित्तर,
सिजिल काठ वाली के
अपना हाथे रचि के,
रुचि अनुसार बनवले रहलन !
ओह नगद मूरति के देखि
सहज भाव से लोग कहसु कि—
"शो-तो-कू जवना में
आपन हाथ लगवलन
बस कमाल कइलन ओही में !"
होरयो जी के मंदिर
जापानी बउधन के
बोध गया प्रिय मानल जाला !
ओके उनका
बिमल देस-भगती आ—
सुभ जातीय-प्रेम के
मूरति उत्तम जानीं !
होरयो जी के
परम पबित्तर
उहे नगरिआ हउवे
जहवाँ से कि
जापानी जन
कुल आचार-बिचार रूरि-गुन
कला-ग्यान-बिग्यान-धरम के
सज सवतुक सिच्छा के
कइलन पहिले पहिल सुरू आ—
अंत दाव में पूरा !

× ×

दूसर सुघर नगरिआ नारा,
रजधानी जापान देस के;
सरधावान सुधरमी राजा
प्रिय सोमू के
बउध-धरम-सेवा के
नगद नमूना
आजो कायम रहि के
मौन-भाव से
कथा-पुरान कहति बा !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

धरमी पुरुस-विमल-मति शोमू
जहवाँ अपना रजधानी के
मनमोहक मजिगर महलन से
कइलन सुरू सजावे,
ओहिजा त्यागी संत-मुनिन के
मठ मंदिर धामन पर
चानी-सोना
पानी निअर बहावे में ऊ
कवनो कोर-कसर ना रखलन!
आठ सइ नव
सुभ विकरम संवत में
ऊ दुनियाँ के सब लें ऊँची
पीतर वाली बउध-मुरतिआ
दाई बुतसू के ढरववलन!
जे भारी केतना बा,
एकर बोध करीं एसे कि
बइठल मूरति के सरूप सज
साढ़ं तिरपन-फुट ऊँचा बा!
मूरति के तइआर करे में
पीतर लागल
बारह हजार
दू सइ पचहत्तर मन;
मोमि मोलायम
दू पचीस मन
सोना साढ़े दस मन
अउरी सुद्ध साठि मन पारा!
बउध-धरम के
पहिला जापानी-मत
लोगन के सुख-सांति डहरिआ,
सहजें में लउकवलस!
एह पंथ के समुझ मोताबिक
परमारथ आ—
संसारी-बेवहार-दसा-गति
सत् आ असत्‌रूप में
कवनो खल के
असल भेद बाटे ना!
अश्वघोस के
कहला के अनुसार
जग आ सुगति बीच अंतर बा
जल आ जल का लहरि समान!

जल बा साँच लहरिआ झूठी,
बाकी जेह किसिम से
लहरि अलग जलवा से नइखे
अउरी ना जल
अलग लहरिआ से बा
ओही तरे सुद्ध परमारथ
अउरी जग-ब्रेवहार
एक दूसरा से इचिका भर
अलग सुतंतर दम राखसु ना!
इहे तेन्दई-मत मनवइआ
सुभ धरमी लोगन के
विमल विचार-सार हऽ जानीं!
बउध-धरम के
दूसर मत केगोन
जोगाचार-पंथ सवतुक के
एगो डाढ़ि पोढ़ लमहरि हऽ!
प्रिय अवतंसक-सुत्त निपुन अति
एह पंथ के
हउवे असल धरम-पोथी सुभ।
जापानी बउधन के
तीसर पंथ सुगम सज
हऽ शिगोन सुगति-सुख-दाता,
जे कि मंतर-पंथ कहाला!
निपुन चीन-जापान देस में
जंतर-मंतर वाला
बउध-धरम के
ऊहे असल सरूप नगद हऽ!
ओह देस में
ओके रोपे पनफावे के
सुजस मिलल कोबो दैशी के!
कोबो रहलन पुरुस नगीना
तेज सुलच्छनमान परीन!
ऊ बिदमान सुरेमन ग्यानी
विमल संत संन्यासी
सज तसवीरि उरेहे वाला
नगद गरंथन के लिखवइआ
अउरी धुनी धरम-नेता प्रिय
जापानिन के मानल गइलन!
चउथा बउध-पंथ सुभ जोदो
जापानी लोगन के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डहरि देखवलस
सरधा-प्रेम-भगति के !
सुखावती हऽ,
ओकरे दूसर नाँव !
ओह पंथ के
असली मत ई ह कि
बउधदेव के नाँव पबित्तर
प्रेम-भाव से जपले,
मानुस निहचय सभे दुखन से
छुटकारा पा,
पहुँचि सांत अमिताभ लोक में
सुख से बास करेला !
एह भगति मत के जनता में
नेह लगन से
पहुँचावे फइलावे वाला,
पुरुस कूय-सोनिन प्रिय रहलन
संत धीर विदमान !
बाकी ओह पंथ के
सबले बड़ आचारज
रहलन होनेन-शोनिन !
ऊ चीनी जापानी,
दूनो भासा में पोथी लिखि,
ओह निपुन हितकारी मत के,
लोगन के मनवाँ के भावे
सोधे-बोधे जोग बनवलन।
एह किसिम से
जोदो-मत में
भगति-भाव बाटे परधान !
जइसे वैदिक-धरम-विमल में
भगवत-नाँव प्रेम से जपले
लोग पहुँचि बैकुंठ लोक में
सुख से बास करेला,
ठीक तइसहीं जोदो मत में
बउध-नाँव के जप से
सरगलोक में
सभ-सुख-संपति-सांति मिलेले !
जापानी जनता के
इहे धरम ह आपन !

× ×

सहज-सुभाविक-चेतन
परम सुतंतर मानुस-मनवाँ
सुख-आनंद-सांति के खोजत
कहाँ-कहाँ तक जाला
अपना रुचि-मति-गति अनुसार
एकर कथा बिचित्तर भारी
पंडित गुनी मुनी बिदमान
बहुत पुराना-जुग से
कहत सुनावत आवत बाड़न
लोगन के हित खातिर !
महापुरुस मुनि बउधदेव के
गौर-गुनावन वाला
पोढ़-पुराना धरम-अछयबट
सहज-सनातन-सुभ से
निकलि बरोहिआ केतने
धरती धइली
भइली दूसर फेंड़ !
जापानी जनता के
विमल धरम-मत 'जेन'
ओइसनके सज
बोध-सांति-सुख छायावाला
सुघर बिरिछवा हउवे !
'जेन' सबद हऽ
जापानी भासा के
होला जेकर अरथ धियान !
ओह धरम-मत में धियान के
सुभ निरवान सुगति के
उत्तम जुगुती मानल बाटे !
विकरमवाली
पँचवीं सइबरखी के
अंतिम निपुन घरी में
भारतबासी
वोधि धरम गुरु ग्यानी
बउध भिक्खु बिदमान सुरेमन
दक्खिन भारत देस सुघर से
चीन पहुँचि के ओह धरम के
कइलन सुभ परचार !
छव सइ बरिसन तक
ऊ प्रिय विमल धरम मत
पसरि चीन के
सुद्ध सहन धरती पर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

फूलत-फरत रहल रस पाइ !
ओही संवतवालीं
एगारहवीं सइबरखी के
अंतिम पुन्नि घरी में
ऊ सुभ मत सुखदायी
पहूँचि गइल जापान !
जहवाँ ओकर
भइलि तरक्की भारी
तेज बिराजल तूती बोललि
गाँव-नगर घर-घर में !
आगे चलि के
त्याग-विनय-सेवा के करते
बउध-धरम-गुरुवन के
एतना असर बढ़ल कि
राजनेति के
चतुर पैंतराबाज खेलाड़ी
अपना के बलहीन समुझि के
रजधानी के
धरम-धाम नारा से
नया नगर मि-यको ले गइलन
जे कि बाद समय में
नाँव कियोतो से प्रिय
भइल बहुत मसहूर !
एह किसिम से
विकरम संवत्
आठ सइ तिरपन से
ओनइस सइ-पचीस तक
नगर कियोतो
रहल राजधानी सज
जापानी राजा लोगन के
सब विधि सिजिल कियोतो
नगर चुहिलगर में बा
बउध-धरम के सभे मतन के
पाढ़ सोहासुत गढ़ परधान !
परवत के फाटिन में
बसल धाम सुभ नारा
बाटे सुघर सांत सज
सबके मोहेवाला
बाकी त जानीं जे
नगर कियोतो पर परकिरती
सुघराई सोभा के
हिरदय खोलि लुटवले बाटे !
जेनिएँ से देखीं त
हरिअर-हरिअर
गहगह ऊगल मोहक
परबत लउकत बाड़न !
जगहि-जगहि से
नगरी बीच सुघर सुभ
कई बउध-मठ
बाड़न मन के मोहत सोहत !
भारी महिमावाला
हिंयेई-विहार प्रिय
बनल सात सइ पैंसठि
सुभ विकरम संवत में !
ओकर थापक
रचि बनवावेवाला
रहलन संत साइ-चो
चीन देस के
एगो बउध भिक्खु बिदमान !
ओह विहार नगद के
रहे मान-मरजादा बहुते
जापानी जनता में !
जेकर बा परमान इहे कि—
विकरम के बारहवीं
सइ-बरखी से
आगे के ओनइसवीं
सइ-बरखी तक
राज-बंस के
निपुन कुवँरवे
बनसु महंथ सुरेमन मठ के !
धन्य ! नगरिआ नगद कियोतो
अउरी धन्य ! हिंयेई-जान
परकिरती जेकरा सिंगार में
खोलि खजाना
अपना सुघराई के
सखरज दानी निअर मगन-मन
खूब लुटवले बाटे !
संजु-संगेनू-दो नगर के
बउध-मंदिर ह दुसरका
अति बिचित्तर
दरसने लायक सभन के !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सोधि जे चित के मजे में
सहज निरमल ग्यान सवतुक
बोध-सुख आनंद देला !
कारीगरी-गुनन के
सजल सँवारल नगद नमूना
प्रिय मंदिर ऊ
बनल एगारह सइ नवासी
सुभ विकरम संवत में !
नाथ दयामय
अवलोकेसर-बोधि-सत्त्व के
मूरति मजिगर
जेकरा में बाटे परधान !
तीसर बउध बिहार सजीला
जानीं कियोमिजू के !
जेकर दरसन होला
ओतोवा परबत के
आधी ऊँचाई पर चढ़ले !
परकिरती के सोभा में ऊ
बा साँचो बेजोड़ !
ओह बीच के ऊँच सहन से
परबत के देखला पर—
जहवाँ बाटे
देवदारु मापल आ—
चेरी के फेंड़न के बनवा
—मगन भइल मन
मोर निअर नाचेला !
नजरि फेरि नीचे के
नगर कियोतो देखले
सबँसे सहर सोहासुत
सज तसवीरि निअर भासेले !
मठ ऊ थापित भइल सुरू में
जोगाचार बउध-मतवाला
त्यागी संतन खातिर !
बउध-धरम के भारी अड्डा,
कोयासान नगरिआ;
सुघर सांत सुखदायी,
परबत ऊपर
चउरस सहन जगहि में
देवदार बिरिछन से
घेरल चारो भर से,
संत सुरेमन
निपुन बउध संन्यासी
प्रिय कोबो-दइशी के
सुजस आजुओ गावति !
जिनका नेह लगन मरजी से
ऊ शिंगोन बउध-मत के गढ़
बनलि पोढ़ मसहूर!
आज-काल कोबो के मत के,
मानेवाला होइहन;
लोग करीब नवासी लाख!
अउरी उनकर मंदिर,
बारह हजार ले बेसी
बउध-धरम के
चटक जोति वाला सुभ
सुबरन दीपक बारि सजीला
अन्हुवाइल भटकल लोगन के
चिक्कनि डहरि देखावेवाला
कोबो सुगतिधाम के गइलन,
आठ सइ नब्बें दू
सुभ विकरम संवत् में
तीन चतुर दरजिन के सीअल,
पाँच पेवनवाँ वाला;
नाँव रूप के कुरता आपन'
राखि ओकुमो-इन में!
भाव-भगति-सरधाबस
कोबो का इआद में
बनलि समाधि जहाँ बा
सुघर ओकुनो-इन सुभ
ओहिजे अपना गुरु के
सेवा पूजा खातिर
केतने राजा-रानी,
सेनापति-सरदार संत-मुनि,
बीर सिपाही चउकस चंगा,
आसन लगा ध्यान में
बइठल बाड़न चारो भर से!
कोयासान नगर के
सभे मठन में
सोजो-सिन्-बिहार के
आजो समुझल जाला
सबले सुघर सोहावन !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कोङ्-गो-बुजी दरसने लायक,
दूसर प्रिय विहार शिंगोनी;
ओह धरम-मत वाला,
मठ सुमेर ह्ऽ;
जहवाँ खन्-चो बास करेलन!
बेसी का हम कहीं कहानी,
बउध-धरम के;
मरजादा-महिमा के!
आजो ओही
प्रेम-भाव आदर से
सांति-सचाई बिनय-सील के
बिमल पताका ओकर
जापानी गाँवन-नगरन में
चढ़ि ऊँचा लहराति!
धुनी गुनी उतजोगी
धीर निपुन जापान देस के
दूइ तिहाई जनता
आजो बउध-धरम के
सरधा से मानति बा!

× ×

विकरमवाली
पहिली सइबरखी में
बउध-धरम जा पहुँचल
हिंदचिन आ जावा!
संवत् एक सइ एकइस में
भिक्खु धुनी काश्यप मातंग
चीन जाइ के,
बउध-धरम-पोथिन के
संसकीरित ले,
रूप बदलि कइलन चीनी में
जे कि अबहूँ
ओहिजा देखे में आवेली!
संवत चारि सइ ओनतिस में
लाँघि चीन के सरहद
धरम गइल ऊ
सुघर कोरिया देस!
ओहिजो ले आगे बढ़ि
संवत पाँच पचासी-दस में
सांत-महासागर के
सुभ चरनन के चूमत
जा पहुँचल जापान निपुन तक!
बाकी अपना खास परोसी
भोट-देस तिब्बत में
पहिल डेग धइलस ऊ
छव सइ नब्बे आ सात
प्रिय विकरम संवत में!
एह देर के कारन
रहे बीच के
बीहड़ ऊँच हिमालय
अउरी ओहिजा के लोगन के
जगत-जमाना-जुग भा
दल समाज से पिछड़ापन कुछ!
भारत में जब
राज रहल प्रिय
सुखी सुधरमी
राजा निपुन हरसबरधन के
अउरी चीनी-धरम-जात्तिरी
भिक्खु हुवेनसांग ऊ
अति मसहूर घुमक्कड़,
पहुँचि देस में रिखि-मुनिअन के
बिमल धरम-तिरथन के
रहलन दरसन करत प्रेम से
टहरि घूमि के चारो ओर!
ओह समय में
लगभग सवँसे तिब्बत
रहे बितावत
सहज घुमंतू जीवन!
बरम्हपुत्त नदिआ के
निचिला भाग सहन सज
सुघर सुहेल इलाका
प्रिय ल्होखा वाला में
सुखी सुजन जमि रहलन जहवाँ
ओहिजे कुछ-कुछ
पढ़े-लिखे भा गुन-सहूर के
निरमल जोति सोहासुति
मुलुकति रहे कले-कल!
पाइ सुबहिता साज-समान
खेती-बारी होखे सज से!
ओही देस नगद में
भारी जमींदार के घर में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

संवत छव बहत्तर में सुभ
जनम भइल प्रिय
सेनापति सरदार चउधुरी
वीर सरोंग-चन्न-गं-पो के !
रहे उमिरि जब
बहुत लोच तेरह बरिसन के
तब ऊ अपना बूढ़ बाप के
सरगलोक गइला पर
छव पचासी सुभ संवत में
सहज बपउती-संपति
धन-धरती घर-बार राज के
हो गइलन हकदार !
ओह घरी पर
ठेठ तिब्बती लोग
कई घुमंतू-दल भा
छोट-छोट सरदारिन में कुछ
रहे बँटल छितराइल !
देस-काल के जानेवाला
धुनी निपुन मतिधीर साहसी
नया तिब्बती अगुवा,
वीर सरोंग-चन्न उतफाली
सरदारिन के तोरत—,
मोरत भोट जाति के
ठोस बनवलन
बान्हि एकता के धागा में !
एतने नाहीं,
चउकस भोट जवानन के ऊ
सिखा-पढ़ा के,
कइलन ठाढ़ पोढ़ सेना कुछ
जेकरा बल पर
बढ़ि असाम से काशमीर तक
सबसे बीहड़ किला हिमालय
अउरी तीन सिवनइत
चीनी राज नगद के
मालिक बनलन रोबदाब के !
नया तिब्बती राज सिजिल के
लाँघि सिवाना के तिब्बत के
उत्तर-दक्खिन-पूरुब-पच्छिम
जेनिएँ डेग बढ़ल उनकर कि
बउध-धरम से
जुटल सोहासुत नाता !
भोट-राज के भाग दक्खिनी
काशमीर नेपाल
बउध-धरम के जनम-धरतिआ
देवभूमि भारत के
रहलन अंग सुघर परधान !
उत्तर आ पूरुब में
तुरुक चीनिअन निअर जाति भल
सुखी सुधरमी
रहली बसल जुगन से
बउध-धरम के मानेवाली !
भला कहीं तऽ
बिजयी बली गिरोह घुमंतू
चारो भर के
सुभ आचार-विचारन से कब
रहितन अलगा कोरा ?
देखि सरोंग-चन्न के
तेज-ताप-महिमा के
प्रिय नेपाल-नरेस
निपुन अंसुवरमा झुकि
मेल-मिताई,
कायम राखे खातिर
राज-कुँवरि से उनकर
कइ बिआह सुभ
दिहलन पूरा
हीरा-मोती-रतन दहेज !
उहे डहरिआ धइलन
चीनो के राजा मतिमान !
पहिली भलरानी नेपालिनि
मैतरेय मुनिनाथ बिमल आ—
देव अछोभ, देवि तारा के
सुघर मुरतिआ चंदनवाली,
नइहर से पाहुर ले
सुख में ससुरा अइली !
सांत-सुलच्छनि दूसरि रानी
चीन-राज के बेटी कोङ्-जो
सरधा-प्रेम धरम के नाते
माई-बाप जनम-धरती से
बउधदेव के
बहुत पुराना सुघर सुभ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सगुनवती लछनवती मूरति
सज दहेज ले अइली!
कारन इहे भइल पहिला कि
बउध-धरम तिब्बत में पहुँचल;
राजकाल में
प्रिय सरोङ्-गचन-पो के!
अपना आधा अंग सजीला
प्रिय रानी लोगन के
संग-साथ सरधा भगती से
बउध-धरम के मनलन राजा!
आसमान में भोट देस के
चमकल नया सितारा
सुभ आचार-बिचारन वाला!
नयी सोनहुली जोति सोहासुति
डहरि नयी सज
सुमति सांति सुख देवेवाली
मिललि घुमंतू
अड़भंगी सरदार बीर के!
एक ओर जहवाँ ऊ
सुख-संपति-विद्या-गुन
भल आचार-बिचारन के सज
सिजिल नगर के
दिहलन रूप-रंग लासा के
ओहिजा अपना
नेपाली रानी के
पूजा खातिर बीच नगर में
जो-खङ् के मंदिर बनववलन!
तिब्बत के ऊ,
सबले पहिल पुराना
नगद बउध-मंदिर प्रिय
आजो कायम बाटे!
लासा के एगो कोना में
बास करे वाली महरानी
अपना खास बउध मूरति के
थापे-पूजे खातिर
रुचि मोताबिक,
मंदिर नया रमोछीवाला
कहि तइआर करवली!

× ×

चंचल चटक राज-लछिमिनिआँ,
उरुवा पर चढ़ि माँ के ले!
मोहक रूप देखा के आपन
केतनन के ललचावेले!
उतजोगी सानी वीरन के
चुनि साथी सरदार सुरेमन
जयमाला पहिरावेले।
बाकी तऽ ऊ संग-साथ में
ठहरेले ना बेसी
चीखि चासनी रस के,
तनिके में धकिआवेले!
छीर-समुंदर भीतर
सेसनाग के देहिआँ पर जे
आँखि मूदि के सूतल
ओकरा बा परवाह कहाँ कि
हमके आड़ बना के
सुभकरमी पुरुसन के
हुरपेटल धकिआवल जाता!
मिलि-बतिआ के महाकाल से
जालि डालि माया के
बरबस बझा घसेटल जाता!

× ×

फइलि सोनहुली जोति
सोझ कोर लोगन के
दिहलसि सुख आनंद!
भागल भरम अन्हार मलिन मन
हँसत बिहान सोहासुत पहुँचल
अँखिआ खुललि उँघाई टूटलि
छूटल आलस अटक जम्हाई!
सभई सजग भइल उठि
लागल सुभ करमन में!
बाकी धरम जग्य जे ठानल,
मंडप नया सुघर बनवा के
साज-समान-जुटावल पूरा
पंडित गुनी बोलावल,
आहुति डालल
चारि सिजिल कुंडन में,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सुद्ध सुगंधित सुभ दरबन के!
तिरपिटकन के
बचन सुनावल हितकर!
संजम नेम सिखावल
दीहल सुमति बोध बानी बल
गति-जीवन-मरजादा!
ओह के असमय अकुता के
बिना जग्य के पूरा भइले
भेजि सनेस बोलावल अंते
भला कहाँ तक
रहे जथारथ काम?
तबो सुनेला के?
ओहिजा लागी केकर?
घंटा बाजल,
बदलल पहरा!
परवाना ले
समय सिपाही आइल!
जे ना कबहीं,
करे मरउवति केकरो!
तनिक देर ना लागल,
टूटल धूरा परालबध के,
ठहरल तन के चक्का!
नेह भरल नयनन से देखि.
सुखमय रूप जनमधरती के
माथ नवाके बउधमुनी के
धाम लुंबिनी कुसीनगर आ—
बोधगया-कासी के
उठलन पुरुस सरोङ् महान!

× ×

बीच समय में
दूसर केहू आइल
राजसिंहासन पर प्रिय
आसन लगा ललक बस
संपति-सुख-सुधार-जस खातिर!
बाकी तऽ ऊ
मनसा भाव भइल ना पूरा!
आगे चलि के
विकरम संवत
आठ सइ ओनसठि में
खिरी-सरोङ् लदेव्-चन
भोट सपूत-सुधरमी
अइलन उतरि अखाड़ा बीच!
जे कि वीर सरोङ्-चन्न का
विमल बंस के
पुरुस पाँचवाँ रहलन
धीर धुनी मतिमान!
बढ़ल देस के गाड़ी आगे
बिजय भइल चीनी सेना पर!
जेंकर बड़ सबूत बा
पोटाला के खंभा-लेख!
दूसर उत्तम कारज
देखे समुझे लायक
सनमुख बा सभई के
वुसम-यास् में
बनवावल सज
नया तिब्बती बउध-विहार!
काम तीसरा महिमा वाला
रहे ओह राजा के
लद्दंकर के राजमहल में
उलथा कइल धरम-पोथिन के,
सोधि बनावल वेवरा-चिट्ठा!
ओही बीच बिघिन कुछ आइल,
बहुत लोग चाहल कि
"बउध धरम कें
झंडा गड़ल उखाड़ीं!
राजा बाड़न लरिका
ऊ बगडोरि सम्हरिहन कइसे?'
बाकी तऽ जानीं जे
सबतुक सहज धरम ऊ
अउरी ओकर
सम आचार-बिचार
भोट-जाति के अंग-अंग में.
पइठल रहे मजे में!
निपुन तिब्बती राजा
सरधावान भगत भल
देखि बखेड़ा-टंटा,
प्रेम भाव से तकलन
धरम-भूमि भारत के ओर!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

× ×

जहवाँ फूल खिलसु मन-मोहक
पारिजात मंदार चमेली
जूही बेला हरिचंदन के!
सुरसति का गहगह फुलवरिया
विद्या-ग्यान-धरम का नगरी
गिद्धकूट परवत का पँजरा
राजगिरिह का उत्तर कगरी
धरती का बैंकुंठ सजीला
गमगमात प्रिय नालंदा में!
आठो पहर जहाँ मंगल धुनि
चउसठि कला कोइलिया कुहुकसु
गूँजत रहे ग्यान-बिग्यान!
मानसु कइसे
महालालची पवन देवता
ओहिजा बिना पहुँचले!
सहज सुभावन
मधुर सुगंध चोरा ऊ
कल से सरकसु अंते
दसो-दिसा में देस-देस में!
दया छोह से उनके
सुजस सुगंध समय से पा के
मोहि गइल संसार!
बहुत लोग ललचाये लागल
चलल पिये अमिरित-रस-धार!
सुगति-सोम अमिरित के झरना
ढुलुकी धावत थिरकत आवत
गुनगुनात ललचावत गावत
समय-समय से
सातो मधुर सुरन में!
फटिक-सिला-हरिअरी मोहिनी
बइठि हंस के पिठिया सुरसति
जहवाँ बीन बजावति!
दू डेग बढ़ल,
जे जहँ सुनल
तहवाँ से धावल!
बेकल भइल पिआसल-हाँकल
मेंटा-काँटी कलस-कवंडल
बरतन भाँड़ जुमावल!

× ×

लगन महूरति देखि सोधि के
भोट देस से नेंवता लेके
सरधा नेह लगन से
चउकस बउध भिक्खु ग्यानेन्दर
समय पाइ अइलन नालंदा!
दरसन कइलन, दिहलन नेंवता
राजा-परजा गावँ-नगर के;
अरज सुनवलन, बिनती कइलन
संत-पुजारी बिदमानन के!
नेंवता पाके गदगद होके
नालंदा बिद्या-मंदिर के
पंडित-रतन नगीना
आचारज सुभ सील बिनय के
धरम बिचारक ग्यानी
मूरति साहस धुन धीरज के
भिक्खू शांतरच्छित महराज
बुढ़वा पीपर बिरिछ समान
पचहत्तर पतझड़ बसंत लखि
जिनिगी का तिजहरिया,
उमिरि रहे जब ढरकलि निकहा
आठ बीस बिकरम संवत में
धरमदूत बनि गइलन तिब्बत!
महापुरुस मतिमान हिमालय
जहाँ सुमेरु सुघर धवलागिरि
सेवा दया त्याग के धपकत;
बिनय-सील गंगा जमुना के
सांत लहरिया सुखमय झलकति!
ओकरा के का
दुख कलेस भरमावे?
मानसरोवर के सुभ
बिमल-शांत जल भीतर
राजहंस बिहरत सुख पावत
झूमि-झूमि के चूँगत मोती
तन के ममता-मोह-सोग के
ओइजा कहाँ गुजर बा?
भाई बंधु समझि सभई के
सत्त-अहिंसा-दया-सील के
मंगल मधुर सनेस सुनावे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गचकी-हबसा कीच-पांक में
धँसल धरम-रथ के पहिया के
पुरुसारथ-तप-तेज-त्याग से
बहरा घींचि निकाले, धोवे,
चिक्कनि डहरि धरावे खातिर
संत शांतरच्छित महाराज
निरभय आगे बढ़लन !
कठिनाइन से लोहा लिहलन
लँघलन परबत-जंगल दुरगम !
धुनी पुरुस मरजादावाला;
आगे आइल कठिनाइन से
ताड़ी ठोंकि भिड़ेलन,
माँथ झुकावसु नाहीं!
उनका सनमुख हारि रहे ना
जीतेलन हरदम ऊ!
छन भंगुर मानुस-देहियाँ ई,
ठहरे वाली नाहीं,
कतहीं कबे गिरे छितिराय!
इहे सोचि के,
पुरुस निपुन मतिमान
एकर मोह करसु ना!
बलुक समझि के एके
नगद सवारी साधन
असल निसाने अपना
विना पहुँचले मानसु ना!

× ×

भिक्खु शांतरच्छित जी
पहुँचि राजधानी लासा में
सरधावान भगत राजा के
धरम-सनेस सुनवलन!
मुनि का रुचि मोताबिक
साइति-समय-सुतार देखि के
बरम्हपुत्र नदिया के
एक कोस उत्तर भर
देखि जगहिआ सांत सोहावनि
धरम पाल महराज-मगध के !
बनवावल सज
महाविहार उदंतपुरी के
नगद नमूना मानि

पहिला बउध-बिहार सुघर सुभ
बनल चुनल सम्मे में
सही सिजिल बारह बरिसन में
मठ का बीच सुमेरु समान
मंदिर रचल गइल परधान !
अउरी चारो ओर चारि सज
महादीप आ-
आठ छोट चुनमुनवा
दीपन निअर नगीना
बारह दीप बनावल गइलन
भिक्खु लोग के
सांत निवास भजनिआँ खातिर !
प्रिय मंदिर परधान निपुन के
चारो कोना पर कुछ हटि के
सज पक्की ईंटन के
नीला लाल वोगयरह
दूसर-दूसर रंगनवाला
चारि सुघर असतूप नमूना
रचल बनावल गइलन !
धरमी भोट नरेस
ओह बिहार नगद के
कइलन सुरू बनावे जइसे
ओही घरी भइल उनका कि
तिब्बतवासी पुरुस निपुन कुछ
भिक्खु बनावल जासु!
जब बिहार के
काम बढ़ल कुछ आगे
तब प्रिय धरमाचारज
संत शांतरच्छित महराज
नालंदा से
सुभ सरवास्तिवाद-मतवाला
सधल सुलायक भिक्खु लोग के
भेजि खबरि बोलववलन !
भिक्खु बनावे वाला,
परम पवित्तर धरम काज के
नेम मोताबिक
पूरा करे-करावे खातिर !
संत समाज समय से पहुँचल
पूरा भइल कारज ऊ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सहज ठेठ पिछड़ल मानुस के
विनय शील सिच्छा के
चुनल-चुनावल
सात तिब्बती भाई
भिक्खुसंघ का सनमुख
धूमधाम से
भिक्खु बनावल गइलन!
जिनका में ले
ग्यानेन्दर, शीलेन्दर रच्छित
देवेन्दर रच्छित वैरोचन
अउरी रि-न् छे-न् छोग बिरागी
बाटे कुछ के नावँ!
भिक्खु शांतरच्छित के
उनका बिमल बिराग त्याग आ-
विनय शील सेवा का करते
भोट देश के लोग
नावँ दिहल प्रिय बोधि सत्व के !
आजो अधिका तिब्बतवासी
भाव·भगति सरधावश
नावँ धरसु ना उनकर
बलुक महापंडित मुनि
बोधिसत्व के नगद नावँ से
बेसी कइके जानेलन!

× ×

सउवति ठगिनी मायावाली
खोजि बहाना कवनो
कल से भेख बदलि आवेले !
छल परपंच खड़ा कइ
बहुतन के भल भरमावेले !
जइसे लोग परल पलखत कि
पकड़ि जीव के ले भागेले!
सइ बरिस के
अरदुवाइ पूरा भइला पर
घाही हो के
घोड़ा का टापन से
भिक्खु शांतरच्छित जी
छनभंगुर पँचरंगा चोला
ओही भोट देस में छोड़ि
मुगति धाम के गइलन!

का जाने काहें त
महापुरुस जब उठि धरती से
परमधाम के जालन
तब जगवा में
केनियो से आवेलन
दुख-आफति के
कुछ तूफान बवंडर
कलह-बखेड़ा उठल देस में
चीनी-भोट भिक्खु लोगन में
बउध-धरम के
बेवहारिक-भेदन के जरि से !
ओके रोकि मेटावे खातिर
आचारज के चेला
कमलसील के
नालंदा से गइल बोलावल !
बहस भइल राजा के सनमुख
चीनी-भोट भिक्खु पच्छन में !
जितलन आखिर
कमलसील मुनि ग्यानी !
बाकी तऽ जानीं जे
हारि देखि के दल के अपना
खीसिन सनकल
कवनो नीच निरदयी चीनी
छूरा से हतलसि उनका के
भारतीय धरती के
ओह निपुन विदमान सत के
मरल देहि मरजादावाली
बान्हि मसाला से आदर से
लासा ले कुछ उत्तर
राखल बाट मठ में एगो
जोगा-जतन से आजो !

× ×

बिकरमवाली
दसवीं सइ-बरखी के
अंतिम चउथ चरन में
भोट देस में
बउध-धरम में
रहलन पैदा भइल अनेकन
मलिन-दोस बेकार !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गचकी-हबसा कीच-पांक में
धँसल धरम-रथ के पहिया के
पुरुसारथ-तप-तेज-त्याग से
बहरा घींचि निकाले, धोवे,
चिक्कनि डहरि धरावे खातिर
संत शांतरच्छित महाराज
निरभय आगे बढ़लन!
कठिनाइन से लोहा लिहलन
लँघलन परबत-जंगल दुरगम!
धुनी पुरुस मरजादावाला;
आगे आइल कठिनाइन से
ताड़ी ठोंकि भिड़ेलन,
माँथ झुकावसु नाहीं!
उनका सनमुख हारि रहे ना
जीतेलन हरदम ऊ!
छन भंगुर मानुस-देहियाँ ई,
ठहरे वाली नाहीं,
कतहीं कबे गिरे छितिराय!
इहे सोचि के,
पुरुस निपुन मतिमान
एकर मोह करसु ना!
बलुक समझि के एके
नगद सवारी साधन
असल निसाने अपना
विना पहुँचले मानसु ना!

× ×

भिक्खु शांतरच्छित जी
पहुँचि राजधानी लासा में
सरधावान भगत राजा के
धरम-सनेस सुनवलन!
मुनि का रुचि मोताबिक
साइति-समय-सुतार देखि के
बरम्हपुत्र नदिया के
एक कोस उत्तर भर
देखि जगहिआ सांत सोहावनि
धरम पाल महराज-मगध के!
बनवावल सज
महाविहार उदंतपुरी के
नगद नमूना मानि
पहिला बउध-बिहार सुघर सुभ
बनल चुनल सम्मे में
सही सिजिल बारह बरिसन में
मठ का बीच सुमेरु समान
मंदिर रचल गइल परधान!
अउरी चारो ओर चारि सज
महादीप आ-
आठ छोट चुनमुनवा
दीपन निअर नगीना
बारह दीप बनावल गइलन
भिक्खु लोग के
सांत निवास भजनिआँ खातिर!
प्रिय मंदिर परधान निपुन के
चारो कोना पर कुछ हटि के
सज पक्की ईंटन के
नीला लाल वोगयरह
दूसर-दूसर रंगनवाला
चारि सुघर असतूप नमूना
रचल बनावल गइलन!
धरमी भोट नरेस
ओह बिहार नगद के
कइलन सुरू बनावे जइसे
ओही घरी भइल उनका कि
तिब्बतवासी पुरुस निपुन कुछ
भिक्खु बनावल जासु!
जब बिहार के
काम बढ़ल कुछ आगे
तब प्रिय धरमाचारज
संत शांतरच्छित महराज
नालंदा से
सुभ सरवास्तिवाद-मतवाला
सधल सुलायक भिक्खु लोग के
भेजि खबरि वोलववलन!
भिक्खु बनावे वाला,
परम पवित्तर धरम काज के
नेम मोताबिक
पूरा करे-करावे खातिर!
संत समाज समय से पहुँचल
पूरा भइल कारज ऊ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सहज ठेठ पिछड़ल मानुस के
विनय शील सिच्छा के
चुनल-चुनावल
सात तिब्बती भाई
भिक्खुसंघ का सनमुख
धूमधाम से
भिक्खु बनावल गइलन!
जिनका में ले
ग्यानेन्दर, शीलेन्दर रच्छित
देवेन्दर रच्छित वैरोचन
अउरी रि-न् छे-न् छोग बिरागी
बाटे कुछ के नावँ!
भिक्खु शांतरच्छित के
उनका बिमल बिराग त्याग आ-
बिनय शील सेवा का करते
भोट देश के लोग
नावँ दिहल प्रिय बोधि सत्व के !
आजो अधिका तिब्बतवासी
भाव भगति सरधावश
नावँ धरसु ना उनकर
बलुक महापंडित मुनि
बोधिसत्व के नगद नावँ से
बेसी कइके जानेलन!

× ×

सउवति ठगिनी मायावाली
खोजि बहाना कवनो
कल से भेख बदलि आवेले !
छल परपंच खड़ा कइ
बहुतन के भल भरमावेले !
जइसे लोग परल पलखत कि
पकड़ि जीव के ले भागेले!
सइ बरिस के
अरदुवाइ पूरा भइला पर
चाही हो के
घोड़ा का टापन से
भिक्खु शांतरच्छित जी
छनभंगुर पँचरंगा चोला
ओही भोट देस में छोड़ि
मुगति धाम के गइलन!

का जाने काहें त
महापुरुस जब उठि धरती से
परमधाम के जालन
तब जगवा में
केनियो से आवेलन
दुख-आफति के
कुछ तूफान बवंडर
कलह-बखेड़ा उठल देस में
चीनी-भोट भिक्खु लोगन में
बउध-धरम के
बेवहारिक-भेदन के जरि से !
ओके रोकि मेटावे खातिर
आचारज के चेला
कमलसील के
नालंदा से गइल बोलावल !
बहस भइल राजा के सनमुख
चीनी-भोट भिक्खु पच्छन में !
जितलन आखिर
कमलसील मुनि ग्यानी !
बाकी तऽ जानीं जे
हारि देखि के दल के अपना
खीसिन सनकल
कवनो नीच निरदयी चीनी
छूरा से हतलसि उनका के
भारतीय धरती के
ओह निपुन बिदमान सत के
मरल देहि मरजादावाली
बान्हि मसाला से आदर से
लासा ले कुछ उत्तर
राखल बाट मठ में एगो
जोगा-जतन से आजो !

× ×

बिकरमवाली
दसवीं सइ-बरखी के
अंतिम चउथ चरन में
भोट देस में
बउध-धरम में
रहलन पैदा भइल अनेकन
मलिन-दोस बेकार !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भिक्खु-समाज धरम-पोथिन के
बेठन में लपेटि के
ताखा-अलमारी-सनूखि में
धइले आपन करतब जाने !
ओह लोग के
पढ़े-गुने का नावें
घुमटा मिरिगी आवे !
बरखा-रितु में
तीनि महीना तक बस
भिक्खु-धरम-आचार-नेम के
पालन करे कइसहूँ
लाचारन ऊ लोग !
ओकरा बाद करे ना
कुछऊ के परवाह !
तंतर-मत मनवइया
बोतल ढारसु, बिचरसु छुट्टा
इनरिन का घोड़न पर चढ़ि के
बिसयन के रस चीखत
चटक चासनी लेत !
एतनो पर ऊ भटकसु नाहीं
पाइ सनदि चीवर-संघाटी
भल अइँठत अँगिरात सान से
टहरत फिरसु सिद्ध बनि सगरे !
बहुत मठन के मालिक
भारी संत-महंथ
चमचम चमकत सुघर रँगीला
भेख बना के ठाट-बाट के
अपना के अरहत आ
मुनि असथविर बिरागी त्यागी
परगट करत फिरसु लोगन में
एही घरी भोट-परदेस
सैन-संग के राज-बंस में
जनमल एगो पुरुस महान !
समय पाइ के
सुभ सिच्छा पवला से
जागल ओकर
संचित ग्यान-बिराग !
देखि देस के गिरल दसा के
अउरी धरम-करम के दुरगति
भिक्ख भइल ऊ त्यागी
जाति-देस आ
बउध-धरम के सेवा खातिर !
सुभ आचार-बिचार मोताबिक
मिलल गुरू से उनके
निपुन ग्यानप्रभ नाँव !
दूर करे खातिर दौसन के
बउध-धरम-पोथिन के
पढ़ल निपुन ग्यानी गुरुवर से
उनका मालुम भइल जरूरी !
तब ऊ सोचि-बिचारि मजे में
ओह सुघरसुभकारज खातिर
रिन्-छेन्-सङ्-पो
लेग्स-पहि-खस् आ—
धीर साहसी चउकस
दूसर एकइस नवजुवकन के
सिच्छा खातिर भेजलन
देस सुघर ठंढा कसमीर !
बाकी तऽ जानीं कि
मानसरोवर वासिन खातिर
गरम रहे कसमीरो !
दुइ छोड़ि के सभई ओहिजे
हो बीमार सरग के गइलन !
राजभिक्खु मतिमान ग्यानप्रभ
ओइसन दसा देखि के मन में
ई बिचार कइलन कि
धरम-देस भारत के
सुरसति धाम सजीला
बिद्या बिनय ग्यान-गढ़
कवनो ना कवनो नगरन से
संत सुरेमन ग्यानी
केहू तरे बोलावल जासु !
कइसे कहीं कहनियाँ
भिक्खु ग्यानप्रभ धीर साहसी
संत महान करमजोगी के;
भाव-भगति सरधा आ—
त्याग-लगन सेवा के !
हमरा मति-बानी में
ऊ बलवें कहवाँ बा
जे हम गाइ सुनाईं
सुभ धरमी संतन के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

परम पबित्तर महिमा !

× ×

ओह समय में
दूर पच्छिमी तिब्बत से चलि
कुछ बिदारथी बिद्या-प्रेमी
भारत आवसु
महाबिहारन में रहि,
पढ़े धरमपोथिन के
अउरी अरजे
ग्यान-रतन-धन सवतुक !
संत ग्यान-प्रभ उनसे
ई जनले रहलन कि
बिकरमसीला
महाबिहार निपुन में
सुरसतिपूत नगीना,
नगद महापंडित बड़ ग्यानी,
धरम धुरंधर धुन के पक्का
दीपंकर श्री ग्यान
भिक्खु सुरेमन मानल जालन
सिच्छा के आचारज !
तब ऊ दूर डहरि के
बहुत जरूरी चीजन के दे
भेंजलन एगो दूत मंडली
बिकरमसिला ग्यान-मंदिर में
दीपंकर के पास !
बाकी तऽ ऊ
जानि डहरि के कठिनाइन के
तिब्बत जाये खातिर
राजी भइलन नाहीं !
संत सुधरमी त्यागी
होलन पोढ़ करेजावाला !
ऊ निरास होखसु ना कबहीं
ना तऽ छोड़सु पुरुसारथ के !
धीर ग्यानप्रभ गइलन
मानसरोवर ले कुछ उत्तर
तिब्बत के गर्तोङ् राज में
पास खानि के, सोनावाली
मन में सोचि इहे कि
सोना कुछ बटोरि के
दूत मंडली दसरि
भारत भेंजल जाय फेरु से !
बाकी तऽ उनका के
ओह राज के राजा
पकड़ि बंद कइलन जेहल में !
उनकर लायक पूत बोधिप्रभ
जब उनका से
भेंट करे गइलन तऽ
धीर पुरुस ऊ समुझवलन कि—
'सुनि लऽ पूत हमार परीन
तूँ जानत बाड़ऽ कि
अब हम भइलीं बूढ़ !
भले मरीं ना एह घरी पर
बाकी तऽ आगे के
दस बरिसन में मरबि जरूरे !
एसे जो तूँ हमरा ऊपर
करबऽ खरच अन्हेरे
तब एगो बिदमान निपुन के
हम भारत से बोला सकबि ना !
होई ई केतना बड़ भागि
जो हम मरीं एह जगहा पर
अपना सवतुक मंसा
धरम-काज सुभ खातिर,
अउरी तूँ कुल सोना
भेंजि सकऽ भारत के
प्रिय बिदमान बोलावे खातिर !
फेरु कहाँ ई निहचित बा जे
मुँहमाँगा सोना ले
ई राजा हमरा के
अवसि छोड़िये दीहन ?
एही से हे पूत सुलायक !
हमरा खातिर सोच छोड़ि के
तुरत दूत भारत तू भेंजऽ
धरमाचारज संत सुरेमन
पंडित-रतन-नगीना
दीपंकर का पास !
कोमल चित संतन के
भाव-भगति सेवा से
तिरपित हो पसिजेला !
जाके उनका सुभ चरनन में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तू हमार पा लागी कहिह
अउरी बिनती गरज सुनइह!
"छनभंगुर देहियाँ ई
कबे जरूरे छूटी!
सपना के संसार सुघर से
लागल नाता टूटी!
बा बड़ भागि हमार आज कि
तिब्बत के धरती पर
राउर पुन्नि चरनिआँ
ले आवे खातिर हम
एकरा कें छोड़त बानीं बस
मनसा-रूपी धरम-जग्य के
बिमल-कुंड में
एगो आहुति छोट बना के!
राजा हमरा
सुख-दुख के कारन, ना
ना तऽ देवता;
काल करम गरहन के
हम कारन मानीला!
मनवें असली गोइयाँ
जेकरा करते घूमि रहल बा
गूढ़ जगत-चक्का ई
ना जानें कि कब से?
दूसर साच इहो कि
एहिजा हमके दुखवे का बा?
जब हिरदय-मंदिर में
परगट होके
बउध देव भगवान
आपन दरसन देते बाड़न!
जगवे जब ई
आसा पर कायम बा
काहे ना तब
हमहूँ आसा राखीं?
बा हमरा बिसवास असल कि
रउरा भोटन के धरती के
करबि जरूर पबित्तर!
पहुँचि गरीबन के मड़ई में
धोइबि उनकर पाप मइलिआ
बिनय सील के
चटक मसाला से सज

अउरी धरम-जोति फइला के
नया बिहान बोलाइबि!
एतना कहि के
धुनी देव गुरु संत ग्यानप्रभ
अपना पूत निपुन के
माँथा ऊपर हाथ राखि के
दिहलन पुन्नि-असीस आखिरी;
अउरी उनसे
लिहलन अंतिम प्रेम-बिदाई!
पिता बचनियाँ
हिरदय भीतर धइ के
भिक्खु बोधिप्रभ
ओकरा पालन खातिर
दस सुलायक,
धीरं-धुनी जुवकन के
चुनलन एगो निपुन मंडली
जे तिब्बत से चलि के
होत देस नेपाल
आइलि बिकरमसीला
प्रिय बिहार-बिद्या-मंदिर में!
ओह समय में
बिकरमसीला
महा बिहार नगीना
उत्तर भारत के प्रिय
भागलपुर मंडल में
गंगा के किनार पर
सिच्छा सील बिनय गुन
सुभ आचार-बिचार-बोध के
तीरथ रहे महान!

× ×

आचारज दीपंकर
रहलन पूत नगीना
राजा भल कयलानसिरी के!
माई उनकर
रहली परभावती सुलच्छनि!
जनम भइल उनकर सुभ
बिकरम संबत
एक हजार तीस नव
पुन्नि मुहूरति सुद्ध लगन में!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पुरुबी भारत देस सोहासुत
भागलपुर के बाभन कुल में
प्रिय सहोरगढ़ में मसहूर!
नावँ परल लरिकाईं
चंद्रगरभ सुखदायी!
ममता-मोह बिधिन-बाधा से
रहि के दूर, सांत-चित
बिद्याधन अरजे खातिर ऊ
गइलन बोध-ग्यान के नगरी
विद्या-मंदिर वा नालंदा!
प्रिय आचारज बोधि-भदर के
सुभ चरतन में रहि के
पहिले तऽ ऊ सिच्छा पवलन
शामणेर के,
लोच उमिरिया
बरिस एगारह के रहला से!
नावँ भइल तब दूसर
चंद्रगरभ से
दीपंकर श्रीग्यान!
आगे जाके
बोधिभद्र के गुरु सिरोमनि
सिद्ध संत अवधूति पाद से
चेला बनि ऊ
पढ़लन बउध-धरम-पोथिन के!
रहे जमाना जुग तब
चउरासी सिद्धन के!
ओह समय में
मंतर-यान गूढ आ—
सहज-सुतंतर सिद्ध-यान के
रहे मान-आदर-बल-सोर!
एही से दीपंकर
उनको पढ़ल-लिखल कुछ
समुझि जरूरी
कइलन जोर-जतन पुरुसारथ!
बड़ा भागि से उनके
मिललन गुरू-सुरेमन
सिद्ध संत नारोपा
बहुत बड़ बिदमान!
तब ऊ गूढ-मरम-गुन वाली
प्रिय तंतर-विद्या के
उत्तम सिच्छा खातिर
राज-गिरिह से
विकरमसिला पहुँचलन
उत्तरवाला दरवाजा पर
नारोपा के पास!
ओहिजा उनका सुभ-सेवा में
बरिस एगारह तक रहि
सिच्छा पवलन सज से!
ओहिजो ले आगे बढ़ि
ग्यान-पियासि बुतावे खातिर
गइलन बोध गया ऊ
प्रिय बजरासन
महाविहार निपुन में!
सुनि के ओकर सुजस बड़ाई
ओहिजा रहि के मति-बिहार में
महा विनयधर
भिक्खु शीलरच्छित से
दुइ बरिस तक
पढ़लन विनय-पिटक के!
एह किसिम से
एकतिस बरिस उमिरिया होत
दीपंकर श्रीग्यान महान
तिरपिटकन आ—
प्रिय तंतर-विद्या के
निपुन महापंडित हो गइलन!
एतनो पर ऊ मनलन नाहीं
सुबरन-दीप-सुमात्रा गइलन
अउरी उत्तम सिच्छा खातिर
धरमपाल का पास!
जे कि ओह समय के
रहलन आचारज बेजोड़!
पहिले तऽ कुछ दिन तक
दीपंकर मतिमान
रहि एकान्त-वास में
ध्यान लगवलन-बुड़लन
गूढ़ अगम-सागर के भीतर
ढूँढ़े खातिर
मूँगा-मोती रतन अमोल!
बाद समय में
ओह ध्यान से उठि ऊ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गइलन आचारज के
प्रिय सुखदायी दरसन खातिर !
तब से बारह बरिस ठहरि के
उनका सुभ-छाया में
गूढ़ धरम-पोथिन के पढ़लन !
चवँतिस बरिस उमिरि भइला पर
ऊ बिदमान महान
बिकरमसिला लवटलन
ज़हवाँ आठ नमूना
निपुन महा पंडितन बीच प्रिय
एगो मानल जाके
रहलन सिच्छा देत !

× ×

तिब्बत वाली
दूत मंडली से नेवता पा
भिक्खु बोधिप्रभ,
प्रेमी देव गुरू के
संत विमल चित्त
दीपंकर विदमान् नगीना
निहचय कइलन
भोट-देस जाये के !
बाकी उनके
डेढ़ बरिस तऽ लागल
अपना जिम्मेवारी वाला
चुनल एक सइ आठ
बउध-मंदिरन खातिर
कुछ परबंध करे में !
आखिर दस सइ नब्बे नव
सुभ बिकरम संबत में
बिमल त्याग के मूरति
महापुरुस ऊ
जहवाँ साठि बरिस ले रहलन
ओकर ममता- मोह छोड़ि के
गोड़ लागि मुनि बउध देव के
विकरमसिला जनम-धरती के
दहिना हाथे
बोध-कवंडल लिहले
अउरी बायें खप्पर चीवर
भइलन बिदा हरदमे खातिर

देव भूमि भारत के
विद्या-धाम धरम-धरती से !
धन्नि ! बिराग बिमल ऊ
धन्नि ! त्याग के भाव ;
हमरा रिखि-मुनि संत सुरेमन
ग्यानी-पंडित बिदमानन के !
जे कि चिपटल रहलन नाहीं
मलिन-मोह-ममता आ—
देंहज लाभ सवारथ से !
ऊ सवाँग जानसु सभई के;
छोट रहे ना
उनकर कुल-परिवार !
ऊ दुनियाँ के सभ देसन के
आपन घरवे जानसु ;
अउरी मानसु सभ लोगन के
अपने भाई-बंधु !
छनभंगुर देहियाँ के
कठिन मोह उनका के
कवहीं भरमवलसि ना !
ऊ एकरा के
वेड़ा मनलन परमारथ कें
मउवतिया के ललकरलन ऊ
हाथ मिलावे खातिर !
उनका मति मोताबिक
सहज सवद हउवे ई
दुखी कादरन बेचारन के !
भगत-देस तिब्बत में जा के
धरम-धुरंधर—
आचारज दीपंकर
अपना सहज-सांति-मय
सुभ जीवन के
अंतिम प्रिय तेरह बरिसन तक
लागल रहलन
धरम-सुधार करे में !
ओह समय में उनकर
सभ ले उत्तम कारज
भइल इहे कि—
पहिले वाला
ग्यानी रिखि-मुनिअन के
रचल-बनावल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सुघर-सथकड़न
चुनल अमोल धरमपोथिन के
संसकीरित भासा ले
रूप बदलि रचलन ऊ
भोट देसवासिन के
सहज बोध वाली भासा में !
तिब्बत वाला
जीवन के तेरह बरिसन में
महापुरुस ऊ
तीन बरिस नहरिस में रहलन
चारि बरिस तक
बीच देस तिब्बत में
अउरी अंतिम छव बरिसवा
लासा ले कुछ दक्खिन
आधा दिन के
सहज जातरा वाली
मामूली दूरी पर
प्रिय नेथङ धाम में
भजन-ध्यान-सिच्छा आ—
पोथिन के रचना में
लागल रहल बितवलन !
आखिर ओहिजे
छोड़ि पिंजड़वा सोनावाला
उड़ल हिरामन सुगना
बिकरम संबत
एगारह सइ एगारह में !
ओह सुघर पिंजड़ा के
ओकरा मोह भइल ना
जेकरा भीतर
रहल तिहत्तर बरिसन तक ऊ
बोध-शांति सुख पवलसि !

\+ ×

बउध-धरम के
पंडित-ग्यानी
रतन पारखी संत हमार
भोट-देस के खानि खोदि के
पवलन रतन अनेक !
ओह सभन में
सुघर सुमेरु नगीना
हीरा मिलल अमोल अंत में
महापुरुस बुस् तोन!
भोट-देस के
ओह लाल प्रिय
रिन्-छेन्-ग्रुब के
भइल जनमवा
तेरह सइ सैंतालिस!
सुभ बिकरम में
पाइ उचित भल
समय उमिरिया
शलु बिहार में जा के
ऊ अपना बयराग त्याग आ
भाव भगित सरधा से
बउध-धरम के सिच्छा लिहलन
बनलन भिक्खु बिरागी!
अपने जुग के नाहीं
बलके आजो तक का
निपुन तिब्बती बिदमानन में
बाड़न ऊ बेजोड़ नमूना
सभे पंडितन के सरदार!
अपना ओह निपुन जुग तक के
उलथा कइल चुनल सरिआवल
सभई उत्तम
बउध-धरम पोथिन के
जोहि जुटा ऊ
कइलन जमा दूइ भागन में
जिनकर कंजुर-तंजुर
सवतुक नावें धराइल!
बउधदेव के
सुभ-सिच्छा-बचनन से
भरल सजावल
प्रिय पोथिन के!
रउरा कंजुर जानीं!
भाग दूसरा तंजुर
बोध बिचार-ग्यान आ-
जोतिस-कविता
तंतर-मंतर बैदक वाली
सब पोथिन के हउवे!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

महापुरुस बुस् तोन
ओह जमा पोथिन के
अपना निगरानी में
ठीक सिलसिला से लिखवा के
अलगा-अलगा
पोढ़ बेठनन में सज
सोधि-बान्हि धरववलन!
साथे-साथ सभे पोथिन के
ऊ चिट्ठा कइलन तइआर!
एतने नाहीं
खुदे अपनहूँ
निपुन पचासन
धरम-गरंथन के रचलन भल
लोगन का हित खातिर!
उनका में ले
एगो में वा
भारत आ तिब्बत के
बउध-धरमके
प्रिय इतिहास कहनिआँ!

× ×

आगे चलिके
देस-खंड अम्-दो के
चोङ्-ख गावँ में
भइल जनमवाँ
एगो भोट-सपूत महान
गुनी सुलच्छन होनहार के
बिकरम-संबत
चउदह सइ चउदह में!
जेकर भिक्खु-नावँ भल
रहे जदपि कि
बलो-बसङ-गरगस प
बाकी त ऊ
अपना जनम-गावँ के
नगद-नावँ-नाता से
चोङ-व-ख-प कहि के
लोगन में बाड़न मसहूर
अम-दो बाटे
बहुत दूर लासा से

बसल महीनन के डहरी पर
प्रिय मँगोलिया
देस सुघर के पास!
पहिले चोङ-ख-प
संबत चउदहबीस बिकरमी
सुभ साइति पर
सात बरिस के लोच उमिरि में
शामणेर बनलन प्रिय
संत-सुधरमी
दोन्-रिन्-प के
तबले पोढ़ उमिरिया
पनरह के भइला तक
ओहिजे रहि के
पढ़लन-गुनलन सिच्छा लिहलन!
पाछे ले ऊ
अउरो उत्तम-सिच्छा खातिर
विद्यावाला निपुन गढ़न पर
टहरि-घूमि के गइलन!
एह किसिम से
चउदह सइ बावन तक
प्रिय बिदारथी-जीवन में रहि
बिद्या-बिनय सील-संजम आ-
बोध सुमति सुभ बिमल ग्यान के
सवतुक संपति अरजित कइलन
जीवन-दसा सुधारेवाली
देबेवाली सुख-आनंद!
चउदह सइ तिरपन में
अपना निरमल मंशा
बउधधरम में आइल
हेठ जबून बिगारू
दोसन के कुछ
दूर करे खातिर ऊ
सिच्छा-ग्यान धाम सुभ
सुघर महाविद्यालय
बनववलन उतजोग जतन कइ!
एतने नाहीं
संवत चउदह सइ बासठ में
ऊ लासा में
बउध-संघ के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सभा-बटोर समइया खातिर
एगो बड़हन सुघर भवन
रचि तइआर करवलन!
अउरी ओही साल लगन-बस
लासा ले कुछ हटि के
सहज दूइ दिन का डहरी पर
एगो महाबिहार सजीला
बनववलन सरधा से !
चोङ्-ख-प जहवाँ
कइलन एतना बड़ पुरुसारथ
बउध-धरम-पोथिन के
पढ़े-पढ़ावे खातिर,
ओहिजा भिक्खु धरम सुभ
संजम-नेम-कनून रीति के
सज परचार करे खातिर ऊ
कम सतजोग जतन कइलन ना !

× ×

धरम-देस भारत के
धुनी रमंता त्यागी
संत-सुधारक बिदमानन के
तप-पुरुसारथ-त्याग कहनियाँ
केतनो कहीं ओराई नाहीं
सुनीं जहाँ जे लोग सांत-चित
कबहीं उहो अघाई नाहीं !
कहाँ थाह बा उनका
भारी गहिंरा-ग्यान-समुंदर
सांत-धीर-गंभीर बिमल के
भोट-देस में
धरमजोति-फइलावेवाला
अंतिम नामी पंडित
भारत-रतन-धरमधर
बउध-भिक्खु बड़ ग्यानी
रहलन संत-सांत-चित
धीर-धुनी बनरतन महान !
पुरुबी-देस बंगाल सुघर के
एगो राजवंस में उनकर
रहे भइल सुभ जनम सुलच्छन
चउदह सइ एकतालिस
प्रिय बिकरम संवत में !

बउध-घोस बिदमान धुरंधर
रहलन उनकर गुरू परीन !
बीस बरिस के पोढ़ उमिरि में
सिंहलदेस पहुँचि ऊ
भिक्खु धरम कीरति के
मानि निपुन आचारज
भइलन भिक्खु बिरागी !
अउरी ओहिजे
छव बरिस तक रहि के
पढ़लन-गुनलन सज से !
फेरु लवटि के
धरनीकोट नगरिया होत
मगध-देस में अइलन !
जहँवाँ पंडित हरिहर जी से
पढ़लन सज बेयाकरन-कलाप !
एहि किसिम से
जगहं-जगहा बिचरत
होत देस नेपाल
एक-पाँच-दस
सुभ बिकरम-संबत में
जाइ पहुँचलन तिब्बत !
ओहिजा लासा आ यर्-लुङ् में
कुछ दिन रहि के
तंतरवाली
बउध-धरम-पोथिन के
उलथा कइलन
सहज भोट भासा में !
फेरु लवटि नेपाल
सांतपुरी के प्रिय बिहार में
ठहरि भजन-तप कइलन !
बाकी कुछ दिन बाद
नेवता पाके रव्-बरतन् के
भोट-देस गइलन ऊ
बउध-धरम के सेवा खातिर
फेरु दूसरी बेरि !
एह तरह से
करत धरम-कारज सुभ
बहुत समय तक रहिके ओहिजा
आ गइलन नेपाल !
जहवाँ बिकरम-संवत

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पनरह सइ पचीस में
नासवान देहियाँ के छोड़ि
सुगति लोक के गइलन !

× ×

केतने पिछिला बिदमानन के
हमरा सुधि आइलि ना
जे कि मोका पा के
बउध-धरम के सेवा कइंलन
नेह लगन सरधा से !
दीपंकर से पहिले
भोट-देस में पहुँचल रहलन
सोमनाथ पंडित कसमीरी !
जे कि लिखलन
सहज भोट-भासा में
'काल-चक्र'-जोतिस पोथी के
सवतुक-अरथ बुझाये लायक !
पंडित निपुन गयाधर
वैशाली के कायथ
चेला प्रिय अवधूतिपाद के
कम सेवा कइलन ना
पहुँचि पड़ोसी देस भोट में
बउध-धरम भा
भगत भोट-भाइन के !
धरमपाल भद्दर तिब्बत के
प्रिय बिदमान लोचवा लायक
रहलन अंतिम रतन नगीना
श-लु विहार के भिक्खु !
उनकर जनम पबित्तर
रहे भइल जानीं कि
विकरम संवत
पनरह सइ चउरासी में सुभ !
ऊ थिरमति के,
प्रिय-अभिधरमकोश-टीका आ
नागारजुन, भब्बकीरति के
कई निपुन पाथिन के
उलथा कइलन
सहज भोट भासा में !

दूसर नामी पंडित भइलन
लामा तारानाथ,
जानकार केतने बिसयन के
चउमुख-चतुर परीन !
रचि के बहुत धरम-पोथिन के
ऊ सेवा-हित कइलन
बउध-समाज-धरम-दुनियाँ के

× ×

बेसी का हम कहीं सुनाईं
बउध धरम के सुजस कहनिआँ
जे ना कबे ओरायें वाली
अउरी ना तऽ जिनके
सुनलो पर हिरदय के
मधुर लालसा
सहजे मिटे बुतायेवाली !
आजो रउरा
ई देखत वानीं कि
तिब्बत के धरती पर
गाँव-नगर घर-घर में
ओही हितकर निपुन धरम के
धजा-पताका फहरि रहलि बा !
भोट-देस के,
सुभ आचार-बिचार-करम-गुन
कारीगरी-कला-सिच्छा-सज
पोथी-पतरा प्रिय साहित्त
सभई अपना बालापन के
सहज कोर जीवन से
रिखि-मुनिअन के पुन्नि-देस से
जीवन-जोति परान-पवन बल
गति मरजादा पा के
बाड़न ठाढ़ जगत के सनसुख
शानी सिंह समान !
धरमी भारत देस महान
अपना प्रिय अनमोल देन से
परबत राज हिमालय वाला
ओह सोहासुत महादेस के
सुघर सुखी धनवान सुधरमी
गुनी बनवलसि ना खाली
बलुक बिचार करीं तऽ

---

१ दुभाषिया ; भाषान्तरकार

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भगत भोट देसो के
हमनीं के ऊपर वा
बहुते भारी रीन !
हमनी के मूरति आ—
प्रिय तसबीरि कला के
नगद नमूना आजो
ओहिजा हाजिर बाटे !
बाकी निपुन भोट भाइन के
सब ले बड़ अनमोल भलाई
भारत के ई वा कि—
हमरा सुघर हजारन
ग्यान-चिराग-धरम-पोथिन के
अपना सिजिल भोट-उलथा में
कायम रखले बाड़न !

× ×

भारत ले उत्तर वा तिब्बत
ओहू ले उत्तर में
चीनी परदेसन के लाँघि
मरूभूमि आ—
सुघर पहाड़न से कुछ
सहज घेराइल चारो भर से
सुरस विमल जलवाला
सज बैकाल झील तक फइलल
सोहि रहल वा
प्रिय मंगोलिया देस,
जेकरा उत्तर-पच्छिम
बा अलताई,
उत्तर में सयान आ—
पूरुब भर बड़ खिंगन !
दक्खिन में इनशान्—
साथ अलताई;
अउरी होलन् शान् !
एह किसिम से
घेरल सुघर पहाड़न से ऊ
बाटे दूसर तिब्बत !
उत्तर-पच्छिम वाला
प्रिय मंगोलिया भीतर
बाड़न केतने
भारी ऊँचा परवत !

जिनका बीच सुरस जल वाली
झील अनेकन बाड़ी !
जइसे कबदो, दुगी, अचित आ—
उरियू, किरगिज, उबसा !
चरागाह खातिर ऊ धरती
नगद नमूना मानल जाले !
नीचे बाड़ी
हरिअर घासि मोलायम वाली
सोहति सुघर तराई !
अउरी ऊँच पहाड़न ऊपर
सुघर भोजपत्तर के फेंड़ !
बहरी वाली बड़ मंगोलिया
मरूभूमि गोबी से
साइबेरिया तक फइललि वा !
उत्तर ओर सोहासुत
नगद सोवियत के सिवान में
बुरयत मंगोलन के
निपुनराज पंचाइति वाला
फूलत-फरत हँसत बा
तीनि ओर बैकाल-ताल के !
सेलेंगा आ—
प्रिय आमूर समान सजीली
महानदिन के
ओहिजे बा निकास के ठावँ !
सेलेंगा के बेटी
ओरखोन नदिया मसहूर
बहुत पुरानी महिमा वाली
बा लहराति जुगन से ओहिजे !
जेकरा सांत सोहावन तीरे
हूण-उइगुरन वाली
रहली बनल सुघर रजधनियाँ !
ओहिजे रहे सिजिल रजधानी
रोब-शान-मरजादावाली
सुखी कराकोरम ऊ
निपुन बीर छिंगीसखान के !
जहाँ एसिया आ योरप के
बड़े-बड़े शानी सेनापति,
राजदूत, राजा बेवपारी,
पंडित साधु धरम-उपरोहित
बीर सूरेमन दल-सरदार

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रिय खाकन महान धुनी के
सजल राज-दरबारे
जासु सलाम बजावे !
भीतरवाली
प्रिय मंगोलिया
बाटे जगहि देखहीं लायक
गहगहात फुलवारी अइसन
बरबस मन के मोहेवाली !
ओकरा उत्तर भर गोबी बा
दक्खिन खेती-परमुख
सज चीनी-परदेस !
पुरुब सिवानें
मंचूरिया मन भावनि
पच्छिम कंसू-राज सुहेल !
जब से पता चलत बा
चीन-देस के
प्रिय इतिहास-पुरान-कथा के
ठीक तबे ले
डेग बढ़ावत लउकि रहलि बा
प्रिय मंगोलिया जग के सनमुख !
ऊ ओही के
रहे धरतिया
गरज-तड़पवाली डेरावनि !
पहिले-पहिल झोंक में जिनका
परि के चीन-निवासी ;
कठिन कलेस उठवलन भोगलन !
बस उनहीं से
अपना रइछा खातिर
चीनी लोग बनावल
लमहरि ऊँच महादेवालि !
रउरा ई जानीं कि—
बस ओही हूणन के ;
धावा से आजिज हो
शक लोगन के
अपना जनमभूमि के
पुरुबी भाग सोहासुत
नदी वोलगा से हवाङ-हो तक
फइलल सजवाला के
खाली कइके
परल पराये के दक्खिन के !

बिकरम- संवत ले भल
बरिस सएकड़न पहिले
शुरू भइल जब
भाग-पराह शकन के
ठीक तबे ले
सुघर इली-च्यू नदियन वाली
नगद तराई
चरागाह हो गइलि सुनरगर
धुनि बीर हूणन के !
अउरी सहज तबे ले
तरिम- तराइ का हलका से
उनकर जुटल नगीची
प्रिय नाता-संबंध !
ओही तरिम-तराई वाला
निपुन निवासिन के जरिया से !
कुल आचार-विचारन के सँग
बिकरम वाली
पहिली सइ बरखी में
धरमो के सनेस सुभ ;
पहुँचि गइल हूणन में !
धरम रहे ऊ
बउध-धरम हितकारी !
बाद हूण लोगन के
धुनी अवारन आ तुरुकन में
जेकर भइल नगद परचार !
तुरुक लोग के साथे
उनकर भाई-बंधु उइगुरो
रहलन बनल बउध-धरमी भल
मोका पाइ पहिलहूँ
ई बतिया कुछ कहल गइलि बा
चीनी-धरम-कथा-चरचा-संग
कि कब कइसे
भोट देस के लामा
भिक्खु फगस पा
पहुँचि खान कुबिले के
रोब-दाब वाला दरबारे
धरमन का बहसा-बहसी में
पवलन बिजय शान-से सज-से !
अउरी पाछे खान बहादुर
उनके आपन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

धरम गुरू मानीन वनवलन !
ओहू ले कुछ पहिले
भिक्खु फगसपा के चाचा आ—
गुरू बिरागी त्यागी
भोट महापंडित ऊ
प्रिय आनंदधजा उतजोगी
मंगोलन में जाके
कइले रहलन
बउध-धरम के सुभ परचार !
बिकरम-संबत
तेरह सइ सतरह के लगभग
बीर खान कुबिले के
बउध-धरम मनला पर
भल छिंगीस घराना वाला
सभे खान लोगन में
बउध-धरम के आदर-पूजा
बनल रीति-रेवाज!
आजो लगभग
सभ मंगोल सुजन सरधा से
सहज सुभावन
बउध-धरम मानेलन!
जिनका में बैकाल तीर के
बुरियत अउरी
भाग बाहरीवाला खलखा
पढ़े—लिखे भा—
सभ बेवहार-चालि में
बहुते आगा बाड़न!
प्रिय कुबिले के
कुल-परिवार बंधु भाइन में
बउध-धरम के
रहे पइठ आ मान मजे में!
काहें से कि
लच्छन आ परमान बतुस के
सहज सरूप बतावेले!
नावें एक पोता के उनका
रहे निपुन आनंदखान आ
बेटा के प्रिय मंगल खान!
एतने नाहीं
प्रिय छिंगीस खान के
एक पतोहि सोहागिन
जगताई के
मेहरारू के नावें
रहे धरम श्रो
सुमिरन लायक!

\+ \+

समय पाइ मंगोल जवान
भोट देस में जाके
बिमल धरम-पोथिन के
लगलन पढे प्रेम-सरधा से
रहली रचल गइल जे
सँसकीरित ले
सहज भोट-भासा में!
एह किसिम से
पुरुसारथ-तप-त्याग-लगन से
ऊ भारत के
धरम-गरंथन के सुभ
भारी पंडित होखे लगलन!
ओह पुन्नि-कारज में उनके
नगद सुबहिता
मिलल ओह मोका से
जब कि चोङ-खत
भिक्खु सुमतिकीरति ऊ
अउरी उनकर चेला
भोट-देस में
नालंदा-बिकरमसीला के
सुघर नमूना पर कुछ
बड़े-बड़े सिच्छागढ़
सिजिल महाबिद्यालय
रोपि-थापि के चालू कइलन!
जिनका में मंगोल देस के
भिक्खु हजारन आ के
लगलन पढ़े सांत-चित डटि के!
निपुन भोट-भासा में
भारत वाली
चुनल धरम पोथिन के
सज उलथन के
बाड़ी दू गो बड़हन
संचित-रासि सोहावनि
जिनकर वा सुभ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कंजुर-तंजुर नाँव !
बउध-मुनी के
सुभ-सिच्छा बचनन से
भरल सोहासुत सज पोथिन के
नावं रहे प्रिय कंजुर !
बोध-बिचार-तरकना-जोतिस
तंतर-मंतर-बैंदक वाली
असल मूल आ—
अरथ-बोध-माने के
सज पोथिन के
पंडित लोग पुकारल तंजुर !
पहिल रासि में पोथी बाड़ी
चुनल एक सइ तीन !
दूसर में साजल सरिआवल
नगद दूइ सइ पैंतिस !
कंजुर के उलथाचहार के
प्रिय कागान सुधरमी
लेग्-दन्-ऊ-तक् तू के
राजकाल में
रहे भइल तइआर !
ओह रासि के
सभ संचित पोथिन के
बिकरम-संबत
सोरह सइ अस्सी में
एक बरिस भर में बस
उलथा भइल लिखाइल
प्रिय मंगोल-भासा में !
कुन्-गा-ओम्-जेर—
भल आनन्द परभ जी
पंडित निपुन महान गुनी के
निगरानी में
धीर घुनी बिदमान सयकड़न
जानकार मंगोल-तिब्बती
दूनो सज भासन के
लागल रहलन ओह घरी पर
उलथा के कारज में!
मंचू राजा
शिरी चियेन्-लुङ्
तंजुर के पोथिन के
सज उलथा करववलन
चन्-स्-क्-या रोल-पइ-दो-र्जे
अउरी ब्लो-ब्जङ-तन्-पइ-मा
दूइ सुरेमन बिदमानन के
चउकस निगरानी में!
पहिले तऽ ऊ
गुनी-धुनी बिदमान
उलथा खातिर
चुनल-जुटावल
साजल आ सरिआवल
निपुन-तिब्बती—
मंगोली-सबदन के
सोकड़-पोथी
रचि कइलन तइआर
फेर बनवलन एगो
भास-चाभुकि
बेयाकरन के पोथी
तब उलथा में हाथ लगवलन!
ओहिजो कंजुर निभर सयकड़न
जानकार बिदमान लागि के
उलथा के कारज के
पूरा कइलन
सतरह सइ नब्बे आ सात
सुभ बिकरम संबत में!
उलथा कइल गरंथन में प्रिय
अस्सुघोस के बउधचरित आ
कालिदास के
सुघर मेघदूते रहलन ना
बलुक महापंडित नागारजुन
प्रिय असंग-बसुबंधु नगीना
बिद्यासागर-बिमल चनरमा
मनि दिङ्-नाग धरमकीरति भल
भिक्खु शांतरच्छित के
नगद गरंथो सामिल रहलन!
जदपि जाति मंगोलन के ऊ
भारतवाली धरमजोति आ
सुभ आचार-बिचारन के
पँजरा आइलि ओह समय में
जब कि बउध-धरम भारत से
बान्हि बिछवना डेग उठवले
बिसय बनल चरचा के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कल से अंते जात रहे डटि !
तबो एह बतिया के
ऊ जानति बाटे पूरा कि
ओकरा निरमल धरम-ग्यान आ
सभ आचार-बिचारन के सुभ
असल सोत हऽ भारत-देस !
शाकिय-मुनि के
भइल जनमवाँ
सुघर लुंविनी बन में;
गय का नगरी गया धाम में
बोध ग्यान पवलन ऊ;
धरमपुरी काशी में
आपन पहिली
निपुन धरम-सिच्छा सुभ दिहलन
अउरी कुशीनगर में जाके
पवलन शांत-सुगति निरवान!
प्रिय बकाल-झील के तीरे
आजो ओइसन
केतने बुढ़वा-बुढ़िआ मिलिहन
जे मरला के बाद
धरम-भूमि भारत में
मानुस तन पावे के
मधुर लालसा राखेलन!
ओहिजा केतने
नवजवान सिच्छा के प्रेमी
मिलिहन जे कि
प्रिय दिङ्-नाग धरमकीरति के
मति के चमक देखि मोहित हो
भारत-भूमि बिमल के
दरसन खातिर
सहज ललायित बाड़न !

× ×

रित् आ सत् के
अछय-अनंत-धरम-चक्का ई
कब से घूमि रहल बा
एकरा के बतलावे के ?
परम तत्व ई दूनो
कालो ले मेंहीं आ—
गति-बल वाला बाड़न

अउरी ईहे
एह जगत भा
सभ लोकन के
धारन करे चलावेलन !
मोका पाइ पहिलहूँ
हम ई बतिया—
बता चुकल बानीं कि
बिमल बिचारन के निकास के
असली सोतो
ईहे रित् आ सत् हऽ
मूल बिंदु असली हऽ ईहे !
बानीं से, मन से, नयनन से
एके पावल जाइ सके ना !
'बा ई' का सिवाय मति
एके जाने खातिर
कवन जतन उतजोग लगावे
डहरि सुगम पहुँचावे वाली
कवन सोझ निअराह बतावे ?
ओकर कहाँ खेमाता
आगे डेग धरे के !
उहो थाकि थउसलि बा
कहीं किनारे
हाथ माँथ पर धइ के !
आखिर में तब
इहे साफ झलकत बाटे कि
कबे कइसहूँ
एके जानल जाइ सके ना !
एह जगत भा सभ लोकन के
जनम-नाभि जे बाटे
ऊहे उदय-नाभि हऽ
मेंहीं निपुन बिचारो के !
दूसर-दूसर देस-काल आ—
थेघ सहारा कारन पा के
जवन भेद बहुरंगी
हमनीं देखत बानीं
एहिजा निपुन बिचारन में !
ऊ हऽ झूठा नकली
लोगन के भरमावे वाला
असल मूल में भेद कहीं ना

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ना त ऽ ऊ अझुराहटिवाला
ह ऽ अनेक बहुरंगी !
जइसे एह जगत के दूनो
छोर-भाग उत्तर-दक्खिन में
समय भेद से
लउके-ऊगे वाला
सुरुज दूइ हउवँनि ना !
जो अग्यान भरम-बस
केहू दूइ सुरुज माने त ऽ
ई ह ऽ ओकरा मति के दोस !
हम जे ई देखत बानीं कि
जुग-जुग से दुनियाँ में
बड़े-बड़े रिखि ग्यानी
मुनी बिचारक संत योगएरह
परगट होके
सुभ-बिचार फइलावत बाड़न !
ऊ विचार हमरा देखे में
होइ सकेलन
उनकर देन अमोल !
ऊ उनका के
देखेवाला मानल जइहन
सिरजेवाला नाहीं !
देस-काल आ—
कारन-बतुस दसा पर
डालि नजरिआ आपन
ओह विचारन के ऊ
लोगन खातिर
सहज सुलभ भर कइलन
अउरी उनका ऊपर
अपना सूझ-सिद्धताई के
मोहरि नयी लगवलन।
अपना बिमल सुभाव-चरित आ—
सुभ दैवी-संपति का करते
सिद्ध-पुरुस रिखि-मुनि जुग-नायक
तत्वन के भल देखेवाला
ऊ मानल गइलन अवतारी !
उनकर बचन-बिचार मनइलन
सिद्ध साच परतछ परमान !
बचन महापुरुसन के
एही से बस
भरमरहित मानल जानल कि
ओह निपुन बचनन के
कहे सुनावेवाला
संत सुरेमन होलन
बिना भरम-संशय के
उनकर ग्यान सुद्ध सुभ
बे बेकार के
दइबी मानल जाला !
अइसन साधु-संत मुनिअन के
सूझ-समझ-गति
दोस-गंदगी-बेकारन ले
निहचय ऊपर होले !
अउरी जवन-बिचार-ग्यान गति
ऊ दुनियाँ के देलन
होलन ऊहो बिना दोस के
सहज निपुन निरकेवल !
समय-समय से
अइसन संत महान
देहिआँ धइ जग में आवेलन
अउरी आपन परम पवित्तर
बिमल विचार-जोति फइला के
असल साच के झलकावेलन !
गइआ बहुत रंग के होली
धावरि-सोकनि-करिआ लाल
बाकी दूध सभन के
एक रंग के
सुद्ध उज्जरे होला !
दुनियाँ के बहुरंगी
झूठ-बखेड़ा-परपंचन में
भूलल भरमल
साधारन संसारी लोग
सहज-सनातन-सुद्ध-ग्यान के
पाइ सकसु ना
चाहे केतनो खोजसु !
बस एतने खातिर तऽ
संत सुरेमन ग्यानी
अमिरित पूत महान
उतरि धरतिआ पर आवेलन
जे कि ग्यान-जोति फइलाके
असली सुद्ध बिचारन के सुभ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सवतुक दान करेलन !
बस एकरा ले
कुछऊ अधिका नाहीं !

× +

भारत देस नमूना
धरती के बैकुंठ !
एकरा ऊपर सभ दिन
दइबी दया रहेले खास !
इहे पवित्तर जनम-धरतिआ
ग्यानी रिखि-मुनिअन के
बिकट-बिलच्छन अंस तेजमय
सोरह-कला-विमल-अवतारी
निपुन महापुरुसन के
ईहे लीला-भूमि सोहासुत !
भारी महिमावाला
ओह महापुरुसन के
चरित अपार अनंत !
गूढ़ अगम लीला के उनका
के कब जानि सकल, बतलावल ?
भइलन केतने
ग्यानी आ बिग्यानी
बाकी ओह महासागर में
डुबकी लगा थाह के पावल ?

× ×

महापुरुस मुनि बउधदेव जी
बस ओइसनके
अमिरित पूत महान !
भला कहीं तब
उनका लीला-चरित-गूढ़ के
भेद-मरम हम पाईं कइसे ?
सुख-आनंद-सांतिमय
उनकर सुजस-कहनिआँ
बेसी गाइ सुनाईं कइसे ?
बवना अगम-महासागर के
कइसे थाह लगावे ?
महापुरुस-गंभीर-हिमालय
जेकरा अति बिसाल अचरमय
कठिन-सघन-जीवन के
पूरा पता लगावल जानल
अउरी समझि सुनावल सभ के
बहुतन के तप-त्याग धीरता
साहस-पुरुसाथ के काम !
ओहिजा केतने ऊँची चोटी
धवलागिरि-कैलास सुमेरु
कंचनजंघा गौरीसंकर
सेवा-दया-त्याग तप
बिनय सील संजम सुभ
सवतुक गूढ़ बिचारनवाली !
ओहिजे मानसरोवर
बरम्हपुत्त आ
गंगा-जमुना
सुरसति-सिंधु समान सजीली
सुभ-अमिरित-धारन के
प्रिय निकास-सोतन के ठाँव !
जहवाँ दुरबल जीव बेचारा
भटकि भलाके झंखेला कि
'का हम करीं कहाँ अब जाईं'
कइसे पहुँची पार ?,
बेसी का हम कहीं सुनाईं,
रउरा सभ जानीं कि
हमरो गति ऊहे बा !
आगे बस हम इहे कहबि कि
संतन के चित निरमल होला
ऊ अबोध जीवन के
कुछ वेजाईं देखलो पर
छमा करेलन, खिसिआलन ना !
पंडित-सुजन गुनी-जन
देखि हमार ढिठाई
सुद्ध सांत-चित होके
रखिहन छमा, दोस गनिहन ना
सहज-सुधार-डहरि बतलइहन !
हम सुभाव आ—
भाव-भगति-सरधावस
टूटल-फूटल
साधारन सब्दन में
महापुरुस के चरित-कहनिआँ
कुछ टकटोरि टोइ के
अब तक ले जे कहलीं हँऽ ऊ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अपना-बोध-सांति-सुख खातिर
ना कि कवनो अउरी
दूसर मंसा ले के !
सिद्ध संत ग्यानी रिखिअन आ—
महापुरुस अवतारिन के प्रिय
सुमिरन कइ के
हम अपना जीवन के
कठिनाइन के दूर करीला
अउरी उनका सुभ सिच्छा के
नगद मसाला पा के
करमन के पँचड़ा से
बटुरल पाप मइलिआ
कले-कले धोईला !
धन्नि ! देस भारत ई
बड़ा भागि से जहाँ जनम ले
मानुस-तन पवलीं हम !
ओहू ले बड़ भागि रहल जे
घर-दुवार जोड़-ज़ाँता के
दलदल से बहरी हो
पहिरि लँगोटी गेरुवावाली
सेवा-त्याग-धरम अपना के
सुभ धरमी पुरुखन के
समय पाइ कुछ सुमिरन कइलीं !
अब हम कलमि धरे के पहिले
बिद्या-ग्यान-सुगति-सुख-दाता
अवढरदानी
बाबा बिस्वनाथ कासीपति
पारबती माता महरानी
अउरी साधु-संत के रच्छक
दयावंत हनुमान बली के
भाव-भगति-सरधा से
माँथ नवावत बानीं
जिनका दया छोह से
गंगा तीरे
राजगुरूमठ कासी में रहि
एह धरम पोथी के
रचलीं, पूरा कइलीं !
दूसर, जोरि दसो नँह
आठो अंग सहित हम
झुकि के सनमुख—
परमगुरू बिदमान सुरेमन
सामी सहजानंद सुरसती
संत राघवानंद बिमलचित
अउरी तपसी—
जोगिराज गुरुदेव नगीना
सामी हंसानंद बीरमनि
ग्यान-जोति देवेवाला के
बानीं करत दंडवत बिनती
जिनका सहज दया से
जीवन के गति सुधरलि हमरा !
आखिर गोड़ लागि के
बउधदेव अवतार महामुनि
सारिपुत्त; प्रिय मोगलान आ—
भिक्खु महाकास्यप भल
दीपंकर श्री ग्यानदेव के
बानीं जात कहीं हम
सुद्ध सांत एकांत जगहि में
ध्यान लगा कुछ जोहे खातिर
ग्यान-समुंदर
निपुन धरमपोथि के भीतर !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शुद्धि-पत्र

(पाँति जे बीच-बीच में छूटि गइल बा)

क्रम-संख्या	पन्ना	पाँतिन के संख्या जवना के बीच ई छूटल पाँति रही	छूटल पाँति
१	३३	५९ आ ६० वीं	सुरस बचन कुछ कहलसि
२	४७	६८ आ ६९ वीं	मरम बचन कुछ कहलन
३	५०	२५ आ २६ वीं	दाय करीं सरकार.
४	५८	५८ वीं डाँड़ी में आगे भा अंत में	पँचड़ा वाला
५	८१	४५ वीं आ ४६ वीं के बीचे	जइसे चंचल कँशर सिंह
६	१६८	५९ वीं आ ६० वीं के बीचे	जे के नेह-छोह आदर से
७	१७६	६६ वीं आ ६७ वीं पाँति के बीचे	उनकर नाथ करे के
८	१८०	१० वीं पाँति आ ११ वीं के बीचे	सजग भइल जागल उठि बइठल
९	२०५	५४ वीं आ ५५ वीं के बीचे	एतने नाहीं
१०	२४८	३८ वीं आ ३९ वीं के बीचे	धीरे-धीरे खूब मँथाइल
११	३१०	४२ वीं आ ४३ वीं के बीचे	पइठल राजमहल में
१२	३२१	६१ वीं आ ६२ वीं के बीचे	संत बउध-इसमिरती

पन्ना ३१३ के अन्त में उलट-फेर—

७६ वीं पाँति तक सही; बाद के आखिरी चार पाँति पन्ना ३१४ के २८ पाँति के बाद जाई। पन्ना ३१३ के आखिरी चार पाँति आ पन्ना ३१४ के १४ पाँति, पन्ना ३१४ में के २८ वीं पाँति का बाद मिला के पढ़ल जाय। जइसे—

पन्ना ३१३—७६ वीं पाँति का बाद में

"सुभ श्वेताश्व बिहार पुराना
ओही लगन-प्रेम सरधा आ
सांति-सुबहिता से अति सज से
बउध-धरम के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

करत रहल परचार।
उलट-फेर शासन के
धरमदूत संतन के
छेड़छाड़ कइलसि ना।

वेई कुल का राजकाल में
पाँच निपुन उलथा करवइआ
बारह चुनल धरमपोथिन के
सज से उलथा कइलन
संसकीरित ले
चीनी जनता का भासा में

भिक्खु धरमफल
मध्य देश के
बहुत धनी बामन कुल भूसन,
पूत सपूत निराला रहलन।
ऊ लरिकइएँ

चारो वेद पुरान अठारह
अउरी केतने दूसर
बामन धरम-गरंथन के पढ़ि
गूढ़ ग्यान के
मरम असल जाने के
कोसिस कइलन पूरा।

आगे चलि के
बउध धरम अपना के
हीन यान आ महायान का
शुभ सुत्तन-विनयन के
पढ़लन अति सरधा से।

अब का बात रहल पूछे के,
बोध भइल जब मनवाँ जागल,
काहें ना ऊ बनल उड़ंकू धावे ?
करतब-ग्यान-ध्यान के पंडित
संत धरमफल—

(आगे पन्ना ३१४ के आखिरी पाँति)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.